श्रीमंत सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक
सिद्धान्त ग्रंथमाला द्वारा अधिकार प्राप्त
जीवराज जैन ग्रंथमाला.

(धवला–पुष्प १४)

श्री भगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः

तस्य

पंचमखंडे वर्गणानामधेये

हिन्दी भाषानुवाद-तुलनात्मकटिप्पण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टैः सम्पादितम्

बंधनानुयोगद्वारम

खंड ५ पुस्तक १४ भाग ४, ५, ६

– ग्रंथसम्पादकः –
स्व. डॉ. हीरालालो जैनः

– सहसम्पादकौ –
स्व. पं. फूलचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री स्व. पं. बालचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री

– प्रकाशकः –
जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर

वीर नि. संवत् २५२० इ. सन १९९४

विषय सूची

पृष्ठ

१ मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

प्रस्तावना

१ विषय-परिचय १
२ विषयसूची १६

२

मूल अनुवाद और टिप्पण १-५६४

१ बंधअनुयोगद्वार १-४६
२ बंधक अनुयोगद्वार ४७-२२४
३ शरीरिशरीरप्ररूपणा २२५-४६८
४ चूलिका ४६९-५६२
५ बंधविधान ५६३-५६४

३

परिशिष्ट

१ बंधणअणुयोगद्दार सुत्ताणि १
२ अवतरण गाथासूची २८
३ विशेष वाक्यसंग्रह २९
४ न्यायोक्तियाँ २९
५ ग्रंथोल्लेख २९
६ पारिभाषिक शब्दसूची ३१

विषय-परिचय

बन्धनके चार भेद हैं– बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान। यहाँ इस अनुयोगद्वारमें, बन्धक और बन्धविधानकी सूचनामात्र की है, क्योंकि बन्धकका विशेष विचार खुद्दाबन्धमें और बन्धविधानका विशेष विचार महाबन्धमें किया है। शेष दो प्रकरण अर्थात् बन्ध और बन्धनीयका विचार इस अनुयोगद्वारमें किया है। इस अनुयोगद्वारमें बन्धनीयके प्रसंगसे वर्गणाओंका विशेषरूपसे ऊहापोह किया गया है, इसलिए ही स्पर्शसे लेकर यहां तकके पूरे प्रकरणकी वर्गणाखंड संज्ञा पडी है। अब संक्षेपसे इस भागमें वर्णित विषयका ऊहापोह करते हैं।

१ बन्ध

बन्धके चार भेद हैं– नामबन्ध, स्थापनाबन्ध, द्रव्यबन्ध और भावबन्ध। इनमेंसे नैगम, संग्रह और व्यवहारनय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं। ऋजुसूत्रनय स्थापनाबन्धको स्वीकार नहीं करता है, शेष को स्वीकार करता है। शब्दनय केवल नामबन्ध और भावबन्धको स्वीकार करता है। कारण स्पष्ट है।

एक जीव एक अजीव नाना जीव और नाना अजीव आदि जिस किसीका बन्ध ऐसा नाम रखना नामबन्ध है। तदाकार और अतदाकार पदार्थोंमें यह बन्ध है ऐसी स्थापना करना स्थापनाबन्ध है। द्रव्यबन्धके दो भेद हैं– आगमद्रव्यबन्ध और नोआगमद्रव्यबन्ध। भावबन्धके भी ये ही दो भेद हैं। बन्धविषयक स्थित आदि नौ प्रकारके आगममें वाचना आदि रूप जो उपयुक्त भाव होता है उसे आगम भावबन्ध कहते हैं। नोआगमभावबन्ध दो प्रकारका है– जीवभावबन्ध और अजीवभावबन्ध। जीवभावबन्धके तीन भेद हैं– विपाकज जीवभावबन्ध, अविपाकज जीवभावबन्ध और तदुभयरूप जीवभावबन्ध। जीवविपाकी अपने अपने कर्मके उदयसे जो देवभाव, मनुष्यभाव, तिर्यञ्चभाव, नरकभाव, स्त्रीवेद, पुरुषवेद आदि रूप औदयिक भाव होते हैं वे सब विपाकज जीवभावबन्ध कहलाते हैं। अविपाकज जीवभावबन्धके दो भेद हैं– औपशमिक और क्षायिक। उपशान्त क्रोध, उपशान्त मान आदि औपशमिक अविपाकज जीवभावबन्ध कहलाते हैं और क्षीणमोह, क्षीणमान आदि क्षायिक अविपाकज जीवभावबन्ध कहलाते हैं। यद्यपि अन्यत्र जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व ये तीन पारिणामिक मानकर इन्हें अविपाकज जीवभावबन्ध कहा है पर ये तीनों भाव भी कर्मके निमित्तसे होते हैं, इसलिए यहां इन्हें अविपाकज जीवभावबन्धमें नहीं गिना है। तथा एकेन्द्रियलब्धि आदि क्षायोपशमिकभाव तदुभयरूप जीवभावबन्ध कहे जाते हैं। अजीवभावबंध भी विपाकज, अविपाकज और तदुभयके भेदसे तीन प्रकारका है। पुद्गलविपाकी कर्मोंके उदयसे शरीरमें जो वर्णादि उत्पन्न होते हैं वे विपाकज अजीवभावबंध कहलाते हैं। तथा पुद्गलके विविध स्कन्धोंमें जो स्वाभाविक वर्णादि होते हैं वे अविपाकज अजीवभावबंध कहलाते हैं और दोनों मिले हुए वर्णादिक तदुभयरूप अजीवभावबंध कहलाते हैं

यह हम पहले ही संकेत कर आये हैं कि द्रव्यबंध दो प्रकारका है–– आगमद्रव्यबंध और नोआगमद्रव्यबंध। बंधविषयक नौ प्रकारके आगममें वाचना आदिरूप जो अनुपयुक्त भाव होता है उसे आगमद्रव्यबंध कहते हैं। नोआगम द्रव्यबंध दो प्रकारका है– प्रयोगबंध और विस्रसाबंध। विस्रसाबंधके दो भेद हैं–– सादिविस्रसाबंध और अनादिविस्रसाबंध। अलग अलग धर्मास्तिकायका अपने देशों और प्रदेशोंके साथ अधर्मास्तिकायका अपने

देशों औरप्रदेशोंके साथ और आकाशस्तिकायका अपने देशों और प्रदेशोंके साथ अनादिकालीन जो बंध है वह अनादि विस्रसाबंध कहलाता है तथा जो स्निग्ध और रूक्षगुणयुक्त पुद्गलोंका जो बन्ध होता है वह सादि विस्रसाबन्ध कहलाता है। सादिविस्रसाबन्धके लिए मूल ग्रन्थका विशेषरूपसे अवलोकन करना आवश्यक है। नाना प्रकारके स्कन्ध इसी सादि विस्रसाबन्धके कारण बनते हैं। प्रयोगबन्ध दो प्रकारका है– कर्मबन्ध और नोकर्मबन्ध। नोकर्मबन्धके पाँच भेद हैं– आलापनबन्ध, अल्लीवणबन्ध, संश्लेषबन्ध, शरीरबन्ध और शरीरिबन्ध। काष्ठ आदि पृथग्भूत द्रव्योंको रस्सी आदिसे बाँधना आलापनबन्ध है। लेपविशेषके कारण विविध द्रव्योंके परस्पर बंधनेको अल्लीवणबन्ध कहते हैं लाख आदिके कारण दो पदार्थोंका परस्पर बंधना संश्लेषबन्ध कहलाता है। पांच शरीरोंका यथायोग्य सम्बन्धको प्राप्त होना शरीरबन्ध कहलाता है। इस कारण पांच शरीरोंके द्विसंयोगी और त्रिसंयोगी पन्द्रह भेद हो जाते हैं। नामोंका निर्देश मूल में किया ही है। शरीरबन्धके दो भेद हैं– सादि शरीरबंध और अनादिशरीरबन्ध। जीवका औदारिक आदि शरीरोंके साथ होनेवाले बन्धको सादिशरीरबन्ध कहते हैं। यद्यपि तैजस और कार्मणशरीरका जीवके साथ अनादिबन्ध है पर यहां अनादि सन्तानबन्धकी विवक्षा न होनेसे वह सादिशरीरबन्धमें ही गर्भित कर लिया गया है। कर्मबन्धका विशेष विचार कर्मप्रकृति अनुयोगद्वारमें पहले ही कर आये हैं।

२ बन्धक

बन्धकका विशेष विचार खुद्दाबन्धमें ग्यारह अनुयोगद्वारोंका आलम्बन लेकर पहले कर आये हैं, इसलिए यहाँ इस विषयकी सूचनामात्र दी गई है।

३ बन्धनीय

जीवसे पृथग्भूत जो कर्म और नोकर्म स्कन्ध हैं उनकी बन्धनीय संज्ञा है। वे पुद्गल द्रव्य, क्षेत्र काल और भावके अनुसार वेदनयोग्य होते हैं। ऐसा होते हुए भी वे स्कन्ध पर्यायसे परिणत होकर ही वेदनयोग्य होते हैं ऐसा नियम है। उसमें भी सभी पुद्गलस्कन्ध वेदनयोग्य नहीं होते किन्तु तेईस प्रकारकी वर्गणाओंमें जो ग्रहणप्रायोग्य वर्गणायें हैं उनके कर्म और नोकर्मरूप परिणत होनेपर ही वे वेदनयोग्य होते हैं अतः यहाँ वर्गणाओंका अनुगम करते हुए उनका इन आठ अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर विचार किया गया है। वे आठ अनुयोगद्वार ये हैं– वर्गणा, वर्गणाद्रव्यसमुदाहार, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, अवहार, यवमध्य पदमीमांसा और अल्पबहुत्व।

वर्गणा– वर्गणाके दो भेद हैं– आभ्यन्तर वर्गणा और बाह्य वर्गणा। आभ्यन्तरवर्गणा दो प्रकारकी है– एकश्रेणिवर्गणा और नानाश्रेणिवर्गणा। उनमेंसे एकश्रेणिवर्गणाका सर्व प्रथम सोलह अनुयोगद्वारोंका आलम्बन लेकर विचार किया गया है। वे सोलह अनुयोगद्वार ये हैं– वर्गणानिक्षेप वर्गणानयविभाषणता, वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम।

यहां वर्गणानिक्षेपके छह भेद करके उनमेंसे कौन निक्षेप किस नयका विषय है यह बतलाकर इस प्रकरणको समाप्त किया गया है। वर्गणाके सोलह अनुयोगद्वारोंमेंसे केवल दो का ही विचार कर वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका अवतार क्यों किया गया है यह प्रश्न उठाकर वीरसेनस्वामीने उसका यह समाधान किया है कि वर्गणा प्ररूपणा अधिकार केवल वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कथन करता है किन्तु वर्गणाद्रव्यसमुदाहार वर्गणाओंकी एकश्रेणि और नानाश्रेणिका सांगोपांग विचार करता है अतः यहां वर्गणाके शेष चौदह अधिकारोंका कथन न करके वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन प्रारम्भ किया है।

वर्गणाद्रव्यसमुदाहार— इस अनुयोगद्वारके भी चौदह अवान्तर अधिकार हैं जिनके नाम ये हैं— वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणा अल्पबहुत्व।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

वर्गणाप्ररूपणा— इसके द्वारा तेईस प्रकारकी वर्गणाओंका विचार किया है। वे तेईस प्रकारकी वर्गणायें ये हैं-एकप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्य वर्गणा, संख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्य वर्गणा, असंख्यात प्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा, अनन्तप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा, आहारवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, भाषाद्रव्यवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, मनोद्रव्यवर्गणा, अग्रहणवर्गणा, कार्मणद्रव्यवर्गणा, ध्रुवस्कन्धवर्गणा, सान्तरनिरन्तरवर्गणा, ध्रुवशून्यवर्गणा, प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा, ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा, बादरनिगोदद्रव्यवर्गणा, ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदवर्गणा, ध्रुवशून्यवर्गणा और महास्कन्धवर्गणा।

एक परमाणुकी एकप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। द्विप्रदेशिकसे लेकर उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा तककी सब वर्गणाओंकी संख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। जघन्य असंख्यातप्रदेशिकसे लेकर उत्कृष्ट असंख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंकी असंख्यातप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। आहारवर्गणासे पूर्वतककी अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी जितनी वर्गणायें हैं उनकी यहां अनन्तप्रदेशिक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा दी है। इन्हीं वर्गणाओंमें परीत और अपरीतप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणायें भी सम्मिलित हैं। औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके योग्य वर्गणाओंकी आहारवर्गणा संज्ञा है। इसी प्रकार आगे भी अपने अपने कार्यके अनुसार उन उन वर्गणाओंकी संज्ञा जाननी चाहिए। यहां जो चार ध्रुवशून्यवर्गणायें कही हैं वे वस्तुतः शून्यरूप हैं। केवल पिछली वर्गणा और अगली वर्गणाके मध्यके शून्यरूप अन्तरालका परिज्ञान करानेके लिए यह संज्ञा दी गई है।

यहाँ अन्तमें आई हुई प्रत्येकशरीरवर्गणा, बादरनिगोदवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदवर्गणा और महास्कन्धवर्गणा ये चार ऐसी वर्गणायें हैं जिनके स्वरूपके विषयमें कुछ अलगसे प्रकाश डालना आवश्यक है, अतः यहाँ इस विषयमें लिखा जाता है। एक जीवके एक शरीरमें जो कर्म और नोकर्मस्कन्ध संचित होता है उसकी प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा संज्ञा है यह प्रत्येकशरीर पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, आहारकशरीरी प्रमत्तसंयत और

केवली जिनके पाया जाता है। इन आठ प्रकारके जीवोंको छोडकर शेष जितने संसारी जीव हैं उनका शरीर या तो निगोद जीवोंसे प्रतिष्ठित होनेके कारण सप्रतिष्ठित-प्रत्येकरूप है या स्वयं निगोदरूप है। मात्र जो प्रत्येक वनस्पति निगोदरहित होती है वह इसका अपवाद है। यहां यह प्रश्न उठता है कि जब मनुष्योंके शरीर अन्य अवस्थाओं में निगोदोंसे प्रतिष्ठित होते हैं तब ऐसी अवस्थामें आहारकशरीरी, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीवोंके शरीर निगोद-रहित कैसे हो सकते हैं ? समाधान यह है कि प्रमत्तसंयत जीवके जो औदारिकशरीर होता है वह तो निगोदोंसे सप्रतिष्ठित ही होता है। वहां जो आहारकशरीर उत्पन्न होता है वह अवश्य ही निगोदराशिसे अप्रतिष्ठित होनेके कारण केवल प्रत्येकरूप होता है। इसी प्रकार जब यह जीव बारहवें गुणस्थानमें पहुँचता है तो वहां उसके शरीरमें जितनी निगोदराशि होती है उसका क्रमसे अभाव होता जाता है और बारहवें गुणस्थानके अंतिम समयमें निगोदराशि और क्रमराशिका पूरी तरहसे अभाव होकर सयोगिकेवली जीवका शरीर केवल प्रत्येकरूप हो जाता है। उसके बाद अयोगिकेवली जीवके यही शरीर रहता है, इसलिए यह भी प्रत्येकरूप होता है। यह जघन्य प्रत्येकशरीर वर्गणा क्षपितकर्मांश विधिसे आये हुए अयोगिकेवली जिनके अंतिम समयमें होती है और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणा महादनके दाहादिके समय एकबंधन-बद्ध अग्निकायिक जीवोंके होती है। यहां यद्यपि महादनके दाहके समय जितने अग्निकायिक जीव होते हैं उनका अपना अपना शरीर अलग अलग ही होता है, पर वे सब जीव और उनके शरीर परस्पर संयुक्त रहते हैं, इसलिए उन सबकी एक वर्गणा मानी गई है। यहां एक प्रश्न यह होता है कि विग्रहगतिमें स्थित जो बादर निगोद और सूक्ष्मनिगोद जीव होते हैं उन्हें प्रत्येकशरीर मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, क्योंकि, वहां उन जीवोंका एक शरीर न होनेसे वे सब अलग अलग ही माने जाने चाहिए। इस शंकाका समाधान यह है कि वहां भी उनके साधारण नोकर्मका उदय रहता है और इसलिए वे अनंत होते हुए भी एकबंधनबद्ध ही होते हैं, अतः उन्हें प्रत्येकशरीर नहीं माना जा सकता। यह कहना कि विग्रहगतिमें शरीर-नामकर्मका उदय देखा जाता है, इसलिए जिनके इन कर्मोंका उदय होता है उन्हें निगोद जीव माननेमें कोई बाधा नहीं आती। तथा इनके अतिरिक्त जो जीव होते हैं, चाहे उन्होंने शरीर ग्रहण किया हो और चाहे शरीर ग्रहण न किया हो, वे सब प्रत्येकशरीर जीव कहलाते हैं। इस प्रकार प्रत्येकशरीरवर्गणा किन किन जीवोंके किस प्रकार होती है इसका विचार किया।

उक्त चार वर्गणाओंमें दूसरी वर्गणा बादरनिगोदवर्गणा है। यह वर्गणा क्षपित कर्मांशविधिसे आये हुए क्षीणकषाय जीवके अंतिम समयमें होती है, क्योंकि, एक तो जो क्षपितकर्मांश विधिसे आया हुआ जीव होता है उसके कर्म और नोकर्मका सञ्चय उत्तरोत्तर न्यून न्यून होता जाता है। दूसरे ऐसा नियम है कि क्षपकश्रेणि पर आरोहण करनेवाले जीवके विशुद्धिवश ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जाती है जिससे उस जीवके क्षीणकषाय गुणस्थानमें पहुँचने पर उसके प्रथम समयमें शरीरस्थित अनंत बादरनिगोद जीव मरते हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर आवलिपृथक्त्वप्रमाण काल जाने तक उत्तरोत्तर विशेष अधिक विशेष अधिक बादरनिगोद जीव मरते हैं। उससे आगे क्षीणकषायके कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल शेष रहने तक संख्यातभाग अधिक संख्यातभाग अधिक जीव मरते हैं। उससे अगले समयमें असंख्यातगुणे जीव

मरते हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे जीव मरते हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो मरनेवाले निगोद जीव होते हैं उनके विस्रसोपचयसहित कर्म और नोकर्मके समुदायको एक बादर निगोदवर्गणा कहते हैं। चूंकि यह अन्य बादर निगोदवर्गणाकी अपेक्षा सबसे जघन्य होती है, अतः क्षपितकर्मांश विधिसे आये हुए जीवके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोदवर्गणा कही गई है।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज

यहाँ बारहवें गुणस्थानमें उस गुणस्थानवाले जीवके शरीरके सब निगोद जीवोंके मरनेकी बात कही गई है। इसका अभिप्राय यह है कि सयोगी केवली और अयोगिकेवली जीवका शरीर एक मात्र अपने जीवको छोड़कर अन्य त्रस और स्थावर निगोद जीवोंसे रहित हो जाता है। उनके शरीरकी सात धातु और उपधातु यहाँ तक कि रोम, नख, चमड़ी और रक्त भी एक सयोगिकेवली जीवके शरीरको छोड़कर अन्य किसी जीवका आधार नहीं रहता। यहाँ बारहवें गुणस्थानमें यद्यपि क्रमसे निगोद राशिका अभाव बतलाया गया है, इसलिए यह प्रश्न हो सकता है की क्षीणकषाय जीवके शरीरसे निगोदराशिका अभाव होता है तो होओ, पर उसके शरीरसे त्रसराशिका भी अभाव हो जाता है यह कैसे माना जा सकता है? उत्तर यह है कि नारकी देव, आहारकशरीरी और केवली इन चार प्रकारके त्रस जीवोंके शरीरोंको छोड़कर अन्य जितने त्रस जीवोंके शरीर हैं वे सब बादरनिगोद प्रतिष्ठित होते हैं, ऐसा आगमवचन है। अब जब कि केवली जिनके शरीरमें एक भी निगोद जीव नहीं रहता तो वहाँ उनके आधारभूत अन्य क्रमिरूप त्रस जीवोंकी सम्भावना ही नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि केवली जिनके शरीरको कृमिरूप त्रस जीवों और बादरनिगोद जीवोंसे रहित बतलाया है

निगोद जीव क्षीणकषाय जीवके शरीरमेंसे क्यों मरने लगते हैं, इसका समाधान वीरसेन स्वामीने इस प्रकार किया है। उनका कहना है कि ध्यानके बलसे वहाँ उत्तरोत्तर बादर निगोद जीवोंकी उत्पत्तिका निरोध होता जाता है, इसलिए क्रमसे नये बादर निगोद जीव उत्पन्न नहीं होते हैं और जो पुराने बादरनिगोद जीव होते हैं उनकी आयु पूर्ण हो जानेके कारण वे मर जाते हैं। यद्यपि क्षीणकषायके शरीरमें बादर निगोद जीव सर्वथा उत्पन्न ही नहीं होते ऐसी बात नहीं है। प्रारम्भमें तो वे उत्पन्न होते हैं और क्षीणकषायगुणस्थानके कालमें बादरनिगोद जीवकी जघन्य आयु प्रमाण कालके शेष रहने तक वे उत्पन्न होते हैं। इसके बाद नहीं उत्पन्न होते। यहाँ यह प्रश्न होता है कि जिस प्रकार प्रारम्भमें वे उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समय तक वे क्यों नहीं उत्पन्न होते? समाधान यह है कि केवली जिनका शरीर प्रतिष्ठित प्रत्येकरूप है ऐसा षट्खण्डागम शास्त्रका अभिप्राय है। अब यदि यह माना जाता है कि क्षीणकषाय जीवके शरीरमें अन्तिम समय तक बादर निगोद जीव उत्पन्न होते हैं तो केवली जिनके शरीरमें भी बादर निगोद जीवोंका सद्भाव मानना पड़ता है। चूंकि केवली जिनके शरीरमें बादर निगोद जीवोंका सद्भाव नहीं बतलाया है, इसलिए यह बात सुतरां सिद्ध हो जाती है कि क्षीणकषायके शरीरमें अन्तिम समय तक बादर निगोद जीव न उत्पन्न होकर जहां तक सम्भव है वहीं तक उत्पन्न होते हैं।

साधारणतः अन्य शास्त्रोंमें केवली जिनके शरीरको सात धातु और उपधातुसे रहित परमौदारिक रूप कहा गया है और यह भी बतलाया है कि केवलीके शरीरके नख और केश

नहीं बढते। केवली होनेके समय शरीरकी जो अवस्था रहती है, आयुके अन्तिम समय तक वही अवस्था बनी रहती है, सो इन सब बातोंका रहस्य इस मान्यतामें लिपा हुआ है। इसका अर्थ यह नहीं लेना चाहिए कि उनके शरीरमेंसे हड्डी आदिका अभाव हो जाता है। जो चीज जैसी होती है वह वैसी ही बनी रहती है। मात्र उसमेंसे बादर निगोद जीव और उनके आधारभूत क्रमिका अभाव हो जानेसे वह उस प्रकार पुद्गलका सञ्चयमात्र रह जाता है। उदाहरणके लिए दूध लीजिए। गायके स्तनोंसे दूध निकालनेपर कुछ कालमें उसमें जीवोत्पत्ति होने लगती है, पर अग्नि पर अच्छी तरहसे तपा लेनेपर उसमें कुछ काल तक जीवोत्पत्ति नहीं होती। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वह दूध ही नहीं रहता। दूध तो उस अवस्थामें भी बना रहता है। इस प्रकार जो बात दूधके विषयमें है वही बात केवली जिनके शरीरके और उसकी धातुओं और उपधातुओंके विषयमें भी जाननी चाहिए।

इस प्रकार क्षपितकर्मांश विधिसे आए हुए क्षीणकषाय जीवके अन्तिम समयमें प्राप्त शरीरमें जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है। तथा स्वयम्भूरमणद्वीपके कर्मभूमिसम्बन्धी भागमें मूलीके शरीरमें उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा होती है। मध्यमें नाना जीवोंका आश्रय लेकर ये बादरनिगोदवर्गणायें अनेक विध होती हैं।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तीसरी विचारणीय सूक्ष्मनिगोदवर्गणा है। बादर और सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें अन्तर यह है कि बादरनिगोदवर्गणा दूसरेके आश्रयसे रहती है और सूक्ष्मनिगोदवर्गणा जलमें, स्थलमें व आकाशमें सर्वत्र विना आश्रयके रहती है। क्षपित कर्मांशविधिसे और क्षपित घोलमान विधिसे आये हुए जो सूक्ष्म निगोद जीव होते हैं उनके यह सूक्ष्म निगोद वर्गणा जघन्य होती है। यह तो आगमप्रसिद्ध बात है कि एक निगोद जीव अकेला नहीं रहता। अनन्तानन्त निगोद जीवोंका एक शरीर होता है। असंख्यातलोकप्रमाण शरीरोंकी एक पुलवि होती है और आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंका एक स्कन्ध होता है। यहाँ ऐसे सूक्ष्म स्कन्धकी एक जघन्य वर्गणा ली गई है। तथा उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा एक बन्धनबद्ध छह जीवनिकायोंके संघातरूप महामत्स्यके शरीरमें दिखलाई देती है। ये अपने जघन्यसे उत्कृष्ट तक निरन्तर क्रमसे पाई जाती हैं। बादर निगोद वर्गणाओंमें जिस प्रकार बीच-बीचमें अन्तर दिखलाई देता है उस प्रकार इनमें नहीं दिखलाई देता।

चौथी विशेष वक्तव्य योग्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणा है। यह वर्गणा आठों पृथिवियाँ, भवन और विमान आदि सब स्कन्धोंके संयोगसे बनती है। यद्यपि इन सब पृथिवी आदिमें अन्तर दिखलाई देता है, पर सूक्ष्म स्कन्धों द्वारा उनका परस्पर सम्बन्ध बना हुआ है, इसलिए इन सबको मिलाकर एक महास्कन्ध द्रव्यवर्गणा मानी गई है।

इसप्रकार ये कुल तेईस वर्गणायें हैं। इनमेंसे आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा मनोवर्गणा और कार्मणशरीरवर्गणा ये पाँच वर्गणायें जीवद्वारा ग्रहण योग्य हैं, शेष नहीं। इन वर्गणाओंका प्रमाण कितना है, पिछली वर्गणासे अगली वर्गणा किस क्रमसे चालू होती है, अपनी जघन्यसे अपनी उत्कृष्ट कितनी बडी है आदि प्रश्नोंका समाधान मूलको देखकर कर लेना चाहिए।

यहां तक एकश्रेणिवर्गणाओंका विचार करके आगे नानाश्रेणिवर्गणाओंका विचार करते हुए कौन वर्गणा कितनी होती है यह बतलाया गया है। एकश्रेणिवर्गणामें जातिकी

अपेक्षा कुल वर्गणायें तेईस मानकर उनका विचार किया गया है और नानाश्रेणिवर्गणामें प्रत्येक वर्गणा संख्याकी अपेक्षा कितनी हैं इसप्रकार परिमाण बतलाकर विचार किया गया है।

वर्गणानिरूपणा– तेईस प्रकारकी वर्गणाओंमेंसे कौन वर्गणा किस प्रकार उत्पन्न होती है, क्या भेदसे उत्पन्न होती है या संघातसे उत्पन्न होती है, या भेद-संघातसे उत्पन्न होती है इस बातका विचार इस अधिकारमें किया गया है। स्कन्धके टूटनेका नाम भेद है। परमाणुओंके समागमका नाम संघात है और स्कन्धका भेद होकर मिलनेका नाम भेद-संघात है। उदाहरणार्थ– द्विप्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओंके भेदसे एकप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है। द्विप्रदेशी वर्गणा त्रिप्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओंके भेदसे, एकप्रदेशी वर्गणाओंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे उत्पन्न होती है। इसी प्रकार आगे भी समझ लेना चाहिए। मात्र सान्तर-निरन्तर वर्गणासे लेकर अशून्यरूप जितनी वर्गणायें हैं वे सब स्वस्थानकी अपेक्षा भेद–संघातसे ही उत्पन्न होती हैं। इतनी बात अवश्य है कि किन्हीं सूत्रपोथियोंमें सान्तर-निरन्तर वर्गणाकी उत्पत्ति भी पूर्वकी वर्गणाओंके संघातसे, उपरिम वर्गणाओंके भेदसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे बतलाई है। कारणका विचार मूल टीकामें किया ही है, इसलिए वहाँसे जान लेना चाहिए।

पहले वर्गणाद्रव्यसमुदाहारके चौदह भेद करके सूत्रकारने वर्गणाप्ररूपणा और वर्गणा-निरूपणा इन दो का ही विचार किया है। शेष बारहका क्यों नहीं किया है इस बातका विचार करते हुए वीरसेनस्वामी कहते हैं कि सूत्रकार चौबीस अनुयोगद्वारस्वरूप महाकर्म-प्रकृतिप्राभृतके ज्ञाता थे, इसलिए उन अनुयोगद्वारोंके अजानकार होनेके कारण नहीं किया है, यह तो कहा नहीं जा सकता है। वे उनका कथन करना भूल गये इसलिए नहीं किया है यह भी कहना उचित नहीं है, क्योंकि, सावधान व्यक्तिसे ऐसी भूल होना सम्भव नहीं है। फिर क्यों नहीं किया है इस बातका समाधान करते हुए वीरसेनस्वामी कहते हैं कि पूर्वाचार्योंके व्याख्यानका जो क्रम रहा है उसका प्ररूपण करनेके लिए ही यहाँ भूतबलि भट्टारकने शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन नहीं किया है। इस प्रकार मूल सूत्रोंमें शेष बारह अनुयोग-द्वारोंका विचार तो नहीं किया गया है, फिर भी वीरसेनस्वामीने उन अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर वर्गणाओंका विस्तारसे विचार किया है, सो समस्त विषय मूलसे जान लेना चाहिए।

बाह्य वर्गणा विचार

इस प्रकार यहाँ तक आभ्यन्तर वर्गणाका विचार करके आगे बाह्यवर्गणाका विचार चार अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर किया गया है। वे चार अनुयोगद्वार ये हैं– शरीरिशरीर-प्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा, शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा और विस्रसोपचयप्ररूपणा। शरीरी जीवको कहते हैं। इनके प्रत्येक और साधारणके भेदसे दो प्रकारके शरीर होते हैं। इन दोनोंका जिसमें प्रतिपादन किया जाता है उसे शरीरिशरीरप्ररूपणा कहते हैं। औदारिक आदि पाँच प्रकारके शरीरोंका अपनी अवान्तर विशेषताओंके साथ जिसमें प्ररूपणा किया जाता है उसे शरीरप्ररूपणा कहते हैं। जिसमें पाँचों शरीरोंके विस्रसोपचयके सम्बन्धके कारणभूत स्निग्ध रूक्षगुणके अविभागप्रतिच्छेदोंका कथन किया जाता है उसे शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा कहते है। तथा जिसमें जीवसे मुक्त हुए उन्हीं परमाणुओंके विस्रसोपचयकी प्ररूपणा की जाती है उसे विस्रसोपचयप्ररूपणा कहते हैं।

शरीरिशरीरप्ररूपणा– इसमें जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारण शरीर ये दो भेद बतलाकर साधारणशरीर वनस्पतिकायिक ही होते हैं और शेष जीव प्रत्येकशरीर होते हैं यह बतलाया गया है। इसके आगे साधारणका लक्षण करते हुए बतलाया है कि जिनका साधारण आहार है और श्वासोच्छ्वासका ग्रहण साधारण है वे साधारण जीव हैं। इनका शरीर एक होता है। उसे व्याप्त कर अनन्तानन्त निगोद जीव रहते हैं, इसलिए इन्हें साधारण कहते हैं और इसीलिए आहार और श्वासोच्छ्वासका ग्रहण भी साधारण होता है। तात्पर्य यह है कि सर्व प्रथम उत्पन्न हुए जीव जितने कालमें शरीर आदि चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होते हैं उतने ही कालमें अनन्तर उसी शरीरमें उत्पन्न हुए जीव भी शरीर आदि चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो जाते हैं। यहां अलग अलग जीवोंके योगके तारतम्यसे और आगे पीछे उत्पन्न होनेसे पर्याप्तियोंके पूर्ण करनेमें कोई अन्तर नहीं पडता। यहां तक पर्याप्तियोंके पूर्ण होनेके समयमें यदि जीव इस शरीरमें उत्पन्न होते हैं तो वे उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही पूर्वमें उत्पन्न हुए जीवों द्वारा ग्रहण किये गये आहारसे उत्पन्न हुई शक्तिको प्राप्त कर लेते हैं। उन्हें उसके लिए अलगसे प्रयत्नशील नहीं होना पडता। विशेष स्पष्ट कहें तो यह कहा जा सकता है कि पर्याप्तियोंकी निष्पत्तिके लिए एक जीव द्वारा जो अनुग्रहण अर्थात् परमाणु-पुद्गलोंका ग्रहण है वह उस समय वहाँ रहनेवाले या पीछे उत्पन्न होनेवाले अन्य अनन्तानन्त जीवोंका अनुग्रहण होता है, क्योंकि, एक तो उस आहारसे जो शक्ति उत्पन्न होती है वह युगपत् सब जीवोंको मिल जाती है। दूसरे उन परमाणुओंसे जो शरीरके अवयव बनते हैं वे सबके होते हैं। इसी प्रकार बहुत जीवोंके द्वारा जो अनुग्रहण है वह एक जीवके लिए भी होता है। एक शरीरमें जो प्रथम समयमें जीव उत्पन्न होते हैं और जो द्वितीयादि समयोंमें उत्पन्न होते हैं वे सब यहाँपर एक साथ उत्पन्न हुए माने जाते हैं, क्योंकि, उन सबका एक शरीरके साथ सम्बन्ध पाया जाता है। यह तो उनके आहारग्रहणकी विधि है। उनके मरण और जन्मके सम्बन्धमें भी यह नियम है कि जिस शरीरमें एक जीव उत्पन्न होता है वहाँ नियमसे अनन्तानन्त जीव उत्पन्न होते हैं और जिस शरीरमें एक जीव मरता है वहाँ नियमसे अनन्तानन्त जीवोंका मरण होता है। तात्पर्य यह है कि वे एक बन्धनबद्ध होकर ही जन्मते हैं और मरते हैं। वे निगोद जीव बादर और सूक्ष्मके भेदसे दो प्रकारके होते है और ये परस्पर अपने सब अवयवों द्वारा समवेत होकर ही रहते हैं। उसमें भी बादर निगोद जीव मूली, थूवर और आर्द्रक आदिके आश्रयसे रहते हैं और सूक्ष्म निगोद जीव सर्वत्र एक बन्धनबद्ध होकर पाये जाते हैं। एक निगोद जीव अकेला कहीं नहीं रहता। इन निगोद जीवोंके जो आश्रय स्थान हैं उनमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं। उनमेंसे एक एक निगोदशरीरमें जितने बादर और सूक्ष्मनिगोद जीव प्रथम समयमें उत्पन्न होते है उनसे दूसरे समयमें उसी शरीरमें असंख्यातगुणे हीन निगोद जीव उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक उत्तरोत्तर प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे हीन असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं। पुनः एक, दो आदि समयसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अंतर देकर पुनः एक, दो आदि समयोंसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार सान्तर निरन्तरक्रमसे जबतक सम्भव है वे निगोद जीव उत्पन्न होते हैं। ये सब उत्पन्न हुए जीव एक साथ एक क्षेत्रावगाही होकर रहते हैं। सूत्रकार कहते हैं कि ऐसे अनन्त जीव हैं जो अभीतक त्रसपर्याप्तको नहीं प्राप्त हुए हैं, क्योंकि, इनका एकेन्द्रिय जातिमें उत्पत्तिका

कारणभूत संक्लेश परिणाम प्रबल है जिससे वे निगोदवास छोडनेमें असमर्थ हैं। अबतक जितने सिद्ध हुए और जितना काल व्यतीत हुआ उससे भी अनन्तगुणे जीव एक निगोद-राशिमें निवास करते हैं। यहाँपर वीरसेनाचार्य संख्यात आदिकी परिभाषा करते हुए लिखते हैं कि आय रहित जिन राशियोंका केवल व्ययके द्वारा विनाश सम्भव है वे राशियाँ संख्यात और असंख्यात कही जाती हैं। तथा आय न होनेपर भी जिस राशिका व्ययके द्वारा कभी अभाव नहीं होता वह राशि अनन्त कही जाती हैं। यद्यपि अर्धपुद्गल परिवर्तन काल भी अनन्त माना जाता है, पर यह उपचार कथन है। और इस उपचारका कारण यह है कि यह अन्य ज्ञानोंका विषय न होकर अनन्त संज्ञावाले सिर्फ केवलज्ञानका विषय है, इसलिए इसमें अनन्तका व्यवहार किया जाता है। निगोदराशि दो प्रकारकी है- चतुर्गतिनिगोद और नित्यनिगोद। जो चारों गतियोंमें उत्पन्न होकर पुनः निगोदमें चले जाते हैं वे चतुर्गतिनिगोद कहलाते हैं। इतरनिगोद शब्द इसीका वाचक है और जो अबतक निगोदसे नहीं निकले हैं या सर्वदा निगोदमें रहते हैं वे नित्यनिगोद कहे जाते हैं। अतीत कालमें कितने जीव त्रस-पर्यायको प्राप्त कर चुके हैं इस प्रश्नका समाधान करते हुए वीरसेनस्वामी लिखते हैं कि अतीतकालसे असंख्यातगुणे जीव ही अभीतक त्रसपर्यायको प्राप्त हुए हैं।

यह अर्थपद है। इसके अनुसार यहाँ आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं। वे ये हैं- सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व। यहाँ इन आठों अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले, चार शरीरवाले और शरीर सहित जीवोंका ओघ और आदेशसे विचार किया गया है। विग्रहगतिमें विद्यमान चारों गतिके जीव दो शरीरवाले होते हैं, क्योंकि, उनके तैजस और कार्मण ये दो शरीर पाये जाते हैं। औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरवाले या वैक्रियिक, तैजस और कार्मणशरीरवाले जीव तीन शरीरवाले होते हैं। औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मणशरीरवाले या औदारिक, आहारक, तैजस और कार्मणशरीरवाले जीव चार शरीरवाले होते हैं। तथा सिद्ध जीव शरीर रहित होते है। यहाँ सत् आदि अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे विशेष व्याख्यान मूलसे जान लेना चाहिए। विशेष बात इतनी है कि सूत्रोंमें केवल सत्प्ररूपणा और अल्पबहुत्व प्ररूपणा ही कही गई है। शेष छहका व्याख्यान वीरसेन आचार्यने किया है।

शरीरप्ररूपणा- इसका व्याख्यान छह अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे किया गया है। वे छह अनुयोगद्वार ये हैं- नामनिरुक्ति, प्रदेशप्रमाणानुगम, निषेकप्ररूपणा, गुणकार, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व। नामनिरुक्तिमें पाँचों शरीरोंकी निरुक्ति की गई है। प्रदेशप्रमाणानुगममें पाँचों शरीरोंके प्रदेश अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवे भागप्रमाण है यह बतलाया गया है। निषेकप्ररूपणाका विचार अवान्तर छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर किया गया है। उनके ये नाम हैं- समुत्कीर्तना प्रदेशप्रमाणानुगम, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, प्रदेशविरच और अल्पबहुत्व। समुत्कीर्तना द्वारा बतलाया गया है कि जिन औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरकी वर्गणाओंका प्रथम समयमें ग्रहण होता है उनमेंसे कुछ एक समय तक, कुछ दो समय तक इस प्रकार तीन आदि समयसे लेकर जिसकी जितनी उत्कृष्ट स्थिति होती है कुछ उतने काल तक रहती है। आशय यह है कि इन शरीरोंकी स्थितिमें आबाधा काल नहीं होता। इसी प्रकार तैजसशरीरके

विषयमें भी जानना चाहिए। मात्र तैजसशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति छयासठ सागर लेनी चाहिए। कार्मणशरीरके परमाणु ग्रहण करनेके बाद एक आवलि तक नहीं खिरते, इसलिए इसके परमाणु कुछ एक समय अधिक एक आवलि तक और कुछ दो समय अधिक एक आवलि तक इस प्रकार तीन समय अधिक एक आवलिसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे कर्मस्थिति-प्रमाण काल तक रहते हैं। कार्मणशरीरकी स्थितिमें कमसे कम एक आवलिप्रमाण आबाधा काल है, इसलिए यहाँ आबाधाको ध्यानमें रखकर निर्जराका विचार किया गया है। प्रदेश-प्रमाणानुगममें बतलाया है कि पाँचों शरीरोंके प्रदेश प्रत्येक समयमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण प्राप्त होते हैं। और यह क्रम अपनी अपनी स्थिति तक जानना चाहिए। अनन्तरोपनिधामें बतलाया है कि पाँचों शरीरोंके प्रदेश प्राप्त होकर प्रथम समयमें बहुत दिये जाते हैं। तथा द्वितीयादि समयोंमें विशेष हीन विशेष हीन दिए जाते हैं। इस प्रकार अपनी अपनी स्थिति पर्यन्त जानना चाहिए। परम्परोपनिधामें बतलाया है कि प्रारम्भके तीन शरीरोंके प्रदेश प्रथम समयमें जितने दिये जाते हैं, अन्तर्मुहूर्त जाने पर उसके अन्तिम समयमें वे आधा दिखाई देते हैं। तथा [illegible] द्विगुणहानि अन्तर्मुहूर्त प्रमाण और नाना द्विगुणहानियाँ आदिके दो शरीरोंमें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण और आहारकशरीरमें संख्यात समयप्रमाण होती हैं। तथा तैजसशरीर और कार्मणशरीरके प्रदेश प्रथम समयमें जितने निक्षिप्त होते हैं, पल्यके असंख्यातवें भाग जाकर वे आधे निक्षिप्त होते हैं। इनकी एक द्विगुणहानि पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है और नाना द्विगुणहानियाँ पल्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। प्रदेशविरचमें सोलह पदवाला दण्डक कहा गया है जिसमें पर्याप्तनिर्वृत्ति, निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान इनका स्वतन्त्र भावसे और सम्मूर्च्छन, गर्भज व औपपादिक जीवोंके आश्रयसे स्वस्थान अल्पबहुत्व कहा गया है। उसके बाद इन्हींका परस्थान अल्पबहुत्व कहा गया है। पुनः इसके आगे प्रदेशविरचके छह अवान्तर अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश करके उनके आश्रयसे पाँच शरीरोंकी प्ररूपणा की गई है। उनके नाम ये हैं- जघन्य अग्रस्थिति, अग्रस्थितिविशेष, अग्रस्थितिस्थान, उत्कृष्ट अग्रस्थिति, भागाभागानुगम और अल्पबहुत्व। निषेकप्ररूपणाके अंतिम अनुयोगद्वार अल्पबहुत्वमें पाँच शरीरोंके आश्रयसे एक गुणहानि और नाना गुणहानियोंके अल्पबहुत्वका विचार किया गया है। इस प्रकार अपने अवान्तर अधिकारोंके साथ निषेक प्ररूपणाका कथन करके गुणकार अनुयोग-द्वारमें पाँच शरीरोंके प्रदेश उत्तरोत्तर कितने गुणे हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए गुणकारका कथन किया है। पदमीमांसामें औदारिक आदि पाँच शरीरोंके जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशोंका स्वामी कौन-कौन जीव है इसका विचार किया गया है। अल्पबहुत्वमें औदारिक आदि पाँच शरीरोंके प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका विचार कर शरीरप्ररूपणा समाप्त की गई है।

शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा- यद्यपि पाँच शरीरोंमें स्निग्धादि गुणोंके कारण जो परमाणुपुद्गल सम्बद्ध होकर रहते हैं उनकी विस्रसोपचय संज्ञा है। फिर भी यहाँ पर इन विस्रसोपचयोंके कारणभूत जो स्निग्धादि गुण हैं उन्हें भी कारणमें कार्यका उपचार करके विस्रसोपचय कहा गया है। इस प्रकार यहाँ इन्हीं स्निग्धादि गुणोंका इस अनुयोगद्वारमें अपने छह अवान्तर अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर विचार किया गया है। उनके नाम ये हैं- अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा, वर्गणाप्ररूपणा, स्पर्धकप्ररूपणा, अन्तरप्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा

और अल्पबहुत्व। अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणामें बतलाया है कि औदारिक शरीरके एक एक प्रदेशमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं। वर्गणाप्ररूपणामें बतलाया है कि इस प्रकार अविभागप्रतिच्छेदवाले सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी एक वर्गणा होती है और ये सब वर्गणायें अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होती हैं। इतनी वर्गणाओंका एक औदारिकशरीरस्थान होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। स्पर्धक प्ररूपणामें बतलाया है कि अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण वर्गणाओंका एक स्पर्धक होता है। तथा सब स्पर्धक मिलकर भी इतने ही होते हैं। अन्तर प्ररूपणामें बतलाया है कि एक स्पर्धकसे दूसरे स्पर्धककी अन्तिम वर्गणामें जितने अविभाग-प्रतिच्छेद होते हैं उन्हें सब जीवोंसे अनन्तगुणे करने पर जो लब्ध आवे उतने अविभाग-प्रतिच्छेद उससे अगले स्पर्धककी प्रथम वर्गणामें जानने चाहिए। शरीरप्ररूपणामें बतलाया है कि ये अनन्त अविभागप्रतिच्छेद शरीरके बन्धनके कारणभूत गुणोंका प्रज्ञासे छेद करने पर उत्पन्न होते हैं और फिर यहीं पर प्रसंगसे छेदके दस भेदोंका स्वरूपनिर्देश किया गया है। अल्पबहुत्वमें पांच शरीरोंके अविभागप्रतिच्छेदोंके अल्पबहुत्वका विचार करके शरीर-विस्रसोपचयप्ररूपणा समाप्त की गई है।

मार्गदर्शक

विस्रसोपचयप्ररूपणा– जो पाँच शरीरोंके पुद्गल जीवने छोड दिये हैं और जो औदारिकभावको न छोडकर सब लोकमें व्याप्त होकर अवस्थित हैं उनकी यहां विस्रसोपचय संज्ञा मानकर विस्रसोपचयप्ररूपणा की गई है। एक एक जीवप्रदेश अर्थात् एक एक परमाणु पर सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय उपचित रहते हैं और वे सब लोकमें से आकर विस्रसोपचयरूपसे सम्बन्धको प्राप्त होते हैं। या वे पाँच शरीरोंके पुद्गल जीवसे अगल होकर सब आकाश प्रदेशोंसे सम्बन्धको प्राप्त होकर रहते हैं। इस प्रकार जीवसे अलग होकर सब लोकको प्राप्त हुए उन पुद्गलोंकी द्रव्यहानि, क्षेत्रहानि, कालहानि और भावहानि किस प्रकार होती है, आगे यह बतलाया गया है और यह बतलानेके बाद जीवसे अभेदरूप पाँच शरीर पुद्गलोंके विस्रसोपचयका माहात्म्य बतलानेके लिए अल्पबहुत्वका निर्देश किया गया है। तथा मध्यमें प्रसंगसे जीवप्रमाणानुगम, प्रदेशप्रमाणानुगम और इनके अल्पबहुत्वका भी विचार किया गया है। इस प्रकार इतना विचार करने पर बाह्यवर्गणाका विचार समाप्त होता है।

चूलिका

पहले जो अर्थ कह आये हैं उनका विशेषरूपसे कथन करना चूलिका है। पहले 'जत्थेय मरदि जीवो' इत्यादि गाथा कह आये हैं। यहां पर सर्व प्रथम इसी गाथाके उत्तरार्ध विचार किया गया है। ऐसा करते हुए बतलाया है कि प्रथम समयमें एक निगोद जीवके उत्पन्न होने पर उसके साथ अनन्त निगोद जीव उत्पन्न होते हैं। तथा जिस समय ये जीव उत्पन्न होते हैं उसी समय उनका शरीर और पुलवि भी उत्पन्न होती है। तथा कहीं कहीं पुलविकी उत्पत्ति पहले भी हो जाती है, क्योंकि, पुलवि अनेक शरीरोंका आधार है, इसलिए उसकी उत्पत्ति पहले माननेमें कोई बाधा नहीं आती। साधारण नियम यह है कि अनन्तानन्त निगोद जीवोंका एक शरीर होता है और असंख्यात लोकप्रमाण शरीरोंकी एक पुलवि होती है। प्रथम समयमें जितने निगोद जीव

उत्पन्न होते हैं दूसरे समयमें वहीं पर असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते है । तीसरे समयमें उनसे भी असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक उत्तरोत्तर असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते रहते हैं उसके बाद कमसे कम एक समयका और अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर पड जाता है । पुनः अन्तरके बादके समयमें असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं और यह क्रम आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक चालू रहता है । इस प्रकार इन निगोद जीवोंकी उत्पत्ति और अन्तरका क्रम कहकर अद्धाअल्पबहुत्व और जीव अल्पबहुत्वका विचार किया गया है । अद्धाअल्पबहुत्वमें सान्तरसमयमें और निरन्तरसमयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका अल्पबहुत्व तथा इन कालोंका अल्पबहुत्व विस्तारके साथ बतलाया गया है । जीव अल्पबहुत्वमें कालका आश्रय लेकर जीवोंका अल्पबहुत्व बतलाया गया है । इसके बाद स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंमें जो बादर और सूक्ष्म निगोद जीव उत्पन्न होते हैं वे सब पर्याप्त ही होते हैं या अपर्याप्त ही होते हैं या मिश्ररूप ही होते हैं इस प्रश्नका समाधान करते हुए प्रतिपादन किया है कि सब बादर निगोद जीव पर्याप्त ही होते हैं, क्योंकि, अपर्याप्तकोंकी आयु कम होनेसे वे पहले मर जाते हैं, इसलिए पर्याप्त जीव ही होते हैं । किन्तु इसके बाद वे मिश्ररूप होते हैं, क्योंकि बादमें पर्याप्त और अपर्याप्त बादर निगोद जीवोंके एक साथ रहनेमें कोई बाधा नहीं आती । किन्तु सूक्ष्म निगोद वर्गणामें सभी सूक्ष्म निगोद जीव मिश्ररूप ही होते हैं, क्योंकि, इनकी उत्पत्तिके प्रदेश और कालका कोई नियम नहीं है ।

इस प्रकार 'जत्थेय मरदि जीवो' इत्यादि गाथाके उत्तरार्धका कथन करके उसके पूर्वार्धका विचार करते हुए बतलाया गया है कि जो बादर निगोद जीव उत्पत्तिके क्रमसे उत्पन्न होते हैं और परस्पर बन्धनके क्रमसे सम्बन्धको प्राप्त होते हैं उनका मरणका क्रमसे ही निर्गम होना है । इनका उत्पत्तिके क्रमसे निर्गमन नहीं होता है, किन्तु मरणके क्रमसे निर्गमन होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । मरणका क्रम क्या है इस प्रश्नका समाधान करते हुए बतलाया है कि वह दो प्रकारका है– यवमध्यक्रम और अयवमध्यक्रम । इनमेंसे पहले अयवमध्यक्रमका निर्देश करते हैं– सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणिके द्वारा मरनेवाले और सबसे दीर्घकाल द्वारा निर्लेप्यमान होनेवाले जीवोंके अन्तिम समयमें मृत होनेसे बचे हुए निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । यहाँ निगोद शब्द पुलविधायी है । अभिप्राय यह है कि क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पूर्वमें मृत हुए जीवोंसे बचे हुए जीवोंकी पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती है । क्षीणकषायके अन्तिम समयमें निगोद जीवोंके शरीर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक शरीरमें पूर्वमें मरनेसे बचे हुए अनन्त निगोद जीव होते हैं । तथा उनकी आधारभूत पुलवियाँ उक्त प्रमाण होती हैं । यहाँ क्षीणकषायके कालके भीतर वा थूवर आदिमें मरनेवाले जीवोंकी प्ररूपणा चार प्रकारकी है– प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि और अल्पबहुत्व । प्ररूपणामें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रत्येक जीव मरते है । प्रमाणमें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रत्येक समयमें अनंत जीव मरते हैं । श्रेणि दो प्रकारकी है– अनंतरोपनिधा और परंपरोपनिधा । अनंतरोपनिधामें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरनेवाले जीव स्तोक हैं । दूसरे समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार आवलिपृथक्त्व कालतक प्रत्येक

समयमें विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं। उसके आगे विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयतक प्रत्येक समयमें संख्यात भाग अधिक जीव मरते हैं। उसके बाद क्षीणकषायके संख्यातवें भागप्रमाण कालमेंसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल शेष रहनेपर इसके भीतर असंख्यातगुणित क्रमसे गुणश्रेणि मरण होता है। परम्परोपनिधामें बतलाया है कि क्षीणकषायके प्रथम समयमें जितने जीव मरते हैं उससे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल जानेपर मरनेवाले जीव दूने हो जाते हैं, इस प्रकार इतना इतना अवस्थित अध्वान जाकर मरनेवाले जीवोंकी संख्या दूनी दूनी होती जाती है और यह क्रम असंख्यातवें भाग अधिक मरनेवाले जीवोंके अन्तिम समयके प्राप्त होनेतक जानना चाहिए। उसके बाद अन्तिम समयतक प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे जीव मरते हैं।

आगे क्षीणकषायके कालमें बादर निगोद जीवके जघन्य आयुप्रमाण कालके शेष रहनेपर बादर निगोद जीव नहीं उत्पन्न होते हैं। इस अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आयुओंका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। आगे जघन्य और उत्कृष्ट बादर और सूक्ष्म निगोद जीवोंकी पुलवियोंका परिमाण बतलाकर सब निगोदोंकी उत्पत्तिमें कारण महास्कन्धके अवयव आठ पृथिवी, टङ्क, कूट, भवन, विमान, विमानेन्द्रक आदि बतलाये गये हैं। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि जब महास्कन्धके स्थानोंका जघन्य पद होता है तब बादर त्रसपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट पद होता है और जब बादर त्रसपर्याप्तकोंका जघन्य पद होता है तब मूल महास्कन्धस्थानोंका उत्कृष्ट पद होता है।

आगे मरणयवमध्य और शमिलायवमध्य आदिका कथन करनेके लिए संदृष्टियां स्थापित करके सब जीवोंमें महादण्डकका कथन किया गया है और संदृष्टियोंमें जो बात दरसाई गई है उसका यहां सूत्रोंद्वारा प्रतिपादन किया गया है। यहां विशेष जानकारीके लिए मूलका स्वाध्याय अपेक्षित है। इस प्रकार इतने कथन द्वारा 'जत्थेय मरइ जीवो' इस गाथाकी प्ररूपणा समाप्त होती है।

अब पांच शरीरोंके ग्रहण योग्य कौन वर्गणायें हैं और कौन ग्रहण योग्य नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए ये चार अनुयोगद्वार आये हैं- वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, प्रदेशार्थता और अल्पबहुत्व। वर्गणाप्ररूपणामें पुनः एक प्रदेशी परमाणु पुद्गल द्रव्य वर्गणासे लेकर कार्मणद्रव्यवर्गणा तककी सब वर्गणाओंका नामोल्लेख किया गया है। वर्गणानिरूपणामें इन वर्गणाओंमेंसे एक-एक वर्गणाको लेकर यह वर्गणा ग्रहणप्रायोग्य नहीं है ऐसी पृच्छा करके जो जो वर्गणा ग्रहणप्रायोग्य नहीं है उसे अग्रहणप्रायोग्य बतलाकर अन्तमें यही पृच्छा अनन्तानन्त परमाणु पुद्गल द्रव्य वर्गणाके विषयमें करके यह बतलाया गया है कि इसमेंसे कुछ वर्गणायें ग्रहणप्रायोग्य हैं और कुछ वर्गणायें ग्रहणप्रायोग्य नहीं हैं। इसका विशेष खुलासा करते हुए वीरसेन स्वामी लिखते हैं कि इस सूत्रमें जघन्य आहारवर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्य वर्गणा तक सब वर्गणाओंकी अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा संज्ञा है। इनमेंसे आहारवर्गणा तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणशरीरवर्गणा ये पांच वर्गणायें ग्रहणप्रायोग्य हैं, शेष नहीं। जो पांच वर्गणायें ग्रहणप्रायोग्य हैं उनमें आहारवर्गणामेंसे औदारिकशरीर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर इन तीन शरीरोंका ग्रहण होता है। तैजस वर्गणामेंसे तैजसशरीरका ग्रहण होता है। भाषावर्गणामेंसे चार प्रकारकी भाषाओंका ग्रहण होता है।

मनोवर्गणामेंसे चार प्रकारके मनकी रचना होती है और कार्मणवर्गणामेंसे ज्ञानावरणादि आठ प्रकारके कर्मोंका ग्रहण होता है। इन सूत्रोंकी टीका करते हुए वीरसेन स्वामीने एक बहुत ही महत्वकी बातकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है। उनका कहना है कि यद्यपि आहार वर्गणासे औदारिक आदि तीन शरीरोंका निर्माण होता है पर जिन आहारवर्गणाओंसे औदारिकशरीरका निर्माण होता है उनसे वैक्रियिक और आहारक शरीरका निर्माण नहीं होता। जिन आहार-वर्गणाओंसे वैक्रियिकशरीरका निर्माण होता है उनसे औदारिक और आहारकशरीरका निर्माण नहीं होता। तथा जिन आहारवर्गणाओंसे आहारकशरीरका निर्माण होता है उनसे औदारिक और वैक्रियिकशरीरका निर्माण नहीं होता। वस्तुतः औदारिक आदि तीन शरीरोंका निर्माण करनेवाली आहारवर्गणायें अलग अलग है उनके मध्यमें व्यवधान न होनेसे उनकी एक वर्गणा मानी गई है। इसी प्रकार भाषा आदि वर्गणाओंमें चार भाषाओं, चार मन और आठ कर्मोंकी वर्गणायें भी अलग अलग जाननी चाहिए। इस प्रकरणके जो सूत्र हैं उन्हींके आधारसे उन्होंने यह अर्थ फलित किया है। प्रदेशार्थतामें सब शरीरोंकी प्रदेशार्थता अनन्तानन्त प्रदेशवाली है यह बतलाकर आदिके तीन शरीरोंमें पांच वर्ण, पांच रस, दो गन्ध और आठ स्पर्श बतलाये हैं। तथा अन्तके दो शरीरोंमें पांच वर्ण पांच रस, दो गन्ध और चार स्पर्श बतलाये हैं। आहा-रकशरीरमें धवल वर्ण होता है ऐसी अवस्थामें यहां पांच वर्ण कैसे बतलाये हैं इसका समाधान करते हुए वीरसेन स्वामी लिखते हैं कि आहारकशरीरके विस्रसोपचयकी अपेक्षा उसका धवल वर्ण कहा जाता है, वैसे उसमें पांचो वर्ण होते हैं। इसी प्रकार इस शरीरमें अशुभ रस, अशुभ गन्ध और अशुभ स्पर्श अव्यक्त भावसे रहते हैं, या अशुभ रस, अशुभ गन्ध, और अशुभ स्पर्श-वाली वर्गणायें आहारकशरीररूपसे परिणमन करते समय शुभ रूप हो जाती हैं, इसलिए इसमें पांच वर्णोंके समान पांच रस, दो गन्ध और आठस्पर्श भी बतलाये है। तथा तैजस और कार्मण स्कन्धमें प्रतिपक्षरूप स्पर्श नहीं होते, इसलिए चार स्पर्श बतलाये है। अल्पबहुत्व दो प्रकारका है- प्रदेश अल्पबहुत्व और अवगाहना अल्पबहुत्व। प्रदेशअल्पबहुत्वमें बतलाया है कि औदारि-कशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश सबसे स्तोक है। उनसे वैक्रियिकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश असं-ख्यातगुणे हैं। उनसे आहारकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश असंख्यातगुणे है। उनसे आहारकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। उनसे तैजसशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश अनन्तगुणे हैं। उनसे भाषा, मन और कार्मणशरीर द्रव्यवर्गणाके प्रदेश उत्तरोत्तर अनन्तगुणे हैं अवगाहना अल्पबहुत्वमें बतलाया है कि कार्मणशरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना सबसे स्तोक है। उससे मनोद्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है। उससे भाषाद्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्या-तगुणी है। उससे आहारकशरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है। उससे वैक्रियिक-शरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है और उससे औदारिक शरीर द्रव्यवर्गणाकी अवगाहना असंख्यातगुणी है।

बन्धविधान

बन्धके चार भेद हैं-प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध। इन चारोंका विस्तारसे निरूपण भगवान् भूतबलि भट्टारकने महाबन्धमें किया है। उसका यहां पर प्ररूपण करनेपर बन्धविधान समाप्त होता है।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
मंगलाचरण	१
बन्धनके चार भेद व उनके नाम	१
बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान शब्दोंकी निरुक्ति	१
बन्ध आदि शब्दोंका लक्षण	२
बन्ध अनुयोगद्वार	
बन्धके चार भेद	२
नामबन्ध आदिमेंसे किसको कौन नय स्वीकार करता है इसका विचार	२
नामबन्धका विचार	४
स्थापनाबन्धका विचार	४
काष्ठकर्म आदिकी व्याख्या	५
भावबन्धके दो भेद	७
आगम भावबन्धका विचार	७
आगमके नौ भेद और उनके लक्षण	७
उपयोगके आठ भेद और उनके लक्षण	९
नोआगम भावबन्धके दो भेद	९
जीवभावबन्धके तीन भेद व उनके लक्षण	९
विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्धका विचार	१०
अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्धके दो भेद	१२
जीवत्व आदि तीनका अविपाक प्रत्ययिक जीवभावके भेदोंमें न ग्रहण करनेके कारणका ऊहापोह	१३
तत्त्वार्थसूत्रमें जीवत्व आदिको पारिणामिक किस अभिप्रायसे कहा है इस बातका भी निर्देश	१३
असिद्धत्व भावके दो भेद ही भव्यत्व और अभव्यत्व	१३
औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभाव-बन्धका विचार	१४
क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्धका-विचार	१५
तदुभयअविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्धका विचार	१८
अजीवभावबन्धके तीन भेद व उनका स्वरूप निर्देश	२२
विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्धका विचार	२३
अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्धका विचार	२४
तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबंधका विचार	२६
द्रव्यबंधके दो भेद	२७
आगमद्रव्यबंधका विशेष विचार	२७
नोआगम द्रव्यबंधके दो भेद	२८
विस्रसाबंधके दो भेद	२८
अनादिविस्रसाबंधके तीन भेद व उनका विशेष ऊहापोह	२९
सादिविस्रसाबंधका विशेष विचार	३०
भेदके कारणका निर्देश	३०
कौन पुद्गल नहीं बँधते और कौन पुद्गल बँधते हैं इस बातका विचार	३१
कितनी मात्रा हीन व अधिक होने पर बंध होता है इस बातका विशेष विचार	३२
विषम और सम शब्दके अर्थ	३३
जघन्य गुणवाले पुद्गल नहीं बँधते इस बातका निर्देश	३३
सादिविस्रसाबंधका उदाहरण सहित निर्देश	३४
प्रयोगबंधके दो भेद व प्रयोगबंधका लक्षण	३६
नोकर्म बंधके पाँच भेद व उनका स्वरूप निर्देश	३७
आलापनबंधका उदाहरणसहित निर्देश	३८
अल्लीवणबंधका उदाहरणसहित निर्देश	३९
संश्लेषबंधका उदाहरण सहित निर्देश	४१
शरीरबंधके पाँच भेद	४१

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

विषय	पृष्ठ
शरीरोंके परस्पर बन्धसे उत्पन्न होनेवाले पन्द्रह अवान्तर भेदोंका निर्देश	४२
शरीरिबन्ध के दो भेद	४४
सादि शरीरिबन्धका विशेष विचार	४५
अनादि शरीरिबन्धका सोदाहरण विचार	४६
कर्मबन्धके विषयमें सूचना	४६
बन्धक अनुयोगद्वार	
गति आदि चौदह मार्गणावाले जीव बन्धक हैं इस बातका निर्देश	४७
गति मार्गणाके आश्रयसे बंधकोंका निर्देश करके खुद्दाबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वारोंके समान जाननेकी सूचना	४७
बन्धनीय अनुयोगद्वार	
बन्धनीय कौन हैं इस बातका निर्देश	४८
वर्गणाप्ररूपणाके आश्रयसे आठ अनुयोगद्वारोंकी सूचना व उनका सयुक्तिक [illegible]	[illegible]
वर्गणाके सोलह अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश	५०
वर्गणाके दो भेद व उनकी मीमांसा	५१
वर्गणानिक्षेपके छह भेद व निक्षेपकथनका प्रयोजन	५१
कौन नय किस निक्षेपको स्वीकार करता है इस बातका विचार	५२
वर्गणाद्रव्यसमुदाहारके चौदह अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश	५३
वर्गणाके सोलह अनुयोगद्वारोंमेंसे आदिके दो का ही कथन क्यों किया है इस बातका विचार	५३
वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका विशेष रूपसे कथन क्यों किया है इस बातका विचार	५४
एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका विचार	५४
द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका विचार	५५
त्रिप्रदेशी आदि परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंका विचार	५७
आहारद्रव्यवर्गणाका विचार	५९

विषय	पृष्ठ
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका विचार	५९
तैजसद्रव्यवर्गणाका विचार	६०
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका विचार	६०
भाषाद्रव्यवर्गणाका विचार	६१
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका विचार	६२
मनोद्रव्यवर्गणाका विचार	६२
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका विचार	६३
कार्मणद्रव्यवर्गणाका विचार	६३
ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाका विचार	६३
ध्रुवस्कन्ध शब्द देनेका प्रयोजन	६४
सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाका विचार	६४
ध्रुवशून्यवर्गणाका विचार	६५
प्रत्येकशरीरवर्गणाका विचार	६५
प्रत्येकशरीरवर्गणाका स्वरूपनिर्देश	६५
प्रत्येकशरीरवर्गणाके जघन्यसे लेकर उत्कृष्ट तकके अवान्तर भेदोंका विशेष विचार	६५
ध्रुवशून्यवर्गणाका विचार	८३
बादरनिगोदवर्गणाका विचार	८४
बादरनिगोदवर्गणाके जघन्यसे लेकर उत्कृष्ट तकके अवान्तर भेदोंका निर्देश	८४
क्षीणकषाय गुणस्थानमें बादरनिगोद जीवों का मरण होकर आगे उनका अभाव क्यों हो जाता है इसका विचार	८९
हिंसा और अहिंसाके स्वरूप पर प्रकाश	८९
ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाका विचार	११२
सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका विचार	११३
सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके आधारका निर्देश	११३
सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके जघन्यसे लेकर उत्कृष्ट तकके अवान्तर भेदोंका विशेष विचार	११४
ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाका विचार	११६
महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका विचार	११७
सब वर्गणाओंके लानेके लिए गुणकार क्या क्या है इस बातका निर्देश	११७
नानाश्रेणिवर्गणाओंकी प्ररूपणा	११८
एकप्रदेशी आदि सब वर्गणायें कैसे उत्पन्न होती हैं इस विषयका विशेष ऊहापोह	१२०
नानाश्रेणि शब्दका अर्थ	१२४

विषय	पृष्ठ
मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज	
चौदह अनुयोगद्वारोंमेंसे दो का ही कथन क्यों किया इसका सयुक्तिक उत्तर	१३४
एकश्रेणि ध्रुवाध्रुवानुगम अनुयोगद्वारके आश्रयसे विचार	१३५
इसी प्रकार नानाश्रेणि ध्रुवाध्रुवानुगमके जाननेकी सूचना	१४०
एकश्रेणि सान्तरनिरन्तरानुगमके आश्रयसे सब वर्गणाओंका विचार	१४०
इसी प्रकार नानाश्रेणि सान्तरनिरन्तरानुगमके जाननेकी सूचना	१४७
एकश्रेणिओजयुग्मानुगमके आश्रयसे सब वर्गणाओंका विचार	१४७
नानाश्रेणिओजयुग्मानुगमके आश्रयसे सब वर्गणाओंका विचार	१४८
एकश्रेणिक्षेत्रानुगम	१४९
नानाश्रेणिक्षेत्रानुगम	१४९
एकश्रेणिस्पर्शनानुगम	१४९
इसी प्रकार नानाश्रेणि स्पर्शनानुगमके जाननेकी सूचनाके साथ विशेष निर्देश	१५०
एकश्रेणिकालानुगम	१५०
इसी प्रकार नानाश्रेणि कालानुगम जाननेकी सूचनाके साथ विशेष निर्देश	१५०
एकश्रेणिअन्तरानुगम	१५१
इसीप्रकार नानाश्रेणिअन्तरानुगम जाननेकी सूचनाके साथ विशेष निर्देश	१५२
एकश्रेणिवर्गणाभावानुगम	१५२
इसी प्रकार नानाश्रेणिवर्गणा भावानुगमके जाननेकी सूचना	१५३
एकश्रेणि नानाश्रेणिवर्गणाउपनयनानुगमके आश्रयसे मतान्तरका निर्देश व उसका परिहार	१५३
एकश्रेणिवर्गणापरिमाणानुगम	१५४
नानाश्रेणिवर्गणापरिमाणानुगम	१५५
एकश्रेणिवर्गणाभागाभागानुगम	१६०
नानाश्रेणिवर्गणाभागाभागानुगम	१६२
एकश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वानुगम	१६३
नानाश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वानुगम	१६९
अनन्तरोपनिधाके दो भेद	१७९
द्रव्यार्थतारूप अनन्तरोपनिधाका विचार	१७९
परम्परोपनिधाके दो भेद	१८२
द्रव्यार्थतारूप परम्परोपनिधाका विचार	१८२
इसी प्रसंगसे प्ररूपणा आदि तीन अनुयोग-द्वारोंके आश्रयसे विचार	१८२
प्रदेशार्थतारूप अनन्तरोपनिधाका विचार	१८३
अनन्तरोपनिधामें द्रव्यार्थताकी संदृष्टि	१८४
अनन्तरोपनिधामें प्रदेशार्थताकी संदृष्टि	१८४
प्रदेशोंका आश्रय लेकर यवमध्यसे पूर्व परम्परोपनिधाका विचार	१८८
इसी प्रसंगसे प्ररूपणा आदि तीन अनुयोग-द्वारोंके आश्रयसे विचार	१८९
अवहारके दो भेद	१९०
द्रव्यार्थताकी अपेक्षा अवहारका विचार	१९०
प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अवहारका विचार	१९२
यवमध्यप्ररूपणाके दो भेद	२०१
द्रव्यार्थताकी अपेक्षा विचार	२०१
श्रेणिप्ररूपणाके दो भेद	२०२
अनन्तरोपनिधाके आश्रयसे विचार	२०२
परम्परोपनिधाके आश्रयसे विचार	२०४
इसी प्रसंगसे प्ररूपणा आदि तीन अनुयोग-द्वारोंके आश्रयसे विचार	२०४
उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाका भागहार	२०६
भागाभाग	२०६
अल्पबहुत्व	२०६
प्रदेशार्थताकी अपेक्षा यवमध्यविचार	२०७
पदमीमांसा	२०७
अल्पबहुत्वके तीन भेद	२०८
नानाश्रेणिद्रव्यार्थता अल्पबहुत्वका निर्देश	२०८
नानाश्रेणिप्रदेशार्थता अल्पबहुत्वका निर्देश	२१२
एकश्रेणि-नानाश्रेणि प्रदेशार्थता अल्प-बहुत्वका निर्देश	२१५

बाह्यवर्गणा विचार

बाह्यवर्गणाकी अन्य प्ररूपणाका प्रारम्भ	२२३
बाह्यवर्गणाके विषयमें विशेष ऊहापोह	२२३

विषय	पृष्ठ
उसके विषयमें चार अनुयोगद्वारोंका नाम निर्देश व स्वरूप कथन	२२४
शरीरिशरीरप्ररूपणा	
जीवोंके दो भेद व उनका स्वरूप निर्देश	२२५
कौन जीव साधारणशरीर हैं और कौन जीव प्रत्येकशरीर हैं इस बातका निर्देश	२२५
साधारण जीवोंका लक्षण निर्देश	२२६
साधारण जीवोंके अनुग्रहणका विचार	२२८
साधारण जीवोंके एकसाथ क्या क्या कार्य होते हैं इस बातका निर्देश	२२९
साधारण जीवोंकी उत्पत्ति और मरणके विषयमें नियम	२३०
दोनों प्रकारके निगोद जीव परस्पर कैसे रहते हैं इस बातका विशेष स्पष्टीकरण	२३१
बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद जीवोंकी आधारभूत पृथिवी आदिकोंके योनिका विचार	२३२
अनन्त जीवोंने निगोदवास नहीं छोडा इस बातका संयुक्तिक निर्देश	२३३
एक शरीरमें रहनेवाले निगोद जीवोंका प्रमाण	२३४
संसारी जीवोंका अभाव क्यों नहीं होता इस बातका सहेतुक विचार	२३५
निगोदके दो भेदोंका निर्देश	२३६
शरीरिशरीरप्ररूपणाका सदादि आठ अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे कथन करनेकी सूचना	२३७
ओघ और आदेशसे सत्प्ररूपणा	२३७
ओघ और आदेशसे द्रव्यप्रमाणप्ररूपणा	२४९
ओघ और आदेशसे क्षेत्रप्ररूपणा	२५३
ओघ और आदेशसे स्पर्शन प्ररूपणा	२५६
ओघ और आदेशसे कालप्ररूपणा	२५७
ओघ और आदेशसे अन्तरप्ररूपणा	२८४
ओघ और आदेशसे भावप्ररूपणा	३०१
ओघ और आदेशसे अल्पबहुत्वप्ररूपणा	३०१

विषय	पृष्ठ
शरीरप्ररूपणा	
शरीरप्ररूपणाके छह अनुयोगद्वारोंका नाम-निर्देश और उनकी सार्थकताका विचार	३२१
औदारिक शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२२
वैक्रियिक शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२५
आठ ऋद्धियोंके नाम	३२५
आहारक शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२७
तैजस शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२७
तैजसशरीरके दो भेदोंका विचार	३२८
निःसरणरूप तैजसशरीरके दो भेदोंका विचार	३२८
कार्मण शब्दकी नामनिरुक्ति व ऊहापोह	३२८
पाँच शरीरोंके प्रदेशोंके प्रमाणका निर्देश	३३०
निषेकप्ररूपणामें छह अनुयोगद्वारोंके नाम	३३१
समुत्कीर्तना	३३१
प्रदेशप्रमाणानुगम	३३६
अनन्तरोपनिधा	३३९
परम्परोपनिधा	३४६
प्रदेशविरच व उसके स्वरूपनिर्देशके साथ सोलह पदवाला दण्डकविधान	३५२
जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिका स्वरूपनिर्देश	३५२
निर्वृत्ति स्थानोंका विचार	३५३
जीवनीयस्थान	३५४
इस विषयमें अल्पबहुत्व	३६१
क्षुद्राभवके दो भेद व उनका स्वरूपनिर्देश	३६२
एक मुहूर्तमें मनुष्यके कितने श्वासोच्छ्वास होते हैं इस बातका निर्देश	३६२
एक अन्तर्मुहूर्तमें कितने क्षुल्लकभवग्रहण होते हैं इस बातका नाम निर्देश	३६२
प्रदेशविरचके छह अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश	३६६
औदारिकशरीरकी अपेक्षा अग्रस्थिति आदि चारका विचार	३६७
अग्रस्थितिका स्वरूप निर्देश	३६७
अग्रस्थितिविशेषका स्वरूप निर्देश	३६७
आहारकके सिवा शेष तीन शरीरोंकी औदारिकके समान जाननेकी सूचना	३६८

विषय	पृष्ठ
आहारकशरीरकी अपेक्षा अग्रस्थिति आदि चारका विचार	३६९
भागाभागानुगमके तीन अनुयोगद्वार	३६०
जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका विचार	३७०
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका विचार	३७१
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	३७२
अजघन्य-अनुत्कृष्ट पदकी औदारिक शरीरका विचार	३७२
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	३७३
अल्पबहुत्वके तीन अनुयोगद्वार	३७३
जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका विचार	३७३
आहारकके सिवा शेष तीन शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	३७७
जघन्य पदकी अपेक्षा आहारकशरीरका विचार	३७८
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका विचार	३७०
आहारकके सिवा शेष तीन शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	३८०
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरका विचार	
जघन्योत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीर का विचार	३८२
आहारकके सिवा शेष तीन शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	३८४
जघन्योत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीर का विचार	३८५
निषेक अल्पबहुत्वके तीन अनुयोगद्वार	३८७
जघन्यपद अल्पबहुत्व	३८८
उत्कृष्टपद अल्पबहुत्व	३८९
जघन्योत्कृष्ट पद अल्पबहुत्व	३९०
गुणकारके तीन अनुयोगद्वार	३९२
जघन्य गुणकार	३९२
उत्कृष्ट गुणकार	३९४
जघन्योत्कृष्ट गुणकार	३९५
पदमीमांसाके दो अनुयोगद्वार	३९७
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिक शरीरकी पदमीमांसा	३९७
तीन अनुयोगद्वारोंके आश्रयसे प्रकृत विषयका उपसंहार करनेकी सूचना	४०५
संचयानुगम और उसके तीन अनुयोगद्वार	४०५
भागहारप्रमाणानुगम व दो मतोंका निर्देश	४०५
प्रथम उपदेशके अनुसार समयप्रबद्ध प्रमाणानुगम	४०८
द्वितीय उपदेशके अनुसार समयप्रबद्ध-प्रमाणानुगम	४०८
अनुत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिक शरीरकी पदमीमांसा	४१०
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरकी पदमीमांसा	४११
अनुत्कृष्ट पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरकी पदमीमांसा	४१३
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी पदमीमांसा	४१४
अनुत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी पदमीमांसा	४१६
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा तैजसशरीरकी पदमीमांसा	४१६
अनुत्कृष्ट पदकी अपेक्षा तैजसशरीरकी पदमीमांसा	४२२
उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा कार्मणशरीरकी पदमीमांसा	४२२
जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी पदमीमांसा	४२३
अजघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी पदमीमांसा	४२४
जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी पदमीमांसा	४२४
अजघन्य पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरकी पदमीमांसा	४२५

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

विषय	पृष्ठ
जघन्यपदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी पदमीमांसा	४२५
अजघन्य पदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी पदमीमांसा	४२६
जघन्य पदकी अपेक्षा तैजसशरीरकी पदमीमांसा	४२६
अजघन्य पदकी अपेक्षा तैजसशरीरकी पदमीमांसा	४२८
जघन्य पदकी अपेक्षा कार्मणशरीरकी पदमीमांसा	४२८
अजघन्य पदकी अपेक्षा कार्मणशरीरकी पदमीमांसा	४२९
अल्पबहुत्व	४२९
शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा	
शरीरविस्रसोपचय प्ररूपणाके छह अनुयोगद्वार	४३०
विस्रसोपचयका स्वरूपनिर्देश	४३०
औदारिकशरीरकी अपेक्षा एक प्रदेशमें अविभागप्रतिच्छेदोंका प्रमाण निर्देश	४३१
अविभागप्रतिच्छेदोंका स्वरूप निर्देश	४३१
कितने अविभागप्रतिच्छेदोंकी एक वर्गणा होती है इस बातका निर्देश	४३२
कुल वर्गणाओंका प्रमाण निर्देश	४३२
कितनी वर्गणाओंका एक स्पर्धक होता है इस बातका विचार	४३३
कुल स्पर्धकोंका प्रमाण निर्देश	४३३
एक एक स्पर्धकका कितना अन्तर होता है इस बातका निर्देश	४३४
अविभागप्रतिच्छेद कैसे निष्पन्न किये जाते हैं इस बातका विचार	४३४
छेदनाके दस भेद व उनका स्वरूप निर्देश	४३५
पाँच शरीरोंके अविभागप्रतिच्छेदोंका अल्पबहुत्व	४३७
एक एक शरीरपरमाणु पर कितने विस्रसोपचय होते हैं इस बातका निर्देश	४३८
विस्रसोपचयोंका स्थान विचार	४३९

विषय	पृष्ठ
जीवसे अलग होनेपर उनकी चार प्रकारकी हानिका निर्देश	४४०
द्रव्यहानिकी अपेक्षा औदारिक शरीरकी एकप्रदेशी वर्गणाका विचार	४४१
द्विप्रदेशी आदि वर्गणाओंका विचार	४४२
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	४४४
क्षेत्रहानिकी अपेक्षा औदारिक शरीरकी एक प्रदेशी वर्गणाका विचार	४४४
द्विप्रदेशी आदि वर्गणाओंका विचार	४४५
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	४४७
कालहानिकी अपेक्षा औदारिकशरीरके एकप्रदेशी वर्गणाद्रव्यका विचार	४४७
द्विप्रदेशी आदि वर्गणाद्रव्यका विचार	४४८
शेष चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	४४९
भावहानिकी अपेक्षा औदारिकशरीरके एक गुणयुक्त वर्गणा द्रव्यका विचार	४५०
द्विगुणयुक्त आदि वर्गणा द्रव्यका विचार	४५०
द्विगुण शब्दका अर्थ	४५१
चार शरीरोंकी अपेक्षा इसी प्रकार जाननेकी सूचना	४५३
पाँच शरीरोंके आश्रयसे विस्रसोपचय अल्पबहुत्वका कथन	४५३
जीवप्रतिबद्ध विस्रसोपचयका अल्पबहुत्व	४५९
प्रकृत प्ररूपणाको स्पष्ट करनेके लिए तीन अनुयोगद्वारोंका नाम निर्देश	४६२
जीवप्रमाणानुगम	४६३
प्रदेशप्रमाणानुगम	४६३
अल्पबहुत्वके दो भेदोंका नाम निर्देश	४६५
जीव अल्पबहुत्व	४६५
प्रदेश अल्पबहुत्व	४६६
चूलिका	
अगला ग्रन्थ चूलिका है इस बातकी प्रतिज्ञा	४६९

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

विषय	पृष्ठ
' जत्थेय मरदि जीवो ' इस गाथाके उत्तरार्धके कथनकी प्रतीज्ञा	४६९
प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण	४६९
द्वितीयादि समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण	४७०
इस प्रकार कितने कालतक जीव निरन्तर रूपसे उत्पन्न होते हैं इस बातका निर्देश	४७१
पुनः अन्तर देकर निरन्तर क्रमसे कितने कालतक जीव उत्पन्न होते हैं इस बातका निर्देश	४७१
अल्पबहुत्वके दो भेदोंका निर्देश	४७४
अद्धाअल्पबहुत्व	४७४
सान्तर समयमें उपक्रमण कालका स्वरूप निर्देश	४७४
निरन्तर समयमें उपक्रमण कालका स्वरूप निर्देश	४७४
सान्तर समयमें उपक्रमणकाल विशेषका स्वरूप निर्देश	४७५
उपक्रमणकालविशेषका स्वरूप निर्देश	४७५
सान्तर उपक्रमण जघन्य कालका स्वरूप निर्देश	४७६
उत्कृष्ट सान्तर उपक्रमणकालका स्वरूप निर्देश	४७६
सान्तर उपक्रमणकालका स्वरूप निर्देश	४७७
सान्तर उपक्रमणकालविशेषका स्वरूप निर्देश	४७७
निरन्तर उपक्रमणकाल विशेषका स्वरूप निर्देश	४७८
अपक्रमणकालका स्वरूप निर्देश	४७९
प्रबन्धनकालका स्वरूप निर्देश	४८०
जीवअल्पबहुत्व विचार	४८१
स्कन्ध आदिके आश्रयसे सब बादर निगोद पर्याप्त होते हैं या मिश्ररूप होते हैं इस बातका निर्देश	४८३
स्कन्ध आदिके आश्रयसे सब सूक्ष्मनिगोद मिश्ररूप होते हैं इस बातका निर्देश	४८४
बादर निगोदोंका मरणक्रमसे निर्गमन होता है इस बातका निर्देश	४८५
अयवमध्यक्रमसे निर्गमनका विचार	४८७
क्षीणकषायके कालमें जघन्य आयुमात्र काल शेष रहनेपर बादर निगोद जीव नहीं उत्पन्न होते इस अर्थका ज्ञान करानेके लिए आयुओंके अल्पबहुत्वका कथन	४९१
गुणश्रेणिमरणके अन्तिम समयमें जघन्य-बादर निगोद वर्गणा होती है इस बातका निर्देश	४९२
जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणाका प्रमाण कथन	४९२
उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोदवर्गणाका प्रमाण कथन	४९३
उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाकाप्रमाणकथन	४९३
निगोदवर्गणाओंके कारणका निर्देश	४९४
महास्कन्धके स्थानोंका निर्देश व उनका स्वरूप कथन	४९४
महास्कन्ध वर्गणाका जघन्य व उत्कृष्टभाव किस अवस्थामें होता है इस बातका निर्देश	४९५
मरणयवमध्य और शमिलायवमध्य आदिका कथन करनेके लिए संदृष्टि	४९६
सब जीवोंमें महादण्डकका निर्देश	५०१
क्षुल्लकभवके तीन भाग	५०१
प्रथम त्रिभागका विचार	५०१
आबाधाके तीन प्रकार	५०२
प्रकारान्तरसे प्रथम त्रिभागका विचार	५०२
मध्यम त्रिभागका विचार	५०२
यवमध्यविचार	५०२
शमिला शब्दका अर्थ	५०३
शमिलामध्यका तात्पर्य	५०३
सब यवमध्योंकी यवमध्य और शमिलामध्य ये दो संज्ञायें हैं इस बातका निर्देश	५०३
आसंक्षेपाद्धाका अर्थ	५०३

विषय	पृष्ठ
आसंक्षेपाद्धा कहाँसे कहाँ तक होता है इस बातका निर्देश	५०३
क्षुल्लकभवग्रहणका स्वरूप निर्देश	५०४
वह कहाँ होता है इस बातका विचार	५०४
जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति कहाँ होती है इस बातका निर्देश	५०४
उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिके कालका निर्देश	५०४
सूक्ष्मनिगोद जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिके कालप्रमाणका निर्देश	५०५
इन्हीं जीवोंकी उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिके कालका निर्देश	५०६
सूक्ष्मनिगोद जीवोंकी उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्तिमें होनेवाले आवश्यक	५०६
निर्लेपन शब्दका अर्थ	५०७
बादरनिगोद अपर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५०८
सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्त जीवोंका आयु यवमध्य कहाँसे कितना काल जानेपर होता है इस बातका विचार	५१०
सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका आयुयवमध्य कहाँसे कितना काल जानेपर होता है इस बातका विचार	५११
सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरण यवमध्य कहाँसे कितना काल जानेपर होता है इस बातका विचार	५११
बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरण यवमध्य कहाँसे कितना काल जानेपर होता है इस बातका विचार	५१२
सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान कहाँसे कितना काल जानेपर कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५१३
बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके निर्वृत्ति-स्थान कहाँसे कितना काल जानेपर कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५१४
सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर कहाँसे कितना काल जानेपर होता है इस बातका निर्देश	५१५
प्रकृतमें आवश्यकोंके निर्देशकी प्रतिज्ञा	५१६
तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थान कहाँसे कितना काल जानेपर कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५१६
वे तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थान उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते हैं इस बातका निर्देश	५१७
इन तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थानोंका अल्पबहुत्व	५१८
तीन शरीरोंके इन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान कहाँसे कितना काल जाने पर कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५१९
तीन शरीरोंके ये निर्वृत्तिस्थान उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते हैं इस बातका निर्देश	५२०
इन तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थानोंका अल्पबहुत्व	५२१
तीन शरीरोंके आनापान, भाषा और मन-संबंधी निर्वृत्तिस्थान कहाँसे कितना काल जाने पर कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५२१
तीन शरीरोंके ये निर्वृत्तिस्थान उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते हैं इस बातका निर्देश	५२२
इन तीन शरीरोंके इन निर्वृत्तिस्थानोंका अल्पबहुत्व	५२५
तीन शरीरोंके निर्लेपनस्थान कितना काल जाने पर कितने होते हैं इस बातका निर्देश	५२६
निर्लेपनस्थानका स्वरूप निर्देश	५२६
शरीरपर्याप्तिका स्वरूप निर्देश	५२७
इन्द्रियपर्याप्तिका स्वरूप निर्देश	५२७
निर्लेपनस्थानका स्वरूप निर्देश	५२७
तीन शरीरोंके ये निर्लेपनस्थान उत्तरोत्तर विशेष अधिक होते हैं इस बातका निर्देश	५२८
तीन शरीरोंके इन निर्लेपनस्थानोंका अल्पबहुत्व	५२९
प्रकृतमें आवश्यकोंका निर्देश	५२९

विषय	पृष्ठ
सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके कहाँसे कितना जाकर कितने निर्वृत्तिस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३०
बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके कहाँसे कितना जाकर कितने निर्वृत्तिस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३१
सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका कहाँसे कितना काल जाने पर आयुयवमध्य होता है इस बातका निर्देश	५३२
बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका कहाँसे कितना काल जाने पर आयुयवमध्य होता है इस बातका निर्देश	५३३
सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका कहाँसे कितना काल जाने पर मरणयवमध्य होता है इस बातका निर्देश	५३३
बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका कहाँसे कितना काल जाने पर मरणयवमध्य होता है इस बातका निर्देश	५३४
सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके कहाँसे कितना काल जानेपर कितने निर्लेपनस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३५
बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके कहाँसे कितना काल जाने पर कितने निर्लेपनस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३५
यहीं पर प्रत्येक शरीर पर्याप्तकोंके कितने निर्लेपनस्थान होते हैं इस बातका निर्देश	५३६
इस विषयमें अल्पबहुत्व	५३६
यहाँ एकेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रियसंबंधी आवश्यकोंका निर्देश	५३७
बन्धनीय वर्गणाओंके प्रसंगसे चार अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश	५४१
वर्गणाप्ररूपणा	५४२
वर्गणानिरूपणाके प्रसंगसे कौन वर्गणा ग्रहणप्रायोग्य है और कौन वर्गणा ग्रहणप्रायोग्य नहीं है इस बातका निर्देश	५४३
ग्रहणप्रायोग्यका अर्थ	५४३
अग्रहणप्रायोग्यका अर्थ	५४३
आहारद्रव्यवर्गणाका कार्य निर्देश	५४६
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका स्वरूप निर्देश	५४८
तैजसशरीर द्रव्यवर्गणाका कार्य निर्देश	५४९
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका स्वरूप निर्देश	५४९
भाषाद्रव्यवर्गणाका कार्य निर्देश	५५०
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका स्वरूप निर्देश	५५१
मनोद्रव्यवर्गणाका कार्य निर्देश	५५१
अग्रहणद्रव्यवर्गणाका स्वरूप निर्देश	५५२
कार्मणद्रव्यवर्गणाका कार्य निर्देश	५५३
अपने अपने अवान्तर कार्यको करनेवाली ये वर्गणायें अलग अलग हैं इस बातका निर्देश	५५३
औदारिकशरीर वर्गणाओंके प्रदेशार्थताका व वर्णादिकका विचार	५५४
वैक्रियिकशरीरवर्गणाओंके प्रदेशार्थताका व वर्णादिकका विचार	५५६
आहारकशरीरवर्गणाओंके प्रदेशार्थता व वर्णादिकका विचार	५५७
आहारकशरीर धवलवर्णवाला होता है फिर पाँच वर्णवाला क्यों कहा है इस प्रश्नका समाधान इसी प्रकार पाँच रस आदिवाला कहनेके कारणका निर्देश	५५७
तैजसशरीरवर्गणाकी प्रदेशार्थता व वर्णादिकका विचार	५५८
भाषा, मन और कार्मणवर्गणाकी प्रदेशार्थता व वर्णादिकका विचार	५५९
प्रकृतमें दो प्रकारके अल्पबहुत्व कहनेकी प्रतिज्ञा	५५९
प्रदेशअल्पबहुत्व विचार	५६०
अवगाहना अल्पबहुत्व विचार	५६२
बन्धविधान	
बन्धविधानके चार भेद	५६४
बन्धविधानका विशेष व्याख्यान महाबंधमें किया है इस बातकी सूचना	५६४

मार्गदर्शक ... ...

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स पंचमे खंडे वग्गणाए

बंधणाणुयोगद्दारं

सिद्धे विउद्धसयले अज्झत्थबहित्थबंधणुम्मुक्के ।
भत्तीए अहं णमिउं पुणो पुणो बंधणं वोच्छं ॥ १ ॥

बंधणे त्ति चउव्विहा कमविभासा*-- बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविहाणे त्ति ॥ १ ॥

बंधो बंधणं, तेण बंधो सिद्धो । बध्नातीति बन्धनः । तदो बंधगाणं गहणं । बध्यत इति कर्मसाधने समाश्रीयमाणे बंधणिज्जस्स गहणं । बध्यते अनेनेति करणसाधने

सब पदार्थोंका साक्षात्कार करनेवाले और भीतर तथा बाहरके सब बन्धनोंसे मुक्त हुए सिद्धोंको बार बार भक्तिपूर्वक नमस्कार करके मैं (ग्रन्थकर्ता) बन्धननामक अनुयोग-द्वारका कथन करता हूं ॥ १ ॥

' बन्धन ' इस अनुयोगद्वारमें बन्धनकी क्रमसे चार प्रकारकी विभाषा है-- बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान ॥ १ ॥

1-46 51 58-564 564

बँधना इसका नाम बंधन है, इससे बंधकी सिद्धि होती है । जो बाँधता है वह बंधन है, इससे बंधकका ग्रहण होता है । ' जो बाँधा जाता है ' इस प्रकार कर्मसाधनका आश्रय करने-पर बंधन शब्दसे बध्यनीयका ग्रहण होता है । ' जिसके द्वारा बाँधा जाता है ' इस प्रकार करण

---

* ताप्रतौ ' कम्मविभासा ' इति पाठः ।

शब्दनिष्पत्तौ सत्यां बन्धिवधानोपलब्धिः । तेण बंधणस्स चउव्विहा चेव कमविभासा होदि ।

दव्वस्स दव्वेण दव्व-भावाणं वा जो संजोगो समवाओ वा सो बंधो णाम । बंधस्स दव्व-भावभेदभिण्णस्स जे कत्तारा ते बंधया णाम । बंधपाओग्गपोग्गलदव्वं बंधणिज्जं णाम । पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसभेदभिण्णा बंधवियप्पा बंधविहाणं णाम। एदेसु चउसु बंधणेसु ताव बंधपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

जो सो बंधो णाम सो चउव्विहो–णामबंधो ट्ठवणबंधो दव्वबंधो भावबंधो चेदि ॥ २ ॥

बंधणयविभासणदाए को णओ के बंधे इच्छदि ॥ ३ ॥

णिक्खेवं काऊण तदट्ठपरूवणं मोत्तूण बंधणयविभासणा किमट्ठं कीरदे? ण एस दोसो, अणवगयणयसरूवस्स भव्वजीवस्स णिक्खेवट्ठपरूवणाए किज्जंतीए अवुत्ततुल्लत्तप्पसंगादो अण्णा॰णविणासणट्ठं परूवणा कीरदे. जदि सा तं ण कुणइ तो सा किंफला

साधनमें बन्धन शब्दकी सिद्धि करनेपर उससे बन्धविधानका ग्रहण होता है । इसलिये बन्धनका विशेष व्याख्यान क्रमसे चार प्रकारका ही होता है ।

विशेषार्थ– यहां व्युत्पत्तिपूर्वक ' बन्धन ' के चार भेद किये गये हैं– बन्ध, बन्धक बन्धनीय और बन्धविधान । कोई किसीसे बंधता है इससे बन्धकी सिद्धि की गई है । जो बाँधता है वह बन्धक है, और जो बाँधता है वह बन्धनीय है । इससे बन्धक और बन्धनीयकी सिद्धि की गई है । जब कोई वस्तु बंधती है तो वह कितने प्रकारसे बंधती है, इसके द्वारा बन्धविधानकी सिद्धि की गई है । इस प्रकार बन्धनके चार भेद ही हो सकते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

• द्रव्यका द्रव्यके साथ तथा द्रव्य और भावका क्रमसे जो संयोग और समवाय होता है वह बन्ध कहलाता है । द्रव्य और भावके भेदसे भिन्न दो प्रकारके बन्धके जो कर्ता हैं वे बन्धक कहलाते हैं । बन्धके योग्य पुद्गल द्रव्य बन्धनीय कहा जाता है । प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे भेदको प्राप्त हुए बन्धके भेदोंको बन्धविधान कहते हैं ।• इन चार प्रकारके बन्धनोंमेंसे सर्व प्रथम बन्धका कथन करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं –

बन्धके चार भेद हैं- नामबन्ध, स्थापनाबन्ध, द्रव्यबन्ध और भावबन्ध ॥ २ ॥

बन्धका नयकी अपेक्षा विशेष विचार करनेपर कौन नय किन बन्धोंको स्वीकार करता है ॥ ३ ॥

शंका– निक्षेपका निर्देश करनेके बाद उसका निरूपण करना था, किन्तु वैसा न करके पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किसलिये किया जाता है ?

समाधान– यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नयके स्वरूपको समझे विना भव्योंको निक्षेपका कथन करनेपर वह अनुक्तके समान प्राप्त होता है, इसलिये अज्ञानकाविनाश करनेके लिए पहले बन्धनका नयकी अपेक्षा विशेष विचार किया गया है । यदि वह अज्ञानका विनाश न करे

• सप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ- का-ताप्रतिषु ' अण्णोण्णविणासणट्ठं ' इति पाठः ।

होज्ज । जदि एवं, तो बंधणयविभासणा चेव पुव्वं किण्ण परूविदा ? ण, णिक्खेवे अणुद्दिट्ठे संते तमाधारं काऊण भण्णमाणणयविभासणाणुववत्तीदो । तम्हा णिक्खेवं काऊण पच्छा बंधणयविभासणा कीरदे ।

णेगम-ववहार-संगहा सव्वे बंधे ॥ ४ ॥

णेगम-ववहार-संगहणया सव्वे बंधे इच्छंति; तेसिं विसए चदुण्णमेदेसिं संभवादो। सुद्धसंगहणए चदुण्णमेदेसिं णिक्खेवाणं संभवो णत्थि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं; असुद्धसंगहम्मिसदूणेदेसिं णिक्खेवाणमुवलंभादो । दव्वट्ठिएसु एदेसु णएसु कधं भावणिक्खेवो लब्भइ ? ण, वंजणपज्जायम्मिसदूण भावबंधोवलंभादो ।

उजुसुदो ट्ठवणबंधं णेच्छदि ॥ ५ ॥

कुदो ? तत्थ भावाणं सरिसत्ताभावादो । ण च संकप्पवसेण भावो भावंतरं पडिवज्जदि; एगत्थंभम्मि संकप्पवसेण तिहुवणप्पवेसप्पसंगादो । ण च एवं, तिहुवणभावाणुवलंभादो ।

सद्दणओ णामबंधं भावबंधं च इच्छदि ॥ ६ ॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तो उसका और क्या फल हो सकता है ?

शंका–यदि ऐसा है तो पहले बन्धका नयकी अपेक्षा ही विशेष विचार क्यों नहीं किया?

समाधान–नहीं, क्योंकि, निक्षेपका कथन किये बिना उसे आधार बनाकर नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान करना नहीं बन सकता, इसलिये निक्षेपका निर्देश करनेके बाद ही बन्धका नयकी अपेक्षा विशेष व्याख्यान किया है ।

नैगम, व्यवहार और संग्रह नय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं ॥ ४ ॥

नैगमनय, व्यवहारनय और संग्रहनय सब बन्धोंको स्वीकार करते हैं ; क्योंकि, इनके विषयरूपसे ये चारों बन्ध सम्भव हैं । यदि कहा जाय कि शुद्ध संग्रहनयमें ये चारों निक्षेप सम्भव नहीं हैं, सो ऐसा कहना ठीक नहीं है ; क्योंकि, अशुद्ध संग्रहनयकी अपेक्षा ये सब निक्षेप उसके विषय बन जाते हैं ।

शंका–ये तीनों द्रव्यार्थिक नय हैं, इसलिये इनके विषयरूपसे भावनिक्षेप कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, व्यञ्जनपर्यायकी अपेक्षा भावबन्ध इनका विषय बन जाता है ।

ऋजुसूत्रनय स्थापनाबन्धको स्वीकार नहीं करता ॥ ५ ॥

क्योंकि, यह नय पदार्थोंकी सदृशताको स्वीकार नहीं करता । यदि कहा जाय कि संकल्पवश एक पदार्थ दूसरे पदार्थरूप हो जायगा, सो यह बात भी नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर एक खम्भेमें संकल्पवश तीन लोकके प्रवेशका प्रसंग प्राप्त होता है । और ऐसा है नहीं, क्योंकि, उसमें तीन लोकका सद्भाव नहीं पाया जाता ।

शब्दनय नामबन्ध और भावबन्धको स्वीकार करता है ॥ ६ ॥

कधं णामबंधस्स तत्थ संभवो ? ण, णामेण विणा इच्छिदत्थपरूवणाए अणुववत्तीदो !

जो सो णामबंधो णाम सो जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णामं कीरदि बंधो त्ति सो सव्वो णामबंधो णाम ॥ ७ ॥

णामस्स पवुत्ती एदेसु अट्ठसु चेव; एदेहिंतो बज्झस्स अण्णस्साणुवलंभादो । एदेसु अट्ठसु पवत्तमाणबंधसद्दो णामबंधो कधं णाम अप्पाणं⊕ पयासेदि ? ण, सुज्ज-मणिचंदादिसु स-परप्पयासस्सुवलंभादो ।

जो सो ट्ठवणबंधो णाम सो दुविहो– सब्भावट्ठवणाबंधो चेव असब्भावट्ठवणाबंधो चेव ॥ ८ ॥

सब्भावासब्भावट्ठवणबंधेहिंतो पुधभूदट्ठवणबंधाभावादो दुविहो चेव ट्ठवणबंधो होदि । को ट्ठवणबंधो णाम ? अण्णबंधम्मि अण्णबंधस्स सो एसो त्ति बुद्धीए ट्ठवणा

शंका– इन दोनों नयोंमें नामबन्ध कैसे सम्भव है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, नामके बिना इच्छित पदार्थका कथन नहीं किया जा सकता; इस अपेक्षा नामबन्धको इन दोनों नयोंके विषय स्वीकार किया है ।

जो यह नामबन्ध है वह इस प्रकार है- एक जीव, एक अजीव, बहुत जीव, बहुत अजीव, एक जीव और एक अजीव, एक जीव और बहुत अजीव, बहुत जीव और एक अजीव तथा बहुत जीव और बहुत अजीव; इनमेंसे जिसका बन्ध यह नाम किया जाता है वह सब नामबन्ध है ॥ ७ ॥

नामकी प्रवृत्ति इन आठोंमें ही होती है, क्योंकि, इनके बाहर अन्य पदार्थ नहीं पाया जाता ।

शंका– इन आठमें प्रवृत्त हुआ बन्ध शब्द नामबन्ध होता हुआ अपने आपको कैसे प्रकाशित करता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, सूर्य, मणि और चन्द्र आदिमें स्व और परके प्रकाशनकी योग्यता पाई जाती है । आशय यह है कि जैसे सूर्य आदि स्व-परप्रकाशक होते हैं वैसे नाम शब्द भी स्व-परप्रकाशक है ।

स्थापना बन्ध दो प्रकारका है--सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भाव-स्थापनाबन्ध ॥ ८ ॥

सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्धसे जुदा कोई तीसरा स्थापनाबन्ध नहीं पाया जाता, इसलिये स्थापनाबन्ध दो प्रकारका ही होता है ।

शंका - स्थापनाबन्ध किसे कहते हैं ?

समाधान– अन्य बन्धमें अन्य बन्धकी ' वह यह है' इस प्रकार बुद्धिसे स्थापना करना स्थापनाबन्ध है । आकृतिवाले पदार्थमें सद्भावस्थापना होती है और आकृतिरहित पदार्थमें

⊕ ताप्रतौ 'णामबंधो' । कथ णामं अप्पाणं इति पाठः ।

ठवणबंधो णाम । आकृतिमति सद्भावस्थापना, अनाकृतिमति तद्विपरीता ।

जो सो सब्भावासब्भावट्ठवणाबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेण-कम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे एवमादिया सब्भाव–असब्भावट्ठवणाए ठविज्जदि बंधो त्ति सो सव्वो सब्भाव–असब्भावट्ठवणबंधो णाम ॥ ९ ॥

सीवणि-खइरसागकट्ठादिसु चक्कबंध-मुरवबंध-विज्जाहरबंध-णागपासबंध-संसरवास-बंधादीणं जहासरूवेण घडियठवणा सब्भावट्ठवणबंधो णाम । अजहासरूवेण एदेसिं बंधाणं तेसु ठवणा असब्भावट्ठवणबंधो णाम । चित्तारेहिंतो वण्णविसेसेहि णिप्फ-ण्णाणि चित्तकम्माणि णाम । वत्थेसु पाण–सालिय–कोसट्टादीहि जाणि वूण-णकिरियाए* णिप्पाइदाणि रूवाणि छिप्पएहि वा कदाणि पोत्तकम्माणि णाम । लेप्पयारेहि लेविऊण जाणि णिप्पाइदाणि रूवाणि ताणि लेप्पकम्माणि णाम । पत्थरकट्टएहि* जाणि पव्वदेसु घडिदाणि रूवाणि ताणि लेणकम्माणि णाम । तेहि चेव छिण्णसिलासु घडिदरूवाणि सेलकम्माणि णाम ।

असद्भावस्थापना होती है ।

जो वह सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापनाबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है–– काष्ठकर्मोंमें, पोतकर्मोंमें, लेप्यकर्मोंमें, लयनकर्मोंमें, शैलकर्मोंमें, गृहकर्मोंमें, भित्तिकर्मोंमें, दन्तकर्मोंमें, भेंडकर्मोंमें; तथा अक्ष या कौडी इनको आदि लेकर और दूसरे पदार्थ अभेदस्वरूपसे सद्भावस्थापना तथा असद्भावस्थापनामें 'यह बन्ध है' इस रूपसे स्थापित किये जाते हैं वह सब सद्भावस्थापनाबन्ध और असद्भावस्थापना बन्ध है ॥ ९ ॥

श्रीपर्णी, खैर और साग काष्ठ आदिमें चक्रबन्ध, मुरजबन्ध, विद्याधरबन्ध, नागपाशबन्ध, और संसारवासबन्ध आदिकी तदाकार स्थापना करना सद्भावस्थापनाबन्ध कहलाता है । इन बन्धोंकी उन श्रीपर्णी आदि काष्ठोंमें अतदाकार स्थापना करना असद्भावस्थापनाबन्ध कहलाता है । चित्रकार रंग विशेषोंसे जो चित्र बनाते हैं वे चित्रकर्म कहलाते हैं । वस्त्रोंमें पाण, सालिय और कोसट्ट आदि बुनकरोंके द्वारा बुनने रूप क्रियासे जो आकार बनाये जाते हैं या छीपा उनपर जो आकार बनाते हैं वे पोतकर्म कहलाते हैं । लेप्यकार लेपन कर जो आकार बनाते हैं वे लेप्यकर्म कहलाते हैं । पत्थरफोडा पर्वतोंमें जो आकार घटित करते हैं वे लयनकर्म कहलाते हैं । वे ही छिन्न शिलाओंमें जो आकार घटित करते हैं वे शैलकर्म कहलाते हैं । मृत्तिकापिण्डके द्वारा प्रासादोंमें जो

* अप्रतौ '–कोसट्टादीहि जाणि वूणणकिरियाए' काप्रतौ '–कोसट्टादीहि जाणि वूणणकिरियाए ताप्रतौ '–कोसट्टादीहि जाणि वूणणकिरियाए' इति पाठः । * अ-आ-काप्रतिषु 'एत्थरकट्टएहि' ताप्रतौ 'पत्थरकट्टएहि' इति पाठः ।

मट्टियपिंडेण पासादेसु☆ घडिदरूवाणि गिहकम्माणि णाम । तेण चेव कुड्डेसु घडिद-रूवाणि भित्तिकम्माणि णाम । दंतिदंतादिसु घडिदरूवाणि दंतकम्माणि णाम। भंडेहि घडिदरूवाणि भेंडकम्माणि णाम । एदाणि वस विह कम्माणि देसामासियाणि । तेण पत्तकम्म-भिंगकम्म-तलवत्तकम्म-तालिवत्तकम्म-भुजवत्तकम्म-सीवणकम्म-मणिवि-याण-कम्मादीणि वत्तव्वाणि । एदेसु कम्मेसु जहासरूवेण टुविदबंधो सब्भावट्ठवणबंधो णाम। तव्विवरीयसरूवेण ट्ठवणाबंधो असब्भावट्ठवणबंधो णाम । एदेसिं देसामसियत्तं कधं णव्वदे ? उवरि भण्णमाण-एवमादिय-वयणादो । अक्खो णाम पासओ, वराडओ णाम कवड्डुओ । एदाणि वे वि वयणाणि असब्भावट्ठवणाए ठविदाणि । कुदो एदं णव्वदे ? अक्खेसु वा वराडएसु वा त्ति सत्तमीयंतणिद्देसाभावादो । एदेसु एदे वा अमा एयत्तेण ठवणाए बुद्धीए ठविज्जंति बंधो त्ति सो सव्वो ठवणबंधो णाम । ठवणासद्दो बुद्धिवाचओ त्ति कुदो णव्वदे ? धरणी धारणी ट्ठवणा कोट्ठा पविट्ठा त्ति सुत्तादो☆ ।

पा.प.दर्शक आचार्यश्री सुविधिसागरजी महाराज

पु.९ पृ.२४१ आकार घटित करते हैं वे गृहकर्म कहलाते हैं । उसीसे दिवालोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे
पु.१३ पृ.२०२ भित्तिकर्म कहलाते हैं । हाथीके दांतोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे दन्तकर्म कहलाते हैं । भेंडोंसे जो आकार बनाये जाते हैं वे भेंडकर्म कहलाते हैं । ये दसों ही कर्म देशामर्शक हैं । इससे पत्रकर्म, भृङ्गकर्म, तलवत्त (आभूषण) कर्म, तालिपत्रकर्म, भोजपत्रकर्म, सीनेका कर्म और मणि-विज्ञानकर्म आदिको ग्रहण करना चाहिए । इन कर्मोंमें तदाकारस्वरूपसे बंधकी स्थापना करना सद्भावस्थापनाबंध है और अतदाकाररूपसे बंधकी स्थापना करना असद्भावस्थापनाबंध है ।

शंका-- इनका देशामर्शकस्थापना कैसे जाना जाता है ?

समाधान-- सूत्रमें आगे कहे जानेवाले ' एवमादिय ' वचनसे जाना जाता है । अक्ष पांसेका नाम है और वराटक कौडीका नाम है । ये दोनों ही वचन असद्भावस्थापनाके सूचक हैं ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- सूत्रमें ' अक्खेसु वा वराडएसु वा ' इस प्रकार सप्तम्यन्त वचनका निर्देश नहीं किया है । इससे जाना जाता है कि ये दोनों वचन असद्भावस्थापनाके सूचक है ।

इनमें या ये ' अमा ' अर्थात् अभेदरूपसे, स्थापना अर्थात् बुद्धिमें ' बन्ध ' इस प्रकार स्थापित किये जाते हैं इसलिये यह सब स्थापनाबन्ध कहलाता है ।

शंका-- स्थापना शब्द बुद्धिका वाचक है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- ' धरणी, धारणी, स्थापना, कोष्ठा और प्रतिष्ठा ये बुद्धिके नाम हैं ' इस सूत्रसे जाना जाता है ।

विशेषार्थ-- यहाँ सद्भाव और असद्भावरूप दोनों प्रकारके स्थापनाबन्धकी चर्चा की गई है । स्थापना एक पदार्थकी दूसरे पदार्थमें होती है । जिसमें स्थापना की जाती है यदि वह तदाकार होता है तो वह सद्भावस्थापना कहलाती है और यदि अतदाकार होता है तो वह असद्भावस्थापना कहलाती है । बुद्धिसे ' यह वह ही है ' ऐसा एकत्व स्थापित करके स्थापना की जाती है, ऐसा यहाँ समझना चाहिये ।

☆ अ-काप्रत्योः ' वट्टइपिंडेण पासादेसु ', आप्रतौ ' वट्टइपासादेसु ' ता. प्रतौ ' वट्टइपिंडेण पासादेसु ' इति पाठः । ☆ प्रकृति अनुयोगद्वार सू० ४० (पु० १३) ।

जो सो दव्वबंधो णाम सो थप्पो ॥ १० ॥

किमट्ठं थप्पो कीरदि ? बहुवण्णणिज्जत्तादो ।

जो सो भावबंधो णाम सो दुविहो-- आगमदो भावबंधो चेव णोआगमदो भावबंधो चेव ॥ ११ ॥

एवं दुविहो चेव भावबंधो होदि; आगम-णोआगमेहिंतो वदिरित्तभावाणुवलंभादो ।

जो सो आगमदो भावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो–ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय–थुदि–धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम ॥ १२ ॥

ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससममिदि णवविहो आगमो । कधमेगो आगमो णवविहत्तं पडिवज्जदे ? लक्खणभेदेण । किं तल्लक्खणं? उच्चदे–अवधृतमात्रं स्थितं नाम । जेण बारह वि अंगाणि अवहारिदाणि सो

द्रव्यबन्ध स्थगित किया जाता है ॥ १० ॥

शंका–किसलिये स्थापित किया जाता है ?

समाधान–क्योंकि, आगे उसका बहुत वर्णन करनेवाले हैं ।

भावबन्ध दो प्रकारका है–आगमभावबन्ध और नोआगमभावबन्ध ॥ ११ ॥

इस प्रकार भावबन्ध दो ही प्रकारका होता है, क्योंकि, आगमभाव और नोआगमभावसे अतिरिक्त अन्य भाव नहीं पाया जाता ।

जो आगमभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है- स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम । इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति, धर्मकथा, तथा इनसे लेकर जो अन्य उपयोग हैं उनमें भावरूपसे जितने उपयुक्त भाव हैं वे सब आगमभावबन्ध है ॥ १२ ॥

स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम और घोषसम; यह नौ प्रकारका आगम है ।

शंका–एक आगमके नौ भेद कैसे हो जाते हैं ?

समाधान–लक्षणके भेदसे एक आगमके नौ भेद हो जाते हैं ।

शंका–वह लक्षण कौन-सा है ?

समाधान–कहते हैं, अवधारणमात्रकी स्थित संज्ञा है । जिसने बारह ही अंगोंको

साहू ट्ठिदसुवणाणं होदि । कधं तस्स ट्ठिदत्तं? अण्णत्थ संचाराभावादो । तं पि कुदो? परेसिं करणसत्तीए अभावादो । जो अवगयमत्थं सण्णिमसण्णिं चिंतिऊण वोत्तुं समत्थो सो जिदं णाम सुदणाणं । जो अवगयबारहअंगो संतो खलणेण विणा अवगयमत्थं वोत्तुं समत्थो सो परिजिदं णाम सुदणाणं होदि । ण च एदे दो वि आगमा परपच्चायणक्खमा; दच्छत्ताभावादो । जो अवगयबारहअंगो संतो परेसिं वक्खाणक्खमो सो आगमो वायणोवगदो णाम । का वाचना ? शिष्याध्यापनं वाचना । सुत्तं सुदकेवली, तेण समं सुदणाणं सुत्तसमं । अधवा सुत्तं बारहंगसद्दागमो, आइरियोवदेसेण विणा सुत्तादो चेव जं उप्पज्जदि सुदणाणं तं सुत्तसमं । अत्थो गणहरदेवो, आगमसुत्तेण विणा सयलसुदणाणपज्जाएण परिणदत्तादो । तेण समं सुदणाणं अत्थसमं । अधवा अत्थो बीजपदं, ततो उप्पण्णं सयलसुदणाणमत्थसमं । आइरियाणमुवएसो गंथो, तेण समं गंथसमं । बारहअंगसद्दागमं आइरियपादमूले सोऊण जं उप्पण्णं सुदणाणं तं गंथसममिदि वुत्तं होदि । आइरियपादमूले बारहंगसद्दागमं सोऊण जस्स अहिलप्पत्थविसयं चेव सुदणाणं समुप्पण्णं सो णामसमं । बारहंगसद्दागमं सुणंतस्स जस्स सुवपडिबद्धत्थविसयमेव सुदणाणं समुप्पण्णं सो

अवधारित कर लिया है वह साधु स्थित श्रुतज्ञान है ।*

शंका–इसकी स्थित संज्ञा क्यों है ?

समाधान–अन्यत्र इसका संचार नहीं होता, इससे उसकी स्थित संज्ञा है ।

शंका–ऐसा भी क्यों है ?

समाधान–क्योंकि, अन्यके साधकतमरूपसे करण होनेकी शक्ति नहीं पाई जाती ।

जो जाने हुए अर्थको धीरे-धीरे विचार कर कहनेके लिये समर्थ होता है वह जित नामका श्रुतज्ञान है । जो बारह अंगोंको जानकर बिना स्खलनके जाने हुए अर्थको कहनेके लिये समर्थ होता है वह परिजित नामका श्रुतज्ञान है । ये दोनों ही आगम अन्यको ज्ञान करानेमें समर्थ नहीं हैं, क्योंकि, इनमें दक्षता नहीं पाई जाती । जो बारह अंगोंको जानकर अन्यके लिये उनका व्याख्यान करनेमें समर्थ है वह वाचनोपगत नामका आगम है ।

शंका वाचना किसे कहते हैं ?

समाधान–शिष्योंको पढ़ाना इसका नाम वाचना है ।

*सूत्रका अर्थ श्रुतकेवली है । उसके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है । अथवा, सूत्रका अर्थ बारह प्रकारका अंगरूप शब्दागम है । आचार्यके उपदेशके बिना सूत्रसे ही जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह सूत्रसम श्रुतज्ञान है । अर्थ गणधरदेवका नाम है, क्योंकि, वे आगमसूत्रके बिना सकल श्रुतज्ञानरूप पर्यायसे परिणत रहते हैं, इनके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह अर्थसम श्रुतज्ञान है । अथवा अर्थ बीजपदको कहते हैं, इससे जो समस्त श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है । आचार्योंके उपदेशको ग्रन्थ कहते हैं, इसके समान जो श्रुतज्ञान होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है । आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जो श्रुतज्ञान उत्पन्न होता है वह ग्रन्थसम श्रुतज्ञान है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । आचार्यके पादमूलमें बारह अंगरूप शब्दागमको सुनकर जिसके कथन करने योग्य अर्थको विषय करनेवाला ही श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह नामसम श्रुतज्ञान है । बारह अंगरूप शब्दागमको सुननेवाले जिसके सुने हुए अर्थसे सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थको विषय करनेवाला

घोससमं । एवं णवविहं सुदणाणं पक्खिबंधो श्री सुविधिसागर जी महाराज

संपहि एत्थ उवओगो वायणा-पुच्छण-पडिच्छण-परियट्टण-अणुपेहण-त्थय-थुदि-धम्मकहाभेएण अट्ठविहो । तत्थ परेसिं वक्खाणं वायणा णाम । तत्थ अणिच्छियट्ठाणं पण्णवावारो पुच्छणं णाम । आइरिएहि कहिज्जमाणत्थाणं सुणणं पडिच्छणं णाम । अवगयत्थस्स हियएण पुणो पुणो परिमलणं परियट्टणं णाम । सुत्तत्थस्स सुदाणुसारेण चिंतणमणुपेहणं णाम । सव्वसुदणाणविसओ उवजोगो थवो णाम । एगंगविसओ* एयपुव्वविसओ वा उवजोगो थुदी णाम । वत्थु-अणुयोगादिविसओ भावो धम्मकहा णाम । एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम ।

जो सो णोआगमदो भावबंधो णाम सो दुविहो--जीवभावबंधो चेव अजीवभावबंधो चेव ॥ १३ ॥

एवं दुविहो चेव णोआगमभावबंधो होदि; जीवाजीवेहिंतिरित्तणोआगमभावबंधाभावादो ।

जो सो जीवभावबंधो णाम सो तिविहो--विवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो चेव तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो चेव ॥ १४ ॥

श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ है वह घोषसम श्रुतज्ञान है । इस प्रकार नौ प्रकारके श्रुतज्ञानका कथन किया।

इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति और धर्मकथाके भेदसे आठ प्रकारका उपयोग होता है । उनमेंसे अन्यके लिये व्याख्यान करना वाचना है । उसमें अनिश्चित अर्थको समझनेके लिये प्रश्न करना पृच्छना है । आचार्य जिन अर्थोंका कथन कर रहे हों उनका सुनना प्रतीच्छना है । जाने हुए अर्थका हृदयसे पुनः पुनः विचार करना परिवर्तना है । सूत्रके अर्थका श्रुतके अनुसार चिन्तन करना अनुप्रेक्षणा है । समस्त श्रुतज्ञानको विषय करनेवाला उपयोग स्तव कहलाता है । एक अंग या एक पूर्वको विषय करनेवाला उपयोग स्तुति कहलाता है । तथा वस्तु और अनुयोगद्वार आदिको विषय करनेवाला उपयोग धर्मकथा कहलाता है । इत्यादि जितने उपयोग हैं उनमें 'यह भाव है' ऐसा समझ कर जितने उपयुक्त भाव होते हैं वह सब आगम भावबन्ध है ।

नोआगमभावबन्ध दो प्रकारका है-जीवभावबन्ध और अजीवभावबन्ध ॥ १३ ॥

इस तरह दो प्रकारका ही नोआगमभावबन्ध है, क्योंकि, जीव और अजीव इन दो भेदोंके सिवा नोआगमभावबन्ध नहीं पाया जाता ।

जीवभावबन्ध तीन प्रकारका है-विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध, अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध और तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध ॥ १४ ॥

---

* अ-आ- काप्रतिषु 'एवगयविसओ'; ताप्रतौ 'एयंगयविसओ', इति पाठ ।

एवं तिविहो चेव जीवभावबंधो होदि, अण्णस्स चउत्थस्स जीवभावस्स अणुवलंभादो । कम्माणमुदओ उदीरणा वा विवागो णाम, विवागो पच्चओ कारणं जस्स भावस्स सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम । कम्माणमुवय-उदीरणाणमभावो अविवागो णाम । कम्माणमुवसमो खओ वा अविवागो त्ति भणिदं होदि । अविवागो पच्चयो कारणं जस्स भावस्स सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम । कम्माणमुदय-उदीरणाहितो तदुवसमेण च जो उप्पज्जइ भावो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सविधिसागर जी महाराज

जो सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसोदेवे त्ति वा मणुस्से त्ति वा तिरिक्खे त्ति वा णेरइए त्ति वा इत्थिवेदे त्ति वा पुरिसवेदे त्ति वा णवुंसयवेदे त्ति वा कोहवेदे त्ति वा माणवेदे त्ति वा मायवेदे त्ति वा लोहवेदे त्ति वा रागवेदे त्ति वा दोसवेदे त्ति वा मोहवेदे त्ति वा किण्हलेस्से त्ति वा णीललेस्से त्ति वा काउलेस्से त्ति वा तेउलेस्से त्ति वा पम्मलेस्से त्ति वा सुक्कलेस्से त्ति वा असंजदे त्ति वा अविरदे त्ति वा अण्णाणे त्ति वा मिच्छादिट्ठि त्ति वा जे चामण्णे

इस प्रकार तीन प्रकारका ही जीवभावबन्ध है, क्योंकि अन्य चौथा जीवभाव नहीं पाया जाता । कर्मोंके उदय और उदीरणाको विपाक कहते हैं और विपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं । कर्मोंके उदय और उदीरणाके अभावको अविपाक कहते हैं । कर्मोंके उपशम और क्षयको अविपाक कहते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अविपाक जिस भावका प्रत्यय अर्थात् कारण है उसे अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं । कर्मोंके उदय और उदीरणासे तथा इनके उपशमसे जो भाव उत्पन्न होता है उसे तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहते हैं ।

विशेषार्थ- यहाँ जीवभावबन्धके तीन भेदोंके स्वरूपपर प्रकाश डाला गया है । विपाकका अर्थ उदय और उदीरणा है । अविपाकका अर्थ उपशम और क्षय है, तथा तदुभयका अर्थ क्षयोपशम है । इसमें देशघातिस्पर्धकोंका उदय और उदीरणा रहती है तथा सर्वघाति स्पर्धकोंका अनुदय रहता है । क्षयोपशम शब्द द्वारा अनुदय ही कहा गया है क्षय अर्थात् अनुदय ही उपशम ऐसी उसकी व्युत्पत्ति है । तदुभयमें विपाक और अविपाक दोनोंका ग्रहण हो जाता है, किन्तु क्षयोपशम शब्द द्वारा उदय और उदीरणा अविवक्षित रहते हैं । अभिप्राय दोनोंका एक है ।

जो विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है-- देवभाव, मनुष्यभाव, तिर्यंचभाव, नारकभाव, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद क्रोधवेद, मानवेद, मायावेद, लोभवेद, रागवेद, दोषवेद, मोहवेद, कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, पीतलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, असंयतभाव, अविरतभाव, अज्ञानभाव और मिथ्यादृष्टिभाव; तथा

एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा भावा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ॥ १५ ॥

देवगदिणामकम्मोदएण अणिमादिगुणं णीदो देवभावो होदि। मणुसगदिणामकम्मोदएण अणिमादिगुणवदिरित्तो मणुस्से त्ति भावो होदि। तिरिक्खगइणामकम्मोदएण तिरिक्खो त्ति भावो होदि। णिरयगइणामकम्मोदएण णेरइए त्ति भावो। इत्थिकम्मोदएण इत्थिवेदो त्ति भावो होदि। पुरिसवेदभावो विवागपच्चइयो; पुरिसवेदोदयजणिदत्तादो। णवुंसयवेदभावो विवागपच्चइयो; णवुंसयवेदकम्मोदयजणिदत्तादो। कोध-माण-माया-लोभभावा विवागपच्चइया; कोध-माण-माया-लोभदव्वकम्मविवागजणिदत्तादो। रागो विवागपच्चइयो; माया-लोभ-हस्स-रदि-तिवेदाणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो। दोसो विवागपच्चइयो; कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो। [पंचविहमिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं सासणसम्मत्तं च मोहो,] सो विवागपच्चइयो; मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं दव्वकम्मोदयजणिदत्तादो। किण्ण-णील-काउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ विवागपच्चइयाओ अघादिकम्माणं तप्पाओग्गदव्वकम्मोदएण कसाओदएण च छलेस्साणिप्पत्तीदो। असंजदत्तं विवागपच्चइयं; संजमघादिकम्माणमुदएण समुप्पण्णत्तादो। अविरदत्तं विवागपच्चइयं वेस—

इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयविपाकसे उत्पन्न हुए और जितने भाव हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं ॥ १५ ॥

देवगति नामकर्मके उदयसे जो अणिमा आदि गुणोंको प्राप्त करता है वह देवभाव है। मनुष्यगति नामकर्मके उदयसे अणिमा आदि गुणोंसे रहित मनुष्यभाव होता है। तिर्यंचगति नामकर्मके उदयसे तिर्यंचभाव होता है। नरकगति नामकर्मके उदयसे नारकभाव होता है। स्त्रीवेद कर्मके उदयसे स्त्रीवेदरूप भाव होता है। पुरुषवेदभाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह पुरुषवेदके उदयसे उत्पन्न होता है। नपुंसकवेदभाव विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह नपुंसकवेद कर्मके उदयसे उत्पन्न होता है। क्रोध, मान, माया और लोभ ये भाव भी विपाकप्रत्ययिक होते हैं; क्योंकि, ये भाव क्रोध, मान, माया और लोभरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे उत्पन्न होते हैं। राग भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मोंके विपाकसे होती है। दोष भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप द्रव्यकर्मके विपाकसे होती है। पांच प्रकारका मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व मोह कहलाता है। वह भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, इसकी उत्पत्ति मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और अनंतानुबन्धीरूप द्रव्यकर्मके उदयसे होती है। कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म और शुक्ललेश्या भी विपाकप्रत्ययिक होती हैं, क्योंकि, छह लेश्याओंकी उत्पत्ति अघाति कर्मोंमेंसे तत्प्रायोग्य द्रव्यकर्मके उदयसे और कषायके उदयसे होती है। असंयतभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह संयमका घात करने-

सयलविरइघाइकम्मोदयजणिदत्तादो । संजम-विरईणं को भेदो ? ससमिदिमहव्वयाणुव्वयाइं संजमो । समिईहि विणा महव्वयाणुव्वया विरई । अण्णाणं विवागपच्चइयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो णाणावरणकम्मोदयजणिदत्तादो वा । मिच्छत्तं विवागपच्चइयं; मिच्छत्तोदयजणिदत्तादो । जे च अमी अण्णे च एवमादिया कम्मोदय-पच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।

जो सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम सो दुविहो-उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव खइयो अविवाग-पच्चइओ जीवभावबंधो चेव ॥ १६ ॥

वाले कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होता है । अविरतभाव भी विपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, यह देशविरति और सकल विरतिके घातक कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होता है ।

शंका--संयम और विरतिमें क्या भेद है ?

समाधान--समितियोंके साथ महाव्रत और अणुव्रत संयम कहलाते है और समितियोंके बिना महाव्रत और अणुव्रत विरति कहलाते हैं । यही इन दोनोंमें भेद है ।

अज्ञानभाव भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह मिथ्यात्वके उदयसे अथवा ज्ञानावरणके उदयसे उत्पन्न होता है । मिथ्यात्व भी विपाकप्रत्ययिक होता है, क्योंकि, यह मिथ्यात्वके उदयसे उत्पन्न होता है । इसी प्रकार कर्मोदयप्रत्ययिक उदयविपाकनिष्पन्न और जितने भाव होते हैं वे सब विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहलाते हैं ।

विशेषार्थ–प्रकृतमें प्रत्यय शब्द निमित्तवाची है । यहाँ देवभाव, मनुष्यभाव आदि जितने भाव गिनाये हैं ये सब विवक्षित कर्मके उदय और उदीरणाके निमित्तसे होते हैं, इसलिये इन्हें विपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध कहा है । यहाँ ये कुल चौबीस भाव गिनाये हैं, जब कि तत्त्वार्थसूत्रमें कुल इक्कीस भाव ही गिनाये हैं । तत्त्वार्थसूत्रमें गिनाये गये भावोंमेंसे असिद्धत्व भाव यहाँ नहीं गिनाया है और यहाँ राग, दोष, मोह और अविरति ये चार भाव अतिरिक्त गिनाये हैं । इनमेंसे यद्यपि अविरति भावका सामान्यतः असंयतभावमें अन्तर्भाव किया जा सकता है, पर शेष तीन भावोंके गिनानेमें विशिष्ट दृष्टिकोणकी प्रतीति होती है । नोकषायोंके नौ भेद हैं, उनमेंसे रति आदिके उदयसे होनेवाले भावोंका तत्त्वार्थसूत्रमें दर्शन नहीं होता, जब कि यहाँ इन भावोंका राग और दोषमें अन्तर्भाव हो जाता है । इसी प्रकार सासादनभाव और सम्यग्मिथ्यात्वभावकी परिगणना भी तत्त्वार्थसूत्रमें नहीं की गई है जब कि यहाँ इनका अन्तर्भाव मोहमें हो जाता है । एक बात अवश्य है कि यहाँ असिद्धत्व भाव नहीं गिनाया है, पर इसके साथ यहाँ इसी प्रकार और दूसरे भावोंके ग्रहण करनेकी सूचना अवश्य की है । इसलिये कोई हानि नहीं है । आशय यह है कि यहाँ औदयिक भावोंका विचार करते समय उस दृष्टिकोणको अपनाया गया है जिससे प्रायः सभी भावोंका ग्रहण हो जाता है ।

अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध दो प्रकारका है--औपशमिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध और क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध ॥ १६ ॥

एवं दुविहो चेव अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो होदि । [जीव-भव्वाभव्व-सादिजीवभावा पारिणामिया वि अत्थि, ते एत्थ किण्ण परूविदा? वुच्चदे–आउआदिपाणाणं धारणं जीवणं णाम । तं च अजोगिचरिमसमयादो उवरि णत्थि, सिद्धेसु पाणणिबंधणट्ठकम्माभावादो । तम्हा सिद्धा ण जीवा जीवपुव्वा इदि सिद्धत्तं पि जीवत्तं किण्ण इच्छिज्जदे ? ण, उवयारस्स सच्चत्ताभावादो । सिद्धेसु पाणाभावण्णहाणुववत्तीदो जीवत्तं ण पारिणामियं, किंतु कम्मविवागजं; यद्यस्य भावाभावानुविधानतो भवति तत्तस्येति वदन्ति तद्विद इति न्यायात् । तम्हा जीवभावो ओदइओ त्ति सिद्धं । तच्चत्थे जं जीवभावस्स पारिणामियत्तं परूविदं तं पाणधारणत्तं पडुच्च ण परूविदं, किंतु चेदणगुणमवलंबिय तत्थ परूवणा कदा । चेण तं पि ण विरुज्झदे ।]

अघाइकम्मचउक्कोदयजणिदमसिद्धत्तं णाम । तं दुविहं-अणादि-अपज्जवसिदं अणादि-सपज्जवसिदं चेदि । तत्थ जेसिमसिद्धत्तमणादि-अपज्जवसिदं ते अभव्वा णाम । जेसिमवरं ते भव्वजीवा । तदो भव्वत्तमभव्वत्तं च विवागपच्चइयं चेव । तच्चत्थे पारिणामियत्तं परूविदं, तेण सह विरोधो कधं ण जायदे? ण, असिद्धत्तस्स अणादि-अपज्जवसिदत्तं

इस तरह दो प्रकारका ही अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध होता है ।

शंका-जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व आदिक जीवभाव पारिणामिक भी हैं, उनका यहां क्यों कथन नहीं किया ?

समाधान–कहते हैं, आयु आदि प्राणोंका धारण करना जीवन है । वह अयोगीके अन्तिम समयसे आगे नहीं पाया जाता, क्योंकि, सिद्धोंके प्राणोंके कारणभूत आठों कर्मोंका अभाव है । इसलिये सिद्ध जीव नहीं हैं, अधिकसे अधिक वे जीवितपूर्व कहे जा सकते हैं ।

शंका–सिद्धोंके जीवत्व क्यों नहीं स्वीकार किया जाता है ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, सिद्धोंमें जीवत्व उपचारसे है, और उपचारको सत्य मानना ठीक नहीं है ।

सिद्धोंमें प्राणोंका अभाव अन्यथा बन नहीं सकता, इससे मालूम पड़ता है कि जीवत्व पारिणामिक नहीं है । किन्तु वह कर्मके विपाकसे उत्पन्न होता है, क्योंकि, 'जो जिसके सद्भाव और असद्भावका अविनाभावी होता है वह उसका है, ऐसा कार्य-कारणभावके ज्ञाता कहते हैं' ऐसा न्याय है । इसलिये जीवभाव औदयिक है, यह सिद्ध होता है । तत्त्वार्थसूत्रमें जीवत्वको जो पारिणामिक कहा है वह प्राणोंको धारण करनेकी अपेक्षासे नहीं कहा है, किन्तु चैतन्य गुणकी अपेक्षासे वहां वैसा कथन किया है, इसलिये वह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता ।

चार अघाति कर्मोंके उदयसे उत्पन्न हुआ असिद्धभाव है । वह दो प्रकारका है– अनादि-अनन्त और अनादि-सान्त । इनमेंसे जिनके असिद्धभाव अनादि-अनन्त है वे अभव्य जीव हैं और जिनके दूसरे प्रकारका है वे भव्य जीव हैं । इसलिये भव्यत्व और अभव्यत्व ये भी विपाक-प्रत्ययिक ही हैं ।

शंका–तत्त्वार्थसूत्रमें इन्हें पारिणामिक कहा है, इसलिये इस कथनका उसके साथ विरोध कैसे नहीं होगा ?

अणादि-सपज्जवसिदत्तं च णिक्कारणमिदि तत्थ तेसिं पारिणामियत्तब्भुवगमादो।

जो सो ओवसमिओ अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो–से उवसंतकोहे उवसंतमाणे उवसंतमाए उवसंतलोहे उवसंतरागे उवसंतदोसे उवसंतमोहे उवसंतकसायवीयरागछदुमत्थे उवसमियं सम्मत्तं उवसमियं चारित्तं, जे चामण्णे एवमादिया उवसमिया भावा सो सव्वो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।१७।

उवसंतकोहे अणियट्टिम्मि जो भावो सो उवसमिओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावकोधाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतमाणे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावमाणाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतमाये जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावमायाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतलोभे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दव्व-भावलोहाणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतराग जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; माया-लोभ-हस्स-रदि-तिण्हंवेदव्वकम्माणमुवसमेण समुब्भूदत्तादो। उवसंतदोसे जीवे जो भावो सो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो;

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

समाधान–नहीं, क्योंकि, असिद्धत्वका अनादि-अनन्तपना और अनादि-सान्तपना निष्कारण है, यह समझकर उन्हें वहाँ पारिणामिक स्वीकार किया गया है।

जो औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है– उपशान्तक्रोध, उपशान्तमान, उपशान्तमाया, उपशान्तलोभ, उपशान्तराग, उपशान्तदोष, उपशान्तमोह, उपशान्तकषाय-वीतरागछद्मस्थ, औपशमिक सम्यक्त्व और औपशमिक चारित्र, तथा इनसे लेकर और जितने औपशमिक भाव हैं वह सब औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ।। १७ ।।

अनिवृत्तिकरणमें क्रोधके उपशमसे जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यक्रोध और भावक्रोधके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तमान जीवके जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमान और भावमानके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तमाया जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमाया और भावमायाके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तलोभ जीवमें जो भाव होता है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यलोभ और भावलोभके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तराग जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है। उपशान्तदोष जीवमें जो भाव होता है वह औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है।

कोह-माण-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं दव्वकम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो । (उवसंतमोहे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, अट्ठावीस मोहणीयपयडीणं दव्वकम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो) उवसंतकसायवीयरायछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; पणुवीसकसायाणं दव्वकम्मुवसमेण समुब्भूदत्तादो । जमुवसमियं सम्मत्त तं पि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; तिविहदंसणमोहणीयदव्वकम्मुवसमेण समुप्पत्तीए । जं उवसमियं चारित्तं तं पि उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; चारित्तमोहणीयस्स देस-सव्वुवसमणाए समुब्भूदत्तादो । जे च अमी पुव्वुत्ता भावा अण्णो वा वि[1] अपुव्व-अणियट्टि-सुहुमसांपराइय-उवसंतकसाएसु समयं पडि जे उप्पज्जमाणा जीवभावा सो सव्वो उवसमिओ अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम ।

सम्पादकीय ... श्रीमान् सेठी रविन्द्रसागर जी महाराज

जो सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो—से खीणकोहे खीणमाणे खीणमाये खीणलोहे खीणरागे खीणदोसे खीणमोहे खीणकसायवीयरायछदुमत्थे खइयसम्मत्तं खइयचारित्तं खइया दाणलद्धी खइया लाहलद्धी खइया भोगलद्धी खइया परिभोगलद्धी खइया वीरियलद्धी केवलणाणं केवलदंसणं सिद्धे बुद्धे परिणिव्वुदे सव्वदुक्खाणमंतयडे त्ति जे चामण्णे एवमादिया खइया भावा सोसव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ॥१८॥

क्योंकि, वह क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप द्रव्य कर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है । उपशान्तकषाय-वीतरागछद्मस्थ जीवमें जो भाव होता है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह पच्चीस कषायरूप द्रव्यकर्मोंके उपशमसे उत्पन्न होता है । जो औपशमिक सम्यक्त्व है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह तीन प्रकारके दर्शनमोहनीय द्रव्यकर्मके उपशमसे उत्पन्न होता है । जो औपशमिक चारित्र है वह भी औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह चारित्रमोहनीयकी देशोपशमना और सर्वोपशमनासे उत्पन्न होता है । चूंकि ये पूर्वोक्त भाव और दूसरे भी अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें प्रत्येक समयमें उत्पन्न होनेवाले जो जीवके भाव है वह सब औपशमिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ।

जो क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है—क्षीणक्रोध, क्षीणमान, क्षीणमाया, क्षीणलोभ, क्षीणराग, क्षीणदोष, क्षीणमोह, क्षीणकषाय-वीतरागछद्मस्थ, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, क्षायिक दानलब्धि, क्षायिक लाभलब्धि, क्षायिक भोगलब्धि, क्षायिक परिभोगलब्धि, क्षायिक वीर्यलब्धि, केवलज्ञान, केवलदर्शन, सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत्त, सर्वदुःख-अन्तकृत्, इसी प्रकार और भी जो दूसरे क्षायिक भाव होते हैं वह सब क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥१८॥

[1] प्रतिषु 'अणेया वि' इति पाठः]

खीणकोहे जीवे जो भावो सो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दव्व-भावकोहाणं णिरवसेसक्खएण समुप्पण्णत्तादो। खीणमाणे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम; दव्व-भावमाणक्खएण समुप्पत्तीदो॰। खीणमाए जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दुविहमायक्खएण समुप्पत्तीदो। खीणलोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइओ जीवभावबंधो; दुविहलोहक्खएण समुप्पत्तीदो। खीणरागे जीवे जो भावो सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; माय-लोह-हस्स-रदि-तिवेदाणं दुविहकम्मक्खएण समुब्भूदत्तादो। खीणदोसे जीवे जो भावो सो वि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; कोह-माण-अरदि सोग-भय-दुगुंछाणं दुविहकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो। खीणमोहे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; अट्ठावीसभेदभिण्णमोहक्खएण समुब्भूदत्तादो। खीणकसायवीदरागछदुमत्थे जीवे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; पंचवीसकसायाणं णिस्सेसक्खएण समुप्पत्तीदो। जं खइयं सम्मत्तं तं पि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दंसणमोहक्खएण समुप्पत्तीदो। जं खइयं चारित्तं तं पि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, चारित्तमोहक्खएण समुप्पत्तीदो। जा खइया दाणलद्धी सो वि खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो; दाणंतराइयस्स णिम्मूलक्खएण समुप्पत्तीदो। अरहंता खीणदाणंतराइया

क्षीणक्रोध जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्य और भाव क्रोधके सर्वथा क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमान जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह द्रव्यमान और भावमानके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमाया जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दो प्रकारकी मायाके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणलोभ जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दो प्रकारके लोभके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणराग जीवमें जो भाव होता है वह भी अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दोनों प्रकारके माया, लोभ, हास्य, रति और तीन वेदरूप कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणदोष जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दोनों प्रकारके क्रोध, मान, अरति, शोक, भय और जुगुप्सारूप कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणमोह जीवमें जो भाव होता है वह क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह अट्ठाईस प्रकारके मोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। क्षीणकषाय-वीतरागछद्मस्थ जीवमें जो भाव होता है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह पच्चीस कषायोंके निश्शेष क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक सम्यक्त्व है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह दर्शनमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक चारित्र है, वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह चारित्रमोहनीयके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो क्षायिक दानलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह दानान्तरायके निर्मूल क्षयसे उत्पन्न होती है।

॰ अप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-काप्रतिषु 'समुप्पत्तीए' इति पाठः। एवमग्रेऽपि।

सव्वेसिं जीवाणमिच्छिदत्थे किण्ण देंति ? ण, तेसिं जीवाणं लाहंतराइयभावादो । जा खइया लाहलद्धी सो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, लाहंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । अरहंता जदि खीणलाहंतराइया तो तेसिं सव्वत्थोवलंभो किण्ण जायदे? सच्चं, अत्थि तेसिं सव्वत्थोवलंभो, सगायत्तासेसभुवणत्तादो । जा खइया भोगलद्धी सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, भोगंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । जा खइया परिभोगलद्धी सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, परिभोगंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । जदि अरिहंता खीणपरिभोगंतराइया तो किण्ण भोगेंति परिभोगेंति वा? ण, खीणकसायाणं उवभोग-परिभोगेहि पओजणाभावादो* । जा खइया विरियलद्धी सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, विरियंतराइयक्खएण समुप्पत्तीदो । केवलणाणं केवलंसणं च खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, केवलणाण-दंसणावरणक्खएण समुप्पत्तीदो । सिद्धे जो भावो सो खइयो अविवागपच्चइयो,

---

शंका– अरिहन्तोंके दानान्तरायका तो क्षय हो गया है, फिर वे सब जीवोंको इच्छित अर्थ क्यों नहीं देते ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उन जीवोंके लाभान्तराय कर्मका सद्भाव पाया जाता है ।

जो क्षायिक लाभलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाक प्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह लाभान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है ।

शंका– अरिहन्तोंके यदि लाभान्तराय कर्मका क्षय हो गया है तो उनको सब पदार्थोंकी प्राप्ति क्यों नहीं होती ?

समाधान– सत्य है, उन्हें सब पदार्थोंकी प्राप्ति होती है, क्योंकि, उन्होंने अशेष भुवनको अपने आधीन कर लिया है ।

जो क्षायिक भोगलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह भोगान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है । जो क्षायिक परिभोग लब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह परिभोगान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है ।

शंका– यदि अरिहन्तोंके (भोगान्तराय और) परिभोगान्तराय कर्मका क्षय हो गया है तो वे अन्य पदार्थोंका (उपभोग और) परिभोग क्यों नहीं करते ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, जो जीव क्षीणकषाय होते हैं उनका उपभोग-परिभोगसे प्रयोजन नहीं रहता ।

जो क्षायिक वीर्यलब्धि है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, वह वीर्यान्तराय कर्मके क्षयसे उत्पन्न होती है । केवलज्ञान और केवलदर्शन क्षायिक अविपाक-प्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं, क्योंकि, ये क्रमशः केवलज्ञानावरण और केवलदर्शनावरण कर्मके क्षयसे उत्पन्न होते हैं जो सिद्धभाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि,

---

* प्रतिषु ' उपभोगे परिभोगहि य ओजणाभावादो ' इति पाठः ।

अट्ठकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो। बुद्धे जो भावो सो वि खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो, अंतरंग-बहिरंगावरणक्खएण समुप्पत्तीदो। परिणिव्वुदे जो भावो सो वि खइयो अविवागपच्चइओ, असेसकम्मक्खएण समुप्पत्तीदो। सव्वदुक्खाणमंतयडत्तं पि खइयो अविवागपच्चइओ, सव्वदुक्खएण समुप्पत्तीदो। जे च अमी पुव्वुत्ता भावा अण्णे च समयं पडि समुब्भवा सो सव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- खओवसमियं एइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं बीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं तीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं चउरिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं पंचिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं मदिअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं सुदअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं विहंगणाणि त्ति वा खओवसमियं आभिणिबोहियणाणि त्ति वा खओवसमियं सुदणाणि त्ति त्ति वा खओवसमियं ओहिणाणि त्ति वा खओवसमियं मण-

---

वह आठों कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो बुद्धभाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबंध है, क्योंकि, वह अन्तरंग और बहिरंग आवरणके क्षयसे उत्पन्न होता है। जो परिनिर्वृत भाव है वह भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह अशेष कर्मोंके क्षयसे उत्पन्न होता है। सब दुःखोंका अन्तकृत्त्व भी क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक है, क्योंकि, वह सब दुःखोंके क्षयसे उत्पन्न होता। ये पूर्वोक्त भाव और दूसरे भी भाव जो प्रतिसमय उत्पन्न होते हैं वह सब क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है।

विशेषार्थ- यहाँ क्षायिक अविपाकप्रत्ययिक जीवभावबन्ध इक्कीस गिनाये हैं और इनके साथ प्रतिसमय होनेवाले अन्य क्षायिक भावोंकी सूचना की है। तत्त्वार्थसूत्रमें क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, केवलज्ञान, केवलदर्शन और पाँच क्षायिक लब्धियाँ; ये कुल नौ भाव गिनाये हैं। यहाँ गिनाये गये भावोंमें कुछ ऐसे भाव अवश्य हैं जिनका अलगसे उल्लेख करना यहाँ आवश्यक है। जैसे सिद्धभाव, सर्वदुःख-अन्तकृद्भाव आदि। शेषका कथंचित् अन्तर्भाव हो जाता है। यद्यपि पाँच लब्धियोंका काम बाह्य सामग्रीकी प्राप्त नहीं है, किन्तु कहीं कहीं उनका काम बाह्य सामग्रीकी प्राप्ति बतलाया गया है, जो उपचार कथन है।

जो तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है-- क्षायोपशमिक एकेन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक द्वीन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक त्रीन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक चतुरिन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक पञ्चेन्द्रियलब्धि, क्षायोपशमिक मत्यज्ञानी, क्षायोपशमिक श्रुताज्ञानी, क्षायोपशमिक विभंगज्ञानी, क्षायोपशमिक आभिनिबोधिकज्ञानी, क्षायोपशमिक श्रुतज्ञानी, क्षायोपशमिक अवधिज्ञानी, क्षायोपशमिक मनःपर्यय--

पज्जवणाणि त्ति वा खओवसमियं चक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं अचक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं ओहिदंसणि त्ति वा खओवसमियं सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं सम्मत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमासंजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं दाणलद्धि त्ति वा खओवसमियं लाहलद्धि त्ति वा खओवसमियं भोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं परिभोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं वीरियलद्धि त्ति वा खओवसमियं से आयारधरे त्ति वा खओवसमियं सूदयडधरे त्ति वा खओवसमियं ठाणधरे त्ति वा खओवसमियं समवायधरे त्ति वा खओवसमियं वियाहपण्णत्तिधरे त्ति वा खओवसमियं णाहधम्मधरे त्ति वा खओवसमियं उवासयज्झेणधरे त्ति वा खओवसमियं अंतयडधरे त्ति वा खओवसमियं अणुत्तरोववादियदसधरे त्ति वा खओवसमियं पण्णवागरणधरे त्ति वा खओवसमियं विवागसुत्तधरे त्ति वा खओवसमियं दिट्ठिवादधरे त्ति वा खओवसमियं गणि त्ति वा खओवसमियं वाचगे त्ति वा खओवसमियं दसपुव्वहरे त्ति वा खओवसमियं चोद्दसपुव्वहरे त्ति वा जे चामण्णे एवमादिया खओवसमियभावा सो सव्वो तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो णाम।१९।

ज्ञानी, क्षायोपशमिक चक्षुदर्शनी, क्षायोपशमिक अचक्षुदर्शनी, क्षायोपशमिक अवधिदर्शनी, क्षायोपशमिक सम्यग्मिथ्यात्वलब्धि, क्षायोपशमिक सम्यक्त्वलब्धि, क्षायोपशमिक संयमासंयमलब्धि, क्षायोपशमिक संयमलब्धि, क्षायोपशमिक दानलब्धि, क्षायोपशमिक लाभलब्धि, क्षायोपशमिक भोगलब्धि, क्षायोपशमिक परिभोगलब्धि, क्षायोपशमिक वीर्यलब्धि, क्षायोपशमिक आचारधर, क्षायोपशमिक सूत्रकृद्धर, क्षायोपशमिक स्थानधर, क्षायोपशमिक समवायधर, क्षायोपशमिक व्याख्याप्रज्ञप्तिधर, क्षायोपशमिक नाथधर्मधर, क्षायोपशमिक उपासकाध्ययनधर, क्षायोपशमिक अन्तकृद्धर, क्षायोपशमिक अनुत्तरौपपादिकदशधर, क्षायोपशमिक प्रश्नव्याकरणधर, क्षायोपशमिक विपाकसूत्रधर, क्षायोपशमिक दृष्टिवादधर, क्षायोपशमिक गणी, क्षायोपशमिक वाचक, क्षायोपशमिक दशपूर्वधर, क्षायोपशमिक चतुर्दश पूर्वधर; ये तथा इसी प्रकारके और भी दूसरे जो क्षायोपशमिक भाव हैं वह सब तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है ॥ १९ ॥

एवस्स सुत्तस्स अत्थो उच्चदे । तं जहा-एत्थ सव्वे वा-सद्दा समुच्चयट्ठे दट्ठव्वा। एइंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, पंचिंदियावरणखओवसमेण समुप्पत्तीए । बेइंदियलद्धि त्ति एदं पि खओवसमियं, फासिंदियावरणक्खओवसमेण समुप्पत्तीए । तीइंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, जिब्भा फास-घाणिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए । चउरिंदियलद्धि त्ति [illegible] खओवसमियं [illegible] जिब्भाफास-घाणचक्खिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए । पंचिंदियलद्धि त्ति एदं च खओवसमियं, पंचण्णमिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पत्तीए । मदिअण्णाणि त्ति एदं पि खओवसमियं, मदिणाणावरणखओवसमेण समुप्पत्तीए । कुदो एदं मदिअण्णाणित्तं तदुभयपच्चइयं ? मिच्छत्तस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण णाणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण तस्सेव सव्वघादिफद्दयाणमुदयक्खएण च मदिअण्णाणित्तुप्पत्तीदो । सुदअण्णाणि त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, सुदणाणावरणस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण मिच्छत्तोदयाणुविद्धेण समुप्पत्तीदो । विहंगणाणि त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, ओहिणाणावरणदेसघादिफद्दयाणमुदएण मिच्छत्ताणुविद्धेण समुप्पत्तीदो । आभिणिबोहियणाणि त्ति तदुभयपच्चइओ जीवभावबंधो, मदिणाणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुवएण तिविहसम्मत्तसहाएण तदुप्पत्तीदो । आभिणिबोहियणाणस्स

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यथा–इस सूत्रमें सब 'वा' शब्द समुच्चयरूप अर्थमें जानने चाहिये । एकेन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह स्पर्शनइन्द्रियावरण कर्मके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है । द्वीन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह जिह्वा और स्पर्शन इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है । त्रीन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह जिह्वा, स्पर्शन और घ्राण इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है । चतुरिन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह जिह्वा, स्पर्शन, घ्राण और चक्षु इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है । पंचेन्द्रियलब्धि यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह पाँचों इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न होती है । मत्यज्ञानी यह भी क्षायोपशमिक है, क्योंकि, यह मतिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमसे उत्पन्न होता है ।

शंका– यह मत्यज्ञानित्व तदुभयप्रत्ययिक कैसे है ?

समाधान– मिथ्यात्वके सर्वघाती स्पर्धकोंका उदय होनेसे तथा ज्ञानावरणीयके देशघाति स्पर्धकोंका उदय होनेसे और उसीके सर्वघाति स्पर्धकोंका उदयक्षय होनेसे मत्यज्ञानित्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक है ।

श्रुतज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, यह मिथ्यात्व कर्मके उदयसे युक्त श्रुतज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न होता है । विभंगज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे युक्त अवधिज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है । आभिनिबोधिकज्ञानी तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, तीन प्रकारके सम्यक्त्वसे युक्त मतिज्ञानावरणीय कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है ।

उदयपच्चइयत्तं घडदे, मदिणाणावरणीयस्स देसघादिफद्दयाणमुदएण समुप्पत्तीए । ओवसमियपच्चइयत्तं, उवसमाणुवलंभादो? ण, णाणावरणीयसव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावेण उवसमसण्णिदेण आभिणिबोहियणाणुप्पत्तिदंसणादो । एवं सुदणाणि-ओहिणाणि मणपज्जवणाणि-चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणि-ओहिदंसणिआदीणं वत्तव्वं, विसेसाभावादो । सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति खओवसमियं, सम्मामिच्छत्तोदयजणिदत्तादो । सम्मामिच्छत्तफद्दयाणि सव्वघादीणि चेव, कधं तदुदएण समुप्पण्णं सम्मामिच्छत्तं उभयपच्चइयं होदि? ण, सम्मामिच्छत्तफद्दयाणमुदयस्स सव्वघादित्ताभावादो । तं कुदो णव्वदे? तत्थतणसम्मत्तस्सुप्पत्तीए अण्णहाणुववत्तीदो । सम्मामिच्छत्तदेसघादिफद्दयाणमुदएण तस्सेव सव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावेण उवसमसण्णिदेण सम्मामिच्छत्तमुप्पज्जदि त्ति तदुभयपच्चइयत्तं । (सम्मत्तलद्धि त्ति खओवसमियं, सम्मत्तोदयजणिदत्तादो । सम्मत्तफद्दयाणि देसघादीणि चेव, कधं तदुदएण समुप्पण्णं उभयपच्चइयं होदि?) ण, सम्मत्त*

शंका- आभिनिबोधिकज्ञानके उदयप्रत्ययिकपना बन जाता है, क्योंकि, मतिज्ञानावरण कर्मके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे इसकी उत्पत्ति होती है । पर औपशमिकनिमित्तकपना नहीं बनता, क्योंकि, मतिज्ञानावरण कर्मका उपशम नहीं पाया जाता ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणीय कर्मके सर्वघाति स्पर्धकोंके उपशम संज्ञावाले उदयाभावसे आभिनिबोधिक ज्ञानकी उत्पत्ति देखी जाती है, इसलिये इसका औपशमिकनिमित्तकपना भी बन जाता है ।

इसी प्रकार श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी आदिका कथन करना चाहिये, क्योंकि, उपर्युक्त कथनसे इनके कथनमें कोई विशेषता नहीं है ।

सम्यग्मिथ्यात्व लब्धि क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह सम्यग्मिथ्यात्वके उदयसे उत्पन्न होती है ।

शंका- सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धक सर्वघाति ही होते हैं, इसलिये इनके उदयसे उत्पन्न हुआ सम्यग्मिथ्यात्व उभयप्रत्ययिक कैसे हो सकता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धकोंका उदय सर्वघाति नहीं होता।

शंका- वह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्वमें सम्यक्त्वरूप अंशकी उत्पत्ति अन्यथा बन नहीं सकती । इससे मालूम पड़ता है कि सम्यग्मिथ्यात्व कर्मके स्पर्धकोंका उदय सर्वघाति नहीं होता ।

सम्यग्मिथ्यात्वके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे और उसीके सर्वघाति स्पर्धकोंके उपशम संज्ञावाले उदयाभावसे सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक कहा गया है ।

सम्यक्त्वलब्धि क्षायोपशमिक है, क्योंकि, वह सम्यक्प्रकृतिके उदयसे उत्पन्न होती है ।

शंका- सम्यक्प्रकृतिके स्पर्धक देशघाति ही होते हैं । उसके उदयसे उत्पन्न हुआ सम्यक्त्व उभयप्रत्ययिक कैसे हो सकता है ?

---

* ताप्रतौ 'ण, (सम्मत्तलद्धि त्ति तदुभयपच्चइयत्तं), सम्मत्त-' इति पाठः ।

देसघादिफद्दयाणमुदएण सम्मत्तुप्पत्तीदो ओदइयं । ओवसमियं पि तं, सव्वघादिफद्दयाणमुदयाभावादो । दंसणमोहणीयभेदसम्मत्तफद्दयाणं सव्वघादित्तणेण उवसंताणं देसघादित्तणेण उदिण्णाणं कारियं वेदगसम्मत्तमिदि तदुभयपच्चइयत्तं उच्चदि त्ति भणिदं होदि। एसो अत्थो पुव्विल्लेसु उत्तरिल्लेसु पदेसु जोजेयव्वो, पहाणत्तादो। एवं संजमासंजम-संजम-दाण-लाह-भोग-परिभोग-वीरियलद्धीणं पि तदुभयपच्चइयत्तं परूवेयव्वं। आयारधरे त्ति तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो, आयारसुदणाणावरणस्स देसघादिफद्दयाणं सव्वघादित्तणेण उवसंताणमुदएण आयारसुदुप्पत्तीदो। एवं जाणिदूण वत्तव्वं जाव दिट्ठिवादधरे त्ति वा। एकादशांगविद्गणी। द्वादशांगविद्वाचकः। एवमेदे खओवसमिया भावा अण्णे वि सहुमीभूदा तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम।

जो सो अजीवभावबन्धो णाम सो तिविहो विवागपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव अविवागपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव ॥ २० ॥

मिच्छत्तासंजम-कसाय-जोगेहितो पुरिसप्पओगेहि वा जे णिप्पण्णा अजीवभावा

समाधान– नहीं, क्योंकि सम्यक्त्वके देशघाति स्पर्धकोंके उदयसे सम्यक्त्वकी उत्पत्ति होती है, इसलिये तो वह औदायिक है। और वह औपशमिक भी है, क्योंकि, वहाँ सर्वघाति स्पर्धकोंका उदय नहीं पाया जाता।

सम्यक्प्रकृति दर्शनमोहनीयका एक भेद है। उसके सर्वघातिरूपसे उपशमको प्राप्त हुए और देशघातिरूपसे उदयको प्राप्त हुए स्पर्धकोंका वेदकसम्यक्त्व कार्य है, इसलिये वह तदुभयप्रत्ययिक कहा गया है; यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस अर्थकी पहलेके और आगेके सब पदोंमें योजना करनी चाहिए, क्योंकि, उभयनिमित्तक भावोंमें इसीकी प्रधानता है।

इसी प्रकार संयमासंयमलब्धि, संयमलब्धि, दानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, परिभोगलब्धि और वीर्यलब्धिको भी तदुभयप्रत्ययिक कहना चाहिये।

आचारधर तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध है, क्योंकि, आचारश्रुतज्ञानावरणके सर्वघातिरूपसे उपशमको प्राप्त हुए देशघातिस्पर्धकोंके उदयसे आचारश्रुतकी उत्पत्ति होती है इसी प्रकार दृष्टिवादधर तकके सब पदोंका जानकर व्याख्यान करना चाहिये।

ग्यारह अंगका ज्ञाता गणी कहलाता है और बारह अंगका ज्ञाता वाचक कहलाता है।

इस प्रकार ये क्षायोपशमिक भाव और अति सूक्ष्म दूसरे भी क्षायोपशमिक भाव तदुभयप्रत्ययिक जीवभावबन्ध हैं।

विशेषार्थ– यहाँपर क्षायोपशमिकभावके भेद बहुत विस्तारसे किए गए हैं, फिर भी तत्त्वार्थसूत्रमें इस भावके जितने भेद किए गए हैं उनमें इन सब भावोंका अन्तर्भाव हो जाता है।

अजीवभावबन्ध तीन प्रकारका है–विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध, अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध और तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध ॥ २० ॥

मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे या पुरुषके प्रयत्नसे जो अजीवभाव उत्पन्न होते हैं

तेसिं विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । जे अजीवभावा मिच्छत्तादिकारणेहि विणा समुप्पण्णा तेसिमविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । जे दोहि वि कारणेहि समुप्पण्णा तेसिं तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो त्ति सण्णा । एवं तिविहो चेव अजीवभावबंधो होदि, अण्णस्स असंभवादो ।

आगमोद्धारक आचार्य श्री सुधर्मसागर जी महाराज

जो सो विवागपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो-पओगपरिणदा वण्णा पओगपरिणदा सद्दा पओगपरिणदा गंधा पओगपरिणदा रसा पओगपरिणदा फासा पओगपरिणदा गदी पओगपरिणदा ओगाहणा पओगपरिणदा संठाणा पओगपरिणदा खंधा पओगपरिणदा खंधदेसा पओगपरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया पओगपरिणदसंजुत्ता भावा सो सव्वो विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ॥ २१ ॥

वण्णणामकम्मोदएण ओरालियसरीरखंधेसु जादवण्णा पओगपरिणदा णाम,

उनकी विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है । जो अजीवभाव मिथ्यात्व आदि कारणोंके बिना उत्पन्न होते हैं उनकी अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है । और जो दोनों ही कारणोंसे उत्पन्न होते हैं उनकी तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध यह संज्ञा है । इस तरह तीन प्रकारका ही अजीवभावबन्ध होता है, क्योंकि, इनके सिवा अन्य अजीवभावबन्ध सम्भव नहीं है ।

विशेषार्थ—यहाँ जीवभावबन्धके समान अजीवभावबन्ध भी तीन प्रकारका बतलाया गया है । यहाँ विपाकसे पुरुषका प्रयत्न या उसके मिथ्यात्व आदि भाव लिये गये हैं । इनके निमित्तसे पुद्गलकी जो रूप रसादि पर्यायें या दूसरी अवस्थायें होती हैं वे विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध कहलाते हैं । जो पुरुषके प्रयत्नके बिना पुद्गलके बन्धरूप विविध प्रकारके परिणमन होते हैं वे अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध कहलाते हैं और तदुभय इन दोनोंरूप होते हैं । यह उक्त कथनका सार है ।

जो विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध होता है उसका निर्देश इस प्रकार है—प्रयोगपरिणत वर्ण, प्रयोगपरिणत शब्द, प्रयोगपरिणत गन्ध, प्रयोगपरिणत रस, प्रयोगपरिणत स्पर्श, प्रयोगपरिणत गति, प्रयोगपरिणत अवगाहना, प्रयोगपरिणत संस्थान, प्रयोगपरिणत स्कन्ध, प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश और प्रयोगपरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर जो दूसरे भी प्रयोगपरिणत संयुक्त भाव होते हैं वह सब विपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ॥ २१ ॥

वर्ण नामकर्मके उदयसे औदारिकशरीरके स्कन्धोंमें उत्पन्न हुए वर्ण प्रयोगपरिणत वर्ण हैं

हलिद्दचुण्णजोगेण पूअफल-पण्णचुण्णसंजोगेण वा जणिदवण्णा वि पओअपरिणदा णाम। संख-वीणा-वंस-भेरी-पटह-झल्लरी-मुइंगसद्दा कंठोट्ठाविजणिदसद्दा च पओअपरिणदा त्ति भण्णंते। गंधजुत्तिसत्थवुत्तविहाणेण जणिदगंधा पओअपरिणदा णाम। सूअसत्थउत्त-विहाणेण जणिदरसा पओअपरिणदा रसा णाम रसणामकम्मजणिदरसा वा। फासणा-मकम्मोदयजणिदट्ठफासा पओअपरिणदा णाम रूवादिपासा[ऊ] वा। कंड-सेल्ल-जंत-गोफण-वत्थरादीणं गई पओअपरिणदा। कट्टिमजिणभवणादीणमोगाहणा पओअपरि-णदा। कट्ठ-सिला-थंभ-तुलादीणं कट्टिमाणं संठाणा पओअपरिणदा। घड-पिढर-रंजणा-दीणं पि कट्टिमाणं खंधा पओअपरिणदा। पओअपरिणदाणं खंधाणमद्धं तिभागो वा पओअपरिणदा[ऊ] खंधदेसा। पओअपरिणदाणं खंधाणं भेदं गदाणं चदुब्भागो पंचम-भागो वा पओअपरिणदा खंधपदेसा। जे च अमी अण्णे च एवमादिया पओअपरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो विवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम।

जो सो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- विस्ससापरिणदा वण्णा विस्समापरिणदा सद्दा विस्ससापरि-णदा गंधा विस्ससापरिणदा रसा विस्ससापरिणदा फासा विस्ससा

या हलदीके और चूनेके योगसे अथवा पूगफल और पर्णचूर्णके योगसे उत्पन्न हुए वर्ण भी प्रयोगपरिणत वर्ण हैं। शंख, वीणा, बांस, भेरी, पटह, झालर और मृदंगके शब्द और कण्ठ, ओष्ठ आदिसे उत्पन्न हुए शब्द भी प्रयोगपरिणत शब्द हैं। गन्ध बनानेकी युक्तिका कथन कर-नेवाले शास्त्रमें जो विधि कही है उसके अनुसार उत्पन्न किये गये गन्ध प्रयोगपरिणत गन्ध हैं। भोजनशास्त्रमें कही हुई विधिके अनुसार उत्पन्न किये गये रस प्रयोगपरिणत रस हैं या रस नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए रस प्रयोगपरिणत रस हैं। स्पर्श नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए आठ प्रकारके स्पर्श प्रयोगपरिणत स्पर्श हैं, अथवा रुई आदिमें संस्कारसे जो आठ प्रकारके स्पर्श उत्पन्न किये जाते हैं वे प्रयोगपरिणत स्पर्श हैं।

लकडी, शैल, यन्त्र, गोफण और पत्थर आदिकी गति प्रयोगपरिणत गति है। कृत्रिम जिनभवन आदिकी अवगाहना प्रयोगपरिणत अवगाहना है। बनाये गये काष्ठ, शिला, स्तम्भ और तराजू आदिके आकार प्रयोगपरिणत संस्थान हैं। बनाये गये घट, पिढर और रांजन आदिके भी स्कन्ध प्रयोगपरिणत स्कन्ध हैं। प्रयोगपरिणत स्कन्धोंका चौथा भाग या तृतीय भाग प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश हैं और भेदको प्राप्त हुए प्रयोगपरिणत स्कन्धोंका चौथा भाग या पाँचवाँ भाग प्रयोगपरिणत स्कन्धप्रदेश हैं। ये या इनसे लेकर इसी प्रकारके प्रयोगपरिणत जो दूसरे भी संयुक्त भाव हैं वह सब विपाकप्रत्ययिक अजीव भावबन्ध हैं।

जो अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है-विस्रसा-परिणत वर्ण, विस्रसापरिणत शब्द, विस्रसापरिणत गन्ध, विस्रसापरिणत रस, विस्रसा-

---

[ऊ] अ-आ- काप्रतिषु 'रूवा का पशा वादिपासा' इति पाठः।

परिणवा गदी विस्ससापरिणवा ओगाहणा विस्ससापरिणवा संठाणा विस्ससापरिणवा खंधा विस्ससापरिणदा खंधदेसा विस्ससापरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमाविया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ॥ २२ ॥

अकट्टिमाणं भवण-विमाण-मेरु कुलसेलादीणं वण्णो पुढवि-आउ तेउ-वाऊणमकट्टिम-वण्णा च विस्ससापरिणदा णाम । वंसादीणं मुत्तिदव्वाणं संघट्टणेण समुट्ठिदा विस्स-सापरिणदा सद्दा । कत्थूरि-कुंकुमागरु-तमालपत्तादीणं जे साभाविया गंधा ते विस्स-सापरिणदा गंधा । जंबू-जंबीर-पणसंबादीणं फलाणं पुप्फंकुरादीणं च साभाविया जे रसा ते विस्ससापरिणदा रसा । पउमुप्पलादीणं जे साभाविया फासा ते विस्ससाप-रिणदा फासा । चंदाइच्चगह-णक्खत्त-ताराणं वाऊणं च जा गदी सा विस्ससाप-रिणदा गदी । अकट्टिमाणं भवणविमाणाणं जिणहराणं सिद्धखेत्तागासाणं जा ओगाहणा सा विस्ससापरिणदा ओगाहणा णाम । गंध रस-फासा जेसु पुव्वुद्दिट्ठा ते गंध-रस-फासाणमाधारभूदा ओरालिय- [illegible] अत्थ अविवागपच्चइत्तं ण जुज्जदे? जदि एवं तो एदे मोत्तूण पोग्गलाणं जे साभाविया गंध-रस-फासा ते घेत्तव्वा ।

परिणत स्पर्श, विस्रसापरिणत गति, विस्रसापरिणत अवगाहना, विस्रसापरिणत संस्थान, विस्रसापरिणत स्कन्ध, विस्रसापरिणत स्कन्धदेश और विस्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर इसी प्रकारके विस्रसापरिणत जो दूसरे संयुक्त भाव हैं वह सब अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ॥ २२ ॥

अकृत्रिम भवन, विमान, मेरुपर्वत और कुलपर्वत आदिके वर्ण या पृथिवी, जल, अग्नि और वायुके अकृत्रिम वर्ण विस्रसा परिणत वर्ण हैं। बांस आदि मूर्त द्रव्योंके संघर्षणसे उत्पन्न हुए शब्द विस्रसापरिणत शब्द हैं। कस्तूरी, कुंकुम, अगरु और तमालपत्र आदिकी जो स्वाभाविक गन्ध होती है वह विस्रसापरिणत गन्ध है। जम्बू, जंबीर, पनस और आम्र आदि फलोंके तथा फूल और अंकुर आदिके जो स्वाभाविक रस होते हैं वे विस्रसापरिणत रस हैं। पद्म और उत्पल आदिके जो स्वाभाविक स्पर्श होते हैं वे विस्रसापरिणत स्पर्श हैं। चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और ताराओंकी तथा वायुकी जो गति होती है वह विस्रसापरिणत गति है। अकृत्रिम भवन, विमान और जिन-घर आदि तथा सिद्धक्षेत्रके आकाशकी जो अवगाहना है वह विस्रसापरिणत अवगाहना है।

शंका–जिन पदार्थोंमें पूर्वनिर्दिष्ट गन्ध, रस और स्पर्श नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुए गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं वे अविपाकप्रत्ययिक नहीं बन सकते?

समाधान–यदि ऐसा है तो इन्हें छोड़कर पुद्गलोंके जो स्वाभाविक वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श होते हैं वे यहांपर लेने चाहिये।

चंदाइच्च-गह-णक्खत्त-ताराणं भवण-विमाण-कुलसेलादीणं च जे साभाविया संठाणा ते विस्ससापरिणदा संठाणा । तेसिं चेव चंदाइच्चबिंबादीणं जे खंधा ते विस्ससा-परिणदा खंधा । मेहादीणं विस्ससापरिणदखंधाणं जाणि खंधाणि ताणि विस्ससा-परिणदा खंधदेसा । मेहिंदधणु-विज्जु चंदक्कादीणं[1] जे अवयवा ते विस्ससापरिणदा खंधपदेसा । जे च इमे पुव्वद्दिट्ठा अण्णे च एवमादिया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा मार्गदर्शक: सत्को अविवागपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ।

जो सो तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो पओअपरिणदा वण्णा वण्णा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा सद्दा सद्दा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गंधा गंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा रसा रसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा फासा फासा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गदी गदी विस्ससापरिणदा (पओअपरिणदा ओगाहणा ओगाहणा विस्ससापरिणदा) पओअपरि-णदा संठाणा संठाणा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधा खंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधदेसा खंधदेसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधपदेसा खंधपदेसा विस्ससापरिणदा जे चामण्णे एवमादिया पओअ-विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो तदुभय-पच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ॥ २३ ॥

चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारकाओंके तथा भवन, विमान और कुलाचल आदिके जो स्वाभाविक संस्थान होते हैं वे विस्रसापरिणत संस्थान हैं । उन्हीं चन्द्र सूर्यके बिम्ब आदिके जो स्कन्ध होते हैं वे विस्रसापरिणत स्कन्ध हैं । स्वभावसे परिणत हुए मेघादिकके स्कन्धोंके जो स्कन्ध होते हैं वे विस्रसापरिणत स्कन्धदेश हैं । मेघ, इन्द्रधनुष, बिजली, चन्द्र और सूर्य आदिके जो अवयव होते हैं वे विस्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश हैं । ये पूर्वोक्त और इनसे लेकर इसी प्रकारके विस्रसापरिणत और भी जो संयोगको प्राप्त हुए भाव हैं वह सब अविपाकप्रत्ययिक अजीवभावबंध है।

जो तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबंध है उसका निर्देश इस प्रकार है--प्रयोग-परिणत वर्ण और विस्रसापरिणत वर्ण, प्रयोगपरिणत शब्द और विस्रसापरिणत शब्द, प्रयोगपरिणत गंध और विस्रसापरिणत गन्ध, प्रयोगपरिणत रस और विस्रसा-परिणत रस, प्रयोगपरिणत स्पर्श और विस्रसापरिणत स्पर्श, प्रयोगपरिणत गति और विस्रसापरिणत गति, (प्रयोगपरिणत अवगाहना और विस्रसापरिणत अवगाहना) प्रयोगपरिणत संस्थान और विस्रसापरिणत संस्थान, प्रयोगपरिणत स्कन्ध, प्रयोगपरिणत स्कन्धदेश और विस्रसापरिणत स्कन्धदेश, प्रयोगपरिणत स्कन्धप्रदेश और विस्रसापरिणत स्कन्धप्रदेश; ये और इनसे लेकर प्रयोग और विस्रसापरिणत जितने भी संयुक्तभाव हैं वह सब तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबंध है।२३।

---

[1] आ-काप्रत्योः 'विज्जुवदक्कादीणं', ताप्रतौ 'विज्जुवडक्कादीणं' इति पाठः ।

एवस्स अत्थो वुच्चदे- पओअपरिणदखंधवण्णेहि विस्ससापरिणदखंधवण्णाणं जो संजोगो सो तदुभयपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम । को एत्थ संबंधो घेप्पदे? संजोग-लक्खणो समवायलक्खणो वा । तत्थ संजोगो दुविहो देसपच्चासत्तिकओ गुणपच्चा-सत्तिकओ चेवि । तत्थ देसपच्चासत्तिकओ णाम दोण्णं दव्वाणमवयवफासं काऊण जमच्छणं सो देसपच्चासत्तिकओ संजोगो । गुणेहि जमण्णोण्णाणुहरणं सो गुणपच्चा-सत्तिकओ संजोगो । समवायसंजोगो सुगमो । एवं सद्द-गंध-रस-फासोगाहण-संठाण-गदि-खंध-खंधदेस-खंधपदेसाणं च जहासंभवं दुसंजोगपरूवणा कायव्वा । सुगमं ।

योगदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जो सो यप्पो दव्वबंधो णाम सो दुविहो आगमथो दव्वबंधो चेव णोआगमदो दव्वबंधो चेव ॥ २४ ॥

एवं दुविहो चेव दव्वबंधो, अण्णस्सासंभवादो ।

जो सो आगमदो[1] दव्वबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो–ठिदं जिदं परिजिदं वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया अणुवजोगा दव्वे त्ति

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं– प्रयोगपरिणत स्कन्धोंके वर्णोंके साथ विस्रसापरिणत स्कन्धोंके वर्णोंका जो संयोग होता है वह तदुभयप्रत्ययिक अजीवभावबन्ध है ।

शंका–यहाँ कौनसा सम्बन्ध लिया गया है ?

समाधान–संयोगसम्बन्ध और समवायसम्बन्ध दोनों लिये गये हैं ।

संयोग दो प्रकारका है–देशप्रत्यासत्तिकृत संयोगसम्बन्ध और गुणप्रत्यासत्तिकृत संयो-गसम्बन्ध । देशप्रत्यासत्तिकृतका अर्थ है दो द्रव्योंके अवयवोंका सम्बद्ध होकर रहना, यह देश-प्रत्यासत्तिकृत संयोग है । गुणोंके द्वारा जो परस्पर एक दूसरेको ग्रहण करना वह गुणप्रत्यास-त्तिकृत संयोगसम्बन्ध है । समवायसम्बन्ध सुगम है ।

इसी प्रकार शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श, अवगाहना, संस्थान, गति, स्कन्ध, स्कन्धदेश और स्कन्धप्रदेश; इनका यथासम्भव द्विसंयोगी कथन करना चाहिये । यह कथन सुगम है ।

जो द्रव्यबन्ध सूचित कर आये हैं वह दो प्रकारका है–आगम द्रव्यबन्ध और नोआगम द्रव्यबन्ध ॥ २४ ॥

इसप्रकार द्रव्यबन्ध दो प्रकारका ही है, क्योंकि, इसका अन्य भेद सम्भव नहीं है ।

जो आगम द्रव्यबन्ध है उसका निर्देश इस प्रकार है– स्थित, जित, परिजित, वाचनोपगत, सूत्रसम, अर्थसम, ग्रन्थसम, नामसम, और घोषसम; इनके विषयमें वाचना, पृच्छना, प्रतीच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षणा, स्तव, स्तुति और धर्मकथा तथा इनसे

---

[1] अ० आ० काप्रतिषु ' जो णोआगमदो ' इति पाठः ।

कट्टु जावदिया अणुवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो दव्वबंधो णाम ॥ २५ ॥

सुगममेदं, बहुसो परूविदत्तादो ।

जो सो णोआगमदो दव्वबंधो सो दुविहो– पओअबंधो चेव विस्ससाबंधो चेव ॥ २६ ॥

मार्गदर्शक श्री सुविधिसागर जी महाराज

एवं णोआगमदो बंधो दुविहो चेव; अण्णस्सासंभवादो ।

जो सो पओअबंधो णाम सो थप्पो ॥ २७ ॥

कुदो ? बहुवण्णिज्जत्तादो ।

जो सो विस्ससाबंधो णाम सो दुविहो–सादियविस्ससाबंधो चेव अणादियविस्ससाबंधो चेव ॥ २८ ॥

एवं साहाविओ बंधो दुविहो चेव; अण्णस्स अणुवलंभादो ।

जो सो सादियविस्ससाबंधो णाम सो थप्पो ॥ २९ ॥

कुदो ? बहुवण्णिदो ।

लेकर जो अन्य अनुपयोग हैं उनमें द्रव्य निक्षेप रूपसे जितने अनुपयुक्त भाव हैं वह सब आगमद्रव्यबन्ध है ॥ २५ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, क्योंकि इसका अनेक बार कथन कर आये हैं ।

विशेषार्थ– यहाँ आगमके भेद और उनके उपयोगके प्रकार बतलाकर अनुपयुक्त दशामें आगमद्रव्यबन्ध कहा है । आशय यह है कि बन्धविषयक शास्त्रके जितने प्रकारके जानकार हैं और उनके उपयोग हैं वे सब जब अनुपयुक्त दशामें रहते हैं तब उनकी आगमद्रव्यबन्ध संज्ञा होती है ।

जो नोआगमद्रव्यबन्ध है वह दो प्रकारका है प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध ॥ २६ ॥

इस प्रकार नोआगमद्रव्यबन्ध दो ही प्रकारका है, क्योंकि, इसका अन्य भेद सम्भव नहीं है ।

जो प्रयोगबन्ध है वह स्थगित करते हैं ॥ २७ ॥

क्योंकि, आगे इसका बहुत वर्णन करना है ।

जो विस्रसाबन्ध है वह दो प्रकारका है–सादिविस्रसाबन्ध और अनादिविस्रसाबन्ध ॥ २८ ॥

इस प्रकार विस्रसाबन्ध दो ही प्रकारका है, क्योंकि, इसका अन्य भेद नहीं पाया जाता ।

जो सादि विस्रसाबंध है वह स्थगित करते हैं ॥ २९ ॥

क्योंकि, इसका आगे बहुत वर्णन करना है ।

जो सो अणादियविस्ससाबंधो णाम सो तिविहो—धम्मत्थिया अधम्मत्थिया आगासत्थिया चेदि ।। ३० ॥

जीवत्थिया पोग्गलत्थिया एत्थ किण्ण परूविदा? ण, तासिं सकिरियाणं सगमणाणं धम्मत्थियादीहि सह अणादियविस्ससाबंधाभावादो । ण तासिं पदेसबंधो वि अणादियो वइससियो अत्थि; पोग्गलत्तण्णहाणुववत्तीदो तप्पदेसाणं पि संजोग-विजोगसिद्धीए । एक्केक्को दव्वबंधो तिविहो होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

धम्मत्थिया धम्मत्थियदेसा धम्मत्थियपदेसा अधम्मत्थिया अधम्मत्थियदेसा अधम्मत्थियपदेसा आगासत्थिया आगासत्थियदेसा आगासत्थियपदेसा एदासिं♠ तिण्णं पि अत्थआणमण्णोण्णपदेसबंधो होदि ।। ३१ ॥

जो अनादि विस्रसाबन्ध है वह तीन प्रकारका है- धर्मास्तिकविषयक, अधर्मास्तिकविषयक और आकाशास्तिकविषयक ।। ३० ।।

शंका—यहाँ जीवास्तिक और पुद्गलास्तिकविषयक अनादि विस्रसाबन्ध क्यों नहीं कहा?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उनकी अपनी गमन आदि क्रियाओंका धर्मास्तिक आदिके साथ अनादिसे स्वाभाविक संयोग नहीं पाया जाता । यदि कहा जाय कि उनका प्रदेशबन्ध तो अनादिसे स्वाभाविक है सो यह बात भी नहीं है, क्योंकि, यदि ऐसा माना जायगा तो पुद्गलोंमें पुद्गलत्व नहीं बनेगा और पुद्गल तथा जीवोंके प्रदेशोंका भी संयोग और वियोग अनुभव सिद्ध है, अतः इनका अनादि विस्रसाबन्ध नहीं कहा है ।

विशेषार्थ— यहाँ धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्यका अनादि विस्रसाबन्ध बतलाया है । प्रश्न यह है कि ऐसा बन्ध पुद्गल और जीवोंका क्यों नहीं कहा । इसका जो समाधान किया है उसका भाव यह है कि एक तो जीव और पुद्गलकी जो गति, स्थिति और अवगाहन क्रिया होती है वह बदलती रहती है । दूसरे पुद्गलके परमाणुओंका परस्पर बन्ध भी अनादिकालीन नहीं बन सकता है । और तीसरे पुद्गलों और जीवोंके प्रदेशोंका संयोग और वियोग भी होता रहता है । न तो इन दोनों द्रव्योंका अन्यसे संयोग अनादि और वैस्रसिक है और न स्वयं अपने प्रदेशोंका संयोग भी ऐसा है, इसलिये इनके सम्बन्धको अनादि विस्रसाबन्धमें सम्मिलित नहीं किया है । माना कि जीवके प्रदेशोंमें विभाग नहीं होता, पर वे सदा धर्मादिक द्रव्योंके समान एक आकारमें स्थिर नहीं रहते, इसलिये इसका भी अनादि विस्रसाबन्ध नहीं माना है ।

एक एक द्रव्यबन्ध तीन प्रकारका है यह ज्ञान करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

धर्मास्तिक, धर्मास्तिकदेश और धर्मास्तिकप्रदेश; अधर्मास्ति, अधर्मास्तिकदेश और अधर्मास्तिकप्रदेश तथा आकाशास्तिक, आकाशास्तिकदेश और आकाशास्तिकप्रदेश; इन तीनों ही अस्तिकायोंका परस्पर प्रदेशबन्ध होता है ।। ३१ ।।

♠ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु धम्मत्थिया धम्मत्थियपदेसा अधम्मत्थिया अधम्मत्थियपदेसा आगासत्थिया आगासत्थियपदेसा एदासि इति पाठः । ताप्रतौ तु 'धम्मत्थियदेसा' आदीनि कोष्ठकान्तर्गतानि सन्ति ।

सव्वावयवसमूहो धम्मत्थिया णाम । एदस्स धम्मत्थियअवयविस्स सगअवयवेहि जो बंधो सो धम्मत्थियबंधो णाम । तस्स अद्धप्पहुडि जाव चदुब्भागं ति सो धम्मत्थियदेसो णाम । तेसिं धम्मत्थियदेसाणं सगअवयवेहि जो बंधो सो धम्मत्थियदेसबंधो णाम । तस्सेव चदुब्भागप्पहुडि पदेसा णाम । तेसिमण्णोण्णबंधो धम्मत्थियपदेसबंधो त्ति भण्णदि । एवमधम्मत्थिय-आगासत्थियाणं पि परूवणा कायव्वा । एदासिं तिण्हं पि अत्थियाणमण्णोण्णपदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादियविस्ससाबंधो णाम ।

See सु० 35 **जो सो थप्पो सादियविस्ससाबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसोवेमादा णिद्धदा वेमादा लुक्खदा बंधो ॥ ३२ ॥**

But see p. 32 मादा णाम सरिसत्तं । विगदा मादा विमादा । विमादा णिद्धदा विमादा लुक्खदा च बंधो होदि, बंधकारणं होदि त्ति वुत्तं होदि । कधं कारणस्स कज्जवएसो ? कारणे कज्जुवयारादो । णिद्धदाए विसरिसत्तं लुक्खदं पेक्खिदूण लुक्खदाए विसरिसत्तं णिद्धदं पेक्खिदूण घेत्तव्वं । तेण णिद्धपरमाणूणं लुक्खपरमाणूहि सह बंधो होदि । लुक्खपरमाणूणं पि णिद्धपरमाणूहि सह बंधो होदि, गुणेण सरिसत्ताभावादो ।

समणिद्धदा समलुक्खदा भेदो ॥ ३३ ॥

धर्मद्रव्यके सब अवयवोंके समूहका नाम धर्मास्तिक है । अवयवीरूप इस धर्मास्तिकका अपने अवयवोंके साथ जो बन्ध है वह धर्मास्तिकबन्ध कहलाता है । इसके आधेसे लेकर चौथे भाग तकके हिस्सेको धर्मास्तिदेश कहते हैं । इन धर्मास्तिकके देशोंका अपने अवयवोंके साथ जो बन्ध है वह धर्मास्तिकदेशबन्ध कहलाता है । और इसीके चौथे भागसे लेकर आगेके सब अवयव प्रदेश कहलाते हैं । इनका परस्पर जो बन्ध है वह धर्मास्तिकप्रदेशबन्ध कहलाता है । इसी प्रकार अधर्मास्तिक और आकाशास्तिकका भी कथन करना चाहिये । इन तीनों ही अस्तिकायोंका परस्परमें जो प्रदेशबन्ध होता है वह सब अनादि विस्रसाबन्ध है ।

See सु० 35 **जो सादि विस्रसाबन्ध स्थगित कर आये थे उसका निर्देश इस प्रकारका है— विसदृश स्निग्धता और विसदृश रूक्षता बन्ध है ॥ ३२ ॥**

मादाका अर्थ सदृशता है । जिसमें सदृशता नहीं होती उसे विमादा कहते हैं । विसदृश स्निग्धता और विसदृश रूक्षता यह बन्ध है अर्थात् बन्धका कारण है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका-कारणको कार्य क्यों कहा ?

समाधान-कारणमें कार्यका उपचार होनेसे ऐसा कहा है ।

यहाँ स्निग्धतामें विसदृशता रूक्षताकी अपेक्षा और रूक्षतामें विसदृशता स्निग्धताकी अपेक्षा लेनी चाहिये । इसलिये यह निष्कर्ष निकला कि स्निग्ध परमाणुओंका रूक्ष परमाणुओंके साथ बन्ध होता है और रूक्ष परमाणुओंका भी स्निग्ध परमाणुओंके साथ बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ गुणकी अपेक्षा समानता नहीं पाई जाती ।

समान स्निग्धता और समान रूक्षता भेद है ॥ ३३ ॥

समणिद्धदा समलुक्खदा च भेदस्स असंजोगस्स कारणं होदि । णिद्धपरमाणूणं णिद्धपरमाणूहि लुक्खपरमाणूणं च लुक्खपरमाणूहि सह बंधो णत्थि त्ति भणिदं होदि । णिद्धपरमाणूहि सह बंधमागदलुक्खपरमाणू जदि णिद्धगुणेण परिणदा होंति, णिद्धपरमाणू वा लुक्खगुणेण परिणदा, तो णिच्छएण भेदेण होदव्वमिदि घेत्तव्वं । एदं अत्थं दोहि वि देसेहि परूविदं गाहाए फुडीकरणत्थमुत्तरसुत्तं भणदि—

णिद्धणिद्धा ण बज्झंति लुक्खलुक्खा य पोग्गला ।
णिद्धलुक्खा य बज्झंति रूवारूवी य पोग्गला ॥ ३४ ॥

एदिस्से गाहाए पढमद्धेण 'समणिद्धदा समलुक्खदा भेदो त्ति एदस्स अत्थो परूविदो । णिद्धपरमाणू णिद्धपरमाणूहि ण बज्झंति ✡ णिद्धगुणभावेण समाणत्तादो । लुक्खा पोग्गला लुक्खपोग्गलेहि सह बंधं णागच्छंति, लुक्खगुणभावेण समाणत्तादो । बिदियद्धेण पढमसुत्तं परूवेदि । 'णिद्ध-लुक्खा य बज्झंति' णिद्धा पोग्गला लुक्खा पोग्गला च परोप्परं बंधमागच्छंति, विसरिसत्तादो । णिद्धलुक्खपोग्गलाणं किं गुणाविभागपडिच्छेदेहि सरिसाणं बंधो ✡ होदि आहो विसरिसाणं बंधो होदि त्ति पुच्छिदे 'रूवारूवी य पोग्गला बज्झंति' त्ति भणिदं । गुणाविभागपडिच्छेदेहि समाणा

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

समान स्निग्धता और समान रूक्षता भेद अर्थात् असंयोगका कारण होता है । स्निग्ध परमाणुओंका स्निग्ध परमाणुओंके साथ और रूक्ष परमाणुओंका रूक्ष परमाणुओंके साथ बन्ध नहीं होता, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । स्निग्ध परमाणुओंके साथ बन्धको प्राप्त हुए रूक्ष परमाणु यदि स्निग्ध गुणरूपसे परिणत होते हैं या स्निग्ध परमाणु रूक्ष गुणरूपसे परिणत होते हैं तो नियमसे उनका भेद हो जाता है, यह अर्थ यहां लेना चाहिये । यह अर्थ दोनों ही सूत्रोंके द्वारा कहा गया है । अब गाथा द्वारा इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिये आगेका गाथासूत्र कहते हैं-

स्निग्ध पुद्गल स्निग्ध पुद्गलोंके साथ नहीं बँधते, रूक्ष पुद्गल रूक्ष पुद्गलोंके साथ नहीं बँधते । किन्तु सदृश और विसदृश ऐसे स्निग्ध रूक्ष पुद्गल परस्पर बँधते हैं ॥ ३४ ।

इस गाथाके पूर्वार्ध द्वारा ' समणिद्धदा समलुक्खदा भेदो ' इस सूत्रका अर्थ कहा गया है । स्निग्ध परमाणु दूसरे स्निग्ध परमाणुओंके साथ नहीं बँधते, क्योंकि, स्निग्ध गुणकी अपेक्षा वे समान हैं । रूक्ष पुद्गल दूसरे रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्धको नहीं प्राप्त होते, क्योंकि, रूक्ष गुणकी अपेक्षा वे समान हैं ।

गाथाके उत्तरार्ध द्वारा प्रथम सूत्रका अर्थ कहते हैं—'णिद्धलुक्खा य बज्झंति' अर्थात् स्निग्ध पुद्गल और रूक्ष पुद्गल परस्पर बन्धको प्राप्त होते हैं, क्योंकि, इनमें विसदृशता पाई जाती है क्या गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका बन्ध होता है या अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा विसदृश स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका बन्ध होता है, ऐसा प्रश्न करने पर 'रूवारूवी य पोग्गला बज्झंति' यह कहा है । जो स्निग्ध और रूक्ष गुणोंसे युक्त पुद्गल गुणोंके

✡ अ. काप्रत्योः ' गुणहि बज्झंति, ' आप्रतौ ' गुणहि बज्झंति ' इति पाठः ।

✡ प्रतिषु ' सरिसाण णिद्धलुक्खापोग्गलाणं बंधो ' इति पाठः ।

जे णिद्धलुक्खगुणजुत्तपोग्गला ते रूविणो णाम, ते वि बज्झंति । विसरिसा पोग्गला अरूविणो णाम, ते वि बंधमागच्छंति । णिद्धलुक्खपोग्गलाणं गुणाविभागपडिच्छेद-संखाए सरिसाणमसरिसाणं च बंधो होदि त्ति भणिदं होदि ।

वेमादा णिद्धदा वेमादा लुक्खदा बंधो ॥ ३५ ॥

णिद्धपोग्गलाणं णिद्धपोग्गलेहि लुक्खपोग्गलाणं लुक्खपोग्गलेहि गुणाविभागपडि-च्छेदेहि सरिसाणमसरिसाणं च पुव्विल्लत्थे बंधाभावे संते तेसिं पि बंधो अत्थि त्ति जाणावणट्ठं एदस्स सुत्तस्स बिदियो अत्थो वुच्चदे । तं जहा–मादा णाम अविभाग-पडिच्छेदो । किं पमाणं तस्स ? जहण्णगुणवड्ढिमेत्तो । द्वे मात्रे यस्यां स्निग्धतायां-मधिके हीने वा द्विमात्रा✽ स्निग्धता, सो बंधो बंधकारणं होदि । णिद्धपोग्गला वेअ-विभागपडिच्छेदुत्तरणिद्धपोग्गलेहि वेअविभागपडिच्छेदहीणणिद्धपोग्गलेहि वा बज्झंति✿ । तिण्णिआदिअविभागपडिच्छेदुत्तरपोग्गलेहि तिण्णिआदि--अविभागपडिच्छेदुत्तरकमेण परिहीणपोग्गलेहि च बंधो णत्थि त्ति घेत्तव्वं । एवं लुक्खपोग्गलाणं पि लुक्खपोग्गलेहि सह बंधो वत्तव्वो ।

अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान होते हैं वे रूपी कहलाते हैं । वे भी बंधते हैं । और विसदृश पुद्गल अरूपी कहलाते हैं । वे भी बन्धको प्राप्त होते हैं । स्निग्ध और रूक्ष पुद्गल गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी संख्याकी अपेक्षा चाहे समान हों चाहे असमान हों, उनका परस्पर बन्ध होता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

See सूत्र 32 **द्विमात्रा स्निग्धता और द्विमात्रा रूक्षता (परस्पर) बन्ध है ॥ ३५ ॥**

गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा सदृश और विसदृश ऐसे स्निग्ध पुद्गलोंका स्निग्ध पुद्गलोंके साथ और रूक्ष पुद्गलोंका रूक्ष पुद्गलोंके साथ पूर्वोक्त अर्थके अनुसार बन्धका अभाव प्राप्त होनेपर उनका भी बन्ध होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये इस सूत्रका दूसरा अर्थ कहते हैं । यथा– मात्राका अर्थ अविभागप्रतिच्छेद है ।

See ५, ५, १० ५, ५, ४० शंका– उसका कितना प्रमाण है ?

See ५, ५, १२ ५, ५, १४ ५, ५, ४३१, ४५०, ४५० समाधान– गुणकी जघन्य वृद्धिमात्र उसका प्रमाण है ।

जिस स्निग्धतामें दो मात्रा अधिक या हीन होती है वह द्विमात्रा स्निग्धता कहलाती है । वह बन्ध है अर्थात् बन्धका कारण है । स्निग्ध पुद्गल दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक स्निग्ध पुद्गलोंके साथ या दो अविभागप्रतिच्छेद कम स्निग्ध पुद्गलोंके साथ बँधते हैं । इनका तीन आदि अविभागप्रतिच्छेद अधिक पुद्गलोंके साथ और तीन आदि अविभागप्रतिच्छेद कम पुद्गलोंके साथ बन्ध नहीं होता, यह अर्थ यहाँ लेना चाहिये । इसी प्रकार रूक्ष पुद्गलोंका भी रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्धका कथन करना चाहिये । अब इस अर्थका निश्चय उत्पन्न करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

---

✽ अ-आ-काप्रतिषु, 'द्विमात्रो' इति पाठः । ✿ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ काताप्रतिषु --पोग्गले हि ण बज्झंति, इति पाठः ।

एवस्स अत्थस्स णिण्णयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

णिद्धस्स णिद्धेण दुरहिएण लुक्खस्स लुक्खेण दुराहिएण।
णिद्धस्स लुक्खेण हवेदि बंधो जहण्णवज्जे विसमे समे वा ॥ ३६ ॥

णिद्धस्स पोग्गलस्स अण्णेण णिद्धपोग्गलेण जदि बंधो होदि तो दुराहिएणेव। लुक्खस्स लुक्खेण जदि बंधो तो वि दुराहिएण बंधो होदि। णिद्धस्स सव्वपोग्गलस्स लुक्खेण सव्वेण पोग्गलेण सह बंधो होदि त्ति भणिदे 'विसमे समे वा'। गुणाविभागपडिच्छेदेहि लुक्खपोग्गलेण सरिसो णिद्धपोग्गलो समो णाम। असरिसो विसमो णाम। तत्थ णिद्ध-लुक्खेण पोग्गलाणं बंधो होदि (त्ति) सव्वेसिं पोग्गलाणं बंधे संपत्ते 'जहण्णवज्जे' त्ति भणिदं। जहण्णगुणाणं णिद्ध-लुक्खपोग्गलाणं सत्थाणेण परत्थाणेण वा णत्थि बंधो। एवं गुणविसिट्ठाणं पोग्गलाणं बंधो होदि, अण्णारिसाणं पोग्गलाणं पुण भेदेण होदव्वं, बंधे विरुद्धगुणसमण्णिदत्तादो।

संपादक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

स्निग्ध पुद्गलका दो गुण अधिक स्निग्ध पुद्गलके साथ और रूक्ष पुद्गलका दो गुण अधिक रूक्ष पुद्गलके साथ बन्ध होता है। तथा स्निग्ध पुद्गलका रूक्ष पुद्गलके साथ जघन्य गुणके सिवा विषम अथवा सम गुणके रहनेपर बन्ध होता है ॥ ३६॥

स्निग्ध पुद्गलका अन्य स्निग्ध पुद्गलके साथ यदि बन्ध होता है तो दो गुण अधिक स्निग्ध पुद्गलके साथ ही होता है। रूक्ष पुद्गलका अन्य रूक्ष पुद्गलके साथ यदि बन्ध होता है तो दो गुण अधिक रूक्ष पुद्गलके साथ ही होता है।

स्निग्ध सब पुद्गलका रूक्ष सब पुद्गलके साथ जो बन्ध होता है वह किस अवस्थामें होता है, ऐसा पूछनेपर 'विसमे समे वा' यह वचन कहा है गुणके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा रूक्ष पुद्गलके साथ सदृश स्निग्ध पुद्गल सम कहलाता है और असदृश स्निग्ध पुद्गल विषम कहलाता है। यहाँ स्निग्ध और रूक्ष गुणके द्वारा पुद्गलोंका बंध होता है, इस नियमके अनुसार सब पुद्गलोंका बन्ध प्राप्त होनेपर 'जहण्णवज्जे' यह कहा है। जघन्यगुणवाले स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका न तो स्वस्थानकी अपेक्षा बन्ध होता है और न परस्थानकी अपेक्षा ही बन्ध होता है। इस तरह इस प्रकारके गुणविशिष्ट पुद्गलोंका बन्ध होता है और अन्यादृश पुद्गलोंका भेद होता है, क्योंकि, बन्धमें विरुद्ध गुणसे युक्त होना आवश्यक है। See 5.4

विशेषार्थ– पुद्गल परमाणुओंके बन्धके विषयमें दो परम्परायें उपलब्ध होती हैं। प्रथम परम्पराका निर्देश यहाँ किया ही है। इसके अनुसार निम्न व्यवस्था फलित होती है।

क्रमांक	गुणांश	सदृशबन्ध	विसदृशबन्ध
१	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं
२	जघन्य+एकादिअधिक	नहीं	नहीं
३	जघन्येतर+समजघन्येतर	नहीं	है
४	जघन्येतर+एकाधिकजघन्येतर	नहीं	है
५	जघन्येतर+द्व्यधिकजघन्येतर	है	है
६	जघन्येतर+त्र्यादिअधिकजघन्येतर	नहीं	है

से तं बंधणपरिणामं पप्प से अब्भाणं✪ वा मेहाणं वा संज्झाणं वा विज्जूणं वा उक्काणं वा कणयाणं वा विसाहाणं वा धूमकेतूणं वा इंदाउहाणं वा से खेत्तं पप्प कालं पप्प उदुं पप्प अयणं पप्प पोग्गलं पप्प जे चामण्णे एवमाविया अंगमलप्पहुडीणि✱ बंधणपरिणामेण परिणमंति सो सव्वो साविवविस्ससाबंधो णाम ॥ ३७ ॥

से ते जहण्णगुणपोग्गलवदिरित्ता पोग्गला तं बंधणपरिणामं तं बंधकारणणिद्ध-लुक्ख

दूसरी परम्परा तत्त्वार्थसूत्रकी है । इसके अनुसार निम्न व्यवस्था फलित होती है--

क्रमांक	गुणांश	सदृशबन्ध	विसदृशबन्ध
१	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं
२	जघन्य+एकादिअधिक	नहीं	नहीं
३	जघन्येतर+समजघन्येतर	नहीं	नहीं
४	जघन्येतर+एकाधिकजघन्येतर	नहीं	नहीं
५	जघन्येतर+द्व्यधिकजघन्येतर	है	है
६	जघन्येतर+त्र्यादिअधिकजघन्येतर	नहीं	नहीं

पार्श्वकीर्ति अभिनन्दन ग्रन्थ की सुविधिसागर जी महाराज

यद्यपि सर्वार्थसिद्धि और तत्त्वार्थवार्तिकमें 'णिद्धस्स णिद्धेण' इत्यादि गाथा उद्धृत की गई है, पर इस गाथाके उत्तरार्द्धके अर्थमें मतभेद है और यह मतभेद तत्त्वार्थवार्तिकसे स्पष्ट हो जाता है । गाथाके उत्तरार्द्धका शब्दार्थ यह है कि स्निग्धगुणवाले परमाणुका रूक्षगुणवाले परमाणुके साथ सम या विषमगुण होनेपर बंध होता है । मात्र जघन्यगुणवालेका किसी भी अवस्थामें बंध नहीं होता । किन्तु तत्त्वार्थवार्तिकमें 'समे विसमे वा' इस पदमें समका अर्थ तुल्यजातीय और विषमका अर्थ अतुल्यजातीय किया है । तत्त्वार्थवार्तिककारके समक्ष वर्गणा-खण्डके ये सूत्र उपस्थित थे, फिर भी उन्होंने यह अर्थ किया है । तत्त्वार्थसूत्रमें 'बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च' यह सूत्र आया है और इस सूत्रसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि तत्त्वार्थसूत्रके मतसे तुल्यजातीय और अतुल्यजातीय पुद्गलपरमाणुओंका बन्ध दो अधिक गुणके होनेपर ही होता है । यही कारण है कि तत्त्वार्थवार्तिककारने उक्त गाथांशका उक्त प्रकारसे अर्थ किया है ।

इस प्रकार वे पुद्गल बन्धनपरिणामको प्राप्त होकर विविध प्रकारके अभ्ररूपसे, मेघरूपसे, सन्ध्यारूपसे, बिजलीरूपसे, उल्कारूपसे, कनकरूपसे, विशावाहरूपसे, धूमकेतुरूपसे व इन्द्रधनुषरूपसे, क्षेत्रके अनुसार, कालके अनुसार, ऋतुके अनुसार, अयनके अनुसार और पुद्गलके अनुसार जो बन्धन परिणामरूपसे परिणत होते हैं वह सब साविविस्रसाबन्ध है ॥ ३७ ॥

'से ते' अर्थात् जघन्यगुण पुद्गलोंके सिवा वे पुद्गल 'तं बंधणपरिणामं' अर्थात् बंधके कारण

✪ अ-आ-काप्रतिषु 'अब्भाण' इति पाठः । ✱ ताप्रतौ-'प्पहुडि (डी) णि इति पाठः ।

गुणपरिणामं पप्प पाविदूण सव्वे णिद्ध-लुक्खपोग्गला बंधमागच्छंति । णवरि णिद्धाणं णिद्धेहि लुक्खाणं लुक्खेहि पोग्गलेहि णत्थि बंधो । किंतु बेअविभागपडिच्छेदाहियाणं णिद्धपोग्गलाणं बेअविभागपडिच्छेदहीणणिद्धपोग्गलेहि अत्थि बंधो । बेअविभागपडिच्छेदाहियलुक्खपोग्गलाणं च बेअविभागपडिच्छेदहीणलुक्खपोग्गलेहि य सह अत्थि बंधो । एवं बंधं पाविदूण से अब्भाणं* वा अवारिसु वा मेहा अब्भा णाम, तेसिमब्भाणं सरूवेण तेसिं ते परिणमंति । वारिसु वा कसणवण्णा मेहा णाम । उवयत्थवण्णकाले पुव्वावरदिसासु विस्समाणा जासवणकुसुमसंकासा संज्झा णाम । रत्त-धवल-सामवण्णाओ-तेजब्भहियाओकुवियभुवंगोओ[*] व्व चलंतसरीरा मेहेसु उवलब्भमाणाओ विज्जूओ णाम । जलंतग्गिपिंडो व्व अणेगसंठाणेहि आगासादो णिवदंता उक्का णाम । माणुस-पसु-पक्खिमारणीयो तरु-गिरिसिहर-विदारणीयो असणीयो कणया णाम । उप्पायकाले अग्गिणा विणा दावाणलो व्व दिसासु उवलब्भमाणो दिसादाहो णाम । उप्पादकाले चेव धूमलट्ठि व्व आगासे उवलब्भमाणा धूमकेतू णाम । पंचवण्णा होदूण धणुवाकारेण वा पुव्वावरदिसासु उवलब्भमाणा इंदाउहा णाम । एवंसि मेह-संज्झा-विज्जुक्क-कणय-दिसादाह-धूमकेतु-

---

भूत स्निग्ध और रूक्ष गुणरूप परिणामको प्राप्त होकर सब स्निग्ध और रूक्ष पुद्गल बन्धको प्राप्त होते हैं । किन्तु इतनी विशेषता है कि स्निग्ध पुद्गलोंका स्निग्ध पुद्गलोंके साथ और रूक्ष पुद्गलोंका रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्ध नहीं होता । किन्तु दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक स्निग्ध पुद्गलोंका दो अविभागप्रतिच्छेद हीन स्निग्ध पुद्गलोंके साथ बन्ध होता है । तथा दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक रूक्ष पुद्गलोंका दो अविभागप्रतिच्छेद हीन रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्ध होता है । इस प्रकार बन्धको प्राप्त होकर वे पुद्गल परिणमन करते हैं । यथा--

वर्षाऋतुके सिवा अन्य समयमें जो मेघ होते हैं उन्हें अभ्र कहते हैं । उन अभ्ररूपसे वे परिणत होते हैं । अथवा वर्षाऋतुमें जो कृष्णवर्णके बादल होते हैं वे मेघ कहलाते हैं । सूर्योदयके समय और सूर्यास्तके समय पूर्वापर दिशाओंमें जो जपा कुसुमके सदृश दिखाई देती है वह सन्ध्या कहलाती है । जो रक्त, धवल और श्यामवर्णकी होती है, जिसमें अत्यधिक तेज होता है, जो कुपित हुए भुजंगके समान चञ्चल शरीरवाली होती है, और जो मेघोंमें उपलब्ध होती है वह विद्युत् कहलाती है । जो जलते हुए अग्निपिण्डके समान अनेक आकारवाली होकर आकाशसे गिरती है वह उल्का कहलाती है । जिससे मनुष्य, पशु और पक्षी मर जाते हैं तथा जो वृक्ष और पर्वतोंके शिखरोंका विदारण करती है ऐसी अशनिको कनक कहते हैं । उत्पातकालमें अग्निके बिना दावानलके समान जो दशों दिशाओंमें उपलब्ध होता उसे दिशादाह कहते हैं । उत्पातकालमें ही धूमयष्टिके समान जो आकाशमें उपलब्ध होता है उसे धूमकेतु कहते हैं । जो पाँच वर्णका होकर धनुषाकाररूपसे या त्रुटित आकाररूपसे पूर्वापर दिशाओंमें उपलब्ध होता है उसे इन्द्रायुध कहते हैं । इन मेघ, सन्ध्या, बिजली, कनक, दिशादाह, धूमकेतु और इन्द्रायुधके आकाररूपसे वे पुद्गल परिणत

---

* अ-आ-काप्रतिषु 'अच्चाणं' इति पाठः । [*] ताप्रतौ 'भुवं (जं) गो' इति पाठः ।

इंदाउहाणमागारेण ते परिणमंति । ते कधं परिणमंति त्ति वुत्ते विसिट्ठागासदेसो खेत्तं । सीदुण्ण♣ वरिसणेहि उवलक्खियो कालो♣ । सिसिर-वसंत-णिवाह-वासा-रत्त-सरदहेमंता उडू । दिणयरस्स दक्खिणुत्तरगमणमयणं । पूरण-गलणसहावा पोग्गला णाम । खेत्तं कालं उडुं♥ अयणं पोग्गलं च तप्पाओग्गं पप्प पाविदूण ते पोग्गला तेसिमागारेण परिणमंति, अण्णहा सव्वत्थ सव्वदा तेसिमुप्पत्तिप्पसंगादो । जे च अमी अण्णे च एवमादिया अंगमलप्पहुडीणि♡ सरीरमलप्पहुडीणि✿ एत्थ प्पहुडिसण्णिदं♠ सुज्जचंदग्गह-णक्खत्तुवराग-परिवेस-गंधव्वणयराइओ♧ घेत्तव्वा । सा सव्वोसाविय विस्ससाबंधो णाम ।

जो सो थप्पो पओअबंधो णाम सो दुविहो- कम्मबंधो चेव णोकम्मबंधो चेव ॥ ३८ ॥

होते हैं । वे किस कारणसे परिणत होते हैं, ऐसा पूछनेपर 'से खेत्तं पप्प' इत्यादि सूत्रवचन कहा है । विशिष्ट आकाशदेशका नाम क्षेत्र है । शीत, उष्ण और वर्षासे उपलक्षित समयका नाम काल है । शिशिर, वसन्त, निदाघ, वर्षा, शरद और हेमन्तका नाम ऋतु है । सूर्यका दक्षिण और उत्तरको गमन करना अयन है । जिनका पूरण और गलन स्वभाव है वे पुद्गल कहलाते हैं । अपने अपने योग्य क्षेत्र, काल, ऋतु, अयन और पुद्गलको प्राप्त होकर वे पुद्गल उन मेघ आदिके आकाररूपसे परिणत होते हैं; अन्यथा सर्वत्र और सर्वदा उनकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है । जो ये और अन्य अंगमल अर्थात् शरीरमल आदि पदार्थ हैं । यहाँ 'प्रभृति' शब्दसे सूर्य, चन्द्र, ग्रह और नक्षत्र इनका उपराग तथा परिवेश और गन्धर्वनगर आदि लेने चाहिए । यह सब सादि विस्रसाबन्ध है । ~~लोणिमा~~ मंडले-घेरा

विशेषार्थ—आगमद्रव्यबन्धके सिवा शेष सब बन्ध नोआगमद्रव्यबन्ध कहलाते हैं । इसके प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध ये दो भेद हैं जिसमें जीवके व्यापारकी अपेक्षा होती है वह प्रयोगबन्ध कहलाता है और जो जीवके व्यापारके बिना अपनी योग्यतानुसार होता है वह विस्रसाबन्ध कहलाता है । यहाँ सादिविस्रसाबन्धका विचार किया जा रहा है । यह पुद्गलोंकी अपनी-अपनी योग्यतानुसार होता है । यों तो जितने भी कार्य होते हैं वे सब अपनी अपनी योग्यतानुसार ही होते हैं । किन्तु बाह्य निमित्तको ध्यानमें रखकर बन्धके प्रयोगबन्ध और विस्रसाबन्ध ये भेद किए गए हैं । कर्मबन्ध प्रयोगबन्धमें आता है, पर समयप्राभृतमें इसके विषयमें लिखा है कि रागादिकका निमित्त पाकर कर्मपुद्गल स्वयं कर्मरूपसे परिणत होते हैं और कर्मका निमित्त पाकर जीव रागादिकरूपसे परिणमन करता है । समयप्राभृतके उक्त कथनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बलात् अन्य अन्यका परिणमन करानेवाला नहीं होता, किन्तु एक दूसरेका निमित्त पाकर प्रत्येक द्रव्य स्वयं परिणमन करता है । शेष कथन सुगम है ।

जो प्रयोगबन्ध स्थगित कर आये हैं वह दो प्रकारका है—कर्मबन्ध और नोकर्मबन्ध ॥ ३८ ॥

♣ ता. प्रतौ ' सोदुसण' इति पाठः । ♣ अ. प्रतौ 'काले' इति पाठः । ♥ अ. आ. प्रत्योः 'काल उडु' इति पाठः । ♡ ता. प्रतौ 'प्पहुडि' (डी) णि' इति पाठः । ✿ ता. प्रतौ 'प्पहुडीण (णि)' अ. आ. प्रत्यो 'प्पहुडीण' इति पाठः । ♠ अ. आ. प्रत्यो 'सज्जेण' इति पाठः । ♧ अ.आ.प्रत्योः 'गंधव्वणयरादओ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एवं दुविहो चेव पओअबंधो होदि, अण्णस्स अणुवलंभादो । को पओगबंधो णाम? जीवव्वारेण जो समुप्पण्णो बंधो सो पओअबंधो णाम ।

जो सो कम्मबंधो णाम सो थप्पो ॥ ३९ ॥

कुदो ? बहुवण्णणिज्जत्तादो☼ ।

जो सो णोकम्मबंधो णाम सो पंचविहो–आलावणबंधो अल्लीवणबंधो संसिलेसबंधो सरीरबंधो सरीरिबंधो चेवि ॥ ४० ॥

एवं णोकम्मबंधो पंचविहो चेव; अण्णस्स अणुवलंभादो । तत्थ आलावणबंधो णाम केरिसो त्ति वुत्ते वुच्चदे-रज्जु-वरत्त-कट्ठदव्वादीहि जं पुधभूदाणं दव्वाणं बंधणं सो आलावणबंधो णाम । लेवणविसेसेण जडिदाणं? दव्वाणं जो बंधो सो अल्लीवणबंधो णाम । रज्जु-वरत्त-कट्ठादीहि विणा अल्लीवण☼ विसेसेहि विणा जो चिक्कण-अचिक्कणदव्वाणं चिक्कणदव्वाणं वा परोप्परेण बंधो सो संसिलेसबंधो णाम । पंचण्णं सरीराणमण्णोण्णेण बंधो सो सरीरबंधो णाम । जीवपदेसाणं जीवपदेसेहि पंचसरीरेहि य जो बंधो सो सरीरिबंधो णाम । संपहि आलावणबंधसरूवपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

इस तरह दो प्रकारका ही प्रयोगबन्ध होता है, क्योंकि, अन्य प्रकारका प्रयोगबन्ध उपलब्ध नहीं होता ।

शंका–प्रयोगबन्ध किसे कहते हैं ?

समाधान–जीवके व्यापार द्वारा जो बन्ध समुत्पन्न होता है उसे प्रयोगबन्ध कहते हैं ।

जो कर्मबन्ध है उसे स्थगित करते हैं ॥ ३९ ॥

क्योंकि, आगे उसका बहुत वर्णन करना है ।

जो नोकर्मबन्ध है वह पाँच प्रकारका है–– आलापनबन्ध, अल्लीवनबन्ध, संश्लेषबन्ध, शरीरबन्ध और शरीरिबन्ध ॥ ४० ॥

इस प्रकार नोकर्मबन्ध पाँच प्रकारका ही होता है, क्योंकि, इनके सिवा अन्य बन्ध उपलब्ध नहीं होता । उनमेंसे आलापनबन्धका क्या स्वरूप है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं–रस्सी, वरत्रा (रस्सी विशेष) और काष्ठद्रव्य आदिकसे जो पृथग्भूत द्रव्य बाँधे जाते हैं वह आलापनबन्ध है ।

•लेपविशेषसे परस्पर सम्बन्धको प्राप्त हुए द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह अल्लीवनबन्ध कहलाता है । रस्सी, वरत्रा और काष्ठ आदिकके बिना तथा अल्लीवनविशेषके बिना जो चिक्कण और अचिक्कण द्रव्योंका अथवा चिक्कण द्रव्योंका परस्पर बन्ध होता है वह संश्लेषबन्ध कहलाता है । पाँच शरीरोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह शरीरबन्ध होता है । तथा जीवप्रदेशोंका जीवप्रदेशोंके साथ और पाँच शरीरोंके साथ जो बन्ध होता है वह शरीरिबन्ध कहलाता है • अब आलापनबन्धके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं––

☼ ता. आ. प्रत्योः '–णिज्जित्तादो' इति पाठः । ☼ ता. प्रतौ '(लेव) ण विसेसेण जडिदाणं' अ० आ० का० प्रतिषु 'लीवणविसेसेण जडिदाणं' इति पाठः । ☼ अ. आ. प्रत्योः 'अल्लिवण' इति पाठ

जो सो आलावणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो–से सगडाणं* वा जाणाणं वा जुगाणं वा गड्डीण* वा गिल्लीणं वा रहाणं वा संदणाणं वा सिवियाणं वा गिहाणं वा पासादाणं वा गोवुराणं वा तोरणाणं वा से कट्ठेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा वल्लेण वा वव्वेण वा जे चामण्णे एवमादिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि आलावियाणं बंधो होदि सो सव्वो आलावणबंधो णाम ॥ ४१ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा–लोहेण बद्धणेमि-तुंब-महाचक्का लोहबद्धछहुय-पेरंता लोणादीणं* गरुअभरुव्वहणक्खमा सगडा णाम । समुद्दमज्झे विविहभंडेहि आपूरिदा संता जे गमणक्खमा होहित्था* ते जाणा णाम । गरुवत्तणेण महल्ल-त्तणेण* य जं तुरय-वेसरादीहि वुव्वदि* तं जुगं णाम । वट्टरचक्काओ छण्णाविहलुअ*वव्वभरुव्वहणक्खमाओ गड्डीओ णाम । फिरिक्कीओ गिल्लीयो णाम । का फिरिक्की णाम ? चुंदेण वट्टुलागारेण घडिदणेमितुंबाधारसरलट्ठकट्ठा* फिरिक्की णाम । जुद्धे अहिरह-महारहाणं* चडणजोग्गा रहा णाम ।

जो आलापनबंध है उसका यह निर्देश है–जो शकटोंका, यानोंका, युगोंका, गड्डियोंका, गिल्लियोंका, रथोंका, स्यन्दनोंका, शिविकाओंका, गृहोंका, प्रासादोंका, गोपुरोंका और तोरणोंका काष्ठसे, लोहसे, रस्सोंसे, चनडेकी रस्सोंसे और वर्मसे जो बन्ध होता है तथा इनसे लेकर अन्य द्रव्योंसे आलापित अन्य द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह सब आलापन बन्ध है ॥ ४१ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यथा–जिनकी धुरा, गाडोंकी नाभि और महाचक्र लोहसे बधे हुए हैं, जिनके छहों पर्यन्त लोहसे बधे हुए हैं और जो नमक आदि भारी भारको ढोनेमें समर्थ हैं वे शकट कहलाते हैं । नाना प्रकारके भाण्डोंसे आपूरित होकर भी समुद्रमें गमन करनेमें समर्थ जो जहाज होते हैं वे यान कहलाते हैं । जो बहुत भारी होनेसे और बहुत बड़े होनेसे घोडा और खच्चर आदिके द्वारा ढोया जाता है वह युग कहलाता है । जिनके दो चक्के छोटे हैं और जो धान्य आदि हलके भारके ढोनेमें समर्थ हैं वे गड्डी कहलाती हैं । फिरिक्कीको गिल्ली कहते हैं ।

शंका– फिरिक्की किसे कहते हैं ?

समाधान– जिसकी नेमि और तुम्बकी आधारभूत आठ लकड़ियां वर्तुलाकार चुन्दसे घटित हैं उसे फिरक्की कहते हैं ।

जो युद्धमें अधिरथी और महारथियोंके चढ़ने योग्य होते हैं वे रथ कहलाते हैं । जो

---

* अ आ प्रत्योः 'सगडाणं इति पाठः । * अ. आ. प्रत्योः 'गडीण इति पाठः । * अ. आ. प्रत्योः 'लोगादीण' इति पाठः । * ता. अ. आ. प्रतिषु 'वोहित्था इति पाठ । * ता. अ आ. प्रतिषु गरुवत्तणेण महल्लत्तणेण इति पाठः । * अ प्रतौ वुच्चदि आ प्रतौ 'वुज्जदि' इति पाठः । * ता. अ -आ-प्रतिषु '-हलुह-' इति पाठः । * ता. प्रतौ '-कट्ठा (१)' इति पाठः । * ता. प्रतौ अहिरह (राय) महारहा (राया) णं' इति पाठः ।

चक्कवट्टि-बलदेवाणं चडणजोग्गा सव्वाउहावुण्णा णिमणपवणवेगा अच्छे भंगे वि चक्क-घडणगुणेण अपडिहयगमणा संदणा णाम । माणुसेहि वुज्झमाणा[1] सिविया णाम । कट्ठियाहि बद्धकुड्डा उवरि वंसिकच्छण्णा गिहा णाम । पक्कसइला सइला आवासा पासादा णाम । पायाराणं वारे घडिवगिहा गोवुरं णाम । पुराणं पुराणं पासादाणं वंदणमालबंधणट्ठं पुरवो दुविदरुक्खविसेसा तोरणं णाम । एदेसिं पुव्वुत्ताणं जे बंधा ते आलावणबंधा णाम । केणेसिं बंधो होदि ? कट्ठेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा वक्केण वा दब्भेण वा । 'वा' सद्देण[2] वक्केण वा सुंबेण[3] वा कट्ठियाए वा इच्चेवमादि घेत्तव्वं । कट्ठादीहि अण्णदव्वेहि अण्णदव्वाणं आलाविदाणं जोइदाणं[4] बंधो होदि सो सव्वो आलावणबंधो णाम ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जो सो अल्लीवणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- से कडयाणं वा कुड्डाणं वा[5] गोवरपीडाणं वा पागाराणं वा साडियाणं[6] वा जे चामण्णे एवमादिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि अल्लीविदाणं बंधो होदि सो सव्वो अल्लीवणबंधो णाम ॥ ४२ ॥

चक्रवर्ती और बलदेवोंके चढ़ने योग्य होते हैं, जो सब आयुधोंसे परिपूर्ण होते हैं, जो पवनके समान वेगवाले होते हैं और धुरके टूट जाने पर भी जिनके चक्रोंकी इस प्रकारकी रचना होती है जिस गुणके कारण जिनके गमनागमनमें बाधा नहीं पड़ती वे स्यन्दन कहलाते हैं। जो मनुष्यों द्वारा उठाकर ले जाई जाती हैं वे शिविका कहलाती हैं। जिनकी भीत लकड़ियोंसे बनाई जाती है और जिनका छप्पर बाँस और तृणसे छाया जाता है वे गृह कहलाते हैं। ईंटों और पत्थरोंके बने हुए पत्थरबहुल आवासोंको प्रासाद कहते हैं। कोटोंके दरवाजोंपर जो घर बने होते हैं वे गोपुर कहलाते हैं। प्रत्येक पुर और प्रासादोंपर वन्दनमाला बाँधनेके लिए आगे जो वृक्ष-विशेष रखे जाते हैं वे तोरण कहलाते हैं। इन पूर्वोक्त शकट आदिके जो बन्ध होते हैं वे आलापनबन्ध कहलाते हैं।

शंका—इनका बन्धन किस पदार्थसे होता है ?

समाधान—काष्ठसे, लोहसे, रस्सीसे, वर्धसे और दर्भसे होता है। यहाँ सूत्रमें आये हुए 'वा' शब्दसे वक्कलसे, शुम्ब अर्थात् तृणविशेषसे और लकड़ीसे होता है इत्यादि लेना चाहिए।

काष्ठ आदि अन्य द्रव्योंसे जो आलापित अर्थात् परस्पर सम्बन्धको प्राप्त हुए अन्य द्रव्योंका बन्ध होता है वह सब आलापनबन्ध है।

जो अल्लीवणबन्ध है उसका यह निर्देश है-कटकोंका, कुड्डोंका, गोवरपीडोंका, प्राकारोंका और शाटिकाओंका तथा इनसे लेकर और जो दूसरे पदार्थ हैं उनका जो बन्ध होता है अर्थात् अन्य द्रव्योंसे सम्बन्धको प्राप्त हुए अन्य द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह सब अल्लीवणबन्ध है ॥ ४२ ॥

[1] आप्रतौ 'वज्झमाणा' इति पाठः। [2] अ. आ. प्रत्योः दब्भेण वा सद्देण' इति पाठः। [3] ता. अ. आ. प्रतिषु 'सुंभेण' इति पाठः। [4] प्रतिषु बोहणाण इति पाठः। [5] अ. आ. प्रत्योः 'कटयाणं वा कुटाणं वा इति पाठः। [6] ता. आ. प्रत्योः ' पासादियाणं ' अ० प्रतौ 'सादियाणं इति पाठः

बंसकंबीहि अण्णोण्णजणाए जे किज्जंति घरावरणविदाराणं तुंकणट्ठं ♣ ते कडया ♠ णाम। जिणहरघरायदणाणं ♠ ठविदओलित्तीओ कुड्डा णाम। कुड्डाणं पोग्गलबंधो अल्लीवणबंधो णाम, वद्ध-दद्ध-लोह-कट्ठ-रज्जूणं बंधेण विणा अल्लियणमेत्तेणेव बंधुवलंभादो ण च एसो बंधो संसिलेसबंधे पविसदि, ओल्लमट्टियाए चिक्कणगुणाभावादो। छाणेण लेविदूण जाणि पीडाणि किज्जंति ताणि गोवरपीडाणि ♥ णाम। एदेसिं जो बंधो सो वि अल्लीवणबंधो णाम, सगदेहादो पुधभूदवद्धमादिबंधकारणाभावादो। जिणहरादीणं रक्खट्ठं पासेसु दुविदओलित्तीओ ♣ पागार णाम। पक्किट्टाहि ♠ घडिदवरंडा वा पागार णाम। तत्थ वि ईट्टाहिंतो ♠ पुधभूदबंधकारणाणुवलंभादो ♠। पुव्वं पासादगोवुरादीणं पक्किट्टा ♠ विणिम्मियाणमालावणबंधो होदि त्ति परूविदं। संपहि तेसिं चेव अल्लीवणबंधपरूवणं कधं ण विरुज्झदे ? ण, पासादगोवुर रुक्खाणमइयवडादीणं (?) लोहेण लोह---कट्ठकीलेहि य बंधं दट्ठूण तेसिमालावणबंधपरूवणादो। तत्थ वि कुड्डाणं पुण

बाँसकी कमचियोंके द्वारा परस्पर बुनकर घर और अवन आदिके ढाँकनेके लिए जो बनाई जाती हैं वे कटक अर्थात् चटाई कहलाती हैं। जिनगृह, घर और अवनकी जो भीतें बनाई जाती हैं उन्हें कुड्ड कहते हैं। कुड्डोंका जो पुद्गलबन्ध होता है वह अल्लीवणबन्ध कहलाता है, क्योंकि, वर्ध, दर्भ, लोह, काष्ठ और रस्सीके बन्धके बिना परस्पर मिलाने मात्रसे ही यह बन्ध उपलब्ध होता है। यह बन्ध संश्लेषबन्धमें अन्तर्भूत होता है, यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, गीली मिट्टीमें चिक्कण गुणका अभाव है। गोबरसे लेपकर जो पीड बनाये जाते हैं वे गोवरपीड कहलाते हैं। इनका जो बन्ध होता है वह भी अल्लीवणबन्ध है, क्योंकि, इनके बन्धमें अपनेसे भिन्न दर्भादि बन्धके कारण नहीं उपलब्ध होते। जिनगृह आदिकी रक्षाके लिए पार्श्वभागमें जो भीतें बनाई जाती हैं वे प्राकार कहलाते हैं अथवा पकी हुई ईंटोंसे जो बरण्डा बनाये जाते हैं वे प्राकार कहलाते हैं। यहाँ पर भी ईंटोंसे पृथग्भूत बन्धके कारण नहीं पाये जाते।

शंका—पहले पकी हुई ईंटोंसे बने हुए प्रासाद और गोपुर आदिका आलापनबन्ध होता है ऐसा कह आये हैं और अब यहाँ उनका ही अल्लीवणबन्ध कह रहे हैं सो यह कथन विरोधको कैसे नहीं प्राप्त होता ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, पहले प्रासाद, गोपुर आदिकका लोहेसे तथा लोह और काष्ठकी कीलोंसे बन्ध देखकर उनका आलापनबन्ध कहा है। परन्तु उनकी भीतोंका तो अल्लीवणबन्ध ही होता है, इसलिए उक्त कथनमें कोई विरोध नहीं है।

♣ अ-आ-प्रत्योः 'जदणाए इति पाठः। ♦ ता. प्रतौ 'द (ढं) कणट्ठं अ. आ प्रत्योः 'टंकणट्ठं' इति पाठः। ♠ अ आ. प्रतौ 'कदया' इति पाठः। ♠ ता. प्रतौ 'जिणहरघरायणाण' अ. प्रतौ 'जिणाहरघरावणाणं' आ. प्रतौ 'जिणहरघरावणाणं' इति पाठः। ♥ अ. आ. प्रत्योः 'पीडाणि' इति पाठः। ♠ ता अ. आ. प्रतिषु 'ओलित्तीओ' इति पाठः। ♠ ता प्रतौ 'पक्किट्टाहि' इति पाठः। ♠ ता. प्रतौ इट्टाहिंतो इति पाठः। ♠ ता अ. आ. प्रतिषु कारणभूद-लंभादो इति पाठः। ♠ ता. प्रतौ 'पक्किट्टा' इति पाठः।

अल्लीवणबंधो चेव। बहुलियाहि☼ परियत्तविसए परिहिज्जमाणाओ साडियाओ* णाम। तासिं जो तंतुसंताणबंधो सो अल्लीवणबंधो णाम, तंतूहिंतो पुधभूदबंधकारणाणुवलंभादो। अण्णे एवमादिया त्ति वयणेण णेत्तपट्ट-कप्पाससुत्तविसेसेण वुअ☆वत्थाणं गहणं कायव्वं। सेसं सुगमं।

जो सो संसिलेसबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो-जहा कट्ठ-जदूणं अण्णोण्णसंसिलेसिदाणं बंधो संभवदि सो सव्वो संसिलेसबंधो णाम ॥ ४३ ॥

जदू णाम लक्खा। लक्खाए कट्ठस्स च जो अण्णोण्णसंसिलेसेण बंधो सो संसिलेसबंधो णाम। ण च एस बंधो अल्लीवणबंधे पविसदि, पाणिएण जणिदद्दवाभावादो। णालावणबंधे पविसदि; तदो पुधभूदव्वादिबंधकारणाभावादो। जदुग्गहणमेदमुवलक्खणं वज्जलेव-मयणादीणं, चिक्कणदव्वाणं तेण तेसिं पि एत्थ गहणं कायव्वं।

जो सो सरीरबंधो णाम सो पंचविहो-- ओरालियसरीरबंधो वेउव्वियसरीरबंधो आहारसरीरबंधो तेयासरीरबंधो कम्मइयसरीरबंधो चेवि ॥ ४४ ॥

एवं पंचविहो चेव सरीरबंधो होदि, अण्णस्स एदेहिंतो पुधभूदबंधस्स अणुवलंभादो।

स्त्रियोंके द्वारा देशविशेषमें जो पहिनी जाती हैं वे शाटिका कहलाती हैं। तथा इनका जो तन्तु सन्तानबन्ध होता है वह अल्लीवणबन्ध है, क्योंकि, इनमें तन्तुओंके सिवा अलगसे बन्धके कारण नहीं उपलब्ध होते। 'अण्णे एवमादिया' इस वचनसे नेत्रपट्ट और कपासके सूतसे बुने हुए वस्त्रोंका ग्रहण करना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

जो संश्लेषबन्ध है उसका यह निर्देश है-जैसे परस्पर संश्लेषको प्राप्त हुए काष्ठ और लाखका बन्ध होता है वह सब संश्लेषबन्ध है ॥ ४३ ॥

जतु लाखको कहते हैं। लाख और काष्ठके परस्पर संश्लेषसे जो बन्ध होता है वह संश्लेषबन्ध है। यह बन्ध अल्लीवणबन्धमें अन्तर्भूत नहीं होता, क्योंकि, यहाँ पानीसे संयोगको प्राप्त हुए द्रव्यका अभाव है। आलापनबन्धमें भी अन्तर्भूत नहीं होता, क्योंकि, इनसे पृथग्भूत द्रव्यादि बन्धके कारण नहीं पाये जाते।

'जतु' पदका ग्रहण यहाँ वज्रलेप और मैन आदि चिक्कण द्रव्योंका उपलक्षण है। इससे इनका भी यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

जो शरीरबन्ध है वह पाँच प्रकारका है-- औदारिकशरीरबन्ध, वैक्रियिकशरीरबन्ध, आहारकशरीरबन्ध, तैजसशरीरबन्ध और कार्मणशरीरबन्ध ॥ ४४ ॥

इस प्रकार पाँच प्रकारका ही शरीरबन्ध होता है, क्योंकि, इनसे पृथग्भूत दूसरा शरीरबन्ध

☼ ता. आ. प्रतिषु 'बहुलियाहि' इति पाठः। अ-आ- प्रत्योः 'महेलियहिं' इति पाठः * अ. आ. प्रत्योः 'सादियाओ' इति पाठः। ☆ अ आ. प्रत्योः 'वुडवत्थाणं' इति पाठः।

संपहि एगादिसंजोगे ⊕ ओरालियसरीरस्स बंधवियप्पुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

ओरालिय-ओरालियसरीरबंधो ॥ ४५ ॥

ओरालियसरीरणोकम्मक्खंधाणमण्णेहि ओरालियसरीरणोकम्मक्खंधेहि जो बंधो सो ओरालिय-ओरालियसरीरबंधो । एवमेसो एगसंजोगेण एक्को चेव भंगो होदि १। संपहि दुसंजोगभंगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

ओरालिय-तेयासरीरबंधो ॥ ४७ ॥

ओरालियसरीरपोग्गलाणं तेयासरीरपोग्गलाणं च एक्कम्हि जीवे जो परोप्परेण बंधो सो ओरालिय-तेयासरीरबंधो णाम १ ।

ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ४७ ॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

ओरालियखंधाणं कम्मइयक्खंधाणं च एक्कम्हि जीवे द्विदाणं जो बंधो सो ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो णाम २ ।ओरालियखंधाणं वेउव्विय-आहारसरीरेहि सह णत्थि बंधो; ओरालियसरीरेण परिणदजीवे सेसदोण्णं सरीराणमभावादो । होदु णाम वेउव्वियसरीरस्स अभावो, तस्स देव-णेरइएसु चेव अत्थित्तवंसणादो । आहारसरीरं ✿ पुण मणुस्सेसु चेव होदि, तेण ओरालियसरीरेण सह आहारसरीरस्स संबंधेण होदव्वमिदि?

नहीं उपलब्ध होता । अब एकादि संयोगरूप औदारिक शरीरके बन्धविकल्पोंको उत्पन्न करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं––

औदारिक-औदारिकशरीरबंध ॥ ४५ ॥

औदारिकशरीर नोकर्मस्कन्धोंका अन्य औदारिकशरीर नोकर्मस्कन्धोंके साथ जो बन्ध होता है वह औदारिक-औदारिकशरीरबन्ध है । इस प्रकार यह एकसंयोगसे एक ही भंग होता है १ । अब द्विसंयोग भंगका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं––

औदारिक-तैजसशरीरबन्ध ॥ ४६ ॥

औदारिकशरीरके पुद्गलोंका और तैजसशरीरके पुद्गलोंका एक जीवमें जो परस्परबन्ध होता है वह औदारिक-तैजसशरीरबन्ध है १ ।

औदारिक-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ४७ ॥

एक जीवमें स्थित औदारिकस्कन्धोंका और कार्मणस्कन्धोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह औदारिक-कार्मणशरीरबन्ध है २ । औदारिकस्कन्धोंका वैक्रियिक और आहारकशरीरके साथ बन्ध नहीं होता, क्योंकि, औदारिक-शरीररूपसे परिणत हुए जीवमें शेष दो शरीरोंका अभाव पाया जाता है ।

शंका– इसके वैक्रियिकशरीरका अभाव भले ही रहा आवे; क्योंकि, उसका देव और नारकियोंके ही अस्तित्व देखा जाता है । किन्तु आहारकशरीर तो मनुष्योंके ही होता है, इसलिए औदारिकशरीरके साथ आहारकशरीरका सम्बन्ध होना चाहिए ?

⊕ अ प्रतौ 'संजोगो' इति पाठः । ✿ अ. आ. प्रत्योः '-सरीराणं' इति पाठः ।

ण, आहारसरीरेण परिणमंताणं ओरालियसरीरस्स उदयाभावेण तेण संबंधाभावादो। एवं दुसंजोगभंगपरूवणा कदा। संपहि तिसंजोगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ४८ ॥

ओरालियतेया-कम्मइयसरीराणं एक्कम्हि जीवे णिविट्ठाणं जो अण्णोण्णेण बंधो सो ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो णाम। एवं तिसंजोगे एक्को चेव भंगो १। संपहि वेउव्वियसरीरस्स एगादिसंजोगभंगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

वेउव्विय-वेउव्वियसरीरबंधो ॥ ४९ ॥

वेउव्विय-तेयासरीरबंधो ॥ ५० ॥

वेउव्विय-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५१ ॥

वेउव्विय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५२ ॥

एदाणि चत्तारि वि सुत्ताणि सुगमाणि। आहारसरीरभंगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

आहार-आहारसरीरबंधो ॥ ५३ ॥

आहार-तेयासरीरबंधो ॥ ५४ ॥

आहार-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५५ ॥

समाधान--नहीं, क्योंकि, आहारकशरीररूपसे परिणमन करनेवाले जीवोंके औदारिकशरीरका उदय नहीं होनेसे उसके साथ सम्बन्ध नहीं होता।

इस प्रकार द्विसंयोगी भंगका कथन किया। अब त्रिसंयोगी भंगका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

औदारिक-तैजस-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ४८ ॥

एक जीवमें निविष्ट हुए औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके स्कन्धोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह औदारिक-तैजस-कार्मणशरीरबन्ध है। इस प्रकार त्रिसंयोगी एक ही भंग होता है। अब वैक्रियिकशरीरके एकादिसंयोगी भंगोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं-

वैक्रियिक-वैक्रियिकशरीरबन्ध ॥ ४९ ॥

वैक्रियिक-तैजसशरीरबन्ध ॥ ५० ॥

वैक्रियिक-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५१ ॥

वैक्रियिक-तैजस-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५२ ॥

ये चारों ही सूत्र सुगम हैं। अब आहारकशरीरके भंगोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

आहारक-आहारकशरीरबन्ध ॥ ५३ ॥

आहारक-तैजसशरीरबन्ध ॥ ५४ ॥

आहारक-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५५ ॥

आहार-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५६ ॥

एवाणि चत्तारिवि सुत्ताणि सुगमाणि✡ ।

तेया-तेयासरीरबंधो ॥ ५७ ॥

तेयासरीर-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५८ ॥

सेसभंगा एत्थ किण्ण परूविदा ? ण, पुणरुत्तदोसप्पसंगादो ।

कम्मइय-कम्मइयसरीरबंधो ॥ ५९ ॥

एत्थ एक्को चेव भंगो । सेसा भंगा संता वि किमट्ठं ण परूविदा ? पुव्वं परूविदत्तादो ।

आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

♣सो सव्वो सरीरबंधो णाम ॥ ६० ॥

एसो पण्णारसविहो बंधो सरीरबंधो त्ति घेत्तव्वो ।

जो सो सरीरिबंधो णाम सो दुविहो—सादियसरीरिबंधो चेव अणादियसरीरिबंधो चेव ॥ ६१ ॥

एवं दुविहो चेव सरीरिबंधो होदि; अण्णहासंभवादो ।

आहारक-तैजस-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५६ ॥

ये चार सूत्र भी सुगम हैं ।

तैजस-तैजसशरीरबन्ध ॥ ५७ ॥

तैजसशरीर-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५८ ॥

शंका— शेष भंग यहाँ क्यों नहीं कहे ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पुनरुक्त दोषका प्रसंग प्राप्त होता है ।

कार्मण-कार्मणशरीरबन्ध ॥ ५९ ॥

यहाँ एक ही भंग होता है ।

शंका— शेष भंग भी होते हैं, फिर वे किसलिए नहीं कहे ?

समाधान— क्योंकि, उनका कथन पहले कर आये हैं ।

वह सब शरीरबन्ध है ॥ ६० ॥

यह पन्द्रह प्रकारका बन्ध शरीरबन्ध है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

जो शरीरिबन्ध है वह दो प्रकारका है—सादि शरीरिबन्ध और अनादि शरीरिबन्ध ॥ ६१ ॥

इस प्रकार शरीरिबन्ध दो प्रकारका ही होता है, क्योंकि अन्य प्रकारके शरीरिबन्धका होना असम्भव है ।

✡ अ० प्रतौ 'एदाणि चत्तारि सुत्ताणि वि सुगमाणि' आ० प्रतौ 'एदाणि वि सुत्ताणि सुगमाणि' इति पाठः । ♣ प्रतिषु ध्रुवलान्तर्गतमिदं न सूत्रत्वेनोपलभ्यते ।

जो सो सादियसरीरिबंधो णाम सो जहा सरीरबंधो तहा णेदव्वा ॥ ६२ ॥

सरीरी णाम जीवो। तस्स जो बंधो ओरालियादिसरीरेहि सो सरीरिबंधो णाम। तस्स भंगपरूवणा जहा सरीरबंधस्स परूविदा तहा परूवेदव्वा। तं जहा– ओरालियसरीरेण सरीरिस्स बंधो। वेउव्वियसरीरेण सरीरिस्स बंधो। आहारसरीरेण सरीरिस्स बंधो। तेजइयसरीरेण सरीरिस्स बंधो। कम्मइयसरीरेण सरीरिस्स बन्धो। सरीरिणा सरीरस्स बन्धो। कधमेसो छट्ठभंगो जुज्जदे? ण, कम्मणोकम्माणमणादिसंबंधेण मुत्ततमुवगयस्स जीवस्स घणलोगमेत्तपदेसस्स जोगवसेण संघार-विसप्पणधम्मियस्स अवयवाणं परतंतलक्खणसंबंधेण छट्ठभंगुप्पत्तीए विरोहाभावो। एवमेदे छब्भंगा ६। ओरालिय-तेजासरीरेहि सरीरिस्स बंधो, ओरालिय-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो, ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो, एवमोरालियसरीरेहि णिरुद्धे तिण्णि भंगा ३। वेउव्विय-आहारसरीराणं एवं चेव तिण्णि तिण्णि भंगा परूवेदव्वा। तेजा-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो १। एवं तेयासरीरे णिरुद्धे* एक्को चेव दुसंजोगभंगो। कम्मइयम्मि दुसंजोगभंगो णत्थि। एवमेदे सोलस सरीरिबंधा १६।

जो सादि शरीरिबन्ध है वह शरीरबन्धके समान जानना चाहिए ॥ ६२ ॥

शरीरी जीवको कहते हैं। उसका जो औदारिक आदि शरीरोंके साथ बन्ध होता है वह शरीरिबन्ध है। इसके भंगोंका कथन, जिस प्रकार शरीरबन्धके भंगोंका कथन किया है, उस प्रकार करना चाहिए। यथा-औदारिकशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, वैक्रियिकशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, आहारकशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, तैजसशरीरके साथ शरीरीका बन्ध कार्मणशरीरके साथ शरीरीका बन्ध, और शरीरीके साथ शरीरका बन्ध। See 5.37

शंका– यहाँ छठवाँ भंग कैसे बन सकता है?

समाधान–नहीं, क्योंकि, जो कर्म और नोकर्मोंका अनादि सम्बन्ध होनेसे मूर्तपनेको प्राप्त हुआ है और जिसके घनलोकप्रमाण जीवप्रदेश योगके वशसे संकोच और विस्तार धर्मवाले हैं ऐसे जीवके अवयवोंके परतन्त्रलक्षण सम्बन्धसे छठे भंगकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता। Book see 5.96

इस प्रकार ये छह भंग हुए ६।

औदारिक-तैजसशरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, औदारिक-कार्मण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, और औदारिक-तैजस-कार्मण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध; इस प्रकार औदारिकशरीरकी विवक्षा होनेपर तीन भंग होते हैं ३। वैक्रियिक और आहारक शरीरोंके इसी प्रकार तीन तीन भंग कहने चाहिए। तैजस-कार्मण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, इस प्रकार तैजसशरीरकी विवक्षा होनेपर द्विसंयोगी एक ही भंग होता है १। कार्मणशरीरमें द्विसंयोगी भंग नहीं होता। इस प्रकार ये सोलह शरीरिबन्ध होते हैं १६।

---

* ता. आ. प्रत्योः 'तेयासरीरणिरुद्धे' इति पाठः।

जो अणादियसरीरिबंधो णाम यथा अट्ठण्णं जीवमज्झपदेसाणं अण्णोण्णपदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादियसरीरिबंधो णाम ॥ ६३ ॥

जीवमज्झपदेसाणमट्ठण्णं पि जो बंधो सो अणादियसरीरिबन्धो होदि[1]। किंतु एसो ण पओअबंधो; साभावियत्तादो त्ति वुत्ते– ण एस दोसो; दिट्ठंतदुवारेण णिद्दिट्ठत्तादो। जहा अट्ठण्णं पि जीवमज्झपदेसाणमणादियो बंधो तहा सरीरिस्स जो पुव्वरहिदबंधो सो अणादियसरीरिबंधो त्ति घेत्तव्वो। को सो बंधो ? सरीरिस्स कम्म-णोकम्मसामण्णेण जो बंधो सो अणादियसरीरिबंधो णाम।

जो सो सपओ कम्मबंधो णाम यथा कम्मे त्ति तहा णेदव्वं ॥ ६४ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

कम्मबंधस्स चउसट्ठिभंगा जहा कम्माणुयोगद्दारे परूविदा तहा परूवेदव्वा।
एवं संखेवेण परूविदूण बंधो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

जो अनादिशरीरिबन्ध है। यथा– जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका परस्पर प्रदेशबन्ध होता है यह सब अनादि शरीरिबन्ध है ॥ ६३ ॥

शंका– जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका जो बन्ध है वह अनादिशरीरिबन्ध है, यह ठीक है; किन्तु यह प्रयोगबन्ध नहीं है, क्योंकि, यह स्वाभाविक होता है ?

समाधान– यह कोई दोष नहीं है; क्योंकि दृष्टान्त द्वारा अनादि शरीरिबन्धका यहाँ निर्देश किया है। जिस प्रकार जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका अनादिबन्ध होता है उसी प्रकार शरीरका जो पूर्व कालकी मर्यादासे रहित बन्ध है वह अनादि शरीरिबन्ध है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शंका– वह बन्ध क्या है ?

समाधान– शरीरीका कर्म और नोकर्म सामान्यके साथ जो बन्ध है वह अनादि शरीरिबन्ध है।

५.१३.५.३७-१९६

५.१५.२३२ **जो कर्मबन्ध स्थगित कर आये हैं उसे कर्मअनुयोगद्वारके समान जानना चाहिए ॥ ६४ ॥**

कर्मबन्धके चौंसठ भंग जिस प्रकार कर्म अनुयोगद्वारमें कहे हैं उसी प्रकार कहने चाहिए। इस प्रकार संक्षेपसे कथन करनेपर बन्ध अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

---

[1] आ० प्रतौ 'होज्ज' इति पाठः।

जे ते बंधगा णाम तेसिमिमो णिद्देसो—गदि इंदिए काए जोगे वेदे कसाए णाणे संजमे दंसणे* लेस्सा भविय सम्मत्त सण्णि आहारे चेवि ॥ ६५ ॥

एवं सुत्तं चोद्दसमग्गणट्ठाणाणि परूवेदि, अण्णहा बंधगपरूवणाणुववत्तीदो । एदेसिं मग्गणट्ठाणाणं जहा खुद्दाबंधे परूवणा कदा तहा कायव्वा ।

गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया बंधा तिरिक्खा बंधा देवा बंधा मणुसा बंधा वि अत्थि अबंधा वि अत्थि सिद्धा अबंधा♣ । एवं खुद्दाबंधएक्कारसअणुयोगद्दारं णेयव्वं ॥ ६६ ॥

एत्थ उद्देसे खुद्दाबंधस्स एक्कारसअणुयोगद्दाराणं परूवणा कायव्वा, अम्हेहि☼ पुण गंथबहुत्तभएण ण कदा ।

एवं महादंडया णेयव्वा ॥ ६७ ॥

एक्कारसअणुयोगद्दाराणं परूवणं कादूण पुणो महादंडयाणं पि परूवणा कायव्वा ।

एवं बंधगे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

जो बन्धक हैं उनका यह निर्देश है- गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञी और आहार ॥ ६५ ॥

यह सूत्र चौदह मार्गणास्थानोंका प्ररूपण करता है, अन्यथा बन्धकका कथन नहीं बन सकता । इन मार्गणास्थानोंका जिस प्रकार क्षुल्लकबन्धमें कथन किया है उस प्रकार करना चाहिये।

गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारक जीव बन्धक हैं, तिर्यंच बन्धक हैं देव बन्धक हैं, मनुष्य बन्धक भी हैं और अबन्धक भी हैं, सिद्ध अबन्धक हैं । इस प्रकार यहाँ क्षुल्लकबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वार जानने चाहिए ॥ ६६ ॥

इस स्थानपर क्षुल्लकबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वारोंका कथन करना चाहिए । हमने ग्रन्थके बढ़ जानेके भयसे उनका कथन यहाँ नहीं किया है ।

इसी प्रकार महादण्डक जानने चाहिए ॥ ६७ ॥

ग्यारह अनुयोगद्वारोंका कथन करके अनन्तर महादण्डकोंका भी कथन करना चाहिए ।

विशेषार्थ- यहाँ बन्धकका कथन करना है । पहले यह कथन क्षुल्लकबन्धमें कर आये हैं, इसलिये यहाँ उसके अनुसार ही इस कथनके करनेकी सूचना की है । क्षुल्लकबन्धमें सर्व प्रथम 'बन्धक' के कथनकी प्रतिज्ञा की है । अनन्तर चौदह मार्गणाओंका नामनिर्देश करके उनमेंसे प्रत्येक मार्गणामें कौन बन्धक है और कौन अबन्धक है यह बतलाया है । अनन्तर एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व आदि ग्यारह अनुयोगोंके द्वारा बन्धकका कथन करके अन्तमें महादण्डक दिये हैं । यहाँ भी इसी प्रकार कथन करनेसे बन्धक अनुयोगद्वार समाप्त होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

इस प्रकार बन्धक यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

---

* आ० प्रतौ 'दंसणेसु' इति पाठः । ♣ ता० प्रतौ 'णेरया' इति पाठः । ♠ अ० आ० प्रत्योः 'अबंधा ॥ २ ॥' इति पाठः । ☼ आ० प्रतौ 'अहेहि' इति पाठः ।

जं तं बंधणिज्जं णाम तस्स इममणुगमणं कस्सामो- वेदणअप्पा पोग्गला, पोग्गला खंधसमुद्दिट्ठा*, खंधा वग्गणसमुद्दिट्ठा* ॥ ६८ ॥

वेद्यन्त इति वेदनाः । जीवादो पुधभूदा कम्म-णोकम्मबंधपाओग्गखंधा बंधणिज्जा णाम । तेसिं कधं वेदणाभावो जुज्जदे ? ण, दव्व-खेत्त-काल-भावेहि वेदणापाओग्गेसु दव्वट्ठियणयमस्सिदूण वेदणासद्दपवुत्तीए अब्भुवगमादो । वेदनात्मात्मा स्वरूपं येषां ते वेदनात्मानः* पुद्गलाः इह गृहीतव्याः । कुदो ? अण्णेसिं बंधणिज्जत्ताभावादो । ते च बंधणिज्जा पोग्गला खंधसमुद्दिट्ठा*, खंधसरूवाअणंताणंत◆परमाणुपोग्गलसमुदय-समागमेण बंधपाओग्गपोग्गलसमुप्पत्तीदो⊕ । एदेण एयपदेसिय--दुपदेसियादीणं पोग्गलाणं बंधणिज्जत्तपडिसेहो कदो । ते च खंधा वग्गणसमुद्दिट्ठा*; वग्गणाहिंतो पुधभूदखंधाभावादो । एदेण बंधणिज्जपोग्गलाणं णिव्वियप्पत्तपडिसेहो कदो । तेण बंधणिज्जपरूवणे कीरमाणे वग्गणपरूवणा णिच्छएण कायव्वा; अण्णहा तेवीस—वग्गणासु इमा चेव वग्गणा बंधपाओग्गा, अण्णाओ* बंधपाओग्गाओ ण होंति त्ति अवगमाणुववत्तीदो ।

जो बन्धनीय है उसका इस प्रकार अनुगमन करते हैं– वेदनस्वरूप पुद्गल है, पुद्गल स्कन्धस्वरूप हैं, और स्कन्ध वर्गणास्वरूप हैं ॥ १ ॥

जो वेदे जाते हैं उन्हें वेदन कहते हैं । जीवसे पृथग्भूत बन्धयोग्य कर्म और नोकर्म स्कन्ध बन्धनीय कहलाते हैं ।

शंका– वे वेदनरूप कैसे हो सकते हैं ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, जो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा वेदनायोग्य हैं, उनमें द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा वेदना शब्दकी प्रवृत्ति स्वीकार की गई है ।

वेदनपना जिनका आत्मा अर्थात् स्वरूप है वे वेदनात्मा कहलाते हैं । यहां इस पदसे पुद्गलोंका ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, अन्य कोई पदार्थ बन्धनीय नहीं हो सकते । वे बन्धनीय पुद्गल स्कन्धसमुद्दिष्ट अर्थात् स्कन्धस्वरूप कहे गये हैं, क्योंकि, स्कन्धरूप अनन्तानन्त परमाणुपुद्गलोंके समुदायरूप समागमसे बन्धयोग्य पुद्गल होते हैं । इस पदसे एक प्रदेशी और दो प्रदेशी आदि वर्गणाओंसे पृथग्भूत स्कन्ध नहीं पाये जाते । इस पदसे बन्धनीय पुद्गल निर्विकल्प होते हैं इस बातका निषेध किया है । इसलिए बन्धनीयका कथन करते समय वर्गणाका कथन नियमसे करना चाहिए । अन्यथा तेईस प्रकारकी वर्गणाओंमें ये वर्गणा ही बन्धयोग्य हैं, अन्य बन्धयोग्य नहीं हैं, यह ज्ञान नहीं हो सकता ।

---

* अ० प्रतौ 'समुद्दिदा' इति पाठः । * ता० अ० आ० प्रतिषु 'वेदनात्मनः' इति पाठः । ◆ ता० प्रतौ '(अ) णंता–' इति पाठः । ⊕ अ० प्रतौ 'बंधपोग्गलपाओग्ग-' इति पाठः । * ता० आ० प्रत्योः 'अण्णा जो' इति पाठः ।

वग्गणाणमणुगमणट्ठदाए तत्थ इमाणि अट्ठ अणुओगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति- वग्गणा वग्गणदव्वसमुदाहारो अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा अवहारो जवमज्झं पदमीमांसा अप्पाबहुए त्ति ॥६९॥

संपहि एदेसिमट्ठण्णमणुयोगद्दाराणमत्थपरूवणा कीरदे । तं जहा- तत्थ वग्गणपरूवणा किमट्ठं कीरदे ? एगपरमाणुवग्गणप्पहुडि एगेगपरमाणुत्तरकमेण जाव महाखंधो त्ति ताव सव्ववग्गणाणमेगसेडिपरूवणट्ठं कीरदे । वग्गणदव्वसमुदाहारो किमट्ठमागदो? पुव्वुत्तवग्गणाणं किं समाणा पोग्गला अण्णे वि अत्थि आहो णत्थि, काओ वग्गणाओ धुवाओ काओ वा अद्धुवाओ, काओ सांतराओ काओ वा णिरंतराओ त्ति इच्चाविवग्गणविसेसं चोद्दसअणुयोगद्दारेहि णाणेगसेडिगयं परूवणट्ठमागदो । अणंतरोवणिधा किमट्ठमागदा? परमाणुदव्ववग्गणाहिंतो दुपदेसिय☼ दव्ववग्गणा दव्वट्ठपदेसट्ठदाहि✽ किं सरिसा आहो विसरिसा दुपदेसियदव्ववग्गणादो तिपदेसिय-दव्ववग्गणा दव्वट्ठपदेसट्ठदाहि (किं) सरिसा आहो विसरिसा एवमणंतरहेट्ठिम-हेट्ठिमवग्गणाहिंतो अणंतरउवरिम (उवरिम) वग्गणाणं दव्वपदेसट्ठपरूवणट्ठमागदा । परंपरोवणिधा किमट्ठमागदा ? परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो केवदूरं गंतूण दुगुणा वा

वर्गणाओंका अनुगमन करते समय ये आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं- वर्गणा, वर्गणाद्रव्यसमुदाहार, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा अवहार, यवमध्य, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व ॥ ६९ ॥

अब इन आठ अनुयोगद्वारोंकी अर्थप्ररूपणा करते हैं । यथा—

शंका-- यहाँ वर्गणा अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा किसलिए की है ?

समाधान-- एक परमाणुरूप वर्गणासे लेकर एक एक परमाणुकी वृद्धिक्रमसे महा-स्कन्ध तक सब वर्गणाओंकी एक श्रेणि है, इस बातका कथन करनेके लिए वर्गणा अनुयोग-द्वारकी प्ररूपणा की है ।

शंका-- वर्गणाद्रव्यसमुदाहार अनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

समाधान-- पूर्वोक्त वर्गणाओंके पुद्गल क्या समान हैं या अन्य प्रकार हैं या अन्य प्रकार नहीं है, कौन वर्गणायें ध्रुव हैं, कौन वर्गणायें अध्रुव हैं, कौन वर्गणायें सान्तर हैं और कौन वर्गणायें निरन्तर हैं; इस प्रकार चौदह अनुयोगद्वारोंके द्वारा नानाश्रेणिगत और एक-श्रेणिगत वर्गणाविशेषका कथन करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका-- अनन्तरोपनिधा अनुयोगद्वार किसलिए आया है ? ध.४.१३५.९३

समाधान- परमाणुद्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा क्या सदृश है या विसदृश है, द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे त्रिप्रदेशी द्रव्यवर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशा-र्थताकी अपेक्षा क्या सदृश है या विसदृश है, इस प्रकार अनन्तर पूर्व पूर्व वर्गणासे अनन्तर उप-रिम उपरिम वर्गणाकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताका कथन करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका-- परम्परोपनिधा अनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

☼ ताप्रतौ ' दुपदेहि (सि) य ' आ. प्रतौ ' दुपदेहिय- ' इति पाठः ।
✽ अ. प्रतौ ' दव्वपदेसट्ठदाहि ' इति पाठः ।

दुगुणहीणा वा होदि त्ति पुच्छिदे एत्तियमद्धाणं गंतूण होदि त्ति जाणावणट्ठमागदा । अवहारो किमट्ठमागदो ? एक्केक्का वग्गणा दव्वट्ठपदेसट्ठदाहि सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो त्ति जाणावणट्ठमागदो । जवमज्झपरूवणा किमट्ठमागदा ? विसेसाहियकमेण* गच्छमाणाणं वग्गणाणं कम्हि उद्देसे पदेसं पडुच्च जवमज्झं होदि किं वा ण होदि त्ति पुच्छिदे एत्तियमद्धाणं गंतूण जवमज्झं होदि त्ति जाणावणट्ठमागदा । पदमीमांसा किमट्ठमागदा ? सव्ववग्गणाणमुक्कस्साणुक्कस्सजहण्णाजहण्णादिपदाणं गवेसण-ट्ठमागदा अप्पाबहुगपरूवणा किमट्ठमागदा ? तेवीसवग्गणदव्वपदेसट्ठदाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमागदा ।

वग्गणा त्ति तत्थ इमाणि वग्गणाए सोलस अणुओगद्दाराणि⊖- वग्गणणिक्खेवे वग्गणणयविभासणदाए वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूवणा, वग्गणधुवाधुवाणुगमो वग्गणसांतरणिरंतराणुगमो वग्गणओजजुम्मा-णुगमो वग्गणखेत्ताणुगमो वग्गणफोसणाणुगमो वग्गणकालाणु-

---

समाधान-परमाणुरूप पुद्गलद्रव्यवर्गणासे कितनी दूर जानेपर दूना होता है या द्विगुणाहीन होता है ऐसा पूछनेपर इतना स्थान जाकर दूना या आधा होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका-अवहारअनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

समाधान-एक एक वर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा सब वर्गणाओंका कितनेवाँ भाग है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका-यवमध्यप्ररूपणा किसलिए आई है ?

समाधान-विशेषाधिकक्रमसे जाती हुई वर्गणाओंका किस स्थानपर प्रदेशोंकी अपेक्षा यवमध्य होता है अथवा नहीं होता है ऐसा पूछनेपर इतना स्थान पर जाकर यवमध्य होता इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका-पदमीमांसा अनुयोगद्वार किसलिए आया है ?

समाधान-सब वर्गणाओंके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य आदि पदोंकी गवेषणा करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है ।

शंका-अल्पबहुत्वप्ररूपणा किसलिए आई है ?

समाधान-तेईस वर्गणाओंकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए यह प्ररूपणा आई है ।

वर्गणाका प्रकरण है । उसके विषयमें ये सोलह अनुयोगद्वार होते हैं-वर्गणा-निक्षेप, वर्गणानयविभाषणता, वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम,

---

* ता. प्रतौ-' हिया (य) कमेण, अ. आ. प्रत्योः '-हियाकमेण ' इति पाठः ।

⊖ अ. प्रतौ ' सोलसमणिओगद्दाराणि ' इति पाठः ।

गमो वग्गणअंतराणुगमो वग्गणभावाणुगमो वग्गणउवणयणाणुगमो वग्गणपरिमाणाणुगमो वग्गणभागाभागाणुगमो वग्गणअप्पाबहुए त्ति ॥ ७० ॥

संपहि वग्गणा दुविहा–अब्भंतरवग्गणा बाहिरवग्गणा चेदि । जा सा बाहिर-वग्गणा सा पंचण्हं सरीराणं चदुहि अणुयोगद्दारेहि उवरि भणिहिदि* । जा सा अब्भंतरवग्गणा सा दुविहा एगसेडि–णाणासेडिभेएण । तत्थ एगसेडिवग्गणाए इमाणि सोलस अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति । संपहि एदेहि सोलसअणुयोगद्दारेहि जहाकमेण वग्गणाणमणुगमं कस्सामो—

वग्गणणिक्खेवे त्ति छव्विहे वग्गणणिक्खेवे– णामवग्गणा ट्ठवण-वग्गणा दव्ववग्गणा खेत्तवग्गणा कालवग्गणा भाववग्गणा चेदि ॥७१॥

[निश्चये क्षिपतीति निक्षेपः ।]सो किमट्ठं कीरदे? प्रकृत@ प्ररूपणार्थम् । उक्तंच–

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च ।
संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च ॥ १ ॥

छच्चेव णिक्खेवा एत्थ किमट्ठं कदा? ण एस दोसो, छच्चेवे त्ति णियमाभावादो ।

वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणा परिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम ॥ ७० ॥

वर्गणा दो प्रकारकी है– आभ्यन्तरवर्गणा और बाह्यवर्गणा । जो बाह्यवर्गणा है वह पांच शरीरों सम्बन्धी चार अनुयोगद्वारोंके द्वारा आगे कहेंगे । जो अभ्यन्तरवर्गणा है वह एकश्रेणि और नानाश्रेणिके भेदसे दो प्रकारकी है । उनमेंसे एकश्रेणिवर्गणाके ये सोलह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं । अब इन सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा यथाक्रमसे वर्गणाओंका विचार करेंगे ।

वर्गणानिक्षेपका प्रकरण है । वर्गणानिक्षेप छह प्रकारका है– नामवर्गणा, स्थापनावर्गणा, द्रव्यवर्गणा, कालवर्गणा और भाववर्गणा ॥ ७१ ॥

जो निश्चयमें रखता है वह निक्षेप है ।

शंका–वह निक्षेप किसलिये करते हैं ?

समाधान–प्रकृतका निरूपण करनेके लिये । कहा भी है– अप्रकृत अर्थका निराकरण करनेके लिये, प्रकृत अर्थका कथन करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये निक्षेप किया जाता है ॥ १ ॥

शंका–यहाँ छह ही निक्षेप किसलिये किये गये हैं ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, निक्षेप छह ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है ।

---

* अ. प्रतौ ' भणिहिदि ' इति पाठः । ✿ अ. आ. प्रत्योः ' -मणुगमणं ' इति पाठः ।
@ ता. अ. आ. प्रतिषु ' प्रकृति- ' इति पाठः ।

वग्गणासद्दो णामवग्गणा । सो एसो त्ति बुद्धीए वग्गणासरूवेण संकप्पिदत्थो ट्ठवणवग्गणा । दव्ववग्गणा दुविहा आगम-णोआगमदव्ववग्गणाभेएण । वग्गणापाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्ववग्गणा णाम । णोआगमदव्ववग्गणा तिविहा जाणुगसरीर-भवियतव्वदिरित्त-णोआगमदव्ववग्गणाभेएण। जाणुगसरीर-भवियदव्ववग्गणाओ सुगमाओ। तव्वदिरित्त-दव्ववग्गणा दुविहा– कम्मवग्गणा णोकम्मवग्गणा चेदि । तत्थ कम्मवग्गणा णाम अट्ठकम्मक्खंधवियप्पा । सेसएक्कोणवीसवग्गणाओ णोकम्मवग्गणाओ । एगागासोगाहणप्पहुडि पदेसुत्तराविकमेण जाव देसूणघणलोगे त्ति ताव एदाओ खेत्तवग्गणाओ । कम्मदव्वं पडुच्च समयाहियावलियप्पहुडि जाव कम्मट्ठिदि* त्ति णोकम्मदव्वं पडुच्च एगसमयादि जाव असंखेज्जा लोगा त्ति ताव एदाओ कालवग्गणाओ। भाववग्गणा दुविहा आगम-णोआगमभाववग्गणाभेएण । वग्गणापाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभाववग्गणा । ओदइयादिपंचण्णं भावाणं जे भेदा ते णोआगमभाववग्गणा । एवं वग्गणाणिक्खेवे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं* ।

वग्गणणयविभासणदाए को णओ काओ वग्गणाओ इच्छदि । णेगम-ववहार-संगहा सव्वाओ ॥ ७२ ॥

कुदो ? दव्वट्ठियाणं तिण्णमेदेसिं णयाणं विसए छण्णं णिक्खेवाणमत्थित्तं पडि

वर्गणाशब्द नामवर्गणा है। 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धि द्वारा वर्गणारूपसे संकल्पित अर्थ स्थापनावर्गणा है । द्रव्यवर्गणा दो प्रकारकी है– आगमद्रव्यवर्गणा और नोआगमद्रव्यवर्गणा । वर्गणाप्राभृतको जाननेवाला किन्तु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीव आगमद्रव्यवर्गणा है । नोआगमद्रव्यवर्गणा तीन प्रकारकी है - ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्यवर्गणा, भावि-नोआगमद्रव्यवर्गणा और तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यवर्गणा । ज्ञायकशरीर और भाविनोआगमद्रव्यवर्गणायें सुगम हैं । तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यवर्गणा दो प्रकारकी है–– कर्मवर्गणा और नोकर्मवर्गणा । उनमेंसे आठ प्रकारके कर्मस्कन्धोंके भेद कर्मवर्गणा है, तथा शेष उन्नीस प्रकारकी वर्गणायें नोकर्मवर्गणायें हैं । एक आकाशप्रदेशप्रमाण अवगाहनासे लेकर प्रदेशोत्तर आदिके क्रमसे कुछ कम घनलोक तक ये सब क्षेत्रवर्गणायें हैं । कर्मद्रव्यकी अपेक्षा एक समय अधिक तक आवलिसे लेकर उत्कृष्ट कर्मस्थिति तक और नोकर्मद्रव्यकी अपेक्षा एक समयसे लेकर असंख्यात लोकप्रमाण काल तक ये सब कालवर्गणायें हैं । भाववर्गणा दो प्रकारकी है– आगमभाववर्गणा और नोआगमभाववर्गणा । वर्गणाप्राभृतको जाननेवाला और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीव आगमवर्गणा है । औदयिक आदि पाँच भावोंके जो भेद हैं वे सब नोआगमभाववर्गणा हैं । इस प्रकार वर्गणानिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

वर्गणानयविभाषणताका प्रकरण है–– कौन नय किन वर्गणाओंको स्वीकार करता है ? नैगम, व्यवहार संग्रहनय सब वर्गणाओंको स्वीकार करते हैं ॥ ७२ ॥

क्योंकि, इन तीनों द्रव्यार्थिक नयोंके छहों निक्षेप विषय हैं इस बातके स्वीकार करनेमें कोई

---

* ता. प्रतौ '–प्पहुडि कम्मट्ठिदि' इति पाठः । * ता. प्रतौ '-द्दारं (१)।' इति पाठः ।

विरोहाभावादो ।

उजुसुदो ट्ठवणवग्गणां णेच्छदि ॥ ७३ ॥

अण्णदव्वस्स संकप्पवसेण अण्णदव्वसरूवावत्तिविरोहादो ।

सद्दणओ णामवग्गणां भाववग्गणां च इच्छदि ॥ ७४ ॥

एदस्स णयस्स विसए अण्णेसिं णिक्खेवाणमभावादो । एत्थ केण णिक्खेवेण पयदं ? णोआगमपोग्गलदव्वणिक्खेवेण पयदं, जीव-धम्माधम्म-कालागासदव्व[✡] वग्गणाहि एत्थ पओजणाभावादो ।

वग्गणादव्वसमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि चोद्दस अणुयोगद्दाराणि-वग्गणापरूवणा वग्गणाणिरूवणा वग्गणाधुवाधुवाणुगमो वग्गणासांतरणिरंतराणुगमो वग्गणाओजजुम्माणुगमो वग्गणाखेत्ताणुगमो वग्गणाफोसणाणुगमो वग्गणाकालाणुगमो वग्गणाअंतराणुगमो वग्गणाभावाणुगमो वग्गणाउवणयणाणुगमो वग्गणापरिमाणाणुगमो वग्गणाभागाभागाणुगमो वग्गणाअप्पाबहुए त्ति ॥ ७५ ।

वग्गणापरूवणं सोलसेहि अणुयोगद्दारेहि कहामो त्ति पइज्जां काऊण पुणो तत्थ

विरोध नहीं आता ।

ऋजुसूत्रनय स्थापनावर्गणाको स्वीकार नहीं करता ॥ ७३ ॥

क्योंकि, संकल्पवश अन्य द्रव्यका अन्य द्रव्यरूपसे परिवर्तन होनेमें विरोध आता है ।

शब्दनय नामवर्गणा और भाववर्गणाको स्वीकार करता है ॥ ७४ ॥

क्योंकि, इस नयके विषय अन्य निक्षेप नहीं हैं ।

शंका- यहाँ किस निक्षेपका प्रकरण है ?

समाधान-नोआगमपुद्गलद्रव्यनिक्षेपका प्रकरण है; क्योंकि, यहाँपर जीव, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यवर्गणाओंसे प्रयोजन नहीं है ।

वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका प्रकरण है । उसमें ये चौदह अनुयोगद्वार हैं- वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तर - निरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम ॥ ७५ ॥

शंका-वर्गणाप्ररूपणा सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा करके फिर वहाँ

✡ अ प्रतौ '-कालागमदव्व- ' इति पाठः ।

आइल्लाणं दोण्णं चेव अणुओगद्दाराणं परूवणं काऊण सेसतत्थतणचोद्दसेहि अणुओगद्दारेहि वग्गणपरूवणमकाऊण वग्गणदव्वसमुदाहारो किमिदि☼ वोत्तुमारद्धो ? ण वग्गणपरूवणा वग्गणाणमेगसेडिं भणदि । वग्गणदव्वसमुदाहारो पुण वग्गणाणं णाणेण-सेडी भणदि, तेण वग्गणदव्वसमुदाहारपरूवणा वग्गणपरूवणाविणाभाविणि त्ति कट्टु वग्गणदव्वसमुदाहारो वोत्तुमाढत्तो; ✱ अण्णहा गंथबहुत्तभएण पुणरुत्तदोसप्पसंगादो ।

वग्गणपरूवणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७६ ॥

एत्थ ताव एगसेढिमस्सिदूण वग्गणपरूवणं कस्सामो–एगपदेसियपोग्गलदव्ववग्गणा परमाणुरूवा; अण्णहा एयपदेसिय त्ति विसेसणाणुववत्तीए । परमाणू च अपच्चक्खो; 'णेव इंदिए गेज्झं'☼ इदि वयणादो । तदो तत्थ इमा इदि पच्चक्खणिद्देसो ण घडदे ? ण, आगमपमाणेण सिद्धपरमाणुविसयबोहे पच्चक्खे संते पच्चक्खणिद्देसोववत्तीए परियम्मे परमाणू अपदेसो त्ति वुत्तो, एत्थ पुण परमाणू एयपदेसो त्ति भणिदो कधमेदेसिं सुत्ताणं ण विरोहो ? ण एस दोसो; एगपदेसं मोत्तूण विदियादिपदेसाणं तत्थ पडिसेहकरणादो । न विद्यन्ते द्वितीयादयः प्रदेशाः यस्मिन् सोऽप्रदेशः परमाणु-

---

प्रारम्भके दो ही अनुयोगद्वारोंका कथन करके और शेष चौदह अनुयोगद्वारोंके द्वारा वर्गणाका कथन न करके वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन किसलिए किया जा रहा है ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, वर्गणाप्ररूपणा अनुयोगद्वार वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कथन करता है, किन्तु वर्गणाद्रव्यसमुदाहार वर्गणाओंकी नाना और एक श्रेणियोंका कथन करता है, इसलिए वर्गणाद्रव्यसमुदाहारप्ररूपणा वर्गणाप्ररूपणाकी अविनाभाविनी है ऐसा समझ कर वर्गणा-द्रव्यसमुदाहारका कथन आरम्भ किया है । अन्यथा ग्रन्थके बहुत बढ़ जानेका भय था जिससे पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता ।

वर्गणाकी प्ररूपणा करनेपर यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है । ७६ ॥

यहाँ सर्व प्रथम श्रेणिका अवलम्बन लेकर वर्गणाका कथन करते हैं––एकप्रदेशी पुद्गलद्रव्यवर्गणा परमाणुस्वरूप होती है; अन्यथा 'एकप्रदेशी' यह विशेषण नहीं बन सकता ।

शंका–परमाणु अप्रत्यक्ष होता है ; क्योंकि, ' उसका इन्द्रियों द्वारा ग्रहण नहीं होता ' ऐसा सूत्रवचन है । इसलिये उसके लिये सूत्रमें 'इमा' ऐसा प्रत्यक्षनिर्देश नहीं बन सकता ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, आगमप्रमाणसे सिद्ध परमाणुविषयक ज्ञानके प्रत्यक्षरूप होनेपर ' इमा ' इस प्रकार प्रत्यक्षनिर्देश बन जाता है ।

शंका–परिकर्ममें परमाणुको अप्रदेशी कहा है परन्तु यहांपर उसे एकप्रदेशी कहा है, इसलिये इन दोनों सूत्रोंमें विरोध कैसे नहीं होगा ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है ; क्योंकि, परमाणुके एकप्रदेशको छोड़कर द्वितीयादि प्रदेश नहीं होते इस बातका परिकर्ममें निषेध किया है । जिसमें द्वितीयादि प्रदेश नहीं है वह

☼ ता. आ. प्रत्योः ' -हारो त्ति किमिदि ' इति पाठः । ✱ अ. प्रतौ ' -मादत्तो ' आ. प्रतौ ' -मादत्तादो ' इति पाठः । ☼ ता. प्रतौ ' इंदियगेज्झ ' इति पाठः ।

रिति । अन्यथा खरविषाणवत् परमाणोरसत्त्वप्रसङ्गात् । कधं परमाणुस्स पोग्गलत्तं ? अण्णेहि मेलणसत्तिसंभवादो । परमाणूणं परमाणुभावेण सव्वकालमवट्ठाणाभावादो दव्वभावो ण जुज्जदे ? ण, पोग्गलभावेण उप्पाद-विणासवज्जिएण परमाणूणं पि दव्वत्तसिद्धीदो ।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७७ ॥

दोण्णं परमाणूणं अजहण्णणिद्ध-लुक्खगुणाणं समुदयसमागमेण दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि । परमाणूणं समागमो किमेगदेसेण होदि आहो सव्वप्पणा? ण ताव सव्वप्पणा; अणंताणं पि परमाणूणं समागमेण परमाणुमेत्तपरिमाणप्पसंगादो✡।ण च एवं; सेसासेसवग्गणाणमभावप्पसंगा । ण एगदेसेण समागमो वि परमाणुस्स सावयवत्तप्पसंगादो । ण तं पि; अणवत्थापसंगादो । णाणवत्था वि; सयलथूलकज्जाणमणुप्पत्तिसंगादो । ण च एगपदेसाणं दोण्हं परमाणूणं सव्वप्पणा समागमं मोत्तूण एगदेसेण समागमो अत्थि; बिदियादिपदेसाभावादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे-दव्वट्ठिय-

अप्रदेश परमाणु है यह उसकी व्युत्पत्ति है । यदि 'अप्रदेश' पदका यह अर्थ न किया जाय तो जिस प्रकार गधेके सींगोंका असत्त्व है उसी प्रकार परमाणुके भी असत्त्वका प्रसंग आता है ।

शंका-- परमाणु पुद्गलरूप है यह बात कैसे सिद्ध होती है ?

समाधान-- उसमें अन्य पुद्गलोंके साथ मिलनेकी शक्ति सम्भव है, इससे सिद्ध होता है कि परमाणु पुद्गलरूप है ।

शंका-- परमाणु सदा काल परमाणुरूपसे अवस्थित नहीं रहते इसलिये उनमें द्रव्यपना नहीं बनता ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, परमाणुओंका पुद्गलरूपसे उत्पाद और विनाश नहीं होता इसलिये उनमें भी द्रव्यपना सिद्ध होता है ।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है ॥ ७७ ॥

अजघन्य स्निग्ध और रूक्ष गुणवाले दो परमाणुओंके समुदायसमागमसे द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है ।

शंका-- परमाणुओंका समागम क्या एकदेशेन होता है या सर्वात्मना होता है ? सर्वात्मना तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, ऐसा होनेपर अनन्त परमाणुओंका भी यदि समागम हो जाय तो भी परमाणुमात्र परिणाम प्राप्त होता है । पर ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेपर परमाणुवर्गणाके सिवा शेष सब वर्गणाओंका अभाव प्राप्त होता है । एकदेशेन समागम भी नहीं बनता, क्योंकि, ऐसा होनेपर परमाणु सावयव प्राप्त होता है । यदि परमाणुको सावयव माना जाता है तो अनवस्था दोष आता है । अनवस्था नहीं आवे यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर सब स्थूल कार्योंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आता है । और एकप्रदेशी दो परमाणुओंके सर्वात्मना समागमको छोड़कर एकदेशेन समागम बन नहीं सकता, क्योंकि, परमाणुके द्वितीयादि प्रदेश नहीं पाये जाते ?

✡ अ प्रतौ 'परिमाणत्तप्पसंगादो' इति पाठः ।

णए अवलंबिज्जमाणे दोण्णं परमाणूणं सिया सव्वप्पणा समागमो; णिरवयवत्तादो। जे जस्स कज्जस्स आरंभया परमाणू ते तस्स अवयवा होंति। तदारद्धकज्जं पि अण्णहोदि विहिभागद्धजोगजणिदअण्णहत्तो णिप्पज्जदि, तस्स आरंभयाणमण्णेसिमभावादो। भावे वा ण एसो परमाणू; एत्तो सुहुमाणमण्णेसिं संभवादो। ण च एगसंखंकियम्मि परमाणुम्मि बिदियादिसंखा अत्थि; एयस्स दुब्भावविरोहादो। किं च जदि परमाणुस्स अवयवो अत्थि तो परमाणुणा अवयविणा होदव्वं। ण च एवं; अवयवविभागेण अवयवसंजोगस्स विणासे संते परमाणुस्स अभावप्पसंगादो। ण च एवं; कारणाभावेण सयलथूलकज्जाणं पि अभावप्पसंगादो। ण च कप्पियरूवा अवयवा होंति; अव्ववत्थापसंगादो। तम्हा परमाणुणा णिरवयवेण होदव्वं। तदो सिद्धो सव्वप्पणा परमाणूणं सिया समागमो। ण च णिरवयवपरमाणूहिंतो थूलकज्जस्स अणुप्पत्ती; णिरवयवाणं पि परमाणूणं सव्वप्पणा समागमेण थूलकज्जुप्पत्तीए विरोहासिद्धीदो। पज्जवट्ठियणए[☼] अवलंबिज्जमाणे सिया एगदेसेण समागमो। ण च परमाणूणमवयवा णत्थि; उवरिमहेट्ठिममज्झिमोवरिमोवरिमभागाणमभावे परमाणुस्स वि अभावप्पसंगादो। ण च एदे भागा

समाधान— यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं कि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर दो परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है, क्योंकि, परमाणु निरवयव होता है। जो परमाणु जिस कार्यके आरम्भक होते हैं वे उसके अवयव होते हैं और उनके द्वारा आरम्भ किया गया कार्य अवयवी होता है। परमाणु अन्यसे उत्पन्न होता है यह कहना ठीक नहीं है; क्योंकि, उसके आरम्भक अन्य पदार्थ नहीं पाये जाते। और यदि उसके आरम्भक अन्य पदार्थ होते हैं ऐसा माना जाता है तो यह परमाणु नहीं ठहरता, क्योंकि, इस तरह इससे भी सूक्ष्म अन्य पदार्थोंका सद्भाव सिद्ध होता है। एक संख्यावाले परमाणुमें द्वितीयादि संख्या होती है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, एकको दोरूप माननेमें विरोध आता है। दूसरी बात— यदि परमाणुके अवयव होते हैं ऐसा माना जाय तो परमाणुको अवयवी होना चाहिये। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, अवयवके विभागद्वारा अवयवोंके संयोगका विनाश होनेपर परमाणुका अभाव प्राप्त होता है। पर ऐसा है नहीं, क्योंकि, कारणका अभाव होनेसे सब स्थूल कार्योंका भी अभाव प्राप्त होता है। परमाणुके कल्पितरूप अवयव होते हैं, यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस तरह माननेपर अव्यवस्था प्राप्त होती है। इसलिये परमाणुको निरवयव होना चाहिये। अतः सिद्ध होता है कि परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है। निरवयव परमाणुओंसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति नहीं बनेगी यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, निरवयव परमाणुओंके सर्वात्मना समागमसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

पर्यायार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर कथंचित् एकदेशेन समागम होता है। परमाणुके अवयव नहीं होते यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि उसके उपरिम, अधस्तन, मध्यम और उपरिमोपरिम भाग न हों तो परमाणुका ही अभाव प्राप्त होता है। ये भाग कल्पितरूप होते हैं यह

☼ अ. प्रतौ 'दुयाणए' इति पाठः।

संकप्पियसरूवो; उड्ढाधोमज्झिमभागाणं उवरिमो✲वरिमभागाणं च कप्पणाए विणा उवलंभादो। ण च अवयवाणं सव्वत्थ विभागेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, सयलवत्थणमभावप्पसंगादो। ण च भिण्णपमाणगेज्झाणं भिण्णदिसाणं च एयत्तमत्थि, विरोहादो। ण च अवयवेहि परमाणू णारद्धो, अवयवसमूहस्सेव परमाणुत्तदंसणादो। ण च अवयवाणं संजोगविणासेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, अण्णादिसंजोगे तदभावादो। तदो सिद्धा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा। एसा परूवणा उवरि सव्वत्थ✲परूवेदव्वा।

आगमोद्धारक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-परित्तपदेसिय-अपरित्तपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७८ ॥

पुव्वपरूविदएयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा✱ एयवियप्पा। दुपदेसियपर-

---

कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, परमाणुमें ऊर्ध्वभाग, अधोभाग और मध्यभाग तथा उपरिमोपरिमभाग कल्पनाके बिना भी उपलब्ध होते हैं। तथा परमाणुके अवयव हैं इसलिये उनका सर्वत्र विभाग ही होना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, इस तरह माननेपर तो सब वस्तुओंके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है। जिनका भिन्न भिन्न प्रमाणोंसे ग्रहण होता है, और जो भिन्न भिन्न दिशावाले हैं वे एक हैं यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर विरोध आता है। अवयवोंसे परमाणु नहीं बना है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, अवयवोंके समूहरूप ही परमाणु दिखाई देता है। तथा अवयवोंके संयोगका विनाश होना चाहिये यह भी कोई नियम नहीं है, क्योंकि, अनादि संयोगके होनेपर उसका विनाश नहीं होता। इसलिये द्विप्रदेशी परमाणु पुद्गल द्रव्यवर्गणा सिद्ध होती है। यह प्ररूपणा आगे सर्वत्र करनी चाहिये।

विशेषार्थ— यहाँ प्रसंगसे परमाणु सावयव है कि निरवयव इस बातका विचार किया गया है। परमाणु एक और अखण्ड है, इसलिये तो वह निरवयव माना गया है और उसमें ऊर्ध्वादि भाग होते हैं इसलिये वह सावयव माना गया है। द्रव्यार्थिकनय अखण्ड द्रव्यको स्वीकार करता है और पर्यायार्थिकनय उसके भेदोंको स्वीकार करता है। यही कारण है कि द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा परमाणुको निरवयव कहा है और पर्यायार्थिकनयकी अपेक्षा सावयव कहा है। परमाणुका यह विश्लेषण केवल बुद्धिका व्यायाम नहीं है, किन्तु वास्तविक है ऐसा यहाँ समझना चाहिये।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, परीतप्रदेशी, अपरीतप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ७८ ॥

पहले कही गई एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक प्रकारकी होती है। तथा द्विप्रदेशी

✲ अ. आ. प्रत्योः '–परिमो' इति पाठः। ✲ ता. प्रतौ 'उवरिमसव्वत्थ' इति पाठः।
✱ ता. प्रतौ '–वग्गणा (ए)' इति पाठः।

माणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव उक्कस्ससंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणे त्ति ताव एसा संखेज्जपदेसियवग्गणा णाम रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्तवियप्पा । एवमेदाओ दोण्णि वग्गणाओ २। उक्कस्ससंखेज्जपदेसियपरमाणुपोग्गलवग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा होदि । पुणो रूवुत्तरकमेण असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा ताव गच्छंति जाव उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणे त्ति । उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जादो [illegible] सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ चेव असंखेज्जपदेसियवग्गणाओ । एदाओ संखेज्जपदेसियवग्गणाहिंतो असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । एदाओ सव्वाओ वि तदिया असंखेज्जपदेसियवग्गणा होदि ३ ।

परित्त-अपरित्तवग्गणाओ सुत्तुद्दिट्ठाओ अणंतपदेसियवग्गणासु चेव णिवदंति, अणंत-अणंताणंतेहिंतो वदिरित्तपरित्त अपरित्ताणमभावादो । तेण तव्विसेसणभावेण परित्तापरित्तणिद्देसो परूवेयव्वो ।

उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धेहिंतो अणंतगुणहीणमद्धाणं गच्छदि । सगजहण्णादो अणंतपदेसियउक्कस्सवग्गणाणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिम-

परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तक यह सब संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा है । इसके एक कम उत्कृष्ट संख्यातभेद होते हैं । इस प्रकार ये दो वर्गणायें हुईं ।२। उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः उत्तरोत्तर एक एकके मिलाने पर असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती हैं और ये सब उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक होती हैं । उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातमेंसे उत्कृष्ट संख्यातके न्यून करने पर शेषमें जितने रूप (अंक) हैं उतनी ही असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती हैं । ये संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंसे असंख्यातगुणी होती हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यातलोक गुणकार है । ये सब ही तीसरी असंख्यातप्रदेशी वर्गणा है । ३ ।

5.123.124

सूत्रमें कही गई परीतवर्गणायें और अपरीतवर्गणायें अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें ही सम्मिलित हैं, क्योंकि, अनन्त और अनन्तानन्तसे अतिरिक्त परीत और अपरीत संख्या उपलब्ध नहीं होता। इसलिये अनन्तके विशेषणरूपसे ही परीत और अपरीतके निर्देशका कथन करना चाहिये ।

उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य अनन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः क्रमसे एक एककी वृद्धि होते हुये अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान आगे जाते हैं । अपने जघन्यसे अनन्तप्रदेशी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी होती है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अ. आ. प्रत्योः 'तव्विसेसेण–' इति पाठः ।

भागमेत्तो । परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणसद्दो ति-चदुपदेसियादिसु सव्वत्थ जोजेयव्वो, अंतदीवयत्तादो । एवमेसा अणंतपदेसियदव्ववग्गणा चउत्थी ४ । कुदो? एदासिमेयत्तं? अणंतभावेण । एदाओ चत्तारि वि वग्गणाओ अगेज्झाओ ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज

अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरि आहारदव्ववग्गणा णाम ॥ ७९ ॥

उक्कस्सअणंतपदेसियदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया आहारदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणेण सिद्धाणमणंतभागमेत्तवियप्पे गंतूण समप्पदि । जहण्णादो उक्कस्सिया विसेसाहिया । विसेसो पुण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो होंतो वि आहारउक्कस्सदव्ववग्गणाए अणंतिमभागो । कधमेदं णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो । ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपाओग्गपोग्गलक्खंधाणं आहारदव्ववग्गणा त्ति सण्णा । एवमेसा पंचमी वग्गणा ५ ।

आहारदव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८० ॥

उक्कस्सआहारदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते पढमअगहणदव्ववग्गणाए

सूत्रमें आया हुआ 'परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा' शब्द त्रिप्रदेशी और चतुःप्रदेशी आदि पदोंमें सर्वत्र जोड़ना चाहिये, क्योंकि वह अन्तदीपक है । इस प्रकार यह अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणा चौथी है । ४ । ये सब वर्गणायें एक क्यों हैं ? क्योंकि, ये सब अनन्तरूपसे एक हैं । ये चारों ही वर्गणायें अग्राह्य हैं ।

विशेषार्थ–प्रथम परमाणुवर्गणा, दूसरी संख्यातवर्गणा, तीसरी असंख्यातवर्गणा और चौथी अनन्तवर्गणा ये चार प्रकारकी वर्गणायें अग्राह्य हैं । इसका यह आशय है कि जीव द्वारा इनका ग्रहण नहीं होता । शेष कथन सुगम है ।

अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणाके ऊपर आहारद्रव्यवर्गणा है । ७९ ॥

उत्कृष्ट अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें एक अंकके मिलाने पर जघन्य आहार द्रव्यवर्गणा होती है । फिर एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण भेदोंके जाने पर अन्तिम आहार द्रव्यवर्गणा होती है । यह जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होता हुआ भी उत्कृष्ट आहार द्रव्यवर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण है ।

शंका यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरके योग्य पुद्गल स्कन्धोंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । इस प्रकार यह पाँचवीं वर्गणा है । ५ ।

आहारद्रव्यवर्गणाके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा है ॥ ८० ॥

उत्कृष्ट आहार द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर प्रथम अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी

अ. आ. प्रत्योः '–मणंतभाग–' इति पाठः । ब. प्रतौ 'गुणं' इति पाठः ।

सव्वजहण्णवग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तट्ठाणं गंतूण उक्कस्सिया अगहणदव्ववग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सिया अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एवमेसा छट्ठी वग्गणा ६ । कधमेदासिं* वग्गणाणमेयत्तं ? अगहणभावेण । पंचण्णं सरीराणं भासा-मणाणं च अजोग्गा जे पोग्गलक्खंधा तेसिमगहणवग्गणा त्ति सण्णा ।

पार्श्वदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेयादव्ववग्गणा णाम ॥ ८१ ॥

उक्कस्सियाए अगहणदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया तेजादव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया तेजइयसरीरदव्ववग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा सत्तमी वग्गणा ७। एदिस्से पोग्गलक्खंधा तेजइयसरीरपाओग्गा* तेणेसा गहणवग्गणा ।

तेयादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८२ ॥

तेजइयसरीरउक्कस्सदव्व*वग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते बिदियअगहणदव्ववग्गणाए पढमिल्लिया सव्वजहण्णअगहणदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण बिदियअगहणदव्ववग्गणाए

सर्वजघन्य वर्गणा होती है । फिर एक एक बढ़ाते हुये अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणा होती है । यह जघन्यसे उत्कृष्ट अनन्तगुणी होती है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । इस प्रकार यह छठी वर्गणा है । ६ ।

शंका— इन वर्गणाओंमें एकत्व कैसे है ?

समाधान— अग्रहणपनेकी अपेक्षा इनमें एकत्व है ।

पाँच शरीर तथा भाषा और मनके अयोग्य जो पुद्गलस्कन्ध हैं उनकी अग्रहण-वर्गणा संज्ञा है ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाके ऊपर तैजससशरीरद्रव्यवर्गणा है ॥ ८१ ॥

उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलानेपर सबसे जघन्य तैजससशरीर द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट तैजससशरीरद्रव्यवर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है । यह सातवीं वर्गणा है । ७ । इसके पुद्गलस्कन्ध तैजससशरीरके योग्य होते है, इसलिये यह ग्रहणवर्गणा है ।

तैजससशरीरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८२ ॥

उत्कृष्ट तैजससशरीर द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर दूसरी अग्रहण द्रव्यवर्गणासंबंधी

* ता. अ. आ. प्रतिषु '–मेदेसिं' इति पाठः । * अ. आ. प्रत्योः '–सरीरपाओग्गा' इति पाठः । * ता प्रतौ '–सरीरदव्व' इति पाठः ।

उक्कस्सिया वग्गणा होदि । समजहण्णादो सगउक्कस्सवग्गणा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो एसा अट्ठमी वग्गणा ८ । पंचण्णं सरीराणं गहण*पाओग्गा ण होदि त्ति अगहणवग्गणसण्णिदा । जहण्णादो उक्कस्सवग्गणा अणंतगुणे त्ति कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासादव्ववग्गणा णाम । ८३ ।

अगहणउक्कस्सदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया भासादव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण* सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण भासादव्ववग्गणाए* उक्कस्सिया दव्ववग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? सगजहण्णवग्गणाए अणंतिमभागो । को पडिभागो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा णवमी वग्गणा९ । भासादव्ववग्गणाए परमाणुपोग्गलक्खंधा चदुण्णं भासाणं पाओग्गा । पटह♠-भेरी काहलब्भगज्जणादिसद्दाणं पि एसा चेव वग्गणा पाओग्गा । कधं काहलादिसद्दाणं भासाववएसो ?

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

पहली सर्वजघन्य अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । फिर आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर दूसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह आठवीं वर्गणा है । ८ । यह पाँच शरीरोंके ग्रहणयोग्य नहीं है इसलिये इसकी अग्रहण द्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।

शंका–जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर भाषा द्रव्यवर्गणा है ॥ ८३ ॥

उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्यवर्गणामें एक अंकके प्रक्षिप्त करने पर सबसे जघन्य भाषा द्रव्यवर्गणा होती है । इससे आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर भाषा द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना है ? अपनी जघन्य वर्गणाका अनन्तवाँ भाग विशेषका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवाँ भाग प्रतिभाग है । यह नौवीं वर्गणा है । ९ । भाषा द्रव्यवर्गणाके परमाणुपुद्गलस्कन्ध चारों भाषाओंके योग्य होते हैं तथा ढोल, भेरी, नगारा और मेघका गर्जन आदि शब्दोंके भी योग्य ये ही वर्गणायें होती हैं ।

शंका–नगारा आदिके शब्दोंकी भाषा संज्ञा कैसे है ?

---

* ता. प्रतौ '(अ) गहण–' अ. आ. प्रत्योः 'अगहण–' इति पाठः । * ता. अ. आ. प्रतिषु '–गुणो इति पाठः । * ता. प्रतौ '–वग्गणा (ए–) इति पाठः ♠ अ. प्रतौ 'पाओग्गपटह–, इति पाठः ।

ण, भासो व्व भासे त्ति उवयारेण काहलादिसद्दाणं पि सव्ववएससिद्धीदो ।

भासादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८४ ॥

उक्कस्सभासादव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते तदियअगहणदव्ववग्गणाए सव्वजहण्णिया वग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण तदियअगहणदव्ववग्गणाए उक्कस्सिया वग्गणा होदि । सगजहण्णादो उक्कस्सा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एसा दसमी वग्गणा १० । एदिस्से वि पोग्गलक्खंधा गहणपाओग्गा ण होंति । कुदो ? अण्णहा अगहणसण्णाणुववत्तीदो ।

अगहणदव्ववग्गणाए उवरि मणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८५ ॥

तदियागहणदव्वउक्कस्सवग्गणाए* उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया मणदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया मणदव्ववग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो उक्कस्सवग्गणा विसेसाहिया । विसेसो पुण सव्वजहण्णमणदव्ववग्गणाए अणंतिमभागो । तस्स को पडिभागो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । एसा एक्कारसमी वग्गणा ११ । एदीए वग्गणाए दव्वमणणिव्वत्तणं☼ कीरदे ।

समाधान— नहीं, क्योंकि, भाषाके समान होनेसे भाषा है इस प्रकारके उपचारसे नगारा आदिके शब्दोंकी भी भाषा संज्ञा है ।

भाषा द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८४ ॥

उत्कृष्ट भाषा द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर तीसरी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी सबसे जघन्य वर्गणा होती है । इसके आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर तीसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट अनन्तगुणी होती है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह दसवीं वर्गणा है । १० । इसके भी पुद्गलस्कन्ध ग्रहणयोग्य नहीं होते हैं, क्योंकि, ऐसा नहीं माननेपर इसकी अग्रहण संज्ञा नहीं बन सकती है ।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाके ऊपर मनोद्रव्यवर्गणा है ॥ ८५ ॥

तीसरी उत्कृष्ट अग्रहण द्रव्य वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य मनोद्रव्यवर्गणा होती है । फिर आगे एक एक अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर उत्कृष्ट मनोद्रव्यवर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा विशेष अधिक है । तथा विशेषका प्रमाण सबसे जघन्य मनोद्रव्यवर्गणाका अनन्तवाँ भाग है । इसका प्रतिभाग क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण प्रतिभाग है । यह ग्यारहवीं वर्गणा है । ११ । इस वर्गणासे द्रव्यमनकी रचना करते हैं ।

---

* ता. प्रतौ '–दव्वदग्गणाए' इति पाठः ।

☼ अ. प्रतौ '–मणोणिव्वत्तणं' आ. प्रतौ '–मणोणिव्वत्तं ण' इति पाठः ।

मणदव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ८६ ॥

संपहि उक्कस्समणदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते चउत्थीए अगहणदव्ववग्गणाए सव्वजहण्णिया वग्गणा होदि। तदो पदेसुत्तरादिकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण चउत्थअगहणदव्ववग्गणाए उक्कस्सवग्गणा होदि। सगजहण्णवग्गणादो उक्कस्सिया वग्गणा अणंतगुणा। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एसा बारसमी वग्गणा १२ महणपाओग्गा ण होदि, अप्पाहियपरिमाणत्तादो।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥८७॥

चउत्थीए अगहणदव्ववग्गणाए उक्कस्सदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया कम्मइयसरीरदव्ववग्गणा होदि। तदो पदेसुत्तराविकमेण अभवसिद्धिएहि अणंतगुणसिद्धाणमणंतभागमेत्तमद्धाणं गंतूण कम्मइयदव्ववग्गणाए उक्कस्सिया वग्गणा होदि। सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सिगा वग्गणा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तो विसेसो? जहण्णकम्मइयवग्गणाए अणंतिमभागो। तस्स को पडिभागो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एसा तेरसमी वग्गणा १३। एदिस्से वग्गणाए पोग्गलक्खंधा अट्ठकम्मपाओग्गा।

कम्मइयदव्ववग्गणाणमुवरि *ध्रुवक्खंधदव्ववग्गणा णाम ॥८८॥

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८६ ॥

उत्कृष्ट मनोद्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर चौथी अग्रहणद्रव्यवर्गणासम्बन्धी सबसे जघन्य वर्गणा होती है। इससे आगे एक एक प्रदेशके अधिक क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर चौथी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है। यह अपनी जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। यह बारहवीं वर्गणा है। १२। यह ग्रहणयोग्य नहीं होती है, क्योंकि, यह न्यूनाधिक परिणामवाली है।

अग्रहण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कार्मण द्रव्यवर्गणा है ॥ ८७ ॥

चौथी अग्रहण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणामें एक अंकके प्रक्षिप्त करने पर सबसे जघन्य कार्मणशरीर द्रव्यवर्गणा होती है। आगे एक एक प्रदेश अधिकके क्रमसे अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण स्थान जाकर कार्मण द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है। यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा विशेष अधिक है। विशेषका प्रमाण कितना है। जघन्य कार्मणवर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण है। इसका प्रतिभाग क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण इसका प्रतिभाग है। यह तेरहवीं वर्गणा है। १३। इस वर्गणाके पुद्गलस्कन्ध आठ कर्मोंके योग्य होते हैं।

कार्मण द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणा है ॥ ८८ ॥

---

* अ आ. प्रत्योः '-क्खंधादव्व-' इति पाठः।

एसो ध्रुवक्खंधणिद्देसो अंतदीवओ । तेण हेट्ठिमसव्ववग्गणाओ ध्रुवाओ चेव अंतरविरहिदाओ त्ति घेत्तव्वं । एत्तो प्पहुडि उवरि भण्णमाणसव्ववग्गणासु अग्गहणभावो णिरंतरमणुवट्टावेदव्वो । संपहि कम्मइयउक्कस्सवग्गणाए एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया ध्रुवक्खंधदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूणं ध्रुवक्खंधदव्ववग्गणाए उक्कस्सिया वग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सिया वग्गणा अणंतगुणा । को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एसा चोद्दसमी वग्गणा १४ । आहार तेजा*-भासा-मण-कम्मइयवग्गणाओ चेव एत्थ परूवेदव्वाओ, बंधणिज्जत्तादो, ण सेसाओ, तासिं बंधणिज्जत्ताभावादो, ण सेसाओ। तासिं बंधणिज्जत्ताभावादो ? ण, सेसवग्गणपरूवणाए विणा बंधणिज्जवग्गणाणं॰ परूवणोवायाभावादो बदिरेगावगमणेण विणा णिच्छिदण्णयपच्चयपवुत्तीए अभावादो वा ।

ध्रुवक्खंधदव्ववग्गणाणमुवरि सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा णाम । ८९ ।

अंतरेण सह णिरंतरं गच्छदि त्ति सांतरणिरंतरदव्ववग्गणासण्णा एदिस्से अत्थाणुगया। संपहि उक्कस्सध्रुवक्खंधवग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते जहण्णिया सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा होदि। तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाए उक्कस्सवग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सवग्गणा

यह ध्रुवस्कन्ध पदका निर्देश अन्तदीपक है । इससे पिछली सब वर्गणायें ध्रुव ही हैं अर्थात् अन्तरसे रहित हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । यहांसे लेकर आगे कही जानेवाली सब वर्गणाओंमें अग्रहणपनेकी निरन्तर अनुवृत्ति करनी चाहिए ।

उत्कृष्ट कार्मण वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती है । अनन्तर एक एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपने जघन्यसे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यह चौदहवीं वर्गणा है । १४ ।

शंका–यहाँ पर आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणा ही कहनी चाहियें, क्योंकि, वे बन्धनीय हैं । शेष वर्गणायें नहीं कहनी चाहियें, क्योंकि, वे बन्धनीय नहीं हैं ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, शेष वर्गणाओंका कथन किये बिना बन्धनीय वर्गणाओंके कथन करनेका कोई मार्ग नहीं है । अथवा व्यतिरेकका ज्ञान हुये बिना निश्चित अन्वयके ज्ञानमें प्रवृत्ति नहीं हो सकती, इसलिये यहाँ बन्धनीय व अबन्धनीय सब वर्गणाओंका निर्देश किया है ।

ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सान्तरनिरन्तर द्रव्यवर्गणा है ॥ ८९ ॥

जो वर्गणा अन्तरके साथ निरन्तर जाती है उसकी सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणा संज्ञा है । यह सार्थक संज्ञा है । उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणा होती है । आगे एक एक अंकके अधिक क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर सान्तर-निरन्तर द्रव्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे

---

* ता० अ० प्रत्योः 'तेज-' इति पाठः । ॰ प्रतिषु 'वि एगबंधणिज्जवग्गणाणं' इति पाठः ।

अणंतगुणा । को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एसा पण्णारसमी वग्गणा १५। एसा वि अगहणवग्गणा चेव, आहार-तेजा-भासा-मण-कम्माणमजोगत्तादो ।

सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाणमुवरि ध्रुवसुण्णवग्गणा णाम ॥ ९० ॥

अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु एदेण सरूवेण परमाणुपोग्गलसंचयाभावादो ध्रुवसुण्णदव्ववग्गणा त्ति अत्थाणुगया सण्णा । संपहि उक्कस्सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाए उवरि परमाणुत्तरो परमाणुपोग्गलक्खंधो तिसु वि कालेसु णत्थि । दुपदेसुत्तरो वि णत्थि । एवं तिपदेसुत्तरादिकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण पढम-ध्रुवसुण्णवग्गणाए उक्कस्सवग्गणा होदि । सगजहण्णवग्गणादो सगुक्कस्सिया वग्गणा अणंतगुणा । को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एसा सोलसमी वग्गणा १६ सव्वकालं सुण्णभावेण* अवट्ठिदा ।

ध्रुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा णाम ।९१।

एक्कस्स जीवस्स एक्कम्हि देहे उवचिदकम्म णोकम्मक्खंधो पत्तेयसरीरदव्व-वग्गणा णाम । संपहि उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्व-जहण्णिया पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा होदि । एसा जहण्णिया पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा कस्स होदि ? जो जीवो सुहुमणिगोदअपज्जत्तएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण

अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यह पन्द्रहवीं वर्गणा है । १५ । यह भी अग्रहणवर्गणा ही है; क्योंकि, यह आहार, तैजस, भाषा, मन और कर्मके अयोग्य है ।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यवर्गणा है ॥ ९० ॥

अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें इस रूपसे परमाणु पुद्गलोंका संचय नहीं होता, इसलिये इसकी ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा यह सार्थक संज्ञा है। उत्कृष्ट सान्तरनिरन्तर द्रव्यवर्गणाके ऊपर एक परमाणु अधिक परमाणुपुद्गलस्कन्ध तीनों ही कालोंमें नहीं होता, दो प्रदेश अधिक भी नहीं होता, इस प्रकार तीन प्रदेश अधिक आदिके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर प्रथम ध्रुवशून्यवर्गणासम्बन्धी उत्कृष्ट वर्गणा होती है । यह अपनी जघन्य वर्गणासे अपनी उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यह सोलहवीं वर्गणा है । १६ । जो सर्वदा शून्यरूपसे अवस्थित है ।

ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा है ॥ ९१ ॥

एक एक जीवके एक एक शरीरमें उपचित हुए कर्म और नोकर्मस्कन्धोंकी प्रत्येक-शरीर द्रव्यवर्गणा संज्ञा है। अब उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है ।

शंका– यह जघन्य प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा किसके होती है ?

समाधान– जो जीव सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंमें पल्यका असंख्यातवां भाग कम कर्मस्थिति

---

* अ. आ. प्रत्योः '–कालसुण्णभावेण ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

ऊणियं कम्मट्ठिदिं खविद॰कम्मंसियलक्खणेण अच्छिदो। पुणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि संजमासंजमकंडयाणि तत्तो विसेसाहियाणि सम्मत्त--अणंताणुबंधिविसंजोयणकंडयाणि अट्ठसंजमकंडयाणि चदुक्खुत्तो कसाय-उवसामणं च कादूण पुणो अपच्छिमे भवग्गहणे पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो। तदो गब्भणिक्खमणादिअट्ठवस्संतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण* सजोगिजिणो जादो। तदो देसूणपुव्वकोडिं सव्वमोरालिय-तेजइयसरीराणं अधट्ठिदिगलणाए णिज्जरं करिय कम्मइयसरीरस्स गुणसेढिणिज्जरं कादूण चरिमसमयभवसिद्धियो जादो। एवंविहलक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए सव्वजहण्णिया पत्तेयसरीरदव्वगणा होदि; एदस्स देहे णिगोदजीवाणमभावादो।

संपहि एदिस्से वग्गणाए माहप्पजाणावणट्ठं ट्ठाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा– ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरपरमाणूणं तिण्णि पुंजे उवरि दुविय तेसिं हेट्ठा तेसिं चेव विस्ससोवचयपुंजे च दुविय पुणो एदेसिं छण्णं जहण्णपुंजाणमुवरि परमाणुवड्ढावणविहाणं वुच्चदे- खविदकम्मंसियलक्खणेणागदस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स ओरालियसरीरविस्ससोवचयपुंजम्मि एगविस्ससोवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे तमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो तत्थेव॰ दोसु परमाणुसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्त॰ट्ठाणं होदि। तिसु* परमाणुसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। चदुसु विस्ससोवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु पंचममपुण-

कालतक क्षपित कर्मांशिकरूपसे रहा। पुनः जिसने पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण संयमासंयमकाण्डक, इनसे कुछ अधिक सम्यक्त्वकाण्डक तथा अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनाकाण्डक तथा आठ संयमकाण्डक करते हुए चारबार कषायकी उपशामना की। पुनः अन्तिम भवको ग्रहण करते हुए पूर्वकोटिप्रमाण आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ। अनन्तर गर्भनिष्क्रमण कालसे लेकर आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्तका होनेपर सम्यक्त्व और संयमको एकसाथ प्राप्त करके सयोगी जिन हो गया। अनन्तर कुछ कम पूर्वकोटि कालतक औदारिक और तैजसशरीरकी अधःस्थितिगलनाके द्वारा पूरी निर्जरा करके तथा कार्मणशरीरकी गुणश्रेणिनिर्जरा करके अन्तिम समयवर्ती भव्य हो गया। इस प्रकार आकर जो अयोगीकेवलीके अन्तिम समयमें स्थित है उसके सबसे जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है, क्योंकि, इसके शरीरमें निगोद जीवोंका अभाव है।

अब इस वर्गणाके माहात्म्यका ज्ञान करानेके लिए स्थानप्ररूपणा करते हैं। यथा– औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके परमाणुओंके तीन पुञ्ज ऊपर स्थापित करके और उनके पहले ही विस्रसोपचयोंके पुञ्ज स्थापित करके फिर इन जघन्य छह पुञ्जोंके ऊपर परमाणुओंके बढानेकी विधि कहते हैं। क्षपितकर्मांशिकविधिसे आकर जो अन्तिम समयवर्ती भव्य हुआ है उसके औदारिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक विस्रसोपचय परमाणुके बढनेपर वह अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः उसीमें दो परमाणुओंके बढनेपर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन परमाणुओंके बढनेपर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है। चार विस्रसोपचय परमाणु

॰ अ. प्रतौ 'कम्मट्ठिदिं (बधिय-) खविद– इति पाठः।' * ता. प्रतौ '-जुगवं घेत्तूण' इति स्थाने 'घेत्तूण जुगवं' इति पाठः। ॰ ता. प्रतौ. 'तत्थ' इति पाठः। ॰ अ. प्रतौ 'तदियपुणरुत्त' इति पाठः। * आ. प्रतौ 'तमण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु' इति पाठः।

रुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगुत्तरपरमाणुवड्ढीए वड्ढावेदव्वं जाव ओरालियसरीरविस्स-सोवचयपुंजम्मि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति। एवं वड्ढाविदे ओरालिय-सरीरविस्ससोवचयपुंजम्मि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताणि अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि भवंति। एसा ट्ठाणपरूवणा संभवं पडुच्च कीरदे। को संभवो णाम? इंदो मेरुं पल्लट्टेदुं समत्थो त्ति एसो संभवो णाम। वत्तिसरूवेण एत्तिएसु ट्ठाणेसु समुप्पण्णेसु को दोसो होदि? ण, सव्वजीवरासीदो सिद्धाणमणंतगुणत्तप्पसंगादो। ण चुप्पण्णट्ठाणमेत्ता सिद्धा अत्थि; अदीवकालस्स असंखेज्जदिभागाणं सिद्धाणं ट्ठाणमेत्तुप्पमाणत्तविरोहादो।

पुणो अण्णे जीवे खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सव्वजहण्णपत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि विस्ससोवचएण सह एगपरमाणुणा ओरालियसरीरमब्भहियं कादूणच्छिदे एदं पि अपुणरुत्तट्ठाणं होदि। कुदो? परमाणुत्तरकमेण पुव्वं वड्ढाविदओरालियसरीरविस्स-सोवचयपुंजेण सह संपहि अहियएगोरालियसरीरपरमाणुदंसणादो। पुव्वुत्तोरालियसरीर-सव्वजहण्णपरमाणुपुंजादो संपहियओरालियसरीरपरमाणुपुंजो परमाणुत्तरो होदि। पुणो पुव्विल्लक्खवगं मोत्तूण संपहियखवगं घेत्तूण एदस्स ओरालियसरीरविस्स-सोवचयपुंजम्मि परमाणुत्तर-दुपरमाणुत्तरादिकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तेसु

पुद्गलोंके बढनेपर पाँचवां अपुनरुक्त स्थान होता है। इसप्रकार औदारिकशरीरके विस्रसोपचय-पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होनेतक उत्तरोत्तर एक एक परमाणुकी वृद्धि करनी चाहिए। इस प्रकार वृद्धि करनेपर औदारिकशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं। यह स्थानप्ररूपणा सम्भव सत्यकी अपेक्षा की है।

शंका-- सम्भवसत्य किसे कहते है?

समाधान-- 'इन्द्र मेरुको पलटनेमें समर्थ है।' इसे सम्भव कहते हैं।

शंका-- व्यक्तरूपसे इतने स्थानोंके उत्पन्न होनेपर क्या दोष उत्पन्न होता है?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, ऐसा होनेपर सब जीवोंसे सिद्ध अनन्तगुणे प्राप्त होते हैं। परन्तु यहाँ जितने स्थान उत्पन्न किये गये हैं उतने सिद्ध हैं नहीं, क्योंकि, सिद्ध अतीत कालके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं, इसलिए उन्हें उक्तस्थानप्रमाण माननेमें विरोध आता है।

पुनः क्षपित कर्मांशिकविधिसे आकर सबसे जघन्य प्रत्येकशरीर वर्गणाके ऊपर विस्रसोपचयसहित एक परमाणुसे औदारिकशरीरको अधिक करके अन्य एक जीवके स्थित होनेपर यह भी अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, उत्तरोत्तर एक परमाणुके क्रमसे पहले बढाए हुए औदारिक-शरीर विस्रसोपचय पुंजके साथ इस समय औदारिकशरीरका एक परमाणु अधिक देखा जाता है। पूर्वोक्त औदारिकशरीरके सबसे जघन्य परमाणुपुंजकी अपेक्षा साम्प्रतिक औदारिकशरीर परमाणु-पुंज एक परमाणु अधिक है। पुनः पूर्वोक्त क्षपकको छोडकर और साम्प्रतिक क्षपकको ग्रहणकर इसके औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक आदिके क्रमसे

ता. प्रतौ 'ट्ठाणमेव (त्त)-' अ प्रतौ 'ट्ठाणभेव-' इति पाठः। ता. प्रतौ 'अण्णो जीवो' इति पाठः। आ. प्रतौ '-जहण्णपुंजादो' इति पाठः। ता. आ. प्रत्योः '-पुंजम्मि परमाणुत्तरादि-' इति पाठः।

विस्ससोवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लब्भंति ।

तदो अण्णे जीवे खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सव्वजहण्णेण ओरालियसरीरपुंजं दुपरमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्ससोवचयपुंजं पि दोण्णं परमाणूणं विस्सासुवचयपुंजेण अहियं कादूणच्छिदे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । कारणं पुव्वं व जाणिदूण वत्तव्वं । संपहि उप्पण्णट्ठाणस्स ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुपोग्गले* वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं दो-तिण्णि-आदि जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तओरालियविस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अणंताणि अपुणरुत्तट्ठाणाणि लब्भंति ।

तदो अण्णे जीवे खविदकम्मंसियसव्वजहण्णोरालियसरीरं तिपरमाणुत्तरं कादूण सव्वजहण्णोरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजं० तिण्णं परमाणूणं विस्ससोवचएहि अहियं कादूणच्छिदे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो एगवारेण वड्ढिदूणागदं संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं । एवमणेण०० विहाणेण ओरालियसरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जावप्पप्पणो तप्पाओग्गउक्कस्सदव्वपमाणं पत्ता त्ति । णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणि सव्वजहण्णाणि चेव । एदेसिं चदुण्णं वड्ढीए विणा सविस्ससोवचयओरालियसरीरस्सेव कथं वड्ढी होदि ? ण, तज्जहण्णाविरोहिउक्कस्सवड्ढीए एत्थ गहणादो ।

सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे ही अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं ।

पुनः क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर सबसे जघन्य औदारिकशरीर पुंजको दो परमाणु अधिक करके तथा उसीके विस्रसोपचय पुंजको भी विस्रसोपचय पुंजकी अपेक्षा दो परमाणु अधिक करके अन्य जीवके स्थित होनेपर अनन्तर पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । कारण पहलेके समान जान कर कहना चाहिए । अब इस समय उत्पन्न हुए स्थानके औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणु पुद्गलके बढ़नेपर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार दो, तीनसे लेकर सब जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिक विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़नेपर अनन्त अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं ।

अनन्तर क्षपित कर्मांशिकरूपसे प्राप्त सबसे जघन्य औदारिकशरीर पुंजको तीन परमाणु अधिक करके तथा सबसे जघन्य विस्रसोपचय पुंजमें विस्रसोपचयके तीन परमाणु अधिक करके स्थित हुए अन्य जीवके अनन्तर पिछले स्थानसे एकबार वृद्धि हो कर प्राप्त हुआ साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । इस प्रकार इस विधिसे अपने-अपने तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट द्रव्यके प्रमाणके प्राप्त होने तक औदारिकशरीरके दो पुंज बढाने चाहिये । इतनी विशेषता है कि इन सब स्थानोंमें तैजस और कार्मणशरीर सबसे जघन्य रहते हैं ।

शंका-इन चारों (तैजस और कार्मणशरीर तथा उनके विस्रसोपचय) की वृद्धि हुए बिना अपने विस्रसोपचय सहित औदारिकशरीरकी ही वृद्धि कैसे होती है ?

---

* ता० प्रतौ ' एगपरमाणुत्तरपोग्गले ' इति पाठः । ० अ० प्रतौ ' पुंजम्मि ' इति पाठः ।
०० ता० प्रतौ ' णे (ए) वमणेण ' अ० आ० प्रत्योः ' णयमणेण ' इति पाठः ।

तदो अण्णेण विस्सोवचयसहिदओरालियसरीरमुक्कस्सं कादूण पुणो तेजइयसरीरसव्वजहण्णविस्ससुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुपोग्गले वड्ढाविदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तदो अण्णेण जीवेण तेजइयसरीरविस्ससुवचयपुंजे दुपरमाणुत्तरे कदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । सविस्ससुवचयमोरालियसरीरं तप्पाओग्गुक्कस्सतेजइयसरीरपरमाणुपुंजो जहण्णो । सविस्सासुवचयं कम्मइयसरीरं पि एत्थ जहण्णं चेव ।

पुणो अण्णे जीवे तेजइयसरीरविस्ससुवचयपुंजं तिपरमाणुत्तरं कादूणच्छिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं परमाणुत्तराविकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदो अण्णम्हि* जीवे खविदकम्मंसिये तथा ओघुक्कस्सोकयविस्ससुवचयमोरालियसरीरे विस्ससुवचएहि सह जहण्णीकदकम्मइयसरीरे सव्वजहण्णतेजइयसरीरं परमाणुत्तरं काऊण तस्सेव विस्ससुवचयपुंजं एगपरमाणुविस्ससुवचएहि अब्भहियं कादूणच्छिदे अणंतरट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । कारणं जाणिदूण वत्तव्वं । एवं वड्ढावेदव्वं जाव तेजइयसरीरबेपुंजा तप्पाओग्गुक्कस्सा जादा त्ति । किं तप्पाओग्गुक्कस्सत्तं? जोगवड्ढीए विणा ओकड्डुक्कड्डणवसेण जत्तियाणं परमाणूणं सविस्सासु-

---

समाधान-नहीं, क्योंकि इन चारोंके जघन्य रहते हुए उनकी अविरोधी उत्कृष्ट वृद्धि ही यहां ग्रहण की गई है ।

पुनः अन्य क्षपित कर्मांशिक जीवके विस्रसोपचय सहित औदारिकशरीरको उत्कृष्ट करके अनन्तर तैजसशरीरके सबसे जघन्य विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणु पुद्गलके बढाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । अनन्तर अन्य जीवके द्वारा तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें दो परमाणु अधिक करने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । यहाँ पर विस्रसोपचय सहित औदारिक शरीर तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट है । तैजसशरीर परमाणु पुंज जघन्य है और विस्रसोपचयसहित कार्मण शरीर भी यहाँ पर जघन्य है ।

पुनः अन्य जीवके तैजस शरीरके विस्रसोपचय परमाणु पुंजको तीन परमाणु अधिक करके स्थित होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार परमाणु अधिक आदिके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचयरूप परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अनन्तर जिसने विस्रसोपचयसहित औदारिकशरीरको ओघ उत्कृष्ट किया है और विस्रसोपचयसहित कार्मणशरीरको जघन्य किया है तथा तैजसशरीरको एक परमाणु अधिक करके व उसीके विस्रसोपचयपुंजको विस्रसोपचयके एक परमाणुसे अधिक करके जो क्षपित कर्मांशिक अन्य जीव स्थित है उसके अनन्तर स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है। कारणका जानकर कथन करना चाहिये । इस प्रकार तैजसशरीरके दो पुंज तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट होने तक बढाने चाहिये ।

शंका–यहाँ तत्प्रायोग्य उत्कृष्टसे क्या तात्पर्य है ?

समाधान–योगवृद्धिके बिना उत्कर्षण और अपकर्षणके द्वारा विस्रसोपचयसहित जितने

---

* ता० प्रतौ ' अण्णेहि ' अ० आ० प्रत्योः ' अण्णंहि ' इति पाठः ।

वचयाणं वड्ढी संभवदि तत्तियमेत्तपरमाणूहि अब्भहियत्तं । जोगादो वड्ढी किं ण घेप्पदे? ण, तिण्णं सरीराणमक्कमेण वुड्ढिप्पसंगादो ।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसिओ विस्ससुवचएहि सह ओरालिय-तेजासरीराणि तप्पाओग्गुक्कस्साणि काढूण कम्मइयसरीरविस्ससुवचया परमाणुत्तरकमेण वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो पुव्वं व खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए अच्छिदो । ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि ।

पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसिओ विस्ससुवचयेहि सह तप्पाओग्गुक्कस्सीकयओरालिय-तेजासरीरो* कम्मइयसरीरं पडि खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरविस्ससुवचयजहण्णपुंजं दुपरमाणुत्तरं काढूण अच्छिदो । ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं कम्मइयसरीरविस्ससोवचया परमाणु*त्तरकमेण वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति ।

तदो अण्णो जीवो पुव्वं व खविदकम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरं परमाणुत्तरं काढूण कम्मइयसरीरविस्ससुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपर-

---

परमाणुओंकी वृद्धि सम्भव हो मात्र उतने परमाणु अधिक करना यही यहाँ तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट पदसे तात्पर्य है ।

शंका–योगसे परमाणुओंकी वृद्धि क्यों नहीं ली गई है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, योगसे परमाणुओंकी वृद्धि ग्रहण करने पर तीनों शरीरोंकी युगपत् वृद्धि प्राप्त होती है ।

पुनः क्षपित कर्मांशिक अन्य एक जीव लीजिये जो विस्रसोपचय सहित औदारिक और तैजसशरीरको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट करके कार्मणशरीरके विस्रसोपचयमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक एक-एक परमाणु बढाता है । तब पहलेके समान क्षपित कर्मांशिक इस अन्य जीवके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है ।

पुनः अन्य एक क्षपित कर्मांशिक जीव लीजिये जिसने अपने विस्रसोपचयसहित औदारिक और तैजसशरीरको तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट किया है तथा जो कार्मणशरीरके प्रति क्षपित कर्मांशिक है उसके कार्मणशरीरके विस्रसोपचय जघन्य पुंजमें दो परमाणु अधिक करके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें स्थित होने पर उस समय अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक कार्मणशरीरके विस्रसोपचयको एक एक परमाणु द्वारा बढाना चाहिये ।

पुनः क्षपित कर्मांशिक एक अन्य जीव लीजिये जो अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें कार्मणशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुंजको सब

---

* अ. आ. प्रत्योः ' सरीरा ' इति पाठः । * ता. प्रतौ. ' चयपरमाणु ' इति पाठः ।

माणूहि वड्ढाविय ट्ठिदो✤ । ताधे पुव्विल्लट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । पुणो पुव्विल्लक्खवगं मोत्तूण संपहियक्खवगस्स कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजे एग-परमाणुणा वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपरमाणुपो-गलेसु कम्मइयसरीरविस्सासुवचयपुंजेहि वड्ढिदेसु तदो अण्णो जीवो पुव्वं व क्खविद-कम्मंसिओ अजोगिचरिमसमए कम्मइयसरीरं पुव्वं व परमाणुत्तरं काऊण अच्छिदो । ताधे अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । एवं वड्ढावेदव्वं जाव जोगेण विणा ओकड्डुक्कड्डणाहि✤ चेव जायमाणवड्ढीए उक्कस्सवड्ढि त्ति ।

पुणो एदेहि छहि दव्वेहि जोगेणेगवारं छसु वि दव्वेसु वड्ढिददव्वमेत्तं वड्ढि-दूण ट्ठिदो सरिसो । एवमसंखेज्जवारं वड्ढावेदव्वं जाव अजोगिचरिमसमयदव्वं✤ सव्वुक्कस्सं जादं◆ त्ति । तत्थ चरिमवियप्पं भणिस्सामो । तं जहा--

गुणिदकम्मंसियो सत्तमाए पुढवीए तेजा-कम्मइयसरीराणि उक्कस्साणि कादूण पुणो कालं करिय दो-तिण्णिभवग्गहणाणि तिरिक्खेसुप्पज्जिय पुणो पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो । गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि✤ सजोगिजिणो होदूण देसूण-पुव्वकोडिं संजमगुणसेडिणिज्जरं काऊण अजोगिचरिमसमए ट्ठिदस्स पत्तेयसरीरवग्गणा

जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंके द्वारा बढाकर स्थित है उसके सब पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है ।

पुनः पूर्वोक्त क्षपकको छोडकर साम्प्रतिक क्षपकके कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें एक परमाणुकी वृद्धि करने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुंजमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुपुद्गलोंके बढाने पर उस समय पहलेके समान क्षपितकर्मांशिक जो अन्य जीव अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें कार्मणशरीरको पहलेके समान एक परमाणु अधिक करके स्थित है उसके तब अनन्तर पिछले स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । इस प्रकार योगके बिना अपकर्षण-उत्कर्षणके द्वारा ही जो वृद्धि होती है उससे उत्कृष्ट वृद्धिके होने तक वृद्धि करनी चाहिये ।

पुनः इन छह द्रव्योंके साथ, योगके द्वारा एक बार छहों द्रव्योंमें बढाये हुये द्रव्यके बराबर वृद्धि करके स्थित हुआ जीव समान है । इस प्रकार अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयके द्रव्यके सर्वोत्कृष्ट होने तक असंख्यात बार वृद्धि करनी चाहिये । उसमें अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं । यथा--

कोई एक गुणित कर्मांशिक जीव सातवीं पृथिवीमें तैजस और कार्मण शरीरको उत्कृष्ट करके पुनः मरकर दो-तीन भवतक तिर्यंचोंमें उत्पन्न होकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । पुनः गर्भसे लेकर अन्तर्मुहूर्त अधिक आठ वर्षका होनेके बाद सयोगी जिन होकर कुछ कम पूर्वकोटि काल तक संयम गुणश्रेणि निर्जरा करके अयोगी गुणस्थानके अन्तिम समयमें

✤ ता. प्रतौ (वड्ढावि) वड्ढिदो ' इति पाठः । ✤ ता. प्रतौ '-णादि ' इति पाठः । ✤ ता. प्रतौ '-दव्वे ' आ. प्रतौ '-दव्व' इति पाठः । ◆ ता. अ. आ प्रतिषु ' जादे ' इति पाठः । ✤ ता. प्रतौ ' याण (मु-) वरि ' अ. आ. प्रत्योः ' याणवरि ' इति पाठः ।

पुव्वुत्तपत्तेयसरीर*वग्गणाए सह सरिसो होदि । संपहि एत्थ वड्ढी णत्थि; पत्तस-ब्बुक्कस्सभावादो ।

संपहि अजोगिदुचरिमचरिमसमए लब्भिस्सामो । तं जहा– गुणिदकम्मंसिओ सत्तमाए पुढवीए तेजा-कम्मइयसरीरवग्गणमुक्कस्सं☼ करेमाणो दुचरिमगुणसेडिद-व्वेण♣ कम्मइय-तेजोरालियसरीराणं दुचरिमगोपुच्छाहि य ऊणमुक्कस्सपत्तेयसरीर-वग्गणं कादूण अजोगिदुचरिमसमए अच्छिदस्स चरिमसमयवग्गणाए सह दुचरिमस-मयवग्गणा सरिसी होदि ।

पुणो चरिमसमय अजोगिवग्गणं मोत्तूण दुचरिमसमयअजोगिखवगपत्तेयसरीरवग्गणा पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणपमाणं पत्ता त्ति । एवं तिचरिम-चदुचरिमादिसमएसु ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पुध पुध विस्ससुवचय-परमाणू च वड्ढाविय ओदारेदव्वं जाव सजोगिपढमसमओ⊙ त्ति । संपहि एत्तो हेट्ठा ओदारेदुं ण सक्कदे; खीणकसायचरिमसमए बादरणिगोदवग्गणाए उवलंभादो । तेण सत्तमाए पुढवीए चरिमसमयणेरइयदव्वमस्सिदूण वड्ढिं भणिस्सामो । तं जहा–– गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सत्तमाए पुढवीए णेरइयचरिमसमए✿ वट्टमाणस्स तेजा-कम्मइयसरीरगंदचत्तारिपुंजेहिंतो पढमसमयसजोगिस्स तेजा-कम्मइयसरीराणं चत्तारि पुंजा विसेसहीणा।पढमसमयसजोगिस्सओरालिय♠सरीरपरमाणुपोग्गलपुंजादो णेरइय

स्थित हुआ । उसके प्रत्येक शरीरकी वर्गणा पूर्वोक्त प्रत्येकशरीरकी वर्गणाके समान होती है। अब यहाँ पर वृद्धि नहीं है; क्योंकि, इसने सर्वोत्कृष्टपनेको प्राप्त कर लिया है ।

अब अयोगीके द्विचरम समयका आश्रय करके कथन करते हैं । यथा–, जिस गुणित-कर्मांशिक जीवने सातवीं पृथिवीमें तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी वर्गणाको उत्कृष्ट किया है और जो द्विचरम गुणश्रेणिद्रव्यसे तथा कार्मण, तैजस, और औदारिकशरीरकी द्विचरम गोपुच्छासे न्यून उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाको करके अयोगीके द्विचरम समयमें स्थित है उसके अन्तिम समयकी वर्गणाके साथ, द्विचरम समयकी वर्गणा समान होती है ।

पुनः अयोगीके अन्तिम समयकी वर्गणाको छोडकर अयोगीके द्विचरम समयकी क्षपक प्रत्येकशरीर वर्गणा अपने उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके प्रमाणको प्राप्त होने तक पूर्वोक्त विधिसे बढानी चाहिये । इस प्रकार त्रिचरम, चतुःचरम आदि समयोंमें औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर तथा उनके पृथक्-पृथक् विस्रसोपचय परमाणु बढाकर उतारते हुये सयोगी गुणस्थानके प्रथम समय तक ले जाना चाहिये । अब इससे पीछे उतार कर ले जाना संभव नहीं है; क्योंकि क्षीणकषायके अन्तिम समयमें बादर निगोद वर्गणा उपलब्ध होती है, इसलिये सातवीं पृथिवीके अन्तिम समयवर्ती नारकीके द्रव्यका आश्रय करके वृद्धिका कथन करते हैं । यथा––

गुणित कर्मांशिक विधिसे आकर सातवीं पृथ्वीमें अन्तिम समयमें विद्यमान नारकीके तैजसशरीर और कार्मणशरीरके चार पुञ्जोंकी अपेक्षा प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके तैजसशरीर और कार्मणशरीरके चार पुञ्ज विशेष हीन होते हैं । प्रथम समयवर्ती सयोगी

* ता० प्रतौ 'पुव्वुत्तसरीर-' इति पाठः । ☼ ता० अ० प्रत्योः '-कम्मइयवग्गणमुक्कस्सं इति पाठः । ♣ अ० प्रतौ '-दव्वेणूग' इति पाठः । ⊙ ता० प्रतौ 'सजोगिचरिमपढम-' इति पाठः । ✿ आ० प्रतौ 'तेण सत्तमाए पुढवीए णेरइयचरिम-, इति पाठः । ♠ ता० प्रतौ '-सजोगिस्स तेजा-कम्मइय-ओरालिय-, इति पाठः ।

चरिमसमए वेउव्वियपरमाणुपोग्गलपुंजो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो। तं कथं परिच्छिज्जदि त्ति वुत्ते बाहिरवग्गणाए पंचण्णं सरीराणं वुत्तपदेसप्पाबहुआदो सुत्तादो। तं जहा- सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स पदेसग्गं। वेउव्वियसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो। आहारसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो। तेयासरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि* अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। कम्मइयसरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एदे गुणगारा कुदो सिद्धा? अविरुद्धाइरियवयणादो।

पढमसमयसजोगिस्स ओरालियसरीरविस्सासुवचयपुंजादो चरिमसमयणेरइयस्स वेउव्वियसरीरविस्सासुवचयपुंजो असंखेज्जगुणो। कुदो एदं णव्वदे? बाहिरवग्गणाए पंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्स भणिदप्पाबहुगसुत्तादो। तं जहा- ओरालियसरीरस्स जहण्णस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो। तस्सेव जहण्णयस्स

जिनके औदारिकशरीर परमाणु पुद्गलपुञ्जसे नारकीके अन्तिम समयमें वैक्रियिक परमाणु-पुद्गलपुञ्ज असंख्यातगुणा होता है। गुणकार क्या है? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-- बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके कहे गए प्रदेशअल्पबहुत्व सूत्रसे जाना जाता है। यथा- औदारिकशरीरके प्रदेशाग्र सबसे स्तोक हैं। इनसे वैक्रियिकशरीरके प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इनसे आहारकशरीरके प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। इनसे तैजसशरीरके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है। इनसे कार्मणशरीरके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है।

शंका-- ये गुणकार किस प्रमाणसे सिद्ध हैं?

समाधान-- अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे सिद्ध हैं।

प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके औदारिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जसे अन्तिम समयवर्ती नारकीके वैक्रियिकशरीरका विस्रसोपचय पुञ्ज असंख्यातगुणा है।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-- बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयके कहे गए अल्पबहुत्व सूत्रसे जाना जाता है- यथा- जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे

---

* ता० प्रतौ 'भवसिद्धिएहि' इति पाठः।

उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णो विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । आहारसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तेयासरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे☆ उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । कम्मइयसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । गुणगारो सव्वत्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एदमप्पाबहुगं मुक्कजीवाणं ण जीवसहियाणं;

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज

स्तोक है । उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । आहारकशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । तैजसशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । कार्मणशरीरके जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार सर्वत्र सब जीवोंसे अनन्तगुणा है । यह अल्पबहुत्व जो जीवोंसे रहित होते हैं उनका होता है । जो जीवोंसे युक्त होते है उनका नहीं होता, अन्यथा

☆ ता० आ० प्रत्योः ' तेयासरीरस्स जहण्णयस्स उक्कस्सपदे ' इति पाठः ।

विस्सासुवचयपहाणुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो विस्सासुवचयपहाण♠जहण्णबादर-णिगोदवग्गणाए अणंतगुणहीणत्तप्पसंगादो ।

जीवसहियाणं पुण अप्पाबहुगं उच्चदे-सव्वत्थोवो जहण्णओ ओरालियसरीरस्स विस्सासुवचओ । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । वेउव्वियसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । आहारसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तेजइयसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे सव्वजहण्णो विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुणगारो । अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तगुणगारो।तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कम्मइयसरीरम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुणगारो ? तेजइयगुणगारो । तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । तेण कारणेण पढमसमयसजोगिस्स ओरालियाविछप्पुंजदव्वेण

विस्रसोपचयप्रधान उत्कृष्ट प्रत्येक शरीरवर्गणासे विस्रसोपचयप्रधान जघन्य बादर निगोद वर्गणाके अनन्तगुणे हीन होनेका प्रसंग आता है ।

जो जीवोंसे युक्त हैं उनका अल्पबहुत्व आगे कहते हैं–औदारिकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय सबसे स्तोक है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । वैक्रियिकशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । आहारकशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । तैजसशरीरके सम्पूर्ण प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका अनन्तवां भाग गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । कार्मणशरीरके प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? तैजसशरीर गुणकार है । उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इस कारणसे प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके औदारिक आदि छह पुञ्ज द्रव्यके साथ वैक्रियिक आदि छह पुञ्जका द्रव्य समान है ।

♠ अ० आ० प्रत्योः '–पहाणं' इति पाठः ।

समाणवेउव्वियादिछप्पुंजदव्वं । समत्तपुढविचरिमसमयणेरइयं घेत्तूण पुणो अप्पणो ऊणीकददव्वमेत्थतणछप्पुंजेसु पुध पुध वड्ढावेदव्वं ।

संपहि अण्णेण जीवेण वेउव्वियसरीरविस्सासुवचयपुंजे परमाणुत्तरे कदे सजोगिपढमसमयउक्कस्सदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि। एवमेगेगपरमाणुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू वेउव्वियसरीरविस्ससुवचयपुंजम्मि जाव वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो वेउव्वियसरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचएण अब्भहियं काऊण ट्ठिदो । ताधे पुव्वुप्पण्णट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । कारणं सुगमं । अणेण विहाणेण वेउव्वियसरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्सदव्वपमाणं पत्ता त्ति ।

तदो अण्णो जीवो वेउव्वियसरीरं सगविस्सासोवचएण सह उक्कस्सं करिय पुणो तेजासरीरविस्ससुवचयपुंजं परमाणुत्तरं कादूणच्छिदो । ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं परमाणुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू तेजासरीरविस्ससुवचयपुंजम्मि वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो पुव्वाणिरुद्धतेजासरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्ससोवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससोवचयेण अब्भहियं कादूणच्छिदो । ताधे तं ठाणमणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो परमाणुत्तरं

सातवीं पृथ्वीके अन्तिम समयवर्ती नारकीको ग्रहण करके पुनः अपना अपना कम किया गया द्रव्य यहाँके छह पुञ्जोंमें पृथक्-पृथक् बढाना चाहिए ।

अब अन्य जीवके द्वारा वैक्रियिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करनेपर सयोगी जिनके प्रथम समयके उत्कृष्ट द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार एक एक परमाणु अधिकके क्रमसे वैक्रियिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु होने तक बढाने चाहिए । अनन्तर वैक्रियिकशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा उसीके विस्रसोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित हुए अन्य जीवके उस समय पहले उत्पन्न हुए स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । कारण सुगम है । इस प्रकार उक्त विधिसे अपने उत्कृष्ट द्रव्यके प्रमाणको प्राप्त होने तक वैक्रियिकशरीरके दो पुञ्ज बढाने चाहिए ।

अनन्तर अपने विस्रसोपचयके साथ वैक्रियिकशरीरके द्रव्यको उत्कृष्ट करके पुनः तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुंजको एक परमाणु अधिक करके स्थित हुए एक अन्य जीवके उस समय अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक एक एक परमाणुकी उत्तरोत्तर वृद्धि करते जाना चाहिए । अनन्तर पूर्वमें विवक्षित हुए तैजसशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा उसीके विस्रसोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित हुए जीवके प्राप्त हुआ यह स्थान अनन्तर पिछले स्थानसे एक परमाणु अधिक होता है । इस प्रकार तैजसशरीरके दो पुञ्जोंमें तब तक वृद्धि करते जाना

होदि । एवं ताव तेजासरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जाव उक्कस्सा जादा त्ति ।

संपहि अण्णो णेरइओ✡ वेउव्विय-तेजासरीराणि उक्कस्साणि काऊण पुणो कम्मइयसरीरविस्ससुवचयपुंजं पदेसुत्तरं काऊणच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगेगपदेसुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वेहि✡ जीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू कम्मइयसरीरविस्ससुवचयपुंजम्मि वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो✱ पुव्वणिरुद्धकम्मइयसरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयेण अब्भहियं कादूणच्छिदो । ताधे एदं ट्ठाणमणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो परमाणुत्तरं होदि । पुणो अणेण विहाणेण कम्मइयसरीरदोपुंजा उक्कस्सा कायव्वा जाव गुणिदकम्मंसियणारगचरिमसमयसव्वुक्कस्सदव्वे त्ति । वेउव्वियसरीरविस्ससुवचएहिंतो आहारसरीरस्स विस्ससुवचओ असंखेज्जगुणो । तेण पमत्तसंजदम्मि आहार-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजे घेत्तूण पत्तेयसरीरवग्गणा एगजीवविसया किण्ण परूविदा ? ण, तेजा-कम्मइयसरीराणं चरिमसमयणेरइयं मोत्तूण अण्णत्थ उक्कस्सदव्वाभावादो । जत्थ तेजा-कम्मइयसरीराणि जहण्णाणि होंति तत्थ पत्तेयसरीरवग्गणा सव्वजहण्णा होदि । जत्थ एदेसिमुक्कस्सदव्वाणि लब्भंति तत्थ पत्तेयसरीरवग्गणा उक्कस्सा होदि । ण च मणुस्सेसु पमत्तसंजदेसु पत्तेयसरीरवग्गणा उक्कस्सा होदि;

चाहिए जब तक ये उत्कृष्टपनेको नहीं प्राप्त हो जाते ।

पुनः एक ऐसा नारकी लो जो वैक्रियिकशरीर और तैजसशरीरको उत्कृष्ट करके पुनः कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करके स्थित है । तब अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार एक एक परमाणुकी तब तक वृद्धि करते जाना चाहिए जब तक कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि नहीं हो जाती । अनन्तर एक ऐसा अन्य जीव लो जो पूर्व निरुद्ध कार्मणशरीरमें एक परमाणु अधिक करके पुनः उसीके विस्रसोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित है । तब यह स्थान अनन्तर पिछले स्थानसे एक परमाणु अधिक होता है । पुनः इस विधिसे गुणित कर्मांशिक नारकी जीवके अन्तिम समयमें सर्वोत्कृष्ट द्रव्यके प्राप्त होने तक कार्मणशरीरके दोनों पुञ्जोंको उत्कृष्ट करना चाहिए ।

शंका-- वैक्रियिकशरीरके विस्रसोपचयसे आहारकशरीरका विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है, इसलिए प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें आहारक, तैजस और कार्मणशरीरके छह पुञ्ज ग्रहण करके प्रत्येकशरीर वर्गणा एक जीव सम्बन्धी क्यों नहीं कही ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अन्तिम समयवर्ती नारकीको छोडकर तैजस और कार्मणशरीरका अन्यत्र उत्कृष्ट द्रव्य उपलब्ध नहीं होता । जहां पर तैजस और कार्मणशरीर जघन्य होते हैं वहां पर प्रत्येकशरीरवर्गणा सबसे जघन्य होती है और जहां पर इनके उत्कृष्ट द्रव्य उपलब्ध होते हैं वहां पर प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट होती है । परन्तु प्रमत्तसंयत मनुष्योंके

✡ ता० आ० प्रत्योः ' अण्णोण्णे ठइओ ' इति पाठः । ✡ ता० अ० आ० प्रतिषु ' सव्वएहि ' इति पाठ ✱ अ० आ० प्रत्योः ' जीव ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

गुणसेडिणिज्जराए अधट्ठिदिगलणाए ♠ च गलिदतेजा-कम्मइयदव्वत्तादो । ण ♣ च गलिदतेजा-कम्मइयदव्वेहिंतो आहारसरीरदव्ववग्गणाए बहुतमत्थि; तस्स तदणंतिमभागादो । संपहि एत्थ कम्मट्ठिदिकालसंचिदो अट्ठविहकम्मपदेसकलाओ कम्मइयसरीरं णाम । छावट्ठिसागरोवमसंचिदणोकम्मपदेसकलाओ तेजासरीरं णाम । तेत्तीससागरोवमसंचिद-णोकम्मपदेसकलाओ वेउव्वियसरीरं णाम । खुद्दाभवग्गहणप्पहुडि जाव तिण्णिपलिदोवमसंचिदपदेसकलाओ ओरालियसरीरं णाम । अंतोमुहुत्तसंचिदपदेसकलाओ आहारसरीरं णाम । तेण णेरइयचरिमसमए चेव उक्कस्ससामित्तं दादव्वं ।

प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट नहीं होती; क्योंकि, उनके गुणश्रेणि निर्जराके द्वारा और अधःस्थितिगलनाके द्वारा तैजस और कार्मणशरीरका द्रव्य गलित हो जाता है । यदि कहा जाय कि गलित हुए तैजस और कार्मणशरीरके द्रव्यसे आहारकशरीरकी द्रव्यवर्गणायें बहुत होती हैं सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, यह उनके अनन्तवें भागप्रमाण होता है । अतः प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट नहीं कही ।

यहाँपर कर्मस्थिति कालके भीतर संचित हुए आठ प्रकारका कर्मप्रदेश समुदायकी कार्मणशरीर संज्ञा है । छयासठ सागर कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी तैजसशरीर संज्ञा है । तेतीस सागर कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी वैक्रियिकशरीर संज्ञा है । क्षुल्लकभवग्रहण कालसे लेकर तीन पल्य कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी औदारिकशरीर संज्ञा है और अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी आहारकशरीर संज्ञा है, इसलिए नारकी जीवके अन्तिम समयमें ही उत्कृष्ट स्वामित्व देना चाहिए ।

विशेषार्थ— यहां पर प्रत्येकशरीर द्रव्य वर्गणाका विचार करते हुए वह एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट किस जीवके होती है इस बातका विस्तारसे निरूपण किया गया है । जिन शरीरोंका स्वामी एक ही जीव होता है और उनके आश्रयसे अन्य जीव नहीं उपलब्ध होते उन शरीरोंके समुदायका नाम प्रत्येकशरीर द्रव्य वर्गणा है । आगममें ऐसे आठ प्रकारके जीव बतलाये हैं जिनके शरीरोंके आश्रयसे अन्य जीव नहीं रहते । वे आठ प्रकारके जीव ये हैं– केवली जिन, देव, नारकी, आहारकशरीर, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वायुकायिक । यहां सर्व प्रथम यह देखना है कि इन जीवोंमें जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका स्वामी कौन जीव है और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका स्वामी कौन जीव है । जीव दो प्रकारके होते है– एक क्षपितकर्मांशिक और दूसरे गुणितकर्मांशिक । जो क्षपितकर्मांशिक जीव होते हैं उनके कर्म वर्गणायें उत्तरोत्तर ह्रस्व होती जाती हैं और अयोगीके अंतिम समयमें वे सबसे न्यून होती हैं, इसलिये अयोगी जिनके अन्तिम समयमें प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा सबसे जघन्य होती है । यहां इस वर्गणासे औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर तथा इनके विस्रसोपचय इन छह पुञ्जोंका ग्रहण होता है । गुणित कर्मांशिक जीव वे कहलाते हैं जिनके कर्मवर्गणायें उत्तरोत्तर महापरिणामवाली होती जाती हैं और तेतीस सागरकी आयुवाले नारकी जीवके अन्तिम समयमें वे सबसे उत्कृष्ट होती हैं, इसलिये नारकी जीवके अन्तिम समयमें

♠ ता० आ० प्रत्योः ' अवट्ठिदिगलणाए ' इति पाठः ।

♣ ता० प्रतौ ' च गलिदतेजाकम्मइयदव्वत्तादो । ण ' इति पाठो नोपलभ्यते ।

संपहि एगजीवमस्सिदूण णेरइयचरिमसमए वड्ढी णत्थि; पत्तुक्कस्सभावादो। बादरपुढविकाइयपज्जत्तवेजीवे घेत्तूण लभिस्सामो। तं जहा– गुणिदघोलमाणलक्खणेणागदा* देवादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा अण्णोण्णेण संबद्धसरीरा णारगुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए पादेक्कं कदअद्धद्धसंचया चरिमसमयणेरइयस्स* वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि सह सरिसा। जदि वि वेउव्वियसरीरादो ओरालियसरीरमसंखेज्जगुणहीणं तो वि सरिसत्तं ण विरुज्झदे; तेजा–कम्मइयसरीरेसु वेउव्वियसरीरस्स

प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाके उत्कृष्ट विकल्पोंमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंके समुच्चयरूप औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर तथा इनके विस्रसोपचय इन छह पुञ्जोंका ग्रहण होता है। मध्यमें इस वर्गणाके अनेक विकल्प हैं जिनका निर्देश मूलमें किया ही है। यहां जघन्य वर्गणा, एक परमाणु अधिक जघन्य वर्गणा, दो परमाणु अधिक जघन्य वर्गणा इत्यादि क्रमसे वृद्धि करते हुए उत्कृष्ट वर्गणा लानेकी विधि जिस प्रकार मूलमें बतलाई गई है उस प्रकार उसे जान लेना चाहिए। पहले अन्तिम समयवर्ती अयोगी जिनके ही नाना जीवोंका आलम्बन लेकर जघन्य वर्गणामें परमाणुओंकी वृद्धि की गई है। इसके बाद उपान्त्य समयवर्ती अयोगी जिनका आश्रय करके वृद्धि कही गई है और इस प्रकार पीछे लौटकर प्रथम समयवर्ती सयोगी जिन तक आकर वृद्धिका क्रम दिखलाया गया है। इसके बाद देव और देवोंके बाद नारकी जीवोंको स्वीकार करके प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा अपने उत्कृष्ट विकल्प तक उत्पन्न की गई है। प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके बाद आहारकशरीर, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, और वायुकायिक, जीवोंका ग्रहण इसलिए नहीं किया, क्योंकि, एक जीवकी अपेक्षा इनके जो प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा होती है उसका ग्रहण मध्यम विकल्पोंमें आ जाता है। यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा लाते समय प्रत्येक स्थल पर गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा बतलाया गया है सो यह कथन सम्भव सत्यकी अपेक्षासे किया गया जानना चाहिए; क्योंकि प्रत्येक जीवके औदारिकशरीर आदि जघन्य वर्गणासे अपनी औदारिकशरीर आदि उत्कृष्ट वर्गणा व्यक्तरूपसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंके समुच्चयरूप नहीं होती। कारण कि औदारिकशरीर आदि अपनी जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणाका गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ही बतलाया है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाके स्वामीका विचार किया।

अब एक जीवका अवलम्बन लेकर नारकीके अन्तिम समयमें वृद्धि नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्टपनेको प्राप्त हो गया है अतः बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त दो जीवोंका आलम्बन लेकर प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाको प्राप्त करते हैं। यथा-यहां गुणितघोलमान विधिसे आये हुए ऐसे दो बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव लो जिनके शरीर परस्परमें सम्बद्ध हैं और जिनमेंसे प्रत्येकके प्रत्येकशरीर वर्गणाका संचय नारकीके उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके संचयसे आधा आधा है। अतएव इन दोनों जीवोंके प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका संचय अंतिम समयवर्ती नारकी जीवके वैक्रियिक, तैजस और कार्मणशरीरके संचयके समान होता है। यद्यपि वैक्रियिकशरीरसे औदारिकशरीर असंख्यातगुणा हीन होता है तो भी इन दोनों संचयोंके सदृश होनेमें कोई विरोध नहीं आता; क्योंकि तैजस और कार्मणशरीरोंके रहते हुए वैक्रियिकशरीरके असंख्यातवें भागमात्र औदारिकशरीरका

---

* अ० प्रतौ '–णागद' आ० प्रतौ '–णागदे, इति पाठः।

* अ० आ० प्रत्योः '–णरइय' इति पाठः।

असंखेज्जविभागमेत्तदव्वुक्कलंभादो । संपहि दोसु जीवेसु ट्ठियओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजा पुव्वविहाणेण वड्ढावेयव्वा जाव दोण्णं जीवाणं पाओग्गउक्कस्सदव्वं पत्ता त्ति । पुणो तिण्णिबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा अण्णोण्णसंबद्धसरीरा दोण्णं बादरपुढविपज्जत्त-जीवाणमुक्कस्सदव्वस्स कयतिभागसंचया एदेहि दोहि वि सरिसा होंति। पुणो ते मोत्तूण इमे घेत्तूण पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वा जाव अप्पप्पणो उक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति । पुणो एदेसिं तिण्णं दव्वाणं केसिं दव्वं सरिसं त्ति वुत्ते वुच्चदे । त जहा– चदुण्णं बादरपुढविकाइयजीवाणं ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं बादरपुढविकाइयउक्कस्सदव्वस्स चदुब्भागसंचयाणं एगबंधणबद्धाणं दव्वं सरिसं होदि । एदेसिं पि दव्वं तेणेव कमेण वड्ढावेदव्वं जाव चदुण्णं जीवाणमुक्कस्सदव्वं पत्तं त्ति । एवं पंच-छ सत्तट्ठ-णव-दस-एक्कादि जाव तप्पाओग्गपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरपुढविकाइयपज्जत्त-जीवा त्ति णेदव्वं। पुणो एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि कमेण वड्ढाविय पुणो एगबंधणबद्धबादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवा दव्वसंचयेण एगबंधणबद्धपलिदोवमस्स असंखेज्जविभागमेत्तबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवेहि सरिसा घेत्तव्वा। पुणो एदे घेत्तूण पुव्वविहाणेण एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि परिवाडीए वड्ढाविय पुणो

द्रव्य उपलब्ध होता है। अब इन दोनों जीवोंमें स्थित औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके छह पुञ्जोंको पूर्वोक्त विधिसे तब तक बढाना चाहिए जब तक वे दो जीवोंके योग्य उत्कृष्टपनेको नहीं प्राप्त होते। पुनः बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त तीन ऐसे जीव लो जो परस्परमें शरीरसे संबद्ध हों और जिनमेंसे प्रत्येकका प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा संचय दो बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके उत्कृष्ट संचयके तीसरे भागप्रमाण हो। इसलिए इनका संचय उक्त दो जीवोंके संचयके समान होता है। पुनः उन पूर्वोक्त जीवोंको छोडकर और इनका अवलम्बन लेकर पूर्वोक्त विधिसे अपने उत्कृष्ट प्रमाणके प्राप्त होने तक द्रव्यकी वृद्धि करनी चाहिए। पुनः इन तीनोंका द्रव्य किनके द्रव्यके समान होता है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं। यथा– ऐसे चार बादर पृथिवीकायिक जीव लो जो एक बन्धनबद्ध हैं और जिनमेंसे प्रत्येकको तीन बादर पृथिवीकायिक जीवोंके उत्कृष्ट सचयके चौथे भागप्रमाण द्रव्यका संचय प्राप्त हुआ है, अतएव इन चारोंका संचय उक्त तीनोंके संचयके तुल्य है। इनके भी द्रव्यको उसी क्रमसे बढाना चाहिए जिससे इन चारों जीवोंका द्रव्य उत्कृष्टपनेको प्राप्त हो जाय। इस प्रकार पाँच, छह, सात, आठ, नौ और दससे लेकर तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके होने तक ले जाना चाहिए। पुनः इनके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंको क्रमसे बढाकर पुनः एक बन्धनबद्ध इतने बादर तेजकायिक पर्याप्त जीव लेने चाहिए जो द्रव्यसंचयकी अपेक्षा एक बन्धनबद्ध पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके समान हों। पुनः इनका आश्रय करके पूर्वोक्त विधिसे इनके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंको आनुपूर्वीसे बढाकर पुनः एक जीवको अधिक करते हुए जब तक एक बन्धनबद्ध बादर

ओ ता०प्रतौ '–मेत्तदव्व–' आ०प्रतौ '–मित्ततद्व्व–' इति पाठः।

काऊण णेदव्वं* जाव बादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवा आवलियवग्गादो असंखेज्जगुणमेत्ता कमेण वड्ढाविय एगबंधणबद्धा जादा त्ति । अथवा तप्पाओग्गअसंखेज्जजीवा एगबंधणबद्धा घेत्तव्वा । कुदो ? बादरतेउक्काइयपज्जत्तापज्जत्ताणं देवकद†च्छुपादिसु एगागारे एगबंधणबद्धं पडि विरोहाभावादो । ते कत्थ लब्भंति? वल्लरिदाहे वा देवकदच्छुए वा महावणदाहे वा लब्भंति । पुणो एवेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेसु पत्तेयं वड्ढाविदेसु पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा जहण्णा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइया देव-णेरइया आहारसरीरा पमत्तसंजदा सजोगि-अजोगिकेवलिणो च पत्तेयसरीरा वुच्चंति; एदेसिं णिगोदजीवेहि सह संबंधाभावादो । विग्गहगदीए वट्टमाणा बादर-सुहुमणिगोदजीवा पत्तेयसरीरा ण होंति; णिगोदणाम-कम्मोदयसहगदत्तेण विग्गहगदीए वि एगबंधणबद्धाणंतजीवसमूहत्तादो । जदि विग्गहगदीए वट्टमाणासेस* जीवा पत्तेयसरीरा होंति तो पत्तेयवग्गणाओ अणंताओ होज्ज । ण च एवं, असंखेज्जलोगमेत्ता होंति त्ति अविरुद्धाइरियवयणेण अवगदत्तादो । विग्गहगदीए

तेजस्कायिक पर्याप्त जीव आवलिवर्गसे असंख्यातगुणे नहीं हो जाते तब तक इनकी संख्या और उसी क्रमसे द्रव्यको बढाते हुए ले जाना चाहिए । अथवा एक बन्धनबद्ध तत्प्रायोग्य असंख्यात जीव लेने चाहिए; क्योंकि, देवकृत झाडियोंमें लगी हुई अग्निमें बादर तेजस्कायिक पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके एक स्थानमें एक बन्धनबद्ध होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका–एक बन्धनबद्ध वे जीव कहाँ उपलब्ध होते हैं ?

समाधान– लताओंका दाह होते समय, देवकृत झाडियोंमें या महावनका दाह होते समय एक बन्धनबद्ध उक्त जीव उपलब्ध होते हैं । See 5. 110 118

पुनः इनके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके पृथक् पृथक् बढाने पर प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा उत्कृष्ट होती है ! यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, आहारकशरीरी, प्रमत्तसंयत, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये जीव प्रत्येकशरीरवाले होते हैं, क्योंकि, इनका निगोद जीवोंके साथ सम्बन्ध नहीं होता । विग्रहगतिमें विद्यमान बादर निगोद जीव और सूक्ष्म निगोद जीव प्रत्येकशरीरवाले नहीं होते हैं, क्योंकि, निगोद नामकर्मके उदयके साथ गमन होनेके कारण विग्रहगतिमें भी एक बन्धनबद्ध अनंत जीवोंका समूह पाया जाता है । यदि विग्रहगतिमें वर्तमान अशेष जीव प्रत्येकशरीर होते हैं ऐसा माना जाय तो प्रत्येक वर्गणायें अनन्त हो जावें । परन्तु ऐसा है नहीं; क्योंकि, वे असंख्यात लोक प्रमाण होती हैं ऐसा अविरुद्धभाषी आचार्योंके वचनोंसे See 5. 118

---

* ता० प्रतौ ' काऊण पुणो णेदव्वं ' इति पाठः । † ता० प्रतौ '–वक्काइयपज्जत्ताणं व कद–' इति पाठः । * ता० प्रतौ 'वट्टमाणा सेस–' इति पाठः ।

सरीरणामकम्मोदयाभावादो ण पत्तेयसरीरत्तं ण साहारणसरीरत्तं । तदो ते पत्तेयसरीरबादर-सुहुमणिगोदवग्गणासु ण कत्थ वि पदंति त्ति वुत्ते वुच्चदे– ण एस दोसो; विग्गहगदीए बादर-सुहुमणिगोदणामकम्माणमुदयदंसणेण तत्थ वि बादर-सुहुमणिगोददव्ववग्गणाणमुवलंभादो । एदेहिंतो वदिरित्ता जीवा गहिदसरीरा अगहिदसरीरा वा पत्तेयसरीरवग्गणा होंति । तदो पत्तेयसरीरा असंखेज्जलोगमेत्ता होंति त्ति सिद्धं । ते च एगबंधणबद्धा असंखेज्जलोगमेत्ता होंति । कुदो एदं णव्वदि त्ति वुत्ते ईसिप्पब्भाराए पुढवीए बादरपुढविकाइयजीवा असंखेज्जलोगमेत्ता होदूण सव्वत्थोवा । एक्कम्हि उदगबिंदुम्हि आउकाइया जीवा असंखेज्जगुणा । एक्कम्हि इंगाले तेउक्काइया जीवा असंखेज्जगुणा । एक्कम्हि जलबुब्बुदे वाउक्काइया जीवा असंखेज्जगुणा त्ति अप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे । तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि एगबंधणबद्धेहि उक्कस्सिया एया पत्तेयसरीरवग्गणा होदि त्ति ण घडदे ? ण एस दोसो, ईसिप्पब्भारसिलेग-जलबिंदु-इंगाल-जलबुब्बुदेसु पादेक्कमसंखेज्जलोगमेत्तजीवेसु संतेसु वि तत्थ तेउक्काइयपज्जत्तमेत्ताणं चेव जीवाणमेगबंधणबद्धाणमुवलंभादो । एगबंधणबद्धा एत्तिया चेव

जाना जाता है ।

शंका–– विग्रहगतिमें शरीर नामकर्मका उदय नहीं होता, इसलिए वहां न तो प्रत्येकशरीरपना प्राप्त होता है और न साधारणशरीरपना ही प्राप्त होता है । इसलिये वे प्रत्येकशरीर, बादर और सूक्ष्म निगोद वर्गणाओंमेंसे किन्हींमें भी अन्तर्भूत नहीं होती हैं ?

समाधान–– यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विग्रहगतिमें बादर और सूक्ष्म निगोद नामकर्मोंका उदय दिखाई देता है इसलिए वहां पर भी बादर और सूक्ष्म निगोद द्रव्यवर्गणायें उपलब्ध होती हैं । और इनसे अतिरिक्त जिन्होंने शरीरोंको ग्रहण कर लिया है या नहीं ग्रहण किया है वे सब जीव प्रत्येकशरीर वर्गणावाले होते हैं ।

इसलिए प्रत्येकशरीर वर्गणायें असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं यह सिद्ध होता है ।

शंका–– एक बन्धनबद्ध वे जीव असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं । यदि कहो कि यह बात किस प्रमाणसे जानी जाती है तो इसका समाधान यह है कि ईषत्प्राग्भार पृथिवीमें बादर पृथिवीकायिक जीव असंख्यात लोकप्रमाण होते हुए भी सबसे स्तोक होते हैं । इनसे एक जलबिन्दुमें जलकायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं । इनसे एक अंगारेमें अग्निकायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं । इनसे एक जलके बुलबुलेमें वायुकायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं । इस प्रकार इस अल्पबहुत्व सूत्रसे यह बात जानी जाती है । इसलिए पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण एक बन्धनबद्ध जीवोंके अवलम्बनसे एक उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणा होती है यह बात घटित नहीं होती ?

समाधान–– यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ईषत्प्राग्भार शिलामें, एक जलबिन्दुमें, एक अंगारेमें और जलके एक बुलबुलेमें अलग अलग असंख्यात लोकप्रमाण जीवोंके होने पर भी वहां मात्र तेजस्कायिक पर्याप्त जीव ही एक बन्धनबद्ध उपलब्ध होते हैं ।

[ता० प्रतौ ' (त्ति–) वुत्ते ' इति पाठः] [ता० प्रतौ ' इसिप्पभाराए ' इति पाठः]

होंति अहिया ण होंति त्ति कधं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । ते च तेउक्का-इएसु चेव बहुआ लब्भंति ण अण्णत्थ । तेण वल्लरिदाहादिसु एगिंगालो चेव पहाणीकओ । तत्थ गुणिदकम्मंसिया सुट्टु जदि बहुआ होंति तो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव, अवसेसा सव्वे अगुणिदकम्मंसिया । एसा सत्तारसमी[1] वग्गणा १७ अग्गेज्झा सभेयणत्तादो ।

पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाणमुवरि धुवसुण्णदव्ववग्गणा णाम । ९२ ।

उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए एगरूवे पक्खित्ते विदियधुवसुण्णदव्ववग्गणाए सव्वजहण्णिया धुवसुण्णदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण परिवाडीए सव्व-जीवेहि अणंतगुणमेत्तधुवसुण्णदव्ववग्गणासु गदासु उक्कस्सिया धुवसुण्णदव्ववग्गणा

ग्गंदशक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

शंका– एक बन्धनबद्ध इतने ही जीव उपलब्ध होते हैं अधिक नहीं होते हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान– अविरुद्ध आचार्योंके वचनोंसे जाना जाता है ।

और वे तैजसकायिकोंमें ही बहुत उपलब्ध होते हैं अन्यत्र नहीं उपलब्ध होते, इसलिए लता दाह आदिमें एक अंगारा ही प्रधान किया है । वहां गुणितकर्मांशिक जीव यदि बहुत होते हैं तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं । बाकीके सब गुणितकर्मांशिक नहीं होते।

यह सत्रहवीं वर्गणा है ।

विशेषार्थ– पहले एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा कह आये हैं । यहां एक बन्धनबद्ध नाना जीवोंकी अपेक्षा यह वर्गणा बतलाई गई है । जिनका शरीर पृथक् पृथक् अर्थात् प्रत्येक होकर भी परस्पर जुडा हुआ होता है वे एक बन्धनबद्ध जीव माने गये हैं । ऐसे पृथिवीकायिक जीव पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हो सकते हैं और अग्निकायिक जीव इनसे भी अधिक हो सकते हैं जो एक पिण्डमें बद्धनबद्ध रहते हैं और इससे इन सबको मिलकर एक प्रत्येकवर्गणा बनती है । साधारण शरीरसे इस प्रत्येक शरीरमें बहुत अन्तर होता है । वहां शरीर एक ही होता है किन्तु यहां सबके अलग अलग शरीर होते हैं । मात्र प्रत्येक-शरीर एक दूसरेसे सम्बद्ध रहते हैं और इसीसे इन्हें एक बन्धनबद्ध मानकर इनकी एक वर्गणा मानी गई है । एक तेजस्कायिक जीवके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर तथा इनके विस्रसोपचयोंका जितना उत्कृष्ट संचय हो सकता हो उसे असंख्यातगुणित आवलिवर्गसे गुणित करनेपर या तत्प्रायोग्य असंख्यातसे गुणित करनेपर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका प्रमाण आता है । यहां अन्तिम समयवर्ती नारकीके उत्कृष्ट संचयसे आगे की प्रक्रिया द्वारा इसी वर्ग-णाके उत्पन्न करनेकी विधि कही गई है । यह नाना प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणारूप होकर भी एक बन्धनबद्ध होनेसे एक प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा मानी गई है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्य वर्गणा है ॥ ९२ ॥

उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणामें एक अकके मिलाने पर दूसरी ध्रुवशून्य वर्गणा सम्बन्धी सबसे जघन्य ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणा होती है । अनन्तर एक एक अधिकके क्रमसे आनुपूर्वीसे सब जीवोंसे अनन्तगुणी ध्रुवशून्य वर्गणाओंके जाने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणा उत्पन्न होती है ।

---

[1] अ० आ० प्रत्योः 'सत्तरसमी' इति पाठः ।

उप्पज्जदि । सा च जहण्णादो अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागो । तं जहा– सव्वजीवरासिं असंखेज्जलोगमेत्तसरीरेहि ओवट्टिय आवलियाए असंखेज्जदिभागेण असंखेज्जलोगेहि एगजीवोरालिय-तेजा-कम्मइयदव्वेण च गुणिय रूवे अवणिदे उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणा होदि। पुणो दिवड्ढगुणहाणिपडिभागेण पत्तेयसरीरवग्गणाए रूवाहियाए अवहिरिदे सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि त्ति पुव्वभणिदगुणगारो चेव होदि त्ति घेत्तव्वं । एसा अट्ठारसमी वग्गणा १८ एयंतवाइदिट्ठिस्स व्व[✡] सव्वकालं सुण्णभावेणवट्ठिदा ।

धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि बादरणिगोददव्ववग्गणा णाम ।९३।

उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया बादरणिगोददव्ववग्गणा होदि । सा कत्थ दिस्सदि ? खीणकसायचरिमसमए। किंविहे खीणकसाए होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे– जो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो । तदो गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण पुणो कम्मस्स उक्कस्सगुणसेडिणिज्जरं देसूणपुव्वकोडिं कादूण अंतोमुहुत्तावसेसे सिज्झदव्वए त्ति खवगसेढिमारूढो । तदो खवगसेढिम्म सव्वुक्कस्स–

वह जघन्य वर्गणासे अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है । यथा– सब जीवराशिको असंख्यात लोकप्रमाण शरीरोंसे भाजित कर पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे, असंख्यात लोकोंसे और एक जीवके औदारिक, तैजस व कार्मणशरीरके द्रव्यसे गुणित कर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणा होती है। पुनः इसे एक अधिक उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणासे भाजित करने पर सब जीवराशिका असंख्यातवां भाग आता है । इसलिए पहले कहा गया गुणकार ही होता है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । यह अठारवीं वर्गणा है १८ । एकान्तवादी दृष्टिके समान यह सदा काल शून्यरूपसे अवस्थित है ।

See 5, 45, 460

ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर बादरनिगोद द्रव्यवर्गणा है ॥ ९३ ॥

उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर सबसे जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणा होती है ।

औदारिक शरीर की जघन्य अवगाहना 5, 98, 42

शंका– वह कहां दिखाई देती है ?

समाधान– क्षीणकषायके अन्तिम समयमें ।

किस प्रकारके क्षीणकषायमें होती है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं– जो जीव क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । अनन्तर गर्भसे लेकर आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्तका होने पर सम्यक्त्व और संयमको युगपत् ग्रहण करके पुनः कुछ कम पूर्वकोटि काल तक कर्मकी उत्कृष्ट गुणश्रेणि निर्जरा करके सिद्ध होनेके लिए अन्तर्मुहूर्त काल अवशेष रहने पर क्षपकश्रेणि पर आरोहण किया । अनन्तर क्षपकश्रेणिमें सबसे उत्कृष्ट विशुद्धिके

✡ अ० का० प्रत्योः '–सेव्व ' इति पाठः]

विसोहीए कम्मणिज्जरं करेमाणस्स खीणकसायस्स पढमसमए अणंता बादरणिगोदजीवा मरंति । बिदियसमए विसेसाहिया जीवा मरंति । केत्तियमेत्तेण विसेसाहिया ? पढमसमए मदजीवपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेदूण तत्थ एगखंडमेत्तेण । एवं तदियसमयादिसु विसेसाहिया विसेसाहिया मरंति जाव खीणकसायद्धाए पढमसमयप्पहुडि आवलियपुधत्तं गदं त्ति । तेण परं संखेज्जदिभागब्भहिया संखेज्जदिभागब्भहिया मरंति जाव खीणकसायद्धाए आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसो त्ति । तदो उवरिमाणंतरसमए असंखेज्जगुणा मरंति । एवमसंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा मरंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । गुणगारो पुण सव्वत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । विसेसाहियमरणचरिमसमए मदजीवे तप्पाओग्गेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे गुणसेडिमरणपढमसमए मदजीवपमाणं होदि त्ति घेत्तव्वं । एवमुवरि पि जाणिदूण वत्तव्वं जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । एसो गुणगारो समयं पडि मरंतजीवाणमेव परूवेदव्वो, ण पुलवियाणं । तं कधं णव्वदे ? खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं त्ति उवरि भण्णमाणचूलियासुत्तादो । के णिगोदा णाम ? पुलवियाओ णिगोदा त्ति भणंति ।

द्वारा कर्मनिर्जरा करके क्षीणकषाय हुए इस जीवके प्रथम समयमें अनन्त बादर निगोद जीव मरते हैं । दूसरे समयमें विशेष अधिक जीव मरते हैं । कितने विशेष अधिक जीव मरते हैं ? प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंके प्रमाणमें आवलीके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतने विशेष अधिक जीव मरते हैं । इसी प्रकार तीसरे आदि समयोंमें विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं । यह क्रम क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर आवलिपृथक्त्व काल तक चालू रहता है । इसके आगे संख्यातवां भाग अधिक संख्यातवां भाग अधिक मरते हैं । और यह क्रम क्षीणकषायके कालमें आवलिका असंख्यातवां भाग काल शेष रहने तक चालू रहता है । इसके आगेके लगे हुए समयमें असंख्यातगुणे जीव मरते हैं । इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणे जीव मरते हैं । गुणकार सर्वत्र पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है । विशेषाधिक मरनेके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीवोंके प्रमाणको तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर गुणश्रेणि क्रमसे मरनेके प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंका प्रमाण होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए । इसी प्रकार आगे भी क्षीणकषायके अन्तिम समय तक जानकर कथन करना चाहिए । यह गुणकार प्रत्येक समयमें मरनेवाले जीवोंका ही कहना चाहिए, पुलवी जीवोंका नहीं ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- आगे कहे जानेवाले चूलिकाके ' खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं ' इस सूत्रसे जाना जाता है ।

शंका-- निगोद किन्हें कहते हैं ?

समाधान-- [पुलवियोंको निगोद कहते हैं ।]

संपहि पुलवियाणं एत्थ सरूवपरूवणं कस्सामो। तं जहा - खंधो अंडरं आवासो पुलविया णिगोदसरीरमिदि पंच होंति। तत्थ बादरणिगोदाणमासयभूदो* बहुएहि वक्खारएहि संहियो वलंजंतवाणियकच्छउडसमाणो मूलय-थूहल्लयाविवक्षएसहरो खंधो णाम। ते च खंधा असंखेज्जलोगमेत्ता; बादरणिगोदपदिट्ठिदाणमसंखेज्जलोगमेत्तसंखुवलंभादो। तेसिं खंधाणं वक्षएसहरो तेसि* भयाणमवयवा वलंजुअकच्छउडपुव्वापरभागसमाणा अंडरं णाम। अंडरस्स अंतोट्ठिदो कच्छउडंडरंतोट्ठियवक्खारसमाणो आवासो णाम। अंडराणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि एक्केक्कम्हि अंडरे असंखेज्जलोगमेत्ता आवासा होंति। आवासब्भंतरे संट्ठिदाओ कच्छउडंडरवक्खारंतोट्ठियपिसिवियाहि समाणाओ पुलवियाओ णाम। एक्केक्कम्हि आवासे ताओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ होंति। एक्केक्कम्हि एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि ओरालिय-तेजा-कम्मइयपोग्गलोवायाणकारणाणि कच्छउडंडरवक्खारपुलवियाए अंतोट्ठिवदव्वसमाणाणि पुध पुध अणंताणंतेहि णिगोदजीवेहि आउण्णाणि होंति। तिलोग-भरह-जणवय-गाम-पुरसमाणाणि खंधंडरावासपुलविसरीराणि त्ति वा घेत्तव्वं।

पुणो एत्थ खीणकसायसरीरं खंधो णाम; असंखेज्जलोगमेत्तअंडराणमाधारभावादो। तत्थ अंडरंतोट्ठियअणंताणंतजीवेसु सुक्कज्झाणेण पडियसमयमसंखेज्जगुणाए

अब यहाँ पर पुलवियोंके स्वरूपका कथन करते हैं। यथा- स्कन्ध, अण्डर, आवास, पुलवी और निगोदशरीर ये पाँच होते हैं। उनमेंसे जो बादर निगोदोंका आश्रयभूत है, बहुत वक्खारोंसे युक्त है तथा वलंजंतवाणिय कच्छउड समान है ऐसे मूली, थूअर और आर्द्रक आदि संज्ञाको धारण करनेवाला स्कन्ध कहलाता है। वे स्कन्ध असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं, क्योंकि, बादर निगोद प्रतिष्ठित जीव असंख्यात लोकप्रमाण पाये जाते हैं। जो उन स्कन्धोंके अवयव हैं और जो वलंजुअकच्छउडके पूर्वापर भागके समान हैं उन्हें अण्डर कहते हैं। जो अण्डरके भीतर स्थित हैं तथा कच्छउडअण्डरके भीतर स्थित वक्खारके समान हैं उन्हें आवास कहते हैं। अण्डर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं। तथा एक एक अण्डरमें असंख्यात लोकप्रमाण आवास होते हैं। जो आवासके भीतर स्थित हैं और जो कच्छउडअण्डरवक्खारके भीतर स्थित पिशवियोंके समान हैं उन्हें पुलवि कहते हैं। एक एक आवासमें वे असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। तथा एक एक आवासकी अलग अलग एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीर होते हैं जो कि औदारिक, तैजस और कार्मण पुद्गलोंके उपादान कारण होते हैं और जो कच्छउडअण्डरवक्खारपुलविके भीतर स्थित द्रव्योंके समान अलग अलग अनन्तानन्त निगोद जीवोंसे आपूर्ण होते हैं। अथवा तीन लोक, भरत, जनपद, ग्राम और पुरके समान स्कन्ध, अण्डर, आवास, पुलवि और शरीर होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

पुनः यहाँ पर क्षीणकषाय जीवके शरीरकी स्कन्ध संज्ञा है; क्योंकि, वह असंख्यात लोकप्रमाण अण्डरोंका आधारभूत है। वहाँ अण्डरोंके भीतर स्थित हुए अनंतानंत जीवोंमेंसे शुक्ल-

* ता० प्रतौ '-मास (म) यभूदो ' अ० आ० प्रत्योः '-मासमयभूदो, इति पाठः।
* ता० प्रतौ '-लोगमेत्तवक्खएसहरा तेसि ' इति पाठः।

सेडीए मदेसु खीणकसायचरिमसमए मरमाणजीवा अणंता होंति । होंता वि हेट्ठा दुचरिमसमएसु मदजीवेहिंतो असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । खीणकसायचरिमसमयपुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति सुत्तं भणिदं । जदि पुव्वुत्तरगुणगारो पुलवियाणं होदि तो एदं ण घडदे; दुचरिमसमए मदजीवपुलवियासु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदासु खीणकसायचरिमसमए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवीणमुवलंभादो । एक्केक्कम्हि खंधे अंडराणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि । तत्थ एक्केक्कम्हि अंडरे आवासा असंखेज्जलोगमेत्ता । तत्थ एक्केक्कम्हि आवासे पुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ त्ति पुव्वं परूविदं । तेण खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ पुलवियाओ अत्थि त्ति ण घडदे । ण च तत्थतणपुलवियाणमसंखेज्जा भागा खीणकसायद्धाणे णट्ठा त्ति वोत्तुं जुत्तं; सगसरीरट्ठियणिगोदजीवे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थ एगखंडम्मि णट्ठे पुलवियाणमसंखेज्जाणं भागाणं विणासविरोहादो । ण च चरिमसमए मदजीवा दुचरिमादिसमएसु मदजीवाणमसंखेज्जदिभागो; गुणसेडिमरणपरूवणाए सह विरोहादो ? एत्थ परिहारो वुच्चदे– खीणकसायसरीरे उक्कस्सेण जहण्णेण वि पुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव

ध्यानके द्वारा प्रति समय असंख्यातगुणे श्रेणि रूपसे जीवोंके मरने पर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीव अनन्त होते हैं । इतने होते हुए भी पहले द्विचरम समयमें मरनेवाले जीवोंसे असंख्यातगुणे होते हैं। गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

शंका– क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ऐसा सूत्रमें कहा गया है । यदि पूर्वोक्त गुणकार पुलवियोंका होता है तो यह कथन घटित नहीं होता, क्योंकि, द्विचरम समयमें मृत जीवोंकी आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियोंको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ उपलब्ध होती हैं । एक एक स्कन्धमें अण्डर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं । तथा एक एक अण्डरमें आवास असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक आवासमें पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र होती हैं इस प्रकार पहले कह आये हैं। इसलिए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ हैं यह वचन घटित नहीं होता है । वहाँकी पुलवियोंका असंख्यात बहुभाग क्षीणकषाय गुणस्थानमें नष्ट हो गया है यह कहना युक्त नहीं है । क्योंकि, अपने शरीरमें स्थित निगोद जीवोंको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित कर वहाँ लब्ध एक भागके नष्ट होनेपर पुलवियोंके असंख्यात बहुभागका विनाश माननेमें विरोध आता है । अन्तिम समयमें मरे हुए जीव द्विचरम आदि समयोंमें मरे हुए जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस कथनका गुणश्रेणि क्रमसे मरण प्ररूपणाके साथ विरोध आता है ।

समाधान– यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं । क्षीणकषाय जीवके शरीरमें उत्कृष्ट

ॐ ता० प्रतौ ' उक्कस्सेण जहण्णा (ण) वि ' अ० प्रतौ ' उक्कस्साण जहण्णाण वि ' आ० प्रतौ ' उक्कस्सेण जहण्णाणं वि ' इति पाठः ।

होंति। एगबंधणबद्धाओ* असंखेज्जलोगमेत्ताओ कत्थ वि णत्थि। जहण्णाहियारादो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव पुलवियाओ होंति त्ति घेत्तव्वं। ण च पुव्वुत्तवयणेण सह विरोहो, खीणकसायं मोत्तूण अण्णखंधे अवलंबिय तत्थ परूविदत्तादो। ण च सव्वखंधेसु पुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेव अत्थि त्ति णियमो; णियमा य सुत्तवक्खाणस्सणुवलंभादो☆।

संपहि पुलवियाओ अस्सिदूण केहि वि आइरिएहि णिगोदाणं मरणक्कमो परूविदो, तं वत्तइस्सामो। तं जहा– खीणकसायपढमसमए मरंतपुलवियाओ थोवाओ। विदियसमए मरंतपुलवियाओ विसेसाहियाओ। तदियसमए विसेसाहियाओ। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव आवलिपुधत्तं त्ति। विसेसो पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागपडिभागो। तेण परं संखेज्जभागब्भहियाओ जाव विसेसाहियमरणचरिमसमओ त्ति। तदो गुणसेडिमरणपढमसमए संखेज्जगुणाओ मरंति। एवं संखेज्जगुणाओ संखेज्जगुणाओ मरंति जाव खीणकसायकालस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसो त्ति। तेण परमसंखेज्जगुणाओ असंखेज्जगुणाओ मरंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। गुणगारेण पुण असंखेज्जगुणमरणाम्हि सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागेण

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

और जघन्य पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही होती हैं। एक बन्धनबद्ध पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र कहीं भी नहीं होतीं। यहाँ जघन्यका अधिकार होनेसे आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही पुलवियाँ होती हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए। पूर्वोक्त वचनके साथ विरोध आता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, क्षीणकषायको छोड़कर अन्य स्कन्धका अवलम्बन लेकर वहाँ कथन किया है। और सब स्कन्धोंमें पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र ही होती हैं ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके नियमको करनेवाले सूत्रका व्याख्यान उपलब्ध नहीं होता।

अब पुलवियोंका अवलम्बन लेकर कितने ही आचार्य निगोद जीवोंके मरण क्रमका कथन करते हैं उसे बतलाते हैं। यथा–क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरनेवाली पुलवियाँ स्तोक हैं। दूसरे समयमें मरनेवाली पुलवियाँ विशेष अधिक हैं। तीसरे समयमें विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलि पृथक्त्व काल जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक हैं। विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागका प्रतिभाग स्वरूप है। इससे आगे विशेषाधिकके क्रमसे मरण करनेके अन्तिम समय तक संख्यातवें भाग अधिक हैं। अनन्तर गुणश्रेणि रूपसे मरण करनेके प्रथम समयमें संख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल शेष रहने तक संख्यातगुणी संख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं। इससे आगे क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणी असंख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं। जहाँ असंख्यातगुणी पुलवियोंका मरण कहा है वहाँ गुणकार आवलिका असंख्यातवाँ भाग

* ता०आ० प्रत्योः ' एत्थ बंधणबद्धाओ ' इति पाठः। ☆ ता०प्रतौ ' णियमो, (णिक्खमाय) सुत्तवक्खा (णा–) णाणणुवलंभादो ' अ०आ०प्रत्योः ' णियमो, णियमा य सुत्तवक्खाणमणुवलंभादो ' इति पाठः।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

होदव्वं; अण्णहा खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाण-मणुवलद्धीदो। अणेण विहाणेण गंतूण खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्ज-दिभागमेत्तपुलवियाओ सदावसिट्ठाओ ; हेट्ठा दुचरिमादिसमएसु णट्ठपुलवियाहिंतो असंखेज्जगुणाओ उव्वरंति; गुणसेडिमरणण्णहाणुववत्तीदो। एसो पुलवियाणमावलि-याए असंखेज्जदिभागो गुणगारो जो पडिदो* सो ण घडदे; खीणकसायचरिमसमए णट्ठपुलवियाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तप्पसंगादो। कुदो? जहण्णपरित्ता-संखेज्जं विरलिय आवलियाए असंखेज्जदिभागं रूवं पडि दादूण अण्णोण्णेण गुणिदे वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणुप्पत्तीदो।

किमट्ठमेदे एत्थ मरंति? ज्झाणेण णिगोदजीवुप्पत्तिट्ठिदिकारणणिरोहादो। ज्झाणे-ण अणंताणंतजीवरासिणिहंताणं कथं णिव्वुई[ख] ? अप्पमादादो। को अप्पमादो ? पंच महव्वयाणि पंच समदीयो तिण्णि गुत्तीओ णिस्सेसकसायाभावो च अप्पमादो णाम। अहिंसा णाम पाण-पाणिवियोगो। तं करेंताणं कथमहिंसालक्खणपंचमहव्वय-

होना चाहिए, अन्यथा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियां उपलब्ध नहीं होतीं। इस विधिसे जाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियां मरनेसे अवशिष्ट रहती हैं वे पीछे द्विचरम आदि समयोंमें नष्ट हुई पुलवियोंसे असंख्यातगुणी शेष रहती हैं। अन्यथा गुणश्रेणि मरण नहीं बन सकता। किन्तु यहां यह जो पुलवियोंका आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार कहा है वह घटित नहीं होता, क्योंकि, इस कथनसे क्षीणकषायके अन्तिम समयमें नष्ट हुई पुलवियां पल्योपमके असं-ख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं। कारण कि जघन्य परीतासंख्यातका विरलन कर और आवलिके असंख्यातवें भागको विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति देकर परस्पर गुणा करने पर भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाणकी उत्पत्ति होती है।

शंका-ये निगोद जीव यहां क्यों मरणको प्राप्त होते हैं ?

समाधान-क्योंकि, ध्यानसे निगोद जीवोंकी उत्पत्ति और उनकी स्थितिके कारणका निरोध हो जाता है।

शंका-ध्यानके द्वारा अनन्तानन्त जीवराशिका हनन करनेवाले जीवोंको निवृत्ति कैसे मिल सकती है ?

समाधान-अप्रमाद होनेसे।

शंका-अप्रमाद किसे कहते हैं ?

समाधान-पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति और समस्त कषायोंके अभावका नाम अप्रमाद है।

शंका- प्राण और प्राणियोंके वियोगका नाम हिंसा है। उसे करनेवाले जीवोंके अहिंसा लक्षण पाँच महाव्रत कैसे हो सकते हैं ?

* प्रतिषु पदिदो इति पाठः। [ख] अ-आ प्रत्योः 'णिव्वुसी' इति पाठः।

संभवो ? ण, बहिरंगहिंसाए आसवत्ताभावादो । तं कुदो णव्वदे ? तदभावे वि अंतरंगहिंसादो चेव सित्थमच्छस्स बंधुवलंभादो ।] जेण विणा जं ण होदि चेव तं तस्स कारणं । तम्हा अंतरंगहिंसा चेव सुद्धणएण हिंसा ण बहिरंगा त्ति सिद्धं । ण च अंतरंगहिंसा एत्थ अत्थि; कसायसंजमाणमभावादो । उत्तं च --

जियदु मरदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छओ बंधो ।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदीहि ॥ २ ॥
सरवासे दु पडंते जह दढकवचो ण भिज्जहि सरेहि ।
तह समिदीहि ण लिप्पइ साहू कायेसु इरियतो ॥ ३ ॥
जत्थेव चरइ बालो परिहारण्हू वि चरइ तत्थेव ।
वज्झइ सो पुण बालो परिहारण्हू वि मुच्चइ सो ॥ ४ ॥

स्वयं ह्यहिंसा स्वयमेव हिंसनं न चास्य सा तत्परतंत्रतां गता ।
प्रमादहीनोऽत्र भवत्यहिंसकः प्रमादयुक्तस्तु सदैव हिंसकः ॥ ५ ॥
वियोजयति चासुभिर्न च वधेन संयुज्यते शिव च न परोऽमदंपरुषस्मृतेर्विद्यते ।
वधोपनयमप्युपैति च परान्निघ्नन्नपि स्वयायमतिदुर्गमः प्रशमहेतुरुद्योतितः ॥६॥

समाधान-- नहीं; क्योंकि, बहिरंग हिंसा आस्रवरूप नहीं होती ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, बहिरंग हिंसाका अभाव होनेपर भी केवल अन्तरङ्ग हिंसासे सिक्थ मत्स्यके बन्धकी उपलब्धि होती है]

जिसके बिना जो नहीं होता है वह उसका कारण है, इसलिए शुद्धनयसे अन्तरंग हिंसा ही हिंसा है, बहिरंग नहीं; यह बात सिद्ध होती है । यहाँ अन्तरंग हिंसा नहीं है; क्योंकि, कषाय और असंयमका अभाव है । कहा भी है---

चाहे जीव जिओ चाहे मरो, अयत्नाचारपूर्वक प्रवृत्ति करनेवाले जीवके नियमसे बन्ध होता है, किन्तु जो जीव समितिपूर्वक प्रवृत्ति करता है उसके हिंसा हो जाने मात्रसे बन्ध नहीं होता ॥ २ ॥

सरोंकी वर्षा होने पर जिस प्रकार दृढ कवचवाला व्यक्ति सरोंसे नहीं भिदता है उसी प्रकार षट्कायिक जीवोंके मध्यमें समितिपूर्वक गमन करनेवाला साधु पापसे लिप्त नहीं होता है ॥ ३ ॥

जहाँ पर अज्ञानी भ्रमण करता है वहीं पर हिंसाके परिहारकी विधिको जाननेवाला भी भ्रमण करता है, परन्तु वह अज्ञानी पापसे बँधता है और परिहार विधिका जानकर उससे मुक्त होता है ॥ ४ ॥

अहिंसा स्वयं होती है और हिंसा भी स्वयं ही होती है । यहाँ ये दोनों पराधीन नहीं हैं । जो प्रमादहीन है वह अहिंसक है किन्तु जो प्रमादयुक्त है वह सदैव हिंसक है ॥ ५ ॥

कोई प्राणी दूसरेको प्राणोंसे वियुक्त करता है फिर भी वह वधसे संयुक्त नहीं होता ।

मूलाचा० ५, १३१ । मूलाचा० ५, १३२ ।

संपहि खीणकसायपढमसमयप्पहुडि ताव बादरणिगोदजीवा उप्पज्जंति जाव तेसिं चेव जहण्णाउवकालो सेसो त्ति । तेण परं ण उप्पज्जंति । कुदो ? उप्पण्णाणं जीवणीयकालाभावादो ☆ । तेण कारणेण बादरणिगोदजीवा एत्तो प्पहुडि जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति ताव सुद्धा ☆ मरंति चेव ।

संपहि खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियासु ✱ पुध पुध असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरेहि आउण्णासु दुविअणंताणंतजीवाणं अणंताणंतविस्सासुवचयसहियकम्म-णोकम्मसंघाओ ♠ सव्वजहण्णिया बादरणिगोददव्ववग्गणा होदि ।

संपहि एदिस्से बादरणिगोददव्ववग्गणाए ट्ठाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा— एत्थ ताव अणंताणंतजीवाणं ओरालियसरीरपरमाणुपुंजं विस्सासुवचएहि सह पुध ट्ठविय पुणो तेसिं चेव [illegible] ♥ जीवाणं [illegible] सविस्सासुवचय-तेजसरीरपरमाणुपुंजं विस्सासुवचएहि सह कम्मइयसरीरपरमाणुपुंजं च पुध ट्ठविय ㋐ एदेसिं छण्णं पुंजाणमुवरि परमाणु वड्ढाविय ट्ठाणुप्पत्ती वुच्चदे---

---

तथा परीषहसे जिसकी स्मृति कठोर हो गई है, अर्थात् जो परीषहका विचार करता है उसका कल्याण नहीं होता । तथा कोई दूसरे जीवोंको नहीं मारता हुआ भी हिंसकपनेको प्राप्त होता है । इस प्रकार हे जिन ! तुमने यह अतिगहन प्रशमका हेतु प्रकाशित किया है, अर्थात् शान्तिका मार्ग बतलाया है ॥ ६ ॥

क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद जीव तब तक उत्पन्न होते हैं जब तक क्षीणकषायके कालमें उनका जघन्य आयुका काल शेष रहता है । इसके बाद नहीं उत्पन्न होते; क्योंकि, उत्पन्न होने पर उनके जीवित रहनेका काल नहीं रहता, इसलिए बादर निगोद जीव यहांसे क्षीणकषायके अन्तिम समय तक केवल मरते ही हैं ।

यहां क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां हैं जो कि पृथक् पृथक् असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीरोंसे आपूर्ण हैं उनमें स्थित अनन्तानन्त निगोद जीवोंके जो अनन्तानन्त विस्रसोपचयसे युक्त कर्म और नोकर्म संघात है वह सबसे जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणा है ।

अब इस बादर निगोद द्रव्यवर्गणाके स्थानोंका कथन करते हैं । यथा— यहां अनन्तानन्त जीवोंके अपने विस्रसोपचयके साथ औदारिकशरीर परमाणुपुंजको पृथक् स्थापित करके पुनः उन्हीं सब जीवोंके अपने विस्रसोपचय सहित तैजसशरीर परमाणु- पुञ्जको और अपने विस्रसोपचय सहित कार्मणशरीर परमाणुपुञ्जको पृथक् स्थापित कर इन छह पुञ्जोंके ऊपर परमाणुओंकी वृद्धि कर स्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते है--

---

☆ ता० प्रतौ ' जीवणियकालाभावादो ' इति पाठः । ☆ प्रतिषु ' सुद्धा ' इति पाठः ।
✱ ता० प्रतौ ' असंखे०भागमेत्ता पुलवियासु ' इति पाठः । ♠ अ० का० प्रत्योः '-सहिदा कम्मणोकम्मसंघाओ ' इति पाठः । ♥ प्रतिषु ' सव्वेहि ' इति पाठः । ㋐ ता० प्रतौ ' ट्ठाविय ' इति पाठः ।

अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण एगविस्ससुवचएण ओरालिय-सरीरपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो । एदमण्णमपुणरुत्तट्ठाण होदि; अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो एत्थ परमाणुत्तरत्तुवलंभादो । पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण खीणकसायचरिमसमए दोहि विस्ससुवचयपरमाणूहि ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजमब्भहियं काऊणच्छिदो तदो तमण्णं तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो तीहि विस्ससुवचय परमाणूहि ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए अच्छिदो ताधे चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि । पुणो चदुहि विस्ससुवचएहि परमाणूहि ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजमब्भहियं काऊण अण्णो जीवो खीणकसायचरिमसमयम्हि ट्ठिदो ताधे पंचममपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि । एवमेगेगपरमाणुत्तरकमेण ताव ट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव खीणकसायचरिमसमयम्हि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता ओरालियविस्ससुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति । पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण जहण्णदव्वस्सुवरि एगोरालिय-परमाणुमोरालियसरीरपुंजम्हि* वड्ढाविय पुणो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपरमाणुपमाणविस्ससुवचयपुंजं वड्ढाविय* खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुण-

---

एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर एक विस्रसोपचय परमाणुसे औदारिकशरीरके पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तो इसके यह अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है; क्योंकि, अनन्तर पूर्वके स्थानसे यहां एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है। पुनः एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें दो विस्रसोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके स्थित है तब उसके यह अन्य तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः एक अन्य जीव तीन विस्रसोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब चौथा अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है। पुनः चार विस्रसोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके जो अन्य जीव क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब पाँचवां अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है। इस प्रकार उत्तरोत्तर एक एक परमाणुको बढ़ाते हुए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें सब जीवोंसे अनन्तगुण औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक स्थान उत्पन्न करने चाहिए।

पुनः एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर जघन्य द्रव्यके ऊपर औदारिकशरीर पुञ्जमें एक औदारिकशरीर परमाणुको बढ़ाकर पुनः औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुप्रमाण विस्रसोपचयपुञ्जको बढ़ाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है; क्योंकि, जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिकशरीर

---

* ता० प्रतौ ' सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता । ओरालियविस्ससुवचयपरमाणुओरालियसरीरपुंजम्हि ' इति पाठः । * क० प्रतौ ' पुणो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजम्हि पुव्ववड्ढाविदो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपरमाणुपमाणविस्ससुवचयपुंजम्मि वड्ढाविय ' आ० का० प्रत्योः ' पुणो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपरमाणुपमाणविस्ससुवचयपुंजम्मि पुव्वं वड्ढाविदो ओरालिय० वड्ढाविय ' इति पाठः ।

रुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? अणंतरहेट्ठिमट्ठाणोरालियविस्ससुवचयपुंजादो एदस्स ट्ठाणस्स ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजो सरिसो होदूण एत्थतणओरालियसरीरपुंजस्स परमाणुत्तरत्तुवलंभादो ।

पुणो एदस्सुवरि एगोरालियविस्ससुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । दोसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगुत्तरवड्ढीए ताव वड्ढिदेवव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढावूणच्छिदे तदो अण्णो जीवो ओघजहण्णदव्वं दोओरालियपरमाणूहि दोवारं वड्ढिवविस्ससुवचयेहि य अदिरित्तं काऊण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेदेण कमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा-सिद्धाणमणंतभागमेत्ता ओरालियसरीरपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता तेसिं विस्ससुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । वड्ढेंता वि केवडिया इदि पुच्छिदे एयबादरणिगोदजीवम्मि जत्तियविस्ससुवचयसहियओरालियसरीरपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता ।

कधमेगो जीवो दोण्णं जीवाणं सविस्सासोरालियसरीरपुंजस्स आहारो होज्ज? ण, एक्कम्हि वि जीवे असंखेज्जाणं खविद[1]कम्मंसियजीवाणमोरालियसरीरदव्वुवलंभादो ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अनन्तर पूर्वके स्थानके औदारिक विस्रसोपचय पुञ्जके साथ इस स्थानका औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्ज समान होकर यहांके औदारिकशरीर पुञ्जमें एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है ।

पुनः इसके ऊपर एक औदारिक विस्रसोपचय परमाणुके बढने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । दो विस्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन विस्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक उत्तरोत्तर एक एक परमाणुको बढाते जाना चाहिए । इस प्रकार बढाकर स्थित होने पर अनन्तर एक अन्य जीव लो जो ओघ जघन्य द्रव्यको दो औदारिक परमाणुओंसे और दो बार बढाए हुए विस्रसोपचयोंसे अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार इस क्रमसे तब तक बढाते जाना चाहिए जब जाकर अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र औदारिकशरीर परमाणुओंकी और सब जीवोंसे अनन्तगुणे उन्हींके विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि हो जाती है । बढाते हुए भी कितनी बार बढावे ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके जितने विस्रसोपचयके साथ औदारिकशरीर परमाणु हैं उतनी बार बढावे ।

शंका–एक जीव दो जीवोंके विस्रसोपचयसहित औदारिकशरीर पुञ्जका आधार कैसे हो सकता है ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, एक ही जीवमें असंख्यात क्षपित कर्मांशिक जीवोंका औदारिकशरीर द्रव्य उपलब्ध होता है ।

---

[1] ता० प्रतौ ' जीवे असंखेज्जगुणं खविद– ' इति पाठः ।

जदि एक्कम्हि जीवे असंखेज्जाणं जीवाणं दव्वं संभवदि तो बादरणिगोदजहण्णवग्गणाए अणंतजीवाणं ओरालियसरीरदोपुंजेसु एगजीवओरालियसरीरदोपुंजा णिच्छएण संभवंति त्ति पुणो किण्ण घेप्पदे ? ण । पुणो अण्णो जीवो पुव्वं वड्ढिदव्वेण ओरालियसरीरमब्भहियं काऊण पुणो तेजइयसरीरविस्सासुवचयपुंजे एगपरमाणुणा वड्ढाविदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि; अणंतरहेट्ठिमट्ठाणं पेक्खिय एत्थ परमाणुत्तरत्तुवलंभादो। पुणो पुव्विल्लट्ठाणम्हि बेतेजइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु तेजइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगादिएगुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता तेजइयसरीरविस्सासुवचयपरमाणुवड्ढि त्ति ।

तदो अण्णो जीवो ओरालियसरीरदोपुंजेसु एगजीवोरालियसरीरदोपुंजे वड्ढाविय तेजासरीरमेगतेजापरमाणुणा अब्भहियं काऊण एगतेजासरीरपरमाणुणा संबंधपाओग्गअणंतपरमाणू पुव्वं व वड्ढाविदमेत्ते तेजइयविस्सासुवचएसु वड्ढाविय खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कारणं सुगमं । तदो अण्णो जीवो तेजासरीरमेगविस्सासुवचयपरमाणुणा अब्भहियं कादूणच्छिदो ताधे अण्णम-

---

शंका-- यदि एक जीवमें असंख्यात जीवोंका द्रव्य सम्भव है तो बादर निगोद जघन्य वर्गणा सम्बन्धी अनन्त जीवोंके औदारिकशरीर सम्बन्धी दो पुञ्जोंमें एक जीव सबंधी औदारिकशरीरके दो पुञ्ज निश्चयसे सम्भव हैं ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान-- नहीं ग्रहण करते ।

पुनः एक अन्य जीव लो जो पहले बढाए हुए द्रव्यके साथ औदारिकशरीरको अधिक करके पुनः तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणुको बढाकर स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, अनन्तर पूर्वके स्थानको देखते हुए यहां एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है। पुनः पूर्वोक्त स्थानमें दो तैजसशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन तैजसशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एकसे लेकर उत्तरोत्तर एक एक परमाणु तब तक बढाना चाहिए जब जाकर सब जीवोंसे अनन्तगुणे तैजसशरीर विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि हो लेती है।

अनन्तर एक अन्य जीव लो जो औदारिकशरीरके दो पुञ्जोंमें एक जीव सम्बन्धी औदारिकशरीरके दो पुञ्ज बढाकर, तैजसशरीरको एक तैजस परमाणुसे अधिक करके तथा एक तैजसशरीरके परमाणुसे सम्बन्ध रखने योग्य और पहलेके समान बढाये हुए अनन्त परमाणुप्रमाण तैजसशरीर विस्रसोपचयोंको बढाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। कारण सुगम है। अनन्तर एक अन्य जीव लो जो तैजसशरीरको एक विस्रसोपचय परमाणु अधिक करके स्थित है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है।

पुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो बेविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणा एगतेजइयपरमाणुसंबंधपाओग्गमेत्ता वड्ढिदा त्ति। तदो अण्णो जीवो बेहि तेजइयपरमाणूहि तेजइयसरीरमब्भहियं काऊण दोण्णितेजासरीरपरमाणुपाओग्गविस्सासुवचयेहि तेजासरीरविस्सासुवचयपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एदेण कमेण णेदव्वं जाव तेजासरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजासरीरपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति। वड्ढंता वि हु केत्तिया त्ति भणिदे एगबादरणिगोदस्स तेजइयसरीरम्मि जत्तिया परमाणू विस्सासुवचयसहिया अत्थि तत्तियमेत्ता।

पुणो अण्णो जीवो एवं वड्ढिदोरालियतेजासरीरो कम्मइयविस्सासुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुमहियं काऊण चरिमसमयखीणकसाई जादो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो दोसु कम्मइयविस्सासुवचयपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुवचयपोग्गलेसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता कम्मइयविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा। एवं जाणिऊण णेयव्वं जाव कम्मइयसरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता

पुनः दो विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एक तैजसशरीर परमाणुसे सम्बन्ध योग्य सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक उत्तरोत्तर एक एक परमाणु बढाना चाहिए। अनन्तर एक अन्य जीव लो जो दो तैजस परमाणुओंसे तैजसशरीरको अधिक करके दो तैजसशरीर परमाणुओंके योग्य विस्रसोपचय परमाणुओंसे तैजसशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस क्रमसे तैजसशरीर पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र तैजसशरीर परमाणुओंकी तथा सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए। वृद्धि होते हुए भी कितने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं कि एक बादर निगोद जीवके तैजसशरीरमें विस्रसोपचयसहित जितने परमाणु होते हैं उतने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं।

पुनः एक अन्य जीव लो जिसने इस प्रकार औदारिकशरीर और तैजसशरीरकी वृद्धि की है तथा जो कार्मणशरीर विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करके अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषायी हुआ है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः दो कार्मण विस्रसोपचय पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एकोत्तरके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे कार्मण विस्रसोपचय परमाणु बढाने चाहिए। इस प्रकार जानकर कार्मणशरीर पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र कार्मणशरीर परमाणुओंकी तथा सब जीवोंसे

कम्मइयपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । होंता वि केत्तिया त्ति भणिदे एगजीवम्मि जत्तिया कम्मपरमाणू कम्मइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गला च अत्थि तत्तियमेत्ता ।

तदो अण्णो जीवो पुव्वविहाणेण आगंतूण खीणकसायचरिमसमए जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए उवरि एगजीवमहियं काऊणच्छिदो । संपहि एवं ट्ठाणं पुणरुत्तं होदि; पुव्विल्लअणंतरहेट्ठिमट्ठाणस्स ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं पुंजेहिंतो एत्थतण तेसिं छप्पुंजाणं सरिसत्तुवलंभादो । पुव्विल्लजीवेहिंतो संपहियवग्गणाए एगो जीवो अहियो त्ति ट्ठाणमिदमपुणरुत्तमिदि किण्ण वुच्चदे? ण; जीवस्स बंधणिज्जववएसाभावादो । पोग्गलो हि✽ बंधणिज्जं णाम । ण च जीवो पोग्गलो; अमुत्तस्स मुत्तभावविरोहादो ।

पुणो अण्णो जीवो संपहियबादरणिगोदवग्गणाए उवरि एगमोरालियसरीरविस्सासुवचयपरमाणुं वड्ढावियꣳ खीणकसायचरिमसमए अच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । बिदियपरमाणुम्हि वड्ढिदे बिदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । चदुसु विस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं णेयव्वं जाव सव्वजीवेहि

अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए । वृद्धिको प्राप्त होते हुए कितने वृद्धिको प्राप्त होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक जीवमें जितने कर्मपरमाणु और कार्मणशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गल होते हैं उतने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं ।

But see 5.45 439

अनन्तर एक अन्य जीव लो जो पूर्व विधिसे आकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोद वर्गणाके ऊपर एक जीवको अधिक करके स्थित है । तब यह स्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, पहलेके अनन्तर पिछले स्थानके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके पुञ्जसे यहांके उनके छह पुञ्ज सदृश उपलब्ध होते हैं ।

शंका-- पहलेके जीवोंसे सांप्रतिक वर्गणा सम्बन्धी एक जीव अधिक है इसलिए इस स्थानको अपुनरुक्त क्यों नहीं कहते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, जीवकी बंधनीय संज्ञा नहीं है । पुद्गलोंकी ही बंधनीय संज्ञा है । परंतु जीव पुद्गल नहीं हो सकता, क्योंकि, अमूर्तको मूर्तरूप होनेमें विरोध आता है ।

पुनः एक अन्य जीव लो जो साम्प्रतिक बादर निगोद वर्गणाके ऊपर एक औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुको बढ़ाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । दूसरे परमाणुकी वृद्धि होने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । चार विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब

✽ अ०आ०का० प्रतिषु ' पोग्गले हि ' इति पाठः ।

ꣳ अ० आ० प्रत्योः ' परमाणुं हि वड्ढावियं ' का० प्रतौ ' परमाणुम्हिवड्ढावियं ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अणंतगुणमेत्ता ओरालियविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गला वड्ढिदा त्ति । होंता वि ते केत्तियमेत्ता त्ति वुत्ते एगोरालियपरमाणुविस्सासुवचयमेत्ता । एवं वड्ढिदूण ट्ठिदचरिमसमयखीणकसायट्ठाणमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कारणं सुगमं । एवमणेण विहाणेण ओरालियसरीरवेपुंजा ताव वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता ओरालियपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । होंता वि ते केत्तिया त्ति भणिदे एगबादरणिगोदजीवस्स ओरालियसरीरम्हि जत्तिया ओरालियपरमाणू तेसिं विस्सासुवचयपरमाणू च अत्थि तत्तियमेत्ता । एवं तेजासरीरपुंजो कम्मइयसरीरपुंजो च सविस्सासुवचओ परिवाडीए* वड्ढावेदव्वो जावेगबादरणिगोदजीवेण संचिदतेजाकम्मइयसरीराणं चदुपुंजपमाणं पत्तं त्ति । एवं वड्ढिदूण ट्ठिदो च पुणो अण्णो जीवो खीणकसायचरिमसमयजहण्णबादरणिगोदवग्गणं बेहि बादरणिगोदजीवेहि अब्भहियं कादूण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो च सरिसो; पुव्विल्ल**ट्ठाणम्मि कमेण वड्ढिदूण ट्ठिददव्वस्स एत्थतणदोजीवेसु उवलंभादो ।

पुव्विल्लजीवं मोत्तूण इमं घेत्तूण एदस्सुवरि पुव्वं व अण्णेगो जीवो वड्ढावेदव्वो ।

विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए । होते हुए भी वे कितने होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक औदारिकशरीर परमाणुके विस्रसोपचयमात्र होते हैं । इस प्रकार बढाकर स्थित हुए स्थानसे एक औदारिक परमाणुके विस्रसोपचयको बढाकर स्थित हुआ अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय स्थान अपुनरुक्त स्थान होता है । कारण सुगम है । इस प्रकार इस विधिसे औदारिकशरीरके दो पुञ्ज तब तक बढाने चाहिए जब तक सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु तथा अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर सम्बन्धी परमाणु वृद्धिको नहीं प्राप्त हो जाते । ऐसा होते हुए भी वे कितने होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके औदारिकशरीरमें जितने औदारिकशरीरके परमाणु और उसके विस्रसोपचय परमाणू होते हैं तन्मात्र होते हैं । इसी प्रकार एक बादर निगोद जीवके द्वारा संचित हुए तैजसशरीर और कार्मणशरीरके चार पुञ्जप्रमाण द्रव्यके प्राप्त होने तक अपने अपने विस्रसोपचयके साथ तैजसशरीर पुञ्जको और कार्मणशरीर पुञ्जको आनुपूर्वी क्रमसे बढाना चाहिए । इस प्रकार बढाकर स्थित हुआ जीव तथा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादरनिगोद वर्गणाके दो बादर निगोद जीवोंसे अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित हुआ अन्य जीव समान है, क्योंकि, पूर्वोक्त स्थानमें क्रमसे बढाकर स्थित हुआ द्रव्य यहाँके दो जीवोंमें उपलब्ध होता है ।

पहलेके जीवको छोडकर तथा इसे ग्रहण कर इसके ऊपर पहलेके समान एक अन्य जीव बढाना चाहिए । इस प्रकार स्थान और शास्त्रके अविरोधसे उत्तरोत्तर एक एक जीवको बढाते

---

* ता० प्रतौ ' च विस्सासुवचओ परिवाडीए ' आ० प्रतौ ' विस्सासुवचयउवरि वादीए ' इति पाठः ।

** ता० प्रतौ ' ट्ठिदो चरिमसा (च सरिसो), पुव्विल्ल– ' अ० प्रतौ ' ट्ठिदो चरिमसाहि पुव्विल्ल- ' अ० का० प्रत्योः ' ट्ठिदो चरिम० पुव्विल्ल– ' इति पाठः ।

एवमेगेगुत्तरकमेण ट्ठाणसमयाविरोहेण अणंताणंतकम्म-णोकम्मपरमाणुपोग्गलेहि जदि-वसव्वजीवपदेसा* जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वड्ढावेदव्वा। एवं वड्ढा-विय पुणो एत्थतणअणंतजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छ पुंजा कमेण वड्ढा-वेदव्वा जावप्पणो सव्वुक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति। एदिस्से चरिमसमयखीणकसायस्स उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए को सामी? जीवो गुणिदकम्मंसियो सव्वुक्कस्ससरीरो-गाहणाए वट्टमाणो चरिमसमयखीणकसाओ सामी। एत्थ उक्कस्सवग्गणाए वि आव-लियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव पुलवियाओ। असंखेज्जलोगमेत्ताओ णत्थि। कुदो? साभावियादो। कत्थ पुण♠ असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाओ? मूलय-महामच्छ-थूहल्लयादिसु। एक्केक्कपुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि* णिगोदसरीराणि एक्के-क्कणिगोदसरीरे अणंताणंता णिगोदजीवा अत्थि। पुणो तेसु जीवेसु आवलियाए असं-खेज्जदिभागमेत्ता चेव गुणिदकम्मंसिया। अवसेसा पुण सव्वे गुणिदघोलमाणा चेव। एवं वड्ढिदूणच्छिदस्स♣ खीणकसायचरिमसमए वड्ढी णत्थि। कुदो? तत्थतणजीवाणं तेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं च सव्वुक्कस्सभावुवलंभादो।

एसा खीणकसायस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा खीण-

---

हुए अनन्तानन्त कर्म और नोकर्म परमाणु पुद्गलोंसे व्याप्त सब जीव प्रदेश हैं जिनके ऐसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव बढाने चाहिए। इस प्रकार बढाकर पुनः यहांके अनन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके क्रमसे छह पुञ्ज अपने सर्वोत्कृष्ट प्रमाणको प्राप्त होने तक बढाने चाहिए।

शंका-अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीवके यह जो उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणा होती है इसका स्वामी कौन जीव है?

समाधान-जो गुणित कर्मांशिक है और सबसे उत्कृष्ट शरीर अवगाहनासे युक्त है ऐसा अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीव उक्त उत्कृष्ट वर्गणाका स्वामी है।

यहाँ पर उत्कृष्ट वर्गणाकी पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं, असंख्यात लोकप्रमाण नहीं होती; क्योंकि, ऐसा स्वभाव है।

शंका-असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियाँ कहाँ पर होती हैं?

समाधान-मूली, महामत्स्य, थूहर और लतादिकायें होती हैं। (देखो सूत्र ९६)

एक एक पुलवीमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोद शरीरमें अनन्तानन्त निगोद जीव होते हैं। परन्तु उन जीवोंमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव गुणितकर्मांशिक होते हैं तथा बाकीके सब जीव गुणितघोलमान होते हैं।

इस प्रकार बढाकर स्थित हुए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें और वृद्धि नहीं होती; क्योंकि, वहाँ स्थित हुए जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर सर्वोत्कृष्ट भावको प्राप्त हो गये हैं।

यह अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषायके उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणा क्षीणकषायके साथ

---

* ता० प्रतौ 'जदिसव्वजीवपदेसा' इति पाठः। ♠ अ० आ० का० प्रतिषु 'कथं पुण' इति पाठः। * ता० प्रतौ 'एक्केक्कपुलवियासु संखेज्जलोगमेत्ताणि' इति पाठः।
♣ ता० का० प्रत्योः 'वड्ढिदूण ट्ठिद-' इति पाठः।

कसाएण सह घेत्तव्वा; एगबंधणबद्धत्तादो। खीणकसाओ अणिगोदो कधं बादरणिगोदो होदि ? ण, पाधण्णपदेण तस्स वि बादरणिगोदवग्गणाभावेण विरोहाभावादो। एदमेगं फद्दयं होदि।

संपहि बिदियफद्दयपरूवणं कस्सामो। तं जहा- अण्णो जीवो सव्वपयत्तेण खविदकम्मंसियलक्खणं काऊण सव्वजहण्णोरालियसरीरोगाहणाए खीणकसायदुचरिमसमए अच्छिदो। एवमच्छिदस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि होंति। एत्थ संपहि खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव अत्थि। अवसेसा पुण सव्वे खविदघोलमाणा चेव। कुदो ? खविदकिरियाए एक्कम्हि समए सुट्ठु जदि जीवा बहुआ होंति तो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति त्ति णियमुवलंभादो। एदेसिमणंताणं जीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गले तेसिमणंताणंतविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गले च घेत्तूण बिदियफद्दयस्स आदी होदि। कुदो ? पढमफद्दयं पेक्खिदूण अणंताणि ट्ठाणाणि अंतरिदूणुप्पण्णत्तादो।

एत्थ दोण्णं फद्दयाणमंतरपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा- खीणकसायचरिमसमयसव्वजहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो तस्सेव चरिमसमयउक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि अब्भहिया। कुदो एदं णव्वदे?

ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि, वह एक बन्धनबद्ध है।

शंका- क्षीणकषाय जीव निगोदपर्यायरूप नहीं है, इसलिए वह बादर निगोद कैसे हो सकता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा उसे भी बादर निगोद वर्गणा होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

यह एक स्पर्धक है।

अब दूसरे स्पर्धकका कथन करते हैं यथा--अन्य जीव सब प्रकारके प्रयत्नसे क्षपित कर्मांशिक विधिको करके सबसे जघन्य औदारिक शरीरकी अवगाहना द्वारा क्षीणकषायके द्विचरम समयमें स्थित हुआ। इस प्रकार स्थित हुए इस जीवके आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र पुलवियाँ होती हैं। एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीर होते हैं। यहाँ क्षपित कर्मांशिक विधिसे आए हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र ही होते हैं, बाकीके सब जीव क्षपित घोलमान ही होते हैं; क्योंकि, एक समयमें क्षपित किया करनेवाले यदि बहुत जीव होते हैं तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं, इस प्रकारका नियम पाया जाता है। इन अनन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु पुद्गलोंको तथा उनके अनन्तानन्त विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंको ग्रहण करके स्पर्धकका प्रारम्भ होता है; क्योंकि, प्रथम स्पर्धकको देखते हुए अनन्त स्थानोंके अन्तरालसे इसकी उत्पत्ति हुई है।

यहाँ दोनों स्पर्धकोंके अन्तरप्रमाणका कथन करते हैं यथा-क्षीणकषायके अन्तिम समयमें सबसे जघन्य बादर निगोद वर्गणाके जीवोंसे उसीके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाके जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक होते हैं।

अविरुद्धाइरियवयणादो। पुणो एदे जीवे अणंताणंतकम्म-णोकम्मपोग्गलेहि उवचिये अवणिय पुध ट्ठविदे अवणिदसेसो जहण्णबादरणिगोदवग्गणापमाणं होदि। पुणो खीणकसायचरिमसमयजहण्णबादरणिगोदवव्वग्गणजीवेहिंतो तस्सेव दुचरिमसमयजहण्ण-बादरणिगोदवग्गणजीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? खीणकसायचरिमसमयजहण्ण-बादरणिगोदवग्गणजीवेसु अणंताणंतेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागेण खंडिदेसु एय-खंडमेत्तेण, तम्मि समखंडे दिण्णे तदवट्ठाणादो। अवणिदे उभयत्थ सेसजीवपमाणं सरिसं होदि। संपहि चरिमसमए अवणिदजीवेहिंतो दुचरिमसमए अवणिदजीवा अणंतगुणा। कुदो? चरिमवग्गणजीवाणमसंखेज्जदिभागे दुचरिमविसेसे सव्वजीवरासिस्स अणंत-पढमवग्गमूलुवलंभादो। जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवसहिदचरिमविसे-सादो दुचरिमसमयत्थखीणकसायविसेसो अणंतगुणो तेण तत्थ विसेसे असंखेज्जलोग-मेत्तसरीराणि। एक्केक्कम्हि सरीरे दिव्वअणंताणंतजीवा अत्थि। एदेसु चरिमविसेस-जीवेसु अवणिदेसु जं सेसं तमणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि होदि। एत्तिय-मंतरिय उप्पण्णत्तादो बिदियं फद्दयं जादं। जदि अंतरं णत्थि तो एगं चेव फद्दयं होज्ज; कमवड्ढिदंसणादो। एवं फद्दयंतरं जीवाणं चेव ण बादरणिगोदट्ठाणाणं; तेसिं

शंका–यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान–अविरुद्धभाषी आचार्योंके वचनसे जाना जाता है।

पुनः अनन्तानन्त कर्म और नोकर्म पुद्गलोंसे उपचित हुए इन जीवोंको अलग करके पृथक् स्थापित करनेपर अलग करनेसे जो शेष बचता है वह जघन्य बादर निगोद वर्गणाका प्रमाण होता है।

पुनः क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादरनिगोद द्रव्यवर्गणाके जीवोंसे उसीके द्विचरम समयमें जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणाके जीव विशेष अधिक होते हैं। कितने विशेष अधिक होते हैं? क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोद वर्गणाके अनन्तानन्त-जीवोंमें पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उतने विशेष अधिक होते हैं। इस एक भागको दूसरे स्पर्धकमेंसे घटा देनेपर उभयत्र शेष जीवोंका प्रमाण समान होता है। यहाँ चरम समयमें घटाए हुए जीवोंके द्विचरम समयमें घटाये हुए जीव अनन्तगुणे होते हैं; क्योंकि, चरम वर्गणाके जीवोंसे असंख्यातवें भागप्रमाण द्विचरम विशेषमें सब जीव-राशिके अनन्त प्रथम वर्गमूल उपलब्ध होते हैं। यतः पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंसे युक्त अन्तिम विशेषसे द्विचरमसमय सम्बन्धी क्षीणकषायका विशेष अनन्तगुणा होता है, इसलिए उस विशेषमें असंख्यात लोकमात्र शरीर होते हैं। तथा एक एक शरीरमें अनन्तानन्त जीव स्थित होते हैं। इनमेंसे चरमविशेष जीवोंके घटा देनेपर जो शेष रहता है वह सब जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूल प्रमाण होता है। इतने अन्तरसे उत्पन्न होनेके कारण द्वितीय स्पर्धक हुआ है। यदि अन्तर नहीं मानें तो एक ही स्पर्धक होवे, क्योंकि, क्रमवृद्धि देखी जाती है। यह स्पर्द्धकों का अन्तर जीवोंका ही होता है, बादर निगोद स्थानोंका नहीं, क्योंकि, जघन्य स्थानसे लेकर

अ० आ० का० प्रतिषु 'पमाणसरिसं' इति पाठः। ता० अ० प्रत्योः 'एवं चेव' इति पाठः।

जहण्णट्ठाणप्पहुडि जावुक्कस्स ठाणे त्ति णिरंतरं वड्ढिदाणमेगं फद्दयं मोत्तूण फद्दयंतर-भावादो । भावे वा धुवसुण्णवग्गणाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ बहुवीयो वा* होंति ; ण च एदं; तहाणुवलंभादो । तम्हा दुचरिमजहण्णवग्गणा चरिमुक्कस्स-वग्गणादो असंखेज्जगुणहीणा♠ त्ति तत्थ चेवेदिस्से अंतब्भावो✱ वत्तव्वो ।

संपहि खीणकसायचरिमखवगं मोत्तूण इमं खीणकसायदुचरिमसमयखवगं घेत्तूण पुणो एत्थतणसव्वजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजे पुध पुध ट्ठविय ट्ठाणपरू-वणं सेचीयवक्खाणाइरियपरूविदं वत्तइस्सामो । तं जहा-अण्णो जीवो खविदकम्मंसिय-लक्खणेण आगंतूण खीणकसायदुचरिमसमए एगेगोरालियसरीरविस्ससुवचयपरमाणु-णा *अब्भहियं कादूण अच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । बेविस्ससुवचयपरमा-णुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु बिदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । चदुसु विस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढि-देसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि* । एवं वड्ढिदेवि कम्मवहारिय वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजहण्णोरालियसरीरपरमाणू अप्पणो उक्कस्सविस्ससुवचयप-माणं पत्ता त्ति । पुणो सव्वजहण्णतेजासरीरपरमाणूणं विस्ससुवचया एवं चेव वड्ढा-वेदव्वा जाव अप्पणो उक्कस्सविस्ससुवचयपमाणं पत्ता त्ति । पुणो जहण्णकम्मइय-

---

उत्कृष्ट स्थान तक निरन्तर वृद्धिको प्राप्त हुए उनका एक स्पर्धकको छोड़कर स्पर्द्धकान्तर नहीं होता । यदि दूसरे स्पर्धकका सद्भाव माना जाय तो ध्रुवशून्यवर्गणायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या बहुत प्राप्त होती हैं । परन्तु ऐसा है नहीं; क्योंकि, इस प्रकारकी उपलब्धि नहीं होती । इसलिए द्विचरम जघन्य वर्गणा अन्तिम उत्कृष्ट वर्गणासे असंख्यातगुणी हीन होती है, अतः उसीमें इसका अन्तर्भाव कहना चाहिए ।

अब क्षीणकषायके अन्तिम समयवर्ती क्षपकको छोड़कर क्षीणकषायके द्विचरम समयवर्ती इस क्षपकको ग्रहण करके पुनः यहां रहनेवाले सब जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मण- See ५.१०९ १४३ शरीरोंके छह पुञ्जोंको पृथक् पृथक् स्थापित करके सेचीय व्याख्यानाचार्यके द्वारा कही गई ५.१५४ स्थानप्ररूपणाको बतलाते हैं यथा—

कोई एक अन्य जीव क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर क्षीणकषायके द्विचरम समयमें एक एक औदारिकशरीरके विस्रसोपचय परमाणुसे अधिक करके स्थित हुआ तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । दोन विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । चार विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार प्रथम स्पर्धकमें बढ़ाते हुए क्रमको ध्यानमें रखकर सबसे जघन्य औदारिकशरीर परमाणु-ओंके अपने उत्कृष्ट विस्रसोपचयके प्रमाणको प्राप्त होने तक बढ़ाना चाहिए । पुनः सबसे जघन्य तैजसशरीर परमाणुओंके विस्रसोपचय अपने उत्कृष्ट विस्रसोपचयके प्रमाणको प्राप्त होने तक इसी प्रकार बढ़ाने चाहिए । पुनः जघन्य कार्मणशरीर परमाणुओंके जघन्य विस्रसोपचय अपने

✱ अ० प्रतौ 'बहुविहो वा' इति पाठः । ♠ मुद्रित प्रतौ 'अणंतगुणहीणा' इति पाठः ।
✱ अ० प्रतौ 'चेवेदिस्से दु अंतब्भावो' इति पाठः ।

सरीरपरमाणूणं जहण्णविस्ससुवचया एवं चेव वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्सविस्ससुवचयपमाणं पत्ता त्ति । एवं वड्ढाविदे खीणकसायदुचरिमसमयखविदकम्मंसियखविदघोलमाणलक्खणेणागदसव्वजीवाणं ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि विस्ससुवचएहि उक्कस्सभावं गदाणि ।

पुणो विस्ससुवचयएसु वड्ढी णत्थि त्ति अण्णो जीवो विस्ससुवचयसहिदेगोरालियपरमाणुणा पुव्वुत्तोरालियसरीरमब्भहियं काऊण अच्छिदो ताधे सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि अंतरिदूणेदं ट्ठाणमुप्पज्जदि । पुणो णिरंतरमिच्छामो त्ति एगपरमाणुविस्ससुवचयपमाणेण पुव्वुत्तोरालियसरीरपुंजादो परिहीणेण पुव्विल्लविस्ससुवचयसहिदएगपरमाणुणा वड्ढाविदे* णिरंतरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । चरिमफद्दयसमुप्पण्णट्ठाणाणि पेक्खिदूण पुण पुणरुत्तं । पुणो एगविस्ससुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । दोसु परमाणुसु वड्ढिदेसु बिदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं वड्ढावेदव्वं जाव अप्पप्पणो पुव्वमूणीकदा सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्ससुवचयपरमाणू ओरालियसरीरविस्ससुवचयएसु वड्ढिदा त्ति । पुणो पच्छा वड्ढिदपरमाणू विस्ससुवचएहि उक्कस्सो कायव्वो । एवं कदे एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि होंति । पुणो एदेण कमेण विस्ससुवचयसहिदमेगेगमोरालियपरमाणुं पवेसिय० २ वड्ढावेदव्वं जाव ओरालियसरीरपुंजम्मि उक्कस्सविस्ससुवचयसहिया अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता परमाणू वड्ढिदा त्ति ।

उत्कृष्ट विस्रसोपचयके प्रमाणको प्राप्त होने तक बढाना चाहिए । इस प्रकार बढाने पर क्षीणकषायके द्विचरम समय सम्बन्धी क्षपित कर्मांशिक और क्षपित घोलमान विधिसे आये हुए सब जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर अपने विस्रसोपचय रूपसे वृद्धिको प्राप्त होते हैं ।

पुनः विस्रसोपचयोंमें वृद्धि नहीं होती, इसलिए एक अन्य जीव लो जो विस्रसोपचयके साथ औदारिकशरीरके एक परमाणुसे पूर्वोक्त औदारिकशरीरको अधिक करके स्थित है तब सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर यह स्थान उत्पन्न होता है । पुनः निरन्तर स्थान लाना चाहते हैं इसलिए पूर्वोक्त औदारिकशरीर पुञ्जमेंसे एक परमाणु विस्रसोपचय प्रमाणसे हीन पूर्वोक्त विस्रसोपचय सहित एक परमाणुकी वृद्धि करने पर निरन्तर रूपसे अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । किन्तु अन्तिम स्पर्धकमें उत्पन्न हुए स्थानोंको देखते हुए वह पुनरुक्त होता है । पुनः एक विस्रसोपचय परमाणुकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । दो परमाणुओंकी वृद्धि होने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार अपने अपने पहले कम किए गए सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंके औदारिकशरीर विस्रसोपचयोंमें बढ़ने तक बढाते जाना चाहिए । पुनः पीछे बढाए हुए परमाणुओंको विस्रसोपचयोंसे उत्कृष्ट करना चाहिए । ऐसा करने पर इतने ही अपुनरुक्त स्थान उपलब्ध होते हैं । पुनः इस क्रमसे औदारिकशरीर पुञ्जमें उत्कृष्ट विस्रसोपचयके साथ अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र परमाणुओंकी वृद्धि होने तक विस्रसोपचयसहित एक एक औदारिकशरीर

---

* ता० प्रतौ ' एगपरमाणुणा वड्ढिद वड्ढिदे ' इति पाठः ।

एवं जाणिदूण छप्पि पुंजा परिवाडीए वड्ढावेदव्वा जाव चरिमसमयफद्दय[ओ]जीवाणमुक्कस्सट्ठाणपमाणं दुचरिमफद्दयजीवाणं छप्पुंजा पत्ता त्ति । पुणो एदस्स परमाणुत्तरकमेण ओरालियसरीरपुंजस्सुवरि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता परमाणू सगविस्ससुवचयसहिदा अपुणरुत्तट्ठाणुप्पत्तिणिमित्ता वड्ढावेदव्वा । वड्ढंता वि केत्तिया इदि वुत्ते एगबादरणिगोदजीवस्स जत्तिया विस्ससुवचयसहिदोरालियपरमाणू संभवंति तत्तियमेत्ता ।

तदो अण्णो जीवो पुव्वुत्तोरालियसरीरदव्वमेत्तेणोरालियसरीरमब्भहियं काऊण पुणो विस्ससुवचयसहिदेगपरमाणुणा तेजासरीर[*]मब्भहियं काऊणच्छिदो ताधे सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि अंतरिदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो णिरंतरमिच्छामो त्ति इममागदपरमाणुं पण्णाए पुध दुविय पुणो एवस्स जत्तिया विस्ससुवचयपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्तविस्ससुवचयएहि ऊणतेजइयसरीरपुंजम्मि पुव्वमवणिदपरमाणुम्हि वड्ढिदे णिरंतरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो एगविस्ससुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णेगमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । दोसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु बिदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि होंति । पुणो एवं वड्ढावेदव्वं जाव

परमाणुको प्रवेश कराकर बढाना चाहिए । इस प्रकार जानकर छहों पुञ्ज अन्तिम समयवर्ती स्पर्धक जीवोंके उत्कृष्ट स्थान प्रमाणको द्विचरम समय सम्बन्धी स्पर्धक जीवोंके छह पुञ्ज प्राप्त होने तक आनुपूर्वी क्रमसे बढाना चाहिए । पुनः इस औदारिकशरीरके पुञ्जके ऊपर एक परमाणु अधिकके क्रमसे अपने विस्रसोपचयसहित अपुनरुक्त स्थानोंको उत्पन्न करनेके लिए अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण परमाणु बढाने चाहिए । बढाते हुए कितने बढाने चाहिएं ऐसा पूछने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके विस्रसोपचयसहित जितने औदारिक परमाणु सम्भव हैं उतने बढाने चाहिए ।

अनन्तर एक अन्य जीव लीजिए जो पुर्वोक्त औदारिक शरीरके द्रव्यमात्र एक औदारिकशरीरको अधिक करके तथा विस्रसोपचय सहित एक परमाणुके द्वारा तैजसशरीरको अधिक करके अवस्थित है तब सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । पुनः निरन्तर स्थान चाहते हैं इसलिए इस आये हुए परमाणुको बुद्धिके द्वारा पृथक् स्थापित करके पुनः इसके जितने विस्रसोपचय परमाणु हैं उतने विस्रसोपचयोंसे रहित तैजसशरीरके पुञ्जमें पहले अलग किये गये परमाणुके बढाने पर निरन्तर होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । पुनः एक विस्रसोपचय परमाणुके बढने पर अन्य एक अपुनरुक्त स्थान होता है । दो विस्रसोपचय परमाणुओंके बढने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन विस्रसोपचय परमाणुओंके बढने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढने पर इतने ही अपुनरुक्त स्थान लब्ध होते हैं ।

[ओ] म० प्रतौ ' चरिमसमयफद्दय ' इति पाठः । [*] ता० प्रतौ '-परमाणुतेजासरीर- इति पाठः ।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजापरमाणू सव्वजीवेहि अणंत-गुणमेत्ता तेजाविस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति। वड्ढंता वि केत्तिया त्ति वुत्ते एगबादरणिगोदस्स जीवस्स तेजासरीरम्हि जत्तिया विस्सासुवचयसंजुत्ता परमाणू अत्थि तेत्तियमेत्ता।

पुणो अण्णो जीवो पुव्व☼विहाणेणागंतूण खीणकसायदुचिरमसमए ओरालिय-तेजासरीराणि पुव्वुत्तवड्ढिददव्वेण अहियाणि काऊण पुणो कम्मइयसरीरं विस्सासुव-चयसंजुत्तेगकम्मपरमाणुणा अब्भहियं कादूणच्छिदो ताधे सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्त-ट्ठाणाणि अंतरिदूण अण्णट्ठाण♥मुप्पज्जदि। पुणो णिरंतरमिच्छामो त्ति इममागदविस्सासुवचयसहिदपरमाणुं पण्णाए पुध दुविय एगपरमाणुविस्सासुवचयपमाणेण परि-हीणकम्मइयसरीरपुंजम्मि पुव्वमवणिदे ✿परमाणुम्हि वड्ढिदे परमाणुत्तरं होदूण अण्ण-मपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो एगकम्मइयविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरु-त्तट्ठाणं होदि। दोसु✤ कम्मइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु बिदियमपुणः-रुत्तट्ठाणं होदि। एवं णेयव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति। ताधे एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लद्धाणि होंति। पुणो एवमेगेग-

---

पुनः इस प्रकार अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण तैजसशरीरके परमाणु और सब जीवोंसे अनन्तगुणे तैजसशरीरके विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक बढ़ाते जाने चाहिए। इसप्रकार बढ़ाते हुए वे कितने हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके तैजसशरीरमें जितने विस्रसोपचय सहित परमाणु हैं वे उतने हैं।

पुनः एक अन्य जीव लीजिए जो पूर्वोक्त विधिसे आकर क्षीणकषायके द्विचरम समयमें औदारिक और तैजसशरीरको पूर्वोक्त बढ़ हुए द्रव्यसे अधिक करके तथा कार्मणशरीरको विस्रसोपचय सहित एक कर्मपरमाणुसे अधिक करके स्थित है तब सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानों-का अन्तर देकर अन्य स्थान उत्पन्न होता है। पुनः निरन्तर स्थान चाहते हैं इसलिए इस आये हुए विस्रसोपचय सहित एक परमाणुको बुद्धिसे अलग स्थापित करके एक परमाणु विस्रसोप-चयके प्रमाणसे हीन कार्मणशरीरके पुञ्जमें पहले निकले हुए परमाणुके मिलाने पर एक परमाणु अधिक होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः एक कार्मण विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दो कार्मण विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुण विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए। तब इतने ही अपुनरुक्त स्थान लब्ध होते हैं। पुनः इस प्रकार एक एक विस्रसोपचयसहित कर्मपरमाणुका पुनः पुनः प्रवेश

☼ ता० प्रतौ 'जीवो वि पुव्व-' इति पाठः। ♥ अ० का० प्रत्योः 'अण्णट्ठाण-' इति पाठः। ✿ ता० आ० का० प्रतिषु 'पुव्ववणिद-' इति पाठः। ✤ ता० प्रतौ 'परमाणुत्तरं होदूण अण्ण-मपुणरुत्तट्ठाणं होदि। दोसु' इति पाठः।

विस्सासुवचयसहिदकम्मपरमाणुं पवेसिय प० २ णेयव्वं जाव कम्मइयसरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता कम्मपरमाणू विस्सासुवचयसहिदा वड्ढिदा त्ति । पुणो एदे वड्ढिदपरमाणू केत्तिया? एगबादरणिगोदजीवस्स कम्मइय-सरीरम्मि जत्तिया विस्सासुवचयसहियकम्मपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता । एवं वड्ढिदूण-ट्ठिदे पुणो अण्णो खीणकसायदुचरिमसमयबादरणिगोदजीवो खवियकम्मंसियलक्खणेण आगंतूण खीणकसायदुचरिम-समए बादरणिगोदजीवेण अब्भहियं काऊणच्छिदो ताधे पुणरुत्तट्ठाणं होदि; पुव्व-कमेण वड्ढाविदपरमाणूणमेत्थ एगजीवम्मि उवलंभादो । पुणो एदस्सुवरि एगपरमाणु-म्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं पुव्वं व वड्ढावेदव्वं जाव अण्णेगजीवस्स ओरा-लियतेजा- कम्मइयसरीरपरमाणू सविस्सासुवचया पविट्ठा त्ति । तदो पुव्वविहाणेण बिदियो जीवो पवेसियव्वो । एवमेदेण कमेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा परिवा-डीए पवेसियव्वो । णवरि खीणकसायचरिमसमए पविट्ठजीवेहिंतो दुचरिमसमए पविट्ठ-जीवा विसेसाहिया होंति । कुदो? चरिम-दुचरिमजीवविसेसाणमेत्थ दंसणादो । केत्तिय-मेत्तो विसेसो? चरिमसमयविसेसस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । एदेसु जीवेसु परमाणुत्तरकमेण अण्णाणि वि अपुणरुत्तट्ठाणाणि छप्पुंजे अस्सिदूण उप्पादेदव्वाणि जावप्पणो उक्कस्सत्तं पत्ताणि त्ति । एवं चिराणजीवपरमाणुपोग्गलेसु संपहि पविट्ठजीवपरमाणुपोग्गलेसु च वड्ढिदेसु दुचरिमसमयबादरणिगोदवग्गणा उक्कस्सा होदि । पुणो एत्थ आवलियाए

कराकर कार्मणशरीरके पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र विस्रसोप-चयसहित कर्मपरमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए । पुनः ये बढे हुए परमाणु कितने हैं? एक बादर निगोद जीवके कार्मणशरीरमें जितने विस्रसोपचयसहित कर्मपरमाणु हैं उतने हैं । इस प्रकार बढाकर स्थित होनेपर पुनः अन्य जीव क्षपितकर्मांशिकविधिसे आकर क्षीण-कषायके द्विचरम समयमें बादर निगोद जीवसे अधिक कर स्थित है तब पुनरुक्त स्थान होता है। क्योंकि, पूर्व क्रमसे बढाये हुए परमाणु यहाँ एक जीवमें उपलब्ध होते हैं । पुनः इसके ऊपर एक परमाणुके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता हैं । इस प्रकार अन्य एक जीवके औदारिक तैजस और कार्मणशरीरके परमाणु अपने विस्रसोपचयसहित प्रविष्ट होने तक पहलेके समान बढाना चाहिए । अनन्तर पूर्व विधिसे दूसरा जीव प्रविष्ट करना चाहिए । इस प्रकार इस क्रमसे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव क्रमसे प्रविष्ट कराने चाहिए । इतनी विशेषता है कि क्षीण-कषायके अन्तिम समयमें प्रविष्ट हुए जीवोंसे द्विचरम समयमें प्रविष्ट हुए जीव विशेष अधिक होते हैं, क्योंकि, चरम और द्विचरम सम्बन्धी जीवोंका विशेष यहाँ दिखाई देता है। विशेषका प्रमाण क्या है? अन्तिम समयमें जितना विशेष होता है उसका असंख्यातवाँ भाग यहाँ विशषका प्रमाण है । इन जीवोंमें एक परमाणु अधिकके क्रमसे अपने उत्कृष्ट स्थानके प्राप्त होने तक छह पुञ्जोंका आश्रय लेकर अन्य भी अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न करने चाहिए । इस प्रकार जीवके पुराने परमाणु पुद्गलोंमें तत्काल प्रविष्ट हुए जीव परमाणु पुद्गलोंके बढाने पर द्विचरम

☼ ता०प्रतौ 'पुव्वकमेण' इति पाठः ।

असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ । एक्केक्कम्मि पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्तबादर-णिगोदसरीराणि । एक्केक्कम्हि सरीरे अणंताणंतजीवा च संभवंति । पुणो एदेसिं जीवाणं मज्झे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव गुणिदकम्मंसियजीवा । अवसेसा अणंता सव्वे जीवा गुणिदघोलमाणा । एत्थ खविदकम्मंसिओ खविदघोलमाणो☼ वा एगो वि णत्थि; उक्कस्सदव्वम्हि तेसिमत्थित्तविरोहादो । एवमेत्तियमेत्तदव्वं घेत्तूण बिदियं जीवफद्दयमुक्कस्सं होदि ।

संपहि तदियं फद्दयं वुच्चदे । तं जहा–एगो जीवो सव्वपयत्तेण ओरालियतेजा-कम्मइयसरीराणं खविदकम्मंसियलक्खणं काऊण खीणकसायचरिमसमए अच्छिदो ताधे जीवेहि अंतरिदूण अण्णस्स तदियजीवफद्दयस्स आदी होदि । संपहि एत्थंतरप-माणपरूवणं कस्सामो । तं जहा–दुचरिमसमयखीणकसायजहण्णबादरणिगोदवग्गणादो तस्सेव उक्कस्सदव्ववग्गणा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणजीवमेत्तो । पुणो एत्थ अधियजीवमेत्ते अवणिय पुध ट्ठविदे जं सेसं तं दुचरिमजहण्णवग्गणपमाणं होदि । पुणो एवम्हादो खीणकसायचरिमसमय-वग्गणाए विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? दुचरिमजहण्णवग्गणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडम्मि जत्तिया जीवा अत्थि

समयकी बादरनिगोदवर्गणा उत्कृष्ट होती है । पुनः यहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलविया है । एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण बादर निगोद शरीर हैं और एक एक शरीरमें अनन्तानन्त जीव सम्भव हैं । पुनः इन जीवोंमें गुणितकर्मांशिक जीव आवलिके असं-ख्यातवें भागप्रमाण ही हैं । बाकीके अनन्त सब जीव गुणितघोलमान हैं । यहां क्षपितकर्मांशिक और क्षपितघोलमान एक भी जीव नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यमें उनका अस्तित्व होनेमें विरोध है । इस प्रकार मात्र इतने द्रव्यको ग्रहण कर दूसरा जीव स्पर्धक उत्कृष्ट होता है ।

अब तीसरे स्पर्धकका कथन करते हैं । यथा–एक जीव सब प्रकारके प्रयत्नसे औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरको क्षपितकर्मांशिकरूप करके क्षीणकषायके त्रिचरम समयमें अवस्थित है तब जीवोंसे अन्तर होकर अन्य तृतीय जीव स्पर्धककी आदि होती है । अब यहां अन्तरके प्रमाणका कथन करते हैं । यथा–द्विचरम समयमें क्षीणकषायकी जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उसकी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणा विशेष अधिक होती है । विशेषका प्रमाण क्या है ? पल्यके असं-ख्यातवें भागप्रमाण जीवोंकी जितनी संख्या है वह विशेषका प्रमाण है । पुनः यहां अधिक जीवोंके प्रमाणको निकाल कर पृथक् स्थापित कर जो शेष रहे वह द्विचरम समयकी जघन्य वर्गणाका प्रमाण होता है । पुनः इससे क्षीणकषायकी त्रिचरम समयकी वर्गणामें जीव विशेष अधिक होते हैं । कितने अधिक होते हैं ? द्विचरम समयकी जघन्य वर्गणाको पल्यके असंख्यातवें भागसे खण्डित करने पर वहां एक खण्डमें जितने जीव होते हैं, उतने अधिक होते हैं । वहां

☼ ता० प्रतौ 'सव्वे जीवा, गुणिदघोलमाणो' आ० प्रतौ 'सव्वे गुणिदघोलमाणो' इति पाठः ।

तत्तियमेत्तेण । केत्तिया पुण तत्थ जीवा अत्थि ? अणंता । कुदो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण अणंतेसु जीवेसु भागे हिदेसु तत्थ अणंताणं चेव जीवाणमुवलंभादो । एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागमेत्तेसु दुचरिमवग्गणउक्कस्सविसेसजीवेसु अवणिदेसु सेसअणंतजीवा फद्दयंतरं होदि । असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि । एक्केक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंता जीवा चउत्थअंतरे अत्थि । एत्तियमंतरिदूण तदियफद्दयस्स आदी होदि । पुणो एत्थ पुव्वविहाणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागमेत्तजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गला अणंताणंतविस्सासुवचयेहि सह वड्ढावेदव्वा । एवं वड्ढिदे तदियफद्दयमुक्कस्संतरं होदि । एवं चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तम-अट्ठम-णवम-दसमादिफद्दयाणमंतरपमाणं विस्सासुवचयपरमाणूणं जीवाणं च पवेसणविहाणं जाणिदूण ओदारेदव्वं जाव असंखेज्जगुणसेडिमरणपढमसमयो त्ति । एवं वड्ढिदूणच्छिदे तदो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण विसेसाहियमरणचरिमसमए अच्छिदो । ताधे जीवेहि अंतरिदूण अण्णं फद्दयमुप्पज्जदि । पुणो एत्थ अंतरपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा-गुणसेडिमरणपढमसमयजहण्णफद्दयादो तस्सेव उक्कसफद्दयं विसेसाहियं । विसेसो पुण पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागमेत्ता जीवा । आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तफद्दएसु वड्ढिदसव्वे जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति त्ति कुदो णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो । तेणेत्थ विसेसे एगणिगोद-

---

कितने जीव हैं? अनन्त जीव हैं, क्योंकि, पल्यके असंख्यातवें भागका अनन्त जीवोंमें भाग देने पर वहां अनन्त जीव उपलब्ध होते हैं । यहाँ पर पल्यके असंख्यातवें भागमात्र द्विचरम वर्गणाके उत्कृष्ट विशेष जीवोंके निकाल देने पर शेष अनन्त जीव प्रमाण स्पर्धकका अन्तर होता है । निगोद शरीर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक निगोद शरीरमें अनन्तानन्त जीव चौथे अन्तरमें होते हैं । इतना अन्तर देकर तीसरे स्पर्धककी आदि होती है । पुनः यहाँ पूर्व विधिके अनुसार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके परमाणु पुद्गल अनन्तानन्त विस्रसोपचयोंके साथ बढाने चाहिए । इस प्रकार बढाने पर तीसरे स्पर्धकका उत्कृष्ट अन्तर होता है । इस प्रकार चौथे, पांचवें, छठे, सातवें, आठवें, नौवें और दसवें आदि स्पर्धकोंके अन्तर प्रमाणको तथा विस्रसोपचयसहित परमाणु और जीवोंकी प्रवेश-विधिको जानकर असंख्यात गुणश्रेणि मरणके प्रथम समयके प्राप्त होने तक उतारना चाहिए । इस प्रकार बढाकर स्थित होने पर तब अन्य जीव क्षपितकर्मांशिक विधिसे आकर विशेषाधिक मरणके अन्तिम समयमें स्थित है तब जीवोंसे अन्तर होकर अन्य स्पर्धक उत्पन्न होता है । पुनः यहां अन्तर प्रमाणका कथन करते हैं । यथा–गुणश्रेणिमरणके प्रथम समयके जघन्य स्पर्धकसे उसीका उत्कृष्ट स्पर्धक विशेष अधिक है । विशेष पल्यके असंख्यातवें भागमात्र जीव प्रमाण है ।

शंका–आवलिके असंख्यातवें भागमात्र स्पर्धकोंमें बढे हुए सब जीव पल्यके असंख्यातवें भागमात्र ही होते हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान–अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

इसलिए यहां पर विशेषमें एक निगोद शरीर भी नहीं है । इस अधिक द्रव्यको अलग

सरीरं पि णत्थि । एवमधियदव्वमवणिय पुध ट्ठवेयव्वं । असंखेज्जगुणसेडिमरणपढम-समयजहण्णफद्दयादो विसेसाहियमरणचरिमसमयजहण्णफद्दयं विसेसाहियं । केत्तिय-मेत्तेण ? गुणसेडिमरणपढमसमयजहण्णफद्दयं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडि-देगखंडमेत्तेण । एवम्हादो पुढिवल्लपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेसु अवणिदेसु जं सेसं तं फद्दयंतरं होदि । तत्थ अंतरे असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि । एक्के-क्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंता जीवा च अत्थि । पुणो एत्तियमेत्तमंतरिदूण विसेसाहियमरणचरिमसमयजहण्णफद्दयस्स आदी होदि ।

पुणो एत्थतणछप्पुंजा पुढिवल्लछप्पुंजेहिंतो असंखेज्जगुणहीणा त्ति कट्टु परमाणुत्तर-कमेण वड्ढावेदव्वा जाव गुणसेडिमरणपढमसमए फद्दयस्स उक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति । पुणो एवस्सुवरि एगोरालियविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । दोसु परमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तवियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगुत्तरकमेण ताव वड्ढावेयव्वं जाव खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवेगपरमाणुस्स① विस्सासुवचय-पुंजस्स पमाणं वड्ढिदे त्ति । एवं वड्ढिदूणच्छिदे तदो अण्णो जीवो पुव्वविहाणेणागंतूण विस्सासुवचयसंजुत्तेगपरमाणुणा ओरालियसरीरमइमहियं काऊण विसेसाहियमरण-चरिमसमए अच्छिदो ताधे सांतरट्ठाणमण्णमुप्पज्जदि । पुणो णिरंतरट्ठाणे इच्छिज्जमाण

करके पृथक् स्थापित करना चाहिए । असंख्यात गुणश्रेणिमरणके प्रथम समयके जघन्य स्पर्धकसे विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयका जघन्य स्पर्धक विशेष अधिक है । कितना अधिक है ? गुणश्रेणि मरणके प्रथम समयके जघन्य स्पर्धकको पल्यके असंख्यातवें भागसे खण्डित करने पर जो एक खण्ड लब्ध आवे उतना अधिक है । इसमेंसे पहलेके पल्यके असंख्यातवें भागमात्र जीवोंके अलग कर देने पर जो शेष रहता है वह स्पर्धकका अन्तर होता है । उस अन्तरमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त जीव होते हैं । पुनः इतना मात्र अन्तर देकर विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयके जघन्य स्पर्धककी आदि होती है ।

पुनः यहांके छह पुञ्ज पहलेके छह पुञ्जोंसे असंख्यातगुणे हीन होते हैं ऐसा समझ कर गुणश्रेणिमरणके प्रथम समयमें उत्कृष्ट प्रमाणके प्राप्त होने तक एक परमाणु अधिकके क्रमसे बढ़ाना चाहिए । पुनः इसके ऊपर एक औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणु बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । दो परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार क्षपित कर्मांशिक विधिसे आये हुए जीवके एक परमाणुके विस्रसोपचय पुञ्जके प्रमाण तक वृद्धि होने तक एक अधिकके क्रमसे बढ़ाना चाहिए । इस प्रकार बढ़ाकर स्थित होने पर तब अन्य जीव पूर्व विधिसे आकर विस्रसोपचयसहित एक परमाणुसे औदारिकशरीरको अधिक करके विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य सान्तर स्थान उत्पन्न होता है । पुनः निरन्तर अध्वान इच्छित होने पर एक परमाणु विस्रसोपचय प्रमाणसे न्यून अवस्थान विस्रसोपचयसंयुक्त एक परमाणुकी वृद्धि होने पर निरन्तर होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता

① ता० प्रतौ '-जीवेगपरमाणुस्स' इति पाठः ।

एगपरमाणुविस्सासुवचयपमाणेणूणावत्थाए विस्सासुवचयसंजुत्तेगपरमाणुम्हि वड्ढिदे णिरंतरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । पुणो अण्णेगोरालियविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढिदे एत्तियं गि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि सेचीयादो लद्धाणि होंति । एवमणेण विहाणेण विस्सासुवचयसहियएगेगपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव एगबादरणिगोदजीवस्स ओरालियसरीरम्हि जत्तिया ओरालियसरीरविस्सासुवचयसहियपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढिदे पुणो तेजा-कम्मइयपरमाणू विस्सासुवचयसहिया वड्ढावेदव्वा । पुणो पुव्वविहाणेणेगो जीवो पवेसियव्वो । एवं जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा वड्ढावेदव्वा । पुणो सव्वेसिं जीवाणं परमाणुपोग्गलेसु विस्सासुवचय० परमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु विसेसाहियमरणचरिमसमयउक्कस्सफद्दयं । पुणो एत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ । एक्केक्कपुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीराणि । एक्केक्कम्मि णिगोदसरीरे अणंताणंतजीवा । एक्केक्कस्स जीवस्स ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरपरमाणू (सविस्सासुवचय) सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता अत्थि । एत्तियमेत्तदव्वं घेत्तूण विसेसाहियमरणचरिमसमयफद्दयं होदि । एवमोदारिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तफद्दयाणि लद्धाणि होंति । संपहि एत्तो हेट्ठा ओदारिज्जमाणे एगं चेव फद्दयं होदि । कुदो ? विसेसाहियमरणचरिमफद्दएण सह सयंभूरमणदीवस्स सयंपहणगिंदस्स

है । पुनः अन्य एक औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने पर एक एक विस्रसोपचय परमाणु बढाना चाहिए । इस प्रकार वृद्धि होने पर सेचीयरूपसे इतने ही अपुनरुक्त स्थान लब्ध होते हैं । इस प्रकार एक बादर निगोद जीवके औदारिकशरीरमें जितने औदारिकशरीरके विस्रसोपचयसहित परमाणु हैं उतने मात्र वृद्धि होने तक विस्रसोपचयसहित एक एक परमाणु बढाना चाहिए । इस प्रकार वृद्धि होने पर पुनः तैजसशरीर और कार्मणशरीरके परमाणु विस्रसोपचयसहित बढाने चाहिए । पुनः पूर्व विधिसे एक जीवका प्रवेश कराना चाहिए । इस प्रकार पल्यके असंख्यातवें भागमात्र जीव बढाने चाहिए । पुनः सब जीवोंके परमाणु पुद्गलोंके विस्रसोपचयसहित बढने पर विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्पर्धक होता है । पुनः यहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलविया है । एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर हैं । एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त जीव हैं और एक एक जीवके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके परमाणु विस्रसोपचयसहित सब जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । इतने मात्र द्रव्यको ग्रहण कर विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयका स्पर्धक होता है । इस प्रकार उतारने पर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्पर्धक लब्ध होते हैं । अब इससे नीचे उतारने पर एक ही स्पर्धक होता है, क्योंकि, विशेष अधिक मरणके अन्तिम स्पर्धकके साथ स्वयंभूरमण द्वीपके स्वयंप्रभ नगेन्द्रकी बाह्य दिशामें कर्मभूमिके प्रतिभागमें मूल, थूवर और

See ५, ६, १०

बाहिरविसाए कम्मभूमिपडिभागम्मि मूलयथूहल्लयादिसु सरिसबादरणिगोदवग्गणाए होणाए अहियाए च उवलंभादो। पुणो एदीए सरिसवग्गणं घेत्तूण तत्थ मूलयथूहल्लयादिसु एगोरालियविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। दोसु वड्ढिदेसु बिदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमणंताणंतेसु विस्सासुवचयपरमाणुपुग्गलेसु वड्ढिदेसु पुव्वविहाणेण तदो एगो ओरालियपरमाणू अविस्सासुवचय० वड्ढावेदव्वो। एवं ताव वड्ढावेदव्वं जाव विस्सासुवचयसहिदा ओरालियसरीरपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता त्ति। पुणो एदेणेव कमेण अणंताणंतविस्सासुवचयसहिदा अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजापरमाणू* वड्ढावेदव्वा। पुणो पुव्वविहाणेण कम्मइयसरीरपुंजम्हि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयसहिया अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता कम्मपरमाणू वड्ढावेदव्वा। पुणो पुव्वविहाणेण एगो जीवो पवेसियव्वो। पुणो तस्सेव ओरालिय-तेजा कम्मइयसरीराणि वड्ढावेदव्वाणि। एवं वड्ढाविज्जमाणे अणंताणंतबादरणिगोदजीवेसु पविट्ठेसु एगणिगोदसाधारणसरीरं पविसदि। असंखेज्जलोगमेत्तसरीरेसु पविट्ठेसु एगा पुलविया पविसदि। पुणो विस्सासुवचयसहियअभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु एगो जीवो पविसदि। एवमणंताणंतजीवेसु पविट्ठेसु एगं साधारणसरीरं पविसदि। एवमसंखेज्जलोगणिगोद-

लता आदिकमें सदृश बादरनिगोदवर्गणा हीन और अधिक उपलब्ध होती है। पुनः इसके सदृश वर्गणाको ग्रहण कर वहां मूल, थूवर और आर्द्रक आदिकमें एक औदारिक विस्रसोपचय परमाणु बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दो परमाणुओंके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार अनन्तानन्त विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर पूर्व विधिसे अनन्तर एक औदारिक परमाणु विस्रसोपचयसहित बढ़ाना चाहिए। इस प्रकार विस्रसोपचयसहित औदारिकशरीर परमाणु अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र होने तक बढ़ाने चाहिए। पुनः इसी क्रमसे अनन्तानन्त विस्रसोपचयसहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र तैजसशरीर परमाणु बढ़ाने चाहिए। पुनः पूर्व विधिसे कार्मणशरीर पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचयसहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र कर्मपरमाणु बढ़ाने चाहिए। इस प्रकार पूर्व विधिसे एक जीव प्रविष्ट कराना चाहिए। पुनः उसीके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर बढ़ाने चाहिए। इस प्रकार बढ़ाने पर अनन्तानन्त बादर निगोद जीवोंके प्रविष्ट होने पर एक निगोद साधारणशरीर प्रविष्ट होता है। असंख्यात लोकमात्र शरीरोंके प्रविष्ट होने पर एक पुलवी प्रविष्ट होती है। पुनः विस्रसोपचय सहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर परमाणु पुद्गलोंके बढ़ाने पर एक जीव प्रविष्ट होता है। इस प्रकार अनन्तानन्त जीवोंके प्रविष्ट होने पर एक साधारणशरीर प्रविष्ट होता है। इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण निगोद

* अ० का० प्रत्योः 'ओरालियसरीरपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजापरमाणू' इति पाठः।

सरीरेसु पविट्ठेसु विदिया पुलविया पविसदि। एवं तदिय-चउत्थ-पंचमादि जाव जगसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियासु वड्ढिदासु कम्मभूमिपडिभागसयंभूरमणदीवस्स मूलय-सरीरे जगसेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ एगबंधणबद्धाओ घेत्तूण उक्कस्स-बादरणिगोदवग्गणा होदि। जहण्णादो पुण उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा असंखेज्ज-गुणा। को गुणगारो? जगसेडीए असंखेज्जदिभागो। के वि आइरिया गुणगारो पुण ⊕आवलियाए असंखेज्जदिभागो होदि त्ति भणंति, तण्ण घडदे। कुदो? बादरणिगो-दवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं त्ति एदेण चूलिया-सुत्तेण सह विरोहादो। ण च सुत्तविरुद्धमाइरियवयणं पमाणं होदि; अइप्पसंगादो। णिगोदसद्दो पुलवियाणं वाचओ त्ति घेत्तूण एसा परूवणा परूविदा। संपहि बादर-णिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं त्ति एदस्स चूलियासुत्तस्स के वि आइरिया वक्खाणमेवं कुणंति। जहा-णिगोदाणमिदि वुत्ते घणावलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि त्ति घेत्तव्वो। पत्तेयसरीरउक्कस्स-वग्गणं घणावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणाए होदि त्ति भणिदं होदि? एवं वक्खाणं ण घडदे; सुहुमणिगोदवग्गणा जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं इदि एत्थ वि घणावलियाए असंखे-ज्जदिभागेण उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए गुणिदाए जहण्णसुहुमणिगोदवग्ग-

---

शरीरोंके प्रविष्ट होने पर दूसरी पुलवी प्रविष्ट होती है। इस प्रकार तीसरी, चौथी और पाँचवीं आदिसे लेकर जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंकी वृद्धि होने पर कर्मभूमि प्रतिभाग स्वयंभूरमण द्वीपकी मूलीके शरीरमें एक बन्धनबद्ध जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियों-को ग्रहण कर उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा होती है। अपनी जघन्यसे उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। कितने ही आचार्य गुणकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है ऐसा कहते हैं परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणामें निगोदोंका (पुलवियोंका) प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र है इस चूलिकासूत्रके साथ विरोध आता है। और सूत्रविरुद्ध आचार्योंका वचन प्रमाण नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा होने पर अतिप्रसंग दोष आता है। निगोद शब्द पुलवियोंका वाचक है ऐसा ग्रहण करके यह प्ररूपणा की गई है। अब 'बादरणिगोदव-गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं' इस चूलिकासूत्रका कितने ही आचार्य इस प्रकार व्याख्यान करते हैं। यथा-'णिगोदाणं' ऐसा कहने पर उसका अर्थ 'निगोद जीव' लेते हैं, पुलवियां नहीं। 'आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो' ऐसा कहने पर घनावलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार होता है ऐसा ग्रहण करते हैं। प्रत्येकशरीर उत्कृष्ट वर्गणाको घनावलिके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। किन्तु यह व्याख्यान घटित नहीं होता, क्योंकि, 'सुहुमणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं' यहां भी घनावलिके असंख्यातवें भागसे उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाके गुणित करने पर जघन्य

⊕ अ-आ- प्रत्योः 'घणावलिए' इति पाठः।

अंतिम भाग पु. ५९३ ५९४ सु. ६३
पु. ५९२ सु. ६३६
पु. ५९ सु. ६३६
पु. ५९३ सु. ६३७

णुप्पत्तिप्पसंगादो। ण च एवं; अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति आइरिय-परंपरागदुवदेसबलेण सिद्धत्तादो। अथवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं इदि एत्थतणणिगोदसद्दे[illegible] घेत्तव्वो त्ति घेत्तव्वो; उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाओ एगबंधणबद्धाओ अत्थि त्ति ववखाणण्णहाणुववत्तीदो। ण च रस-रुहिर-मांससरूवंडराणं खंधावयवाणं तत्तो पुधभावेण अवट्ठाणमत्थि जेणेगक्खंधे अणेगबंधणबद्धाणमसंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाण संभवो होज्ज तेणेसो चेवत्थो पहाणो त्ति घेत्तव्वो। एदम्मि अत्थे घेप्पमाणे अकसाय-गुणसेडिमरणद्धाए वुत्तगुणगारो ण विरुज्झदे; असंखेज्जगुणकमेण मदावसिट्ठ[illegible]-आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदेसु वि असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाणमुव-लंभादो। एवमेसा एगूणवीसविमा वग्गणा परूविदा ॥ १६ ॥

बादरणिगोदवदव्ववग्गणाणमुवरि धुवसुण्णदव्ववग्गणा णाम[illegible] । ६४

उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते तदियाए धुवसुण्णवग्गणाए सव्वजहण्णिया धुवसुण्णवग्गणा होदि। पुणो एदिस्से उवरि पदेसुत्तरकमेण सव्व-जीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण तदियधुवसुण्णवग्गणाए सव्वुक्कस्सवग्गणा होदि।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा आचार्य परम्परासे आये हुए उपदेशके बलसे सिद्ध है अथवा 'आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाण' इस प्रकार यहां पर निगोद शब्द अण्डरों और आवासकोंका वाचक लेना चाहिए, क्योंकि, ऐसा ग्रहण किये बिना उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणामें एक बन्धनबद्ध असंख्यात लोकमात्र पुलवियां पाई जाती हैं यह व्याख्यान नहीं बन सकता है। और स्कन्धोंके अवयवस्वरूप रस, रुधिर तथा मांसरूप अण्डरोंका उससे पृथक् रूपसे अवस्थान पाया नहीं जाता जिससे एक स्कन्धमें अनेक बन्धनबद्ध असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियोंकी सम्भावना होवे; इसलिए यही अर्थ प्रधान है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस अर्थके ग्रहण करने पर अकषाय गुणश्रेणि मरण कालका उक्त गुणकार विरोधको नहीं प्राप्त होता है, क्योंकि, असं-ख्यात गुणित क्रमसे मृत जीवोंसे अवशिष्ट रहे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निगोदोंमें भी असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियां उपलब्ध होती हैं। इस प्रकार यह उन्नीसवीं वर्गणा कही गई है।

See 4, 492.

बादरनिगोदवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ६४ ॥

उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सबसे जघन्य ध्रुवशून्यवर्गणा होती है। पुनः इसके ऊपर प्रदेश अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सबसे उत्कृष्ट वर्गणा होती है। अपनी जघन्यसे

---

(१) ता० प्रतौ 'मधा (दा) व मिट्ठ' अ० आ० प्रत्योः मदावसिट्ठं इति पाठः। ✡ ता० प्रतौ 'वग्गणा (णमुवरि धुवसुण्णदव्ववग्गणा) णाम' अ० का० प्रत्योः '–वग्गणाणमुवरि धुवसुण्ण णाम' आ० प्रतौ '–वग्गणागमुवरि धुवसुण्णदव्वगणा णाम' इति पाठः।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सगजहण्णादो सगुक्कस्सवग्गणा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जविभागो। उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ पुलवियाओ। जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त पुलवियाओ। तदो उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणादो हेट्ठा♠ सुहुमणिगोदजहण्णवग्गणाए अंतरेण विणा होदव्व मिदि ? एत्थ परिहारो वुच्चदे-बादरणिगोद उक्कस्सवग्गणाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्त पुलवियासु ट्ठिदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजहण्णवग्गणाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त पुलवियासु ट्ठिदजीवा असंखेज्जगुणा। कुदो ? बादरणिगोदवग्गणा सरीरेहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणासरीराणमंगुलस्स♣ असंखेज्जदिभागमेत्तगुणगारुवलंभादो तत्थतणजीवेहिंतो एत्थतणजीवाणं गुणगारस्स अंगुलस्स असंखेज्जविभागमेत्तत्तुवलंभादो वा। ण च एत्थ बाहयमत्थि साहयंत पुण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणगारस्स अण्णहाणुववत्तीदो। एवमेसा वीसदिमा वग्गणा २० परूविदा।

धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि सुहुमणिगोदवग्गणा णाम ॥ ९५ ॥

उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया सुहुमणिगोदवदव्ववग्गणा णाम होदि। सा पुण जले वा थले वा आगासे वा दिस्सदि;

उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

शंका—उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणामें जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती सुत्र 634 सुत्र 634 हैं। जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती हैं। इसलिए उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणासे नीचे सूक्ष्मनिगोद जघन्य वर्गणा अन्तरके बिना होनी चाहिए?

समाधान-यहां उक्त शंकाका परिहार करते हैं-- बादर निगोद उत्कृष्ट वर्गणाकी जगश्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियोंमें स्थित जीवोंसे सूक्ष्म निगोद जघन्य वर्गणाकी आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियोंमें स्थित जीव असंख्यातगुणे होते हैं, क्योंकि बादर निगोदवर्गणाके शरीरोंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके शरीरोंका गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण पाया जाता है। अथवा वहां रहनेवाले जीवोंसे यहां रहनेवाले जीवोंका गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण उपलब्ध होता है। और यहां इसका कोई बाधक भी नहीं है, किन्तु साधक ही है, अन्यथा अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार नहीं बन सकता है। इस प्रकार यह बीसवीं वर्गणा कही।

ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होती है ॥ ९५ ॥

उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा होती है। वह जलमें, स्थलमें और आकाशमें सर्वत्र दिखलाई देती है, क्योंकि बादरनिगोदवर्गणाके समान

♠ अ० प्रतौ 'अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणादो हेट्ठा' इति पाठः। ♣ अ० प्रतौ 'सेडीए असंखेज्जदिभागमेतपुलवियासु हुदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणासरीराणमंगुलस्स इति पाठः।

बादरणिगोदवग्गणाए व एदिस्से देसणियमाभावादो। णवरि एसा सव्वजहण्णिया सुहुमणिगोदवग्गणा खविदकम्मंसियलक्खणेण खविदघोलमाणलक्खणेण च आगदाणं चेव सुहुमणिगोदजीवाणं होदि ण अण्णेसिं; तत्थ दव्वस्स जहण्णत्तविरोहादो। एत्थ वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ। एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्ज-लोगमेत्तणिगोदसरीराणि। एक्केक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंतजीवा अत्थि। तेसु जीवेसु खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव। अवसेसा सव्वे खविदघोलमाणा। एदेसिमणंताणंतजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइय-सरीराणं कम्मणोकम्मविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गले घेत्तूण सव्वजहण्णिया सुहुमणिगोदवग्गणा होदि।

संपहि एदिस्से परूवणं कस्सामो। तं जहा-ओरालियसरीरम्हि एगविस्सासुव-चयपरमाणुम्हि वड्ढिदे बिदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि लद्धूण सव्वजीवाणमोरालिय-सरीराणि विस्सासुवचयेण उक्कस्साणि जादाणि त्ति। पुणो तेसिं चेव जीवाणं तेजा-सरीराणमुवरि एगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुण-मेत्तट्ठाणाणि लद्धूण विस्सासुवचएण तेसिं जीवाणं तेजासरीराणि उक्कस्साणि जादाणि त्ति। पुणो तेसिं चेव जीवाणं कम्मइयसरीरेसु एगेगविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि लद्धूण विस्सासुवचएण तेसिं कम्मइयसरीराणि उक्कस्साणि जादाणि त्ति। तदो अण्णस्स जीवस्स एदेसिमोरालिय-सरीराणमुवरि विस्सासुवचएण सह वड्ढिदेगपरमाणुस्स सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्त-

---

इसका देशनियम नहीं है। इतनी विशेषता है कि यह सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणा क्षपित कर्मांशकविधिसे और क्षपितघोलमानविधिसे आये हुए सूक्ष्म निगोद जीवोंके ही होती है, अन्यके नहीं, क्योंकि, वहां जघन्य द्रव्यके होनेमें विरोध है। यहां भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती है एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त जीव होते हैं। उन जीवोंमें क्षपितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं। शेष सब जीव क्षपितघोलमान होते हैं। इन अनन्तानन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके कर्म, नोकर्म और विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंको ग्रहण कर सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होती है।

अब इसका कथन करते हैं। यथा-औदारिकशरीरमें एक विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान प्राप्त कर सब जीवोंके औदारिकशरीर विस्रसोपचयके द्वारा उत्कृष्ट होने तक एक एक विस्रसोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए। पुनः उन्हीं जीवोंके तैजसशरीरोंके ऊपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान प्राप्त कर विस्रसोपचयके द्वारा उन जीवोंके तैजसशरीर उत्कृष्ट होने तक एक एक विस्र-सोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए। पुनः उन्हीं जीवोंके कार्मणशरीरोंके ऊपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान प्राप्त कर विस्रसोपचयके द्वारा उनके कार्मणशरीरोंके उत्कृष्ट होने तक एक एक विस्रसोपचय परमाणु बढ़ाना चाहिए। अनन्तर इन औदारिकशरीरोंके ऊपर विस्रसोपचयके

ट्ठाणाणि अंतरिदूणेदमण्णं ट्ठाण✽मुप्पज्जदि। पुणो णिरंतरमिच्छामो त्ति इमं विस्सासुवचयसहिवएगोरालियपरमाणुं पण्णाए पुध दुविय पुणो एगपरमाणुविस्सासुवचयमेत्तेण परिहीणपुव्विल्लोरालियसरीरपुंजम्हि पुव्वमवणिदपरमाणुम्हि पक्खित्ते एगपरमाणुत्तरं♠ होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो एगविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। बिदियविस्सा० बिदियमपुण०। तदियविस्सासु० तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगेगुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तओरालियसरीरविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु एत्तियाणि चेव अपुणरुत्तट्ठाणाणि लब्भंति। एवं बादरणिगोदवग्गणवड्ढावणविहाणेण ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेसु विस्सासुवचयसहिदअभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु एगो सुहुमणिगोदजीवो पवेसियव्वो। एवं बादरणिगोदवग्गणवड्ढाविदविहाणेण अणंताणंतसुहुमणिगोदजीवेसु पविट्ठेसु एगं साहारण(ं)णिगोदसरीरं पविसदि। एवमसंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरेसु पविट्ठेसु एगा पुलविया पविसदि। एवं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियासु वड्ढिदासु जले थले वा✡ सुहुमणिगोदवग्गणा सत्थाणुक्कस्सा होदि। पुणो एदीए सुहुमणिगोदवग्गणाए सह महामच्छसरीरे सुहुमणिगोदवग्गणा सरिसा लब्भदि। पुणो पुव्विल्लसुहुमणिगोदवग्गणं मोत्तूण एदीए सरिसमहामच्छसरीरसुहुम-

साथ बद्ध हुए एक परमाणुसे युक्त अन्य जीवके सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका अन्तर देकर यह अन्य स्थान उत्पन्न होता है। पुनः निरन्तर स्थान इच्छित हैं इसलिए इस विस्रसोपचयसहित एक औदारिक परमाणुको बुद्धिके द्वारा पृथक् स्थापित करके पुनः एक परमाणु विस्रसोपचयमात्रसे हीन पहलेके औदारिकशरीर पुञ्जमें पहले निकाले हुए परमाणुके मिला देने पर एक परमाणु अधिक होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः एक विस्रसोपचय परमाणुकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त होता है। दूसरे विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीसरे विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एक एक परमाणु अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर इतने ही अपुनरुक्त स्थान होते हैं। इस प्रकार बादर निगोद वर्गणाकी बढ़ानेकी विधिके अनुसार औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके विस्रसोपचयसहित अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र परमाणु पुद्गलोंके बढ़ने पर एक सूक्ष्म निगोद जीवको प्रविष्ट करना चाहिए। इस प्रकार बादरनिगोदवर्गणाके बढ़ानेकी विधिके अनुसार अनन्तानन्त सूक्ष्म निगोद जीवोंके प्रविष्ट होने पर एक साधारण निगोदशरीर प्रविष्ट होता है। इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीरोंके प्रविष्ट होने पर एक पुलवी प्रविष्ट होती है। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके बढ़ने पर जलमें व स्थलमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा स्वस्थान उत्कृष्ट होती है। पुनः इस सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके साथ महामत्स्यके शरीरमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा समान लब्ध होती है। पुनः पहलेकी सूक्ष्मनिगोद

✽ ता० प्रतौ '-मण्णाहा ट्ठाण-' इति पाठः। ♠ ता० आ० का० प्रतिषु 'पक्खित्तेपरमाणुत्तरं इति पाठः। ✡ ता० प्रतौ एवं (गं) साहारण-' अ० का० प्रत्योः 'एवं साहारण- इति पाठः। ✡ ता० आ० का० प्रतिषु 'जले वा' इति पाठः।

णिगोदवग्गणं घेत्तूण पुणो एदिस्से उवरि पुव्वविहाणेण आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्तपुलवियासु वड्डिदासु महामच्छसरीरे छण्णं जीवणिकायाणमेगबंधणबद्धाणं संघादे उक्कस्सिया सुहुमणिगोदवग्गणा दिस्सदि । संपहि एत्थ आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तपुलवियाओ । एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरे अणं-ताणंता जीवा च अत्थि । संपहि एत्थ गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति । सेससव्वजीवा गुणिदघोलमाणा । कुदो साभा-वियादो । संपहि जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदुक्कस्सवग्गणे त्ति ताव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तणिरंतरट्ठाणाणि लद्धूण एगं चेव फद्दयं होदि; अंत-राभावादो संपहि । एत्थतणासेसजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरकम्मणोकम्म[1]-विस्सासुवचयसहिदसव्वपरमाणू घेत्तूण सुहुमणिगोदउक्कस्सवग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एवमेसा एक्कवीसदिमा वग्गणा । २१ । परूविदा ।

सुहुमणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि ध्रुवसुण्णदव्ववग्गणा णाम ॥ ९६ ॥

उक्कस्ससुहुमणिगोदव्ववग्गणाए [illegible] णाए सव्वजहण्णवग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणं[♠]

वर्गणाको छोड़कर इसके समान महामत्स्यके शरीरकी सूक्ष्मनिगोदवर्गणाको ग्रहण कर पुनः इसके ऊपर पूर्व विधिके अनुसार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंकी वृद्धि होने पर महामत्स्यके शरीरमें एक बन्धनबद्ध छह जीव निकायोंके संघातमें उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा दिखलाई देती है । यहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां हैं और एक एक पुलविके असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीरमें अनन्तानन्त जीव हैं । यहां गुणित कर्मांशिक लक्षणसे आये हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं शेष सब जीव गुणित घोलमान होते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । अब जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे लेकर उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा पर्यन्त सब जीवोंसे अनन्तगुणे निरन्तर स्थान प्राप्त होकर एक ही स्पर्धक होता है, क्योंकि, मध्यमें कोई अन्तर नहीं है । अब यहांके समस्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके कर्म और नोकर्म विस्रसोपचयसहित सब परमाणुओंको ग्रहण करके उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होती है । यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इस प्रकार यह इक्कीसवीं वर्गणा कही ।

सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ९६ ॥

उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणामें एक अङ्कके मिलाने पर चौथी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सबसे जघन्य वर्गणा होती है । अनन्तर एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान

---

[1] ता० '-सरीरणोकम्म-' इति पाठः । [♠] अ-आ प्रत्योः 'गुणमेत्तमद्धाणं' इति पाठः ।

गंतूण धुवसुण्णदव्ववग्गणा उक्कस्सा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ जगसेडीओ । एवमेसा बावीसदिमा २२ वग्गणा परूविदा ।

धुवसुण्णवग्गणाणमुवरि महाखंधदव्ववग्गणा णाम ॥ ९७ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए उवरि एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया महाखंधदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमद्धाणं गंतूण उक्कस्सिया महाखंधदव्ववग्गणा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? सव्वजहण्णमहाखंधवग्गणाए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण अवहिरिदाए जं भागं लद्धं तत्तियमेत्तो विसेसो । एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ । तं जहा--

अणुसंखासंखेज्जा तधणंता वग्गणा अगेज्झाओ☼ ।
आहार-तेज-भासा-मण-कम्मइय-धुवक्खंधा ॥ ७ ॥
सांतरणिरंतरेदरसुण्णा पत्तेयदेह धुवसुण्णा ।
बादरणिगोदसुण्णा सुहुमा सुण्णा महाखंधो ॥ ८ ॥
अणु संखा संखगुणा परित्तवग्गणमसंखलोगगुणं ।
गुणगारो पंचण्णं अग्गहणाणं अभव्वणंतगुणो✤ ॥ ९ ॥
आहारतेजभासा मणेण कम्मेण वग्गणाण भवे ।
उक्कस्सस्स विसेसो अभव्वजीवेहि अधियो दु ॥ १० ॥

जाकर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणा होती है । यह जघन्यसे उत्कृष्ट असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगप्रतरका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो कि असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण है । इस प्रकार यह बाईसवीं वर्गणा कही ।

ध्रुवशून्यवर्गणाओंके ऊपर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ९७ ॥

उत्कृष्ट ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणामें एक अङ्कके मिलाने पर सबसे जघन्य महास्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती है । अनन्तर एक अधिकके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थान जाकर उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है । यह जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना है ? सबसे जघन्य महास्कन्ध वर्गणामें पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना विशेषका प्रमाण है । यहां उपयोगी पड़नेवाली गाथायें । यथा--

अणुवर्गणा, संख्याताणुवर्गणा, असंख्याताणुवर्गणा, अनन्ताणुवर्गणा, आहारवर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, तैजसवर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, भाषावर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, मनोवर्गणा, अग्राह्यवर्गणा, कार्मणवर्गणा, ध्रुवस्कन्धवर्गणा, सान्तरनिरन्तरवर्गणा, शून्यवर्गणा, प्रत्येकशरीरवर्गणा ध्रुवशून्यवर्गणा, बादरनिगोदवर्गणा, शून्यवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदवर्गणा, शून्यवर्गणा और महास्कन्धवर्गणा ॥ ७-८ ॥ इनमें अणुवर्गणा एक है । संख्याताणुवर्गणा संख्यातगुणी है । असंख्याताणुवर्गणा असंख्यातलोकगुणी है । अनन्ताणुवर्गणासहित पाँच अग्राह्यवर्गणाओंका गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा है ॥ ९ ॥ आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणामें अभव्योंसे अनन्तगुणे जीवोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना जघन्यसे उत्कृष्ट

☼ अ० प्रतौ वग्गणा असंखेज्जा' इति पाठः । ✤ अ० का० प्रत्योः 'अग्गहणाणामभव्वमणंतगुणो' इति पाठः ।

धुवखंधसांतराणं धुवसुण्णस्स य हवेज्ज गुणगारो ।
सीवेहि अणंतगुणो जहण्णियादो दु उक्कस्से ।। ११ ।।
पल्लासंखेज्जदिमो भागो पत्तेयदेहगुणगारो ।
सुण्णे अणंता लोगा थूलणिगोदे पुणो वोच्छं ।। १२ ।।
सेडिअसंखेज्जदिमो भागो सुण्णस्स अंगुलस्सेव ।
पलिदोवमस्स सुहुमे पदरस्स गुणो दु सुण्णस्स ।। १३ ।।
एदेसिं गुणगारो जहण्णियादो दु जाणा उक्कस्से ।
साहिअमिह महखंधेऽसंखेज्जदिमो दु पल्लस्स ।। १४ ।।

एसा एगसेडिवग्गणपरूवणा कदा ।

संपहि णाणासेडिवग्गणपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा–परमाणुपोग्गलवग्गणप्पहुडि जाव सांतरणिरंतरवग्गणाए उक्कस्सवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणं सरिसधणियवग्गणाओ अणंतपोग्गलवग्गमूलमेत्तीओ होंति । पुणो पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाओ जहण्णियाओ खविदकम्मंसियलक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए वट्टमाणकाले चत्तारि होंति । उक्कस्सियाओ गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए दोण्णि होंति । मज्झिमाओ अट्ठ लब्भंति । सव्वुक्कस्सियाओ पुण पयतेसरीरवग्गणाओ वल्लरिदाहे महावणदाहे देवकयच्छए वा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ लब्भंति । वट्टमाणकाले अजहण्णअणुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जलोगमेत्तीओ लब्भंति । बादर-

लानेके लिए विशेषका प्रमाण है ।। १० ।। ध्रुवस्कन्धवर्गणा, सान्तरनिरन्तरवर्गणा और प्रथम ध्रुवशून्यवर्गणामें अपने जघन्यसे उत्कृष्टका प्रमाण लानेके लिए गुणकारका प्रमाण सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ।। ११ ।। प्रत्येकशरीरवर्गणाका गुणकार पल्यका असंख्यातवां भाग है । दूसरी ध्रुवशून्यवर्गणामें गुणकार अनन्त लोक है । स्थूलनिगोद वर्गणाका गुणकार आगे कहते हैं ।। १२ ।। इसका गुणकार जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग है । तीसरी शून्यवर्गणाका गुणकार अङ्गुलका असंख्यातवां भाग है । सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें गुणकार पल्यका असंख्यातवां भाग है । चौथी शून्यवर्गणाका गुणकार जगप्रतरका असंख्यातवां भाग है ।। १३ ।। इन सब वर्गणाओंके ये गुणकार अपने जघन्यसे उत्कृष्ट भेद लानेके लिए जानने चाहिए । तथा महास्कन्धमें अपने जघन्यसे अपना उत्कृष्ट पल्यका असंख्यातवां भाग अधिक है ।। १४ ।।

इस प्रकार यह एकश्रेणिवर्गणाकी प्ररूपणा की ।

अब नानाश्रेणिवर्गणाकी प्ररूपणा करते हैं । यथा–परमाणु पुद्गल वर्गणासे लेकर सान्तर निरन्तरवर्गणाकी उत्कृष्ट वर्गणा तक इन वर्गणाओंकी सदृशधनवाली वर्गणायें अनन्त पुद्गल वर्गमूलमात्र होती हैं । पुनः जघन्य प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणायें क्षपितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें वर्तमान कालमें चार होती हैं । तथा उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणायें गुणितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए अयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें दो होती हैं । मध्यम प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणायें आठ प्राप्त होती हैं । सर्वोत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाय बल्लरीदाहके समय, महावनदाहके समय या देवकृत झाड़ीमें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं । वर्तमान कालमें अजघन्य अनुत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणायें असंख्यात लोकप्रमाण

णिगोदवग्गणाओ खीणकसायचरिमसमए जहण्णियाओ चत्तारि उक्कस्सियाओ दोण्णि मज्झिमाओ अट्ठ लभंति । ओघुक्कस्सियाओ पुण मूलयथूहल्लयादिसु पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ लभंति । सव्वुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाओ सरिसधणियाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीयो । बादरणिगोदवग्गणाओ सव्वुक्कस्सियाओ जगपदरस्सअसंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति त्ति जं भणिदं तमुवरि भण्णमाणजवमज्झपरूवणाए सह विरुज्झदे, तत्थ पत्तेयबादरसुहुमणिगोदवग्गणाओ सरिसधणियाओ जहण्णेण उक्कस्सेण य आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव सव्वत्थ होंति त्ति परूविदत्तादो । एत्थ उवदेसं लद्धूण णिण्णओ कायव्वो ।

महामच्छा सयंभूरमणसमुद्दे वट्टमाणकाले जेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता दीसंति तेणुक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए सरिसधणियवग्गणाओ पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति त्ति? ण, सव्वमहामच्छेसु उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा होदि त्ति णियमाभावादो पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तगुणिदकम्मंसियाणमभावादो च । गुणिदकम्मंसिया एगसमयम्हि उक्कस्सेण जेणावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव तेण सरिसधणियवग्गणाओ उक्कस्सट्ठाणे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेवे त्ति घेत्तव्वं । अभवसिद्धियपाओग्गजहण्णट्ठाणे वि खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा

पु. 15 6

पृ 156 प्राप्त होती हैं । बादरनिगोदवर्गणायें क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य चार, उत्कृष्ट दो 157-158
156 और मध्यम आठ प्राप्त होती हैं । ओघ उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाएँ मूलक, थूवर और लता अदरक
आदिकमें जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं । सदृश धनवाली सबसे उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणायें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । सबसे उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणायें जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ऐसा जो कहा है वह आगे कही जानेवाली यव- पृ. 503-5
पृ. 503 मध्यप्ररूपणाके साथ विरोधको प्राप्त होता है, क्योंकि, वहां पर प्रत्येकशरीरवर्गणायें, बादर-
430 निगोदवर्गणायें और सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें सर्वत्र जघन्य और उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण ही होती हैं ऐसा कथन किया है सो इस विषयमें उपदेशको प्राप्त करके निर्णय करना चाहिए।

शंका– स्वयंभूरमण समुद्रमें वर्तमान कालमें यतः जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण महामत्स्य दिखलाई देते हैं, अतः उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणायें जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, सब महामत्स्योंमें उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा होती है ऐसा नियम नहीं है तथा जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणितकर्मांशिक जीवोंका अभाव है, इसलिए भी जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणायें नहीं हो सकतीं। यतः एक समयमें गुणितकर्मांशिक जीव उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं अतः उत्कृष्ट सदृश धनवाली वर्गणायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए ।

अभव्यप्रायोग्य जघन्य स्थानमें भी क्षपितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए जीव आवलिके

आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव । तदो जवमज्झपरूवणाए भणिदुवदेसो पहाणो त्ति घेत्तव्वो । अजहण्णमणुक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले असंखेज्जलोगमेत्ताओ लब्भंति । सव्वजहण्णासुहुमणिगोदसरिसधणियवग्गणाओ जले थले आगासे वा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति । उक्कस्सियाओ पुण सरिसधणियसुहुमणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंतीओ* महामच्छसरीरेसु दिस्संति । अजहण्णमणुक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले असंखेज्जलोगमेत्तीयो होंति । महाखंधदव्ववग्गणा पुण वट्टमाणकाले एया चेव महाखंधो णाम । भवणविमाणट्ठपुढविमेरुकुलसेलादीणमेगीभावो महाखंधो । असंखेज्जजोयणाणि अंतरिदूण ट्ठिदाणं कथमेयत्तं ? ण, एयबंधणबद्धसुहुमेहि पोग्गलक्खंधेहि समवेदाणमंतराभावादो । एसा णाणासेडीए परूवणा कदा । एवं वग्गणापरूवणा समत्ता (१)

वग्गणाणिरूवणिदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ ९८ ॥

एदं पुच्छासुत्तं । एत्थ ण? परमाणुग्गहणं कायव्वं; परमसुहुमत्ताविणाभावि-एयपदेसियगहणेणेव तस्स सिद्धीदो ? ण एस दोसो; जेण सव्वाओ वग्गणाओ

द्र. ११९. ५०३ ५३०

आचार्यरत्न श्री सुविधिसागर जी महाराज

असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं । इसलिए यवमध्यप्ररूपणामें कहा गया उपदेश प्रधान है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । अजघन्य अनुत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाएँ वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण उपलब्ध होती हैं । सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोद सदृश धनवाली वर्गणाएं जल, स्थल और आकाशमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं । परन्तु उत्कृष्ट सदृश धनवाली सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ वर्तमान कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हुई महामत्स्यके शरीरमें दिखलाई देती हैं । अजघन्य अनुत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । परन्तु महास्कन्ध वर्गणा वर्तमान कालमें एक ही महास्कन्ध नामवाली होती है ।

शंका- असंख्यात योजनोंका अन्तर देकर स्थित हुए पुद्गलोंका एकत्व कैसे हो सकता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि एकबन्धनबद्ध सूक्ष्म पुद्गलस्कन्धोंसे समवेत पुद्गलोंका अन्तर नहीं पाया जाता ।

यह नानाश्रेणिकी अपेक्षा प्ररूपणा की ।
इस प्रकार वर्गणाप्ररूपणा समाप्त हुई ।

वर्गणानिरूपणाकी अपेक्षा एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ ९८ ॥

यह पृच्छासूत्र है ।

शंका- यहाँ परमाणु पदका ग्रहण नहीं करना चाहिए, क्योंकि परम सूक्ष्मत्वके अविनाभावी एकप्रदेशी पदके ग्रहणसे ही उसकी सिद्धि हो जाती है ?

* ता० प्रतौ 'होंति (ती) अ० आ० का० प्रतिषु 'होंति' इति पाठः । ? ता० प्रतौ 'एत्थतण (एत्थ ताव ण) परमाणु-' अ० आ० का० प्रतिषु 'एत्थतण परमाणु-' इति पाठः ।

परमाणुपोग्गलेहिंतो चेवुप्पण्णाओ तेण सव्वासिं वग्गणाणं परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा त्ति सण्णा। तिस्से वग्गणाए एयादिपदेसा जेण विसेसणं तेण दोण्णं पि गहणं कायव्वमिदि। खंधाणं विहडणं भेदो णाम। परमाणुपोग्गलसमुदयसमागमो संघादो णाम। भेदं गंतूण पुणो समागमो भेदसंघादो णाम। संपहि एसा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किं भेदेण उप्पज्जदि आहो संघादेण किं वा भेदसंघादेण त्ति पुच्छा कदा होदि। तण्णिच्छयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण ॥ ९९ ॥

दुपदेसियादिउवरिमवग्गणाणं भेदेणेव एयपदेसिया वग्गणा होदि; सुहुमस्स थूलभेदादो चेव उप्पत्तिदंसणादो। संघादेण भेदसंघादेण वा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा ण होदि; एदम्हादो हेट्ठा वग्गणाणमभावादो।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १०० ॥

सुगमं। मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०१ ॥

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यतः सब वर्गणायें परमाणु पुद्गलोंसे ही उत्पन्न हुई हैं, अतः सब वर्गणाओं की परमाणु पुद्गलद्रव्यवर्गणा यह संज्ञा है। तथा उस वर्गणाके एकादि प्रदेश यतः विशेषण हैं, अतः एकप्रदेशी और परमाणुपुद्गल इन दोनों पदोंका ग्रहण करना चाहिए।

स्कन्धोंका विभाग होना भेद है। परमाणुपुद्गलोंका समुदाय समागम होना संघात है। भेदको प्राप्त होकर पुनः समागम होना भेदसंघात है। यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे उत्पन्न होती है या संघातसे उत्पन्न होती है या क्या भेद-संघातसे उत्पन्न होती है, इस प्रकार इस सूत्र द्वारा पृच्छा की गई है। अब उसका निश्चय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं-

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे उत्पन्न होती है ॥ ९९ ॥

द्विप्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओंके भेदसे ही एकप्रदेशी वर्गणा होती है, क्योंकि, सूक्ष्मकी स्थूलके भेदसे ही उत्पत्ति देखी जाती है। संघातसे और भेद-संघातसे एकप्रदेशी परमाणु पुद्गलद्रव्यवर्गणा नहीं होती है, क्योंकि, इससे नीचे अन्य वर्गणाओंका अभाव है।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०० ॥

सुगम है।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे और नीचेके द्रव्योंके संघातसे तथा स्वस्थानमें भेद—संघातसे होती है ॥ १०१ ॥

जेण एयपदेसियपरमाणुपोग्गलाणं दोण्हं समुदयसमागमेण दुपदेसियवग्गणा होदि तेणेसा हेट्ठिल्लीणं संघादेण होदि । उवरिल्लीणं भेदेण वि होदि । तं जहा– तिपदेसियवग्गणाए एगपरमाणुपोग्गले विरोहिगुणपादुब्भावेण भेदं गदे दुपदेसियदव्ववग्गणा होदि । चदुपदेसियखंधादो दोसु परमाणुपोग्गलेसु विरोहिगुणपादुब्भावेण भेदं गदेसु दुपदेसियवग्गणा होदि । पंचपदेसियखंधादितिण्णिपरमाणुपोग्गलेसु भेदं गदेसु दुपदेसियवग्गणा होदि । एवमुवरिमसव्ववग्गणाणं भेदेण दुपदेसियवग्गणाए उप्पत्ती वत्तव्वा । तिपदेसियादिवग्गणाणं भेदेण दुपदेसियवग्गणा उप्पज्जदि त्ति कट्टु उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण त्ति भणिदं। एयपदेसियवग्गणाणं दोण्णं समुदयसमागमेणेव दुपदेसियवग्गणा समुप्पज्जदि त्ति हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण त्ति भणिदं। दुपदेसियखंधा भेदं गंतूण जदा पुव्वसंबद्धपरमाणुणा अण्णेण वा समागममागदा होंति तदा दुपदेसियवग्गणा सत्थाणेण भेदसंघादेण उप्पण्णे त्ति भण्णदि। दुपदेसियवग्गणा भेदं गदा संती एयपदेसियवग्गणा होदि। पुणो ताणं दोण्णं परमाणूणं समुदयसमागमेण उप्पण्णा दुपदेसियवग्गणा हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण समुप्पण्णे त्ति सत्थाणेण भेदसंघादेण दुपदेसियवग्गणाए उप्पत्ती होदि त्ति जं भणिदं तण्ण घडदे? एत्थ परिहारो वुच्चदे। तं जहा– अवयवविभागो उप्पण्णो संतो अवयवसंजोगविणासं कुणदि णाणुप्पण्णो, णिरहेउअस्स कज्जस्स उप्पत्तिविरोहादो । तदो अवयवविभा–

यतः दो एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलोंके समुदयसमागमसे द्विप्रदेशी वर्गणा होती है, इसलिए यह नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे होती है। ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे भी होती है । यथा–त्रिप्रदेशी वर्गणामें एक परमाणु पुद्गलके विरोधी गुणके उत्पन्न होनेसे भेदको प्राप्त होने पर द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा उत्पन्न होती है। चार प्रदेशी स्कन्धमेंसे दो परमाणु पुद्गलोंके विरोधी गुणके उत्पन्न होनेसे भेदको प्राप्त होनेपर द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है। पञ्चप्रदेशी स्कन्ध से तीन परमाणु पुद्गलोंके भेदको प्राप्त होनेपर द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है । इस प्रकार उपरिम सब वर्गणाओंके भेदसे द्विप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति कहनी चाहिए । त्रिप्रदेशी आदि वर्गणाओंके भेदसे द्विप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति होती है ऐसा समझकर ' ऊपरके द्रव्योंके भेदसे ' यह वचन कहा है । एकप्रदेशी दो वर्गणाओंके समुदयसमागमसे द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है इसलिए 'नीचेके द्रव्योंके संघातसे' यह वचन कहा है । द्विप्रदेशी दो स्कन्ध भेदको प्राप्त होकर जब पूर्व सम्बद्ध परमाणुके साथ या अन्य परमाणुके साथ समागमको प्राप्त होते हैं तब द्विप्रदेशी वर्गणा स्वस्थानमें भेद-संघातसे उत्पन्न होती है ऐसा कहा है ।

शंका- द्विप्रदेशी वर्गणा भेदको प्राप्त होकर एकप्रदेशी वर्गणा होती है । पुनः उन दो परमाणुओंके समुदयसमागमसे उत्पन्न हुई द्विप्रदेशी वर्गणा नीचेके द्रव्योंके संघातसे उत्पन्न हुई है इसलिए स्वस्थानमें भेद-संघातसे द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है ऐसा जो कहा है वह नहीं बनता है ?

समाधान–यहां इस शंकाका परिहार करते हैं । यथा– अवयवोंका विभाग उत्पन्न होकर वह अवयवोंके संयोगका विनाश करता है, अनुत्पन्न होकर नहीं, क्योंकि, अहेतुक

गुप्पण्णसमए चेव संजोगविणासेण होदव्वं; विरोहिगुणुप्पत्तीए (१) संतीए संजोगस्स अवट्ठाण(२)विरोहादो। ण च अवयवसंजोगविणासकाले एयपदेसियवग्गणाए उप्पत्ती अत्थि; विणासुप्पत्तीणमेगदव्वविसयाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो। अविरोहे वा जो विणासो सा चेव वुप्पत्ती, जा वुप्पत्ती सो चेव विणासो त्ति विणासुप्पत्तिववहाराणं संकरो होज्ज। ण च एवं; असंकिण्णववहारुवलंभादो। तदो विभागसमए परमाणुवग्गणाए ण उप्पादो दुपदेसियवग्गणाए भेदो चेवे त्ति सिद्धो। पुणो एदेसिं भेदाणं संघादेण समागदेण दुपदेसियवग्गणा उप्पज्जदि त्ति सत्थाणेण भेदसंघादेण जा दुपदेसियवग्गणाए समुप्पत्ती सा पुव्विल्लभंगेसु णांतब्भावं (३) गच्छदि त्ति सिद्धं। अथवा दुपदेसियवग्गणाए दोसु खंधेसु भेदं गच्छंतसमए चेव अण्णोण्णेण समागमं गंतूण कमेण दुपदेसियवग्गणाओ उप्पज्जंति त्ति भेदसंघादेणुप्पत्ती वत्तव्वा। एवमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं।

तिपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा चदु० पंच० छ० सत्त० अट्ठ० णव० दस० संखेज्ज० असंखेज्ज० परित्त० अपरित्त०

कार्यकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है, इसलिए अवयवोंके विभागके उत्पन्न होनेके समय ही संयोग का विनाश होना चाहिए, क्योंकि, विरोधी गुणकी उत्पत्ति होने पर संयोगका अवस्थान होनेमें विरोध है। यदि कहा जाय कि अवयवोंके संयोगके विनाशके समय ही एकप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक द्रव्यको विषय करनेवाले विनाश और उत्पत्तिकी युगपत् वृत्ति होनेमें विरोध है। यदि विरोध नहीं माना जाता है तो जो विनाश है वही उत्पत्ति हो जायगी और जो उत्पत्ति है वह विनाश हो जायगा, इसलिए विनाश और उत्पत्तिके व्यवहारमें संकर हो जायेगा। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, इन दोनोंका सांकर्य दोषसे रहित होकर व्यवहार उपलब्ध होता है, इसलिए विभागके समयमें परमाणु वर्गणाकी उत्पत्ति नहीं होती, उस समय द्विप्रदेशी वर्गणाका भेद ही होता है यह बात सिद्ध हुई। पुनः इन भेदोंके प्राप्त हुए संघातसे द्विप्रदेशी वर्गणा उत्पन्न होती है, इसलिए स्वस्थानमें भेदसंघातसे जो द्विप्रदेशी वर्गणाकी उत्पत्ति हुई है वह पहलेके भंगोंमें अन्तर्भावको नहीं प्राप्त होती है यह सिद्ध हुआ। अथवा द्विप्रदेशी वर्गणाके दो स्कन्ध भेदको प्राप्त होनेके समयमें ही परस्परमें समागमको प्राप्त होकर क्रमसे द्विप्रदेशी वर्गणायें उत्पन्न होती हैं, इसलिए भेद-संघातसे उत्पत्ति कहनी चाहिए। यह अर्थपद आगे सर्वत्र कहना चाहिए।

त्रिप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा, चारप्रदेशी, पांचप्रदेशी, छहप्रदेशी, सातप्रदेशी, आठप्रदेशी, नौप्रदेशी, दसप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, परीत- ५५१

---

(१) ता० प्रतौ '-गुणुप्पत्तीए संजोगस्स' इति पाठः। (२) ता० प्रतौ 'अव(यव)द्वाण-' अ० आ० का० प्रतिषु 'अवयवट्ठाण-' इति पाठः। (३) म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु णांतयब्भावं' इति पाठः।

अणंत० अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १०२ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०३ ॥

एवं पि सुत्तं सुगमं, पुव्वं परूविदत्तादो । हेट्ठिल्लुवरिल्लवग्गणाणं भेदसंघादेण अप्पिदवग्गणाणमुप्पत्ती किण्ण वुच्चदे; भेदकाले विणासं मोत्तूण उप्पत्तीए अभावं पडि विसेसाभावादो? ण; तत्थ एवंविधणयाभावादो । अथवा भेदसंघादस्स एवमत्थो वत्तव्वो । तं जहा–भेदसंघादाणं दोण्णं संजोगो सत्थाणं णाम । तम्हि संते उवरिल्लीणं हेट्ठिल्लीणं अप्पिदाणं च दव्वाणं भेदपुरंगमसंघादेण* अप्पिदवग्गणुप्पत्तिदंसणादो । सत्थाणेण भेदसंघादेण उप्पत्ती वुच्चदे । सव्वो वि परमाणुसंघादो भेदपुरंगमो चेव त्ति सव्वासिं वग्गणाणं भेदसंघादेणेव उप्पत्ती किण्ण वुच्चदे? ण एस दोसो; भेदाणंतरं जो संघादो सो भेदसंघादो णाम ण अंतरिदो; अव्ववत्था-

---

प्रदेशी, अपरीतप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०२ ॥

यह पृच्छासूत्र सुगम है ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे नीचेके द्रव्योंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ १०३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, पहले व्याख्यान कर आये हैं ।

शंका–नीचे की और ऊपरकी वर्गणाओंके भेद-संघातसे विवक्षित वर्गणाओंकी उत्पत्ति क्यों नहीं कहते, क्योंकि, भेदके समय विनाशको छोड़कर उत्पत्तिके अभावके प्रति कोई विशेषता नहीं है ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, वहां पर इस प्रकारके नयका अभाव है । अथवा भेद-संघातका इस प्रकारका अर्थ कहना चाहिए । यथा–भेद और संघात दोनोंका संयोग स्वस्थान कहलाता है । उसके विवक्षित होने पर ऊपरके, नीचेके और विवक्षित द्रव्योंके भेदपूर्वक संघातसे विवक्षित वर्गणाकी उत्पत्ति देखी जाती है । इसे स्वस्थानकी अपेक्षा भेद–संघातसे उत्पत्ति कहते हैं ।

शंका–सभी परमाणुसंघात भेदपूर्वक ही होता है, इसलिए सभी वर्गणाओंकी उत्पत्ति भेद-संघातसे ही क्यों नहीं कहते ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, भेदसे अनन्तर जो संघात होता है उसे भेद–संघात कहते हैं । जो अन्तरसे होता है उसकी यह संज्ञा नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर

---

* ता० प्रतौ ' भेदपुरंगमत्तादो संघादेण ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

प्पसंगादो✱ । तम्हा ण सव्ववग्गणाणं भेदसंघादेणुप्पत्ती ।

आहार० अगहण० तेया० अगहण० भासा० अगहण० मण० अगहण० कम्मइय० धुवक्खंधदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १०४ ॥

सुगमं ।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०५ ॥

सुगमं ।

धुवक्खंधदव्ववग्गणाणमुवरि सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १०६ ॥

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०७ ॥

तं जहा- ण पत्तेयबादरसुहुमणिगोदवग्गणा भेदेण✲ होदि; सचित्तवग्गणाण*

अव्यवस्थाका प्रसंग आता है । इसलिए सब वर्गणाओंकी उत्पत्ति भेद-संघातसे नहीं होती ।

आहारद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, तैजसद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, भाषाद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, मनोद्रव्यवर्गणा, अग्रहणद्रव्यवर्गणा, कार्मणद्रव्यवर्गणा और ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०४ ॥

सुगम है ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे, नीचेके द्रव्योंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ १०५ ॥

सुगम है ।

ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०६ ॥

सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ १०७ ॥

यथा–प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओंके भेदसे यह वर्गणा नहीं

✱ ता० प्रतौ 'अव्वत्थाप्पसंगादो' इति पाठः । ✲ ता० प्रतौ '–णिगोदवग्गणा (णं) भेदेण' अ० प्रतौ 'णिगोदवग्गणाणं भेदेण' आ० प्रतौ 'णिगोदाणं वग्गणाणं भेदेण इति पाठः ।

सचित्तवग्गणसरूवेण परिणामविरोहादो। ण च सचित्तवग्गणाए कम्म-णोकम्मक्खंधेसु तत्तो विप्फट्टिय सांतरणिरंतरवग्गणाणमायारेण परिणदेसु तब्भेदेणेवेदिस्से समुप्पत्ती; तत्तो विप्फट्टसमए चेव सांतरणिरंतरपुधभूदक्खंधाणं सचित्तवग्गणभावविरोहादो। ण महाखंधभेदेणेदिस्से समुप्पत्ती; महाखंधादो विप्फट्टखंधाणं महाखंधभेदेहिंतो पुधभूदाणं महाखंधववएसाभावेण तेसिं तब्भेदत्ताणुववत्तीदो। एदम्मि णए अवलंबिज्जमाणे उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदेण वि होदि त्ति परूविदं। दव्वट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे उवरिल्लीणं भेदेण वि होदि। धुवक्खंधादीणं संघादेण सांतरणिरंतरवग्गणा ण होदि; दव्वट्ठियणयावलंबणादो। सांतरणिरंतरवग्गणा एक्का चेव; तिस्से आयारेण धुवक्खंधवग्गणादीणमणंतरं चेव परिणामाभावादो। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे हेट्ठिल्लीणं संघादेण वि होदि; उक्कस्सधुवक्खंधवग्गणाए एगादिपरमाणुसमागमे सांतरणिरंतरवग्गणाए समुप्पत्ति पडि विरोहाभावादो। ण विवरीयकप्पणा; सचित्तवग्गणट्ठाणाणमणुप्पत्तिप्पसंगादो। सांतरणिरंतरवग्गणाए परिणामंतरावत्ती णत्थि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं; धुवसुण्णवग्गणागमाणंतियप्पसंगादो। ण सत्थाणे चेव परिणामो वि; जहण्णवग्गणादो परमाणुत्तरवग्गणाए उप्पत्तिविरोहादो सांतरणिरंतरवग्गणाए अभाव-

होती, क्योंकि, सचित्तवर्गणाओंका अचित्तवर्गणारूपसे परिणमन होनेमें विरोध है। यदि कहा जाय कि सचित्तवर्गणाके कर्म और नोकर्मस्कन्धोंके उससे अलग होकर सान्तरनिरन्तर वर्गणारूपसे परिणत होनेपर उनके भेदसे इस वर्गणाकी उत्पत्ति होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उनसे अलग होनेके समय ही उनसे अलग हुए स्कन्धोंको सचित्त वर्गणा होनेमें विरोध आता है। महास्कन्धके भेदसे इस वर्गणाकी उत्पत्ति होती है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, महास्कन्धसे अलग हुए स्कन्ध यतः महास्कन्धके भेदसे अलग हुए हैं, अतः उनकी महास्कन्ध संज्ञा नहीं हो सकती और इसलिए उनका उससे भेद नहीं बन सकता। इस नयका अवलम्बन करने पर ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे यह वर्गणा नहीं होती है यह कहा गया है। परन्तु द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर ऊपरकी वर्गणाओंके भेदसे भी यह वर्गणा होती है। ध्रुवस्कन्ध आदिकके संघात से सान्तरनिरन्तर वर्गणा नहीं होती है, क्योंकि, यहां द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है। सान्तरनिरन्तर वर्गणा एक ही है, उस रूपसे ध्रुवस्कन्ध वर्गणा आदिका अनन्तर ही परिणामका अभाव है। परन्तु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लेने पर नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे भी यह वर्गणा होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्धवर्गणामें एक आदि परमाणुका समागम होनेपर सान्तरनिरन्तर वर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है। यह विपरीत कल्पना भी नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानने पर सचित्तवर्गणास्थानोंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आता है। सान्तरनिरन्तरवर्गणाका दूसरे प्रकारसे परिणमन नहीं होता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर ध्रुवशून्यवर्गणाओंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है। केवल स्वस्थानमें ही परिणमन होता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, जघन्य वर्गणासे एक परमाणुअधिक वर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें विरोध आता है, दूसरे

☼ ता० आ० का० प्रतिषु '-क्खंधादीणं सांतर-' इति पाठः।

प्पसंगादो च । तम्हा सत्थाणेण भेदसंघादेणेव होदि त्ति घेत्तव्वं । अथवा उवरिम—वग्गणाओ विप्फट्टाओ धुवखंदाविसरूवेणेव णिवदंति; साहाविय़ादो । धुवखंदादि—हेट्ठिमवग्गणाओ सत्थाणे चेव समागमंति उवरिमवग्गणाहि वा; साहाविय़ादो । सांतरणिरंतरवग्गणा पुण सत्थाणे चेव भेदेण संघादेण तदुभयेण वा परिणमदि त्ति जाणावणट्ठं भेदसंघादेणे त्ति परूविदं ।

उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ १०८ ॥

केसु वि सुत्थपोत्थएसु✡ एसो पाठो✡ । एदस्स सुत्तस्स जहा धुवखंधवग्गणाए तिहि पयारेहि उप्पत्ती परूविदा तहा एत्थ वि परूवेदव्वा; विसेसाभावादो । कधं सचित्तवग्गणा महाखंधवग्गणा वा सांतरणिरंतरवग्गणसरूवेण परिणमइ? ण, तब्भेदेण आगदक्खंधाणं सांतरणिरंतरवग्गणायारेण परिणामुवलंभादो ।

सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाणमुवरि पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १०९ ॥

सान्तरनिरन्तर वर्गणाका अभाव भी प्राप्त होता है, इसलिए स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही यह वर्गणा होती है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । अथवा ऊपरकी वर्गणायें टूट कर ध्रुवस्कन्ध आदि रूपसे ही उनका पतन होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । तथा ध्रुवस्कन्ध आदि नीचेकी वर्गणायें स्वस्थानमें ही समागमको प्राप्त होती हैं, अथवा ऊपरकी वर्गणाओंके साथ समागमको प्राप्त होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। परन्तु सान्तरनिरन्तरवर्गणा स्वस्थानमें ही भेदसे, संघातसे या तदुभयसे परिणमन करती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'भेद-संघातसे' ऐसा कहा है ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदसे, नीचेके द्रव्योंके संघातसे और स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ १०८ ॥

कितनी ही सूत्र पोथियोंमें यह पाठ है । इस सूत्रकी व्याख्या करते समय जिस प्रकार ध्रुवस्कन्ध वर्गणाकी तीन प्रकारसे उत्पत्ति कही है उसी प्रकार यहां भी कहनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

शंका-सचित्तवर्गणा या महास्कन्धवर्गणा सान्तरनिरन्तर वर्गणारूपसे कैसे परिणमन करती है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, उनके भेद द्वारा आये हुए स्कन्धोंका सान्तरनिरन्तरवर्गणा-रूपसे परिणमन पाया जाता है ।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १०९ ॥

✡ ता० प्रतौ ' सुत्तपोत्त (त्थ) एसु ' अ० आ० का० प्रतिषु 'सुत्तपोत्तएसु' इति पाठः]

✡ अ- आ- प्रत्योः 'पादो' इति पाठः ।

सुगमं ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११० ॥

परमाणुवग्गणमादिं कादूण जाव सांतरणिरंतरउक्कस्सवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणं समुदयसमागमेण पत्तेयसरीरवग्गणा ण समुप्पज्जदि㊀ । कुदो ? उक्कस्सांतरणिरंतरवग्गणाण सरूवं मोत्तूण रूवाहियादिउवरिमवग्गणसरूवेण परिणमणसत्तीए अभावादो । आहार-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गल♠क्खंधेसु जोगकसायवसेण पत्तेयवग्गणाए बंधमागदेसु अण्णापत्तेयसरीरवग्गणा उप्पज्जदि त्ति हेट्ठिल्लाणं दव्वाणं संघादेण पत्तेयसरीरवग्गणाए♣ उप्पत्ती किण्ण भण्णदे ? ण, पत्तेयसरीरवग्गणसमागमेण विणा हेट्ठिमवग्गणाणं चेव समुदयसमागमेण समुप्पज्जमाणपत्तेयसरीरवग्गणाणुवलंभादो । किं च जोगवसेण एगबंधणबद्धओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलक्खंधा अणंताणंत विस्सासुवचएहि उवचिदा ण ते सव्वे सांतरणिरंतरादिहेट्ठिमवग्गणासु कत्थ वि सरिसधणिया होंति; पत्तेयवग्गणाए असंखेज्जदिभागत्तादो । ण ते पत्तेयसरीरजहण्णवग्गणाए सह सरिसा होंति; तदसंखे०भागत्तादो । ण ते पुध वग्गणासण्णं लहंति; जीवादो पुधभूदकाले तेसिमेगबंधाभावादो । तम्हा हेट्ठिल्लीणं दव्वाण

यह सूत्र सुगम है ।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११० ॥

परमाणुवर्गणासे लेकर सान्तरनिरन्तर उत्कृष्ट वर्गणा तक इन वर्गणाओंके समुदयसमागमसे प्रत्येकशरीरवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट सांतरनिरन्तरवर्गणाओंका अपने स्वरूपको छोड़कर एक अधिक आदि उपरिम वर्गणारूपसे परिणमन करनेकी शक्तिका अभाव है ।

शंका– आहारद्रव्यवर्गणा, तैजसशरीरद्रव्यवर्गणा और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणाके पुद्गलस्कन्धोंके योग और कषायके वशसे प्रत्येकवर्गणारूपसे बन्धको प्राप्त होनेपर उनसे अन्य प्रत्येकशरीरवर्गणाकी उत्पत्ति होती है, अतः नीचेके द्रव्योंके संघातसे प्रत्येकशरीरवर्गणाकी उत्पत्ति क्यों नहीं कही जाती ?

समाधान– नहीं, क्योंकि प्रत्येकशरीरवर्गणाके समागमके बिना केवल नीचेकी वर्गणाओंके समुदयसमागमसे उत्पन्न होनेवाली प्रत्येकशरीरवर्गणायें नहीं उपलब्ध होती । दूसरे, योगके वशसे एकबन्धनबद्ध औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु पुद्गलस्कन्ध अनन्तानन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित होते हैं । परन्तु वे सब सान्तरनिरन्तर आदि नीचेकी वर्गणाओंमें कहीं भी सदृशधनवाले नहीं होते, क्योंकि, वे प्रत्येकवर्गणाके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । वे प्रत्येकशरीर जघन्य वर्गणाके सदृश भी नहीं होते, क्योंकि, वे उसके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । वे अलग रूपसे वर्गणासंज्ञाको भी नहीं प्राप्त होते, क्योंकि, जीवसे अलग होनेके कालमें उनका

㊀ ता० प्रतौ ' ण (स–) मुप्पज्जदि' अ० आ० का० प्रतिषु 'ण मुप्पज्जदि' इति पाठः । ♠ ता० प्रतौ '-कम्मइयपोग्गल' इति पाठः । ♣ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'बंधमागदेसु अण्णपत्तेयसरीरवग्गणाए' इति पाठः ।

संघादेण ण पत्तेयसरीरवग्गणा उप्पज्जदि त्ति सिद्धं । उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण विणा* पत्तेयसरीरवग्गणा उप्पज्जदि, बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयवग्गणक्खंधेसु अधट्ठिदिगलणाए गलिदेसु पत्तेयसरीरवग्गणं वोलेदूण हेट्ठा सांतरणिरंतराविवग्गणसरूवेण [illegible] कथमेदं णव्वदे ? सत्थाणेण भेदसंघादेणेव पत्तेयसरीरवग्गणा होदि त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो ! भेदं गदविदियसमए पत्तेयवग्गणसरूवेण तेसिं परिणामो अत्थि त्ति उवरिल्लीण दव्वाणं भेदेण पत्तेयसरीरवग्गणाए उप्पत्ती किण्ण वुच्चदे ? ण, उवरिमवग्गणादो आगदपरमाणुपोग्गलेहि चेव पत्तेयसरीरवग्गणणिप्पत्तीए अभावादो । बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो एगजीवपत्तेयसरीरेसुप्पण्णे संते उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाए उप्पत्ती किण्ण वुच्चदे? ण, उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदो णाम विणासो । ण च बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणं मज्झे एया वग्गणा णट्ठा संती पत्तेयसरीरवग्गणासरूवेण परिणमदि; पत्तेयवग्गणाए आणंतियप्पसंगादो । ण च असंखेज्जलोगमेत्तजीवेहि एगा बादरणिगोदवग्गणा सुहुमणिगोदवग्गणा वा णिप्पज्जदि; तव्वग्गणाणमाणंतियत्तप्पसंगादो विप्फट्टेगजीवस्स बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणमणं-

एक बन्धन नहीं होता । इसलिए नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे प्रत्येकशरीरवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है यह सिद्ध हुआ ।

ऊपरके द्रव्योंके भेदके बिना प्रत्येकशरीरवर्गणा उत्पन्न होती है, क्योंकि, बादरनिगोदवर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके औदारिक, तैजस और कार्मणवर्गणास्कन्धोंके अधःस्थितिगलनाके द्वारा गलित होने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाको उल्लघन कर उनका नीचे सदृशघनरूप सान्तरनिरन्तर आदि वर्गणारूपसे अवस्थान उपलब्ध होता है ।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान– स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही प्रत्येकशरीरवर्गणा होती है यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है ।

शंका–भेदको प्राप्त होनेके दूसरे समयमें प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे उनका परिणमन होता है, इसलिए उपरिम द्रव्योंके भेदसे प्रत्येकशरीरवर्गणाका उत्पत्ति क्यों नहीं कहते ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, उपरिम वर्गणासे आये हुए परमाणु पुद्गलोंसे ही प्रत्येकशरीरवर्गणाकी निष्पत्तिका अभाव है ।

शंका– बादरनिगोदवर्गणासे और सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे एक जीवके प्रत्येकशरीरवालोंमें उत्पन्न होने पर ऊपरके द्रव्योंके भेदसे प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणाकी उत्पत्ति क्यों नहीं कहते ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, ऊपरकी वर्गणाओंके भेदका नाम ही विनाश है और बादरनिगोदवर्गणा तथा सूक्ष्मनिगोदवर्गणामेंसे एक वर्गणा नष्ट होती हुई प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे नहीं परिणमती, क्योंकि ऐसा होने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ अनन्त हो जायँगी । यदि कहा जाय कि असंख्यात लोकप्रमाण जीवोंके द्वारा एक बादरनिगोदवर्गणा या सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस प्रकार उन वर्गणाओंके अनन्त होनेका प्रसंग आता है । तथा अलग हुए एक जीवके बादरनिगोदवर्गणाके और सूक्ष्मनिगोद–

* आ० प्रतौ "भेदेण वि ण" इति पाठः ।

तिमभागदव्वस्स तब्भेदत्ताणुववत्तीदो वा। ण च महाखंधवग्गणा णट्ठा संती पत्तेयसरीरवग्गणसरूवेण परिणमदि; तिस्से सव्वकालं विणासाभावादो पत्तेयसरीरवग्गणाए आणंतियत्तप्पसंगादो णिच्चेयणस्स सचेयणभावेण परिणामविरोहादो वा। तदो पत्तेयसरीरवग्गणा उवरिल्लीणं वग्गणाणं भेदेण संघादेण वा ण होदि त्ति सिद्धं। किंतु सत्थाणेण भेदसंघादेण होदि; पत्तेयवग्गणभेदाणं वग्गणाणं समुदयसमागमेण असमागमेण वा वग्गणुप्पत्तिदंसणादो।

पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि बादरणिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ १११ ॥

सुगमं।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११२ ॥

हेट्ठिल्लीणं ताव संघादेण बादरणिगोदवग्गणा ण होदि; णिच्चेयणाणं सचेयणाणं समुदयसमागमेण सचित्तवग्गणुप्पत्तिविरोहादो असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाणं समुदयसमागमेण अणंतजीवगब्भेगबादरणिगोदवग्गणाए उप्पत्तिविरोहादो। ण च उवरिमसचित्तवग्गणाए भेदेण होदि; एगसुहुमणिगोदवग्गणजीवाणमक्कमेण सव्वेसिं पि

वर्गणाके अनन्तवें भागप्रमाण द्रव्यका उस रूपसे भेद भी नहीं बन सकता है। यदि कहा जाय कि महास्कन्धवर्गणा नष्ट होती हुई प्रत्येकशरीरवर्गणारूपसे परिणमन करती है सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक तो उसका सर्वकाल विनाश नहीं होता, दूसरे ऐसा माननेपर प्रत्येकशरीरवर्गणाके अनन्त होनेका प्रसंग आता है और तीसरे अचेतनका सचेतनरूपसे परिणमन होनेमें विरोध है, इसलिए प्रत्येकशरीरवर्गणा उपरिम वर्गणाओंके भेद या संघातसे नहीं उत्पन्न होती है यह सिद्ध हुआ। किंतु स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे उत्पन्न होती है, क्योंकि, प्रत्येक वर्गणाके अवान्तर भेदरूप वर्गणाओंके समुदयसमागम या असमागमसे वर्गणाकी उत्पत्ति देखी जाती है।

प्रत्येकशरीरवर्गणाके ऊपर बादरनिगोदवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११२ ॥

नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे तो बादरनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती नहीं, क्योंकि, अचेतन वर्गणाओंके समुदयसमागमसे सचेतन वर्गणाओंकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है। तथा असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके समुदयसमागमसे अनन्तजीवगर्भ एक बादरनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है। यह कहना उपरिम सचित्तवर्गणाके भेदसे यह वर्गणा होती है, ठीक नहीं है, क्योंकि, एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके सब जीवोंका युगपत् बादरनिगोदवर्गणारूप

बादरणिगोदवग्गणसरूवेण परिणामविरोहादो सुहुमणिगोदेहिंतो आगंतूण बादरणिगोदेसु उप्पण्णेहि चेव जीवेहि आरद्धबादरणिगोदवग्गणाए अभावादो वा । कुदो एवं णव्वदे? उवरिल्लीणं भेदेण णत्थि त्ति वयणादो । महाखंधदव्ववग्गणाए भेदेण बादरणिगोदवग्गणा ण उप्पज्जदि; तिस्से विणासाभावादो अचित्तस्स सचित्तभावेण परिणामविरोहादो च । सत्थाणेण भेदसंघादेणेव बादरणिगोदवग्गणा होदि । सुहुमणिगोदेहिंतो पत्तेयसरीरेहिंतो चेव आगदेहिꝏ जीवेहि बादरणिगोदजीवेहि च एगेगा बादरणिगोदवग्गणा णिप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि । बादरणिगोदेहिंतो जेण सुहुमणिगोदा असंखेज्जलोगगुणा तेण एगबादरणिगोदवग्गणा सुद्धेहि सुहुमणिगोदेहि चेव आरद्धे त्ति भणिदे को दोसो? ण, एगसुहुमणिगोदवग्गणट्ठियजीवाणमणंतिमभागाणं चेव बादरणिगोदेसु संचारुवलंभादो ।

बादरणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि सुहुमणिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ ११३ ॥

सुगमं । मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

परिणमन होनेमें विरोध है । तथा जो जीव सूक्ष्म निगोदोंमेंसे आकर बादरनिगोदोंमें उत्पन्न होते हैं उनके द्वारा आरम्भ की गई बादरनिगोदवर्गणाका अभाव है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-उपरिम वर्गणाओंके भेदसे नहीं होती इस वचनसे जाना जाता है ।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके भेदसे बादरनिगोदवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, एक तो उसका विनाश नहीं होता। दूसरे अचित्तका सचित्तरूपसे परिणमन होनेमें विरोध है। इसलिए स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे ही बादरनिगोदवर्गणा होती है । सूक्ष्म निगोदमेंसे या प्रत्येकशरीरमेंसे आये हुए जीवोंके द्वारा और बादर निगोद जीवोंके द्वारा एक एक बादरनिगोदवर्गणा निष्पन्न की जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका-यतः बादरनिगोदोंसे सूक्ष्मनिगोद असंख्यात लोकगुणे हैं, अतः एक बादरनिगोद वर्गणा शुद्ध सूक्ष्म निगोदों से आरम्भ होती है यदि ऐसा कहा जाय तो क्या दोष है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें स्थित जीवोंके अनन्तवें भागमात्र जीवोंका ही बादर निगोदोंमें संचार देखा जाता है, अतः एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे एक बादरनिगोदवर्गणाका आरम्भ नहीं हो सकता ।

बादरनिगोदद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ ११३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ꝏ ता० का० प्रत्योः ' च आगदेहि ' इति पाठः ।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११४ ॥

ण बादरणिगोदवग्गणाणं संघादेण एगसुहुमणिगोदवग्गणा होदि; एगसुहुमणिगोदवग्गणजीवमेत्तबादरणिगोदजीवेहि चेव आरद्धसुहुमणिगोदवग्गणाभावादो* । तं पि कुदो णव्वदे? हेट्ठिल्लीणं संघादेण ण उप्पज्जदि त्ति वयणादो । बादरणिगोदाणं सुहुमणिगोदभावविरोहादो वा बादरणिगोदेहि सुहुमणिगोदवग्गणा आरब्भदि । जदि सुहुमो ण बादरो अह बादरो ण सुहुमो त्ति तेण सुहुमणिगोदेहि चेव सुहुमणिगोददव्ववग्गणा आरब्भदि त्ति भणिदं होदि । ण च बादरणिगोदाणं पत्तेयसरीराणं वा सुहुमणिगोदेसेसुप्पण्णाणं बादरणिगोदत्तं पत्तेयसरीरत्तं वा अत्थि; विरुद्धपरिणामाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो । एसत्थो पहाणो पत्तेय-बादरणिगोदवग्गणासु वि वत्तव्वो । महाखंधभेदेण वि सुहुमणिगोदवग्गणा ण होदि; पुव्वुत्तदोसप्पसंगादो । किंतु भेदसंघादेण होदि । सुहुमणिगोदविसयप्पवग्गणाणं भेदसंघादेण सुहुमणिगोदवग्गणा उप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि । एक्किस्से सुहुमणिगोदवग्गणाए एगविस्सासुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णा वग्गणा होदि; एगपरमाणुणा अहियत्तुवलंभादो । एवमणिच्छिज्जमाणे पुव्वं परूविदट्ठाणाभावो होज्ज । ण च एवं, तम्हा हेट्ठिल्लीणं दुवीणं दव्वाणं समुदय-

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११४ ॥

बादरनिगोदवर्गणाओंके संघातसे एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं होती, क्योंकि, एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें जितने जीव हैं उतने बादर निगोद जीवोंके द्वारा आरम्भ की गई सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका अभाव है ।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे नहीं होती इस वचनसे जाना जाता है ।

अथवा बादर निगोदोंका सूक्ष्म निगोदरूपसे होनेमें विरोध है, इसलिए बादर निगोद सूक्ष्म निगोदवर्गणाका आरम्भ नहीं करते । जब कि सूक्ष्म बादर नहीं है और बादर सूक्ष्म नहीं है, इसलिए सूक्ष्म निगोदोंके द्वारा ही सूक्ष्मनिगोददव्यवर्गणा आरम्भ की जाती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । बादर निगोद और प्रत्येकशरीर जीवोंके मर कर सूक्ष्म निगोदोंमें उत्पन्न होने पर उनका बादर निगोदपन और प्रत्येकशरीरपन नहीं रहता, क्योंकि, विरुद्ध परिणामोंकी युगपत् वृत्ति होनेमें विरोध है । यहां यह अर्थ प्रधान है । इसे प्रत्येकशरीरवर्गणा और बादरनिगोदवर्गणा में भी कहना चाहिए । महास्कन्धके भेदसे भी सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं होती, क्योंकि, पूर्वोक्त दोषों का प्रसंग आता है । किन्तु भेद-संघातसे होती है । सूक्ष्मनिगोदके अवान्तर भेदरूप वर्गणाओंके भेद-संघातसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्पन्न होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका–एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें एक विस्रसोपचय परमाणुके बढ़ने पर अन्य वर्गणा होती है, क्योंकि, वहां एक परमाणु अधिक देखा जाता है । ऐसा नहीं मानने पर पहले कहे गये स्थानोंका अभाव होता है । परन्तु ऐसा है नहीं, इसलिए नीचेकी स्थितिवाले द्रव्योंके समुदय–

* ता० प्रतौ ' –वग्गणभावादो ' इति पाठः । अ-आ-प्रत्योः ' एगवग्गणाभावादो ' इति पाठः ।

समागमेण सुहुमणिगोदवग्गणाए होदव्वमिदि। एत्थ परिहारो वुच्चदे– जुत्तमेदं जदि पज्जवट्ठियणओ अवलंबिदो होदि। ट्ठाणपरूवणाए पुण ण दोसो; पज्जवट्ठियणयावलंबणादो। एत्थ पुण दव्वट्ठियणओ अवलंबिदो त्ति परमाणुवड्ढीए हाणीए वा ण वग्गणाए अण्णत्तं किंतु जीवाणं समागमेण भेदेण च सचित्तवग्गणुप्पत्ती होदि। तेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं समागमेण सचित्तवग्गणाओ ण उप्पज्जंति त्ति भणिदं होदि।

सुहुमणिगोदवग्गणाणमुवरि महाखंधदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ॥ ११५ ॥

सुगमं।

सत्थाणेण भेदसंघादेण ॥ ११६ ॥

हेट्ठिमाणं संघादेण बिदियमहाखंधवग्गणा ण उप्पज्जदि; तिस्से सव्वद्धमेगसंवग्गणत्तादो। ण च एगादिपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णा वग्गणा होदि; एववग्गणं मोत्तूण तत्थ बिदियवग्गणाणुवलंभादो। किंतु भेदसंघादेण होदि; पज्जवट्ठियणयावलंबणादो. तं जहा- एगादिअणंतपरमाणुपोग्गलेसु महाखंधादो फट्टियगदेसु भेदेण अण्णा महाखंध

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

समागमसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होनी चाहिए ?

समाधान–इस शंकाका समाधान करते हैं–पर्यायार्थिक नयका यदि अवलम्बन लिया जाय तो यह कहना युक्त है। फिर भी स्थानप्ररूपणामें कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वहां पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है। परन्तु यहाँ पर द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है, इसलिए परमाणुकी वृद्धि और हानिसे वर्गणामें अन्यपना नहीं आता, किन्तु जीवोंके समागम और भेदसे सचित्तवर्गणाकी उत्पत्ति होती है, इसलिए नीचेके द्रव्योंके समागमसे सचित्तवर्गणायें नहीं उत्पन्न होतीं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके ऊपर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा क्या भेदसे होती है, क्या संघातसे होती है या क्या भेद-संघातसे होती है ॥ ११५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

स्वस्थानकी अपेक्षा भेद-संघातसे होती है ॥ ११६ ॥

नीचेकी वर्गणाओंके संघातसे दूसरी महास्कन्धवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, वह सर्वत्र एक वर्गणारूप है। एक आदि परमाणु पुद्गलोंके बढनेपर अन्य वर्गणा होती है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक वर्गणाको छोड़कर वहाँ दूसरी वर्गणा नहीं पाई जाती। किन्तु वह भेद-संघातसे होती है, क्योंकि, यहाँ पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है। यथा–– महास्कन्धसे एक आदि अनन्त परमाणु पुद्गलोंके विलग होकर चले जानेपर भेदसे

संवग्गणत्तादो ' इति पाठः। ताप्रतौ ' सव्वत्थ एग–

आप्रतौ ' –अणंतपोग्गलेसु परमाणुसु महाखंधादो ' इति पाठः।

दव्ववग्गणा होदि । तत्थेव एगादिअणंतेसु समागदेसु संघादेण अण्णा महाखंधदव्व-वग्गणा होदि । अक्कमेण उवचयावचयेहि वि भेदसंघादेण महाखंधदव्ववग्गणा होदि । एवं तीहि पयारेहि सव्वत्थ भेदसंघादस्स अत्थपरूवणा✡ कायव्वा । उवरिमाणं भेदेण हेट्ठा अपुव्ववग्गणुप्पत्ती भेदजणिदा णाम । हेट्ठिमाणं वग्गणाणं समागमेण सरिसधणियसरूवेण अण्णवग्गणुप्पत्ती संघादजा णाम । ण च एदाओ दो वि एत्थ अत्थि, वग्गणबहुत्ताभावादो । एवमेगसेडिवग्गणणिरूवणा समत्ता ।

संपहि णाणासेडिवग्गणाणिरूवणा एवं चेव कायव्वा । का णाणासेडी णाम ? सरिसधणियाणं मुत्तावलोलिसमाणपंतीयो णाणासेडि णाम ।

एवं वग्गणाणिरूवणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

चोद्दससु अणुयोगद्दारेसु दोण्णमणुयोगद्दाराणं परूवणं काऊण सेसबारसण्ण-मणुयोगद्दाराणं सुत्तकारेण✡ किमट्ठं परूवणा ण कदा । ण ताव अजाणंतेण ण कदा; चउवीसअणुयोगद्दारसरूवमहाकम्मपयडिपाहुडपारयस्स भूदबलिभयवंतस्स तदपरि-ण्णाणविरोहादो । ण विस्सरणालुएण होंतेण ण कदा; अप्पमत्तस्स तदसंभवादो

अन्य महास्कन्ध द्रव्यवर्गणा होती है । उसीमें एक आदि अनन्त परमाणु पुद्गलोंके आ जानेपर संघातसे अन्य महास्कन्ध वर्गणा होती है । तथा एक साथ उपचय और अपचय होनेसे भेद-संघातसे महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है । इस प्रकार सर्वत्र तीन प्रकारसे भेद-संघातकी अर्थ प्ररूपणा करनी चाहिए । उपरिम वर्गणाओंके भेदसे नीचे अपूर्व वर्गणाकी उत्पत्ति भेद जनित कही जाती है और नीचेकी वर्गणाओंके समागमसे सदृशधनरूपसे अन्य वर्गणाकी उत्पत्ति संघातज कही जाती है । परन्तु ये दोनों यहाँ पर नहीं हैं, क्योंकि, यहाँ पर बहुत वर्गणाओंका अभाव है ।

इस प्रकार एकश्रेणिवर्गणानिरूपणा समाप्त हुई ।

नानाश्रेणिवर्गणानिरूपणा इसी प्रकार करनी चाहिए ।

शंका-नानाश्रेणि किसे कहते हैं ?

समाधान-सदृश धनवालोंकी मुक्ताफलोंकी पंक्तिके समान पंक्तिको नानाश्रेणि कहते हैं ।

इस प्रकार वर्गणानिरूपणा अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

शंका-सूत्रकारने चौदह अनुयोगद्वारोंमेंसे दो अनुयोगद्वारोंका कथन करके शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन किस लिए नहीं किया है । अजानकार होनेसे नहीं किया है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, चौबीस अनुयोगद्वारस्वरूप महाकर्मप्रकृति प्राभृतके पारगामी भगवान् भूतबलिको उनका अजानकार माननेमें विरोध है । विस्मरणशील होनेसे नहीं किया है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, अप्रमत्तका विस्मरणशील होना सम्भव नहीं है ।

✡ आ० प्रतौ ' सव्वत्थ भेदपरूवणा ' इति पाठः । ✡ अ० प्रतौ ' दोण्णमणियोगद्दाराणं सुत्तकारेण ' इति पाठः ।

त्ति? ण एस दोसो; पुव्वाइरियववखाणक्कमजाणावणट्ठं☼ तप्परूवणाकरणादो किमट्ठमणुयोगद्दारा णाम तम्हि चेव♠ तत्थतणसयलत्थपरूवणं संखित्तवयणकलावेण कुणंति? वचिजोगासवदुवारेण दुक्कमाणकम्मणिरोहट्ठं ।

तम्हा बोण्णमणुयोगद्दाराणं पुव्विल्लाणं परूवणा देसामासिय त्ति काऊण सेसबारसण्णमणुयोगद्दाराणं कस्सामो । तं जहा एगसेडिवग्गणाधुवाधुवाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किं धुवा किमद्धुवा ? धुवा, अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु एयपदेसियपरमाणुपोग्गलवग्गणविणासाभावादो । एवं संते एगपरमाणुस्स परमाणुभावेण सव्वद्धमवट्ठाणं पावदि त्ति भणिदे ण एस दोसो; एक्कम्हि परमाणुम्हि विणट्ठे वि अण्णेसिं तज्जादीणं परमाणूणं संभवेण एयपदेसियवग्गणाए धुवत्तविरोहादो एगसेडिपरूवणाए णाणासेडिपरमाणूणं कथं गहणं कीरदे? ण एस दोसो; एगेणेव परमाणुणा एगसेडी♠ घेप्पदि त्ति णियमाभावादो । दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ वग्गणाओ किं धुवाओ किमद्धुवाओ? एत्थ पुव्वं व परूवणा कायव्वा; धुवत्तं पडि भेदाभावादो । सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाओ जाओ

समाधान–यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, पूर्व आचार्योंके व्याख्यानके क्रमका ज्ञान करानेके लिए शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन नहीं किया है ।

शंका–अनुयोगद्वार वहींपर उसके सकल अर्थका कथन संक्षिप्त वचनकलापके द्वारा किसलिए करते हैं ?

समाधान– वचनयोगरूप आस्रवके द्वारा प्राप्त होनेवाले कर्मोंका निरोध करनेके लिए अनुयोगद्वार सकल अर्थका संक्षिप्त वचनकलापके द्वारा कथन करते हैं ।

इसलिए पूर्वोक्त दो अनुयोगद्वारोंका कथन देशामर्षक है ऐसा जान कर शेष बारह अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं । यथा–एकश्रेणीवर्गणा ध्रुवाध्रुवानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणा क्या ध्रुव है या क्या अध्रुव है ? ध्रुव है, क्योंकि, अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलवर्गणाका विनाश नहीं होता ।

शंका–ऐसा होने पर एक परमाणुका परमाणुरूपसे सर्वदा अवस्थान प्राप्त होता है?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एक परमाणुके नष्ट होनेपर भी तज्जातीय अन्य परमाणुओंके सम्भव होनेसे एकप्रदेशी वर्गणाके ध्रुव होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका–एकश्रेणिकी प्ररूपणामें नानाश्रेणिरूप परमाणुओंका ग्रहण कैसे करते हैं ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इसी परमाणुसे एकश्रेणिका ग्रहण होता है ऐसा कोई नियम नहीं है ।

द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धवर्गणा तक ये वर्गणायें क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं ? यहां पहलेके समान कथन करना चाहिए, क्योंकि, ध्रुवत्वके प्रति कोई भेद नहीं है । जो

☼ ता०प्रतौ '–धवखाणवक्कमेजाणावणट्ठं' इति पाठः । ♠ आ०प्रतौ 'णामंहि चेव' इति पाठः । ☞ प्रतिषु 'सेसबादरसण्णिमणियोग–' इति पाठः । ♠ ता० प्रतौ 'एगएगसेडी' इति पाठः ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

असुण्णाओ ताओ असुण्णत्तणेण किं धुवाओ किमद्धुवाओ? अद्धुवाओ । कुदो ? असुण्णभावेण सव्वकालं तासिमवट्ठाणाभावादो । एत्थ सरिसधणियक्खंधेसु सव्वेसु विणट्ठेसु वग्गणाभावादो । एक्कम्हि वि खंधे संते वग्गणा अत्थि चेवे त्ति घेत्तव्वं । सुण्णाओ सुण्णत्तणेण किं धुवाओ किद्मधुवाओ ? अद्धुवाओ । कुदो ? सुण्णाओ णाम परमाणुविरहिदवग्गणाओ; तासिं सुण्णभावेण अवट्ठाणाभावादो । हेट्ठिमवग्गणाओ संघादेण उवरिमवग्गणाओ भेदेण जं तेण कालेण सुण्णवग्गणमसुण्णं कुणंति त्ति भणिदं होदि । सुण्णाओ वि असुण्णाओ वि वग्गणाओ वग्गणादेसेण धुवाओ । को वग्गणादेसो णाम ? वग्गणाणं संभवसामण्णं वग्गणादेसो णाम । तेण वग्गणादेसेण सव्वाओ सव्वकालमत्थि त्ति धुवाओ । पत्तेयसरीरवग्गणाओ जाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ सजोगि-अजोगीसु लब्भमाणाओ ताओ सुण्णाओ वि असुण्णाओ वि । कुदो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसजोगिअजोगिपाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणेसु वट्टमाणकाले संखेज्जाणं चेव जीवाणमुवलंभादो । ण च संखेज्जेहि जीवेहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणि वट्टमाणकाले आवूरिज्जंति; विरोहादो । एत्थ जाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सव्वकालमेदीए वग्गणाए सुण्णाए चेव होदव्वमिदि णियमाभावादो । जाओ असुण्णाओ ताओ वि असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; तासिमेगसरूवेण अवट्ठाणाभावादो ।

सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणाएँ अशून्यरूप हैं वे अशून्यरूपसे क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं? अध्रुव हैं, क्योंकि, अशून्यरूपसे उनका सदा काल अवस्थान नहीं रहता । सदृश धनवाले सब स्कन्धोंके विनष्ट होनेपर वर्गणाका अभाव होता है । तथा एक भी स्कन्धके रहनेपर वर्गणा है ही ऐसा अर्थ यहां ग्रहण करना चाहिए । शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे क्या ध्रुव हैं या क्या अध्रुव हैं? अध्रुव हैं, क्योंकि शून्यका अर्थ है परमाणुओंसे रहित वर्गणायें, किन्तु उनका शून्यरूपसे सदा अवस्थान नहीं रहता । नीचेकी वर्गणाएँ संघातसे और ऊपरकी वर्गणाएँ भेदसे उस कालमें शून्यवर्गणाको अशून्यरूप करती हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । शून्य वर्गणाएँ और अशून्य वर्गणाएँ भी वर्गणादेशकी अपेक्षा ध्रुव हैं ।

शंका – वर्गणादेश किसे कहते हैं ?

समाधान – वर्गणाओंके सम्भव सामान्यको वर्गणादेश कहते हैं ।

उस वर्गणादेशकी अपेक्षा सब वर्गणाएँ सर्वदा हैं इसलिए ध्रुव हैं । जो भव्योंके योग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाएँ सयोगी और अयोगी जीवोंके प्राप्त होती हैं वे शून्यरूप भी हैं और अशून्यरूप भी हैं क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे सयोगी-अयोगीप्रायोग्य प्रत्येकशरीर वर्गणास्थानोंमेंसे वर्तमान कालमें संख्यात जीव ही उपलब्ध होते हैं । यह कहना कि संख्यात जीव वर्तमान कालमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंको भर देंगे, ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है । यहां जो वर्गणायें शून्य हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, सर्वदा इस वर्गणाको शून्यरूप ही होनी चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है । जो वर्गणाएँ अशून्यस्वरूप हैं वे अशून्यरूपसे अध्रुव हैं क्योंकि उन वर्गणाओंका एकरूपसे अवस्थान नहीं रहता ।

एवं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सजोगि-अजोगि-पाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणेसु अणंताहि वग्गणाहि सुण्णभावेण अवट्ठिदाहि होदव्वं; तिसु वि कालेसु सजोगि-अजोगीहि अच्छुत्ताणंतट्ठाणसंभवादो । अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ पत्तेयसरीरवग्गणाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाणं पि वग्गणाणं उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण पच्छा असुण्णत्तुवलंभादो । एवं पि संभवं पडुच्च परूविदं । वत्तिं पडुच्च पुण णिहालिज्जमाणे सुण्णाओ* सुण्णत्तणेण अवट्ठिदाओ अत्थि; पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइएहि देव-णेरइय-सजोगि-अजोगि-जीवेहिय असंखेज्जलोगमेत्तेहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणमावूरणे संभवाभावादो । असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; पत्तेयसरीरवग्गणदव्वाणं वड्ढिहाणीहि विणा सव्वत्थमवट्ठाणाभावादो । वग्गणादेसेण पुण पत्तेयसरीरवग्गणाओ सव्वाओ धुवाओ होंति; सांतरणिरंतरवग्गणाणं व सव्वेसिं पत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणं कम्हि वि काले सुण्णत्ताणुवलंभादो ।

बादरणिगोदवग्गणाओ जाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ खीणकसायम्मि लब्भमाणाओ ताओ सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाणं सुण्णभावेण सव्वकालमवट्ठाणाभावादो । एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ अत्थि; संखेज्जाणं खीणकसायाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तखीण-

यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर सयोगी और अयोगीप्रायोग्य प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंमेंसे अनन्त वर्गणायें शून्यरूपसे अवस्थित होनी चाहिए, क्योंकि, तीनों ही कालोंमें सयोगी और अयोगी जीवोंके द्वारा नहीं छुए गये अनन्त स्थान सम्भव हैं । तथा अभव्योंके योग्य जो प्रत्येकशरीरवर्गणायें शून्यरूप हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्यरूप वर्गणाओंका भी उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे बादमें अशून्यरूपसे अद्भाव पाया जाता है । यह भी सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्ति की अपेक्षा देखने पर शून्य वर्गणायें शून्यरूपसे अवस्थित हैं, क्योंकि, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, सयोगी और अयोगी इन असंख्यात लोकप्रमाण सब जीवोंके द्वारा अनन्तगुणे प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंका व्याप्त करना सम्भव नहीं है । अशून्य वर्गणायें अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, प्रत्येकशरीरवर्गणाद्रव्योंका वृद्धि और हानिके विना सर्वदा अवस्थान नहीं पाया जाता है । परन्तु वर्गणादेशकी अपेक्षा सब प्रत्येकशरीर वर्गणायें ध्रुव हैं, क्योंकि, सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंके समान सब प्रत्येकशरीरवर्गणास्थानोंका किसी भी कालमें शून्यपना नहीं पाया जाता ।

बादरनिगोदवर्गणायें जो कि भव्योंके योग्य क्षीणकषाय गुणस्थानमें उपलब्ध होती हैं वे शून्यरूप होकर शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंका शून्यरूपसे सदा अवस्थान नहीं पाया जाता । यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणायें शून्यरूपसे ध्रुव हैं, क्योंकि, संख्यात क्षीणकषाय जीवोंका सब जीवोंसे अनन्तगुणे

* ता० प्रतौ 'णिहालिज्जमाणेण सुण्णाओ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज

कसायपाओग्गबादरणिगोदट्ठाणेसु तिसु वि कालेसु वुत्तिविरोहादो। सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ वि अत्थि; सुण्णाणं ट्ठाणाणं केसिं पि कम्हि वि काले असुण्णत्तुवलंभादो। असुण्णाओ असुण्णत्तेण अद्धुवाओ; खीणकसायपाओग्गबादरणिगोववग्गणाणं सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। भावे वा ण कस्स वि णिव्वुई होज्ज; खीणकसायम्मि बादरणिगोदवग्गणाए संतीए केवलणाणुप्पत्तिविरोहादो। अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ सुण्णाओ ताओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ। कुदो? सुण्णाणं पि उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो। एदं संभवं पडुच्च परूविदं। वत्तिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ धुवाओ वि अत्थि। कुदो? असंखेज्जलोगमेत्तबादरणिगोदवग्गणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्ठाणेसु अदीदकाले वि वुत्तिविरोहादो। तं जहा एक्कम्हि अदीदसमए जदि असंखेज्जलोगमेत्ताणि बादरणिगोदट्ठाणाणि लब्भंति तो सव्विस्से अदीदद्धाए किं लभामो त्ति फलगुणिविच्छाए पमाणेणोवट्टिदाए अदीदकालादो असंखेज्जलोगगुणमेत्ताणि चेव बादरणिगोदवग्गणासु असुण्णट्ठाणाणि होंति। अण्णाणि सव्वट्ठाणाणि सुण्णाणि चेव। तेण सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ। विग्गहगदीए वट्टमाणा बादरणिगोदजीवा किं बादरणिगोदवग्गणासु पवंति आहो पत्तेयसरीरवग्गणासु त्ति? ण ताव पत्तेयसरीरवग्गणासु पवंति; णिगोदजीवाणं पत्तेयसरीरजीवत्तविरोहादो पत्तेयसरीरवग्गणाए असंखेज्जलोगपमाणत्तं

क्षीणकषायप्रायोग्य बादरनिगोदस्थानोंमें तीनों ही कालोंमें वृत्ति माननेमें विरोध आता है। तथा शून्यवर्गणायें शून्यरूपसे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, कोई भी शून्य स्थान किसी भी समय अशून्यरूप होकर उपलब्ध होते हैं। अशून्य वर्गणायें अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, क्षीणकषायप्रायोग्य बादरनिगोदवर्गणाओंका सर्वदा अवस्थान नहीं पाया जाता। यदि उनका अवस्थान होता है तो किसी भी जीवको मोक्ष नहीं हो सकता है, क्योंकि, क्षीणकषायमें बादरनिगोदवर्गणाके रहते हुए केवलज्ञानकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है। अभव्योंके योग्य जो शून्य वर्गणायें हैं वे शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंका भी उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे कालान्तरमें अशून्यपना पाया जाता है। यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है। परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणायें ध्रुव भी हैं, क्योंकि असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाओंके सब जीवोंसे अनन्तगुणे सेचीयस्थानोंमें अतीत कालमें भी वृत्ति होनेमें विरोध है। खुलासा इस प्रकार है-एक अतीत समयमें यदि असंख्यात लोकप्रमाण बादर निगोदस्थान पाये जाते हैं तो सब अतीत कालमें कितने प्राप्त होंगे इस प्रकार फलसे गुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करनेपर अतीत कालसे असंख्यात लोकगुणे बादर निगोदवर्गणाओंमें अशून्यस्थान प्राप्त होते हैं। अन्य सब स्थान शून्य ही हैं। इसलिए शून्य वर्गणायें शून्यरूपसे ध्रुव हैं।

५, ८१, १५५ शंका-विग्रहगतिमें विद्यमान बादर निगोद जीव क्या बादरनिगोदवर्गणाओंमें गर्भित हैं या प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें गर्भित हैं? प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें तो गर्भित हो नहीं सकते, क्योंकि, एक तो निगोद जीवोंको प्रत्येकशरीर जीव होनेमें विरोध है, दूसरे प्रत्येक

मोत्तूण आणंतियप्पसंगादो च । तदो बादरणिगोदवग्गणाए वट्टमाणकाले अणंताए होदव्वमिदि? ण एस दोसो; विग्गहगदीए वि एगबंधणबद्धअणंताणंतबादरणिगोद-जीवेहि एगबादरणिगोदवग्गणुप्पत्तीदो वट्टमाणकाले बादरणिगोदवग्गणाओ असंखे-ज्जलोगमेत्ताओ चेवे त्ति घेत्तव्वं सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ वि उवरिमहेट्ठिम-वग्गणाणं भेदसंघादेण सुण्णाणं पि कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो । असुण्णाओ असुण्-त्तणेण अद्धुवाओ । कुदो ? वग्गणाणमेगसरूवेण सव्वद्धमवट्ठाणाभावादो । वग्-णादेसेण पुण सव्वाओ धुवाओ; अणंताणंतवग्गणाणं सव्वद्धमुवलंभादो ।

सुहुमणिगोदवग्गणाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ सुण्णवग्गणाहि सव्वकालं सुण्णत्तणेणेव अच्छिदव्वमिदि णियमाभावादो । एदं संभवं पडुच्च परूविदं । वदिं पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ सुण्णत्तणेण धुवाओ वि अत्थि; वट्टमाणकाले असं-खेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदवग्गणाहि अदीदकालेण वि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तद्धाणा-वूरणं पडि संभवाभावादो । कारणं बादरणिगोदाणं व वत्तव्वं । अद्धुवाओ वि; उवरिमहेट्ठिमवग्गणाणं भेदसंघादेण सुण्णाण पि कालंतरे असुण्णत्तुवलंभादो । असु-ण्णाओ सुहुमणिगोदवग्गणाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ । कुदो? सुहुमणिगोदवग्गणाण-मवट्ठिदसरूवेण अवट्ठाणाभावादो ।

शरीरवर्गणाएँ असंख्यात लोकमात्र प्रमाणको छोड़कर अनन्त हो जायेंगी । इसलिए बादर निगोदवर्गणा वर्तमान कालमें अनन्त होनी चाहिए ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विग्रहगतिमें भी एक बन्धनमें बँधे हुए अनन्तानन्त बादरनिगोद जीवोंकी एक बादरनिगोदवर्गणा बन जाती है । इसलिए वर्तमान कालमें बादरनिगोदवर्गणाएँ असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद-संघातसे शून्य वर्गणाएँ भी कालान्तरमें अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती हैं । अशून्य वर्गणाएँ अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, वर्गणाओंका एकरूपसे सदा अवस्थान नहीं पाया जाता , वर्गणादेशकी अपेक्षा तो सब वर्गणाएँ ध्रुव हैं, क्योंकि, अनन्तानन्त वर्गणाएँ सर्वदा उपलब्ध होती हैं ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंका सर्वदा शून्यरूपसे ही रहना चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है । यह सम्भवकी अपेक्षा कहा है । परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणाएँ शून्यरूपसे ध्रुव भी हैं क्योंकि, वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके द्वारा पूरे अतीत कालमें भी सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंका पूरा करना सम्भव नहीं है। कारण बादर निगोद जीवोंके समान कहना चाहिए । वे अध्रुव भी हैं, क्योंकि, उपरिम और अधस्तन वर्गणाओंके भेद संघातसे शून्य वर्गणाएँ भी कालान्तरमें अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती हैं । अशून्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाएँ अशून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका अवस्थितरूपसे अवस्थान नहीं पाया जाता ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

महाखंधदव्ववग्गणाओ सुण्णाओ सुण्णत्तणेण अद्धुवाओ; सुण्णाहि सुण्ण-भावेणेव अच्छिदव्वमिदि णियमाभावादो। एसो संभवणिद्देसो। वत्ति पडुच्च पुण भण्णमाणे सुण्णाओ धुवाओ वि अत्थि; अदीदकाले समयं पडि एक्केक्के महाखंध-ट्ठाणे समुप्पण्णे वि सव्वम्हि अदीदकाले अदीदकालमेत्ताणि चेव असुण्णट्ठाणाणि लद्धूण सेससव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमहाखंधसेचोयट्ठाणाणि; सुण्णभावेण अवट्ठाणुवलंभादो। अद्धुवाओ वि अत्थि; भेदसंघादेण केण वि कालेण सुण्णाणं पि असुण्णत्तु-वलंभादो। असुण्णाओ असुण्णत्तणेण अद्धुवाओ। कुदो? महाखंधवग्गणाणमेगसरू-वेण सव्वकालमवट्ठाणाभावादो। एवं चेव णाणासेडिधुवाधुवाणुगमो वि वत्तव्वो; विसे-साभावादो। एवं धुवाधुवाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

एगसेडिवग्गणसांतरणिरंतराणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव धुवखं-धदव्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ वग्गणाओ किं सांतराओ किं णिरंतराओ किं सांतर-णिरंतराओ? णिरंतराओ कुदो? अणंतरेण विणा मुत्ताहलोलि व्व अवट्ठाणादो। अचि-त्तअद्धुवखंधदव्ववग्गणाओ किं सांतराओ किं णिरंतराओ किं सांतरणिरंतराओ? सांतरणिरंतराओ☼, कत्थ वि णिरंतरेण कत्थ वि सांतरेण घम्मणाणमवट्ठाणुवलंभादो। पुणो तिस्से सांतरणिरंतरवग्गणाए आइरियाणमविरुद्धुवदेसबलेण इमा परूवणा

शून्यरूप महास्कन्धद्रव्यवर्गणायें शून्यरूपसे अध्रुव हैं, क्योंकि, शून्य वर्गणाओंको शून्य-रूपसे ही रहना चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है। यह सम्भवकी अपेक्षा निर्देश किया है परन्तु व्यक्तिकी अपेक्षा कथन करने पर शून्य वर्गणायें ध्रुव भी हैं, क्योंकि, अतीत कालके प्रत्येक समय में एक एक महास्कन्धस्थानके उत्पन्न होनेपर भी सब अतीत कालमें अतीत कालमात्र ही अशून्यस्थान प्राप्त होकर शेष सब जीवोंसे अनन्तगुणे महास्कन्ध सेचोयस्थान होते हैं, क्योंकि, उनका शून्यरूपसे अवस्थान पाया जाता है। वे अध्रुव भी है, क्योंकि, भेद संघातके द्वारा किसी भी कालमें शून्य वर्गणायें भी अशून्यरूप होकर उपलब्ध होती है। अशून्य वर्गणायें अशून्यरूपसे अध्रुव है, क्योंकि, महास्कन्धवर्गणाओंका सर्वदा एकरूपसे अवस्थान नहीं पाया जाता। इसी प्रकार नानाश्रेणिध्रुवाध्रुवानुगमका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि, इससे उसमें कोई विशेषता नहीं है।

इस प्रकार ध्रुवाध्रुवानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणासान्तरनिरन्तरानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर ध्रुव-स्कन्धद्रव्यवर्गणा तक क्या सान्त हैं, क्या निरन्तर हैं या क्या सान्तर-निरन्तर हैं? निरन्तर हैं, क्योंकि, अन्तरके विना मुक्ताफलोंकी पंक्तिके समान वे अवस्थित हैं। अचित्त अध्रुवस्क-न्धद्रव्यवर्गणायें क्या सान्तर है, क्या निरन्तर हैं या क्या सान्तर-निरन्तर हैं? सान्तर-निरन्तर हैं, क्योंकि, कहीं पर निरन्तररूपसे और कहीं पर सान्तरूपसे वे वर्गणायें उपलब्ध होती है। पुनः उस सान्तरनिरन्तरवर्गणाकी आचार्योंके विरोधरहित उपदेशके

☼ ता० प्रतौ 'सांतरणिरंतराओ (किं सांतरणिरंतर) सांतरणिरंतराओ' आ० प्रतौ 'सांतर-णिरंतराओ सांतरणिरंतर सांतरणिरंतराओ' इति पाठः।

कीरदे । तं जहा – तत्थ जासिं✪ वग्गणाणं दोसु वि पासेसु सुण्णाओ मज्झे एक्का चेव वग्गणा असुण्णा तासिं दुविदसलागाओ थोवाओ । जासिं दोसु वि पासेसु सुण्णाओ होदूण मज्झे णिरंतरं दोण्हं✪ असुण्णवग्गणाओ होंति तासिं दुविदसलागाओ अणंतगुणाओ जासिं दोसु♣ वि पासेसु सुण्णाओ होदूण मज्झे णिरंतरं तिण्णि तिण्णि असुण्णवग्गणाओ होंति तासिं दुविदसलागाओ अणंतगुणाओ । एवं चत्तारि चत्तारि पंच पंच छ छ सत्त सत्त अट्ठ अट्ठ णव णव दस दस संखेज्जाओ संखेज्जाओ असंखेज्जाओ असंखेज्जाओ णिरंतरवग्गणाओ । एदासिमुविवगिदूण दुविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमसलागाहिंतो पुध पुध अणंतगुणाओ । तदो उभयपासेसु सुण्णाओ होदूण मज्झे जाओ णिरंतरमणंताओ वग्गणाओ तासिं दुविदसलागाओ अणंतगुणाओ । एवमणंताणंतवग्गणाणं दुविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमहेट्ठिमसलागाहिंतो अणंतगुणकमेण अणंतरद्धाणं गच्छंति । तदो उवरिमअणंताणं वग्गणाणं उभयदिसासु सुण्णाणं दुविदसलागाओ अणंतरहेट्ठिमहेट्ठिमसलागाहिंतो असंखेज्जगुणाओ असंखेज्जगुणाओ होदूण गच्छंति जाव अण्णं तमद्धाणं गदं ति । तदो उवरिं संखेज्जगुणाओ संखेज्जगुणाओ होदूण दुविदसलागाओ णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णं अणंतमद्धाणं✪ गदं ति । तेण परं संखेज्ज♠दिभागब्भहियाओ

बलसे यह प्ररूपणा करते है । यथा–उनमें जिन वर्गणाओंके दोनों ही पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें हैं और मध्यमें एक ही वर्गणा अशून्यरूप है उनकी स्थापित की गई शलाकायें स्तोक हैं । जिन वर्गणाओंके दोनों पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें है और मध्यमें निरन्तर दो दो अशून्य वर्गणायें है उनकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तगुणी हैं । जिन वर्गणाओंके दोनों ही पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें हैं और मध्यमें निरन्तर तीन तीन अशून्य वर्गणाये हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तगुणी है । इस प्रकार चार चार, पाँच पाच, छह छह, सात सात, आठ आठ, नौ नौ, दस दस, संख्यात संख्यात और असंख्यात असंख्यात जो निरन्तर वर्गणायें हैं उनकी अलग अलग करके स्थापित की गई शलाकायें अनन्तर अधस्तन शलकाओं से पृथक् पृथक् अनन्तगुणी हैं । अनन्तर दोनों पार्श्वभागोंमें शून्य वर्गणायें होकर मध्यमें जो निरन्तर अनन्त वर्गणायें हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तगुणी हैं । इसी प्रकार अनन्तानन्त वर्गणाओंकी स्थापित की गई शलकायें अनन्तर अधस्तन अधस्तन शलाकाओंसे अनन्तगुणित क्रमसे अनन्तर स्थानको जाती हैं । तदनन्तर उपरिम अनन्त वर्गणाओंकी दोनों दिशाओं में शून्य वर्गणाओंकी स्थापित की गई शलाकायें अनन्तर अधस्तन अधस्तन शलाकाओंसे असंख्यातगुणी असंख्यातगुणी होकर अनन्त स्थानोंके व्यतीत होनेतक जाती हैं । तदनन्तर आगे स्थापित की गई शलाकायें संख्यातगुणी संख्यातगुणी होकर अन्य अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने

✪ ता०प्रतौ 'तत्थ ता (जा) सि अ०का० प्रत्योः 'तत्थ जासिं' इति पाठः । ✪ म० प्रतिपाठोऽयम् । अ०का० प्रत्योः 'णिरंतरं सांतरणिरंतरं दोण्हं–' इति पाठः । ♣ ता० प्रतौ 'अणंतगुणाओ ता (जा) सि दोसु अ० का० प्रत्योः ' अणंतगुणाओ तासिं दोसु ' इति पाठः । ✪ ता० प्रतौ 'जाव अणंतअद्धाणं' इति पाठः । ♠ अ आ प्रत्योः 'संखेज्जदि' इति पाठः ।

संखेज्जविभागब्भहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं त्ति । तेण परमसंखेज्जविभागब्भहियाओ असंखेज्जविभागब्भहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अणंतमद्धाणं गदं ति । तेण परमणंतभागब्भहियाओ अणंतभागब्भहियाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव एदाओ अणंतमद्धाणं गदं ति । तेण परमणंतभागहीणाओ अणंतभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णं अणंतमद्धाणं गदं ति । तेण परमसंखेज्जविभागहीणाओ असंखेज्जविभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति । तेण परं संखेज्जविभागहीणाओ संखेज्जविभागहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति । तेण परं संखेज्जगुणहीणाओ संखेज्जगुणहीणाओ होदूण णिरंतरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति । तेण परमसंखेज्जगुणहीणाओ असंखेज्जगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव अण्णं अणंतमद्धाणं तेण परमणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण णिरन्तरं गच्छंति जाव अण्णमणंतमद्धाणं गदं ति । एवमसुण्णवग्गणाणमेगादिएगुत्तराणं उभयपाससुण्णाणं जाओ दुविहसलागाओ ताओ छव्विहाए वड्ढीए छव्विहाए हाणीए च अवट्ठाणं कुणंति त्ति घेत्तव्वं । पत्तेयसरीरक्खंधदव्ववग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ सजोगि-अजोगीसु लब्भमाणाओ ताओ सांतराओ चेव । कुदो? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणेसु केवलिपाओग्गेसु संखेज्जाणं केवलीणं णिरंतरमवट्ठाणविरोहादो । तम्हा

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तक जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने तक संख्यातभाग अधिक संख्यात भाग अधिक होकर निरन्तर शलाकाएँ जाती हैं । उससे आगे अनन्त स्थानोंके व्यतीत होने तक असंख्यातवेंभाग अधिक असंख्यातवेंभाग अधिक होकर निरन्तर शलाकाएँ जाती हैं, उससे आगे अनन्त स्थानोंके जाने तक अनन्तवें भाग अधिक अनन्तवेंभाग अधिक होकर निरन्तर जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होनेतक अनन्तवेंभाग हीन अनन्तवेंभाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होनेतक असंख्यातवें भाग हीन असंख्यातवें भाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक संख्यातवें भाग हीन संख्यातवें भाग हीन होकर निरन्तर जाती हैं। उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक संख्यातगुणी हीन संख्यातगुणी हीन होकर निरन्तर जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक असंख्यातगुणी हीन असंख्यातगुणी हीन होकर निरन्तर जाती हैं । उससे आगे अन्य अनन्त अध्वानके व्यतीत होने तक अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर निरन्तर जाती है । इस प्रकार एकादि एकोत्तर अशून्य वर्गणाओंके उभय पार्श्वमें शून्य वर्गणाओंकी जो स्थापित की गई शलाकायें हैं वे छह प्रकार की वृद्धि और छह प्रकारकी हानिके द्वारा अवस्थान करती हैं ऐसा अर्थ यहाँ ग्रहण करना चाहिए । भव्योंके योग्य जो प्रत्येक शरीरस्कन्धद्रव्यवर्गणायें सयोगी और अयोगी गुणस्थानमें लब्ध्यमान हैं वे सान्तर ही हैं, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे केवलिप्रायोग्य स्थानोंमें संख्यात केवलियोंके निरन्तर रहनेमें विरोध है । इसलिए वर्तमान कालमें विवक्षित स्थान सान्तर ही हैं । अतीत कालमें भी केवलियोंके द्वारा

☼ ता० प्रतौ जाव अणंत (मणंत) मद्धाणं इति पाठः । ☼ आ० प्रतौ 'जाव अणंतमद्धाणं' इति पाठः ।

वट्टमाणकाले अप्पिवट्ठाणाणि सांतराणि चेव । अदीवकाले वि केवलीहि फोसिदपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणि सांतराणि चेव । कुदो? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तकेवलिपाओग्गपत्तेयसरीरट्ठाणेसु सिद्धेहितो असंखेज्जगुणमेत्ताणमेवट्ठाणाणं♣ फासुवलंभादो । तं जहा–एक्कस्स सिद्धस्स जदि वेसूणपुव्वकोडिमेत्ताणि♣ चेव पत्तेयसरीरट्ठाणाणि लब्भंति तो सव्वेसिं सिद्धाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सिद्धेहितो असंखेज्जगुणपत्तेयसरीरवग्गणट्ठाणाणि जीवेहि फोसिदट्ठाणाणि लब्भंति । एदं पि च ण घडदे; सव्वेसिं पुव्वकोडिमेत्ताउअभावादो । सव्वेसिमपुणरुत्तट्ठाणाणि चेव होंति त्ति णियमाभावादो च ।

पस्समाणे वि सांतराओ । को पस्समाणकालो णाम? एस कालो । कथं तत्थ सांतराओ वुच्चदे? सव्वकालमदीवद्धा सव्वजीवरासीए अणंतिमभागो; अण्णहा संसारिजीवाणमभावप्पसंगादो । सव्वकालमदीवकालस्स सिद्धा असंखेज्जदिभागो चेव; छम्मासमंतरिय णिव्वुइगमणणियमादो । एक्केक्कस्स सिद्धस्स वेसूणपुव्वकोडिमेत्ताणि चेव पत्तेयसरीरट्ठाणाणि उक्कस्सेण लब्भंति; केवलिविहारकालस्स वेसूण पुव्वकोडिमेत्तस्सेव उवलंभादो । तम्हा पस्समाणेहि सांतराओ चेवेत्ति घेत्तव्वं । सेचीयाए पुण सव्वट्ठाणाणि णिरंतराणि । एवं चेव ट्ठाणं जीवसहिदं होदि एदाणि ण होंति चेवे त्ति णियमा-

---

स्पर्श किये गये प्रत्येकशरीरवर्गणास्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे केवलिप्रायोग्य प्रत्येकशरीरस्थानोंमें मात्र सिद्धोंसे असंख्यातगुण स्थानोंका स्पर्श उपलब्ध होता है । यथा–एक सिद्धके यदि पूर्वकोटिमात्र प्रत्येकशरीरस्थान उपलब्ध होते हैं तो सब सिद्धोंके कितने प्राप्त होंगे इस प्रकार फल गुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देने पर सिद्धोंसे असंख्यातगुणे स्थान ही जीवोंके द्वारा स्पर्श किये गये पाये जाते है पर यह भी नहीं है, क्योंकि, एक तो सबके एक पूर्वकोटिप्रमाण आयु नहीं पाई जाती, दूसरे सब जीवों के अपुनरुक्त स्थान ही होते है ऐसा कोई नियम नहीं है ।

दृश्यमान (वर्तमान) कालमें भी सान्तर हैं ।

शंका-दृश्यमान काल किसे कहते है ?

समाधान-यह अर्थात् वर्तमान कालको दृश्यमान काल कहते हैं ।

शंका-इसमें वर्गणायें सान्तर कैसे कही जाती हैं ?

समाधान–सर्वदा अतीत काल सब जीव राशिके अनन्तवें भागप्रमाण रहता है, अन्यथा सब जीवोंके अभाव होनेका प्रसंग आता है ।

सिद्ध जीव सर्वदा अतीत कालके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते है, क्योंकि, छह महीनेके अन्तरसे मोक्ष जानेका नियम है । तथा एक एक सिद्ध जीवके उत्कृष्टसे कुछ कम एक एक पूर्वकोटि कालमात्र प्रत्येकशरीरस्थान प्राप्त होते है, क्योंकि, केवलीका विहार काल कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र ही उपलब्ध होता है । इसलिए दृश्यमान कालमें वर्गणायें सान्तर ही होती है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब स्थान निरन्तर होते हैं, क्योंकि, यह स्थान ही जीवसहित होता है और ये स्थान जीवसहित नहीं होते है ऐसा कोई

♣ ता० प्रतौ '–मेत्ताणभवट्ठाणाणं ' इति पाठः ।

♣ ता० प्रतौ ' जदि पुव्वकोडिमेत्ताणि ' इति पाठः ।

भावादो। अभवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ पुढवियादिचत्तारिकाएसु लब्भमाणाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ। कुदो? वट्टमाणकाले पत्तेयसरीरवग्गणाओ उक्कस्सेण असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेव होंति त्ति णियमादो। विग्गहगदीए वट्टमाणा अणंता जीवा पत्तेयसरीरवग्गणाए अंतो णिवदंति त्ति पत्तेयसरीरवग्गणा* अणंता त्ति किण्ण घेप्पदे? ण; णिगोदणामकम्मोदएण बादरणिगोदत्तं सुहुमणिगोदत्तं च पत्ताणं पत्तेयसरीरवग्गणत्तविरोहादो। विग्गहगदीए वट्टमाणाणं अणुदिण्णपत्तेयसरीरणामकम्माणं कथं पत्तेयसरीरत्तमिदि चे? ण एस दोसो; पत्तेयसरीरोदयस्स संतत्तामावादो। भावे वा खीणकसाओ वि पत्तेयसरीरवग्गणा होज्ज*; तदुदयसंतं पडि विसेसाभावादो। तदो बादर-सुहुमणिगोदेहि असंबद्धजीवा पत्तेयसरीरवग्गणा त्ति घेत्तव्वा। ण च बादरसुहुमणिगोदाणं विग्गहगदीए वि विच्छिण्णेगजीवो उवलब्भदे; तत्थ वि एगबंधणबद्धअणंतजीवोवलंभादो। तत्थ एगजीवे संते को दोसो चे? ण; बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाणमाणंतियप्पसंगादो। एदं पि णत्थि; असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेव होंति त्ति गुरूवदेसादो।

नियम नहीं है अर्थात् पृथिवीकायिक आदि चार स्थावर कायिकोंमें प्राप्त होनेवाली वर्गणायें हैं वे वर्तमानकालमें सान्तर हैं, क्योंकि, वर्तमानकालमें प्रत्येकशरीरवर्गणायें उत्कृष्टरूपसे असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा नियम है।

पु. ८९, ९३

शंका–विग्रहगतिमें विद्यमान अनन्त जीव प्रत्येकशरीरवर्गणाके भीतर गर्भित होते हैं, इसलिए प्रत्येकशरीरवर्गणायें अनन्त होती हैं ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते?

समाधान–नहीं, क्योंकि, निगोद नामकर्मके उदयसे बादर निगोद और सूक्ष्म निगोदपनेको प्राप्त हुए जीवोंके प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके होनेमें विरोध है।

शंका–विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंके प्रत्येक शरीर नामकर्मका उदय न होने पर प्रत्येकशरीर कैसे हो सकते हैं?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, प्रत्येकशरीर नामकर्मके उदयकी अधीनताका अभाव है। यदि उदयकी अधीनता मानी जाय तो क्षीणकषाय भी प्रत्येकशरीरवर्गणा हो जावे, क्योंकि, उसके उदय और सत्त्वके प्रति वहां कोई विशेषता नहीं है। इसलिए बादर निगोद और सूक्ष्मनिगोदोंसे असम्बद्ध जीव प्रत्येकशरीरवर्गणा होते हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। यदि कहा जाय कि विग्रहगतिमें भी बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदका स्वतंत्ररूपसे एक जीव पाया जाता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि वहां पर भी एक बन्धनमें बंधे हुए अनन्त जीव पाये जाते हैं।

शंका–वहां एक जीवके रहनेमें क्या दोष है?

समाधान–नहीं, क्योंकि, ऐसा मानने पर बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंको अनन्तपनेका प्रसंग आता है। किन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वे असंख्यात लोकप्रमाण ही होती हैं ऐसा गुरुका उपदेश है।

---

* ता० प्रतौ 'जीवा पत्तेयसरीरवग्गणा' इति पाठः। * अ० प्रतौ 'पत्तेयसरीरवग्गण होज्ज' इति पाठः।

ण च असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणाणि वट्टमाणकाले आवूरिज्जंति; विरोहादो। अदीदकाले वि सांतराणि चेव; अदीदकालादो असंखेज्जगुणेहि अदीदकालप्पण्णपत्तेयसरीरट्ठाणेहि जीवेहि सव्वट्ठाणावूरणविरोहादो। पस्समाणाए वि ण णिरंतराओ; सव्वदा अदीदकालस्स सव्वजीवरासीदो अणंतगुणहीणत्तुवलंभादो। सेचीयादो पुण सव्ववग्गणाओ णिरंतराओ; एसा चेव संभवदि त्ति णियमाभावादो।

बादरणिगोदवग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ जाओ खीणकसायकालम्हि लब्भमाणियाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ; सव्वजीवेहि* अणंतगुणमेत्तबादरणिगोदवग्गणाणं खीणकसायपाओग्गाणं संखेज्जेहि जीवेहि आवूरणविरोहादो। अदीदकाले फुसणेण सांतराओ; अंतोमुहुत्तगुणिदसिद्धरासिमेत्तट्ठाणाणं चेव तीदे काले फोसणुवलंभादो। एवं पस्समाणफोसणं पि वत्तव्वं; विसेसाभावादो। सेचीयादो पुण णिरंतराओ। अभवसिद्धियपाओग्गाओ* जाओ मूलयथूहल्लयादिविसयाओ बादरणिगोदवग्गणाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ। कुदो? असंखेज्जलोगमेत्तबादरणिगोदवग्गणाहि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसव्वट्ठाणावूरणसंभवाभावादो। अदीदे

यह कहना कि असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीरवर्गणायें सब जीवोंसे अनन्तगुण स्थानोंको वर्तमानकालमें पूरा करती हैं, ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध आता है। वे अतीत कालमें भी सान्तर ही हैं, क्योंकि, अतीत कालसे असंख्यातगुणे अतीत कालमें उत्पन्न हुए प्रत्येकशरीरस्थानरूप जीवोंके द्वारा सब स्थानोंके पूरा होनेमें विरोध है। दृश्यमान कालमें भी वे निरन्तर नहीं हैं, क्योंकि, सर्वदा अतीत काल सब जीवराशिसे अनन्तगुणा हीन पाया जाता है। परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब वर्गणायें निरन्तर हैं, क्योंकि, इस अपेक्षासे यही सम्भव है ऐसा कोई नियम नहीं है। अर्थात् सेचीयकी अपेक्षा कोई भी वर्गणा सदा सम्भव हो सकती है, इसलिए सब वर्गणाओंको निरन्तर कहा है।

भव्योंके योग्य जो बादरनिगोदवर्गणायें क्षीणकषायके कालमें लब्धमान हैं वे वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणी क्षीणकषायके योग्य बादरनिगोदवर्गणाओंका संख्यात जीवोंके द्वारा पूरा करनेमें विरोध है। अतीतकालमें स्पर्शनकी अपेक्षा सान्तर है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तगुणित सिद्धराशिप्रमाण स्थानोंका ही अतीत कालमें स्पर्शन उपलब्ध होता है। इसी प्रकार दृश्यमान स्पर्शन भी कहना चाहिए, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है। सेचीयकी अपेक्षा तो निरन्तर हैं। मूली, थूवर और आर्द्रक आदिमें रहनेवाली अभव्योंके योग्य जो बादरनिगोदवर्गणायें हैं वे वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि, असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणाओंके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे सब स्थानोंका पूरा करना सम्भव नहीं है। अतीत कालमें भी बादर

---

* ता० प्रतौ 'सांतराओ. (सव्वजीवेहि आणंतगुणमेत्तबादरणिगोदवग्गणाओ भवसिद्धियपाओग्गाओ खीणकसायकालम्मि लब्भमाणियाओ ताओ वट्टमाणकाले सांतराओ)सव्वजीवेहि [* अ० का० प्रत्योः 'अभवसिद्धियपाओग्गाओ' इतिपाठः।

वि काले बादरणिगोदवग्गणट्ठाणाणि सांतराणि चेव। कुदो ? असंखेज्जलोगगुणिदअदीदकालमेत्ताणं चेव ट्ठाणाणं तत्थ जीवसहिदाणमुवलंभादो। ण च एवं; सरिसधणियाणं पि वग्गणाणं संभवादो। जदि वि अदीदकालेण गुणिदसव्वजीवरासिमेत्ताणि बादरणिगोदट्ठाणाणि अदीदकाले उप्पण्णाणि होंति तो सव्वट्ठाणाणि आवूरिज्जंति*; अदीदकालादो वि सव्वजीवरासीदो वि विस्सासुवचयाणमेगपरमाणुविसयाणमणंतगुणत्तादो। पत्थमाणाए वि सांतराओ; अदीदकालं मोत्तूण एत्थ सांतरणिरंतरपरूवणाए भविस्सकाले वि संववहाराभावादो। भावे वा तस्स अदीदकाले अंतब्भावो होज्ज; अण्णहा जीवसहिदत्ताणुववत्तीदो। ण च एगजीवेण एगा बादरणिगोदवग्गणा णिप्पज्जदि जेण सव्वबादरणिगोदेहि सव्वट्ठाणाणि तीदाणागदकालेसु आवूरिज्जंति; जहण्णियाए बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो हेट्ठा पादप्पसंगादो। सेचीयादो पुण सव्वट्ठाणाणि णिरंतराणि।

सुहुमणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले सांतराओ; असंखेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदवग्गणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्ठाणावूरणक्खमीए अभावादो। अदीदकाले वि सेचीयट्ठाणाणि सांतराणि चेव; असंखेज्जलोगगुणिदअदीदकालमेत्तसुहुमणिगोदट्ठाणेहि अदीदकालुप्पण्णेहि सव्वट्ठाणावूरणविरोहादो। भविस्सकाले वि सांतराणि

निगोदवर्गणास्थान सान्तर ही है, क्योंकि, असंख्यात लोकगुणित अतीत कालप्रमाण स्थान ही अतीत कालमें जीवों सहित उपलब्ध होते हैं। परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, सदृश धनवाली भी वर्गणायें सम्भव हैं। यद्यपि अतीत कालसे गुणित सब जीवराशिप्रमाण बादरनिगोद स्थान अतीत कालमें उत्पन्न होते हैं तो भी सब स्थान व्याप्त कर लिये जाते हैं, क्योंकि, अतीत कालसे भी और सब जीवराशिसे भी एक परमाणुविषयक विस्रसोपचय अनन्तगुणे होते हैं। प्रस्थमान कालमें भी सान्तर हैं, क्योंकि, अतीत कालको छोड़कर यहां पर सान्तरनिरन्तर प्ररूपणाका भविष्य कालमें भी व्यवहार नहीं होता। यदि होता है तो उसका अतीत कालमें अन्तर्भाव हो जाता है, अन्यथा वे स्थान जीव सहित नहीं बन सकते। और एक जीवके द्वारा एक बादरनिगोदवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है जिससे सब बादर निगोदोंके द्वारा सब स्थान अतीत और अनागत कालमें व्याप्त किये जावें, क्योंकि, ऐसा मानने पर जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे नीचे होनेका प्रसंग आता है। परन्तु सेचीयकी अपेक्षा सब स्थान निरन्तर हैं।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें वर्तमान कालमें सान्तर हैं, क्योंकि, असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें सब जीवोंसे अन्तगुणे सेचीयस्थानोंके पूरा करनेकी शक्तिका अभाव है। अतीत कालमें भी सेचीयस्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि, अतीत कालमें उत्पन्न हुए असंख्यात लोकगुणित अतीतकालप्रमाण सूक्ष्मनिगोदस्थानोंके द्वारा सब स्थानोंके पूरा करनेमें विरोध है। बादरनिगोदवर्गणाके प्रसंगसे जो क्रम कह आये हैं उसी क्रमसे ये भविष्य कालमें भी सान्तर

---

* आ० प्रतौ ' सव्वट्ठाणाणमावूरिज्जंति ' इति पाठः।

बादरणिगोदवग्गणाए भणिदकमेण । अथवा भविस्सकाले ण तेसिं जीवसहिदत्तमत्थि । भावे वा ण सो* भविस्सकालो; वट्टमाणादीदकालेसु तस्संतब्भावादो । सेचीयादो पुण णिरंतराणि ।

महाखंधदव्ववग्गणा सांतरा; वट्टमाणकाले एयत्तादो । ण च सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तमहाखंधट्ठाणाणि एक्कवग्गणाए आपूरिज्जंति; विरोहादो । अदीदे वि काले महाखंधसेचीयट्ठाणाणि सांतराणि चेव; अदीदकालमेत्ताणमुक्कस्सेण भूदकालसमुप्पण्णट्ठाणाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसेचीयट्ठाणापूरणसत्तीए अभावादो । भविस्सकाले वि सांतराणि चेव । सेचीयादो पुण णिरंतराणि । णाणासेडीए वि एवं चेव सांतर-णिरंतरपरूवणा कायव्वा; विसेसाहियाभावादो । एवं सांतरणिरंतराणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

एगसेडिवग्गणाए ओजजुम्माणुगमं वत्तइस्सामो । तं जहा–ओजो दुविहो–कलि-ओजो तेजोजो चेवि । जुम्मं दुविहं–कडजुम्मं बादरजुम्मं चेवि । जं चदुहि अवहिरिज्जमाणमेगं एदि सो कलिओजो ✱ । चदुहि अवहिरिज्जमाणे जत्थ तिण्णि एंति सो तेजोजो ✱ । जत्थ चत्तारि एंति तं कडजुम्मं । अजत्थ दो एंति तं बादरजुम्मं । एदेण अट्ठपदेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा कलिओजो, एगत्तादो । संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा

हैं । अथवा भविष्यकालमें जीवसहित नहीं हैं । यदि भविष्यकालमें भी उन्हें जीव सहित माना जाता है तो वह भविष्यकाल नहीं है, क्योंकि, उसका वर्तमान और अतीतकालमें अन्तर्भाव हो जाता है । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा निरन्तर हैं । see page 101.109 145

महास्कन्धद्रव्यवर्गणा सान्तर है, क्योंकि, वर्तमानकालमें वह एक है । एक वर्गणाके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे महास्कन्धस्थान पूरे जाते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है । अतीतकालमें भी महास्कन्ध सेचीयस्थान सान्तर ही हैं, क्योंकि, उत्कृष्टसे भूतकालमें उत्पन्न हुए अतीत काल मात्र स्थानोंके द्वारा सब जीवोंसे अनन्तगुणे सेचीय स्थानोंके पूरे करनेकी शक्तिका अभाव है । भविष्यकालमें भी सान्तर ही हैं । परन्तु सेचीयकी अपेक्षा निरन्तर हैं । नानाश्रेणिकी अपेक्षा भी इसी प्रकार सान्तरनिरन्तरप्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

इस प्रकार सान्तर-निरन्तरानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अब एकश्रेणिवर्गणाकी अपेक्षा ओज-युग्मानुगमको बतलाते हैं । यथा–ओज दो प्रकारका है–कलि ओज और तेजोज । युग्म दो प्रकारका है–कृतयुग्म और बादरयुग्म । चारका भाग देने पर जिसमें एक शेष रहता है वह कलिओज है । चारका भाग देने पर जहां तीन शेष रहते हैं वह तेजोज है । जहां चार आते हैं वह कृतयुग्म है और जहां दो आते हैं वह बादर-युग्म है । इस अर्थपदके अनुसार परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा कलिओज है, क्योंकि, इस वर्गणाका प्रमाण एक है । जघन्य संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा बादरयुग्म है, क्योंकि, इस वर्गणाका

✱ ता० प्रतौ 'णत्थि सो' इति पाठः । ✱ ता० प्रतौ '–मेगं एदिस्से काले (एदि सो कलि) ओजो' अ० प्रतौ '–मेगं रादि सो कलिओजो' इति पाठः ।

जहण्णिया बादरजुम्मं; दुसंखत्तादो। उक्कस्सिया तेजोजो; रूवूणकदजुम्मपमाणत्तादो। संखेज्जपदेसियसव्ववग्गणसलागाओ बादरजुम्मं; दुरूवूणकदजुम्मपमाणत्तादो वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ। असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ जहण्णिया कदजुम्मं जहण्णपरित्तासंखेज्जपमाणत्तादो। उक्कस्सिया तेजोजो; रूवूणकदजुम्मपमाणत्तादो। असंखेज्जपदेसियवग्गणसलागाओ कदजुम्मं; जहण्णपरित्तासंखेज्जेण ऊणजहण्णपरित्ताणंतपमाणत्तादो। वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ। एवं सव्वाओ वग्गणाओ णेदव्वाओ। णवरि महाखंधदव्ववग्गणा जहण्णिया कदजुम्मं। उक्कस्सिया वि कदजुम्मं। महाखंधवग्गणसलागाओ कलिओजो वग्गणाओ पुण चउट्ठाणपदिदाओ।

णाणासेडिओजजुम्माणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किमोजो किं जुम्मं? जहण्णिया कदजुम्मं। उक्कस्सिया वि कदजुम्मं। कुदो? एदं णव्वदे? आइरियपरंपरागदसुत्तविरुद्धगुरूवदेसादो। अजहण्णअणुक्कस्सियाए चत्तारि वियप्पा। एवं णेयव्वं जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति। उवरिमसेसवग्गणासु जहण्णिया कलिओजो; एगत्तादो। उक्कस्सिया तेजोजो। मज्झिमाए चत्तारि वियप्पा। णवरि महाखंधदव्ववग्गणाए णाणासेडी णत्थि; सव्वकालं सरिसधणियबहुवग्गणाभावादो। एवं ओजजुम्माणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

प्रमाण दो है। उत्कृष्ट संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तेजोज है, क्योंकि, वह एक कम कृतयुग्मप्रमाण है। संख्यातप्रदेशी सब वर्गणाशलाकायें बादरयुग्म है, क्योंकि, वे दो कम कृतयुग्मप्रमाण हैं। परन्तु वर्गणायें चतुःस्थानपतित हैं। जघन्य असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा कृतयुग्म है, क्योंकि, वह जघन्य परीतासंख्यातप्रमाण है। उत्कृष्ट असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा तेजोज है, क्योंकि, वह एक कम कृतयुग्मप्रमाण है। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाशलाकायें कृतयुग्म है, क्योंकि, वे जघन्य परीतासंख्यात कम जघन्य परीतानन्तप्रमाण हैं। परन्तु वर्गणायें चतुःस्थानपतित हैं। इसी प्रकार सब वर्गणाओंके विषयमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि जघन्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणा कृतयुग्म है तथा उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणा भी कृतयुग्म है महास्कन्धवर्गणाशलाकायें कलिओजरूप हैं। परन्तु वर्गणायें चतुःस्थानपतित हैं।

नानाश्रेणिओजयुग्मानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ओजरूप है या क्या युग्मरूप है? जघन्य कृतयुग्मरूप है तथा उत्कृष्ट भी कृतयुग्मरूप है।

शंका-यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-आचार्य परम्परासे हुए सूत्राविरुद्ध गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

अजघन्य-अनुत्कृष्ट वर्गणाके चार भेद हैं। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक जानना चाहिए। उपरिम शेष वर्गणाओंमें जघन्य वर्गणा कलिओजरूप है, क्योंकि, वह एक है। उत्कृष्ट वर्गणा तेजोजरूप है और मध्यकी वर्गणायें चारों प्रकारकी हैं। इतनी विशेषता है कि महास्कन्धद्रव्यवर्गणाकी नानाश्रेणि नहीं है, क्योंकि, सर्वदा सदृश धनवाली बहुत वर्गणाओंका अभाव है।

इसप्रकार ओजयुग्मानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एगसेडिवग्गणखेत्ताणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ च केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखेज्जदिभागे । असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवग्गणे त्ति ताव एदासि वग्गणाणमेया सेडी केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे । जदि वा थले वा आगासे वा सुहुमणिगोदवग्गणादिसव्ववग्गणाओ संभवंति त्ति तेसिं सव्वलोगो होदु णाम ण पत्तेयसरीरबादरणिगोदवग्गणाणं; तेसिं अट्ठ पुढवीओ भवणविमाणाणि च अस्सिदूण चेव अवट्ठाणादो? ण, सुहुमपुढविआउतेउवाउकाइयाणं पत्तेयसरीराणं सव्वलोगम्हि अवट्ठाणं पडि विरोहाभावादो मारणंतियपदेण उववादेण सव्वलोगमेतखेत्तुवलंभादो च । महाखंधदव्ववग्गणा केवडि खेत्ते ? लोगे देसूणे ।

णाणासेडिखेत्ताणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे । कुदो ? आणंतियादो । एवं णेयव्वं जाव सांतरणिरंतरवग्गणे त्ति । पत्तेयसरीरबादरसुहुमवग्गणाओ केवडि खेत्ते? सव्वलोगे; असंखेज्जलोगपमाणत्तादो । महाखंधदव्ववग्गणा केवडि खेत्ते? लोगे देसूणे । एवं खेत्ताणुगमो त्ति समत्तमणुओगद्दारं ।

एगसेडिवग्गणफोसणाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए संखेज्जपदेसियदव्व-

---

एकश्रेणिवर्गणाक्षेत्रानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओं और संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाओंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा तक इन वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कितना क्षेत्र है ? सब लोक क्षेत्र है ।

शंका–जलमें, स्थलमें और आकाशमें सूक्ष्मनिगोदवर्गणा आदि सब वर्गणायें सम्भव हैं इसलिए उनका सब लोकप्रमाण क्षेत्र होओ, परन्तु प्रत्येकशरीरबादरनिगोदवर्गणाओंका सब लोकप्रमाण क्षेत्र नहीं हो सकता, क्योंकि, वे आठ पृथिवियों और भवनविमानोंका आश्रय लेकर ही अवस्थित हैं ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, एक तो प्रत्येकशरीरवाले सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंका सब लोकमें अवस्थान होनेमें कोई विरोध नहीं आता । दूसरे प्रत्येकशरीरवाले जीवोंका मारणान्तिकपद और उपपादकी अपेक्षा सब लोकप्रमाण क्षेत्र पाया जाता ।

महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना क्षेत्र है? कुछ कम सब लोक क्षेत्र है ।

नानाश्रेणिक्षेत्रानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है, क्योंकि, उसका प्रमाण अनन्त है । इसीप्रकार सान्तर-निरन्तरवर्गणा तक ले जाना चाहिए । प्रत्येकशरीर, बादर और सूक्ष्म वर्गणाओंका कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है, क्योंकि, वे असंख्यात लोकप्रमाण हैं । महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना क्षेत्र है ? कुछ कम लोकप्रमाण है ।

इस प्रकार क्षेत्रानुगम अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिवर्गणास्पर्शनानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओं और संख्यातप्रदेशी

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

वग्गणाहि च केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा । असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवग्गणे त्ति ताव एदासिं वग्गणाणमेगसेडीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीदवट्टमाणेण सव्वलोगो । महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण✡ लोगो देसूणो । अदीदेण सव्वलोगो । एवं णाणासेडिफोसणं परूवेयव्वं । णवरि परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदवग्गणे त्ति ताव एवाहि वग्गणाहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? सव्वलोगो । महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगो देसूणो सव्वलोगो वा । एवं फोसणाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

एगसेडिकालाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा केवचिरं कालादो होदि ? वग्गणादेसेण सव्वद्धा । दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव धुवखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव पत्तेयं पत्तेयं एवं चेव सव्वत्थ वत्तव्वा । अचित्तअद्धुवखंधदव्ववग्गणा केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमयं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । एवं णेयव्वं जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति । पत्तेयसरीर-बादरणिगोद-सुहुमणिगोदवग्गणाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलेहि तेसिं विस्सासुवचयपोग्गलेहि य भेदसंघादं

द्रव्यवर्गणाओंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोद द्रव्यवर्गणा तक इन वर्गणाओंकी श्रेणिने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालमें सब लोकका स्पर्शन किया है । महास्कन्धद्रव्यवर्गणाने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमानमें कुछ कम लोकप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालमें सब लोकका स्पर्शन किया है । इसी प्रकार नानाश्रेणिका स्पर्शन कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर सूक्ष्मनिगोदवर्गणा तक इन वर्गणाओंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है । महास्कन्धद्रव्यवर्गणाने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? कुछ कम लोकप्रमाण क्षेत्रका और सब लोकका स्पर्शन किया ।

इस प्रकार स्पर्शनानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिकालानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका कितना काल है? वर्गणादेशकी अपेक्षा सब काल है । द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक प्रत्येक वर्गणाका सर्वत्र इसी प्रकार काल कहना चाहिए । अचित्तध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाका कितना काल है ? जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । इसी प्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक जानना चाहिए । प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओं के औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरोंके पुद्गलों द्वारा तथा उनके विस्रसोपचयों

✡अ० का० प्रत्योः ' महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं, अदीदवट्टमाणेण सव्वलोगो महाखंधदव्ववग्गणाए केवडियं खेत्तं फोसिदं वट्टमाणेण ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

गच्छमाणजीवेहि य पडिसमयमुवचयावचयभावं गच्छमाणाणं सरिसधणियाणं वग्गणाणमावलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणमसंखेज्जलोगपोग्गलपरियट्टमेत्तकालट्ठाणं ण जुज्जदे । ण च असंखेज्जलोगमेत्तसरिसधणियवग्गणाओ अत्थि; जवमज्झपरूवणाए सह विरोहादो त्ति । तम्हा एदेसिमेगसेडिवग्गणाणं कालो जाणिय वत्तव्वो । एत्तियकालो त्ति ण वयं वोत्तुं समत्था; अलद्धुवदेसत्तादो । लद्धुवदेसे वि वा धुवलंभादो । अथवा णेमो ट्ठाणणिबंधणवग्गणाणमुक्कस्सकालो किंतु जीवणिबंधणाणं । ण च एदासिं सेचीयभावेण अणंतकाले परूविज्जमाणे विरोहो अत्थि; तण्णिबंधणाणुवलंभादो । अहवा आगमो अतक्कगोयरो त्ति पुव्विल्लकालो चेव घेत्तव्वो । एवं णाणासेडिकालाणुगमो वि वत्तव्वो । णवरि परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणप्पहुडि जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव वग्गणादेसेण सव्वद्धा । एवं कालाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

एगसेडिवग्गणअंतराणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए अंतरं केवचिरं कालादो होदि? णत्थि अंतरं णिरंतरं । एवं दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव ध्रुवखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव णत्थि अंतरमिदि पत्तेयं पत्तेयं परूवेदव्वं । अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेण एगसमयं; उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा

द्वारा भेद-संघातको प्राप्त होनेवाले जीवोंके द्वारा प्रत्येक समयमें उपचय और अपचयभावको प्राप्त होनेवाली और सदृश धनवाली आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण वर्गणाओंका असंख्यात लोक पुद्गलपरिवर्तन काल तक अवस्थान नहीं बन सकता है। असंख्यात लोकप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणायें हैं यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस कथनका यवमध्यप्ररूपणाके साथ विरोध आता है। इसलिए इन एकश्रेणिवर्गणाओंका काल जानकर कहना चाहिए। इतना काल है यह बात हम कहनेके लिए समर्थ नहीं हैं, क्योंकि, इस विषयका कोई उपदेश नहीं पाया जाता। उपदेशके प्राप्त होनेपर भी ध्रुव प्राप्ति है। अथवा यह स्थाननिबन्धन वर्गणाओंका उत्कृष्ट काल नहीं है किन्तु जीवनिबन्धन वर्गणाओंका उत्कृष्ट काल है। इनका सेचीयरूपसे अनन्त काल कहनेपर विरोध आता है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, उसका कोई कारण उपलब्ध नहीं होता। अथवा आगम तर्कका विषय नहीं है, इसलिये पहलेका ही काल ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार नानाश्रेणिकालानुगमकी अपेक्षा भी कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक वर्गणादेशकी अपेक्षा सर्वदा काल है।

इस प्रकार कालानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिवर्गणाअन्तरानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका अन्तरकाल कितना है? अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। इसी प्रकार द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक प्रत्येक वर्गणाका अन्तर नहीं है ऐसा प्रत्येकवर्गणाकी अपेक्षा कथन करना चाहिए। अचित्तअध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणाका अन्तरकाल कितना है? जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर

पोग्गलपरियट्टा। पत्तेयसरीर-बादरणिगोद-सुहुमणिगोदवग्गणाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? जहण्णेणेगसमओ, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । एदं सेचीयं पडुच्च परूविदं । अत्थदो पुण केसिंचि सचित्तअद्धुवक्खंधवग्गणट्ठाणाणमंतराभावेण होदव्वं; अण्णहा अदीदकाले सव्वट्ठाणेसु जीवसंभवप्पसंगादो । ण च एवं; असंखेज्जलोगगुणिदअदीदकालमेत्तट्ठाणाणं पगरिसेणुप्पण्णाणं सव्वट्ठाणावूरण-विरोहादो । एवं महाखंधदव्ववग्गणाए वि वत्तव्वं । णाणासेडिवग्गणंतराणुगमो एवं चेव वत्तव्वो । णवरि अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणाणं णत्थि अंतरं णिरंतरं । सचित्तअद्धुवक्खंधवग्गणाणं पि णत्थि अंतरं; सेचीयत्तणेण सव्वासिमत्थित्तुवलंभादो। एवं महाखंधदव्ववग्गणाए वि वत्तव्वं । एवमंतराणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

एगसेडिवग्गणभावाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए को भावो? ओदइओ पारिणामिओ वा । जे ण जीवेण कदाचि वि परिणमिदा परिणामिदा वि संता जे विणट्ठोदइयभावा तेसिं भावो पारिणामिओ भावो [illegible] तेसिमोदइओ भावो चेव । एवं दुपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति वत्तव्वं । एसा परूवणा एगपरमाणुं पडुच्च परूविदा । खंधं पडुच्च भण्णमाणे दुपदेसियादिवग्गणाणं ओदइयो पारिणामिओ ओदइयपारिणामिओ च तिविहो भावो होदि ।

अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गल परिवर्तनप्रमाण है । प्रत्येकशरीर बादरनिगोद और सूक्ष्म-निगोद वर्गणाओंका अन्तरकाल कितना है ? जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है । यह सेचीयकी अपेक्षा कथन किया है । वास्तवमें तो किन्हीं सचित्तअध्रुवस्कन्धवर्गणास्थानोंका अन्तरसे रहित होना चाहिए, अन्यथा अतीत कालमें सब स्थानोंमें जीवोंकी सम्भावना प्राप्त होती है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, उत्कृष्टरूपसे उत्पन्न हुए असंख्यात लोकगुणित अतीत कालप्रमाण स्थान सब स्थानोंको पूरा करते हैं ऐसा होनेमें विरोध है । इसीप्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके विषयमें भी कहना चाहिए । नानाश्रेणिवर्गणाअन्तरानुगमकी अपेक्षा इसी प्रकार कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अचित्तअध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंका अन्तरकाल नहीं है वे निरन्तर हैं । सचित्त अध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंका भी अन्तरकाल नहीं है, क्योंकि, सेचीयपनेकी अपेक्षा सबका अस्तित्व पाया जाता है । इसीप्रकार महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके विषयमें भी कहना चाहिए ।

इस प्रकार अन्तरानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिवर्गणाभावानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाका क्या भाव है? औदयिक व पारिणामिक भाव है । जिस जीवके द्वारा कभी भी परिणमन नहीं किये गये और परिणमाये गये भी जो औदयिक भावके नाशको प्राप्त हुए हैं उनका परिणामिक भाव है । परन्तु जिन परमाणुओंका औदयिक भाव नष्ट नहीं हुआ है उनका औदयिक भाव ही है । इस प्रकार द्विप्रदेशी वर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक कहना चाहिए । यह प्ररूपणा एक परमाणुकी अपेक्षासे की है । स्कन्धकी अपेक्षा कथन करनेपर द्विप्रदेशी आदि वर्गणाओंका औदयिक भाव

सचित्तवग्गणाणं पुण भावो मिस्सो चेव; तत्थ सुद्धेगभावाणुवलंभादो । णाणासेढि-वग्गणभावो एवं चेव भाणिदव्वो । ओदइयभावेण पोग्गलाणमवट्ठाणं पुण उक्कस्सेण असंखेज्जलोगमेत्तकालपमाणं होदि । एवं भावाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

एगसेढिवग्गणउवणयणाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा एया चेव* । संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ । असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ असंखेज्जाओ । जहण्णपरित्ताणंतादो जहण्णपरित्तासंखेज्जे सोहिदे सुद्धसेसमेत्ताओ त्ति भणिदं होदि । आहारवग्गणाए हेट्ठा अणंतपदेसियअगहणवग्गणा अणंताओ । जहण्णआहारवग्गणादो जहण्णपरित्ताणंते सोहिदे सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्ताओ त्ति घेत्तव्वं । अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ त्ति भणिदं होदि । एवं कम्मइयवग्गणे त्ति । धुवखंधदव्ववग्गणाओ अणंताओ । जहण्णधुवक्खंधवग्गणाए जहण्णसांतरणिरंतरवग्गणाए सोहिदाए जं सेसं तत्तियमेत्ताओ त्ति घेत्तव्वं । एवमप्पिदजहण्णवग्गणमुवरिमवग्गणजहण्णवग्गणाए सोहिय सुद्धसेसेण वग्गणउवणयो परूवेदव्वो जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति । एवं णाणासेढिवग्गणाउवणयणाणुगमो वत्तव्वो; विसेसाभावादो । एवं वग्गणुवणयणस्स अत्थं के वि आइरिया भणंति । एसो अत्थो ण घडदे । कुदो ? वग्गण-

---

पारिणामिक भाव और औदयिक-पारिणामिक भाव इस प्रकार तीन प्रकारका भाव होता है । परन्तु सचित्तवर्गणाओंका भाव मिश्र ही होता है, क्योंकि, उनमें शुद्ध एक भाव नहीं उपलब्ध होता । नानाश्रेणिवर्गणाओंका भाव इसी प्रकार कहना चाहिए । परन्तु औदयिकभावके साथ पुद्गलोंका अवस्थान उत्कृष्टसे असंख्यात लोककालप्रमाण होता है ।

इस प्रकार भावानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिवर्गणाउपनयनानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक ही है । संख्यात-प्रदेशी द्रव्यवर्गणायें एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण है । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें असंख्यात हैं । जघन्य परीतानन्तमेंसे जघन्य परीतासंख्यातके कम करने पर जितना शेष रहे उतनी हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । आहारवर्गणासे पूर्व अनन्तप्रदेशी अग्रहणवर्गणायें अनन्त हैं । जघन्य आहारवर्गणामेंसे जघन्य परीतानन्तके कम कर देनेपर शेषमें जो संख्या प्राप्त हो उतनी हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । वे अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस प्रकार कार्मणवर्गणा तक जानना चाहिए । ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणायें अनन्त हैं । जघन्य सान्तरनिरन्तरवर्गणामेंसे जघन्य ध्रुवस्कन्ध-वर्गणाके घटा देने पर जो शेष रहे उतनी हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार विवक्षित जघन्य वर्गणाको आगेकी वर्गणाकी जघन्य वर्गणामेंसे घटा देने पर जो शेष रहे उतना वर्गणाका उपनय कहना चाहिए और यह कहना महास्कन्धवर्गणातक करना चाहिए । इसी प्रकार नाना श्रेणिवर्गणा उपनयनानुगमका कथन करना चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार कितने ही आचार्य वर्गणा उपनयनका अर्थ कहते हैं, परन्तु यह अर्थ घटित नहीं होता ।

---

* म० प्रतौ ' वग्गणाए चेव ' का० प्रतौ ' वग्गणाए एया चेव ' इति पाठः ।

परिमाणाणुगमे♠ भणिस्समाणत्तादो । ण च एक्को चेव अत्थो दो वारं उच्चदे; पुणरुत्तदोसप्पसंगादो । तम्हा♣ वग्गणुवणयपरूवणा एवं कायव्वा । तं जहा-उक्कस्स-महाखंधदव्ववग्गणं घेत्तूण पुणो उक्कस्समहाखंधदव्ववग्गणप्पहुडि तत्थतणएगेगरूवे वग्गणं पडि हेट्ठा दिज्जमाणे जाव परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणं ताव गंतूण समप्पदि । एवं महाखंधुवरिमवग्गणप्पहुडि सेसहेट्ठिमवग्गणाणं पदेसे घेत्तूण पत्तेयं पत्तेयं वग्ग-णुवणयणं वत्तव्वं जाव परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणे त्ति । किंफलो उवणयणाणुगमो ? सव्ववग्गणाओ णिरंतरं रूवाहियकमेण गदाओ त्ति जाणावणफलो । एवं वग्गणउव-णयणाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

एगसेडिवग्गणपरिमाणाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा एया चेव । संखेज्जपदे-सियदव्ववग्गणाओ रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ । असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ असं-खेज्जाओ होंताओ वि जहण्णपरित्तासंखेज्जेणूणजहण्णपरित्ताणंतमेत्ताओ आहारवग्ग-णाए हेट्ठिमअणंतपदेसियदव्ववग्गणाओ अणंताओ होंताओ वि जहण्णपरित्ताणंतेणूण-जहण्णाहारदव्ववग्गणमेत्ताओ । अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ त्ति भणिदं होदि । एवं णेयव्वं जाव कम्मइयवग्गणे त्ति । पुणो धुवखंधदव्व-वग्गणप्पहुडि अप्पिदजहण्णवग्गणमुवरिमाणंतरजहण्णवग्गणाए सोहिय सुद्धसेसम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ वग्गणाओ होंति त्ति पत्तेयं पत्तेयं वग्गण-

क्योंकि, वर्गणापरिमाणानुगममें इसका कथन करेंगे। एक ही अर्थ दो बार कहा जा सकता है, यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होने पर पुनरुक्तदोषका प्रसंग आता है । इसलिए वर्गणा उपनयन प्ररूपणा इस प्रकार करनी चाहिए । यथा–उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणाको ग्रहण कर पुनः उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणासे लेकर उसमेंसे एक एक अंकको प्रत्येकवर्गणाके प्रति नीचे देने पर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा तक जाकर वह समाप्त हो जाती है । इसीप्रकार महास्कन्ध उप-रिम वर्गणासे लेकर नीचेकी शेष वर्गणाओंके प्रदेशोंको ग्रहणकर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा तक अलग अलग प्रत्येक वर्गणाका उपनयन कहना चाहिए । उपनयनानुगमका क्या फल है ? सब वर्गणायें निरन्तर एक अधिकके क्रमसे गई हैं यह बतलाना इसका फल है ।

इस प्रकार वर्गणाउपनयनानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एक श्रेणिवर्गणापरिमाणानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक ही है । संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण हैं । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्ग-णायें असंख्यात होकर भी जघन्य परीतासंख्यात कम जघन्य परीतानन्तप्रमाण है । आहार-वर्गणासे पूर्व अनन्तप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें अनन्त होती हुई भी जघन्य परीतानन्त कम जघन्य आहारद्रव्यवर्गणाप्रमाण हैं । ये अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इसी प्रकार कार्मणवर्गणा तक जानना चाहिए । पुनः ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणासे लेकर विवक्षित जघन्य वर्गणाको आगेकी अनन्तर जघन्य वर्गणामेंसे घटाकर शेषमें जितनी संख्या हो उतनी वर्गणायें होती हैं । इस प्रकार महास्कन्धद्रव्य-

♠ अ० प्रतौ '–परिणामाणुगमे' इति पाठः । ♣ प्रतिषु 'तम्हा' इति स्थाने 'तं जहा' इति पाठः ।

पमाणपरूवणा कायव्वा जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति । णवरि ध्रुवक्खंधदव्ववग्गण-प्पहुडि उवरि सव्वत्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताओ एगसेडिवग्गणाओ होंति✡ ।

संपहि णाणासेडिवग्गणपरिमाणाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा सरिस-धणियवग्गणाहि जहण्णपदे वि उक्कस्सपदे वि केवडिया? अणंता । णाणासेडिजहण्ण-परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो सरिसधणिए [illegible] पोग्गलदव्ववग्गणा विसेसाहिया । विसेसो पुणो अणंताणि पोग्गलपढमवग्गमूलाणि । दुपदेसियदव्ववग्गणा सरिसधणिएहि जहण्णिया उक्कस्सिया वि अणंता । जहण्णादो पुण उक्कस्सिया विसेसाहिया✡ । केत्तियमेत्तो विसेसो ? अणंताणि पोग्गलपढमवग्गमूलाणि । एवं तिपदेसियवग्गणप्पहुडि एक्केक्कवग्गणं घेत्तूण णेयव्वं जाव उक्कस्सधुवक्खंधदव्व-वग्गणे त्ति । पुणो तिस्से उवरि पढमिल्लियाए अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणाए सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्का वा दो वा तिण्णि वा एवं जाव उक्कस्सेण अणंताओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति । एवं विदि-यसांतरणिरंतरवग्गणप्पहुडि पत्तेयं पत्तेयं भणेदूण णेयव्वं जाव सांतरणिरंतरउक्क-स्सदव्ववग्गणे त्ति । जहण्णादो पुण उक्कस्सा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्व-जीवेहि अणंतगुणो ।

वर्गणाके प्राप्त होने तक अलग अलग प्रत्येक वर्गणाके प्रमाणका कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणासे लेकर आगे सर्वत्र एकश्रेणिवर्गणायें सब जीवोंसे अनन्तगुणी होती हैं ।

अब नानाश्रेणिवर्गणापरिमाणानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा सदृश धनवाली वर्गणारूपसे जघन्यपदकी अपेक्षा भी और उत्कृष्टपदकी अपेक्षा भी कितनी हैं? अनन्त हैं । नानाश्रेणि जघन्य परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे सदृश धनवाली उत्कृष्ट परमाणुपुद्गलद्रव्य-वर्गणायें विशेष अधिक हैं । विशेष पुद्गलोंके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । द्विप्रदेशीद्रव्य- पु. ११४
वर्गणा सदृश धनकी अपेक्षा जघन्य भी और उत्कृष्ट भी अनन्त है । परन्तु जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना है ? पुद्गलोंके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । ११४
इस प्रकार त्रिप्रदेशी वर्गणासे लेकर एक एक वर्गणाको ग्रहण कर उत्कृष्ट ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणा तक ले जाना चाहिए । पुनः उसके ऊपर प्रथम अचित्तअध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणाकी सदृश धन- अर्थात्
वाली वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है । यदि है तो एक है, दो है, तीन है इसप्रकार सान्तर
उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाली वर्गणायें अनन्त हैं । इस प्रकार दूसरी सांतर-निरन्तरवर्गणासे निरन्त
लेकर अलग अलग प्रत्येक वर्गणाका कथन कर उत्कृष्ट सान्तरनिरन्तरद्रव्यवर्गणा तक लेजाना चाहिए । परन्तु वहां जघन्यसे उत्कृष्ट वर्गणा अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । अर्थात पुद्गलो के अनन्त प्रथम वर्गमूल

✡ ता०प्रतौ '– वग्गणाए (ओ) होंति ' अ० का० प्रत्योः वग्गणाए होंति इति पाठः ।

✤ ता प्रतौ० –' धणिएहि परमाणु ' इति पाठः । ✡ ता प्रतौ० ' जहण्णादो उक्कस्सिया पुण विसे-साहिया ' इति पाठः ।

चदुसु ध्रुवसुण्णदव्ववग्गणासु पोग्गला णत्थि । कुदो ? सहावियादो । पुणो अजोगिचरिमसमए पढमिल्लियाए पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाए दव्वं सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण खविदकम्मंसिय-लक्खणेणागदा चत्तारि होंति । विदियाए वग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कस्सेण चत्तारि होंति । एव-मेदेण विहाणेण अणंतासु वग्गणासु गदासु तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से दव्वाणि सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा उक्कस्सेण पंच सरिसधणियजीवा होंति । एवमेदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण सरिसधणिया छज्जीवा लब्भंति । पुणो एदेण कमेण एदाओ अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतर-वग्गणा तिस्से वग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण सरिसधणिया सत्तजीवा लब्भंति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण अट्ठ सरिसधणियजीवा होंति । पुणो एदेणेव कमेण अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा

चार ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें पुद्गल नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । पुनः अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें प्राप्त होनेवाली प्रथम प्रत्येकशरीरद्रव्यवर्गणा द्रव्य कदाचित् है और कदाचित् नहीं है। यदि है तो एक है, दो है और तीन है, इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे क्षपितकर्मांशिक लक्षणसे आये हुए चार होते हैं । दूसरी वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो है, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे चार हैं । इसप्रकार इस विधिसे अनन्त वर्गणाओंके जानेपर उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसके द्रव्य कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले पाँच जीव होते हैं। इस प्रकार ये भी अनन्त वर्गणायें व्यतीत हो जाती हैं। उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो है, तीन है, इसप्रकार उत्कृष्ट रूपसे सदृश धनवाले छह जीव प्राप्त होते हैं। पुनः इस क्रमसे ये अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं। पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार सदृश धनवाले सात जीव प्राप्त होते हैं। पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं। पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे आठ सदृश धनवाले जीव प्राप्त होते हैं । पुनः इसी क्रमसे अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और

उक्कस्सेण सत्त सरिसधणिया जीवा होंति । एवमेदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण छ जीवा सरिसधणिया होंति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण पंच सरिसधणिया जीवा होंति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण चत्तारि सरिसधणियजीवा होंति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से सरिसधणियवग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण तिण्णिसरिसधणियजीवा लब्भंति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से दव्वाणि सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो उक्कस्सेण सरिसधणिया दो जीवा होंति । तदो परदो जाओ अणंताओ वग्गणाओ तासिमेसेव कमो वत्तव्वो जाव भवसिद्धियपाओग्गवग्गणाणं दुचरिमवग्गणे त्ति । पुणो भवसिद्धियचरिमवग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो जहण्णेण एक्को उक्कस्सेण दो सरिसधणिय-

---

कदाचित् नहीं हैं। यदि है तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले सात जीव हैं। इसप्रकार ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती है। पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे धनवाले छह जीव हैं। पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं। तदनन्तर उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी सदृश धनवाली वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नही है। यदि है तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले पाँच जीव हैं। पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती है। पुनः उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी सदृश धनवाली वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है। यदि है तो एक है, दो है, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाली जीव चार है। पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती है। उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसकी सदृश धनवाली वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है। यदि है तो एक है, दो है, तीन हैं, इस प्रकार सदृश धनवाले तीन जीव प्राप्त होते है। पुनः ये भी अनन्तर वर्गणायें गत हो जातीं है। उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसके द्रव्य कदाचित् है और कदाचित् नही है। यदि है तो उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाले दो जीव होते है। उससे आगे जो अनन्त वर्गणायें है उनका भव्योंके योग्य वर्गणाओंका द्विचरम वर्गणाके प्राप्त होने तक यही क्रम कहना चाहिए। पुनः भव्योंके योग्य अन्तिम वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं है। यदि है तो जघन्यसे एक है और उत्कृष्ट रूपसे सदृश

जीवा होंति । एवमेसा जवमज्झपरूवणा भवसिद्धियट्ठाणेसु सेचीयआइरियउवदेसेण परूविदा ।

तदो जा अणंतरा अभवसिद्धियपाओग्गवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति । एवमेदेण पमाणेण अणंतासु वग्गणासु गदासु तदो परदो जा अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति । णवरि पुव्ववग्गणाहिंतो विसेसाहियाओ एगवग्गणाए । पुणो एदेण विहाणेण अणंताओ वग्गणाओ गच्छंति । पुणो जा अणंतरउवरिमवग्गणा सा हेट्ठिमवग्गणादो विसेसाहिया एगवग्गणाए । एवं भवसिद्धियवग्गणाणं उत्तविहाणेण णेयव्वं जाव जवमज्झे त्ति । पुणो जवमज्झवग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो अणंतरवग्गणा तिस्से वग्गणाए सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गणाओ होदूण पुव्ववग्गणाहिंतो विसेसहीणाओ त्ति । पुणो एदाओ वि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ । तदो परदो जा अणंतरवग्गणा

धनवाले दो जीव है । इस प्रकार भव्यप्रायोग्य स्थानोंमें यह यवमध्यप्ररूपणा सेचीय आचार्योंके उपदेशसे कही है । (इस ग्रंथके कर्ता आचार्य)

इसके बाद जो अनन्तर अभव्यप्रायोग्य वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे सदृश धनवाली वर्गणायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । इस प्रकार इस प्रमाणसे अनन्त वर्गणाओंके जाने पर उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् है और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो हैं, इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे सदृश धनवाली आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण वर्गणायें हैं । इतनी विशेषता है कि एक वर्गणामें पूर्ववर्गणासे विशेष अधिक है । पुनः इस विधिसे अनन्त वर्गणायें जाती है । पुनः जो अनन्तर उपरिम वर्गणा है वह अधस्तन वर्गणासे एक वर्गणामें विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक भव्यप्रायोग्य वर्गणाओंको उक्त विधिसे ले जाना चाहिए । पुनः यवमध्यवर्गणाकी वर्गणायें कदाचित है और कदाचित् नहीं है । यदि है तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उस वर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं है । यदि हैं तो एक है, दो हैं तीन हैं इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर भी पूर्वकी वर्गणासे विशेष हीन हैं । पुनः ये भी अनन्त वर्गणायें गत हो जाती हैं । उससे आगे जो अनन्तर वर्गणा है उसको आवलिके असंख्यातवें

तिस्से वग्गणाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता होदूण पुव्ववग्गणाहिंतो विसेसहीणाओ । एवं णेयव्वं जा उक्कस्सपत्तेयसरीरदव्ववग्गणे त्ति। उक्कस्सपत्तेयसरीरदव्ववग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा जा उक्कस्सेण वल्लरिदाहादिसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ वट्टमाणकाले लब्भंति । अदीदकाले वि एक्केक्किस्से वग्गणाए सरिसधणियवग्गणाओ एत्तियाओ चेव होंति; एत्तो अहियाणमेत्थ संभवाभावादो । जधा पत्तेयसरीरवग्गणा परूविदा तधा बादरणिगोदवग्गणा वि परूवेदव्वा । जल-थल-आगासादिसु सव्वजहण्णियाए सुहुमणिगोदवग्गणाए वग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि । जदि अत्थि तो एक्को वा दो वा तिण्णि वा जा उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियसुहुमणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले होंति । एवमभवसिद्धियपाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणाणं उत्तविहाणेण णेयव्वं जाव जवमज्झे त्ति । पुणो जवमज्झे वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसरिसधणियवग्गणाओ होंति । पुणो पत्तेयसरीरवग्गणाविहाणेण उवरि णेयव्वं जाव उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणे त्ति । पत्तेयसरीर-बादर-सुहुमणिगोदवग्गणासु वड्ढिहाणीणं पमाणमेगा चेव वग्गणा; वड्ढीए अभावसंभवे एगवग्गणवड्ढीए विरोहाभावादो । अदीदकाले पत्तेयसरीर-बादर-सुहुमणिगोदवग्गणाओ सरिसधणियाओ अणंताओ किण्ण लब्भंति? ण, एक्कम्हि काले

भागप्रमाण वर्गणायें होकर भी पूर्ववर्गणासे विशेष हीन हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं। यदि हैं तो एक है, दो हैं, तीन हैं, इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे बल्लरी दाह आदिमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणायें वर्तमान कालमें प्राप्त होती हैं। अतीत कालमें भी एक एक वर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणायें इतनी ही होती हैं, क्योंकि, इनसे अधिक यहां पर सम्भव नहीं हैं । जिस प्रकार प्रत्येकशरीरवर्गणाका कथन किया है उस प्रकार बादरनिगोदवर्गणाका भी कथन करना चाहिए। जल, स्थल और आकाश आदिकमें सबसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी वर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं । यदि हैं तो एक है, दो है, तीन हैं, इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें वर्तमान कालमें हैं । इस प्रकार अभव्यप्रायोग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाओंको उक्तविधिसे यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । पुनः यवमध्यमें भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणायें हैं । पुनः प्रत्येकशरीरवर्गणाकी विधिसे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोद वर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणाओंमें वृद्धि और हानिका प्रमाण एक ही वर्गणा है, क्योंकि, वृद्धिका अभाव सम्भव होने पर एक वृद्धि होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका- अतीत कालमें प्रत्येकशरीर, बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोद वर्गणायें सदृश धनवाली अनन्त क्यों नहीं प्राप्त होती हैं ?

समाणभावेण अच्छिदाओ वग्गणाओ सरिसधणियाओ त्ति घेप्पंति, ण एक्कम्हि काले एक्किस्सेव वग्गणाए अणंताणं सरिसधणियाणं संभवो अत्थि; आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव संभवंति त्ति परमगुरूवदेसादो। सव्वजहण्णियाए महाखंधदव्ववग्गणाए सरिसधणियवग्गणा णियमा णत्थि; अदीदाणागदवट्टमाणकालेसु एक्कम्हि समए एगा चेव महाखंधदव्ववग्गणा होदि त्ति णियमादो✲। एवं णेयव्वं जाव उक्कस्समहाखंधदव्ववग्गणे त्ति। एवं वग्गणपरिमाणाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

एगसेडिभागाभागाणुगमेण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो? अणंतिमभागो। तं जहा परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम एगो परमाणू। तेण सव्ववग्गणदव्वे भागे हिदे जं भागलद्धं✱ तं विरलेदूण सव्ववग्गणदव्वं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स परमाणुपमाणं चेट्ठदि। तत्थ एगरूवधरिदं परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम। तदो सिद्धं सा सव्ववग्गणाणमणंतिमभागो त्ति। संखेज्जपदेसियवग्गणप्पहुडि जाव पत्तेयसरीरवग्गणे त्ति ताव एदासिं एगसेडिवग्गणसलागाओ सव्ववग्गणसलागाणमणंतिमभागो त्ति एवं चेव वत्तव्वं। तदो पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरिमधुवसुण्णवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो? असंखेज्जदिभागो।

समाधान– नहीं, क्योंकि, एक कालमें समान भावसे अवस्थित वर्गणायें ही सदृश धनवाली कहलाती हैं। परन्तु एक कालमें एक ही वर्गणाकी अनन्त सदृश धनवाली वर्गणायें सम्भव नहीं, क्योंकि, आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही वर्गणायें होती हैं ऐसा परमगुरुका उपदेश है।

सबसे जघन्य महास्कन्धद्रव्यवर्गणाकी सदृश धनवाली वर्गणा नियमसे नहीं है, क्योंकि, अतीत, अनागत और वर्तमान कालमें एक समयमें एकही महास्कन्धद्रव्यवर्गणा होती है ऐसा नियम है। इस प्रकार उत्कृष्ट महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए।

इस प्रकार वर्गणापरिमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

एकश्रेणिभागाभागानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा सब वर्गणाओंके कितने भाग प्रमाण है? अनन्तवें भागप्रमाण है। यथा–परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा एक परमाणुरूप होती है। उसका सब वर्गणाओंके द्रव्यमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन कर और सब वर्गणाओंके द्रव्यके समान खण्ड करके प्रत्येक विरलनके प्रति देने पर एक एकके प्रति एक एक परमाणु प्राप्त होता है। वहां एक विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्य परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है। इसलिए सिद्ध है कि वह सब वर्गणाओंके अनन्तवें भागप्रमाण है। संख्यातप्रदेशी वर्गणासे लेकर प्रत्येकशरीरवर्गणा तक इनकी एकश्रेणिवर्गणाशलाकायें सब वर्गणाशलाकाओंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ऐसा यहां कहना चाहिए। अनन्तर प्रत्येकशरीरवर्गणासे उपरिम ध्रुवशून्यवर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। यथा–ध्रुवशून्य वर्गणाकी

✲ ता० प्रतौ 'णियमाभावादो। एवं' इति पाठः। ✱ ता० प्रतौ 'भाग लद्धं' इति पाठः।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तं जहा – धुवसुण्णवग्गणाए चरिमवग्गणं सेडीए असंखेज्जदिभागेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेण च गुणिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिय जं लद्धं तत्थेव पक्खित्ते सव्ववग्गणपमाणं होदि। पुणो धुवसुण्णवग्गणाए वग्गणसलागाहि भागे हिदे जं भागं लद्धं तस्स पमाणमसंखेज्जाणि जगपदराणि। एवेण सव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे धुवसुण्णवग्गणपमाणं होदि। तदो धुवसुण्णवग्गणाओ सव्ववग्गणाणमसंखेज्जदिभागो त्ति सिद्धं। बादरणिगोदवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो। कुदो ? बादरणिगोदवग्गणाहि सव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण च गुणिदजगपदरासंखेज्जदिभागस्स सादिरेयस्स उवलंभादो। बादरणिगोदवग्गणाए उवरिमधुवसुण्णवग्गणाओ सव्वेगसेडिवग्गणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो। कुदो ? धुवसुण्णवग्गणाहि सव्ववग्गणापमाणे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदजगपदरस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो सुहुमणिगोदवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो ? असंखेज्जदिभागो। कुदो ? सुहुमणिगोदवग्गणाहि सव्ववग्गणापमाणे भागे हिदे पदरस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो। सुहुमणिगोदवग्गणाए उवरिमधुवसुण्णसव्ववग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो ? असंखेज्जदिभागो। कुदो ? सेसवग्गणाहि

अन्तिम वर्गणाको जगश्रेणिके असंख्यातवें भागसे, अंगुलके असंख्यातवें भागसे, पल्यके असंख्यातवें भागसे और जगप्रतरके असंख्यातवें भागसे गुणित करके और पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर सब वर्गणाओंका प्रमाण होता है। पुनः ध्रुवशून्यवर्गणाकी वर्गणाशलाकाओंका भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका प्रमाण असंख्यात जगप्रतर होता है। इसका सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देनेपर ध्रुवशून्यवर्गणाका प्रमाण होता है। इसलिए ध्रुवशून्यवर्गणायें सब वर्गणाओंके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह सिद्ध होता है। बादरनिगोदवर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, बादरनिगोदवर्गणाओंका सब वर्गणाओंमें भाग देने पर अंगुलके असंख्यातवें भागसे और पल्यके असंख्यातवें भागसे गुणित साधिक जगप्रतरका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है। बादरनिगोदवर्गणासे आगेकी ध्रुवशून्यवर्गणायें सब एकश्रेणिवर्गणाओंके कितने भाग प्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, ध्रुवशून्यवर्गणाओंका सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देनेपर पल्यके असंख्यातवें भागसे गुणित जगप्रतरका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है। सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देने पर जगप्रतरका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है। सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे आगेकी ध्रुवशून्यद्रव्यवर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, शेष वर्गणाओंका सब वर्गणाओंके द्रव्यमें भाग देने पर

सव्ववग्गणदव्वे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो। महाखंधदव्ववग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडियो भागो? असंखेज्जदिभागो। कुदो? महाखंधदव्ववग्गणाहि सव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागुवलंभादो। चउत्थधुवसुण्णवग्गणाए चरिमवग्गणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे तत्थ एगखंडम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्ताओ महाखंधएगसेडिवग्गणाओ होंति त्ति गुरूवदेसादो वा।

णाणासेडिवग्गणभागाभागाणुगमेण महाखंधणाणासेडिवग्गणाओ णाणासेडिसव्ववग्गणाणं* केवडिओ भागो? अणंतिमभागो। कुदो? महाखंधदव्ववग्गणाए एगत्तादो। सुहुमणिगोदणाणासेडिवग्गणाओ सव्ववग्गणाणासेडिवग्गणाणं केवडिओ भागो? अणंतिमभागो। कुदो? वट्टमाणकाले असंखेज्जलोगमेत्तणाणासेडिसुहुमणिगोदवग्गणाहि णाणासेडिसव्ववग्गणपमाणे भागे हिदे अणंतरूवुवलंभादो। एवं बादरणिगोदवग्गणाणं पत्तेयसरीरवग्गणाणं पि वत्तव्वं; असंखेज्जलोगमेत्तवग्गणाणमत्थित्तणेण भेदाभावादो। सांतरणिरंतरणाणासेडिवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो? अणंतिमभागो। एवं णेयव्वं जाव असंखेज्जपदेसियवग्गणे त्ति। असंखेज्जपदेसियवग्गणाओ सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जा भागा। संखेज्जपदेसियवग्गणाओ एयपदेसियवग्गणा च सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो। कुदो? एकपदेसियवग्गणायामादो

पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण उपलब्ध होता है। महास्कन्धद्रव्यवर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, महास्कन्धद्रव्यवर्गणाओंका सब वर्गणाओंके प्रमाण भाग देने पर पल्यका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है। अथवा चौथी ध्रुवशून्यवर्गणाकी अन्तिम वर्गणाको पल्यके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर वहां एक खण्डमें जितने अंक उपलब्ध होते हैं उतनी महास्कन्धएकश्रेणिवर्गणायें होती हैं ऐसा गुरुका उपदेश है।

नानाश्रेणिवर्गणाभागाभागानुगमकी अपेक्षा महास्कन्धनानाश्रेणिवर्गणायें नानाश्रेणि सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? अनन्तवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, महास्कन्धद्रव्यवर्गणा एक है। सूक्ष्मनिगोदनानाश्रेणिवर्गणायें सब नानाश्रेणिवर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? अनन्तवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, वर्तमान कालमें असंख्यात लोकप्रमाण नानाश्रेणिसूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका नानाश्रेणि सब वर्गणाओंके प्रमाणमें भाग देने पर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं। इसी प्रकार बादरनिगोदवर्गणाओं और प्रत्येकशरीरवर्गणाओंका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि, असंख्यात लोकप्रमाण वर्गणाओंके अस्तित्वकी अपेक्षा इनमें पूर्व वर्गणाओंसे कोई भेद नहीं है। सान्तर-निरन्तरनानाश्रेणिवर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? अनन्तवें भागप्रमाण हैं। इस प्रकार असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके प्राप्त होने तक कथन करना चाहिए। असंख्यातप्रदेशी वर्गणायें सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं। संख्यातप्रदेशी वर्गणायें और एकप्रदेशी वर्गणा सब वर्गणाओंके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण हैं,

---

* म० प्रतौ 'महाखंधणाणासेडिसव्ववग्गणाणं' इति पाठः।

दुपदेसियवग्गणायामो विसेसहीणो । तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा । एदेण कमेण भागहारस्स अद्धमेत्तं गंतूण दुगुणहाणी होदि त्ति गुरूवदेसादो । एवं वग्गणा-भागाभागाणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

एगसेडिवग्गणअप्पाबहुगाणुगमेण सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा । कुदो ? एगरूवत्तादो । संखेज्जपदेसियदव्ववग्गणा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं । असंखेज्जपदेसियवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? सग-रासिस्स संखेज्जविभागभूदअसंखेज्जा लोगा । को पडिभागो? संखेज्जपदेसियवग्ग-णाओ । आहारदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ । को गुणगारो? सगरासिस्स असंखेज्ज दिभागो । को पडिभागो? असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाओ । अथवा गुणगारो अभव-सिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो । तेजादव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ । को गुणगारो ? सगरासिस्स अणंतिमभागो । तस्स को पडिभागो? आहारदव्व-वग्गणाओ । भासादव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ । मणदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ । कम्मइयदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ । एत्थ अप्पाबहुगे हेट्ठिमएगसेडिसव्व-वग्गणाहि* उवरिमएगसेडिसव्ववग्गणासु अवहिरिदासु गुणगाररासी आगच्छदि । असंखेज्जपदेसियदव्ववग्गणाए उवरि आहारवग्गणाए हेट्ठा अणंतपदेसियदव्ववग्गणाओ

क्योंकि, एकप्रदेशी वर्गणाके आयामसे द्विप्रदेशी वर्गणाका आयाम विशेष हीन है । उसका प्रति-भाग क्या है ? असंख्यात लोक उसका प्रतिभाग है । इस क्रमसे भागहारके अर्धभाग तक जाकर द्विगुणी हानि होती है ऐसा गुरुका उपदेश है ।

इस प्रकार वर्गणाभागाभागानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

एकश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा सबसे स्तोक है, क्योंकि, उसका प्रमाण एक है। उससे संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणा संख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? एक कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है। उससे असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? अपनी राशिके संख्यातवें भागप्रमाण अर्थात् असंख्यात लोक गुणकार है । प्रतिभाग क्या है? संख्यातप्रदेशी वर्गणायें प्रतिभाग है । उससे आहारद्रव्यवर्गणायें अनन्त-गुणी हैं । गुणकार क्या है? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है? असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें प्रतिभाग है । अथवा गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है । उससे तैजसशरीरद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है? अपनी राशिका अनन्तवां भाग गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है? आहारद्रव्य-वर्गणायें प्रतिभाग है । उससे भाषाद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी है । उससे मनोद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । उससे कार्मणद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । सर्वत्र अपनी अपनी पिछली एक-श्रेणिद्रव्यवर्गणाओंका आगेकी एकश्रेणि सब वर्गणाओंमें भाग देने पर गुणकारराशि उत्पन्न होती है । असंख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके आगे और आहारशरीरद्रव्यवर्गणाके पूर्व अनन्तप्रदेशी

---

* म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु ' –सेडिदव्ववग्गणाहि ' इति पाठः ।

अणंतगुणाओ। कुदो ? उवरिमधुवक्खंधदव्ववग्गणायामुप्पायणट्ठं जहण्णपरित्ताणंतस्स दुविद- तगुणस्स आहारहेट्ठिमअगहणदव्ववग्गणायामुप्पायणट्ठं जहण्णपरित्ताणंतस्स दुविद- गुणगारादो अणंतगुणहीणत्तुवलंभादो। कुदो एवं णव्वदे ? गुरूवदेसादो। तेजइयस्स हेट्ठा आहारदव्ववग्गणाए उवरि बिदियअगहणदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ। तेजइ- यस्स उवरि भासावग्गणाए हेट्ठा तदियअगहणदव्ववग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ अणंतगुणाओ। भासावग्गणाए उवरि मणस्स हेट्ठा चउत्थअगहणदव्ववग्गणाए सव्वएग- सेडिवग्गणाओ अणंतगुणाओ। मणस्स उवरि कम्मइयस्स हेट्ठा पंचमअगहणदव्ववग्गणाए सव्वएगसेडिदव्ववग्गणाओ अणंतगुणाओ। गुणगारो सव्वत्थ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणंतिमभागमेत्तो। पुणो धुवक्खंधदव्ववग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ अणंत- गुणाओ। को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तस्स को पडिभागो ? पंचमअग- हणवग्गणाओ। अचित्तअद्धुवखंधदव्ववग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ अणंतगुणाओ। को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। सांतरणिरंतरवग्गणाए उवरि पत्तेयसरीर- वग्गणाए हेट्ठा पढमधुवसुण्णवग्गणाए सव्वएगसेडिआगासपदेसवग्गणाओ अणंतगु- णाओ। को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। पत्तेयसरीरवग्गणाए सव्वएग- सेडिवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

द्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं, क्योंकि, आगे स्थापित किये गये चार गुणकारोंसे पूर्वमें स्थापित किया गया अनन्तगुणा भागहार आहारवर्गणासे पूर्व अग्रहणद्रव्यवर्गणाके आयामके उत्पन्न करनेके लिए जघन्य परीतानन्तके स्थापित किये गये गुणकारसे अनन्तगुणा हीन उपलब्ध होता है।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

तैजसशरीरसे पूर्व और आहारद्रव्यवर्गणाके आगे दूसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणायें अनन्त- गुणी हैं। तैजसशरीरसे आगे और भाषावर्गणाके पूर्व तीसरी अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। भाषावर्गणासे आगे और मनोवर्गणासे पूर्व चौथी अग्रहण- द्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। मनोवर्गणाके आगे और कार्मणवर्गणाके पूर्व पांचवी अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिद्रव्यवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। गुणकार सर्वत्र अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है। पुनः ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। उसका प्रतिभाग क्या है ? पांचवी अग्रहणवर्गणायें प्रतिभाग है। अचित्तअध्रुवस्कन्धद्रव्य- वर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। सान्तर-निरन्तरवर्गणाके आगे और प्रत्येकशरीरवर्गणाके पूर्व प्रथम ध्रुवशून्य- वर्गणाकी सब एकश्रेणिआकाशप्रदेशवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। प्रत्येकशरीरवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उसका प्रतिभाग क्या है ? प्रथम

तस्स को पडिभागो ? पढमधुवसुण्णवग्गणाओ । पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि बादरणिगोदवग्गणाए हेट्ठा बिदियधुवसुण्णवग्गणाए सव्वएगसेडिआगासपदेसवग्गणाओ अणंतगुणाओ । को गुणगारो ? अणंता लोगा । तं जहा- एगबादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवं ठविय पुणो एदस्स अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसगसगविस्सासुवचएहि गुणिय एगट्ठं काऊण गुणगारे ठविदे एगजीवस्स दव्वपमाणं होदि । पुणो एदस्स जीवस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे गुणगारे ठविदे उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणा होदि । पुणो एगं बादरणिगोदजीवं ठविय एदस्स पत्ते अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतमेत्तओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तसगविस्सासुवचएहि गुणिदे एगट्ठीकदे गुणगारभावेण ठविदे एगजीवदव्वं होदि । पुणो एरिसा बादरणिगोदजीवा एगणिगोदसरीरम्हि सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता अत्थि त्ति काऊण असंखेज्जलोगोवट्ठिदसव्व*जीवरासिणा पुध्विल्लएगजीवदव्वे गुणिदे एगणिगोदसरीरदव्वं होदि । पुणो तम्मि असंखेज्जलोगेहि एगबादरणिगोदवग्गणसरीरेहि गुणिदे एगपुलवियाए दव्वं होदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियसलागाहि गुणिदे सव्वजहण्णबादरणिगोदवग्गणा होदि । पुणो एत्थ एगरूवे अवणिदे उक्कस्सधुवसुण्णवग्गणपमाणं होदि । पुणो एदम्हि

ध्रुवशून्यवर्गणायें प्रतिभाग है । प्रत्येकशरीरवर्गणाके आगे और बादरनिगोदवर्गणाके पूर्व दूसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिआकाशप्रदेशवर्गणायें अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? अनन्त लोक अनन्त लोक गुणकार है । यथा- एक बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवको स्थापित कर पुनः इसके अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके परमाणुओंको सब जीवोंसे अनन्तगुणे अपने अपने विस्रसोपचयोंसे गुणित कर और एकत्र कर गुणकाररूपसे स्थापित करने पर एक जीवका द्रव्यप्रमाण होता है । पुनः इसका पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार स्थापित करने पर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणा होती है । पुनः एक बादरनिगोद जीवको स्थापित कर इसके पार्श्वमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर परमाणुओंको सब जीवोंसे अनन्तगुणे अपने विस्रसोपचयोंसे गुणित कर और एकत्र कर गुणकाररूपसे स्थापित करनेपर एक जीवका द्रव्य होता है । पुनः इस प्रकार बादरनिगोद जीव एक निगोदशरीरमें सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ऐसा समझ कर असंख्यात लोक से भाजित सब जीवराशिसे पहलेके एक जीवद्रव्यके गुणित करने पर एक निगोदशरीरका द्रव्य होता है । पुनः उसे असंख्यात लोकप्रमाण एक बादरनिगोदवर्गणाशरीरोंसे गुणित करने पर एक पुलविका द्रव्य होता है । पुनः आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलविशलाकाओंसे गुणित करने पर सबसे जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है । पुनः इसमेंसे एक अंकके कम कर देनेपर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणाका प्रमाण होता है । पुनः इसमें उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाका भाग देनेपर

* ता० प्रतौ '-लोगे वड्ढिदे सव्व-' अ० का० प्रत्योः '-लोगोवट्ठिदे सव्व-' इति पाठः ।

उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए भागे हिदे कम्मणोकम्मविस्सासुवचयसहियउवरिल्लपोग्गलपुंजादो हेट्ठिमपोग्गलपुंजो सरिसो त्ति अवणिय उवरिल्लआवलियाए असंखेज्जविभागेण गुणिदअसंखेज्जलोगेहि हेट्ठिल्लअसंखेज्जलोगेसु ओवट्टिदेसु असंखेज्जा लोगा लब्भंति। पुणो एदे असंखेज्जे लोगे पुव्विल्लपलिदोवमस्स असंखेज्जविभागेण गुणिय एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंता लोगा आगच्छंति*। पुणो एदेहि सव्वुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए गुणिदाए उक्कस्सधुवसुण्णवग्गणादो हेट्ठिमसव्वधुवसुण्णवग्गणाओ होंति।

एत्थ के वि आइरिया उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणादो उवरिमधुवसुण्णएगसेडी असंखेज्जगुणा। गुणगारो वि घणावलियाए असंखेज्जविभागो त्ति भणंति तण्ण घडदे। कुदो? संखेज्जेहि असंखेज्जेहि वा जीवेहि जहण्णबादरणिगोदवग्गणाणुप्पत्तीदो। आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तपुलवियाहि विणा जहण्णबादरणिगोदवग्गणा ण उप्पज्जदि; बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ता णिगोवाणं त्ति सुत्तणिद्देसादो। एक्केक्किस्से पुलवियाए सरीरपमाणमसंखेज्जा लोगा। एक्केक्कम्हि सरीरे अणंता णिगोदजीवा अणंताणंतकम्मणोकम्मपोग्गलभारवहिणो अत्थि, 'प्रत्येकमात्मदेशाः कर्म्मावयवैरनन्तकैर्बद्धाः' इति वचनात्। तम्हा अणंता लोगा गुणगारो त्ति एवं चेव घेत्तव्वं। उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए विस्सासुवचयगुणगारो

कर्म और नोकर्मके विस्रसोपचय सहित उपरिम पुद्गल पुञ्जमेंसे अधस्तन पुद्गलपुञ्ज सदृश है इसलिए निकाल कर उपरिम आवलिके असंख्यातवें भागसे गुणित असंख्यात लोकोंसे अधस्तन असंख्यात लोकोंके भाजित करने पर असंख्यात लोक लब्ध आते हैं। पुनः इन असंख्यात लोकोंको पहलेके पल्यके असंख्यातवें भागसे गुणित कर इनका सब जीवराशिमें भाग देने पर अनन्त लोक आते हैं। पुनः इनसे सर्वोत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके गुणित करने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यरूपसे अधस्तन सब ध्रुवशून्यवर्गणायें होती हैं।

यहां पर कितने ही आचार्य उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे उपरिम ध्रुवशून्यएकश्रेणि असंख्यातगुणी है और गुणकार भी घनावलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा कहते हैं, परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, संख्यात या असंख्यात जीवोंसे जघन्य बादरनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति नहीं हो सकती। आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके बिना जघन्य बादरनिगोदवर्गणा नहीं उत्पन्न होती है, क्योंकि, 'बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ता णिगोदाणं' ऐसा सूत्रका निर्देश है। एक एक पुलविमें शरीरोंके प्रमाण असंख्यात लोक हैं। एक एक शरीरमें अनन्तानन्त कर्म-नोकर्मपुद्गलभारसे युक्त अनन्त निगोद जीव हैं, क्योंकि, आत्माका प्रत्येक देश अनन्त कर्मपरमाणुओंसे बद्ध है ऐसा वचन है, इसलिए अनन्त लोक गुणकार है यह वचन ही ग्रहण करना चाहिए।

शंका—उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके विस्रसोपचयका गुणकार चूंकि अनन्त है और

---

* अ० का० प्रत्योः 'आगच्छदि' इति पाठः।

केण अणंतो जहण्णबादरणिगोदवग्गणा च विस्सासुवचएण जहण्णा तेण पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो गुणगारो त्ति ण घडदे✽? ण; जहण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो। ण च एवं गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो चेव होदि त्ति णियमो अत्थि, गुरूवदेसेण अवगयत्तादो। जहण्णादो उक्कस्से विस्सासुवचए गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो त्ति कुदो णव्वदे ? पुव्वुत्तविस्सासुवचयअप्पाबहुगादो। तं जहा- सव्वत्थोवो ओरालियसरीरस्स सव्वपदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तदो वेउव्वियसरीरस्स सव्वपदेसपिंडे सव्वजहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जविभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो। आहारसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? सेडीए असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो। तेजासरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो।

जघन्य बादरनिगोदवर्गणा विस्रसोपचयसे जघन्य है, अतः गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह घटित हो जाता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, इस प्रकार जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणासे उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके अनन्तगुणे प्राप्त होनेका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण ही है ऐसा गुरुके उपदेशसे जाना जाता है।

शंका-जघन्यसे उत्कृष्ट विस्रसोपचयके प्राप्त होनेमें गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-पूर्वोक्त विस्रसोपचय अल्पबहुत्वसे जाना जाता है। यथा-औदारिकशरीरके सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे थोडा है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे वैक्रियिकशरीरके सब प्रदेशपिण्डमें सबसे जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे आहारकशरीरका सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उससे तैजसशरीरका सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण

✽ म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु ' त्ति घडदे ' इति पाठः।

तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कम्मइयसरीरस्स सव्वम्हि पदेसपिंडे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो त्ति। बादरणिगोदवग्गणाए सव्वेगसेडिवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? सेडीए असंखेज्जदिभागो। कथमेवं णव्वदे? बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं त्ति चूलियासुत्तादो णव्वदे। के वि आइरिया* असंखेज्जपदरावलियाओ गुणगारो त्ति भणंति तण्ण घडदे; चूलियासुत्तेण सह विरोहादो। विस्सासुवचयगुणगारं पडुच्च गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो होदि। ण च एसो पहाणो; सेढीए असंखेज्जदिभागस्स पुलवियाणं* गुणगारस्स पहाणत्तुवलंभादो। बादरणिगोदवग्गणाणमुवरि सुहुमणिगोदवग्गणाए हेट्ठा तदियधुवसुण्णवग्गणाए सव्वएगसेडिआगासपदेसवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो? उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए जीवेहिंतो जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणाजीवाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागगुणगारुवलंभादो। कुदो एवमवगम्मदे?

गुणकार है। उससे उसीकी उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे कार्मणशरीरका सब प्रदेशपिण्डमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

बादरनिगोदवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

पु.४१३ सूत्र ६३१ समाधान—'बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं' इस चूलिकासूत्रसे जाना जाता है।

कितने ही आचार्य असंख्यात प्रतरावलिप्रमाण गुणकार है ऐसा कहते हैं, परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, चूलिकासूत्रके साथ विरोध आता है। यद्यपि विस्रसोपचयगुणकारकी अपेक्षा गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, परन्तु यह प्रधान नहीं है, क्योंकि, जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके गुणकारकी प्रधानता उपलब्ध होती है।

बादरनिगोदवर्गणाओंसे आग और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके पूर्व तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाकी सब एकश्रेणिआकाशप्रदेशवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणाके जीवोंसे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके जीवोंका गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण पाया जाता है।

---

* आ० प्रतौ 'केत्तिआ आइरिया' इति पाठः। * म० प्रति पाठोऽयम्। ता० प्रतौ 'पुढ (ल) वीयाणं' अ० का० प्रत्योः 'पुहवियाणं' इति पाठः।

अविरुद्धाइरियवयणादो । सुहुमणिगोदवग्गणाए सव्वएगसेडिवग्गणाओ असंखेज्ज-गुणाओ । को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । महाखंधवग्गणाए सव्वएग-सेडिवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागो । तं जहा-सव्वएगसेडिसुहुमणिगोदवग्गणाओ ट्ठविय पदरस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिस्से चेव उवरिमधुवसुण्णएगसेडिवग्गणसव्ववग्गणपमाणं होदि । पुणो तस्स हेट्ठा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहारे ट्ठविदे महाखंधसव्वएगसेडिवग्गणपमाणं होदि । पुणो एत्थ सुहुमणिगोदसव्वएगसेडिवग्गणाहि भागे हिदे पदरस्स असंखेज्जदि-भागो गुणगारो आगच्छदि त्ति घेत्तव्वं । सुहुमणिगोदवग्गणाए उवरि महाखंधदव्व-वग्गणाए हेट्ठा चउत्थधुवसुण्णसव्वएगसेडिवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कारणं सुगमं । एवमेगसेडिवग्गणअप्पाबहुअं भणिदं ।

संपहि णाणासेडिवग्गणप्पाबहुअं भणिस्सामो । तं जहा-सव्वत्थोवा महाखं-धदव्ववग्गणाए दव्वा । कुदो? एगत्तादो । बादरणिगोदवग्गणाए दव्वा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तं जहा-बादरणिगोदवग्गणाओ वट्टमाणकाले अभवसिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवग्गणाए आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्तीयो सरिसधणियाओ लब्भंति । पुणो उवरि समयाविरोहेण विसेसाहियकमेण गंतूण जवमज्झट्ठाणे वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ

शंका-यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-आचार्योंके विरोध रहित वचनसे जाना जाता है ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? पल्यका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है । महास्कन्धवर्गणाकी सब एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? जगप्रतरका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है। यथा-सब एकश्रेणिसूक्ष्म-निगोदवर्गणाओंको स्थापित कर जगप्रतरके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर उसकी आगेकी ध्रुवशून्यएकश्रेणिवर्गणाकी सब वर्गणाओंका प्रमाण होता है । पुनः उसके नीचे पल्यके असंख्या-तवें भागप्रमाण भागहारके स्थापित करने पर महास्कन्ध सब एकश्रेणिवर्गणाओंका प्रमाण होता है । पुनः यहां सूक्ष्मनिगोद सब एकश्रेणिवर्गणाओंसे भाजित करने पर जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार आता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । सूक्ष्मनिगोदवर्गणासे आगे और महास्कन्धद्रव्यवर्गणासे पूर्व चौथी ध्रुवशून्य सब एकश्रेणि वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । कारण सुगम है । इसप्रकार एकश्रेणि-वर्गणाअल्पबहुत्व कहा ।

अब नानाश्रेणिवर्गणाअल्पबहुत्वको कहेंगे । यथा- महास्कन्धद्रव्यवर्गणाके द्रव्य सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, वह एक है । उनसे बादरनिगोदवर्गणाके द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यथा-बादरनिगोदवर्गणायें वर्तमान कालमें अभव्यप्रायोग्य सर्व जघन्य वर्गणाके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली प्राप्त होती हैं। पुनः ऊपर आगमाविरुद्ध विशेष अधिक क्रमसे जाती हुई यवमध्यमें भी सदृश धनवाली

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज

लब्भंति । पुणो उवरि समयाविरोहेण विसेसहीणकमेण गंतूण उक्कस्सबादरणिगोद-वग्गणाओ वि सरिसधणियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति लब्भंति । पुणो एत्थ विसेसाहियकमेण ट्ठिदाओ चेव घेत्तूण अवराओ मोत्तूण जवमज्झपमाणेण हेट्ठिमउवरिमदव्वे कदे तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झं होदि । एत्थ एगवग्गणं ट्ठविय आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे जवमज्झपमाणं होदि । पुणो एदम्मि तीहि गुणहाणीहि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताहि गुणिदे सव्वदव्वं होदि । पुणो महा-खंधदव्ववग्गणसलागाए ओवट्टिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो आग-च्छदि । एसो गुणगारो सेचीयट्ठाणेसु वग्गणावट्ठाणक्कमजाणावणट्ठं परूविदो । एत्थ परमत्थदो पुण गुणगारो असंखेज्जदिलोगमेत्तो होदि । तं जहा– वट्टमाणकाले बादरणिगोदाणं सयलपुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ पादेक्कमसंखेज्जलोगमेत्तसरी-रेहि आपूरिदाओ अत्थि । कुदो एदं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो सुत्तसमाणादो । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि जदि एगा बादरणिगोदवग्गणा लब्भदि तो असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियासु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जलोगमेत्ताओ बादरणिगोदवग्गणाओ लब्भंति । तेण महाखंध–दव्ववग्गणादो बादरणिगोदवग्गणाणं गुणगारो असंखेज्जलोगमेत्तो त्ति सिद्धं ।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं । पुनः ऊपर समयके अविरोधसे विशेष हीन क्रमसे जाती हुई सदृश धनवाली उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणायें भी आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण प्राप्त होती हैं । पुनः यहां पर विशेष अधिकके क्रमसे स्थित वर्गणाओंको ही ग्रहण कर और दूसरी वर्गणाओंको छोडकर अधस्तन व उपरिम द्रव्यके यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर तीन गुणहानिप्रमाण यवमध्य होता है । यहां एक वर्गणाको स्थापित कर आवलिके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर यवमध्यका प्रमाण होता है । पुनः इसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण तीन गुणहानियोंसे गुणित करने पर सब द्रव्य होता है । पुनः महास्कन्धद्रव्यवर्गणाशलाकासे भाजित करनेपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार आता है । यह गुणकार सेचीयस्थानोंमें वर्गणाओंके अवस्थानक्रमका ज्ञान करानेके लिए कहा है । परन्तु यहां पर परमार्थसे गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण होता है । यथा– वर्तमान कालमें बादरनिगोदकी सब पुलवियां असंख्यात लोकप्रमाण होकर प्रत्येक असंख्यात लोकप्रमाण शरीरोंसे आपूरित हैं ।

शंका–– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–– सूत्रके समान अविरुद्ध आचार्य वचनसे जाना जाता है ।

पुनः आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंसे यदि एक बादरनिगोदवर्गणा प्राप्त होती है तो असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियोंमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणायें प्राप्त होती हैं । इसलिए महास्कन्धद्रव्यवर्गणासे बादरनिगोदवर्गणाओंका गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है यह सिद्ध होता है ।

सुहुमणिगोदवग्गणाए णाणासेडिसव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरणिगोदवग्गणाओ जवमज्झवग्गणयभाणेण कदे तिण्णिगुणहाणिमेत्ताओ होंति । सुहुमणिगोदवग्गणाओ वि जवमज्झपमाणेण कदे तिण्णि चेव गुणहाणीयो होंति । तम्हा बादरणिगोववग्गणाहि सह सुहुमणिगोदवग्गणाओ सरिसाओ त्ति वत्तव्वं । बादरणिगोववग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति ण घडदे ? एत्थ परिहारो उच्चदे-सरिसाओ ण होंति; बादरणिगोदजवमज्झसरिसधणियवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदजवमज्झसरिसधणियवग्गणाणं तिण्णिगुणहाणीहिंतो एत्थतणतिण्णं गुणहाणीणं च असंखेज्जगुणत्तदंसणादो । कुदो एदं णव्वदे ? असंखेज्जगुणत्तण्णहाणुववत्तीदो । सामण्णप्पणाए पुण गुणगारो असंखेज्जा लोगा । कुदो ? बादरणिगोदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजीवा असंखेज्जगुणा । एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेण कारणेण बादरणिगोदपुलवियाहिंतो सुहुमणिगोदपुलवियाओ असंखेज्जगुणाओ । एत्थ वि गुणगारो असंखेज्जा लोगा। आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसुहुमणिगोदपुलवियाहि जदि एगा सुहुमणिगोदवग्गणा लब्भदि तो असंखेज्जलोगमेत्तसुहुमणिगोदपुलवियासु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जलोगमेत्ता सुहुमणिगोदवग्गणाओ बादरणिगोदवग्गणाहिंतो असंखेज्जगुणाओ लब्भंति । तेण कारणेण बादरणिगोदवग्गणाहिंतो

सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें नानाश्रेणी सब वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? आवलिका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका-बादरनिगोदवर्गणायें यवमध्यके प्रमाणसे करने पर तीन गुणहानिप्रमाण होती हैं । सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें भी यवमध्यके प्रमाणसे करने पर तीन ही गुणहानियां होती हैं । इसलिए सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें बादरनिगोदवर्गणाओंके समान हैं ऐसा कहना चाहिए । बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं यह घटित नहीं होता ?

समाधान-यहां इस शंकाका परिहार करते हैं । ये दोनों वर्गणायें समान नहीं होतीं, क्योंकि, बादरनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणायें और तीन गुणहानियोंसे यहां की तीन गुणहानियां असंख्यातगुणी देखी जाती हैं ।

शंका-यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-अन्यथा असंख्यातगुणत्व नहीं बन सकता, इससे जाना जाता है ।

सामान्यकी विवक्षामें तो गुणकार असंख्यात लोक है, क्योंकि, बादरनिगोद जीवोंसे सूक्ष्म निगोद जीव असंख्यातगुणे हैं । यहां पर गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है । इसलिए बादरनिगोद पुलवियोंसे सूक्ष्मनिगोद पुलवियां असंख्यातगुणी हैं । यहां पर भी गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है । आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सूक्ष्मनिगोद पुलवियोंसे यदि एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणा प्राप्त होती है तो असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोद पुलवियोंसे क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फल गुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करने पर बादरनिगोदवर्गणाओंसे असंख्यातगुणी असंख्यात लोकप्रमाण सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें प्राप्त होती हैं । इसलिए बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोद-

सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति सिद्धं ।

किं च उक्कस्सिया बादरणिगोदवग्गणा सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि णिप्पज्जदि । सुहुमणिगोदवग्गणा पुण उक्कस्सिया वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाहि चेव णिप्पज्जदि । एवम्हादो च णव्वदे जहा बादरणिगोदवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति । बादरणिगोदउक्कस्सवग्गणाजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजहण्णवग्गणजीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो त्ति जेण भणिदं तेण सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो बादरणिगोदवग्गणाणं बहुत्तं किण्ण जायदे ? ण एस दोसो; बादरणिगोदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजीवाणं गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेण जदि एक्कम्हि सुहुमणिगोदसरीरे अच्छमाणजीवाणं गुणगारो एयघणलोगमेत्तो होज्ज तो वि बादरणिगोदवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ चेव; जीवगुणगारमाहप्पुवलंभादो । तेण लद्धासंखेज्जलोगेहि बादरणिगोदवग्गणासु गुणिदासु सुहुमणिगोदवग्गणपमाणं होदि ।

पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाए णामाए सेडिवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तं जहा- अभवसिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवग्गणाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपत्तेयसरीरसरिसधणियवग्गणाओ लब्भंति । अभवसिद्धियपाओग्गजवमज्झे वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसरिस-

---

वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं यह सिद्ध हुआ ।

दूसरे उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणा जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंसे निष्पन्न होती है परन्तु सूक्ष्मनिगोदवर्गणा उत्कृष्ट भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंसे निष्पन्न होती है, इससे भी जाना जाता है कि बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं ।

शंका- बादरनिगोद उत्कृष्ट वर्गणाके जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जघन्य वर्गणाके जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, चूंकि इस प्रकार कहा है इसलिए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे बादरनिगोदवर्गणायें बहुत क्यों नहीं हो जातीं ।

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बादरनिगोद जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जीवोंका गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है, अतः यदि एक सूक्ष्मनिगोद शरीरमें रहनेवाले जीवोंका गुणकार एक घनलोकप्रमाण होवे तो भी बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें असंख्यातगुणी ही हैं, क्योंकि, जीवोंके गुणकारकी विपुलता उपलब्ध होती है । इसलिए लब्ध असंख्यात लोकोंसे बादरनिगोदवर्गणाओंके गुणित करनेपर सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंका प्रमाण होता है ।

प्रत्येक शरीरद्रव्यवर्गणाओंमें नामाश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यथा- अभव्यप्रायोग्य सबसे जघन्य वर्गणामें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रत्येकशरीर सदृश धनवाली वर्गणायें प्राप्त होती हैं । अभव्य-

धणियवग्गणाओ लब्भंति । उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए वि आवलियाए असंखेज्ज-दिभागमेत्तसरिसधणियवग्गणाओ लब्भंति । पुणो जवमज्झस्स हेट्ठोवरि विसेसाहि-यहीणवग्गणाओ* घेत्तूण जवमज्झवग्गणपमाणेण कदे तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झं होदि । णवरि सुहुमणिगोवसरिसधणियजवमज्झवग्गणाहिंतो पत्तेयसरीरसरिसधणि-यजवमज्झवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । एत्थ गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। तेण कारणेण सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो पत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति सिद्धं । अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा । बादरणिगोदवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोद-वग्गणाणमसंखेज्जगुणत्तं होदु णाम; बादरणिगोदजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजीवाणम-संखेज्जगुणत्तुवलंभादो । किंतु एदं ण जुज्जदे सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो पत्तेयसरीर-वग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति । कुदो ? असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरजीवेहिंतो सुहुमणिगोदजीवाणमणंतगुणत्तदंसणादो । ण एस दोसो; अणंताणंतजीवेहि सव्वजीव-रासीए असंखेज्जदिभागमेत्तेहि एगसुहुमणिगोदवग्गणणिप्पत्तीदो । एग-दो-तिण्णिआदि जा उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेहि चेव जीवेहि पत्तेयसरीराणमेग-वग्गणुप्पत्तिदंसणादो ? असंखेज्जगुणत्तं ण विरुज्झदे । सव्वमेदं कुदो णव्वदे ?

आचार्यश्री शान्तिसागर जी महाराज

प्रायोग्य यवमध्यमें भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणायें प्राप्त होती हैं। उत्कृष्ट प्रत्येक शरीरवर्गणामें भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सदृश धनवाली वर्गणायें प्राप्त होती हैं। पुनः यवमध्यके नीचे और ऊपर क्रमसे विशेष अधिक और विशेष हीन वर्ग-णाओंको ग्रहण कर यवमध्य वर्गणाके प्रमाणसे करने पर तीन गुणहानिप्रमाण यवमध्य होता है। इतनी विशेषता है कि सूक्ष्म निगोद सदृश धनवाली यवमध्यवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीर सदृश धनवाली यवमध्य वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। यहां पर गुणकार आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण है। इस कारणसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी है यह सिद्ध हुआ। अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है।

शंका– बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोदवर्गणायें असंख्यातगुणी होवें, क्योंकि, बादर निगोद जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं। किन्तु सूक्ष्मनिगोदवर्ग-णाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं यह बात नहीं बनती, क्योंकि, असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे सूक्ष्मनिगोद जीव अनन्तगुणे देखे जाते हैं ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, सब जीवराशिसे असंख्यातवें भागप्रमाण अनन्तानन्त जीवोंसे एक सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति होती है। तथा एक, दो और तीनसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंसे प्रत्येकशरीर एक वर्गणाकी उत्पत्ति देखी जाती है, इसलिए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके असंख्यातगुणे होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

शंका–यह सब किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–आचार्योंके विरोध रहित वचनोंसे जाना जाता है।

---

* ता० प्रतौ ' विसेसाहियऊणवग्गणाओ ' इति पाठः ।

अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण-गारो? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? पत्तेयसरीरवग्गणा-दव्वपडिभागो । एसो गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो । कुदो एदं णव्वदे? सांतर-णिरंतरवग्गणणाणागुणहाणिसलागाणं पि सव्वजीवेहि अणंतगुणत्तुवलंभादो । एवं पि कुदो णव्वदे ? सव्वजीवेहि अणंतगुणद्धुवक्खंधदव्ववग्गणट्ठाणादो सव्वजीवेहि अणं-तगुणद्धुवसांतरणिरंतरवग्गणट्ठाणे अद्धाण*मेत्तणाणाणंतगुणहाणिसलागाणमुवलं-भादो गुणहाणिसलागासु सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणासु संतीसु एदासिं अण्णोण्णब्भ-त्थरासीए णिच्छएण गुणहाणिसलागाहिंतो अणंतगुणसिद्धीए । किं च जदि वि सांतरणिरंतरवग्गणासु चरिमवग्गणा सरिसधणिएहि पत्तेयसरीरवग्गणाहि उवलब्भदि तो वि पत्तेयसरीरवग्गणाहिंतो सांतरणिरंतरवग्गणाओ अणंतगुणाओ, चरिमाए वि वग्ग-णाए उक्कस्सेण अणंताणंताणं सरिसधणियाणं वग्गणाणं संभवादो ।

ध्रुवक्खंधदव्ववग्गणाए णाणासेडिसव्ववव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो? सव्व-जीवेहि अणंतगुणो दिवड्ढगुणहाणिगुणिदसगणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी तं जहा- सांतरणिरंतरसव्ववग्गणाओ समपट्टमवग्गणपमाणेण कीरमाणीयो सादिरेय-

---

सान्तर निरन्तर

अचित्त अध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? प्रत्येकशरीरवर्गणा द्रव्य प्रतिभाग है । यह गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

शंका–यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–क्योंकि, सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंकी नानागुणहानिशलाकायें भी सब जीवोंसे अनन्तगुणी पाई जाती हैं । इससे जाना जाता है कि यह गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

शंका–यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणी ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणाओंके अध्वानसे सब जीवोंसे अनन्तगुणी ध्रुवसान्तर-निरन्तरवर्गणाओंके स्थानमें अध्वानप्रमाण नाना अनन्त गुणहा-निशलाकायें पाई जाती हैं । तथा गुणहानिशलाकाओंके सब जीवोंसे अनन्तगुणी होने पर इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशि नियमसे गुणहानिशलाकाओंसे अनन्तगुणी सिद्ध होती है ।

दूसरे यद्यपि सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंमें अन्तिम वर्गणा सदृश धनरूपसे उत्कृष्ट भावको प्राप्त होकर उपलब्ध होती है तो भी प्रत्येकशरीरवर्गणाओंसे सान्तर-निरन्तरवर्गणायें अनन्तगुणी हैं, क्योंकि, अन्तिम वर्गणामें भी उत्कृष्टरूपसे सदृश धनवाली अनन्तानन्त वर्गणायें सम्भव हैं।

ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणी डेढ़ गुणहानिगुणित अपनी नाना गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । यथा–सान्तर–निरन्तर सब वर्गणायें अपनी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे करने

---

* अ० प्रती ' सव्वजीवेहि सांतरणिरंतरवग्गणट्ठाणे अणंतगुणअद्धाण–' इति पाठः ।

पढमवग्गणमेत्तीयो, वग्गणं पडि अणंतगुणहीणकमेण गदत्तादो । एवं पुध ट्ठविय पुणो सांतरणिरंतरपढमवग्गणाए धुवक्खंधगुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासिणा गुणिदाए धुवक्खंधपढमवग्गणा होदि । पुणो तिस्से पमाणेण धुवक्खंधसव्ववग्गणासु कदासु दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमवग्गणाओ होंति । पुणो सांतरणिरंतरवग्गणाए धुवक्खंधवग्गणाए दिवड्ढगुणमेत्तपढमवग्गणासु ओवट्टिज्जमाणासु* दिवड्ढगुणहाणिगुणिदअण्णोण्णब्भत्थरासी आगच्छदि । एसो सव्वजीवेहि अणंतगुणो त्ति कथं णव्वदे ? धुवक्खंधवग्गणद्धाणम्मि* सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तगुणहाणिसलागुवलंभादो । तं जहा- असंखेज्जलोगमेत्तद्धाणम्मि जदि एगा गुणहाणिसलागा लब्भदि तो सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तधुवक्खंधवग्गणद्धाणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ लब्भंति । एदासिमण्णोण्णब्भत्थरासिणा दिवड्ढगुणहाणिगुणिदेण सांतरणिरंतरवग्गणाए गुणिदाए धुवक्खंधदव्ववग्गणाओ होंति ।

कम्मइयवग्गणासु णाणासेढिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अब्भवसिद्धिएहि अणंतगुणो कम्मइयवग्गणब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी एत्थ गुणगारुप्पायणविहाणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

कम्मइयसरीरस्स हेट्ठा अगहणदव्ववग्गणासु णाणासेढिसव्वदव्वा अणंतगुणा ।

पर साधिक प्रथम वर्गणाप्रमाण होती हैं, क्योंकि, वे प्रत्येक वर्गणाके प्रति अनन्तगुणे हीनक्रमसे गई हैं। इसे पृथक् स्थापित कर पुनः सान्तरनिरन्तर प्रथम वर्गणाके प्रमाणमें ध्रुवस्कन्धकी नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धकी प्रथम वर्गणा होती है। पुनः इसके प्रमाणसे ध्रुवस्कन्धकी सब वर्गणाओंके करनेपर डेढ गुणहानिप्रमाण प्रथम वर्गणायें होती हैं। पुनः सान्तर-निरन्तरवर्गणाके द्वारा ध्रुवस्कन्धवर्गणाको डेढ गुणहानिप्रमाण प्रथम वर्गणाओंके भाजित करनेपर डेढ गुणहानिगुणित अन्योन्याभ्यस्त राशि आती है।

शंका-- यह सब जीवराशिसे अनन्तगुणा है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, ध्रुवस्कन्धवर्गणास्थानमें सब जीवोंसे अनन्तगुणी गुणहानिशलाकायें उपलब्ध होती हैं। यथा- असंख्यात लोकप्रमाण अध्वानमें यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो सब जीवोंसे अनन्तगुणे ध्रुवस्कन्धवर्गणाअध्वानमें कितना प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देनेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणी नानागुणहानिशलाकायें प्राप्त होती हैं। डेढ गुणहानिगुणित इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे सान्तर-निरन्तरवर्गणाके गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धद्रव्यवर्गणायें होती हैं।

कार्मणशरीरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणी कार्मणवर्गणाओंके भीतर नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। यहाँ पर गुणकारके उत्पन्न करनेकी विधि पहलेके समान कहनी चाहिए।

कार्मणशरीरसे पूर्व अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं।

---

* अ०प्रतौ 'उवट्टिज्जमाणासु' इति पाठः। * ता०प्रतौ '-वग्गणट्ठाणम्मि' इति पाठः।

को गुणगारो? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सगअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। कुदो? एदिस्से अगहणदव्ववग्गणाए अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तणाणा-गुणहाणिसलागुवलंभादो । एदासिमण्णोण्णब्भत्थरासी सिद्धेहिंतो किमणंतगुणो किं वा अणंतगुणहीणो होदि त्ति ण णव्वदे, विसिट्ठुवदेसाभावादो ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? मणदव्व-गुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी ।

मणदव्ववग्गणाए हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? अगहणगुणहाणिसलागण्णोण्णब्भत्थरासी ।

भासादव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? भासाव-ग्गणागुणहाणिसलागण्णोण्णब्भत्थरासी ।

भासावग्गणाए हेट्ठा तवणंतरअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंत-गुणा । को गुणगारो ? सगगुणहाणिसलागण्णोण्णब्भरासी ।

तेजइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? तेजाववग्ग-गुणहाणिसलागण्णोण्णब्भत्थरासी ।

तेजइयस्स हेट्ठिमतदणंतरअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुणगारो ? अगहणवग्गण[✡]गुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी ।

गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणी अपनी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है, क्योंकि, इस अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण नाना गुणहानिशलाकायें पाई जाती हैं । इनकी अन्योन्याभ्यस्तराशि सिद्धोंसे क्या अनन्तगुणी है या अनन्तगुणी हीन है यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है ।

मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मनोद्रव्य-वर्गणाओंकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

मनोद्रव्यवर्गणासे पूर्व अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुण-कार क्या है ? अग्रहण गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त गुणकार है ।

भाषाद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? भाषावर्गणाओंका गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

भाषावर्गणासे पूर्व उसकी अनन्तरवर्ती अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है? अपनी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है ।

तैजसशरीरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? तैजसवर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ।

तैजसशरीरसे पूर्व उसकी अनन्तरवर्ती अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है ।

✡ ता० प्रतौ ' गुणगारो ? आहार (अगहण) वग्गण ' इति पाठः ।

आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? आहारवग्गण-गुणहाणिसलागण्णोण्णब्भत्थरासी । आहारवग्गणाए हेट्ठा तदणंतरअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अगहणवग्गणगुणहाणिसलागण्णोण्णब्भत्थरासी । परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा । को गुण० ? जहण्णपरित्ताणंतादो अणंतगुणो । एदस्स कारणं वुच्चदे । तं जहा-- पदमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो उवरि असंखेज्जलोगमेत्तद्धाणं गंतूण तदित्थवग्गणमद्धं होदि । पुणो वि एत्तियं चेव अद्धाणं गंतूण तदित्थवग्गणा चदुब्भागा होदि । पुणो अणेण विहाणेण असंखेज्जपदेसियवग्गणाए अब्भंतरे जहण्णपरित्ताणंतच्छेदणयमेत्त-गुणहाणीसु गदासु परमाणुवग्गणादो तदित्थवग्गणा जहण्णपरित्ताणंतगुणहीणा होदि ।

संपहि असंखेज्जपदेसियवग्गणाए उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जमेत्तद्धाणस्स असंखे-ज्जदिभागम्मि दुदिवग्गणादो जदि परमाणुवग्गणा अणंतगुणा होदि तो असंखेज्जपदे-सियवग्गणाए उवरिमम्मि दुदिवग्गणं पेक्खिदूण परमाणुवग्गणा णिच्छएण अणंतगुणा होदि । त्ति सद्दहेयव्वं । एवं होदि त्ति कादूण जहण्णपरित्ताणंतवग्गणापमाणेण उव-रिमअगहणसव्ववग्गणासु गुणिदासु कदासु दिवड्ढगुणहाणिमेत्ताओ होदि पुणो असंखे-ज्जपदेसियवग्गणगुणहाणिसलागाओ विरलिय दुगुणिय अण्णोण्णगुणिदरासिणा अणंतपदेसियपढमवग्गणाए गुणिदाए परमाणूपोग्गलदव्ववग्गणा होदि । पुणो एदाए

आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं गुणकार क्या है ? आहार-वर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है । आहारवर्गणासे पूर्व उसकी अनन्तरवर्ती अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाकी गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है । परमाणुपुद्गल द्रव्यवर्गणाके नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जघन्य परीतानन्तमें अनन्तगुणा गुणकार है । इसका कारण कहते हैं । यथा-- परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे ऊपर असंख्यात लोकप्रमाण स्थान जाकर वहांकी वर्गणा अर्धभागप्रमाण होती है । फिर भी इतना ही स्थान जाकर वहांकी वर्गणा चतुर्थभागप्रमाण होती है । पुनः इस विधिसे असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके भीतर जघन्य परीतानन्तकी अर्धच्छेदप्रमाण गुणहानियोंके जाने पर परमाणुवर्गणामें वहांकी वर्गणा जघन्य परीतानन्तगुणी हीन होती है ।

अब असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातप्रमाण स्थानके असंख्यातवें भागमें स्थित वर्गणासे यदि परमाणुवर्गणा अनन्तगुणी होती है तो असंख्यातप्रदेशी वर्गणाके ऊपर स्थित वर्ग-णाको देखते हुए परमाणुवर्गणा निश्चयसे अनन्तगुणी होती है ऐसा श्रद्धान करना चाहिए । इस प्रकार होती है ऐसा समझकर कर जघन्य परीतानन्त वर्गणाके प्रमाणसे उपरिम अग्रहण सब वर्गणाओंका गुणकार करने पर वे डेढ़ गुणहानिप्रमाण होतीं हैं । पुनः असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और द्विगुणित कर जो अन्योन्यगुणित राशि उत्पन्न हो उससे अनन्तप्रदेशी प्रथम वर्गणाके गुणित करने पर परमाणुपुद्गलद्रव्य-

अणंतपदेसिपदव्ववग्गणाए ओवट्टिदाए विवक्खगुणहाणिगोवट्टियअण्णोण्णब्भत्थरासी आगच्छदि। एदेण अणंतपदेसियअप्पिदवग्गणासु गुणिदासु परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि। संखेज्जपदेसियसव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? उक्कस्ससंखेज्जयं दूरूवूणं। पुणो एगरूवस्स असंखेज्जभागा च* गुणगारो होदि। तं जहा-परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए उक्कस्ससंखेज्जेण गुणिदाए एगपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए तिस्से असंखेज्जदि भागेण च अहियं संखेज्जपदेसियवग्गणाओ होंति। पुणो गुणगारम्मि एगरूवे अवणिदे रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्ताओ परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाओ होंति। पुणो रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणाए अवणिदाए अहियगोवुच्छविसेसा होंति। संपहि दोगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु जदि एगपरमाणुवग्गणा लब्भदि तो रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणमेत्तगोवुच्छविसेसेसु किं लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए परमाणुवग्गणाए असंखेज्जदिभागो आगच्छदि। पुणो एदं रूवूणुक्कस्ससंखेज्जमेत्तगुणगारम्मि अवणियसेसं परमाणुवग्गणाए गुणगारे ट्ठविदे संखेज्जपदेसियसव्ववग्गणाओ होंति। परमाणुवग्गणाए एदासु ओवट्टिदासु एकरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणयं रूणूणुक्कस्ससंखेज्जयं लद्धं होदि। एवमेत्थ गुणगारो। असंखेज्जपदेसियणाणासेडिसव्ववग्गणदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणउक्कस्ससंखेज्जेहि परिहीणविवक्खगुणहाणीणं संखेज्जदिभागो। को पडिभागो?

वर्गणा होती है। पुनः इससे अनन्तप्रदेशी द्रव्य वर्गणाके भाजित करनेपर डेढ़ गुणहानिसे भाजित अन्योन्याभ्यस्तराशि आती है। इससे अनन्तप्रदेशी विवक्षित वर्गणाओंके गुणित करने पर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है। संख्यातप्रदेशी सब वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य संख्यातगुणे होते हैं। गुणकार क्या है? दो कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है। पुनः एक रूपके असंख्यात बहुभाग गुणकार है। यथा- परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाके उत्कृष्ट संख्यातसे गुणित करनेपर एक परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा और उसका असंख्यातवां भाग अधिक संख्यातप्रदेशी द्रव्यवर्गणायें होती हैं। पुनः गुणकारमें से एक अंकके कम करने पर एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणायें होती है। पुनः एक कम उत्कृष्ट संख्यातकी संकलनाके घटा देने पर अधिक गोपुच्छविशेष होते हैं। अब दो गुणहानिमात्र गोपुच्छविशेषोंमें यदि एक परमाणुवर्गणा लब्ध होती है तो एक कम उत्कृष्ट संख्यातके संकलनमात्र गोपुच्छविशेषोंमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलगुणित इच्छाको प्रमाणसे भाजित करने पर परमाणुवर्गणाका असंख्यातवां भाग आता है। पुनः इसके एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण गुणकारमेंसे घटाकर शेष रहे द्रव्यको परमाणुवर्गणाका गुणकार स्थापित करने पर संख्यातप्रदेशी सब वर्गणायें होती हैं। परमाणुवर्गणासे इनके भाजित करने पर एकका असंख्यातवां भाग कम एक कम उत्कृष्ट संख्यात लब्ध होता है। यह यहां पर गुणकार है। असंख्यातप्रदेशी नानाश्रेणि सब वर्गणाद्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? एकका असंख्यातवां भाग कम उत्कृष्ट संख्यात हीन डेढ़ गुणहानियोंका संख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? एकका

* मुद्रितप्रतौ 'संखेज्जदिभागो च' इति पाठः।

रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं एगरूवस्स असंखेज्जदि०भागेण ऊणयं । एत्थ कारणं सुगमं । एवं वग्गणप्पाबहुगं समत्तं । एवं चोद्दसेहि अणुयोगद्दारेहि वग्गणाए सह वग्गणदव्व-समुदाहारो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

संपहि अणंतरोवणिधा णाम जमणुयोगद्दारं तस्स परूवणं कस्सामो । तं जहा--अणंतरोवणिधा दुविहा--दव्वट्ठदा पदेसट्ठदा । दव्वट्ठदाए अणंतरोवणिधा वग्गणदव्वसमुदाहारे चेव परूविदा त्ति णेह परूवेदव्वा ? ण, तत्थ अणुसंगेण सूचिदत्तादो । एत्थ पुण ताए चेव अहियारो त्ति तिस्से विसेसिदूण परूवणा कीरदे । परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो दुपदेसियदव्ववग्गणा विसेसहीणा । विसेसो पुण असंखे-ज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा । तं जहा-असंखेज्जलोगे विरलेदूण परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणे समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स वग्गणाविसेस-पमाणं पावदि । पुणो एत्थ एगरूवधरिदं परमाणुवग्गणादो सोहिदे सेसं दुपदेसिय-वग्गणदव्वं होदि । बेरूवधरिदेसु अवणिदेसु तिपदेसियवग्गणदव्वं होदि । तिण्णि-रूवधरिदेसु परमाणुवग्गणदव्वादो अवणिदेसु चदुपदेसियवग्गणदव्वं होदि । एवं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव भागहारस्स अद्धमेत्तवग्गणाओ उवरि चडिदाओ त्ति । ताधे तदित्थवग्गणा दव्वट्ठदाए दुगुणहीणा होदि । पुणो एदाए

असंख्यातवां भाग कम एक कम उत्कृष्ट संख्यात प्रतिभाग है । यहां पर कारण सुगम है । इस प्रकार वर्गणाअल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

इस प्रकार चौदह अनुयोगद्वारों और वर्गणाके साथ वर्गणाद्रव्यसमुदाहार अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अब अनन्तरोपनिधा नामका जो अनुयोगद्वार है उसका कथन करते हैं । यथा--अन-न्तरोपनिधा दो प्रकारकी है--द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता । पु.15 53-178

शंका--द्रव्यार्थताकी अपेक्षा अनन्तरोपनिधाका वर्गणासमुदाहारमें कथन किया है, इसलिए यहां कथन नहीं करना चाहिए ?

समाधान--नहीं, क्योंकि, वहां पर अनुसंगसे उसका सूचन किया है । परन्तु यहां पर उसका ही अधिकार है, इसलिए उसका विशेषरूपसे कथन करते हैं ।

परमाणु पुद्गल द्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा विशेष हीन है । विशेषका प्रमाण असंख्यातवां भाग है । उसका प्रतिभाग क्या है? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । यथा--असंख्यात लोकोंका विरलन करके उसपर परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति वर्गणाविशेषका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः यहाँ एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको परमाणु वर्गणा द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष द्विप्रदेशी वर्गणाद्रव्य होता है । दो अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यको घटा देनेपर त्रिप्रदेशी वर्गणाद्रव्य होता है । तीन विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यको परमाणुवर्ग-णाद्रव्यमें से घटा देनेपर चतुःप्रदेशी वर्गणाद्रव्य होता है । इस प्रकार भागहारके अर्धभाग-प्रमाण वर्गणाओंके उत्तरोत्तर प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं । तब वहांकी वर्गणा द्रव्यार्थताकी अपेक्षा द्विगुणी हीन होती है । पुनः इस द्विगुण हीन वर्गणाका

दुगुणहीणवग्गणाए* पुव्वविरलणाए समखंडं कादूण दिण्णाए रूवं पडि एगेगवग्गणविसेसो पावदि। णवरि पुव्विल्लवग्गणविसेसादो संपहियवग्गणविसेसो दुगुणहीणो। पुणो एत्थ एगवग्गणविसेसे अवणिदे तदणंतरवग्गणदव्वं होदि। एवं विसेसहीणक्कमं जाणिदूण णेयव्वं जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। तदो तिस्से असंखेज्जभागहीणवग्गणाए जा उवरिमअणंतरवग्गणा सा संखेज्जभागहीणा। तिस्से को पडिभागो? जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धछेदणयाणं संखेज्जदिभागो। तं जहा- जहण्णपरित्तासंखेज्जअद्धच्छेदणयाणं संखेज्जदिभागं विरलेदूण असंखेज्जभागहीणवग्गणाणं चरिमदुगुणहीणवग्गणं समखंडं* कादूण दिण्णे रूवं पडि एगेगवग्गणविसेसो पावदि। पुणो एत्थ एगरूवधरिदे तत्थ अवणिदे तदणंतरउवरिमवग्गणदव्वपमाणं होदि। एवं संखेज्जभागहीणा होदूण गच्छंति जाव धुवखंधवग्गणाए अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति। तदो तिस्से संखेज्जदिभागहीणचरिमवग्गणाए जा उवरिमअणंतरवग्गणा सा संखेज्जगुणहीणा। तस्स को पडिभागो? जहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणाणं संखेज्जदिभागो। तं जहा- जहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणाणं संखेज्जभागं विरलेदूण संखेज्जभागहीणवग्गणाणं चरिमदुगुणहीणवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं तदणंतरउवरिमवग्गणपमाणं होदि। एवं णिरंतरकमेण संखेज्जगुणहीणाओ

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

" पूर्व विरलनके प्रति समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति एक एक वर्गणाविशेष प्राप्त होता है। इतनी विशेषता है कि पहलेके वर्गणाविशेषसे साम्प्रतिक वर्गणाविशेष द्विगुण हीन होता है। पुनः यहां पर एक वर्गणाविशेषके घटा देनेपर तदनन्तरवर्ती वर्गणाद्रव्य होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक विशेषहीन क्रमको जानकर ले जाना चाहिए। अनन्तर उस असंख्यात भागहीन वर्गणासे जो आगेकी अनन्तर वर्गणा है वह संख्यात भागहीन है। उसका प्रतिभाग क्या है? जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागप्रमाण प्रतिभाग है। यथा-जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागका विरलन करके असंख्यात भागहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम द्विगुणहीन वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अङ्कके प्रति एक एक वर्गणाविशेष प्राप्त होता है। पुनः यहां विरलनमेंसे एक अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यको उस वर्गणामें से घटा देने पर उसकी अनन्तरवर्ती उपरिम वर्गणा द्रव्यका प्रमाण होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्ध वर्गणाकी अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणायें संख्यात भागहीन होकर जाती हैं। अनन्तर उस संख्यातभागहीन अन्तिम वर्गणासे जो आगेकी अनन्तर वर्गणा है वह संख्यातगुणहीन है। उसका प्रतिभाग क्या है? जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंका संख्यातवां भाग प्रतिभाग है। यथा-जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागका विरलन करके संख्यातभागहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम द्विगुण हीन वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर वहाँ एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर उपरिम वर्गणाका प्रमाण होता है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त

* ता० प्रतौ 'एदा दुगुणहीणा वग्गणाए' आ० प्रतौ 'एदा दुगुणहीणवग्गणाए' इति पाठः।

* ता० का० प्रत्योः '-वग्गणस्स समखंडं' इति पाठः।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

संखेज्जगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अण्णाओ अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । पुणो तिस्से संखेज्जगुणहीणचरिमवग्गणाए जा उवरिमअणंतरवग्गणा सा असंखेज्जगुणहीणा होदि । तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा । तं जहा- असंखेज्जलोगे विरलेदूण पुणो संखेज्जगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं तदणंतरउवरिमवग्गणदव्वं होदि । एवं णिरंतरकमेण असंखेज्जगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाणो गदाओ त्ति । तिस्से उवरि जाओ अणंतरवग्गणाओ ताओ अणंतगुणहीणाओ होंति । तं जहा- अभवसिद्धिएहि अणंतगुणसिद्धाणमणंतिमभागरासिं विरलेदूण पुणो असंखेज्जगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तदित्थएगरूवधरिदं तदणंतरवग्गणपमाणं होदि । एवमणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । पुणो तस्सुवरिमणंतगुणहीणाओ चेव होंति । णवरि विसेसो अत्थि भागहारगओ[1] । तं जहा- अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतिमभागभागहारं[2] विरलेदूण पुणो पढमअणंतगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं तदणंतरउवरिमवग्गणपमाणं होदि । एवं पुणो वि अणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ

वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणायें निरन्तर क्रमसे संख्यातगुणी हीन संख्यातगुणी हीन होकर जाती हैं । पुनः उस संख्यातगुणहीन अन्तिम वर्गणासे जो आगेकी अनन्तर वर्गणा है वह असंख्यातगुणी हीन होती है । उसका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । यथा- असंख्यात लोकोंका विरलन करके पुनः संख्यातगुणहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाकी समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर यहाँ एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर उपरिम वर्गणाका द्रव्य होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणायें निरन्तर क्रमसे असंख्यातगुणी हीन होकर जाती हैं । पुनः उसके ऊपर जो अनन्तर वर्गणायें हैं वे अनन्तगुणहीन होती हैं । यथा- अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंसे अनन्तवें भागप्रमाण राशिका विरलन करके पुनः असंख्यातगुणी हीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर वर्गणाका प्रमाण होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणायें अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणीहीन होकर जाती हैं । पुनः इसके आगे सब वर्गणायें अनन्तगुणी हीन ही होती हैं । मात्र भागहारगत कुछ विशेषता है । यथा- अभव्योंसे अनंतगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण भागहारका विरलन करके पुनः प्रथम अनंतगुणहीन वर्गणाओंमें से अन्तिम वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्य तदनन्तर आगेकी वर्गणाका प्रमाण होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अन्य अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक ये सब वर्गणायें फिर भी अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर जाती हैं ।

---

[1] ता० अ० प्रत्योः ' भागहारं गओ ' इति पाठः ।

[2] ता० प्रतौ '-मणंतिमभागहारं ' अ० प्रतौ '-मणंतिमभागे भागहारं ' इति पाठः ।

गदाओ त्ति । पुणो तत्तो उवरि अणंतगुणहीणाओ चेव होंति । णवरि विसेसो भागहारगओ अत्थि । तं जहा-सव्वजीवेहि अणंतगुणहीणं सिद्धाणमणंतगुणं भागहारं विरलेदूण विदियवारं अणंतगुणहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणं समखंडं कादूण दिण्णे तत्थ एगखंडं तदणंतरवग्गणपमाणं होदि । एवमणंतगुणहीणाओ अणंतगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव सांतरणिरंतरवग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति । पदेसट्ठदा ताव अप्पा ।

आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

परंपरोवणिधा दुविहा- दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए चेव । दव्वट्ठदाए परमाणुदव्ववग्गणाओ असंखेज्जलोगमेत्तद्धाणं गंतूण दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । असंखेज्जलोगमेत्तभागहारस्स अद्धं गंतूण दुगुणहाणी होदि त्ति भणिदं होदि । तस्सुवरि संखेज्जाओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणहाणी होदि । एवं णेयव्वं जाव धुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स अद्धच्छेदणाणं संखेज्जविभागमेत्तद्धाणं गंतूण एत्थ दुगुणहाणी होदि त्ति भणिदं होदि । पुणो उवरि जाणिदूण णेयव्वं जाव धुवखंधम्मि वग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति । एत्थ तिण्णि अणुयोगद्दाराणि- परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि । परूवणदाए अत्थि णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतरसलागाओ एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं पि अत्थि । पमाणमसंखेज्जभागहीणवग्गणाणमेगपदेसगुणहाणिअद्धाणमसंखेज्जा लोगा ।

पुनः उससे ऊपर वर्गणायें अनन्तगुणी हीन ही होती हैं । मात्र यहाँ पर भागहारगत कुछ विशेषता है । यथा-सब जीवोंसे अनन्तगुणे हीन और सिद्धोंसे अनन्तगुणे भागहारका विरलन करके दूसरी बारमें अनन्तगुणहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाको समान खण्ड करके देयरूपसे वहां पर देनेपर जो एक खण्ड प्राप्त होता है वह तदनन्तर वर्गणाका प्रमाण होता है । इस प्रकार सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंके समाप्त होने तक ये सब वर्गणायें अनन्तगुणी हीन अनन्तगुणी हीन होकर जाती हैं । यहां प्रदेशार्थता स्थगित करते हैं ।

पृ. 184-185 पर संदृष्टि है

पृ. 179-180 परम्परोपनिधा दो प्रकारकी है- द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता । द्रव्यार्थताकी अपेक्षा परमाणु द्रव्यवर्गणासे असंख्यात लोकप्रमाण स्थान जाकर द्विगुणहीन द्विगुणहीन वर्गणायें होती हैं जो ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक जाननी चाहिए । असंख्यात लोकप्रमाण भागहारके अर्धभागप्रमाण स्थान जाने पर द्विगुणी हानि होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इससे आगे संख्यात वर्गणायें जाकर द्विगुणी हानि होती है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक ले जाना चाहिए । जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके संख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर यहाँ द्विगुणी हानि होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । पुनः इससे ऊपर ध्रुवस्कन्धमें सब वर्गणाओंके समाप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए । यहाँ पर तीन अनुयोगद्वार हैं-प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व । प्ररूपणाकी अपेक्षा नानाप्रदेशगुणहानि स्थानान्तरशलाकायें हैं । एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर भी है । प्रमाण-असंख्यात भागहीन वर्गणाओंका एकप्रदेशगुणहानि अध्वान असंख्यात लोकप्रमाण है । संख्यातभागहीन वर्गणाओंका

पृ. 180

संखेज्जभागहीणवग्गणाणमेगपदेसगुणहाणिअद्धाणं संखेज्जाओ वग्गणाओ । णाणापदेसगुणहाणिसलागाओ उभयत्थ पुण अणंताओ । अप्पाबहुगं— सव्वत्थोवमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं । णाणापदेसगुणहाणिसलगाओ अणंतगुणाओ ।

संपहि पदेसट्ठदाए अणंतरोवणिधा वुच्चदे । तं जहा--परमाणुपोग्गलवग्गण-
मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
पदेसादो दुपदेसियवग्गणपदेसा विसेसाहिया । किंचूणदुगुणा त्ति भणिदं होदि । तिपदेसियवग्गणपदेसा विसेसाहिया । किंचूणदुभागेण अहिया त्ति भणिदं होदि । चदुप्पदेसियवग्गणाए पदेसा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? किंचूणतिभागेण पंचमपदेसियवग्गणाए पदेसा विसेसाहिया । के० मेत्तेण ? किंचूणचदुब्भागेण एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव असंखेज्जा लोगा त्ति विसेसो पुण संखेज्जपदेसियासु वग्गणासु संखेज्जदिभागो । असंखेज्जपदेसियासु वग्गणासु अणंतरहेट्ठिमवग्गणपदेसाणमसंखेज्जदिभागो । असंखेज्जलोगमेत्तद्धाणं गंतूण पदेसजवमज्झं होदि । पुणो जवमज्झस्सुवरि* विसेसहीणाओ होदूण वग्गणाओ गच्छंति जाव ध्रुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । विसेसो पुण असंखेज्ज-दिभागो । तस्स को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा । तस्सुवरि संखेज्जभागहीणा होदूण गच्छंति जाव ध्रुवखंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । उवरि जाणि-दूण णेदव्वं जाव ध्रुवखंधवग्गणाओ समत्ताओ त्ति ।

एकप्रदेशगुणहानि अध्वान संख्यात वर्गणाप्रमाण है । परन्तु दोनों जगह नानाप्रदेशगुणहानि-शलाकायें अनन्त हैं । अल्पबहुत्व– एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक है । इससे नाना-प्रदेशगुणहानिशलाकायें अनन्तगुणी हैं ।

अब प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं । यथा– परमाणु पुद्गल वर्गणाप्रदेशसे द्विप्रदेशी वर्गणाप्रदेश विशेष अधिक हैं । कुछ कम दूने हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इनसे त्रिप्रदेशी वर्गणाप्रदेश विशेष अधिक हैं । कुछ कम द्वितीय भागप्रमाण अधिक हैं । इनसे चतुःप्रदेशी वर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? कुछ कम त्रिभाग अधिक हैं । इनसे पञ्चप्रदेशी वर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? कुछ कम चतुर्थ-भाग अधिक हैं । इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण स्थान जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं । किन्तु विशेषका प्रमाण संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें संख्यातवें भागप्रमाण है । असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें अनन्तर अधस्तन वर्गणाप्रदेशोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । असं-ख्यात लोकप्रमाण स्थान जाकर प्रदेशयवमध्य होता है । पुनः प्रदेशयवमध्यके ऊपर ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक वर्गणायें विशेष हीन होकर जाती हैं । मात्र विशेष असं-ख्यातवें भागप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण प्रतिभाग है । उसके ऊपर ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक सब वर्गणायें संख्यातभागहीन होकर जाती हैं । आगे ध्रुवस्कन्ध वर्गणाओंके समाप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए ।

---

* ता० प्रतौ ' गंतूण पदेसजवमज्झस्सुवरि ' इति पाठः ।

संपहि अणंतरोवणिधाए दव्वट्ठिद♣संदिट्ठिविधिं वत्तइस्सामो । तं जहा-- परमाणुदव्ववग्गणा संदिट्ठीए बेसदछप्पण्णपमाणा त्ति २५६ घेतव्वा । पुणो विसेसहीणकमेण णेयव्वं जाव ध्रुवक्खंधम्मि असंखेज्जभागहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणे त्ति । सा वि संदिट्ठीए णव इदि गेण्हियव्वा । सेसं वेयणदव्वविहाणेण भणिदविहाणं संभलिदूण वत्तव्वं । णवरि एत्थ गुणहाणिअद्धाणं णिसेगभागहारपमाणं च असंखेज्जा लोगा । संपहि पदेसट्ठदाए भण्णमाणाए पुव्वुत्तसंदिट्ठिं दुविय तत्थतणपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए एगपरमाणुणा गुणिदाए तिस्से पदेसपमाणं होदि । दुपदेसियदव्ववग्गणाए दोहि गुणिदाए दुपदेसियवग्गणपदेसपमाणं होदि । तिपदेसियदव्ववग्गणाए तीहि गुणिदाए तिपदेसियवग्गणपदेसपमाणं होदि । चदुपदेसियदव्ववग्गणाए चदुहि गुणिदाए चदुपदेसियवग्गणपदेसपमाणं होदि । एवं पंचगुणादिकमेण णेयव्वाओ जाव ध्रुवक्खंधवग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति । एवं गुणणविहाणे कदे दव्वट्ठदाए जं गुणहाणिअद्धाणं भणिदं परमाणुवग्गणप्पहुडि तमुवरि सगलं गंतूण पुणो बिदियगुणहाणीए सयलद्धम्मि उवरि चडिदे तम्हि पदेसे♠ दोसु वग्गणट्ठाणेसु एगलद्धाणि वेजवमज्झाणि होंति । तेसिमेसा संदिट्ठी-

---

अब अनन्तरोपनिधामें द्रव्यार्थताकी संदृष्टिविधिको बतलाते हैं । यथा- संदृष्टिमें परमाणु द्रव्यवर्गणा दोसौ छप्पन २५६ लेनी चाहिए । पुनः ध्रुवस्कन्धमें असंख्यातभागहीन वर्गणाओंमेंसे अन्तिम वर्गणाके प्राप्त होने तक विशेष हीनक्रमसे ले जाना चाहिए। वह भी संदृष्टिमें नौ ९ लेनी चाहिए । शेष वेदनाद्रव्यविधानकी अपेक्षा कही गई विधिको स्मरण करके कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ पर गुणहानिअध्वान और निषेकभागहारका प्रमाण असंख्यात लोक है। अब प्रदेशार्थताकी अपेक्षा कथन करने पर पूर्वोक्त संदृष्टिको स्थापित करके वहाँकी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाको एक परमाणुसे गुणित करनेपर उसके प्रदेशोंका प्रमाण होता है । द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणाको दोसे गुणित करने पर द्विप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशोंका प्रमाण होता है । त्रिप्रदेशी वर्गणाको तीनसे गुणित करनेपर त्रिप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशोंका प्रमाण होता है । चतुःप्रदेशी द्रव्यवर्गणाको चारसे गुणित करनेपर चतुःप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशोंका प्रमाण होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्ध वर्गणाओंके समाप्त होनेतक पाँचगुणे आदिके क्रमसे ले जाना चाहिए। इस प्रकार गुणनविधिके करने पर द्रव्यार्थताकी अपेक्षा जो परमाणु वर्गणासे लेकर गुणहानिअध्वान कहा है वह ऊपर सब जाकर पुनः दूसरी गुणहानिका सकलाध्व ऊपर जानेपर उस स्थानमें दो वर्गणास्थानोंमें एक साथ लब्ध हुए दो यवमध्य होते हैं। उनकी यह संदृष्टि है (संदृष्टि मूलमें दी है) ।

विशेषार्थ-द्रव्यार्थताकी अपेक्षा संदृष्टि-परमाणुद्रव्यवर्गणा २५६ और अन्तिम वर्गणा ९ बतलाई है। इसकी रचना वेदनाद्रव्यविधानकी अपेक्षा इस प्रकार है--

---

♣ ता०का० प्रत्योः 'दव्वदुद-' इति पाठः । ♠ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'तंपि पदेसे' इति पाठः ।

११५२	११५२
११२०	१२००
१०५६	१२३२
९६०	१२४८
८३२	१२४८[1]
६७२	१२३२
४८०	१२००
२५६	११५२[2]

यवमध्ये

संपहि एत्थ पढमगुणहाणिचरिमवग्गण-विदियगुणहाणिपढमवग्गणाओ संदिट्ठीए अत्थदो च दो वि सरिसाओ। तदुवरिमवग्गणाओ जाव जवमज्झं ताव विसेसाहियाओ त्ति घेत्तव्वं। पुणो जवमज्झस्सुवरि विसेसहीणकमेण णेयव्वं जाव धुवक्खंधवग्गणाए असंखेज्जभागहीण-संखेज्जभागहीणदव्ववग्गणे त्ति। एवं कदे जवमज्झस्स हेट्ठा असंखेज्जाओ दुगुणवड्ढीयो उप्पज्जंति त्ति। संपहि जवमज्झस्स हेट्ठा गुणहाणीयो दव्वट्ठदाए दिवड्ढगुणहाणी-णमद्धच्छेदणयमेत्ताओ। तं जहा- जवमज्झस्स हेट्ठिमपढमगुणहाणिअद्धाणादो तदणंतरहेट्ठिमगुणहाणिअद्धाणमद्धं होदि। ⊕विदियगुणहाणिअद्धाणादो तदणंतरहेट्ठिम-

प्रथम गु० हा०	द्वि गु० हा०	तृ० गु०	च० गु०	पं० गु०
१४४ ×8	१२८ × १	३६	३२	९
अन्तिम वर्गणा	प्रथम वर्गणा	अन्तिम	प्रथम	अन्तिम
१६० × 7	१२० × १०	४०	३०	१०
१७६ × 6	११२ × ११	४४	२८	११
१९२ × 5	१०४ × १२	४८	२६	१२
२०८ × 4	९६ × १३	५२	२४	१३
२२४ × 3	८८ × १४	५६	२२	१४
२४० × 2	८० × १५	६०	२०	१५
२५६ × 1	७२ × १६	६४	१८	१६ = 3100

इस संदृष्टिमें २५६ परमाणुवर्गणाकी द्रव्यार्थता है, २४० द्विप्रदेशी, २२४ त्रिप्रदेशी, २०८ चतुःप्रदेशी, १९२ पंचप्रदेशी वर्गणाकी द्रव्यार्थता है। इसीप्रकार आगे भी जानना चाहिये। प्रदेशार्थताका प्रमाण जाननेके लिए २५६ को एक से, २४० को दो से, २२४ को तीनसे, २०८को चारसे गुणा करनेपर २५६, ४८०, ६७२ और ८३२ प्रदेशार्थताका प्रमाण आ जाता है। इसी-प्रकार आगे भी जानकर गुणा करनेसे प्रदेशार्थताका प्रमाण आ जाता है। संदृष्टि मूलमें दी ही है। इसमें १२४८ की यवमध्य संज्ञा है।

यहाँ पर प्रथम गुणहानिकी अन्तिम वर्गणा ११५२ और द्वितीय गुणहानिकी प्रथम वर्गणा ११५२ की संदृष्टि है। वास्तवमें ये दोनों वर्गणायें समान हैं। इनसे ऊपरकी वर्गणायें यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए। पुनः यवमध्यके ऊपर ध्रुवस्कन्धवर्गणाकी असंख्यातभागहीन और संख्यातभागहीन द्रव्यवर्गणाके प्राप्त होने तक विशेषहीन क्रमसे ले जाना चाहिए। ऐसा करनेपर यवमध्यके पूर्व असंख्यात द्विगुणवृद्धियाँ उत्पन्न होती हैं। यवमध्यके पूर्व ये गुणहानियां द्रव्यार्थताकी अपेक्षा डेढ़ गुणहानिके अर्धच्छेदप्रमाण होती हैं। यथा-यवम-
यवमध्यके पूर्व प्रथम गुणहानिअध्वानसे तदनन्तर पूर्वका गुणहानिअध्वान अर्धभागप्रमाण होता

१ म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु '१२४०' इति पाठः। २ अ० का० प्रत्योः '११५६' इति पाठः।
⊕ म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'विदियगुणहाणि-' इत्यादि वाक्यं नोपलभ्यते।

तदियगुणहाणिअद्धाणमद्धं होदि । एवं पडिलोमेण णेयव्वं जाव परमाणुवग्गणपढम-गुणहाणि त्ति । अणुलोमेण पुण पढमगुणवड्ढिअद्धाणादो बिदियगुणवड्ढिअद्धाणं दुगुणं होदि । पुणो एवं दुगुणवड्ढिअद्धाणं दुगुणदुगुणकमेण गच्छदि जाव जवमज्झं ति । जदि वि एत्थ जवमज्झादो हेट्ठा गुणहाणिमेत्तोवरिमसव्ववग्गणपदेसा दुगुणहीणा ण होंति तो वि बुद्धीए दुगुणहीणा त्ति घेत्तूण परूवणा कदा बालजणपबोहणट्ठं । जवमज्झादो उवरि वि एवं चेव बुद्धीए दुगुणहीणत्तं संकप्पिय वत्तव्वं । णवरि उवरिमगुणहाणिअद्धाणं सव्वत्थ असंखेज्जा लोगा संखेज्जरूवाणि च । उवरिमगुण-हाणिअद्धाणाणि सव्वत्थ सरिसाणि ण होंति, जवमज्झादो उवरि चडिदद्धाणसंक-लणवुगुणमेत्तपक्खेवाणं सव्वत्थ ध्रुवसरूवेण परिहाणिदंसणादो ।

है । इस प्रकार परमाणुवर्गणाकी प्रथम गुणहानिके प्राप्त होने तक प्रतिलोम विधिसे ले जाना चाहिए । अनुलोमविधिसे तो प्रथम गुणवृद्धिअध्वानसे दूसरा गुणवृद्धिअध्वान दूना होता है । इस प्रकार द्विगुणवृद्धि अध्वान यवमध्यके प्राप्त होने तक दूना दूना होकर गया है । यद्यपि यहां पर यवमध्यसे पूर्व गुणहानिमें प्राप्त हुए सब वर्गणाप्रदेश द्विगुणहीन नहीं होते हैं तो भी बाल-जनोंको बोध करानेके लिए बुद्धिसे वे द्विगुणहीन होते हैं ऐसा ग्रहण करके उनकी प्ररूपणा की है । यवमध्यके ऊपर भी इसी प्रकार बुद्धिसे द्विगुणहीनपनेका संकल्प करके कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सर्वत्र उपरिम गुणहानि अध्वान असंख्यात लोक और संख्यात अंक प्रमाण है । उपरिमगुणहानिअध्वान सर्वत्र समान नहीं होते हैं, क्योंकि यवमध्यसे जितने स्थान आगे जाते हैं उनके संकलनसे दूने प्रक्षेपोंको सर्वत्र ध्रुवरूपसे हानि देखी जाती है ।

विशेषार्थ– यहां पर गुणहानिका प्रमाण ८ है, अतः ऊर्ध्व गुणहानि (८×$\frac{1}{2}$) = १२ स्थान जाने पर १२४८ यवमध्य प्राप्त होता है ।

प्रथम गुणहानि	द्वितीय गुणहानि	त्रि० गु० हा०	चतु० गु० हा०	पंच० गु० हा०
१४४×८=११५२ अन्तिम वर्गणा	१२८×९=११५२ प्रथम वर्गणा	३६×२४=८६४ अन्तिम वर्गणा	३२×२५=८०० प्रथम वर्गणा	९×४०=३६० अन्तिम वर्गणा
१६०×७=११२०	१२०×१०=१२००	४०×२३=९२०	३०×२६=७८०	१०×३९=३९०
१७६×६=१०५६	११२×११=१२३२	४४×२२=९६८	२८×२७=७५६	११×३८=४१८
१९२×५=९६०	१०४×१२=१२४८ प्रथम यवमध्य	४८×२१=१००८	२६×२८=७२८	१२×३७=४४४
२०८×४=८३२	९६×१३=१२४८ द्वितीय यवमध्य	५२×२०=१०४०	२४×२९=६९६	१३×३६=४६८
२२४×३=६७२	८८×१४=१२३२	५६×१९=१०६४	२२×३०=६६०	१४×३५=४९०
२४०×२=४८०	८०×१५=१२००	६०×१८=१०८०	२०×३१=६२०	१५×३४=५१०
२५६×१=२५६	७२×१६=११५२	६४×१७=१०८८	१८×३२=५७६	१६×३३=५२८

प्रथम यवमध्यसे पूर्व १२३२, १२००, ११५२, ११५२, ११२०, १०५६, ९६०, ८३२ व ६७२

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जवमज्झादो उवरिमपक्खेवावणयस्स किं पि अत्थपरूवणं* कस्सामो । तं जहा— जवमज्झदव्वे सरूवदिवड्ढगुणहाणीए गुणिदे जवमज्झपदेसग्गं होदि । पुणो जवमज्झदव्वं ट्ठविय दुरूवाहियदिवड्ढगुणहाणीए गुणिदे जवमज्झदव्वट्ठदाए समहिय-पदेसग्गं होदि । पुणो जवमज्झदव्वट्ठदादो उवरिमदव्वट्ठदाए एगो पक्खेवो हीणो त्ति दिवड्ढगुणहाणिणा जवमज्झदव्वट्ठदाए ओवट्टिदाए एगो पक्खेवो होदि । पुणो तम्मि दुरूवाहियदिवड्ढगुणहाणिणा गुणिदे रिणपदेसग्गं होदि । तत्थ दोदव्वट्ठदपक्खेवे घेत्तूण पुध ट्ठविय सेसगुणगार-भागहारा सरिसा त्ति अवणिदे जवमज्झदव्वट्ठदा होदि । एवं पदेसग्गं पुव्विल्लपदेसग्गम्मि अवणिदे जवमज्झपदेसग्गादो सरिसं पदेसग्गं होदि । पुणो तत्थ पुध ट्ठविददव्वट्ठदाए दोपक्खेवमेत्तपदेसेसु अवणिदेसु जवमज्झादो अणंतर-उवरिमवग्गणपदेसग्गं होदि । पुणो जवमज्झादो उवरि तदियाए वग्गणाए पदेसग्गं जवमज्झपदेसेहिंतो छहि दव्वट्ठदापक्खेवमेत्तपदेसेहि ऊणं होदि । चउत्थवग्गणाए पदेसग्गं बारहेहि ऊणं होदि । एवं चडिदद्धाणसंकलणं दुगुणमेत्तदव्वट्ठदपक्खेवेहि ऊणं होदूण वग्गणाणं पदेसग्गमुवरि गच्छदि । णवरि जत्थ दव्वट्ठद*पक्खेवा सरिसा

ये ९ स्थान जाकर यवमध्य (निकटतम) आधा ६७२ आता है । द्वितीय यवमध्यसे उत्तर १२३२, १२००, ११५२, १०८८, १०८०, १०६४, १०४०, १००८, ९७८, ९२०, ८६४, ८००, ७८०, ७५६, ७२८, ६९६, ६६०, व ६२० ये १८ स्थान जाकर ६२० यवमध्य का (निकटतम) आधा ६२० आता है । इस प्रकार संदृष्टिके अनुसार प्रदेशार्थमें यवमध्यसे पूर्वकी गुणहानिमें ९ स्थान हैं और उत्तरकी गुणहानिमें (९×२) = १८ स्थान हैं ।

अब यवमध्यसे उपरिम प्रक्षेपोंके निकालनेकी विधिका कुछ कथन करते हैं । यथा— यवमध्यके द्रव्यको एक अधिक डेढ गुणहानिसे गुणित करनेपर यवमध्य प्रदेशाग्र होता है । पुनः यवमध्यके द्रव्यको स्थापित कर दो अधिक डेढ गुणहानिसे गुणित करने पर यवमध्यद्रव्यार्थताकी अपेक्षा एक अधिक प्रदेशाग्र होता है । पुनः यवमध्यद्रव्यार्थतासे उपरिम द्रव्यार्थतामें एक प्रक्षेप हीन है, इसलिए डेढ गुणहानिसे यवमध्यद्रव्यार्थताके भाजित करने पर एक प्रक्षेप होता है । पुनः उसे दो अधिक डेढ गुणहानिसे गुणित करने पर ऋणस्वरूप प्रदेशाग्र होता है । वहाँ द्रव्यार्थताके दो प्रक्षेप लेकर पृथक् स्थापित करके शेष गुणकार और भागहार समान हैं, इसलिए अलग कर देने पर यवमध्यकी द्रव्यार्थता होती है । इस प्रदेशाग्रको पहलेके प्रदेशाग्रमेंसे कम कर देनेपर यवमध्यके प्रदेशाग्रके समान प्रदेशाग्र होता है । पुनः वहाँ पृथक् स्थापित हुई द्रव्यार्थताके दो प्रक्षेप-मात्र प्रदेशोंके अलग करने पर यवमध्यसे अनन्तर उपरिम वर्गणाका प्रदेशाग्र होता है । पुनः यवमध्यसे ऊपर तीसरी वर्गणाका प्रदेशाग्र यवमध्यके प्रदेशोंसे द्रव्यार्थताके छह प्रक्षेपमात्र प्रदेशोंसे हीन होता है । चतुर्थ वर्गणाका प्रदेशाग्र बारह प्रक्षेपमात्र प्रदेशोंसे हीन होता है । इस प्रकार जितने स्थान आगे गये हैं उनके संकलनसे गुणित दूने द्रव्यार्थतारूप प्रक्षेपोंसे हीन होता हुआ वर्गणाओं का प्रदेशाग्र ऊपर जाता है । इतनी विशेषता है कि जहाँ पर द्रव्यार्थताके प्रक्षेप समान

---

* अ०का०प्रत्योः ' अवयरूवणं ' इति पाठः । * ता०प्रतौ ' दव्वट्ठिद- ' इति पाठः ।

प्रकाशक- आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

ण होंति तत्थ पुध तेसिं संकलणं काढूण सिस्साणं पडिबोहो कायव्वो । एवं जवमज्झस्स उवरि सव्वगुणहाणीणमद्धाणमसंखेज्जलोगमेत्तं चेव पुध पुध होदि । होंताओ वि विसेसहीणाओ चेव होंति, सरिसाओ ण होंति, दव्वट्ठदाए पक्खेवाणं जवमज्झं पेक्खिदूण अवट्ठिदकमेण हाणीए अणुवलंभादो । एदस्स भावत्थो— दव्वट्ठदापक्खेवेसु अणवट्ठिदरूवेण एगेगगुणहाणिम्हि सगसगसरूवेण होयमाणेसु गुणगारेसु च सव्वत्थ रूवाहियकमेण गच्छमाणेसु गुणहाणिअद्धाणाणं सरिसभावस्स कारणं णत्थि । तेण विसरिसं चेव तदद्धाणमिदि भणिदं होदि । एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

संपहि पदेसमस्सिदूण परंपरोवणिधा जवमज्झादो हेट्ठा वुच्चदे । तं जहा--

---

नहीं होते हैं वहाँ उनकी अलगसे संकलना करके शिष्योंको ज्ञान कराना चाहिए । इस प्रकार यवमध्यके ऊपर सब गुणहानियोंका अध्वान पृथक् पृथक् असंख्यात लोकप्रमाण होता है । ऐसा होता हुआ भी विशेष हीन ही होता है सदृश नहीं होता, क्योंकि, यवमध्यको देखते हुए द्रव्यार्थता के प्रक्षेपोंमें अवस्थित क्रमसे हानि उपलब्ध नहीं होती है। इसका आशय यह है कि द्रव्यार्थताके प्रक्षेपोंके अवस्थितरूपसे एक एक गुणहानिमें अपने अपने स्वरूपसे घटने पर और गुणकारोंके सर्वत्र एक अधिकके क्रमसे जाने पर गुणहानिअध्वानोंके सदृशरूप होनेका कारण नहीं है । इससे गुणहानियोंका अध्वान विसदृश ही होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ–संदृष्टिमें द्वितीय गुणहानिमें द्रव्यार्थताका प्रक्षेप ८ है । इसका दुगुणा १६ है । यवमध्य (१२४८) के पश्चात् प्रथम प्रदेशार्थता १२३२ है जो यवमध्यसे एक दुगुणा प्रक्षेप (८×२) कम है (१२४८ – १२३२ = १६) । दूसरी प्रदेशार्थता १२०० है जो यवमध्य १२४८ से (१+२ = ३) तीन दुगुणे प्रक्षेपों (३×८×२ = ४८) से हीन है । तीसरी प्रदेशार्थता ११५२ है जो यवमध्यसे (१+२+३ = ६) छह दुगुणे प्रक्षेपों (६×८×२ = ९६) अर्थात् (१२४८ – ११५२ = ९६) कम है । चौथी प्रदेशार्थता १०८८ है जो यवमध्यसे (१+२+३+४ = १०) दस दुगुणे प्रक्षेप (१०×१६ = १६०) अर्थात् (१२४८ – १०८८ = १६०) कम है । १०८८ तृतीय गुणहानिकी प्रथम प्रदेशार्थता है और पंचम प्रदेशार्थता १०८० तीसरी गुणहानिकी द्वितीय प्रदेशार्थता है । तीसरी गुणहानिमें द्रव्यार्थता दुगुणा प्रक्षेप (२×४) = ८ है । तीसरी गुणहानिके प्रथम प्रदेशार्थतासे एक स्थान आगे जाने पर १०८० प्रदेशार्थता प्राप्त होती है जो (१०८८ – १०८० = ८) एक दुगुण प्रक्षेप (८) कम है । तीसरी गुणहानिमें प्रथम प्रदेशार्थतासे दो स्थान आगे जाकर १०६४ प्रदेशार्थता है जो प्रथम प्रदेशार्थता १०८८ से (१+२ = ३) तीन दुगुण प्रक्षेप (३×२×४ = २४) अर्थात् (१०८८ – १०६४ = २४) कम है । इसी प्रकार आगे भी संकलन करके द्रव्यार्थताके प्रक्षेपसे गुणा करके हानिका प्रमाण जान लेना चाहिये ।

अब प्रदेशोंका आश्रय लेकर यवमध्यसे नीचे परम्परोपनिधाका कथन करते हैं । यथा–

ताप्रतौ ' दव्वट्ठिद– ' इति पाठः । अप्रतौ ' भावो दव्वट्ठदाओ पक्खेवेसु ' इति पाठः ।

परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो दुपदेसियवग्गणा पदेसग्गेण दुगुणा किंचूणा । केत्तियमेत्तेण ? दुगुणदव्वट्ठदायक्खेवमेत्तेण । तमजोइय दुगुणा चेव त्ति घेत्तव्वं । दुपदेसियवग्गणादो चदुपदेसियवग्गणा किंचूणदुगुणा । केत्तियमेत्तेणूणा? अट्ठपक्खेवमेत्तेण । चदुपदेसियवग्गणादो अट्ठपदेसियवग्गणा दुगुणा किंचूणा । केत्तियमेत्तेण ? बत्तीसपक्खेवमेत्तेण । एवमुवरि जाणिदूण णेयव्वं जाव जवमज्झं ति । णवरि परमाणुवग्गणप्पहुडि जाव जहण्णपरित्तासंखेज्जपदेसियवग्गणं पावदि* ताव संखेज्जाओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणवड्ढीओ होंति । तेण संखेज्जपदेसियवग्गणासु संखेज्जाओ चेव(?) दुगुणवड्ढीओ उप्पज्जंति । तस्सुवरि असंखेज्जाओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणवड्ढी उप्पज्जदि । एवमसंखेज्जाओ दुगुणवड्ढीओ उवरि गंतूण जवमज्झमुप्पज्जदि । जवमज्झादो उवरि गुणहाणिअद्धाणमसंखेज्जा लोगा जाव धुवक्खंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । तस्सुवरि संखेज्जाओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणहाणी । एवमेदाओ गुणहाणीयो गच्छंति जाव धुवक्खंधम्मि अणंताओ वग्गणाओ गदाओ त्ति । उवरि जाणिदूण वत्तव्वं ।

एत्थ तिण्णि अणुयोगद्दाराणि—परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि । परूवणदाए अत्थि एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं । णाणापदेसगुणहाणिसलागाओ तत्तियाओ चेव जवमज्झादो च

परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा प्रदेशाग्रकी अपेक्षा कुछ कम दूनी है । कितनी न्यून है ? द्रव्यार्थताके दूने प्रक्षेपमात्रसे न्यून है । यहां कुछ कमकी विवक्षा न कर दूनी ही है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । द्विप्रदेशी वर्गणासे चतुःप्रदेशी वर्गणा कुछ कम दूनी है । कितनी न्यून है ? आठ प्रक्षेपमात्र न्यून है । चतुःप्रदेशी वर्गणासे आठप्रदेशी वर्गणा कुछ कम दूनी है । कितनी न्यून है ? बत्तीस प्रक्षेपमात्र न्यून है । इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक आगे भी जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि परमाणुवर्गणासे लेकर जघन्य परीतासंख्यातप्रदेशी वर्गणाके प्राप्त होने तक जो संख्यात वर्गणायें हैं उतनी वर्गणायें जाकर द्विगुण वृद्धियां होती हैं । इसलिए संख्यातप्रदेशीवर्गणाओंमें संख्यात ही द्विगुणवृद्धियां उत्पन्न होती हैं । उसके ऊपर असंख्यात वर्गणायें जाकर द्विगुणवृद्धि उत्पन्न होती है । इस प्रकार असंख्यात द्विगुणवृद्धियां ऊपर जाकर यवमध्य उत्पन्न होता है । यवमध्यसे ऊपर ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणायें जाने तक गुणहानि अध्वान असंख्यात लोकप्रमाण होता है । उसके ऊपर संख्यात वर्गणायें जाकर द्विगुणहानि होती है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें अनन्त वर्गणाओंके व्यतीत होने तक ये गुणहानियां जाती हैं । इसके आगे जानकर कथन करना चाहिए ।

उदाहरण— अंकसंदृष्टिमें परमाणुद्रव्यवर्गणाके प्रदेशाग्र २५६, द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणाके प्रदेशाग्र ४८० हैं, प्रक्षेप १६, २५६×२ = ५१२, ५१२ − (१६×२) = ४८० । चतुःप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशाग्र ८३२ हैं, ४८०×२ = ९६०, ९६० − (१६×८) = ८३२ । आठप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशाग्र ११५२ हैं, ८३२×२ = १६६४, १६६४ − (१६×३२) = ११५२ ।

यहां तीन अनुयोगद्वार होते हैं- प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व । प्ररूपणाकी अपेक्षा एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर है तथा नानाप्रदेशगुणहानिशलाकायें भी हैं । प्रमाण- एकप्रदेश-

* ता०प्रतौ '-वग्गणा पावदि' इति पाठः । (?) ता०प्रतौ ' संखेज्जासु चेव ' इति पाठः ।

एगपदेसगुणहाणिअद्धाणं संखेज्जाहि वग्गणाहि असंखेज्जवग्गणाहि वा होदि । णाणा-गुणहाणिसलागाओ जवमज्झस्स हेट्ठा असंखेज्जाओ, उवरि अणंताओ होंति । अप्पा-बहुअं— सव्वत्थोवमेगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं । णाणापदेसगुणहाणिसलागाओ अणंत-गुणाओ । एवं परंपरोवणिधा समत्ता ।

अवहारो दुविहो–दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए । तत्थ दव्वट्ठदाए परमाणुवग्गणप-माणेण सव्ववग्गणदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? असंखेज्जलोगमेत्तदिवड्ड-गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा–पढमगुणहाणिपमाणेण बिदिया-दिसव्वगुणहाणीसु कदासु पढमगुणहाणिपमाणाओ होंति । पुणो पढमगुणहाणिदव्वे परमाणुवग्गणपमाणेण कदे परमाणुवग्गणतिण्णिचदुब्भागविक्खंभं एगगुणहाणिआ-यामक्खेत्तं होदि। पुणो बिदियादिगुणहाणिदव्वे वि परमाणुवग्गणपमाणेण कदे एदं पि पुव्विल्लक्खेत्तसमाणं होदि । अपुणो एत्तिय[illegible]विक्खंभगुणहाणिआयामखेत्तं होदि। तं घेत्तूण* पुव्विल्लक्खेत्तम्मि संधिदे गुणहाणिमेत्ताओ परमाणुवग्गणाओ उप्प-ज्जंति । पुणो सेसखेत्तं मज्झम्हि पाडिय पासे संधिदे एत्थ वि गुणहाणिअद्धमेत्तपर-माणुवग्गणाओ उप्पज्जंति । एवं दिवड्डगुणहाणिमेत्तपरमाणुवग्गणाओ होंति त्ति दिवड्डगुणहाणीए परमाणुवग्गणाए गुणिदाए संदिट्ठीए सव्वदव्वपमाणमेत्तियं होदि

गुणहानिअध्वान संख्यात वर्गणाओं और असंख्यात वर्गणाओंका होता है तथा नानागुणहानि-शलाकायें यवमध्यके नीचे असंख्यात हैं और ऊपर अनन्त हैं । अल्पबहुत्व– एकप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर सबसे स्तोक है । इससे नानाप्रदेशगुणहानिशलाकायें अनन्तगुणी हैं । इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई ।

अवहार दो प्रकारका है- द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता । उनमेंसे द्रव्यार्थताकी अपेक्षा परमाणुवर्गणाके प्रमाणसे सब वर्गणाओंका द्रव्य कितने काल द्वारा अपहृत होता है ? असंख्यात लोकमात्र डेढ गुणहानि स्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता है । यथा– द्वितीयादि सब गुण-हानियोंको प्रथम गुणहानिके प्रमाणसे करने पर वे सब प्रथम गुणहानिप्रमाण होती हैं । पुनः प्रथम गुणहानिके द्रव्यको परमाणुवर्गणाके प्रमाणसे करने पर परमाणुवर्गणाका तीन बटे चार भाग-प्रमाण विस्तारवाला और एक गुणहानिप्रमाण आयामवाला क्षेत्र होता है । पुनः द्वितीय आदि गुणहानियोंके द्रव्यको भी परमाणुवर्गणाके प्रमाणसे करने पर यह भी पहलेके क्षेत्रके समान होता है । पुनः यहां एक बटे चार भागप्रमाण विष्कम्भवाला और एक गुणहानिप्रमाण आयाम-वाला क्षेत्र है उसे ग्रहण कर पहलेके क्षेत्रमें जोड देने पर गुणहानिप्रमाण परमाणुवर्गणायें उत्पन्न होती हैं । पुनः शेष क्षेत्रको बीचमें से फाडकर पार्श्वभागमें जोडने पर यहां भी गुणहानिके अर्धभागप्रमाण परमाणुवर्गणायें उत्पन्न होती हैं । इस प्रकार डेढ गुणहानिप्रमाण परमाणु-वर्गणायें होती हैं, इसलिए डेढ गुणहानिसे परमाणुवर्गणाके गुणित करने पर संदृष्टिकी अपेक्षा सब द्रव्यका प्रमाण इतना ३०७२ होता है । पुनः यहां डेढ गुणहानि १२ से सब द्रव्यके भाजित

---

* ता० का० प्रत्योः 'आयामखेत्तं घेत्तूण' इति पाठः ।

३०७२ । पुणो एत्थ दिवड्ढगुणहाणिणा १२ सव्वदव्वे भागे हिदे परमाणुवग्गणा आगच्छदि २५६ । पुणो तप्पाओग्गपरमाणुपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? सादिरेयदिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि । एवमुवरि जाणिदूण णेयव्वं । णवरि दिवड्ढगुणहाणिच्छेदणएहि उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जच्छेदणएसु भागे हिदेसु जं भागलद्धं तं विरलेदूण उक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जच्छेदणएसु समखंडं कादूण दिण्णेसु एक्केक्कस्स रूवस्स दिवड्ढगुणहाणिच्छेदणयपमाणं पावदि । पुणो ✡ एत्थ रूवूणविरलणमेत्तरूवधरिददिवड्ढगुणहाणिच्छेदणयमेत्तगुणहाणीओ जाव चडंति ताव असंखेज्जलोगमेत्तकालेण अवहिरिज्जदि । तदुवरि अणंतेण कालेण अवहिरिज्जदि । एवं णेयव्वं जाव असंखेज्जभागहीणवग्गणाणं चरिमवग्गणे त्ति ।

तदो संखेज्जभागहीणवग्गणाणं पढमवग्गणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? अणंतेण कालेण अवहिरिज्जदि । तं जहा– संखेज्जभागहीणवग्गणाणं पढमवग्गणाए सव्ववग्गणदव्वे ✡ भागे हिदे जं भागलद्धं तं सलागभूदं ठवेदूण पुणो तव्ववग्गणपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे सलागमेत्तेण कालेण अवहिरिज्जदि । एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति (✡) ।

करने पर परमाणुवर्गणा २५६ आती है । पुनः द्विप्रदेशी वर्गणाके प्रमाणके सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? साधिक डेढ गुणहानिस्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता है । इसी प्रकार ऊपर भी जानकर ले जाना चाहिए । इतनी विशेषता है कि डेढगुणहानिके अर्धच्छेदोंसे उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातके अर्धच्छेदोंके भाजित करनेपर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके उस विरलित राशि पर उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातके अर्धच्छेदोंको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर एक एक विरलन अङ्कके प्रति डेढ गुणहानिके अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः यहां पर एक कम विरलन प्रमाण अङ्कोंके प्रति प्राप्त डेढ गुणहानिके अर्धच्छेदोंप्रमाण गुणहानियोंके आगे जाने तक वह असंख्यात लोकप्रमाण कालके द्वारा अपहृत होता है । उसके आगे अनन्त कालके द्वारा अपहृत होता है । इस प्रकार असंख्यातभागहीन वर्गणाओंमें अन्तिम वर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये ।

उसके बाद संख्यातभागहीन वर्गणाओंकी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? अनन्त कालके द्वारा अपहृत होता है । यथा– संख्यातभागहीन वर्गणाओंकी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे सब वर्गणाओंके द्रव्यमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके पुनः उस वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्यके भाजित करने पर शलाकाप्रमाण कालके द्वारा अपहृत होता है । इस प्रकार जानकर महास्कन्धवर्गणाके प्राप्त होने तक कथन करना चाहिये ।

✡ अ० प्रतौ '–पमाण होदि । पुणो ' इति पाठः ।

✡ ता० प्रतौ ' पढमवग्गणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अ० ? सव्ववग्गणदव्वे ' इति पाठः ।

(✡) अ० का० प्रत्योः ' महाखंधवग्गणे त्ति ' इति पाठः ।

संपहि पदेसट्ठदमस्सिदूण अवहारकाले भण्णमाणे ताव सव्वंदव्वं जवमज्झपमाणेण कस्सामो। तं जहा- एगपक्खेवे दिवड्ढगुणहाणिगुणिदरूवाहियदिवड्ढगुणहाणिगुणिदे जवमज्झपमाणं होदि | १ | ८ | ३/२ | ८ | ३/२ | *। पुणो एदम्हि गुणहाणिअद्धेण गुणिदे एत्तियं होदि- | १ | ८ | ३/२ | ८ | ३/२ | ८/२ |। एत्थ अधियपक्खेवाणमवणयणं कस्सामो तं जहा- गुणहाणिअद्धगच्छदुगुणसंकलणासंकलणमेत्तपक्खेवा एत्थाहिया। कुदो ? जवमज्झादो हेट्ठा पक्खेवगुणगारस्स एगुत्तरवड्ढिदंसणादो अद्धाणगुणगारस्स एगुत्तरहाणिदंसणादो। ण च गच्छे रूवाहियगच्छेण गुणिदे दुगुणसंकलणं मोत्तूण अण्णस्स

अब प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अवहार कालका कथन करने पर सब द्रव्यको यवमध्यके प्रमाणसे करते हैं। यथा- एक प्रक्षेपको डेढ गुणहानिसे गुणित एक अधिक डेढ गुणहानिसे गुणित करनेपर यवमध्यका प्रमाण होता है- | १ | ८ | ३/२ | ८ | ३/२ | (१+८×१/२)×(८×३/२) = १३×१२ = १५६; द्विप्रक्षेप ८×२ = १६; १५६×१६ = २४९६; दो यवमध्य १२४८+१२४८ = २४९६। पुनः इसे गुणहानिके अर्धभागसे गुणित करनेपर इतना होता है- | १ | ८ | ३/२ | ८ | ३/२ | ८/२ |

(गुणहानि (८) का अर्धभाग (८/२) = ४ है। इस ४ से दो यवमध्य २४९६ को गुणा करनेसे ९९८४ आता है जो द्वितीयगुणहानिका कुल प्रदेशाग्र है; किन्तु इसमें यवमध्यसे पूर्वके बादके तीन तीन निषेकोंके प्रदेशाग्र जो प्रक्षेप यवमध्यकी अपेक्षा हीन हैं वे प्रक्षेप द्वितीय गुणहानिके सर्वप्रदेशाग्रसे अधिक हैं।

यहाँ अधिक प्रदेशोंका अपनयन करते हैं। यथा- गुणहानिके अर्धभागप्रमाण गच्छके दूने संकलनासंकलनप्रमाण प्रक्षेप यहाँ अधिक हैं; क्योंकि, यवमध्यसे पूर्व प्रक्षेपगुणकारकी एकोत्तर वृद्धि देखी जाती है और अध्वानगुणकारकी एकोत्तरहानि देखी जाती है और गच्छको एक अधिक गच्छसे गुणित करनेपर द्विगुणे संकलनको छोडकर अन्यका आगम सम्भव नहीं है, क्योंकि, उसका निषेध है।

(एक गुणहानि ८ उसका आधा ८/२ = ४ है। यहाँपर यह ४ गच्छ है। ४ का संकलन (१+२+३+४) = १० है। इसका दूना १०×२ = २० है। अथवा गच्छ ४ को एक अधिक गच्छ (४+१) = ५ से गुणा करनेपर २० आता है। पर पृ. १८५ की संदृष्टिके देखनेसे ज्ञात होगा कि यवमध्य १२४८ से दूसरा निषेक १२३२ दो प्रक्षेपहीन है, क्योंकि, वहाँपर द्रव्यप्रक्षेपका प्रमाण ८ है। तीसरे निषेकका प्रदेशाग्र १२०० है जो यवमध्यसे ६ प्रक्षेप (६+८) = ४८कम है। चौथे निषेकका प्रदेशाग्र ११५२ है जो यवमध्य १२४८ से १२ प्रक्षेप (१२×८) = ९६ कम है।

* अ०का प्रत्योः | ० | ८ | ३/२ | ८ | ३/२ | इति पाठः। ✿ म०प्रतिपाठोऽयम्। ता०प्रतौ | ०८ | ३/२ | ६ | ६ | अ०का० प्रत्योः | ०८ | ३/२ | ८ | ३/२ | इति पाठः।

आगमो अत्थि, विप्पडिसेहाभावो ।

एत्थ धण-रिणरासीयो आणिय रिणदो धणमवणिय सेसेण हाणी परूवेदव्वा । सा वि संकलणासंकलणसुत्तेण एत्तिया होदि $\left|\begin{array}{c|c|c} ०८ & \begin{matrix}८\\२\end{matrix} & \begin{matrix}८\\४\end{matrix}\end{array}\right|$ । एदेसु पक्खेवेसु जवमज्झपमाणेण कदेसु एत्तियाणि जवमज्झाणि $\left|\begin{matrix}८\\५४\end{matrix}\right|$ । एदेसु अद्धगुणहाणिमेत्तजवमज्झेसु अवणिदेसु एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} \begin{matrix}८\\२७\end{matrix} & १३ \end{array}\right|$ ।

संपहि पढमगुणहाणिदव्वाणयणं वुच्चदे । तं जहा- रूवाहियगुणहाणिमेत्तपक्खेवेसु गुणहाणीए वग्गेण गुणिदेसु थोरुच्चएण पढमगुणहाणीए दव्वं होदि |०१८८८| ✡ ।

- आचार्यरत्न श्री सुदेहिसागर जी महाराज

इस प्रकार २+६+१२ = २० प्रक्षेप आते हैं। ये २० प्रक्षेप ऊपर व नीचे दोनों स्थानोंमें हीन हैं, अतः २० द्विगुण प्रक्षेप हुए। इन २० द्विगुण प्रक्षेपों (२०×८×२ = ३२०) को ९९८४ में से कम करनेपर (९९८४ − ३२०) = ९६६४ द्वितीय गुणहानिके प्रदेशाग्रका प्रमाण होता है ।)

यहाँपर धनराशि और ऋणराशिको लाकर तथा ऋणमेंसे धनको कम करके शेषका अवलम्बन लेकर हानिका कथन करना चाहिए। वह भी संकलनासंकलनसूत्रके अनुसार इतनी होती है- $\left|\begin{array}{c|c|c} ०८ & \begin{matrix}८\\२\end{matrix} & \begin{matrix}८\\४\end{matrix}\end{array}\right|$ । (यह २० की सहनानी है) । इन प्रक्षेपोंको यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर इतने यवमध्य होते हैं- $\left|\begin{matrix}८\\५४\end{matrix}\right|$ (यह $\frac{२०}{१५६}$ की सहनानी है ।) उक्त प्रमाणको अर्धगुणहानिप्रमाण यवमध्योंमेंसे कम करनेपर इतना होता है $\left|\begin{array}{c|c} \begin{matrix}८\\२७\end{matrix} & १३ \end{array}\right|$ । (द्वितीय गुणहानिके प्रदेशाग्र १५६×४ = ६२४; ६२४ − २० = ६०४ = १३×४६+, द्विगुणप्रक्षेप) ।

अब प्रथम गुणहानिके द्रव्यको लानेकी विधि कहते हैं। यथा- एक अधिक गुणहानिमात्र प्रक्षेपों को गुणहानिके वर्गसे गुणित करनेपर स्तोक मानसे प्रथम गुणहानिका द्रव्य होता है- $\left|\begin{array}{c|c|c|c} १ & ८ & ८ & ८ \end{array}\right|$ (प्रथम गुणहानिका प्रदेशाग्र = गुणहानि ८ से एक अधिक (८+१) = ९ को गुणहानिका वर्ग (८×८) = ६४ से गुणा करनेपर ५७६ आता है । प्रक्षेपका प्रमाण १६ है । ५७६×१६ = ९२१६ । अथवा १६×९×८×८ = ११५२×८ अर्थात् प्रथम गुणहानिके अन्तिम आठ प्रदेश (११५२)×८ । किन्तु अन्य ७ निषेकोंके प्रदेशाग्र अन्तिम प्रदेशाग्रसे प्रक्षेपहीन हैं, अतः प्रथम गुणहानिके प्रदेशाग्रसे ११५२×८ में कुछ प्रक्षेप बढे हुए हैं ।)

✡ म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रतौ ०८८८, अ०का० प्रत्योः $\left|\begin{array}{c|c|c} ०८८८ & ०२ & ८८८ \end{array}\right|$ इति पाठः ।

संपहि एत्थ वड्ढिदपक्खेवपमाणमेत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c|c} ०२ & ८८८ \\ & ३ \end{array}\right|$ ✡(ऊणं) गुणहाणिगच्छदुगुणसंकलणासंकलणपमाणत्तादो। एदम्मि किंचूणत्तमजोइय पुव्विल्लदव्वादो अवणिदे सेसमेत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ०९८८२ \\ ३ \end{array}\right|$। पुणो एदम्मि जवमज्झपमाणेण कदे एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & १६ \\ २७ & \end{array}\right|$। पुणो एदम्मि पढमगुणहाणिदव्वे अद्ध✤गुणहाणिदव्वम्मि मेलाविदे एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & २९ \\ २७ & \end{array}\right|$। जवमज्झादो उवरि अद्धगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ०८ & १३ \\ & २७ \end{array}\right|$। एदं हेट्ठिमदव्वम्मि पक्खित्ते एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ४२ \\ & २७ \end{array}\right|$।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अब यहाँपर बढे हुए प्रक्षेपोंका प्रमाण इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c|c|c} ०२ & ८ & ८ & ८ \\ & & ३ & \end{array}\right|$ (पत्र १८६ के विशेषार्थमें देखो- प्रथम गुणहानिके द्विचरम निषेकका प्रदेशाग्र ११२० जो चरम निषेकके प्रदेशाग्र ११५२ से दो प्रक्षेप (१६×२ = ३२) हीन है। त्रिचरम निषेकका प्रदेशाग्र १०५६ है जो चरम निषेकके प्रदेशाग्रसे ६ प्रक्षेप (१६×६ = ९६) हीन है। इसी प्रकार अन्य पाँच निषेकोंके प्रदेशाग्र क्रमसे १२, २०, ३०, ४२ व ५६ प्रक्षेपहीन हैं। इनका जोड २+६+१२+२०+३०+४२+५६ = १६८ है। अथवा एक कम गुणहानिप्रमाणका संकलनासंकलन = १+(१+२ = ३)+(१+२+३ = ६)+(१+२+३+४ = १०)+(१+२+३+४+५ = १५)+(१+२+३+४+५+६ = २१)+(१+२+३+४+५+६+७ = २८) = ८४ होता है। इसका दूना ८४×२ = १६८ होता है। इस प्रकार १६८ बढे हुए प्रक्षेप हैं। पूर्वोक्त ५७६ प्रक्षेपोंमें १६८ प्रक्षेप घटानेसे ४०८ प्रक्षेप (४०८×१६ = ६५२८) प्रथम गुणहानिके प्रदेशोंका प्रमाण होता है।), क्योंकि, वह (एक कम) गुणहानिप्रमाण गच्छके दूने संकलनासंकलन प्रमाण है। इसमें कुल कम की गणना न करके पहलेके द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c|c|c} ०९ & ८ & ८ & २ \\ & & & ३ \end{array}\right|$। पुन इसे यवमध्यके प्रमाणसे करने पर इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & १६ \\ २७ & \end{array}\right|$। पुनः इस प्रथम गुणहानिके द्रव्यमें अर्धगुणहानिका द्रव्य मिलाने पर इतना होता है $\left|\begin{array}{c|c} ८ & २९ \\ २७ & \end{array}\right|$। यवमध्यसे ऊपर अर्धगुणहानिका द्रव्य इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c} ०८ & १३ \\ & २७ \end{array}\right|$। इसे अधस्तन द्रव्यमें मिला देनेपर इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ४२ \\ & २७ \end{array}\right|$

✡ मप्रतिपाठोयम्। ता०प्रतौ $\left|\begin{array}{c|c} ०८७८ \\ & ३ \end{array}\right|$ अ०प्रतौ $\left|\begin{array}{c|c} ०९ & ८८२ \\ & ३ \end{array}\right|$ का०प्रतौ $\left|\begin{array}{c|c} ५ & ८८८ \\ ० & ३ \end{array}\right|$ इति पाठः। ✤ म० प्रतिपाठोयम्। प्रतिषु 'पढमगुणहाणिअद्ध-' इति पाठः।

संपहि तदियगुणहाणिदव्वाणयणं कस्सामो। तं जहा- बेगुणहाणिमेत्ततदिय गुणहाणिपक्खेवेसु रूवाहियदोगुणहाणीहि गुणिदगुणहाणीए गुणिदेसु थोरुच्चएण तदियगुणहाणिदव्वं होदि $\left|\begin{array}{c|c|c|c|c} ०८ & २ & ८ & २ & ८ \\ २ & & & & \end{array}\right|$। एत्थ ऊणपक्खेवपमाणमेत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c|c} ०८८८ & & \\ २ & ३ & \end{array}\right|$। एदेसु पुव्वदव्वादो अवणिदेसु एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c|c} ०८८८ & & ११ \\ २ & ३ & \end{array}\right|$। एवं हि जव-मज्झपमाणेण कदे एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & २२ \\ २७ & \end{array}\right|$।

संपहि चउत्थगुणहाणिदव्वाणयणं वुच्चदे। तं जहा- जवमज्झपक्खेवचउत्थ-भागे छग्गुणगुणहाणिघणेण थोरुच्चएण चउत्थगुणहाणिसव्वदव्वं होदि $\left|\begin{array}{c|c|c} ०८८८ & & ६ \\ ४ & & \end{array}\right|$। एगगुणहाणिआदिउत्तरगुणहाणिगच्छसंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा च एगादिएगुत्तरगुण-हाणिगच्छसंकलणासंकलणदुगुणमेत्तगोवुच्छविसेसा च एत्थ फिट्टंति। तासिं पमाणमेदं

अब तृतीय गुणहानिके द्रव्यके लानेकी विधि है। यथा- दो गुणहानिमात्र तृतीय गुणहानिके प्रक्षेपोंको एक अधिक दो गुणहानियोंसे गुणित गुणहानिसे गुणित करने पर मोटे तौरपर तृतीय गुणहानिका द्रव्य होता है- $\left|\begin{array}{c|c|c|c|c} ०८ & २ & ८ & २ & ८ \\ २ & & & & \end{array}\right|$ [दोगुणहानि (१६) × प्रक्षेप (४) × एक अधिक दो गुणहानि (१६+१ = १७) × गुणहानि (८) = ८७०४। अर्थात् तृतीय गुणहानि प्रथम निषेक प्रदेशाग्र (१०८८) गुणित गुणहानि ८ (१०८८×८ = ८७०४)।] यहां पर न्यून प्रक्षेपोंका प्रमाण इतना है- $\left|\begin{array}{c|c|c} ०८८८ & & \\ २ & ३ & \end{array}\right|$। (पूर्वोक्त विधिके अनुसार न्यून प्रक्षेपोंका प्रमाण १६८ है। यहां पर प्रक्षेप (४) है)। इन्हें पहलेके द्रव्यमेंसे घटा देने पर इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c|c} ०८८८ & & ११ \\ २ & ३ & \end{array}\right|$। इसे यवमध्यके प्रमाणसे करने पर इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & २२ \\ २७ & \end{array}\right|$।

अब चतुर्थ गुणहानिके द्रव्यके लानेकी विधि कहते हैं। यथा- यवमध्यके प्रक्षेपके चतुर्थ भागको छहगुणी गुणहानिके घनसे गुणित करने पर मोटे तौरसे चौथी गुणहानिका सब द्रव्य होता है- $\left|\begin{array}{c|c|c} ०८८८ & & ६ \\ ८ & & \end{array}\right|$। (यवमध्यका प्रक्षेप (८) का चतुर्थ भाग ($\frac{८}{४}$ = २) को ६ गुणहानिका घन (६×८×८×८) से गुणा करनेसे (२×६×८×८×८) = ६१४४ मोटे रूपसे चतुर्थ गुणहानिका प्रदेशाग्र है। अंक संदृष्टिमें इसका प्रमाण ५१६६ है। ६१४४ - ५६१६ = ५२८ अर्थात् २६४ प्रक्षेप (२) को लानेका विधान कहते हैं) यहां एक गुणहानि आदि उत्तरोत्तर गुणहानि गच्छ संकलनमात्र गोपुच्छविशेष और एकादि एकोत्तर

$\left|\begin{array}{c|c|c|c} ०८ & ८८ & ०८ & ८८ \\ ४ & २ & ४ & ३ \end{array}\right|$ । एदेसु पक्खेवेसु पुव्वरासिम्मि पक्खित्तेसु सेसे जवमज्झपमा-

णेण कदे एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ३१ \\ & ३५४ \end{array}\right|$ । उवरिमगुणहाणीसु एत्थतणसंकलणरासी रूवा-

दिरूवुत्तरगुणगारेण गुणिज्जमाणा गच्छदि । बिदिया पुण अवट्ठिदा । सव्वत्थ एदेण अत्थपदेण पंचमगुणहाणिदव्वे अवणिदे एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ४० \\ & १०८ \end{array}\right|$ । छट्ठगुणहाणि-

दव्वमेत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ४९ \\ & २१६ \end{array}\right|$ । सत्तमगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ५८ \\ & ४३२ \end{array}\right|$ * ।

अट्ठमगुणहाणिदव्वमेत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ६७ \\ & ८६४ \end{array}\right|$ । एवं गुणहाणिं पडि गुणहाणिं पडि

अंसा णउत्तरकमेण छेदादिदुगुणकमेण गुणहाणीए गुणगारा होदूण गच्छंति जाव धुवक्खंधम्मि असंखेज्जभागहाणीए चरिमगुणहाणि त्ति । तदो एदासिं मेलावणविहाणं भण्णमाणे यवमज्झादुवरिं पडिदि त्ति विकल्प्य दो सुत्तगाहाओ । तं जहा-

इच्छं विरलिय (दु) गुणिय अण्णोण्णगुणं पुणो दुपडिरासिं ।
काऊण एक्करासिं उत्तरजुदआदिणा गुणिय ॥ १५ ॥

हानिगच्छ संकलनासंकलनद्विगुणमात्र गोपुच्छविशेष फिट जाते हैं । उनका प्रमाण यह है— $\left|\begin{array}{c|c|c|c} ०८ & ८८ & ०८ & ८८ \\ ४ & २ & ४ & ३ \end{array}\right|$ । इन प्रक्षेपोंको पूर्व राशिमें से अलग करके शेषको यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ३१ \\ & ५४ \end{array}\right|$ । उपरिम गुणहानियोंमें यहांकी संकलनराशि एकादि एकोत्तर गुणकारसे गुणित होकर जाती है । परन्तु दूसरी राशि अवस्थित रहती है । सर्वत्र इस अर्थपदके अनुसार पञ्चम गुणहानिके द्रव्यके निकाल देने पर इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ४० \\ & १०८ \end{array}\right|$ । छटवीं गुण-

हानिका द्रव्य इतना है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ४९ \\ & २१६ \end{array}\right|$ । सातवीं गुणहानिका द्रव्य इतना है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ५८ \\ & ४३२ \end{array}\right|$ । आठवीं

गुणहानिका द्रव्य इतना है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ६७ \\ & ८६४ \end{array}\right|$ । इस प्रकार ध्रुवस्कन्धमें असंख्यातभागहानिकी अन्तिम गुणहानिके प्राप्त होने तक गुणहानि गुणहानिके प्रति अंश नवोत्तरक्रमसे और छेदादिद्विगुणक्रमसे गुणहानिके गुणकार होकर जाते हैं । अनन्तर इनके मिलानेकी विधिका कथन करनेपर यव-मध्यके ऊपर प्राप्त होता है ऐसा विकल्प करके दो सूत्रगाथायें देते हैं । यथा-

इच्छित गच्छका विरलन कर और उस विरलनराशिके प्रत्येक एकको दूना कर परस्पर गुणा करनेसे जो उत्पन्न हो उसकी दो प्रतिराशियां स्थापित कर उनमेंसे एक राशिको उत्तरसहित

* अ० प्रतौ $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ५५ \\ & ४३२ \end{array}\right|$ इति पाठः ।

उत्तरगुणिदं इच्छं उत्तरआदीए संजुदं अवणे ।
सेस हरेज्ज पडिणा आदिमछेदद्धगुणिदेण ।। १६ ।।

एदासि गाहाणमत्थो उच्चदे-इच्छिदगच्छं विरलेदूण दुगं करिय अण्णोण्ण-गुणकरासिं पुव्वपडिरासिं करिय एत्थ उत्तरं णव आदी बावीस, एदे मेलिदे एक्कत्तीस भवंति । एदेहि एक्करासिं गुणिय उत्तरगुणिदं इच्छं- त्ति भणिदे इच्छं णवहि गुणिऊण उत्तरआदीय संजुदं अवणे त्ति भणिदे उत्तरं आदिं च तत्थ मेलाविय पुव्वरासिम्हि अवणेऊण सेसं हरेज्ज पडिणा आदिमछेदद्धगुणिदेणे त्ति भणिदे अवसेसं दुविद-पडिरासिं सत्तावीसण्हं अद्धेण गुणिय भागे हिदे इच्छिदसंकलणा आगच्छदि ।

तदो एदेण अत्थपदेण दुरूवूणगुणहाणिसलागाओ विरलिय दुगं करिय अण्णोण्ण-ब्भत्थे कदे एत्तियं होदि $\left|\begin{smallmatrix}९\\४\end{smallmatrix}\right|$ । एदं (दु) पडिरासिं दुविय एक्करासिं इगितीसरू-वेहि गुणिदे एत्तियं होदि $\left|\begin{smallmatrix}९\\४\end{smallmatrix}\right|\begin{smallmatrix}३१\end{smallmatrix}$ ✡ । पुणो एदम्हि दुरूवूणगुणहाणिसलागाओ णव-गुणाओ आदिउत्तरइगितीसरूवब्भहियाओ अवणिय पुणो पडिदुविदरासिं सत्तावीसण्हं

आदि राशिसे गुणित कर इसमेंसे उत्तर गुणित और उत्तर आदि संयुक्त इच्छाराशिको घटा देनेपर जो शेष रहे उसमें आदिम छेदके अर्धभागसे गुणित प्रतिराशिका भाग देनेपर इच्छित संकलनका प्रमाण आता है ।। १५-१६ ।।

अब इन गाथाओंका अर्थ कहते हैं- इच्छित गच्छका विरलन कर और उसे दूना कर परस्पर गुणा करने से जो राशि आवे उसकी दो प्रतिराशियाँ स्थापित करे । यहाँ उत्तर नौ और आदि बाईस को मिलानेपर इकतीस होते हैं. इनसे एक राशिको गुणित करे । पुनः 'उत्तरगुणिदं इच्छं' ऐसा कहनेपर इच्छाराशिको नौसे गुणित करके और इसमें 'उत्तर आदीय संजुदं अवणे' ऐसा कहनेपर उत्तर और आदिको मिलाकर पूर्वराशिमेंसे घटा कर 'सेसं हेरज्ज पडिणा आदिमछेदद्धगुणिदेण' ऐसा कहनेपर जो शेष रहे उसमें पहले स्थापित की गई प्रति-राशिको सत्ताईसके ओघसे गुणित कर भाग देनेपर इच्छितसंकलना आती है ।

अनन्तर इस अर्थपदके अनुसार दो कम गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और दूना कर परस्पर गुणा करनेपर इतना होता है $\left|\begin{smallmatrix}९\\४\end{smallmatrix}\right|$ । इसकी दो प्रति राशियाँ स्थापित कर एक राशिके इकतीससे गुणित करनेपर इतना होता है- $\left|\begin{smallmatrix}९\\४\end{smallmatrix}\right|\begin{smallmatrix}३१\\१\end{smallmatrix}$ । पुनः इसमें से नौगुणित तथा आदि-उत्तर इकतीस सहित दो कम गुणहानिशलाकाओंको घटा कर

✡ ता०प्रतौ $\left|\begin{smallmatrix}८\\४\end{smallmatrix}\right|\begin{smallmatrix}५८\\३२\end{smallmatrix}$ इति पाठः ।

अद्धेण गुणिय $\left|\begin{array}{c|c} ६४ & २७ \\ ४ & २ \end{array}\right|$ पुव्वरासिम्हि भागे हिदे किंचूणत्तमजोएदूण गुणगारभाग-हारमवणिदे एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ६२ \\ २७ \end{array}\right|$। पुणो एदेण गुणहाणिं गुणिदे एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ६२ \\ & २७ \end{array}\right|$। पुणो हेट्ठिमदोगुणहाणिदव्वे पक्खित्ते एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & १०४ \\ & २७ \end{array}\right|$। भागे हिदे एत्तियं होदि $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ३ \\ & २३ \\ & २७ \end{array}\right|$। चत्तारिसत्तावीसभागहीणचत्तारिगुणहाणीयो किंचूणत्तमजोएदूण जवमज्झ-पमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे चत्तारिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। परमाणुपोग्गलदव्वपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि? गुणहाणि-वग्गेण सचउब्भागदोरूवगुणिदेण। कुदो? परमाणुपदेसट्ठदाए सव्वदव्वे भागे हिदे सचउब्भागदोरूवगुणिदगुणहाणिवग्गुवलंभादो। दुपदेसियवग्गणपदेसट्ठदाए पमाणेण सव्वदव्वं केवचिरं कालेण अवहिरिज्जदि? पुव्वभागहारादो अद्धं[ओ] सादिरेयमेत्तेणकालेण अवहिरिज्जदि। तं जहा- परमाणुवग्गणभागहारस्सद्धं विरलिय सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दुगुणपरमाणुवग्गणपमाणं पावदि। पुणो हेट्ठा दोगुणहाणीयो

पुनः पहले स्थापित की गई प्रतिराशिको सत्ताईसके अर्धभागसे गुणित कर $\left|\begin{array}{c|c} ६४ & २७ \\ २ \end{array}\right|$ और इनका पूर्व राशिमें भाग देने पर कुछ कमकी विवक्षा न कर भागहार और गुणकारका परस्पर अपनयन करने पर इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c} ६२ \\ ७२ \end{array}\right|$। पुनः इससे गुणहानिके गुणित करनेपर इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ६२ \\ & २७ \end{array}\right|$ पुनः अधस्तन दो गुणहानियों का द्रव्य मिलाने पर इतना होता है- $\left|\begin{array}{c|c} ८ & १०४ \\ १ & २७ \end{array}\right|$। भाग देने पर इतना होता है। $\left|\begin{array}{c|c} ८ & ३ \\ & २३ \\ & २७ \end{array}\right|$ चार बटे सत्ताईस भागहीन चार गुणहानियोंमें कुछ कमकी विवक्षा न कर यवमध्यके प्रमाणसे सब द्रव्यके अपहृत होनेपर चार गुणहानिस्थानांतर कालके द्वारा अपहृत होता है। परमाणुपुद्गलद्रव्यप्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है? चतुर्थ-भागयुक्त दोसे गुणित गुणहानिके वर्गरूप कालके द्वारा अपहृत होता है, क्योंकि, परमाणु प्रदेशार्थतासे सब द्रव्यके भाजित करने पर चतुर्थभागयुक्त दोसे गुणित गुणहानिका वर्ग उपलब्ध होता है। (३३४४८÷२५६ = १३० अर्थात ८×८×२+ $\frac{२}{४}$) द्विप्रदेशीवर्गणा प्रदेशार्थताके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है? पूर्वभागहारसे साधिक अर्धभागमात्र कालके द्वारा अपहृत होता है। यथा- परमाणुवर्गणाके अर्धभागके अर्धभागका विरलनकर सब द्रव्यको समान खण्डकर देनेपर प्रत्येक एक विरलनके प्रति द्विगुणपरमाणुवर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः

[ओ] ता० प्रतौ ' पुव्वभागहार दो अद्ध-' इति पाठः ।

विरलिय एगरूवधरिदमेत्तगोवुच्छविसेसेसु* समखंडं करिय दिण्णेसु दोदोगोवुच्छविसेसा रूवं पडि पावेंति, चडिदद्धाणसंकलणदुगुणमेत्तगोवुच्छविसेसुवलंभादो । लद्धं उवरिमरूवधरिदेसु अवणेदूण तप्पमाणेण कीरमाणे पक्खेवरूवाणं पमाणाणुगमं कस्सामो। तं जहा- हेट्ठिमविरलणरूवूणमेत्तदुगुणगोवुच्छविसेसेसु जदि एगरूवपक्खेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणाए एगरूवस्स लब्भामो त्ति पमाणेण फलगुणिदाए ओवट्टिदाए णवण्हं गुणहाणीणं सोलसमो भागो आगच्छदि । तम्मि पुविल्लविरलणाए पक्खित्ते दुपदेसियदव्वभागहारो होदि । तिपदेसियवग्गणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? परमाणुवग्गणभागहारस्स तिभागेण सादिरेगेण । तं जहा—परमाणुवग्गणभागहारस्स तिभागं विरलिय सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिगुणपरमाणुवग्गणदव्वपमाणं पावदि । पुणो चडिदद्धाणदुगुणसंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा वड्ढिदा त्ति तदवणयणट्ठं किरियं कस्सामो । तं जहा- दोगुणहाणीणमद्धं विरलिय उवरिमेगरूवधरिदे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चडिदद्धाणदुगुणसंकलणमेत्तपक्खेवा पावेंति । तेसु उवरिमरूवधरिदेसु रूवं पडि अवणिदेसु सेसमिच्छिदपमाणं होदि।

नीचे दो गुणहानियोंका विरलनकर एक विरलनके प्रति प्राप्त गोपुच्छ विशेषोंके समान खण्ड कर देयरूपसे देनेपर प्रत्येक एक विरलनके प्रति दो दो गोपुच्छ विशेष प्राप्त होते हैं, क्योंकि, यहांपर जितने स्थान आगे गये हैं उतने संकलनके द्विगुणे गोपुच्छ विशेष उपलब्ध होते हैं । जो लब्ध आवे उसे उपरिम विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे कमकर उसके प्रमाणसे करने पर जो प्रक्षेप अंक आते हैं उनके प्रमाणका अनुगम करते हैं । यथा— अधस्तन विरलनमेंसे एक कम द्विगुण गोपुच्छ विशेषोंमें यदि एक अंकका प्रक्षेप लब्ध होता है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिको प्रमाणराशिसे भाजित करने पर नौ गुणहानियोंका सोलहवां भाग आता है । उसे पूर्व विरलनमें मिला देने पर द्विप्रदेशी द्रव्यका भागहार होता है (३३४४८ : ४८० = ६९½ = ९+ $\frac{९\times८}{१६}$ = ९+½)

त्रिप्रदेशी वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? परमाणु वर्गणाके भागहारके साधिक त्रिभागप्रमाण कालके द्वारा अपहृत होता है । यथा-परमाणुवर्गणाके भागहारके तीसरे भागका विरलन करके उसपर सब द्रव्यके समान भाग करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति तिगुणे परमाणुवर्गणाद्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः जितने स्थान आगे गये उतने द्विगुणसंकलनमात्र गोपुच्छविशेष बढे हैं, इसलिए उनका अपनयन किया करते हैं । यथा—दो गुणहानियोंके अर्धभागका विरलनकर उपरिम एक अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक एकके प्रति जितने स्थान आगे गये हैं उतने द्विगुणसंकलनमात्र प्रक्षेप प्राप्त होते हैं । उन्हें उपरिम विरलनके प्रत्येक अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है । एक कम अधस्तन विरलन जाकर

---

* ता० प्रतौ ' गोवुच्छविसेसेसु ' अतोऽग्रे ' जदि ' पर्यन्तः पाठस्त्रुटितः ।

हेट्ठिमविरलणं रूवूणं गंतूण जदि एगपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए तिण्णं गुणहाणीणं चउब्भागो लब्भदि। तम्हि उवरिमविरलणाए पक्खित्ते इच्छिददव्वभागहारो होदि।

चउप्पदेसियदव्वपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि ? परमाणुवग्गणभागहारस्स चउब्भागेण सादिरेगेण। तं जहा- परमाणुवग्गणभागहारस्स चउब्भागं विरलेदूण सव्वदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि परमाणुवग्गणदव्वं चउग्गुणं पावदि। पुणो चडिदट्ठाणदुगुणसंकलणमेत्तपक्खेवाणं अवणयणं कस्सामो। तं जहा- दोगुणहाणितिभागं विरलिय उवरिमेगरूवधरिदे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बारह बारह पक्खेवा पावेंति। तेसु उवरिमरूवधरिदेसु अवणिदेसु सेसमिच्छिदपमाणं होदि। हेट्ठिमविरलणं रूवूणं गंतूण जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए सत्तावीसगुणहाणीणं बत्तीसविभागो आगच्छदि। तम्मि उवरिमविरलणाए पक्खित्ते इच्छिददव्वभागहारो होदि। एवं णेयव्वं जाव जवमज्झं त्ति।

जवमज्झस्सुवरि अणंतरपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि

यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फल राशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर तीन गुणहानियोंका चतुर्थ भाग आता है। उसे उपरिम विरलनमें मिलानेपर इच्छित द्रव्यका भागहार होता है (३३४४८ ÷ ६७२ = ४९½ = $\frac{१३०}{३} + \frac{३\times८}{४}$ = ४३⅓ + ६ = ४९½)।

चतुःप्रदेशी द्रव्यके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है ? परमाणुवर्गणा भागहारके साधिक चतुर्थ भाग द्वारा अपहृत होता है। यथा- परमाणुवर्गणा भागहारके चतुर्थ भागका विरलन करके उस विरलित राशिपर सब द्रव्यके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अङ्कके प्रति परमाणुवर्गणाका द्रव्य चौगुना प्राप्त होता है। पुनः जितने स्थान आगे गये हैं। उनके दूनेके संकलनमात्र प्रक्षेपोंका अपनयन करते हैं। यथा- दो गुणहानियोंके त्रिभागका विरलन करके ऊपर एक विरलन अङ्कके प्रति प्राप्त द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अंकके प्रति बारह बारह प्रक्षेप प्राप्त होते हैं। उन्हें उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे घटा देनेपर शेष इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है। एक कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर सत्ताईस गुणहानियोंका बत्तीसवां भाग आता है। उसे उपरिम विरलनमें मिलानेपर इच्छितद्रव्यका भागहार होता है। इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए (३३४४८ ÷ ८३२ = ४० = $\frac{१३०}{४} + \frac{२७\times८}{३२}$ = ३२½ + ६¾ = ३९¼)।

यवमध्यके ऊपर अनन्तर प्रमाणसे सब द्रव्य कितने काल द्वारा अपहृत होता है ? साधिक

जवमज्झभागहारेण सादिरेयेण,चडिदद्धाणदुगुणसंकलणमेत्तपक्खेवाणं तत्थाभावादो *। तं जहा–जवमज्झभागहारं विरलिय सव्वदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जवमज्झपमाणं पावदि । पुणो हेट्ठा गुणहाणिवग्गं सचउब्भागं दोरूवेहि गुणिदं विरलिय जवमज्झं समखंडं करिय दिण्णे एगेगो पक्खेवो पावदि । पुणो चडिदद्धाण-संकलणाए दुगुणाए ओवट्टिय विरलिय पुव्वं व जवमज्झे दिण्णे रूवं पडि अहिय-पक्खेवा होंति । तेसु उवरिमविरलणरूवधरिदेसु इच्छिदपमाणं होदि । हेट्ठिम-विरलणं रूवूणं गंतूण जदि एगा पक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणाए किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आग-च्छदि । एदम्मि उवरिमविरलणाए पक्खित्ते इच्छिददव्वभागहारो होदि । एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव धुवक्खंधदव्वं त्ति । संपहि सांतरणिरंतरवग्गणाणमवहारो ण सक्कदे णेदुं । कुदो ? तव्वग्गणाणं णिरंतरमवट्ठाणाभावादो । एवमवहारो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

जवमज्झपरूवणा दुविहा–दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए चेदि । तत्थ दव्वट्ठदाए पत्तेयसरीरवग्गणदाए जवमज्झपमाणाए कीरमाणाए परूवणादिछअणुयोगद्दाराणि होंति । परूवणाए अभवसिद्धियपाओग्गवग्गणासु जहण्णियाए वग्गणाए अत्थि वग्गणाओ । एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सपत्तेगसरीरवग्गणे त्ति । पमाणं अभवसिद्धिय-

---

यवमध्य भागहारप्रमाण काल द्वारा अपहृत होता है, क्योंकि, जितने स्थान आगे गये हैं उनके दूनेके संकलनमात्र प्रक्षेपोंका वहां पर अभाव है । यथा–यवमध्यके भागहारका विरलन करके उसपर सब द्रव्यके समान खण्ड करके देयरूपसे देनेपर प्रत्येक विरलन अङ्कके प्रति यवमध्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः नीचे (पूर्व) दोसे गुणित चतुर्थ भागसहित गुणहानिके वर्गका विरलन करके उस पर यवमध्यके समान खण्ड करके देने पर एक एक प्रक्षेप प्राप्त होता है । पुनः जितने स्थान आगे गये हैं उनके संकलनके दूनेसे भाजित कर जो लब्ध आवे उस पर पहलेके समान यवमध्यके देने पर प्रत्येक एकके प्रति अधिक प्रक्षेप प्राप्त होते हैं । उन्हे उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यमेंसे घटा देने पर इच्छित द्रव्यका प्रमाण होता है । एक कम अधस्तन विरलन मात्र जाकर यदि एक प्रक्षेप शलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर एक अङ्कका असंख्यातवां भाग आता है । इसे उपरिम विरलनमें मिला देनेपर इच्छित द्रव्यका भागहार होता है । इस प्रकार ध्रुवस्कन्ध द्रव्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । अब सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंका भागहार लाना शक्य नहीं है, क्योंकि, उन वर्गणाओंका अन्तरालके बिना अवस्थान नहीं पाया जाता । इस प्रकार अवहार अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

यवमध्यप्ररूपणा दो प्रकार की है–द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थता । उनमेंसे द्रव्यार्थताकी अपेक्षा प्रत्येकशरीरवर्गणाको यवमध्यके प्रमाणसे करने पर प्ररूपणा आदि छह अनुयोगद्वार होते हैं– प्ररूपणा की अपेक्षा अभव्योंके योग्य वर्गणाओंमेंसे जघन्य वर्गणाकी वर्गणायें हैं ।

* अ०का० प्रत्योः 'लद्धाभावादो' इति पाठः ।

पाओग्गसव्वजहण्णवग्गणट्ठाणे सरिसधणियवग्गणाओ आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्ताओ। एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणे त्ति ।

सेडिपरूवणा दुविहा–अणंतरोवणिधा (१) परंपरोवणिधा चेदि। अणंतरोवणिधाए अभवसिद्धियपाओग्गपत्तेयसरीरवग्गणाणं सव्वजहण्णियाए वग्गणाए आवलियाए असंखे०भागमेत्ताओ सरिसधणियवग्गणाओ होंति । एसमणंताओ सरिसधणिय-वग्गणाओ तत्तियाओ चेव होदूण उवरि गच्छंति । एवं गंतूण तदो एया पत्तेयसरीरवग्गणा* अहिया होदि। तं जहा– अवट्ठिदमावलियाए असंखे०भागमेत्त-भागहारं विरलेदूण सव्वजहण्णवग्गणासु आवलियाए असंखे०भागमेत्तासु समखंडं कादूण दिण्णासु एक्केक्कस्स एगेगपत्तेयसरीरवग्गणपमाणं पावदि। पुणो एत्थ एगरूव-धरिदवग्गणं घेत्तूण पुव्वुत्तावलियाए असंखे०भागमेत्तपत्तेयसरीरवग्गणाणमुवरि पक्खित्ते तदणंतर□उवरिमविसेसाहियवग्गणपमाणं होदि। पुणो पुणो अणेण पमाणेण अणंताओ वग्गणाओ उवरि गंतूण तदो एया वग्गणा अहिया होदि त्ति अधट्ठिद-विरलणाए बिदियरूवधरिदं घेत्तूण हेट्ठिमवग्गणाए पक्खित्ते उवरिमवग्गणा होदि। एवमणंताओ वग्गणाओ तत्तियाओ उवरि गंतूण पुणो एया वग्गणा अहिया होदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव पढमदुगुणवड्ढी उप्पण्णे त्ति। तदो अपुणरुत्तट्ठाणविरलणा-

---

इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । प्रमाण–अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणास्थानमें सदृश धनवाली वर्गणायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिए ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है–अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा अभव्योंके योग्य प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमेंसे सबसे जघन्य वर्गणामें सदृश धनवाली वर्गणायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इस प्रकार अनन्त सदृश धनवाली वर्गणायें उतनी ही होकर आगे जाती हैं । इस प्रकार जाकर अनन्तर एक प्रत्येकशरीरवर्गणा अधिक होती है । यथा–आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अवस्थित भागहारका विरलन कर उसपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सबसे जघन्य वर्गणाओंको समान खण्ड करके देनेपर एक एक विरलनके प्रति एक एक प्रत्येकशरीरवर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त वर्गणाको ग्रहण कर उसे पूर्वोक्त आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रत्येक शरीर वर्गणाओंके ऊपर प्रक्षिप्त करनेपर तदनन्तर उपरिम विशेष अधिक वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः पुनः इस प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें ऊपर जाकर अनन्तर एक वर्गणा अधिक होती है, इसलिये अवस्थित विरलनके दूसरे विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहण करके उसे अधस्तन वर्गणामें मिलानेपर उपरिम वर्गणा होती है । इस प्रकार अनन्त वर्गणायें उतनीही ऊपर जाकर पुनः एक वर्गणा अधिक होती है । इस प्रकार प्रथम द्विगुणवृद्धिके उत्पन्न होने तक जान

---

(१) ता०प्रतौ 'सेडिपरूवणा तहा (दुविहा) अणंतरोवणिधा' अ०का० प्रत्योः 'सेडिपरूवणा तहा अणंतरोवणिधा' इति पाठः। * ता०प्रतौ '-वग्गणा (ए)' अ०का०प्रत्योः '-वग्गणाए' इति पाठः। □ ता०प्रतौ '-भागमेत्तेसु पत्तेयसरीरवग्गणाणमुवरि पक्खित्ते (सु-) तदणंतर-' इति पाठः।

सव्वरूवधरिदेसु परिवाडीए पविट्ठेसु उप्पज्जदि। पुणो पढमदुगुणवड्ढिवग्गणपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ उवरिं गंतूण तदो एगवारेण बेवग्गणाओ अहियाओ होंति । तं जहा–पुव्वुत्तअवट्ठिदविरलणाए पढमदुगुणवड्ढिं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स बे बे पत्तेयसरीरवग्गणाओ पावेंति। पुणो एत्थ एगरूवधरिदे पढमदुगुणवड्ढीए पक्खित्ते विसेसाहियउवरिमवग्गणपमाणं होदि। एवमणंताओ वग्गणाओ समाणाओ होदूण उवरिं गच्छंति। तदो जा उवरिमअणंतरवग्गणा तिस्से बे वग्गणाओ अहिया होंति। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव बिदियदुगुणवड्ढि त्ति। पुणो बिदियदुगुणवड्ढिपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ गंतूण तदो जा अणंतरउवरिमवग्गणा तत्थ एगवारेण चत्तारि वग्गणाओ अहियाओ होंति। तं जहा–पुव्वुत्तअवट्ठिदविरलणाए बिदियदुगुणवड्ढि समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स चत्तारि वग्गणाओ पावेंति । पुणो एत्थ एगरूवधरिदं घेत्तूण पक्खित्ते तदणंतरवग्गणपमाणं होदि । पुणो उवरि जाणिदूण णेयव्वं जाव जवमज्झे ति। पुणो जवमज्झपमाणेण उवरि अणंताओ वग्गणाओ गंतूण तदो जा उवरिमअणंतरवग्गणा तत्थ असंखेज्जाओ वग्गणाओ ज्झीयंति। तं जहा–जवमज्झस्स हेट्ठिमभागहारं दुगुणं विरलेदूण जवमज्झं समखंडं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स पक्खेवपमाणं पावदि । पुणो एत्थ एगरूवधरिदमेत्तं जवमज्झम्मि अवणिदे विसेसहीणवग्गणपमाणं होदि । पुणो अणेण पमाणेण अणंताओ वग्गणाओ

कर ले जाना चाहिये। परन्तु वह अवस्थित विरलनके सब विरलन अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यमें क्रमसे प्रविष्ट होने पर उत्पन्न होती है। पुनः प्रथम द्विगुणवृद्धि वर्गणाके प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें ऊपर जाकर अनन्तर एक बारमें दो वर्गणायें अधिक होती हैं। यथा–पूर्वोक्त अवस्थित विरलनके ऊपर प्रथम द्विगुणवृद्धिके समान खण्ड करके देनेपर एक एक विरलन अंकके प्रति दो दो प्रत्येक शरीरवर्गणायें प्राप्त होती हैं। पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको प्रथम द्विगुण वृद्धिमें मिलाने पर विशेष अधिक उपरिम वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। इस प्रकार अनन्त वर्गणायें समान होकर ऊपर जाती हैं। अनन्तर जो उपरिम अनन्तर वर्गणा है उसकी दो वर्गणायें अधिक होती हैं। इस प्रकार दूसरी द्विगुणावृद्धिके प्राप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए। पुनः दूसरी द्विगुणवृद्धिके प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें जाकर जो अनन्तर उपरिम वर्गणा है वहां एक साथ चार वर्गणायें अधिक होती हैं। यथा–पूर्वोक्त अवस्थित विरलनके प्रति द्वितीय द्विगुणवृद्धिको समान खण्ड करके देने पर एक एक विरलन अंकके प्रति चार वर्गणायें प्राप्त होती हैं। पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको ग्रहणकर मिलाने पर तदनन्तर वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः ऊपर यवमध्यके प्राप्त होनेतक जानकर ले जाना चाहिए। पुनः यवमध्यके प्रमाणसे ऊपर अनन्त वर्गणायें जाकर उसके बाद जो उपरिम अनन्तर वर्गणा है वहां असंख्यात वर्गणायें गल जाती हैं। यथा–यवमध्यके दूने अधस्तन भागहारका विरलन करके उस पर यवमध्यके समान खण्ड करके देने पर एक एक विरलन अंकके प्रति प्रक्षेपका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः यहां एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको यवमध्यमेंसे घटा देनेपर विशेष हीन वर्गणाका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इस प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें जाकर जो अनन्तर

गंतूण जा अणंतरवग्गणा तत्थ बिदियपक्खेवो ज्झीयदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव पढमदुगुणहीणवग्गणे त्ति। पुणो पढमदुगुणहीणवग्गणपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ उवरि गंतूण तदो जा उवरिमवग्गणा तत्थ असंखेज्जाओ वग्गणाओ ज्झीयंति। उवरि जाणिदूण णेयव्वं। णवरि आवलियाए असंखे०भागमेत्तदुगुणहीणाओ (१) उवरि गंतूण सव्वजहण्णवग्गणपमाणवग्गणा (२) होदि। पुणो सव्वजहण्णवग्गणपमाणेण अणंताओ वग्गणाओ उवरि गंतूण तदो जा अणंतरवग्गणा तत्थ एगा वग्गणा ज्झीयदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव दुगुणहीणजहण्णवग्गणे त्ति। एत्तो उवरि जधा अणुभागट्ठाणेसु एगजीवपरिहाणी कदा तधा एत्थ वि काऊण णेयव्वं जावुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणे त्ति।

परंपरोवणिधाए अभवसिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवग्गणादो अणंताओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणवड्ढी होदि। एवं दुगुणवड्ढिदा दुगुणवड्ढिदा होदूण गच्छंति जाव जवमज्झं त्ति। तेण परमणंताओ वग्गणाओ गंतूण दुगुणहाणी होदि। एवं दुगुणहीणाओ दुगुणहीणाओ होदूण गच्छंति जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणे त्ति। एत्थ परूवणादितिण्णिअणुयोगद्दाराणि होंति। परूवणदाए अत्थि एगवग्गण-गुणहाणिट्ठाणंतरं णाणागुणहाणिसलागाओ च। पमाणं-एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं सव्वजीवेहि अणंतगुणं। णाणागुणहाणिसलागाओ जवमज्झादो हेट्ठा उवरि च आवलियाए असंखे०भागमेत्ताओ होंति। अप्पाबहुअं-सव्वत्थोवाओ णाणागुणहाणि-

---

वर्गणा है उसमेंसे द्वितीय प्रक्षेप गलित होता है। इस प्रकार प्रथम द्विगुणहीन वर्गणाके प्राप्त होने तक जान कर ले जाना चाहिए। पुनः प्रथम द्विगुणहीन वर्गणाके प्रमाणसे अनंत वर्गणायें ऊपर जा कर अनन्तर जो उपरिम वर्गणा है वहां असंख्यात वर्गणायें गलित होती हैं। ऊपर जान कर ले जाना चाहिए। इतनी विशेषता है कि आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्विगुणहीन वर्गणायें ऊपर जा कर सबसे जघन्य वर्गणाके प्रमाणवाली वर्गणा होती है। पुनः सबसे जघन्य वर्गणाके प्रमाणसे अनन्त वर्गणायें ऊपर जाकर उसके बाद जो अनन्तर वर्गणा है वहाँ एक वर्गणा गलित होती है। इस प्रकार द्विगुणहीन जघन्य वर्गणाके प्राप्त होने तक जानकर ले जाना चाहिए। इससे आगे जिस प्रकार अनुभागस्थानोंमें एक जीवपरिहानि की है उसी प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक यहां भी करके ले जाना चाहिए।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणासे लेकर अनन्त वर्गणायें जाकर द्विगुणवृद्धि होती है। इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होनेतक दूनी दूनी वृद्धि होती जाती है। उसके बाद अनन्त वर्गणायें जाकर द्विगुणहानि होती है। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक दूनी हानि दूनी हानि होकर जाती है। यहां पर प्ररूपणा आदि तीन अनुयोगद्वार होते हैं। प्ररूपणाकी अपेक्षा एकवर्गणागुणहानिस्थानान्तर है और नानागुणहानिशलाकायें हैं। प्रमाण-एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सब जीवोंसे अनन्तगुणा है। नानागुणहानिशलाकायें यवमध्यके नीचे और ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। अल्पबहुत्व-नानागुणहानि

---

(१) प्रतिषु '-दुगुणहाणीओ' इति पाठः। (२) ता०का०प्रत्योः '-पमाणं वग्गणा' इति पाठः।

सलागाओ। एगवग्गण[ब्रे]दुगुणहाणिट्ठाणंतरमणंतगुणं। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो।

प्रकाशक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अवहारो ण सक्कदे णेदुं। कुदो? णिरंतरवड्ढीए हाणीए वा वग्गणाण गमणाणुवलंभादो। अथवा सरिसघणियवग्गणाओ छंडेदूण[ओ] विसेसाहियवग्गणाओ चेव घेत्तूण भण्णमाणे अवहारो सक्कदे वोत्तुं। तं जहा—[*] जवमज्झस्सुवरिमअसंखेज्जगुणहाणिदव्वे जवमज्झपमाणे कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्ताणि जवमज्झाणि होंति। हेट्ठिम असंखेज्जगुणहाणिदव्वे वि जवमज्झपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होंति। पुणो दोसु वि दव्वेसु एगट्ठमेलिदेसु तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होंति। संपहि जवमज्झपमाणेण सव्वदव्वं[त] केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि? तिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण आवलिए असंखे०भागपमाणेण कालेण अवहिरिज्जदि। संपहि अभवसिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवग्गणपमाणेण सव्वदव्वं केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जदि? असंखेज्जतिण्णि[*] गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। तं जहा—जवमज्झादो हेट्ठा आवलियाए असंखे०भागमेत्ताओ णाणागुणहाणिसलागाओ होंति। पुणो एदाओ विरलिय बिगुणिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे उप्पण्णरासिपमाणं पि आवलियाए असंखे०भागमेत्तं चेव होदि। कुदो? जवमज्झे जहण्णट्ठाणे वि आवलियाए असंखे०भागमेत्ताणं

शलाकायें सबसे स्तोक हैं। इनके एकवर्गणाद्विगुणहानिस्थानान्तर अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है।

अवहार ले जाना शक्य नहीं है, क्योंकि, निरन्तर वृद्धि और निरन्तर हानिरूपसे वर्गणाओंका सिलसिला नहीं उपलब्ध होता है। अथवा सदृश धनवाली वर्गणाओंको छोडकर विशेषाधिक वर्गणाओंको ही ग्रहण करके कथन करने पर अवहारका कथन करना शक्य है। यथा यवमध्यसे उपरिम असंख्यातगुणहानिके द्रव्यको यवमध्यके प्रमाण करने पर डेढ़ गुणहानिमात्र यवमध्य होते हैं। अधस्तन असंख्यातगुणहानिके द्रव्योंको भी यवमध्यके प्रमाणसे करनेपर डेढ़ गुणहानिमात्र यवमध्य होते हैं। पुनः दो द्रव्योंको भी इकट्ठा मिलाने पर तीन गुणहानिमात्र यवमध्य होते हैं। अब यवमध्यके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने काल द्वारा अपहृत होता है? तीन गुणहानिस्थानान्तररूप आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काला द्वारा अपहृत होता है। अब अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणाके प्रमाणसे सब द्रव्य कितने कालके द्वारा अपहृत होता है? असंख्यात त्रिगुणहानिस्थानान्तर कालके द्वारा अपहृत होता है। यथा—यवमध्यके नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण नानागुणहानिशलाकायें होती हैं। पुनः इनका विरलन कर और द्विगुणित कर परस्पर गुणा करने पर उत्पन्न हुई राशिका प्रमाण भी आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होता है, क्योंकि, यवमध्यरूप जघन्य स्थानमें भी आवलिके

[ब्रे] प्रतिषु 'एवं वग्गण-' इति पाठः। [ओ] अ-आ प्रत्योः 'छड्डेदूण' इति पाठः। [*] म. प्रतिपाठोऽयम्। ता०अ०प्रत्योः 'वोत्तुं जुत्तं जहा' का०प्रतौ 'वोत्तुं जुत्तं जहा' इति पाठः। [त] ता०प्रतौ 'जवमज्झपमाणेण' कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तजवमज्झाणि होंति। पुणो सव्वदव्वं' इति पाठः। [*] म०प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'अवहिरिज्जदि? असंखेज्ज तिण्णि' इति पाठः।

चेव वग्गणाणमुवलंभादो। पुणो एदेण तिसु गुणहाणीसु गुणिदासु अभवसिद्धियपाओग्ग-सव्वजहण्णभागहारो होदि। एवं जाणिदूण णेयव्वं जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणे त्ति।

संपहि उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए भागहारो वुच्चदे। तं जहा- जवमज्झादो उवरिमणाणागुणहाणिसलागाओ आवलियाए असंखे०भागमेत्ताओ होंति। पुणो एदाओ विरलिय दुगं करिय अण्णोण्णगुणिदरासिपमाणं पि आवलियाए असं०भागमेत्तं होदि। पुणो एदेण अण्णोण्णब्भत्थरासिणा तिसु गुणहाणीसु गुणिदासु उक्कस्सपत्तेय-सरीरवग्गणभागहारो होदि।

भागाभागं—अभव सिद्धियपाओग्गसव्वजहण्णवग्गणाओ सव्वदव्वस्स केवडियो भागो? असंखेज्जदिभागो अणंतिमभागो वा। कुदो? सयलद्धाणवग्गणग्गहणादो। एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणे त्ति।

मार्गदर्शक अप्पाबहुगं—सव्वत्थोवाओ उक्कस्सट्ठाणे पत्तेयसरीरवग्गणाओ। जहण्णट्ठाणे पत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ*। को गुणगारो? आवलियाए असंखे०भागो। जवमज्झट्ठाणे पत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? आवलि० असंखे०भागो। जवमज्झादो हेट्ठा पत्तेयसरीरवग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ। को गुणगारो? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीयो। जवमज्झस्सुवरिमवग्गणाओ विसेसाहियाओ। केत्तियमेत्तेण? जवमज्झस्सुवरिमजहण्णपत्तेयसरीरसरिसवग्गणाणमुवरिमवग्गणमेत्तेण।

असंख्यातवें भागप्रमाण ही वर्गणाओंकी उपलब्धि होती है पुनः इनके द्वारा तीन गुणहानियोंके गुणित करने पर अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य भागहार होता है इस प्रकार जान कर उत्कृष्ट प्रत्येक शरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए।

अब उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाका भागहार कहते हैं। यथा—यवमध्यके ऊपर नाना गुणहानिशलाकायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं। पुनः इनका विरलन करके और दूनी करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिका प्रमाण भी आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण होता है। पुनः इस अन्योन्याभ्यस्तराशिसे तीन गुणहानियोंके गुणित करने पर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाका भागहार होता है।

भागाभाग—अभव्योंके योग्य सबसे जघन्य वर्गणायें सब द्रव्यके कितने भागप्रमाण हैं? असंख्यातवें भागप्रमाण या अनन्तवें भागप्रमाण हैं, क्योंकि, समस्त अध्वानकी वर्गणाओंको ग्रहण किया है। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए।

अल्पबहुत्व— उत्कृष्ट स्थानमें प्रत्येकशरीरवर्गणायें सबसे स्तोक हैं। इनके जघन्य स्थानमें प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। इनसे यवमध्यस्थानमें प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। इनसे यवमध्यके नीचे प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? कुछ कम डेढ़गुणहानिप्रमाण गुणकार है। इनसे यवमध्यसे उपरिम वर्गणायें विशेष अधिक हैं। कितनी अधिक हैं? यवमध्यसे उपरिम जघन्य प्रत्येकशरीर-वर्गणाओंके समान उपरिम वर्गणाओंके ऊपरवाली वर्गणाओं मात्रसे अधिक हैं। इनसे सब

---

* ताप्रतौ- 'वग्गणाओ (जहण्णट्ठाणे) असंखेज्जगुणो' इति पाठः।

सव्वेसु ट्ठाणेसु वग्गणाओ विसेसाहियाओ। केत्तियमेत्तेण? जवमज्झहेट्ठिमट्ठाणवग्गण-मेत्तेण। एवं बादरसुहुमणिगोदवग्गणाणं जवमज्झपरूवणाए छअणुयोगद्दाराणि परूवेदव्वाणि।

पदेसट्ठदाए जवमज्झं वुच्चदे। तं जहा—परमाणुवग्गणपदेसेहिंतो दुपदेसियवग्गण-पदेसा विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव दव्वट्ठदाए दिवड्ढगुणहाणि-ट्ठाणंतरमेत्तमद्धाणं गंतूण दोसु ट्ठाणेसु जवमज्झं होदि। तत्तो उवरि विसेसहीणा विसेस-हीणा जाव विसेसहीणवग्गणाओ णिट्ठिदाओ त्ति। एवं जवमज्झे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

पदमीमांसाए परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा किमुक्कस्सा अणुक्कस्सा जहण्णा अजहण्णा? उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा। एवं णेयव्वं जाव धुवक्खंध-दव्ववग्गणे त्ति। अचित्तअद्धुवक्खंधदव्ववग्गणाओ सिया अत्थि सिया णत्थि। जदि अत्थि तो उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा (१)अजहण्णा वा। एवं पत्तेयसरीर-बादरणिगोदसुहुमणिगोदमहाखंधवग्गणाणं पि वत्तव्वं। णवरि महाखंधवग्गणाए एयसमयम्मि सरिसधणियवग्गणाओ णत्थि, सहावियादो। परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाए जहण्णादो उक्कस्सिया विसेसाहिया। विसेसो पुणो (२)अणंताणि पोग्गलपढमवग्गमूलाणि।

स्थानोंमे वर्गणायें विशेष अधिक हैं। कितनी अधिक हैं? यवमध्यसे अधस्तन स्थानकी वर्गणा-मात्र अधिक हैं। इसी प्रकार बादर निगोदवर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके यवमध्यका प्ररूपणा करते समय छह अनुयोगद्वारका कथन करना चाहिए।

अब प्रदेशार्थताकी अपेक्षा यवमध्यका कथन करते हैं। यथा—परमाणुवर्गणाके प्रदेशोंसे द्विप्रदेशी वर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं। इस प्रकार द्रव्यार्थताकी अपेक्षा डेढ़गुणहानि स्थानान्तरमात्र अध्वान जाकर दो स्थानोंमें यवमध्यके प्राप्त होनेतक विशेष अधिक विशेष अधिक जानना चाहिए। इसके आगे विशेष हीन वर्गणाओंके समाप्त होनेतक विशेष हीन विशेष हीन जानना चाहिए। इस प्रकार यवमध्य अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

पदमीमांसाकी अपेक्षा परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या उत्कृष्ट होती है, अनुत्कृष्ट होती है, जघन्य होती है या अजघन्य होती है? उत्कृष्ट होती है, अनुत्कृष्ट होती है, जघन्य होती है और अजघन्य होती है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। अचित्त अध्रुवस्कन्ध द्रव्यवर्गणायें कदाचित् हैं और कदाचित् नहीं हैं? यदि हैं तो उत्कृष्ट होती है, अनुत्कृष्ट होती हैं, जघन्य होती हैं और अजघन्य होती हैं। इसी प्रकार प्रत्येकशरीरवर्गणा, बादरनिगोदद्रव्यवर्गणा, सूक्ष्मनिगोदद्रव्यवर्गणा और महास्कन्धवर्गणाओंके विषयमें भी कहना चाहिए। इतनी विशेषता है कि महास्कन्धवर्गणाकी अपेक्षा एक समयमें सदृश धनवाली वर्गणायें नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है। परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाकी अपेक्षा जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक है। तथा विशेष पुद्गलके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण हैं। उनका प्रतिभाग क्या

---

(१) ता०प्रतौ 'उक्कस्सा वा जहण्णा वा' इति पाठः। (२) म०प्रतिपाठोऽयम्। ता०प्रतौ 'विसेसाहिया विसेसाहिया। पुणो' अ०प्रतौ 'विसेसाहिया विसे० २। पुणो' का०प्रतौ विसेसाहिया विसेसाहिया पुणो' इति पाठः।

तेसी को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा । एवं णेयव्वं जाव ध्रुवक्खंधवग्गणे त्ति । एवं पदमीमांसे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

अप्पाबहुगं तिविहं—णाणासेडिदव्वट्ठदा णाणासेडिपदेसट्ठदा एगसेडिणाणासेडिदव्वट्ठपदेसट्ठदा चेदि । संपहि णाणासेडिदव्वट्ठदप्पाबहुगं वुच्चदे । ते जहा—सव्वत्थोवा महाखंधदव्ववग्गणाए दव्वा । कुदो ? एयत्तादो । बादरणिगोदवग्गणाए दव्वा णसंखेज्जगुणा* । को गुणगारो ? आवलियाए असंखे०भागो । कुदो ? समाणवग्गणाओ मोत्तूण विसेसाहियवग्गणाणं चेव गहणादो । अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा । कुदो ? वट्टमाणकालबादरणिगोदवग्गणाणं गहणादो । बादरणिगोदवग्गणाओ असंखेज्जलोगमेत्तीयो होंति त्ति कुदो णव्वदे । अविरुद्धाइरियवयणादो जुत्तीए च । तं जहा—एक्किस्से वग्गणाए जहण्णेण आवलियाए० असंखे० भागमेत्तपुलवियाओ होंति, उक्कस्सेण सेढीए असंखे०भागमेत्ताओ । एदाओ च ण पउरं लब्भंति । तेण आवलियाए असंखे०भागमेत्तपुलवियाहि वग्गणाणयणं कस्सामो—आवलि० असंखे०भागमेत्तपुलवियाहि जदि एगा बादरणिगोदवग्गणा लब्भदि तो ⊕असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियासु केत्तियाओ बादरणिगोदवग्गणाओ लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए असंखेज्जलोगमेत्ताओ बादरणिगोदवग्गणाओ

है ? असंख्यात लोकप्रमाण प्रतिभाग है। इस प्रकार ध्रुवस्कन्धवर्गणाके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए । इस प्रकार पदमीमांसा अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

see page 169

अल्पबहुत्व तीन प्रकार का है—नानाश्रेणिद्रव्यार्थता, नानाश्रेणिप्रदेशार्थता और एकश्रेणि-नानाश्रेणिद्रव्यार्थता-प्रदेशार्थता । अब नानाश्रेणिद्रव्यार्थता अल्पबहुत्वको कहते हैं । यथा—महास्कन्धद्रव्यवर्गणाका द्रव्य सबसे स्तोक है, क्योंकि, वह एक है । बादरनिगोदवर्गणाके द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि समान वर्गणाओंको छोडकर विशेष अधिक वर्गणाओंको ही यहाँ पर ग्रहण किया है । अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है । क्योंकि, वर्तमान कालकी बादरनिगोदवर्गणाओंका ग्रहण किया है ।

शंका— बादरनिगोदवर्गणायें असंख्यात लोकप्रमाण हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे और युक्तिसे जाना जाता है । यथा— एक वर्गणामें जघन्यसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां होती हैं और उत्कृष्टसे जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं । किन्तु ये प्रचुरमात्रामें उपलब्ध नहीं होती हैं, इसलिए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके द्वारा वर्गणाओंको लाते हैं— आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके आलम्बनसे यदि एक बादरनिगोदवर्गणा प्राप्त होती है तो असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियोंमें कितनी बादरनिगोदवर्गणायें प्राप्त होंगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर असंख्यात लोकप्रमाण बादरनिगोदवर्गणायें प्राप्त होती

* ता०का०प्रत्योः '-खंधदव्ववग्गणाए दव्व असंखेज्जगुणा' इति पाठः ।
⊕ अ-आप्रत्योः 'असंखेज्ज' इति पाठः ।

लब्भंति । तेण असंखेज्जालोगा गुणगारो त्ति सिद्धं । सुहुमणिगोदवग्गणाए णाणा-सेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलि० असंखे०भागो कुदो ? [illegible] तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झेसु संतेसु कथं बादरणिगोदव्वग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदवग्गणाणमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदे ? ण, बादरणिगोदजवमज्झसरिसधणिवग्गणाहिंतो सुहुमणिगोदजवमज्झसरिसधणिय-वग्गणाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । कुदो एदं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा । कुदो ? वट्टमाणकालसयलवग्गणग्गहणादो, बादरणिगोदपुलवियाहिंतो सुहुम-णिगोदपुलवियाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । एदाहि पुलवियाहिंतो वग्गणपमाणं पुव्वं व आणेयव्वं । पत्तेयसरीरवग्गणाए णाणासेडिसव्व-दव्वा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो कुदो ? विसेसाहिय-वग्गणप्पमाणाए[1] । उभयत्थ तिण्णिगुणहाणिमेत्तजवमज्झेसु संतेसु कथं पत्तेयसरीरवग्गणा णमसंखेज्जगुणत्तं ? ण, सुहुमणिगोदगुणहाणीदो पत्तेयसरीरगुणहाणीए असंखेज्ज-

---

हैं । इसलिये गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है यह बात सिद्ध होती है ।

सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यात गुणे हैं ? गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि विशेष अधिक वर्गणाओंका प्रमाण लिया गया है ।

शंका– उभयत्र तीनगुणहानिमात्र यवमध्योंके रहने पर बादरनिगोदवर्गणाओंसे सूक्ष्म-निगोदवर्गणायें असंख्यातगुणी कैसे बन सकती है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि बादरनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणाओंसे सूक्ष्मनिगोद यवमध्य सदृश धनवाली वर्गणायें असंख्यातगुणी उपलब्ध होती है ।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान– अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है

अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है, क्योंकि वर्तमान कालकी सब वर्गणाओंका ग्रहण किया है । तथा बादरनिगोदपुलवियोंसे सूक्ष्मनिगोदपुलवियां असंख्यातगुणी उपलब्ध होती हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । इन पुलवियोंके आलम्बनसे वर्गणाओंका प्रमाण पहलेके समान लाना चाहिए । प्रत्येकशरीरवर्गणाके नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या ! आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि विशेष अधिक वर्गणाओंकी मुख्यता है ।

शंका– उभयत्र तीन गुणहानिप्रमाण यवमध्योंके रहनेपर प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यात-गुणी कैसे हे ?

समाधान– नहीं, क्योंकि सूक्ष्मनिगोदकी गुणहानिसे प्रत्येकशरीरकी गुणहानि असंख्यात-

---

[1] ता प्रतौ 'वग्गणप्पमाणाए' इति पाठः ।

गुणत्तादो, सरिसधणियवग्गणाणं तव्वग्गणाहिंतो असंखेज्जगुणत्तादो वा। अथवा गुणगारो असंखेज्जा लोगा। कुदो? वट्टमाणासेसवग्गणप्पणादो। सुहुमणिगोदवग्गणाहिंतो कथं पत्तेयसरीरवग्गणाणमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदे? ण, एगजीवेण वि पत्तेयसरीरवग्गणाणिप्पत्तीदो, अणंतेहि जीवेहि विणा सुहुमणिगोदवग्गणाणुप्पत्तीदो। सांतरणिरंतरवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वमणंतगुणं। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। कुदो? तत्थतणजहण्णवग्गणाए वि उक्कस्सेण अणंतसरिसधणियवग्गणुवलंभादो। ध्रुवखंधवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। दिवड्ढगुणहाणिगुणिदसगपाओग्गपढमवग्गणाए सगसगजहण्णदव्वभत्थरासि त्ति भणिदं होदि। कम्मइयवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? कम्मइयवग्गणब्भंतरणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णेव गुणिदरासी गुणगारो। कुदो? ध्रुवक्खंधदव्वे सगपढमवग्गणपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमवग्गणाओ होंति। पुणो कम्मइयदव्वे वि सगपढमवग्गणपमाणेण कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमवग्गणाओ उप्पज्जंति। एत्थतणएगमपढमवग्गणाए कम्मइयअण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्ताओ ध्रुवक्खंधपढमवग्गणाओ होंति त्ति अण्णोण्णब्भत्थरासिणा गुणिदे एत्तियाओ कम्मइयवग्गणाओ ध्रुवक्खंधपढमवग्गणाओ उप्पज्जंति। संपहिय

गुणी है। अथवा उन वर्गणाओंसे सदृश धनवाली वर्गणायें असंख्यातगुणी हैं।

अथवा गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है, क्योंकि वर्तमान कालकी समस्त वर्गणाओंकी मुख्यता है।

शंका– सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंसे प्रत्येकशरीरवर्गणायें असंख्यातगुणी कैसे बन सकती हैं?

समाधान– नहीं, क्योंकि एक जीवके द्वारा भी प्रत्येकशरीरवर्गणाकी निष्पत्ति होती है और अनन्त जीवोंके बिना सूक्ष्मनिगोदवर्गणाकी उत्पत्ति नहीं हो सकती।

सान्तरनिरन्तरवर्गणायें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणा है। गुणाकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि वहां की जघन्य वर्गणामेंभी उत्कृष्टसे अनन्त सदृश धनवाली वर्गणायें उपलब्ध होती हैं। ध्रुवस्कन्धवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। डेढ़ गुणहानिसे गुणित अपनी नाना गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। कार्मणवर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? कामवर्गणाके भीतर नाना गुणहानिशलाओंका विरलन कर व दूना कर परस्पर गुणित करनेसे उत्पन्न हुइ राशि गुणकार है, क्योंकि ध्रुवस्कन्ध द्रव्यके अपनी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे करनेपर डेढ़ गुणहानिमात्र प्रथम वर्गणायें होती हैं। पुनः कार्मणद्रव्यके भी अपनी प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे करने पर डेढ़ गुणहानिमात्र प्रथम वर्गणायें उत्पन्न होती हैं। यहांकी एक प्रथम वर्गणामें कार्मण अन्योन्याभ्यस्त राशिमात्र ध्रुवस्कन्धकी प्रथम वर्गणायें होती है इसलिए अन्योन्याभ्यस्त राशिके गुणित करनेपर इतनी कार्मणवर्गणायें ध्रुवस्कन्ध प्रथम वर्गणायें उत्पन्न होती हैं। अब डेढ़ गुणहानिमात्र ध्रुवस्कन्ध

दिवड्ढमेत्तधुवक्खंधपढमवग्गणाहि कम्मइयवग्गणासु ओवट्टिदासु अण्णोण्णब्भत्थरासी जेण आगच्छदि तेण पुव्वुत्तगुणगारो सिद्धो। एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं। कम्मइयवग्गणाए हेट्ठा अगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहणवग्गणब्भंतरे अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ गुणहाणिसलागाओ अत्थि। एदाओ विरलिय दिगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? मणदव्ववग्गणब्भंतरअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। मणस्स हेट्ठिमअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। भासावग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? भासावग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। भासाए हेट्ठा अगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। तेजावग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? तेजावग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी। तेजइयस्स हेट्ठिमअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहणअण्णोण्णब्भत्थरासी। आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० आहारवग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी। आहारवग्गणाए हेट्ठिमअणंतपदेसियअगहणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० अगहणअण्णोण्णब्भत्थरासी। परमाणुवग्गणाए णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को

प्रथम वर्गणाओंसे कार्मणवर्गणाओंके भाजित करने पर यतः अन्योन्याभ्यस्त राशि आती है अतः पूर्वोक्त गुणकार सिद्ध होता है। यह अर्थपद आगे सर्वत्र कहना चाहिए। कार्मणवर्गणासे नीचे अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है। अग्रहणवर्गणाके भीतर अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणहानिशलाकायें हैं। इनका विरलन करके और दूना करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशि गुणकार है। मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे है। गुणकार क्या है? मनोद्रव्यवर्गणाके भीतर स्थित अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। मनोवर्गणासे नीचेकी अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है। अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। भाषावर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? भाषावर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। भाषावर्गणासे नीचे अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। तैजसद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? तैजसवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। तैजसवर्गणाके नीचे अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अग्रहणद्रव्यवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? आहारवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। आहारवर्गणासे नीचे अनन्तप्रदेशी अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। परमाणु-

गुण० ? दिवड्ढोवट्टिदअसंखेज्जपदेसियवग्गणाणं अण्णोण्णब्भत्थरासी। अणंते त्ति कथं णव्वदे ? जुत्तीदो। तं जहा-एगगुणहाणीए जहण्णपरित्ताणंते भागे हिदे असंखेज्जपदेसियवग्गणाणं गुणहाणिसलागाओ उप्पज्जंति। एदाओ च जहण्ण-परित्ताणंतयस्स अद्धच्छेदणाहिंतो असंखेज्जगुणाओ। एदासिमसंखेज्जगुणत्तं कुदो णव्वदे ? गुरूवदेसादो। तेणेदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिस्स सिद्धमणंतत्तं। संखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा संखेज्जगुणा। को गुण-गारो? एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणरूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं। कुदो? परमाणुवग्गणादो एगादिएगुत्तरकमेण परिहीणएत्थतणगोवुच्छविसेसेहि एगपरमाणुवग्गणाए असंखेज्ज-भागुप्पत्तीदो। असंखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा* असंखेज्जगुणा। को गुण० ? एगरूवस्स असंखे०भागेणूणउक्कस्ससंखेज्जेण परिहीणदिवड्ढगुणहाणीए एगरूवस्स असंखे०भागेणूणरूवूणुक्कस्ससंखेज्जेण ओवट्टिदाए जं लद्धं सो गुणगारो।

एवं दव्वट्ठदप्पाबहुगं समत्तं।

संपहि णाणासेडिपदेसट्ठदप्पाबहुअं उच्चदे। तं जहा-सव्वत्थोवा पत्तेयसरीर-

---

ध. १७८ वर्गणामें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? डेढ़से भाजित असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है।

शंका- वह अनन्तप्रमाण है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान- युक्तिसे जाना जाता है। यथा-एक गुणहानिका जघन्य परीतानन्तमें भाग
ध. १७१ देने पर असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी गुणहानिशलाकायें उत्पन्न होती हैं। और ये जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे असंख्यातगुणी हैं।

शंका- ये असंख्यातगुणी हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- गुरुके उपदेशसे।

इसलिए इनका विरलनकर और दूना कर परस्पर गुणा करने से उत्पन्न हुई राशि अनन्तप्रमाण है यह सिद्ध होता है।

संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? एक अंकके असंख्यातवें भागसे न्यून एक कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है, क्योंकि, परमाणु-वर्गणाकी अपेक्षा एकादि एकोत्तर क्रमसे हीन यहाँके गोपुच्छविशेषोंसे एक परमाणुवर्गणाके असंख्यातवें भागकी उत्पत्ति होती है। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? एक अंकके असंख्यातवें भागसे न्यून उत्कृष्ट संख्यातको डेढ़गुणहानिमेंसे कम करने पर जो लब्ध आवे उसमें एक अंकके असंख्यातवें भागसे न्यून एक कम उत्कृष्ट संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे वह गुणकार है। इस प्रकार द्रव्यार्थता अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब नानाश्रेणि प्रदेशार्थता अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा-प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्रदेश

---

* अ०का०प्रत्योः '-वग्गणाणासेडिसव्वदव्वा' इति पाठः।

वग्गणाए पदेसा। कुदो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तएगजीवस्स कम्म-णोकम्मपदेसे ट्ठविय असंखेज्जेहि लोगेहि तेसु गुणिदेसु पत्तेयसरीरवग्गणाणं सव्वपदेसुप्पत्तीए। महाखंधवग्गणाए सव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? अणंता लोगा। कुदो? उक्कस्स-पत्तेयसरीरवग्गणं ट्ठविय अणंतेहि लोगेहि सेडीए असंखे०भागेण अंगुलस्स असंखे०-भागेण पलिदो० असंखे०भागेण जगपदरस्स असंखे०भागेण च गुणिदे महाखंध-पदेसपमाणं होदि। पुणो एदम्हि पत्तेयसरीरवग्गणपदेसेहि ओवट्टिदे जं लद्धं तत्थ अणंतलोगाणमुवलंभादो। बादरणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा। को गुण० ? असंखेज्जा लोगा। तं जहा—एगजीवकम्म-णोकम्मपदेसे सव्वजीवेहि अणंतगुणे ट्ठविय सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागेण असंखेज्जेहि लोगेहि च गुणिदे बादरणिगोदवग्गणाए पदेसग्गं होदि। पुणो तम्हि महाखंधवग्गणपदेसग्गेण भागे घेप्पमाणे हेट्ठिमएगजीवपदेसेहि सव्वजीवरासिस्स असंखे०भागेण च उवरिम-एगजीवपदेसा सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जभागो च सरिसो त्ति अवणिय सेसहेट्ठिमरासिणा सेसुवरिमरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तगुणगारो लब्भदि तेण असंखेज्जगुणा त्ति भणिदं। सुहुमणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा* । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा। कुदो बादरणिगोदेहिंतो

सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, एक जीवके सब जीवोंसे अनन्तगुणे कर्म और नोकर्मके प्रदेशोंको स्थापित कर उन्हें असंख्यात लोकोंसे गुणित करने पर प्रत्येकशरीरवर्गणाओंके सब प्रदेशोंकी उत्पत्ति होती है। महास्कन्धवर्गणाके सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अनन्त लोक गुणकार है, क्योंकि, उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाको स्थापित करके अनन्त लोकोंसे, जगश्रेणिके असंख्यातवें भागसे, अङ्गुलके असंख्यातवें भागसे, पल्यके असंख्यातवें भागसे और जगप्रतरके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर महास्कन्धके प्रदेशोंका प्रमाण होता है। पुनः इसमें प्रत्येकशरीरवर्गणाके प्रदेशोंका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसमें अनन्त लोक उपलब्ध होते हैं। बादरनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। यथा— सब जीवोंसे अनन्तगुणे एक जीवके कर्म और नोकर्मप्रदेशोंको स्थापित करके सब जीव-राशिके असंख्यातवें भागसे और असंख्यात लोकोंसे गुणित करने पर बादर निगोदवर्गणाके प्रदेशाग्र होते हैं। पुनः उसमें महास्कन्धवर्गणाके प्रदेशोंका भाग ग्रहण करने पर अधस्तन एक जीवके प्रदेशोंके साथ और सब जीवराशिके असंख्यातवें भागके साथ उपरिम एक जीवके प्रदेश और सब जीवराशिका असंख्यातवां भाग समान है, इसलिए घटा कर शेष अधस्तन राशिका शेष उपरिम राशिमें भाग देने पर असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार लब्ध होता है, इसलिए असंख्यातगुणे हैं ऐसा कहा है। सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है, क्योंकि, बादरनिगोदोंसे सूक्ष्मनिगोद असंख्यातगुणे हैं।

---

* ता०प्रतौ 'सव्वपदेसा (अ-) संखेज्जगुणा' अ०का०प्रत्योः '–सव्वपदेसासंखेज्जगुणा' इति पाठः।

सुहुमणिगोदा असंखेज्जगुणा ? को गुण० ? असंखेज्जा लोगा त्ति जीवट्ठाणसुत्ते परूविदत्तादो, उभयत्थ एगजीवपदेसग्गगुणगारस्स समाणत्तादो च । सांतर-णिरंतर-वग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । धुवक्खंधवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सव्व-जीवेहि अणंतगुणो । तं जहा--धुवक्खंधचरिमवग्गणाए पदेसेहिंतो सांतरणिरंतर-वग्गणाए सव्वपदेसाणमणंतगुणहीणत्तुवलंभादो । कुदो ? जेण धुवक्खंधचरिम-वग्गणादव्वट्ठदादो सांतरणिरंतरवग्गणाए पढमादिसव्ववग्गणदव्वट्ठदाओ अणंतगुण-हीणाओ तेण तासिं पदेसग्गं पि अणंतगुणहीणं चेव । जदि धुवक्खंधचरिमवग्गणा एक्का चेव पदेसग्गेण अणंतगुणा (१) होदि तो धुवक्खंधसव्ववग्गणाओ णिच्छयेण अणंतगुणाओ होंति त्ति अणुत्तसिद्धं । कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंत-गुणा । को गुण० ? कम्मइयवग्गणाणं अण्णोण्णब्भत्थरासी । कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिम-अगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थ-रासी । मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णो-ण्णब्भत्थरासी । मणंदो* हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी । भासावग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंत-गुणा । को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी । भासादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है ऐसा जीवस्थानसूत्रमें कथन किया है ? तथा दोनों जगह एक जीवके प्रदेशोंका गुणकार समान है । सान्तर-निरन्तरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । ध्रुवस्कन्ध वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है । यथा–ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणाके प्रदेशोंसे सान्तरनिरन्तरवर्गणाके सब प्रदेश अनन्तगुणे हीन उपलब्ध होते हैं, क्योंकि यतः ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणाकी द्रव्यार्थतासे सान्तरनिरन्तरवर्गणाकी प्रथमादि सब वर्गणाओंकी द्रव्यार्थतायें अनन्तगुणी हीन हैं, इसलिए उनके प्रदेशाग्र भी अनन्तगुणे हीन हो हैं । यदि ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणा अकेली ही प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी है तो ध्रुवस्कन्ध सब वर्गणायें निश्चयसे अनन्तगुणी है यह अनुक्तसिद्ध है । कार्मणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? कार्मणवर्गणाओं-की अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । कार्मणवर्गणासे नीचेकी अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्या-भ्यस्त राशि गुणकार है । मनोवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । भाषावर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार

---

(१) प्रतिषु 'अणंतगुणहीणा' इति पाठः । * अ-आ प्रत्योः 'मणादो' इति पाठः ।

णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी। तेजावग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी। तेजइयादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी। आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी। आहारवग्गणादो हेट्ठिमअणंतपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण०? सगअण्णोण्णब्भत्थरासी। परमाणुवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। सुगमं। संखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा। असंखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा। एवं णाणासेडिसव्वपदेसट्ठदप्पाबहुअ ससत्तं।

एगसेडि-णाणासेडिदव्वट्ठदाए सव्वत्थोवा [illegible] दव्वट्ठदाए एगसेडिपरमाणुवग्गणा णाणासेडिमहाखंधवग्गणा च दो वि तुल्लाओ थोवाओ। कुदो ? एगसंखत्तादो। संखेज्जपदेसियवग्गणासु एगसेडिवग्गणाओ संखेज्जगुणाओ। को गुण०? रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं। बादरणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा। को गुण०? असंखेज्जा लोगा। सुहुमणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा। को गुण०? असंखेज्जा लोगा। पत्तेयसरीरवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। असंखेज्जपदेसियवग्गणासु

है। भाषावर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। तैजसवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। तैजसवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे है। गुणकार क्या है ? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। आहारवर्गणासे अधस्तन अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। परमाणुवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। कारणका कथन सुगम है। संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। इस प्रकार नानाश्रेणि सर्व प्रदेशार्थता अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब एकश्रेणि-नानाश्रेणिद्रव्यार्थता-प्रदेशार्थता अल्पबहुत्वका कथन करते हैं। यथा— द्रव्यार्थताकी अपेक्षा एकश्रेणि परमाणुवर्गणा और नानाश्रेणि महास्कन्ध वर्गणा दोनों ही तुल्य हो कर सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, ये एक संख्याप्रमाण हैं। संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें संख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? एक कम उत्कृष्ट संख्यातप्रमाण गुणकार है। बादर निगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है। प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें

एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । आहारवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा । को गुण० ? आहारेगसेडिवग्गणाए◎ असंखे०भागो, अभव्वसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जपदेसियवग्गणपडिभागो । आहारवग्गणादो हेट्ठिमअणंतपदेसियवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा । को गुण० ? अभव्वसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो । पुव्व माहारवग्गणादो उवरि तेजा-भासा-मण-कम्मइयवग्गणाणमेगसेडिवग्गणाओ जहाकमेण अणंतगुणाओ भणिदूण पच्छा आहारवग्गणादो हेट्ठिमअगहणवग्गणाए एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा त्ति भणिदं । एण्हि पुण आहारएगसेडिवग्गणादो हेट्ठिमअगहणवग्गणाए एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा त्ति भणिदं । तेण एदासिं दोण्णमप्पाबहुगाणं परोप्परविरुद्धाणं एत्थ संभवो ण होदि, किंतु दोण्णमेक्केणेव होदव्वमिदि ? सच्चमेदमेक्केणेव होदव्वमिदि, किंतु अणेणेव होदव्वमिदि ण वट्टमाणकाले णिच्छओ कादुं सक्किज्जदे, जिण-गणहर-पत्तेयबुद्ध-पण्णसमण-सुदकेवलिआदीणमभावादो । कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिमआहारवग्गणादो उवरिमअगहणवग्गणमद्धाणगुणगारेहिंतो आहाराविवग्गणाणं अद्धाणुप्पायणट्ठं दुविदभागहारो अणंतगुणो त्ति के वि आइरिया

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । आहारवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है ? आहार एकश्रेणि वर्गणाके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है जो अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यातप्रदेशी वर्गणा प्रतिभाग है । आहारवर्गणासे अधस्तन अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं । गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका– पहले आहारवर्गणासे ऊपरकी तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणाकी एकश्रेणिवर्गणायें क्रमसे अनन्तगुणी कहकर पश्चात् आहारवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाकी एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं ऐसा कहा है । परन्तु इस समय आहार एकश्रेणिवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाकी एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं ऐसा कहा है, इसलिये परस्पर विरुद्ध ये दोनों अल्पबहुत्व यहां पर सम्भव नहीं हैं । किन्तु इन दोनोंमें से कोई एक होना चाहिए ?

समाधान– यह सत्य है कि इन दोनोंमें से कोई एक अल्पबहुत्व होना चाहिए, किन्तु यही अल्पबहुत्व होना चाहिए इसका वर्तमानकालमें निश्चय करना शक्य नहीं है, क्योंकि इस समय जिन, गणधर, प्रत्येकबुद्ध, प्रज्ञाश्रमण और श्रुतकेवली आदिका अभाव है । कार्मणवर्गणासे अधस्तन आहार वर्गणासे उपरिम अग्रहणवर्गणाके अध्वानके गुणकारसे आहारादिवर्गणाओंके अध्वानको उत्पन्न करनेके लिए स्थापित भागहार अनन्तगुणा है ऐसा कितनेही आचार्य चाहते

◎ता०प्रतौ– 'आहारदव्ववग्गणाए' इति पाठः ।

इच्छंति तेसिमहिप्पाएण पुव्विल्लमप्पाबहुगं परूविदं। भागहारेहिंतो गुणगारा अणंतगुणा त्ति के वि आइरिया भणंति①। तेसिमहिप्पाएण एदमप्पाबहुगं परूविज्जदे, तेणेसो ण दोसो। तेजइयवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण०? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो। एसो गुणगारो उवरि कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिमअगहणदव्वग्गणा त्ति परूवेदव्वो। तेजइयादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। भासावग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। भासादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। मणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। मणवग्गणादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। कम्मइयवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। कम्मइयादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। धुवक्खंधवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। अचित्तअद्धुवक्खंधवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। पढमिल्लियासु धुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा। को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। पत्तेयसरीरवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा। को गुण०? पलिदोवमस्स असंखे०भागो। तासु चेव वग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा। को गुण०? असंखेज्जा लोगा। बिदियधुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा अणंतगुणा।

है, इसलिए उनके अभिप्रायानुसार पहले का अल्पबहुत्व कहा है। तथा भागहारोंसे गुणकार अनन्तगुणे हैं ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं, इसलिए उनके अभिप्रायानुसार यह अल्पबहुत्व कहा जा रहा है इसलिए यह कोई दोष नहीं है।

तैजसवर्गणाओंमें एक श्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। यह गुणकार ऊपर कार्मणवर्गणासे लेकर नीचे अग्रहणवर्गणा तक कहना चाहिए। तैजसवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। भाषावर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। भाषावर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। मनोवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। मनोवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। कार्मणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। कार्मणवर्गणाओंसे नीचे अग्रहणवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। ध्रुवस्कन्धवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। अचित्तअध्रुवस्कन्धवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। पहली ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। प्रत्येकशरीरवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उन्हीं वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है। दूसरी ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें

① अ०का०प्रत्योः 'के वि भणंति' इति पाठः।

को गुण० ? अणंता लोगा। बादरणिगोदवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा। को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो पलिदोवमस्स असंखे०भागेण गुणिदो। तदियधुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा। को गुण०? अंगुलस्स असंखे०भागो। सुहुमणिगोदवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा। को गुण०? पलिदो० असंखे० भागो आवलियाए असंखे०भागेण गुणिदो। महाखंधवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखेज्जगुणा। को गुण० ? जगपदरस्स असंखे०भागे पलिदो[?]० असंखे०भागेण खंडिदे तत्थ एगखंडं गुणगारो। चउत्थधुवसुण्णवग्गणासु एगसेडिवग्गणा असंखे०गुणा। को गुण०? पलिदो० असंखे०भागो। महाखंधवग्गणाए पदेसा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण ? चउत्थधुवसुण्ण० पलिदो० असंखे०भागेण खंडिय तत्थ एगखंडमेत्तेण। बादरणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा। सुहुमणिगोदवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा असंखेज्जगुणा। सांतरणिरंतरवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। धुवक्खंधवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तं जहा—सांतरणिरंतरवग्गणाए दव्वट्ठदाए पदेसट्ठदाए च पढमवग्गणा चेव पहाणा, सेसवग्गणसव्वपदेसाणं तदणंतिम-

---

एकश्रेणिवर्गणायें अनन्तगुणी हैं। गुणकार क्या है ? अनन्त लोकप्रमाण गुणकार है। बादरनिगोदवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागसे गुणित जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। तीसरी ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागसे गुणित पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। महास्कन्धवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है। जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे वह गुणकार है। चौथी ध्रुवशून्यवर्गणाओंमें एकश्रेणिवर्गणायें असंख्यातगुणी हैं। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। महास्कन्धवर्गणाके प्रदेश विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं ? चौथी ध्रुवशून्यवर्गणामें पल्यके असंख्यातवें भागका भाग देने पर वहाँ जो एक भाग लब्ध आवे उतने अधिक हैं। बादरनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। सान्तरनिरन्तरवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। ध्रुवस्कन्धवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। यथा—सान्तरनिरन्तरवर्गणामें द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी

[?] म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'असंखे०भागो पलिदो०' इति पाठः।

भागत्तादो। धुवक्खंधपढमवग्गणपमाणेण सगसव्वदव्वे कीरमाणे दिवड्ढगुणहाणिमेत्त-पढमवग्गणाओ होंति, समयाविरोहेणुप्पण्णगुणहाणिसलागाओ विरलिय समयाविरुद्ध-गुणगारेण गुणिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूणुप्पाइदरासिणा धुवक्खंधचरिमवग्गणाए गुणिदाए पढमवग्गणा होदि त्ति दिवड्ढगुणहाणिगुणियअण्णोण्णब्भत्थरासिणा धुव-क्खंधचरिमवग्गणाए गुणिदाए धुवक्खंधसव्वदव्वं होदि। सांतरणिरंतरपढमवग्गणादो धुवक्खंधचरिमवग्गणा अणंतगुणा। को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। सांतर-णिरंतरपढमवग्गणपदेसुप्पायणट्ठं ट्ठविदसादिरेयहेट्ठिमअद्धाणमेत्तगुणगारादो। धुवक्खंधब्भंतरअण्णोण्णब्भत्थरासी अणंतगुणो, तेण सांतरणिरंतरवग्गणपदेसग्गादो धुवक्खंधवग्गणदव्वमणंतगुणमिदि सिद्धं। तस्सुवरि धुवक्खंधवग्गणाए पदेसग्ग-मणंतगुणं। को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागमेत्तो। तं जहा-धुवक्खंधपढमवग्गणं ट्ठविय दिवड्ढगुणहाणिणा गुणिदे दव्ववग्गं होदि। पुणो तं चेव पडिरासिय हेट्ठिमअद्धाणेण अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणेण सिद्धाण-मणंतिमभागेण गुणिदे धुवक्खंधपदेसग्गं होदि। धुवक्खंधवग्गणाए एगसेडिअद्धाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणं ति सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणो गुणगारो किण्ण दिज्जदि ? ण, पढमगुणहाणिपदेसग्गस्सेव पहाणत्तदंसणादो बिदियगुणहाणिसव्वपदेसग्गस्स पढम-

---

अपेक्षा प्रथम वर्गणा ही प्रधान है, क्योंकि, शेष वर्गणाओंके सब प्रदेश उसके अनन्तवें भाग-प्रमाण हैं। ध्रुवस्कन्ध प्रथम वर्गणाके प्रमाणसे अपने सब द्रव्यके करने पर डेढ़ गुणहानिमात्र प्रथम वर्गणायें होती हैं। अतः आगमानुसार उत्पन्न हुई गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और आगमानुसार गुणकारसे गुणित कर तथा परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिसे ध्रुव-स्कन्धकी अन्तिम वर्गणाके गुणित करने पर प्रथम वर्गणा होती है इसलिए डेढ़ गुणहानिसे गुणित अन्योन्याभ्यस्त राशिके द्वारा ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणाके गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धका सब द्रव्य होता है। सान्तरनिरन्तर प्रथम वर्गणासे ध्रुवस्कन्धकी अन्तिम वर्गणा अनन्तगुणी है। गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि, सान्तरनिरन्तर प्रथम वर्गणाके प्रदेशोंको उत्पन्न करनेके लिए स्थापित साधिक अधस्तन अध्वानमात्र गुणकार है। ध्रुवस्कन्धके भीतर अन्योन्याभ्यस्त राशि अनन्तगुणी है, इसलिए सान्तरनिरन्तरवर्गणाके प्रदेशाग्रसे ध्रुवस्कन्धवर्गणाका द्रव्य अनन्तगुणा है यह सिद्ध होता है। इसके ऊपर ध्रुवस्कन्ध वर्गणाके प्रदेशाग्र अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भाग-प्रमाण गुणकार है। यथा-ध्रुवस्कन्धकी प्रथम वर्गणाको स्थापित कर डेढ़ गुणहानिसे गुणित करनेपर द्रव्यका वर्ग होता है। पुनः उसे ही प्रतिराशि बनाकर अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण अधस्तन अध्वानसे गुणित करनेपर ध्रुवस्कन्धके प्रदेशाग्र होते हैं।

शंका- ध्रुवस्कन्धवर्गणाका एकश्रेणि अध्वान सब जीवोंसे अनन्तगुणा है, इसलिए सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार क्यों नहीं दिया जाता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, प्रथम गुणहानिके प्रदेशाग्रकी ही प्रधानता देखी जाती है। तथा

गुणहाणिपदेसग्गेण समाणत्तुवलंभादो । ण च हेट्ठिमअद्धाणस्सुवरि एगदोगुणहाणीयो पक्खित्ते गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो, गुणहाणिणा गुणिदे वि तदणंतगुणत्ताभावादो। तेण सिद्धं गुणगारो ❖ [illegible] अणंतगुणो सिद्धाणमणंतिमभागो त्ति। कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगु । को गुण० ? रूवाहियधुवक्खंधादो हेट्ठिमसमयलद्धाणेणोवट्टिदकम्मइयदव्वट्ठदअण्णोण्णब्भत्थरासी । कम्मइयवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण०? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणसिद्धाणमणंतिमभागमेत्तकम्मइयवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं। कम्मइयवग्गणादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? कम्मइयवग्गणरूवाहियहेट्ठिमट्ठाणेणोवट्टिदकम्मइयहेट्ठिमअगहणवग्गणाए अण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। तासु चेव पदेसग्गमणंतगुणं । कोण गुण०? अगहणवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं। तदो मणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? अगहणवग्गणाए हेट्ठिमसयलद्धाणेण रूवाहिएणोवट्टिदमणदव्ववग्गणाए अण्णोण्णब्भत्थरासी। मणदव्ववग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? मणदव्ववग्गणाए हेट्ठिमसयलद्धाणं रूवाहियं। मणस्स हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? मणस्स हेट्ठिमसयलद्धाणेणोवट्टिदअगहणवग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो ।

द्वितीय गुणहानिका सब प्रदेशाग्र प्रथम गुणहानिके प्रदेशाग्रके समान पाया जाता है यदि कहा जाय कि अधस्तन अध्वानके ऊपर एक दो गुणहानियोंको प्रक्षिप्त करनेपर गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा पाया जावेगा सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, गुणहानिसे गुणित करनेपर भी उसके अनन्तगुणे होनेका अभाव है, इसलिये गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है यह सिद्ध होता है ।

कार्मणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? एक अधिक ध्रुवस्कन्धके नीचेके सकल अध्वानसे भाजित कार्मणद्रव्यार्धताकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । कार्मणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण कार्मणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है । कार्मणवर्गणासे अधस्तन अग्रहण वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे है । गुणकार क्या है ? कार्मणवर्गणाके एक अधिक अधस्तन स्थानसे भाजित कार्मणवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है । उन्हींमें प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है । उससे मनोवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अग्रहणवर्गणाके एक अधिक अधस्तन सकल अध्वानसे भाजित मनोद्रव्यवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। मनोद्रव्यवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मनोद्रव्यवर्गणाका एक अधिक सकल अध्वान गुणकार है । मनोवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? मनोवर्गणाके अधस्तन सकल अध्वानसे

❖ ता०प्रतौ 'सिद्धो गुणगारो' इति पाठः ।

तासु चेव अगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? अगहणवग्गणाए हेट्ठिमसयलद्धाणं रूवाहियं गुणगारो। भासावग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? अगहणवग्गणाए हेट्ठिमसव्वद्धाणेण रूवाहिएणोवट्टिदभासावग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी गुणगारो। तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा को गुण० ? भासावग्गणाए हेट्ठिमसव्वद्धाणं रूवाहियं। भासावग्गणाए हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? भासावग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणेण रूवाहिएणोवट्टिदअप्पिदागहणवग्गणाए अण्णोण्णब्भत्थरासी। तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण० ? अप्पिदअगहणवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं। तेजावग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण० ? उवरिमअगहणवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणेण रूवाहिएणोवट्टिदतेजावग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी। तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण०? तेजावग्गणाहेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं। तेजइयादो हेट्ठिमअगहणवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? तेजइयपदेसगुणगारेणोवट्टिदअप्पिदागहणवग्गणाए अण्णोण्णब्भत्थरासी। तासु चेव वग्गणासु णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण०? अप्पिदअगहणवग्गणाए हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं। आहारवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? उवरिमअगहणवग्गणपदेसगुणगारेणोवट्टिदआहारवग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी। तासु चेव

भाजित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हीं अग्रहण वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन सकल अध्वान गुणकार है। भाषावर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अग्रहणवर्गणाके एक अधिक अधस्तन सकल अध्वानसे भाजित भाषावर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? भाषावर्गणाका एक अधिक अधस्तन सकल अध्वान गुणकार है। भाषावर्गणाके नीचे अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? भाषावर्गणाके एक अधिक अधस्तन अध्वानसे भाजित विवक्षित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? विवक्षित अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। तैजसवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? उपरिम अग्रहण वर्गणाके एक अधिक अधस्तन अध्वानसे भाजित तैजसवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? तैजसवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। तैजसवर्गणासे अधस्तन अग्रहणवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? तैजस प्रदेश गुणकारसे भाजित विवक्षित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हीं वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुण हैं। गुणकार क्या है? विवक्षित अग्रहणवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। आहारवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? उपरिम अग्रहणवर्गणाके प्रदेश गुणकारसे भाजित आहारवर्गणाकी

णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण०? आहारवग्गणहेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं। आहारवग्गणादो हेट्ठिमअणंतपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा अणंतगुणा। को गुण०? आहारवग्गणपदेसगुणगारेणोवट्टिदअप्पिदअगहणवग्गणअण्णोण्णब्भत्थरासी। तासु चेव णाणासेडिसव्वपदेसा अणंतगुणा। को गुण०? हेट्ठिमअद्धाणं रूवाहियं। परमाणुवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा सव्वपदेसा च दो वि सरिसा अणंतगुणा। को गुण०? अणंतपदेसियवग्गणाणं पदेसगुणगारेण दिवड्ढगुणहाणिगुणिदेणोवट्टिदअसंखेज्जपदेसियवग्गणाणमण्णोण्णब्भत्थरासी। संखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा संखेज्जगुणा। को गुण०? एगरूवस्स असंखे०भागेणूणरूवूणुक्कस्ससंखेज्जयं। तेसिं चेव पदेसा संखेज्जगुणा। को गुण०? संखेज्जरूवाणि। तं जहा–पदेसग्गेण सव्ववग्गणाओ एगगुणदुगुणतिगुणादिकमेण गदाओ त्ति संकप्पिय परमाणुवग्गणपदेसे ट्ठविय उक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणाए गुणिदे सव्ववग्गणाणं पदेसग्गमागच्छदि। पुणो गुणगारम्हि एगरूवे अवणिदे संखेज्जपदेसियवग्गणपदेसग्गं होदि। पुणो पदेसग्गेण एदाओ सरिसाओ ण होंति। विसेसहीणाओ त्ति हीणपदेसपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा–रूवूणुक्कस्ससंखेज्जयस्स संकलणासंकलणमाणिय दुगुणिदे हीणपदेसपमाणं पावदि। पुणो दोहि गुणहाणीहि असंखेज्जलोगपमाणाहि ओवट्टिदे एगरूवस्स असंखे०भागोआगच्छदि। एदम्मि पुव्विल्लसंकलणाए अवणिदे संखेज्जपदेसियवग्गणदव्वं

अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हीं वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? आहारवर्गणाका एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। आहारवर्गणासे नीचे अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? आहारवर्गणाके प्रदेश गुणकारसे भाजित विवक्षित अग्रहणवर्गणाकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? एक अधिक अधस्तन अध्वान गुणकार है। परमाणुवर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य और उनके सब प्रदेश दोनों ही समान होकर अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? डेढ़ गुणहानि गुणित अनन्तप्रदेशी वर्गणाओंके प्रदेशगुणकारसे भाजित असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि गुणकार है। संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नानाश्रेणि सब द्रव्य संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? एकेक असंख्यातवें भागसे न्यून एक कम उत्कृष्ट संख्यात गुणकार है। उन्हींके प्रदेश संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात अंक गुणकार है। यथा–प्रदेशाग्रकी अपेक्षा सब वर्गणायें एकगुणी, द्विगुणी और त्रिगुणी आदि क्रमसे गई हैं ऐसा संकल्प करके परमाणुवर्गणाके प्रदेशोंको स्थापित कर उत्कृष्ट संख्यातकी संकलनासे गुणित करने पर सब वर्गणाओंके प्रदेशाग्र आते हैं। पुनः गुणकारमेंसे एक अंकके कम कर देने पर संख्यातप्रदेशी वर्गणाके प्रदेशाग्र होते हैं। पुनः प्रदेशाग्रकी अपेक्षा ये समान नहीं होती हैं किन्तु विशेष हीन होती हैं इसलिए हीन प्रदेशोंके प्रमाणका कथन करते हैं। यथा–एक कम उत्कृष्ट संख्यातके संकलनासंकलनको लाकर दूना करने पर हीन प्रदेशोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः असंख्यात लोकप्रमाण दो गुणहानियों का भाग देने पर एक अंकका असंख्यातवां भाग आता है। इसे पहले की संकलनामेंसे घटा देने पर

होदि। एदम्मि दव्वट्ठदाए भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति। तेण गुणगारो संखेज्जे त्ति सिद्धं। असंखेज्जपदेसियवग्गणासु णाणासेडिसव्वदव्वा असंखेज्जगुणा। को गुण०? असंखेज्जा लोगा। एवमप्पाबहुगपरूवणा गदा। अट्ठहि अणुयोगद्दारेहि तेवीस-वग्गणासु परूविदासु अब्भंतरवग्गणा समत्ता होदि।

तत्थ इमाए बाहिरियाए वग्गणाए अण्णा परूवणा※ कायव्वा भवदि ॥ ११७ ॥

ओरालियादिपंचण्हं सरीराणं कथं बाहिरिया वग्गणा त्ति सण्णा। ण ताव इंदिय-णोइंदिएहि अगेज्झाणं पोग्गलाणं बाहिरसण्णा, परमाणुआदिवग्गणाणं पि तदविसेसेण बाहिरवग्गणत्तप्पसंगादो। ण ताव जीवपदेसेहि पुधभूदाणि त्ति पंचण्हं सरीराणं बाहिरववएसो, दुद्धोदयाणं व अण्णोण्णाणुगयाणं जीवसरीराणं अब्भंतर◎-बाहिरभावाणुववत्तीदो। अणंताणंताणं विस्सासुवचयपरमाणूणं मज्झे पंचण्हं सरीराणं परमाणू चेट्ठिदा त्ति ण तेसिं बाहिरसण्णा, विस्सासुवचयक्खंधाणमंतोट्ठिदाणं बाहिर-ववएसविरोहादो। तम्हा* बाहिरवग्गणववएसो ण घडदे? एत्थ परिहारो उच्चदे। तं

संख्यातप्रदेशी वर्गणाओंका द्रव्य होता है। इसमें द्रव्यार्थताका भाग देने पर संख्यात अंक लब्ध आते हैं। इसलिए गुणकार संख्यात है यह सिद्ध होता है। असंख्यातप्रदेशी वर्गणाओंमें नाना-श्रेणि सब द्रव्य असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। उन्हींमें नानाश्रेणि सब प्रदेश असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। इस प्रकार अल्पबहुत्व प्ररूपणा समाप्त हुई। तथा आठ अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर तेईस वर्ग-णाओंकी प्ररूपणा करने पर आभ्यन्तर वर्गणा समाप्त होती है।

अब यहां इस बाह्य वर्गणाकी अन्य प्ररूपणा कर्तव्य है ॥ ११७।

शंका– औदारिक आदि पाँच शरीरोंकी बाह्य वर्गणा संज्ञा कैसे है? इन्द्रिय और नोइन्द्रियसे अग्राह्य पुद्गलोंकी बाह्य संज्ञा तो हो नहीं सकती, क्योंकि, परमाणु आदि वर्गणाओंमें भी उनसे कोई विशेषता नहीं पाई जाती है, इसलिए उन्हें भी बाह्य वर्गणापनेका प्रसंग प्राप्त होता है। वे जीवप्रदेशोंसे पृथग्भूत हैं, इसलिए पाँच शरीरोंकी बाह्य संज्ञा है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, दूध और जलके समान परस्परमें एक दूसरेमें प्रविष्ट हुए जीव और शरीरोंका आभ्यन्तरभाव और बाह्यभाव नहीं बन सकता है। अनन्तानन्त विस्रसोपचयरूप परमाणुओंके मध्यमें पाँचो शरीरोंके परमाणु अवस्थित हैं इसलिए उनकी बाह्य संज्ञा है सो ऐसा कथन करना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, भीतर स्थित विस्रसोपचय स्कन्धोंकी बाह्य संज्ञा होनेमें विरोध आता है। इसलिए बाह्यवर्गणा यह संज्ञा नहीं बनती है?

समाधान– यहां अब इस शंकाका परिहार करते हैं। यथा––पूर्वोक्त तेईस वर्गणाओंसे

※ आ०प्रतौ 'अण्णा परूवणा' इति पाठः। ◎ अ०प्रतौ 'जीवसरीराणमब्भंतर–' इति पाठः। * प्रतिषु 'तम्हा' इति स्थाने 'तं जहा' इति पाठः।

जहा-पुव्वुत्ततेवीसवग्गणाहिंतो पंचसरीराणि पुधभूदाणि त्ति तेसिं बाहिरववएसो। तं जहा-ण ताव पंचसरीराणि अचित्तवग्गणासु णिवदंति, सचित्ताणमचित्तभावविरोहादो। ण च सचित्तवग्गणासु णिवदंति, विस्सासुवचएहि विणा पंचण्हं सरीराणं परमाणूणं चेव गहणादो। तम्हा पंचण्हं सरीराणं बाहिरवग्गणा त्ति सिद्धा सण्णा। तत्थ इमा परूवणा कायव्वा भवदि-

तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति-सरीरिसरीरपरूवणा सरीरपरूवणा सरीरविस्सासुवचयपरूवणा विस्सासुवचयपरूवणा चेदि ॥ ११८ ॥

सरीरी णाम जीवा। तेसिं सरीराणं पत्तेयसाहारणभेयाणं परूवयत्तादो सरीरिसरीराणं च पत्तेयसाहारणलक्खणाणं परूवणत्तादो वा सरीरिसरीरपरूवणा णाम। पंचण्हं सरीराणं पदेसपमाणं तेसिं पदेसणिसेयक्कमं पदेसथोवबहुत्तं च परूवेदि त्ति सरीरपरूवणा णाम। पंचण्हं सरीराणं विस्सासुवचयसंबंधकारणणिद्धलुक्खगुणाणमोरालिय[1]-वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयपरमाणुविसयाणमविभागपडिच्छेदपरूवणा जत्थ कीरदि सा सरीरविस्सासुवचयपरूवणा णाम। तेसिं[2] चेव परमाणूणं जीवादो मुक्काणं[3] विस्सासुवचयस्स परूवणा जत्थ कीरदि सा विस्सासुवचयपरूवणदा णाम।

पाँच शरीर पृथग्भूत हैं, इसलिए इनकी बाह्य संज्ञा है। यथा-पाँच शरीर अचित्त वर्गणाओंमें तो सम्मिलित किये नहीं जा सकते, क्योंकि, सचित्तोंको अचित्त माननेमें विरोध आता है। उनका सचित्त वर्गणाओंमें भी अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि, विस्रसोपचयोंके बिना पाँच शरीरोंके परमाणुओंका ही सचित्त वर्गणाओंमें ग्रहण किया है। इसलिए पाँचों शरीरोंकी बाह्य वर्गणा यह संज्ञा सिद्ध होती है। उसमें यह प्ररूपणा करने योग्य है-

वहां ये चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं-शरीरिशरीरप्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा, शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा और विस्रसोपचयप्ररूपणा ॥ ११८ ॥

शरीरी जीवोंको कहते हैं। उनके प्रत्येक और साधारण भेदवाले शरीरों का प्ररूपण करनेवाला होनेसे अथवा प्रत्येक और साधारण लक्षणवाले शरीरी और शरीरोंका प्ररूपण करनेवाला होनेसे शरीरिशरीरप्ररूपणा संज्ञा है। पाँचों शरीरोंके प्रदेशोंके प्रमाणका, उनके प्रदेशोंके निषेक क्रमका और प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका कथन करता है, इसलिए शरीरप्ररूपणा संज्ञा है। जिसमें औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तेजस और कार्मण परमाणुओं को विषय करनेवाले पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयके सम्बन्धके कारण स्निग्ध और रूक्षगुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी प्ररूपणा की जाती है उसकी शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा संज्ञा है। तथा जिसमें जीवसे मुक्त हुए उन्हीं परमाणुओंके विस्रसोपचयकी प्ररूपणा की जाती है उसकी विस्रसोपचयप्ररूपणा संज्ञा है।

---

[1] म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु '-गुणियमोरालिय-' इति पाठः। [2] म०प्रतौ 'तेसिं चेव परमाणूणं' इत्यादि वाक्यं पुनरपि निबद्धमस्ति। [3] म०प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'मुक्कमारण' इति पाठः।

एदेसिं चदुण्हमणुयोगद्दाराणं कमेणेत्थ परूवणा कीरदे–

सरीरिसरीरपरूवणदाए अत्थि जीवा पत्तेय–साधारण–सरीरा ॥ ११९ ॥

एक्कस्सेव जीवस्स जं सरीरं तं पत्तेयसरीरं। तं सरीरं जेसिं जीवाणं अत्थि ते पत्तेयसरीरा णाम। बहूणं जीवाणं जमेगं सरीरं तं साहारणसरीरं णाम। तत्थ जे वसंति जीवा ते साहारणसरीरा। अथवा पत्तेयं पुधभूदं सरीरं जेसिं ते पत्तेयसरीरा। साहारणं सामण्णं सरीरं जेसिं जीवाणं ते साहारणसरीरा। एवं सरीराणि सरीरिणो च दुविहा[1] चेव होंति, तदियस्स अणुवलंभादो।

तत्थ जे ते साहारणसरीरा ते णियमा वणप्फदिकाइया। अवसेसा पत्तेयसरीरा ॥ १२० ॥

साहारणसरीरा जीवा वणप्फदिकाइया चेवे त्ति वयणेण साहारणसरीरं वणप्फदिकाइएसु णियमिदं। वणप्फदिकाइया पुण अणियदा 'यत एवकारकरणं[2] ततोऽन्यत्रावधारणमिति' वचनात्। तेण वणप्फदिकाइया पत्तेयसरीरा वि अत्थि त्ति घेत्तव्वं। अवसेसा पुण जीवा पत्तेयसरीरा चेव।

अब इन चार अनुयोगद्वारोंका क्रमसे यहां पर कथन करते हैं–

शरीरिशरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा जीव प्रत्येक शरीरवाले और साधारण शरीरवाले हैं ॥ ११९ ॥

एक ही जीवका जो शरीर है उसकी प्रत्येकशरीर संज्ञा है। वह शरीर जिन जीवोंके है वे प्रत्येकशरीर जीव कहलाते हैं। बहुत जीवोंका जो एक शरीर है वह साधारणशरीर कहलाता है। उनमें जो जीव निवास करते हैं वे साधारणशरीर जीव कहलाते हैं। अथवा प्रत्येक अर्थात् पृथग्भूत शरीर जिन जीवोंका है वे प्रत्येकशरीर जीव हैं। तथा साधारण अर्थात् सामान्य शरीर जिन जीवोंका है वे साधारणशरीर जीव कहलाते हैं। इसप्रकार शरीर और शरीरी दो प्रकारके ही होते हैं, क्योंकि, तीसरा प्रकार उपलब्ध नहीं होता।

उनमेंसे जो साधारणशरीर जीव हैं वे नियमसे वनस्पतिकायिक होते हैं। अवशेष जीव प्रत्येकशरीर हैं ॥ १२० ॥

साधारणशरीर जीव वनस्पतिकायिक ही होते हैं इस वचनसे साधारणशरीर वनस्पतिकायिकोंमें नियमित किया गया है। परन्तु वनस्पतिकायिक अनियत हैं, क्योंकि, जहां एवकार किया जाता है उससे अन्यत्र अवधारण होता है ऐसा वचन है, इसलिए वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर भी हैं ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। परन्तु अवशेष जीव प्रत्येकशरीर ही हैं।

---

[1] अ०का०प्रत्योः 'दुविहो' इति पाठः। [2] म०प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु ' एवकारणं ' इति पाठः।

तत्थ इमं* साहारणलक्खणं भणिदं ॥ १२१ ॥

किमट्ठं लक्खणपरूवणा कीरदे? ण, लक्खणभेदेण विणा सरीरिसरीराणं भेदो णत्थि त्ति तब्भेदपरूवणट्ठं तदुत्तीदो। पत्तेयसरीरस्स किण्ण लक्खणं भणिदं? ण, साहारणसरीरस्स लक्खणे कहिदे संते तव्विवरीयलक्खणं पत्तेयसरीरमिदि उवदेसेण विणा तल्लक्खणावगमादो* ।

साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च ।
साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणिदं ॥ १२२ ॥

एदाए सुत्तगाहाए सरीरि-सरीराणं◎ दोण्हं पि लक्खणं परूविदं, एगलक्खणावगमेण इयरस्स वि लक्खणावगमादो। सरीरपाओग्गपोग्गलक्खंधगहणमाहारो। सो साहारणं सामण्णं होदि। साहारणमिदि णवुंसयलिंगणिद्देसो कथं कदो? किरियाविसेसेण भावेण। एगजीवे आहारिदे सव्वजीवा आहारिदा त्ति भणिदं होदि, अण्णहा साहारणत्ताणुववत्तीदो। आणो उस्सासो, अपाणो◎ णिस्सासो। तेसिमाणापाणाणं

वहाँ साधारणका यह लक्षण कहा है ॥ १२१ ॥

शंका– लक्षणका कथन किसलिए किया जाता है?

समाधान–नहीं, क्योंकि, लक्षणके भेदके बिना शरीरी और शरीरोंका भेद नहीं हो सकता, इसलिए उनके भेदोंका कथन करनेके लिए लक्षणके भेदका कथन किया है।

शंका– प्रत्येकशरीरका लक्षण क्यों नहीं कहा है?

समाधान– नहीं, क्योंकि, साधारणशरीरका लक्षण कह देने पर उससे विपरीत लक्षणवाला प्रत्येकशरीर है इस प्रकार उपदेशके बिना उसके लक्षणका ज्ञान हो जाता है।

साधारण आहार और साधारण उच्छ्वास-निःश्वासका ग्रहण यह साधारण जीवोंका साधारण लक्षण कहा गया है ॥ १२२ ॥

इस सूत्रगाथा द्वारा शरीरी और शरीर दोनोंका ही लक्षण कहा गया है, क्योंकि, एकके लक्षणका ज्ञान होने पर दूसरेके लक्षणका भी ज्ञान हो जाता है। शरीरके योग्य पुद्गलस्कन्धोंका ग्रहण करना आहार कहलाता है। वह साधारण अर्थात् सामान्य होता है।

शंका– सूत्रगाथामें 'साहारणं' इस प्रकार नपुंसकलिंगका निर्देश किसलिए किया है?

समाधान– क्रिया विशेषरूप भावके दिखलानेके लिए नपुंसकलिंगका निर्देश किया है। एक जीवके आहार करने पर सब जीवोंका आहार हो जाता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है, अन्यथा उसका साधारणपना नहीं बन सकता है।

'आण' शब्दका अर्थ उच्छ्वास है और 'अपाण' शब्दका अर्थ निःश्वास है। उन आना-

---

* ता०प्रतौ तण्ण (त्थ) इमं अ० प्रतौ 'तण्ण इमं' इति पाठः। * अ०प्रतौ 'तल्लक्खेणा वगमादो' इति पाठः। ◎ आ० प्रतौ 'सुत्तगाहाए सरीराणं का०प्रतौ 'सुत्तगाहाए सरीरसरीराणं' इति पाठः। ◎ ता०का० प्रत्योः 'अपाणो' इति पाठः।

गहणमुयाणं सव्वजीवाणं साहारणं सामण्णं । केसिं जीवाणं सामण्णं ति ☆ भणिदे साहारणजीवाणं । के साहारणजीवा ? एगसरीरणिवासिणो । अण्णसरीरणिवासिणं अण्णसरीरट्ठिएहि साहारणत्तं णत्थि, एगसरीरावासजणिदपच्चासत्तीए अभावादो । एदस्स भावत्थो– सव्वजहण्णेण पज्जत्तिकालेण जदि पुव्वुप्पण्णणिगोदजीवा सरीरपज्जत्ति-इंदियपज्जत्ति-आहार-आणापाणपज्जत्तीहि पज्जत्तयदा होंति । तम्हि सरीरे तेहि समुप्पण्णमंदजोगिणिगोदजीवा वि तेणेव कालेण एदाओ पज्जत्तीओ समाणेंति, अण्णहा आहारगहणादीणं* साहारणत्ताणुववत्तीदो । जदि दीहकालेण पढममुप्पण्णजीवा चत्तारि पज्जत्तीओ समाणेंति तो तम्हि सरीरे पच्छा उप्पण्णजीवा तेणेव कालेण ताओ पज्जत्तीओ समाणेंति त्ति भणिदं होदि । कथमेगेण जीवेण गहिदो आहारो तक्काले तत्थ अणंताणं जीवाणं जायदे? ण, तेणाहारेण जणिदसत्तीए पच्छा उप्पण्णजीवाणं उप्पण्णपढमसमए चेव उवलंभादो । जदि एवं तो आहारो साहारणो होदि आहारजणिदसत्ती साहारणे त्ति वत्तव्वं ? ण एस दोसो, कज्जे कारणोवयारेण आहारजणिदसत्तीए वि आहारववएससिद्धीदो । सरीरिंदियपज्जत्तीणं साहारणत्तं

पामका ग्रहण अर्थात् उपादान सब जीवोंके साधारण है अर्थात् सामान्य है । किन जीवोंके साधारण है ऐसा पूछनेपर गाथासूत्रमें 'साधारण जीवोंके' ऐसा कहा है ।

शंका– साधारण जीव कौन हैं ।

समाधान– एक शरीरमें निवास करनेवाले जीव साधारण हैं ।

अन्य शरीरोंमें निवास करनेवाले जीवोंके उससे भिन्न शरीरोंमें निवास करनेवाले जीवोंके साथ साधारणपना नहीं है, क्योंकि, उनमें एक शरीरके आवाससे उत्पन्न हुई प्रत्यासत्तिका अभाव है । इसका अभिप्राय यह है–सबसे जघन्य पर्याप्ति कालकेद्वारा यदि पहले उत्पन्न हुए निगोद जीव शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, आहारपर्याप्ति और उच्छ्वासनिःश्वासपर्याप्तिसे पर्याप्त होते हैं तो उसी शरीरमें उनके साथ उत्पन्न हुए मन्द योगवाले निगोद जीवभी उसी कालके द्वारा इन पर्याप्तियोंको पूरा करते हैं, अन्यथा आहारग्रहण आदिका साधारणपना नहीं बन सकता है । यदि दीर्घकालकेद्वारा पहले उत्पन्न हुए जीव चारों पर्याप्तियोंको प्राप्त करते हैं तो उसी शरीरमें पीछेसे उत्पन्न हुए जीव उसी कालकेद्वारा उन पर्याप्तियोंको पूरा करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका– एक जीवकेद्वारा ग्रहण किया गया आहार उस कालमें वहां अनन्त जीवोंका कैसे हो सकता है ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, उस आहारसे उत्पन्न हुई शक्तिका बादमें उत्पन्न हुए जीवोंके उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही ग्रहण हो जाता है ।

शंका– यदि ऐसा है तो 'आहार साधारण है' इसके स्थानमें 'आहारजनित शक्ति साधारण है' ऐसा कहना चाहिए ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, कार्यमें कारणका उपचार कर लेनेसे आहारजनित शक्तिके भी आहार संज्ञा सिद्ध होता है ।

☆ म०प्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रतौ 'सामण्णेत्ति' अ०का०प्रत्योः 'सामण्णा त्ति' इति पाठः ।

* आ०प्रतौ 'अण्णहारगहणादीणं' इति पाठः ।

किण्ण परूविदं ? ण, आहाराणावाणणिद्देसो देसामासियो त्ति तेसिं पि एत्थेव अंतब्भावादो । एवमेदं साहारणलक्खणं भणिदं । संपहि एदीए गाहाए भणिदत्थस्सेव दढीकरणट्ठं उत्तरगाहा भणदि –

एयस्स अणुग्गहणं बहूण साहारणाणमेयस्स ।
एयस्स जं बहूणं समासदो तं पि होदि एयस्स ॥ १२३ ॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एयस्स णिगोदजीवस्स अणुग्गहणं पज्जत्तिणिप्पायणट्ठं जं परमाणुपोग्गलग्गहणं णिप्पण्णसरीरस्स जं परमाणुपोग्गलग्गहणं वा तं बहूणं साहारणाणं बहूणं साहारणजीवाणं तत्र शरीरे तस्मिन् काले सतामसतां च भवति । कुदो ? तेणाहारेण जणिदसत्तीए तत्थतणसव्वजीवेसु अक्कमेणुवलंभादो, तेहि परमाणूहि णिप्फण्णसरीरावयवफलस्स सव्वजीवेसु उवलंभादो वा । जदि एगजीवम्हि जोगेणागदपरमाणुपोग्गला तस्सरीरमहिट्ठिदाणं अण्णजीवाणं चेव होंति तो तस्स जोगिल्लजीवस्स तमणुग्गहणं ण होदि, अण्णसंबंधित्तादो (१) त्ति भणिदे परिहारं भणदि– एयस्स एदस्स वि जीवस्स जोगवंतस्स तमणुग्गहणं होदि । कुदो ? तप्फलस्स एत्थ वि उवलंभादो । कथमेगेण

शंका– शरीरपर्याप्ति और इन्द्रियपर्याप्ति ये सबसे साधारण हैं ऐसा क्यों नहीं कहा ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, गाथासूत्रमें 'आहार' और 'आनापान' पदका ग्रहण देशामर्षक है, इसलिये उनका भी इन्हींमें अन्तर्भाव हो जाता है ।

इस प्रकार यह साधारण लक्षण कहा है । अब इस गाथाद्वारा कहे गये अर्थ को ही दृढ करनेके लिए आगेकी गाथा कहते हैं–

एक जीवका जो अनुग्रहण अर्थात् उपकार है वह बहुत साधारण जीवोंका है और इसका भी है । तथा बहुत जीवोंका जो अनुग्रहण है वह मिलकर इस विवक्षित जीवका भी है ॥ १२३ ॥

एक निगोद जीवका अनुग्रहण अर्थात् पर्याप्तियोंको उत्पन्न करनेके लिए जो परमाणु पुद्गलोंका ग्रहण है या निष्पन्न हुए शरीरके जो परमाणु पुद्गलोंका ग्रहण है वह 'बहूणं साहारणाण' अर्थात् उस शरीरमें उस कालमें रहनेवाले और नहीं रहनेवाले बहुत साधारण जीवोंका होता है, क्योंकि, उस आहारसे उत्पन्न हुई शक्ति वहांके सब जीवोंमें युगपत् उपलब्ध होती है । अथवा उन परमाणुओंसे निष्पन्न हुए शरीरके अवयवोंका फल सब जीवोंमें उपलब्ध होता है ।

शंका– यदि एक जीवमें योगसे आये हुए परमाणु पुद्गल उस शरीरमें रहनेवाले अन्य जीवोंके ही होते हैं तो योगवाले उस जीवका वह अनुग्रहण नहीं हो सकता, क्योंकि, उसका सम्बन्ध अन्य जीवोंके साथ पाया जाता है ?

समाधान– अब इस शंकाका परिहार करते हैं– इस एक योगवाले जीवका भी वह अनुग्रहण होता है, क्योंकि, उसका फल इस जीव में भी उपलब्ध होता है ।

---

(१) म०प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'अण्णसंबंधत्तादो' इति पाठः ।

वि दत्ताणं पोग्गलाणं फलमण्णे भुंजंति? ण एस दोसो, एक्केण वि दत्तधणधण्णाईणं अविहत्तधणभाउआणं धूउपिउपुत्तणत्तुअंताणं च भोत्तुभावदंसणादो। तत्थेव सरीरे णिवसंतजीवाणं जोगेणागदपरमाणुपोग्गला किमेदस्स अप्पिदजीवस्स होंति आहो ण होंति त्ति भणिदे भणदि- बहूणं जमणुग्गहणं तं समासदो पिंडभावेण एयस्स एदस्स वि अप्पिदणिगोदजीवस्स होदि, एगसरीरावासिदअणंतजीवजोगेणागदपरमाणुपोग्गलकलावजणिदसत्तीए एत्थ उवलंभादो। जदि एवं तो एदेसिं बहूणं जीवाणं तमणुग्गहणं ण होदि□, तप्फलस्स अण्णत्थ चेव एगम्हि जीवे उवलंभादो त्ति भणिदे भणदि- 'एयस्स' एव एकशब्दोऽन्तर्भावितवीप्सार्थः, तेनैकैकस्यापि जीवस्य तदनुग्रहणं भवति, तेभ्योऽन्यजीवेषु शक्त्युत्पत्तिकाल एव स्वस्मिन्नपि तदुत्पत्तेः।

समगं वक्कंताणं समगं तेसिं सरीरणिप्पत्ती।
समगं च अणुग्गहणं समगं उस्सासणिस्सासो ॥ १२४ ॥

एक्कम्हि सरीरे जे पढमं चेव उप्पण्णा* अणंता जीवा जे च पच्छा उप्पण्णा ते सव्वे समगं वक्कंता णाम⊕। कथं भिण्णकालुप्पण्णाणं जीवाणं समगत्तं जुज्जदे? ण,

शंका- एक जीवकेद्वारा दिये गये पुद्गलोंका फल अन्य जीव कैसे भोगते हैं ?

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि एक के द्वारा भी दिये गये धन धान्यादिक को अविभक्त धनवाले भाई, लडकी, पिता, पुत्र और नाती तक के जीव भोगते हुए देखे जाते हैं।

उसी शरीरमें निवास करनेवाले जीवोंके योगसे आये हुए परमाणुपुद्गल क्या एक विवक्षित जीवके होते है या नहीं होते हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं- बहुत जीवोंका जो अनुग्रहण है वह मिल कर एक का अर्थात विवक्षित निगोद जीवका भी होता है, क्योंकि एक शरीरमें निवास करनेवाले अनन्त जीवोंके योगसे आये हुए परमाणु पुद्गल कलापसे उत्पन्न हुई शक्ति इस जीव में पाई जाती है। यदि ऐसा है तो इन बहुत जीवोंका वह अनुग्रहण नहीं होता है, क्योंकि उसका फल अन्यत्र ही एक जीव में उपलब्ध होता है, ऐसा कहने पर कहते हैं- 'एयस्स' यह 'एक' शब्द अन्तर्गर्भित वीप्सारूप अर्थको लिए हुए है, इसलिये यह फलित हुआ कि एक एक जीव का भी वह अनुग्रहण है, क्योंकि, उन पुद्गलोंसे अन्य जीवों में शक्ति के उत्पन्न होनेके कालमें ही अपनमें भी उसकी उत्पत्ति होती है।

एक साथ उत्पन्न होनेवालोंके उनके शरीरकी निष्पत्ति एक साथ होती है, एक साथ अनुग्रहण होता है और एक साथ उच्छ्वास-निःश्वास होता है ॥१२४॥

एक शरीरमें जो पहले उत्पन्न हुए अनन्त जीव है और बादमें उत्पन्न हुए अनन्त जीव हैं वे सब एक साथ उत्पन्न हुए कहे जाते हैं।

शंका- भिन्न कालमें उत्पन्न हुए जीवोंका एक साथपना कैसे बन सकता है ?

---

* ता०प्रतिपाठोऽयम्। प्रतीषु '-धणभाउवाणाणं' इतिपाठः। ◎ अ०का०प्रत्योः धउपिउ धत्तण्णत्तुवणंताणं इति पाठः। □ ता०प्रतौ 'तमणुग्गहं ण होदि' अ०का०प्रत्योः 'तमणुग्गहण होदि' इति पाठः। ⊕ ता०प्रतौ 'पढम उप्पण्णा' का०प्रतौ 'पढमं चे उप्पण्णा' इति पाठः। ⊕ आ०प्रतौ वक्कंताणाम' का०प्रतौ 'वक्कताण णाम' इति पाठः।

एगसरीरसंबंधेण तेसिं सव्वेसिं पि समगत्तं पडि विरोहाभावादो। अथवा समए वक्कताणं ति सुत्तं वत्तव्वं। एक्कम्हि समए एक्कसरीरे उप्पण्णसव्वजीवा समए वक्कंता णाम। एक्कम्हि सरीरे पच्छा उप्पज्जमाणा जीवा अत्थि, कथं तेसिं पढमसमए चेव उप्पत्ती होदि ? ण, पढमसमए उप्पण्णाणं जीवाणमणुग्गहणफलस्स पच्छा उप्पण्ण-जीवेसु वि उवलंभादो। तम्हा एगणिगोदसरीरे उप्पज्जमाणसव्वजीवाणं पढमसमए चेव उप्पत्ती एदेण णाएण जुज्जदे। एवं दोहि प्पारेहि समगं वक्कंताणं जीवाणं तेसिं सरीरणिप्पत्ती समगं अक्कमेण चेव होदि। समगं च अणुग्गहणं, समुणुग्गहणादो। जेण कारणेण सव्वेसिं जीवाणं परमाणुपोग्गलग्गहणं समगं अक्कमेण होदि तेण आहार-सरीरिंदियणिप्पत्ती उस्सासणिस्सासणिप्पत्ती च समगं अक्कमेण होदि, अण्णहा अणुग्गहणस्स साहारणत्तविरोहादो। एगसरीरे उप्पण्णाणंतजीवाणं चत्तारिपज्जत्तीयो अप्पप्पणो ट्ठाणे समगं समप्पंति। अणुग्गहणस्स साहारणभावादो त्ति भणिदं होदि।

जत्थेउ मरइ जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं।
वक्कमइ जत्थ एक्को वक्कमणं तत्थणंताणं ॥ १२५ ॥

समाधान-- नहीं, क्योंकि, एक शरीरके सम्बन्धसे उन जीवोंके भी एकसाथपना होनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

अथवा 'समए वक्कंताणं' ऐसा सूत्र कहना चाहिये। एक समयमें एक शरीरमें उत्पन्न हुए सब जीव 'समए वक्कता' कहे जाते हैं।

शंका– एक शरीरमें बादमें उत्पन्न हुए जीव हैं ऐसी अवस्थामें उनकी प्रथम समयमेंही उत्पत्ति कैसे हो सकती है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, प्रथम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंके अनुग्रहणका फल बादमें उत्पन्न हुए जीवोंमें भी उपलब्ध होता है, इसलिए एक निगोदशरीरमें उत्पन्न होनेवाले सब जीवोंकी प्रथम समयमें ही उत्पत्ति इस न्यायके अनुसार बन जाती है।

इस प्रकार दोनों प्रकारोंसे एकसाथ उत्पन्न हुए जीवोंके उनके शरीरकी निष्पत्ति समगं अर्थात् अक्रमसे ही होती है। तथा एकसाथ अनुग्रहण होता है, क्योंकि, उनका अनुग्रहण समान है। जिस कारणसे सब जीवोंके परमाणु पुद्गलोंका ग्रहण समगं अर्थात् अक्रमसे होता है, इसलिये आहार, शरीर और इन्द्रियोंकी निष्पत्ति और उच्छ्वास-निःश्वासकी निष्पत्ति समगं अर्थात् अक्रमसे होती है। अन्यथा अनुग्रहणके साधारण होनेमें विरोध आता है। एक शरीरमें उत्पन्न हुए अनन्त जीवोंकी चार पर्याप्तियां अपने अपने स्थानमें एकसाथ समाप्त होती हैं, क्योंकि, अनुग्रहण साधारणरूप है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

जिस शरीरमें एक जीव मरता है वहाँ अनन्त जीवोंका मरण होता है। और जिस शरीरमें एक जीव उत्पन्न होता है वहाँ अनन्त जीवोंकी उत्पत्ति होती है॥ २२५॥

जत्थ सरीरे एगो जीवो मरदि तत्थ अणंताणं चेव णिगोदजीवाणं मरणं होदि। अवहारणं कुदो लब्भदे ? दु सद्दस्स⊛ अवहारणट्ठस्स संबंधादो। संखेज्जा असंखेज्जा वा एक्को वा ण मरंति, णिच्छएण एगसरीरे णिगोदरासिणो अणंता चेव मरंति त्ति भणिदं होदि। जत्थ णिगोदसरीरे एगो जीवो वक्कमदि उप्पज्जदि तत्थ सरीरे अणंताणं चेव णिगोदजीवाणं वक्कमणं उववादो होदि। एक्को वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा एक्कम्हि णिगोदसरीरे एक्कम्हि समए ण उप्पज्जंति किंतु अणंता चेव उप्पज्जंति त्ति भणिदं होदि। ते च एगबंधणबद्धा चेव होदूण उप्पज्जंति, अण्णहा पत्तेयसरीरवग्गणाए बादरसुहुमणिगोदवग्गणाए वा आणंतियप्पसंगादो। ण च एवं, तहाणुवलंभादो। बादरसुहुमणिगोदाणमवट्ठाणक्कमपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

बादरसुहुमणिगोदा बद्धा पुट्ठा य एयमेएण।
ते हु अणंता जीवा मूलयथूहल्लयादीहि ॥ १२६ ॥

एयसरीरट्ठिदबादरणिगोदा तत्थट्ठिदअण्णेहि बादरणिगोदेहि एगसरीरट्ठिदसुहुमणिगोदा अण्णेहि तत्थ ट्ठिदसुहुमणिगोदेहि बद्धा समवेदा संता अच्छंति। सो च

जिस शरीरमें एक जीव मरता है वहां नियमसे अनन्त निगोद जीवोंका मरण होता है।

शंका– इस स्थलपर अवधारण कहाँसे प्राप्त होता है ?

समाधान– गाथा सूत्रमें आये हुए 'दु' शब्दका अवधारण रूप अर्थके साथ सम्बन्ध है।

संख्यात, असंख्यात या एक जीव नहीं मरते हैं, किन्तु निश्चयसे एक शरीरमें निगोद राशिके अनन्त जीव ही मरते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। तथा जिस निगोद शरीरमें एक जीव वक्कमदि अर्थात् उत्पन्न होता है उस शरीरमें नियमसे अनन्त निगोद जीवोंका 'वक्कमणं' अर्थात् उत्पत्ति होती है। एक, संख्यात और असंख्यात जीव एक निगोदशरीरमें एक समयमें नहीं उत्पन्न होते हैं किन्तु अनन्त जीव ही उत्पन्न होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। वे एक बन्धनबद्ध होकर ही उत्पन्न होते हैं, अन्यथा प्रत्येक शरीरवर्गणा और बादर व सूक्ष्मनिगोदवर्गणा अनन्त प्राप्त होनेका प्रसंग आता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, वैसी वे पाई नहीं जातीं। अब बादरनिगोद और सूक्ष्मनिगोदके अवस्थानके क्रमका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं–

बादरनिगोद जीव और सूक्ष्मनिगोद जीव ये परस्परमें बद्ध और स्पृष्ट होकर रहते हैं। तथा वे अनन्त जीव हैं जो मूली, थूवर और आर्द्रक आदिके निमित्तसे होते हैं ॥ १२६ ॥

एक शरीरमें स्थित बादर निगोद जीव वहां स्थित अन्य बादर निगोद जीवोंके साथ तथा एक शरीरमें स्थित सूक्ष्म निगोद जीव वहां स्थित अन्य सूक्ष्म निगोद जीवोंके साथ बद्ध अर्थात्

⊛ अ० प्रतौ 'हुदाद्दस्स' का० प्रतौ 'हुदाहस्स' इति पाठः।

समवाओ देससव्वसमवायभेएण दुविहो। तत्थ देससमवायपडिसेहट्ठं भणदि–'पुट्ठा य एयमेएण' एक्कमेक्केण सव्वावयवेहि पुट्ठा संता चेव ते अच्छंति। णो अबद्धा णो अपुट्ठा च अच्छंति। अवहारणं कुदो लब्भदे? अवहारणट्ठहुसद्दसंबंधादो◎। ते केत्तिए त्ति भणिदे संखेज्जा असंखेज्जा वा ण होंति किं तु ते जीवा अणंता चेव होंति। केण* कारणेण होंति त्ति भणिदे 'मूलयथूहल्लयादीहि' मूलयथूहल्लयादि-कारणेहि◎ होंति। एत्थ आदिसद्देण अण्णे वि वणप्फदिभेदा घेत्तव्वा। एदेण बादर-णिगोदाणं जोणी परूविदा ण सुहुमणिगोदाणं जलथलआगासेसु सव्वत्थ तेसिं जोणि-दंसणादो। भावत्थो–मूलयथूहल्लयादीणं सरीराणि* बादरणिगोदाणं जोणी होंति। तेण तेसिं मूलयथूहल्लयादीणं पत्तेयसरीरजीवाणं बादरणिगोदपदिट्ठिदा त्ति सण्णा। वुत्तं च–

बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा।
जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदाए ॥ १७ ॥

तेण तत्थ मूलयथूहल्लयादीणं मणुसादिसरीरेसु असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोद-सरीराणि होंति। तत्थ एक्केक्कम्हि णिगोदसरीरे अणंताणंता बादरसुहुमणिगोदजीवा

समवेत होकर रहते हैं। वह समवाय देशसमवाय और सर्वसमवायके भेदसे दो प्रकारका है। उनमेंसे देशसमवायका प्रतिषेध करनेके लिए कहते हैं–'पुट्ठा य एयमेएण' परस्पर सब अवयवों से स्पृष्ट होकर ही वे रहते हैं। अबद्ध और अस्पृष्ट होकर वे नहीं रहते।

शंका– अवधारण कैसे प्राप्त होता है?

समाधान– अवधारणवाची हु शब्दके सम्बन्धसे प्राप्त होता है।

वे कितने हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं–वे संख्यात और असंख्यात नहीं होते हैं किन्तु वे जीव अनन्त ही होते हैं। वे किस कारणसे होते हैं ऐसा पूछने पर कहते हैं कि 'मूलयथूहल्ल-यादीहि' अर्थात् मूली, थूवर और आर्द्रक आदि कारणसे होते हैं। यहाँपर आये हुए 'आदि' शब्दसे वनस्पतिके अन्य भेद भी ग्रहण करने चाहिए। इसके द्वारा बादर निगोदोंकी योनि कही गई है, सूक्ष्म निगोदोंकी नहीं, क्योंकि, जल, थल और आकाशमें सर्वत्र उनकी योनि देखी जाती है। भावार्थ यह है–मूली, थूवर और आर्द्रक आदिके शरीर बादर निगोदोंकी योनि होते हैं, इसलिए मूली, थूवर और आर्द्रक आदिके प्रत्येकशरीर जीवोंकी बादरनिगोदप्रतिष्ठित संज्ञा है। कहा भी है––

योनिभूत बीजमें वही जीव उत्पन्न होता है या अन्य जीव उत्पन्न होता है। और जो मूली आदि हैं वे प्रथम अवस्थामें प्रत्येक हैं ॥ १७ ॥

इसलिए वहां मूली, थूवर और आर्द्रक आदिक तथा मनुष्यों आदिके शरीरोंमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं। वहां एक एक निगोदशरीरमें अनन्तानन्त बादर-

---

◎ अ०का प्रत्योः 'अवहारणट्ठसद्दसंबंधादो' इति पाठः। * ता० प्रतौ होंति। 'केण' इति पाठः। ◎ ता० प्रतौ 'भणिदे मूलयथूहल्लयादीहि कारणेहि' इति पाठः। * ता० प्रतौ '-दीणं (णि) सरीराणि' इति पाठः।

पढमसमए उप्पज्जंति । तत्थ चेव विदियसमए असंखेज्जगुणहीणा उप्पज्जंति । एवमसंखेज्जगुणहीणाए सेडीए ताव णिरंतरमुप्पज्जंति जाव आवलियाए असंखे० भागमेत्तकालो त्ति । पुणो एक्कदोतिण्णिसमए आदिं कादूण जावुक्कस्सेण आवलियाए असंखे० भागमेत्तकालमंतरिदूण पुणो एगदोतिण्णिसमए आदिं कादूण जावुक्कस्सेण आवलियाए असंखे० भागमेत्तकालं णिरंतरं उप्पज्जंति । एवं सांतरणिरंतरकमेण ताव उप्पज्जंति जाव उप्पत्तीए संभवो अत्थि । एवमेदेण कमेणुप्पण्णबादरसुहुमणिगोदजीवा एक्कम्हि सरीरे बद्धा पुट्ठा च होदूण अच्छंति त्ति भणिदं होदि । जीवरासी आयवज्जिदो सव्वओ तत्तो णिव्वुइमुवगच्छंतजीवाणमुवलंभादो । तदो संसारिजीवाणमभावो होदि त्ति भणिदे ण होदि । अलद्धतसभावणिगोदजीवाणमणंताणं संभवो होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

अत्थि अणंता जीवा जेहि ण पत्तो तसाण परिणामो ।
भावकलंकअपउरा णिगोदवासं ण* मुंचंति ॥ १७२ ॥

जेहि अदीदकाले कदाचि वि तसपरिणामो ण पत्तो ते तारिसा अणंता जीवा णियमा अत्थि, अण्णहा संसारे भव्वजीवाणभावावत्तीदो । ण चाभावो, तदभावे

निगोद जीव और सूक्ष्मनिगोद जीव प्रथम समयमें उत्पन्न होते हैं । वहीं पर द्वितीय समयमें असंख्यातगुणे हीन उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल व्यतीत होने तक असंख्यातगुणे हीन श्रेणिरूपसे निरन्तर जीव उत्पन्न होते है । पुनः एक, दो और तीन समयसे लेकर उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर देकर पुनः एक, दो और तीन समयसे लेकर उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर जीव उत्पन्न होते हैं इस प्रकार सान्तर-निरन्तरक्रमसे तब तक जीव उत्पन्न होते है जब तक उत्पत्ति सम्भव है । इस प्रकार इस क्रमसे उत्पन्न हुए बादरनिगोद जीव और सूक्ष्मनिगोद जीव एक शरीरमें बद्ध और स्पृष्ट होकर रहते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । जीवराशि आयसे रहित है और व्ययसहित है, क्योंकि, उसमेंसे मोक्षको जानेवाले जीव उपलब्ध होते हैं । इसलिये संसारी जीवोंका अभाव प्राप्त होता है ऐसा कहनेपर उत्तर देते हैं कि नहीं होता है, क्योंकि, त्रसभावको नहीं प्राप्त हुए अनन्त निगोद जीव सम्भव हैं, अतः इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं –

जिन्होंने अतीत कालमें त्रसभावको नहीं प्राप्त किया है ऐसे अनन्त जीव हैं, क्योंकि वे भावकलंकप्रचुर होते हैं, इसलिए निगोदवासको नहीं त्यागते ॥ १२७ ॥

जिन्होंने अतीत कालमें कदाचित् भी त्रसपरिणाम नहीं प्राप्त किया है वे वैसे अनन्त जीव नियमसे हैं अन्यथा संसारमें भव्य जीवोंका अभाव प्राप्त होता है। और उनका अभाव है

---

* ता०प्रतौ 'भावकलंकअ (ल) पउरा णिगोदजीवा (वास)ण' इति पाठः ।

अभव्वजीवाणं पि अभावावत्तीदो । ण च तं पि, संसारीणमभावापत्तीदो । ण चेदं पि, तदभावे असंसारीणं पि अभावप्पसंगादो । संसारीणमभावे संते कथं असंसारीणमभावो ? वुच्चदे, तं जहा- संसारीणमभावे संते असंसारिणो वि णत्थि[1], सव्वस्स सपडिवक्खस्स उवलंभण्णहाणुववत्तीदो । तदो सिद्धं अदीदकाले अपत्ततसभावा अणंता जीवा अत्थि त्ति । एत्थ उवउज्जंती गाहा-

सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया ।
भंगुप्पायधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवइ एक्का ॥१२८॥

किमट्ठं ते तसपरिणामं[2] ण लहंति? 'भावकलंकसुपउरा' भावकलंकः संक्लेशः, तं लाति आदत्त इति भावकलंकलः[3] । एकेन्द्रियजातावुत्पत्तेर्हेतुरिति यावत् । तस्य प्राचुर्यात् एत्थतणजीवा णिगोदवासं ण मुंचंति ण छंडंति त्ति भणिदं होदि ।

एगणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा ।
सिद्धेहि अणंतगुणा सव्वेण वि तीदकालेण ॥१२८॥

नहीं, क्योंकि, उनका अभाव होनेपर अभव्य जीवोंका भी अभाव प्राप्त होता है । और वह भी नहीं है, क्योंकि, उनका अभाव होने पर संसारी जीवोंका भी अभाव प्राप्त होता है । और यह भी नहीं है, क्योंकि, संसारी जीवोंका अभाव होने पर असंसारी जीवोंके भी अभावका प्रसंग आता है ।

शंका- संसारी जीवोंका अभाव होनेपर असंसारी जीवोंका अभाव कैसे सम्भव है ?

समाधान- अब इस शंकाका समाधान करते हैं । यथा-संसारी जीवोंका अभाव होने पर असंसारी जीव भी नहीं हो सकते, क्योंकि सब सप्रतिपक्ष पदार्थोंकी उपलब्धि अन्यथा नहीं बन सकती ।

इसलिये सिद्ध होता है कि अतीत कालमें त्रसभावको नहीं प्राप्त हुए अनन्त जीव हैं । यहाँ पर उपयुक्त पडनेवाली गाथा कहते हैं-

सत्ता सब पदार्थोंमें स्थित है, सविश्वरूप है, अनन्त पर्यायवाली है, व्यय, उत्पाद और ध्रुवत्वसे युक्त है, सप्रतिपक्षरूप है और एक है ॥१२८॥

वे त्रसपरिणामको क्यों नहीं प्राप्त करते हैं, इसके समाधानमें सूत्रगाथाके उत्तरार्धमें कहते है- 'भावकलंकसुपउरा' भावकलङ्क अर्थात् संक्लेश । उसे 'लाति' अर्थात ग्रहण करता है वह भावकलंकल कहलाता है । एकेन्द्रियजातिमें उत्पत्तिका हेतु यह उक्त कथनका तात्पर्य है । उसकी प्रचुरता होनेसे यहांके जीव निगोदवासको नहीं त्यागते हैं अर्थात् नहीं छोडते है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

एक निगोदशरीरमें द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा देखे गये जीव सब अतीत कालके द्वारा सिद्ध हुए जीवोंसे भी अनन्तगुणे हैं ॥१२८॥

---

[1] म०प्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रतौ 'वि अ (ण) त्थि' अ०का०प्रत्योः 'वि अत्थि' इति पाठः [2] अ०प्रतौ 'तसपरिणामाणं इति पाठः । [3] ता०प्रतौ 'भावकलंकः (कलः) अ०का०प्रत्योः भावकलंकः' इति पाठः ।

संसारिजीवाणमवोच्छेदे एगं हेउ* परूविय विदियहेउपरूवणट्ठमेदं गाहासुत्तमागदं । एक्कम्हि णिगोदसरीरे दव्वप्पमाणदो अणंता जीवा अत्थि त्ति णिद्दिट्ठा । युक्तीए होंता वि केत्तिया त्ति पुच्छिदे उत्तरमिदं सुत्तं । अतीतकाले जे सिद्धा तेहिंतो अणंतगुणा एक्कम्हि णिगोदसरीरे होंति । का सा जुत्ती, जाए एगणिगोदसरीरे अणंता जीवा उवलब्भंति ? सव्वजीवरासीए आणंतियं । जासिं संखाणं आयविरहियाणं वये संते वोच्छेदो ण होदि ताओ संखाओ संखेज्जासंखेज्जसण्णिदाओ । जासिं संखाणं आयविरहियाणं संखेज्जासंखेज्जेहि वड्ढिज्जमाणाणं पि वोच्छेदो ण होदि तासिमणंतमिदि सण्णा । सव्वजीवरासी वाणंतो तेण सो ण वोच्छिज्जदि, अण्णहा आणंतियविरोहादो । ण च अद्धपोग्गलपरियट्टेण वियहिचारो, तस्स केवलणाणस्स अणंतसण्णिदस्स विसयभावेण अणंतत्तसिद्धीदो । ण च मेए माणसण्णा असिद्धा, पत्थेण मिदजवेसु वि पत्थसण्णुवलंभादो । सव्वेण अदीदकालेण जे सिद्धा तेहिंतो एगणिगोदसरीरजीवाणमणंतगुणत्तं कुदो णव्वदे? जुत्तीदो चेव । तं जहा– असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरेसु जदि सव्वजीवरासी लब्भदि तो एगणिगोदसरीरम्हि* किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगणिगोदसरीरजीवाणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स असंखे० भागमेत्तं होदि । सिद्धा पुण

संसारी जीवोंकी व्युच्छित्ति कभी नहीं होती इस विषयमें एक हेतुका कथन करके दूसरे हेतुका कथन करनेके लिए यह माथासूत्र आया है । एक निगोदशरीरमें द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अनन्त जीव हैं यह पहले दिखला आये है । युक्तिसे होते हुए भी वे कितने हैं ऐसा पूछनेपर कहते हैं– अतीत कालमें जो सिद्ध हुए हैं उनसे एक निगोदशरीरमें अनन्तगुणे होते हैं ।

शंका– वह कौनसी युक्ति है जिसमे एक निगोदशरीरमें अनन्त जीव उपलब्ध होते है ?

समाधान– सब जीव राशिका अनन्त होना यही युक्ति है ।

आयरहित जिन संख्याओंका व्यय होनेपर सत्त्वका विच्छेद होता है वे संख्याएँ संख्यात और असंख्यात संज्ञावाली होती हैं । आयसे रहित जिन संख्याओंका संख्यात और असंख्यातरूपसे व्यय होनेपर भी विच्छेद नहीं होता है उनकी अनन्त संज्ञा है और सब जीवराशि अनन्त है, इसलिए वह विच्छेदको नहीं प्राप्त होती । अन्यथा उसके अनन्त होनेमें विरोध आता है । अर्धपुद्गलपरिवर्तनके साथ व्यभिचार आता है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, अनन्त संज्ञावाले केवलज्ञानका विषय होनेसे उसकी अनन्तरूपसे सिद्धि है । मेयमें मानकी संज्ञा असिद्ध है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, प्रस्थसे मापे गये यवोंमें प्रस्थ संज्ञाकी उपलब्धि होती है।

शंका– सब अतीत कालके द्वारा जो सिद्ध हुए हैं उनसे एक निगोदशरीरके जीव अनन्तगुणे हैं यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान– युक्तिसेही जाना जाता है । यथा– असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीरोंमें यदि सब जीवराशि उपलब्ध होती है तो एक निगोद शरीरमें कितनी प्राप्त होगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर एक निगोदशरीरके जीवोंका प्रमाण

---

* अ०का०प्रत्यो: 'एयहेउं' इति पाठः । ** अ०का०प्रत्योः 'होंतो वि' इति पाठः । *** ता०प्रतौ 'संत वोच्छेदो' इति पाठः । * ता०प्रतौ 'एकणिगोदजीवसरीरम्हि' इति पाठः ।

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अदीदकाले समयं पडि जदि वि असंखेज्जलोगमेत्ता सिज्झंति तो वि अदीदकालादो असंखेज्जगुणा चेव। ण च एवं, अदीदकालादो सिद्धाणमसंखे०भागत्तुवलंभादो। अदीदकालादो च सव्वजीवरासी अणंतगुणो कुदो㊀ णव्वदे? सोलसवदियअप्पाबहुगादो। तेण सिद्धं सिद्धेहिंतो एगणिगोदसरीरजीवाणमणंतगुणत्तं। तदो सव्वेण अदीदकालेण एगणिगोदसरीरजीवा वि ण सिज्झंति त्ति घेत्तव्वं। तत्थ णिगोदेसु जे ट्ठिदा जीवा ते दुविहा—चउग्गइणिगोदा णिच्चणिगोदा चेदि। तत्थ चउग्गइणिगोदा णाम(जे देव-णेरइय-तिरिक्ख-मणुस्सेसूप्पज्जियूण पुणो णिगोदेसु पविसिय अच्छंति ते चदुगइणिगोदा भण्णंति)तत्थ णिच्चणिगोदा णाम(जे सव्वकालं णिगोदेसु चेव अच्छंति ते णिच्चणिगोदा णाम)अदीदकाले तसत्तं पत्तजीवा सुट्ठु जदि बहुआ होंति तो अदीदकालादो असंखेज्जगुणं चेव। तं जहा— अंतोमुहुत्तकालेण जदि पदरस्स असंखे०भागमेत्तजीवा तसेसु उप्पज्जमाणा लब्भंति तो अदीदकालम्हि केवडिए लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए अदीदकालादो असंखेज्जगुणो तसरासी㊁ होदि। तेण जाणिज्जदि अदीदकाले तसभावमपत्तजीवाणमत्थित्तं सिज्झंतेसु जीवेसु संसारिजीवाणं वोच्छेदो च णत्थि त्ति।

सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। परन्तु सिद्ध जीव अतीत कालके प्रत्येक समय में यदि असंख्यात लोकप्रमाण सिद्ध होवें तो भी अतीत कालसे असंख्यातगुणे ही होंगे। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि सिद्ध जीव अतीत कालके असंख्यातवें भागप्रमाण ही उपलब्धि होते हैं।

शंका— सब जीवराशि अतीत कालसे अनन्तगुणी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— सोलहपदिक अल्पबहुत्वसे जाना जाता है।

इसलिये सिद्ध हुआ कि सिद्धोंसे एक निगोद शरीरके जीव अनन्तगुणे हैं। अतएव सभी अतीत कालकेद्वारा एक निगोदशरीरके जीव भी सिद्ध नहीं होते हैं यह ग्रहण करना चाहिए। उन निगोदोंमें जो जीव स्थित हैं वे दो प्रकारके हैं— चतुर्गतिनिगोद और नित्यनिगोद। उनमेंसे पहले चतुर्गतिनिगोद जीवोंका लक्षण कहते हैं-(जो देव, नारकी, तिर्यञ्च और मनुष्योंमें उत्पन्न होकर पुनः निगोदोंमें प्रवेश करके रहते हैं वे चतुर्गतिनिगोद जीव कहे जाते हैं) अब नित्यनिगोद जीवोंका लक्षण कहते हैं-(जो सदा निगोदोंमेंही रहते हैं वे नित्यनिगोद जीव हैं)अतीत कालमें त्रसपनेको प्राप्त हुए जीव यदि बहुत अधिक होते हैं तो अतीत कालसे असंख्यातगुणे ही होते हैं। यथा अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा यदि प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव त्रसोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं तो अतीत कालमें कितने प्राप्त होंगे, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देनेपर अतीत कालसे असंख्यातगुणी त्रसराशि होती है। इससे जाना जाता है कि अतीत कालमें त्रसभावको नहीं प्राप्त हुए जीवोंका अस्तित्व है और जीवोंके सिद्ध होनेपर भी संसारी जीवोंका विच्छेद नहीं होता।

㊀ अ०का०प्रत्योः 'अणंतगुणा कुदो' इति पाठः। ㊁ अ०प्रतौ 'गुणा तसरासी' इति पाठः।

एदेण अट्ठपदेण तत्थ इमाणि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति–संतपरूवणा दव्वपमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो फोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि ॥ १२९ ॥

सरीरिसरीरपरूवणाए एदाणि अट्ठ अणुओगद्दाराणि होंति। अणियोगद्दारेहि विणा सरीरिसरीरपरूवणा किण्ण कीरदे ? ण, तेहि विणा सुहेण अत्थावगमाणुववत्तीदो।

Digitized by - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

संतपरूवणदाए दुविहो णिद्देसो– ओघेण आदेसेण ॥ १३०॥

एवं दुविहो चेव णिद्देसो होदि, दव्वट्ठियपज्जवट्ठियभेदेण दुविहाणं चेव सोदाराणमुवलंभादो। तत्थ दव्वट्ठियजणाणुग्गहट्ठमोघेण पज्जवट्ठियजणाणुग्गहट्ठमादेसेण परूवणा कीरदे। तत्थ संखित्तवयणकलावो ओघो णाम। असंखित्तवयणकलावो आदेसो।

ओघेण अत्थि जीवा बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा असरीरा ॥ १३१ ॥

विग्गहगदीए वट्टमाणा जीवा चदुगदिया बिसरीरा णाम, तेसिं तत्थ तेजा-कम्मइय-

---

इस अर्थपदके अनुसार यहां ये अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं– सत्प्ररूपणा, द्रव्यप्रमाणानुगम, क्षेत्रानुगम, स्पर्शनानुगम, कालानुगम, अन्तरानुगम, भावानुगम और अल्पबहुत्वानुगम ॥१२९॥

शरीरिशरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा ये आठ अनुयोगद्वार होते हैं।

शंका– अनुयोगद्वारोंके बिना शरीरिशरीरप्ररूपणा क्यों नहीं की जाती है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उनके बिना सुखपूर्वक अर्थका ज्ञान नहीं हो सकता है।

सत्प्ररूपणाकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है– ओघ और आदेश ॥१३०॥

इस प्रकार दो प्रकारका ही निर्देश है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिकके भेदसे श्रोता दो ही प्रकारके उपलब्ध होते हैं। उनमेंसे द्रव्यार्थिक जनोंका अनुग्रह करनेके लिए ओघसे और पर्यायार्थिक जनोंका अनुग्रह करनेके लिए आदेशसे प्ररूपणा करते हैं। उन दोनोंमेंसे संक्षिप्त वचन कलापका नाम ओघ है और असंक्षिप्त वचन कलापका नाम आदेश है।

ओघसे दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले, चार शरीरवाले और शरीररहित जीव हैं ॥१३१॥

विग्रहगतिमें विद्यमान चारों गतिके जीव दो शरीरवाले हैं, क्योंकि, उनके वहां तैजसशरीर

सरीराणं दोण्हं चेव उवलंभादो। तिण्णि सरीराणि जेसिं जीवाणं ते तिसरीरा णाम। के ते ? ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि वा वट्टमाणा। चत्तारि सरीराणि जेसिं ते चदुसरीरा। के ते ? ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि ओरालिय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीरेहि वा वट्टमाणा। जेसिं सरीरं णत्थि ते असरीरा। के ते ? परिणिव्वुआ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु अत्थि जीवा बिसरीरा तिसरीरा ॥१३२॥

विग्गहगदीए णेरइया बिसरीरा चेव होंति, तत्थ वेउव्वियसरीरस्स उदयाभावेण तेजा-कम्मइयसरीराणं दोण्हं चेव उदयदंसणादो। पुणो तिसरीरा होंति, तत्थ वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं तिण्णं पि उदयदंसणादो।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥१३३॥

सत्तसु पुढवीसु जे णेरइया तेसिं विग्गहगदीए भंगो। बिसरीर-तिसरीरत्तणेण भेदाभावादो।

तिरिक्खगदीए तिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु ओघं ॥१३४॥

और कार्मणशरीर ये दो ही शरीर उपलब्ध होते हैं। जिन जीवोंके तीन शरीर होते हैं वे तीन शरीरवाले जीव कहलाते हैं। वे कौन हैं ? औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके साथ अथवा वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर, और कार्मणशरीरके साथ विद्यमान जीव तीन शरीरवाले हैं। चार शरीर जिनके होते हैं वे चार शरीरवाले जीव हैं। वे कौन हैं? औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके साथ अथवा औदारिकशरीर, आहारकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरके साथ विद्यमान जीव चार शरीरवाले होते हैं। जिनके शरीर नहीं है वे अशरीरी जीव हैं। वे कौन हैं ? परिनिर्वृत्तिको प्राप्त हुए जीव अशरीरी होते हैं।

आदेशसे गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव हैं ॥१३२॥

विग्रहगतिमें नारकी दो शरीरवाले होते हैं, क्यों कि वहां पर वैक्रियिकशरीरका उदय नहीं होनेसे तैजसशरीर और कार्मणशरीर इन दो शरीरोंका ही उदय देखा जाता है। अनन्तर तीन शरीरवाले होते हैं, क्योंकि वहां वैक्रियिकशरीर, तेजसशरीर और कार्मणशरीर इन तीनों शरीरोंका ही उदय देखा जाता है।

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकियोंके जानना चाहिए ॥१३३॥

सातों पृथिवियोंमें जो नारकी हैं उनमें सामान्य नारकियोंके समान भङ्ग है, क्योंकि दो शरीरपने और तीन शरीरपनेकी अपेक्षा उनसे इनमें कोई भेद नहीं है।

तिर्यञ्चगतिकी अपेक्षा तिर्यञ्च पन्चेन्द्रियतिर्यञ्च, पन्चेन्द्रियतिर्यञ्चपर्याप्त और

मूलोघे असरीरा अत्थि, एत्थ ते णत्थि, तेण ओघत्तं ण जुज्जदे ? असरीराणमभावस्स उवदेसेण विणा अवगम्ममाणत्तादो । अट्ठकम्मकवचादो णिग्गया असरीरा णाम । असेसकम्मुदयाविणाभावितिरिक्खगइणामकम्मोवइल्ला तिरिक्खा णाम । तेणुवदेसाभावे तिरिक्खेसु असरीराभावो सिद्धो त्ति ओघणिद्देसो कदो ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता अत्थि जीवा बिसरीरा तिसरीरा ॥ १३५ ॥

विग्गहगदीए बिसरीरा चेव, तत्थ ओरालियसरीरस्स उदयाभावादो, तेजा-कम्मइयसरीराणं संसारे सव्वत्थ उदयवोच्छेदाभावादो । सरीरगहिदपढमसमयप्पहुडि तिसरीरा चेव, तत्थ ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं उदयदंसणादो । चदुसरीरा पुण णत्थि, सेसतिरिक्खाणं व विउव्वणसत्तीए अभावादो मणुस्सेसु व तिरिक्खेसु आहार-सरीराभावादो च ।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओघं ॥१३६॥

एत्थ असरीराणमभावो तिरिक्खेसु व परूवेदव्वो* । सेसं सुगमं ।

पन्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिनी जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥१३४॥

शंका– मूलोघमें अशरीरी जीव है ऐसा कहा है, परन्तु यहां पर वे नहीं हैं, इसलिए ओघपना नहीं बनता है ?

समाधान– यहाँ पर अशरीरी जीवोंका अभाव उपदेशके बिना अवगम्यमान है । आठ कर्मरूपी कवचसे निकले हुए जीव अशरीरी होते हैं और समस्त कर्मोंके उदयके अविनाभावी तिर्यञ्चगति नामकर्मके उदयसे युक्त जीव तिर्यञ्च कहलाते हैं, इसलिये उपदेशके बिना भी तिर्यञ्चोंमें अशरीरी जीवोंका अभाव सिद्ध होता है, इसलिए वे ओघके समान हैं ऐसा निर्देश किया है ।

पन्चेन्द्रियतिर्यञ्चअपर्याप्त जीव दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं ॥ १३५ ॥

विग्रहगतिमें दो शरीरवाले ही होते हैं, क्योंकि वहां पर औदारिक शरीरका उदय नहीं होता तथा तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी संसारमें सर्वत्र उदयव्युच्छित्ति नहीं है। ये शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लेकर तीन शरीरवाले ही होते है, क्योंकि वहां पर औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरका उदय देखा जाता है । परन्तु चार शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि, शेष तिर्यञ्चोंमें जैसी विक्रिया करनेकी शक्ति है वैसी इनमें नहीं है । तथा मनुष्योंमें जैसे आहारकशरीर होता है वैसे तिर्यञ्चोंमें नहीं होता ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें ओघके समान भंग है ॥१३६॥

यहां असरीरी जीवोंका अभाव तिर्यञ्चोंके समान कहना चाहिए । शेष कथन सुगम है ।

---

* ता०प्रतौ 'तिरिक्खेसु (व–) परूवेदव्वो' इति पाठः ।

मणुसअपज्जत्ता अत्थि जीवा बिसरीरा तिसरीरा ॥१३७॥

एदस्स अत्थो सुगमो, तिरिक्खअपज्जत्तएसु परूविदत्तादो ।

देवगदीए देवा अत्थि जीवा विसरीरा तिसरीरा ॥१३८॥

विग्गहदीए विसरीरा, अण्णत्थ तिसरीरा । चदुसरीरा णत्थि, देवेसु ओरालियआहारसरीराणमुदयाभावादो । मणुस्सेसु पंचसरीरा किण्ण परूविदा ? ण, पत्तविउव्वणाणमिसीणं ☆ माहारलद्धीए अभावादो ।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धियविमाणवासियदेवा ॥१३९॥

कुदो ? विसरीरत्तणेण तिसरीरत्तणेण च भेदाभावादो ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरेइंदिया तेसिं पज्जत्ता पंचिंदिय✤ पंचिंदियपज्जत्ता ओघं ॥१४०॥

मनुष्यअपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं ॥१३७॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, क्योंकि तिर्यंच अपर्याप्तकोंके कथनके समय इसका कथन कर आये हैं ।

देवगतिकी अपेक्षा देव दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं ॥१३८॥

विग्रहगतिमें दो शरीरवाले और अन्यत्र तीन शरीरवाले होते हैं । चार शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि देवोंमें औदारिकशरीर और आहारकशरीरका उदय नहीं होता ।

शंका– मनुष्योंमें पाँच शरीरवाले जीव क्यों नहीं कहे ?

समाधान– नहीं, क्योंकि वैक्रियिकऋद्धिको प्राप्त हुए ऋषियोंके आहारकलब्धिका अभाव है ।

इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमानवासी तकके देवोंमें जानना चाहिये ॥१३९॥

क्योंकि वहाँ दो शरीरपने और तीन शरीरपनेकी अपेक्षा भेद नहीं है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त जीवोंका भङ्ग तथा पन्चेन्द्रिय और पन्चेन्द्रियपर्याप्त जीवोंका भङ्ग ओघके समान है ॥१४०॥

☆ ता०प्रतौ 'पत्तविउव्वमिसीण–' इति पाठः । ✤ ता०प्रतौ पज्जत्ता (पज्जला) 'पंचिंदिय–' अ०का०प्रत्योः 'पज्जतापज्जत्ता पंचिंदिय–' इति पाठः ।

एत्थ असरीराणमभावो पुव्वं व वत्तव्वो । ओघम्मि आहारसरीरुदओ अत्थि, एत्थं तं णत्थि, तेण ओघत्तं ण जुज्जदे ? ण, ओरालियसरीरुदएण सह उदयमागच्छमाणवेउव्वियसरीरोदयं पडुच्च एदेसिं चदुसरीरत्तणिद्देसो । तत्थ दोहि पयारेहि चदुसरीरत्तं संभवदि, एत्थ ण संभवदि, तदो ओघेण सह अत्थि भेदो त्ति भणिदे ण, जेण केण वि पयारेण संभवमाणचदुसरीरत्तावेक्खाए भेदाभावादो ।

बादरएइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदिया तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदिय-अपज्जत्ता णेरइयभंगो ॥१४१॥

णेरइयाणं व बिसरीरा तिसरीरा अत्थि त्ति भणिदं होदि । चदुसरीरा णत्थि, एदेसु विउव्वणसरीराभावादो आहारसरीराभावादो च ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा तेसिं बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइय-पत्तेयसरीरा तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउक्काइयअपज्जत्ता बादर-

---

यहां पर अशरीरी जीवोंका अभाव पहलेके समान कहना चाहिए ।

शंका– ओघमें आहारशरीरका उदय है और यहां वह नहीं है, इसलिए यहां ओघपना नहीं बनता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि औदारिकशरीरके उदयके साथ उदयको प्राप्त होनेवाले वैक्रियिकशरीरके उदयकी अपेक्षा इनके चार शरीरपनेका निर्देश किया है ।

शंका– वहां दोनों प्रकारसे चार शरीरपना सम्भव है पर यहां सम्भव नहीं है, इसलिए ओघसे यहां भेद है ही ?

समाधान– नहीं, क्योंकि जिस किसी भी प्रकारसे सम्भव चार शरीरपनेकी अपेक्षा भेद नहीं है, इसलिए यहाँ ओघपना बन जाता है ।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त व अपर्याप्त और पन्चेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें नारकियोंके समान भन्ग है ॥१४१॥

नारकियोंके समान दो शरीरवाले और तीनशरीरवाले होते है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । चार शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि इनमें विक्रिया करनेवाले शरीरका अभाव है और आहारकशरीरका अभाव है ।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, जलकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोद जीव, उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, उनके प्रर्याप्त और अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर

वाउक्काइयअपज्जत्ता सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता अत्थि जीवा बिसरीरा तिसरीरा ॥१४२॥

विग्गहगदीए बिसरीरा, अण्णत्थ तिसरीरा । कुदो ? एदेसु वेउव्विय-आहारसरीराणमभावादो ।

तेउक्काइया वाउक्काइया बादरतेउक्काइया*बादरवाउक्काइया तेसिं पज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता ओघं ॥ १४३ ॥

एत्थ बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमुवलंभादो । कथमेदेसु चदुसरीरसंभवो ? ण, एत्थ विउव्वमाणजीवाणमुवलंभादो ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी ओरालियकायजोगी अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ॥१४४॥

बिसरीरा णत्थि, विग्गहगईए मण-वचि-ओरालियकायजोगीणमभावादो । उत्तरसरीरं विउव्विदाणं कथमोरालियकायजोगो? ण, उत्तरसरीरस्स वि ओरालिय-

---

वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त और त्रसकायिक अपर्याप्त जीव दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले होते हैं ॥ १४२ ॥

विग्रहगतिमें दो शरीरवाले और अन्यत्र तीन शरीरवाले होते हैं, क्योंकि, इनमें वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका अभाव है ।

अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर वायुकायिक, उनके पर्याप्त, त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥१४३॥

इन जीवोंमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीर उपलब्ध होते हैं ।

शंका– इनमें चार शरीर कैसे सम्भव है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, इनमें विक्रिया करनेवाले जीव पाये जाते हैं, इसलिए उस समय चार शरीर सम्भव हैं ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी, पांचों वचनयोगी और औदारिककाययोगी जीव तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले होते हैं ॥ १४४ ॥

इनमें दो शरीरवाले जीव नहीं होते, क्योंकि, विग्रहगतिमें मनोयोगी, वचनयोगी और औदारिककाययोगी जीवोंका अभाव है ।

पु. 2 पृ. 296
पु. 3 पृ. 329
पु. 4 पृ. 402
पु. 5 पृ. 238
पु. 5 पृ. 84

शंका– उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाले जीवोंके औदारिककाययोग कैसे सम्भव है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उत्तर शरीर भी औदारिककाय है । यदि कहा जाय कि

---

* अ०प्रतौ 'तेउक्काइया बादरतेउक्काइया' इति पाठः ।

कायत्तादो । ण च ओरालियसरीरणामकम्मोदयजणिदस्स विक्किरियसरूवस्स ओरालियसरीरत्तं फिट्टदि, विरोहादो ।

कायजोगी ओघं ॥१४५॥

कुदो ? तत्थ विग्गहगदीए तिसरीराणं विउव्विदेसु उट्ठाविदआहारसरीरेसु[◌] च चदुसरीराणमण्णत्थ तिसरीराणमुवलंभादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगि - वेउव्वियकायजोगि - वेउव्वियमिस्स-कायजोगीसु अत्थि जीवा तिसरीरा ॥१४६॥

एदेसु बिसरीरा णत्थि, विग्गहगदीए अभावादो । चदुसरीरा वि णत्थि आहारसरीरस्स उदयाभावादो, अपज्जत्तकाले विउव्वणसत्तीए अभावादो च । विउव्वमाणदेव-णेरइएसु वि ण चत्तारि सरीराणि, ओरालियसरीरस्सेव वेउव्विय-सरीरस्स विउव्वणाविउव्वणभेदेण दुविहभावाणुवलंभादो । पारिसेसिएण तिसरीरा चेव ।

औदारिकशरीर नामकर्मके उदयसे पैदा हुए विक्रियास्वरूप शरीरका औदारिकपना नहीं रहता सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध आता है ।

विशेषार्थ– मनोयोगी और वचनयोगी जीवोंमें औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण अथवा औदारिक, आहारक, तैजस और कार्मण इस तरह दो प्रकार से चार शरीर संभव है किन्तु औदारिककाययोगी जीवोंमें औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण ये चार शरीर ही संभव हैं, क्योंकि आहारकशरीरके समय औदारिककाययोग नहीं होता, किन्तु मनोयोग व वचनयोग संभव है ।

काययोगी जीवोंका भंग ओघके समान है ॥१४५॥

क्योंकि वहां विग्रहगतिमें दो शरीर, विक्रिया करनेपर और आहारकशरीरके उत्पन्न करने पर चार शरीर तथा अन्यत्र तीन शरीर उपलब्ध होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीव होते हैं ॥१४६॥

इनमें दो शरीर नहीं होते, क्योंकि विग्रहगतिका अभाव है । चार शरीर भी नहीं होते, क्योंकि आहारकशरीरका उदय नहीं है तथा अपर्याप्त कालमें विक्रिया करनेकी शक्तिका अभाव है । विक्रिया करनेवाले देव और नारकियोंमें भी चार शरीर नहीं होते, क्योंकि जिस प्रकार औदारिकशरीरका विक्रिया और अविक्रियाके भेदसे द्विविधपना उपलब्ध होता है उस प्रकार वैक्रियिक शरीरका विक्रिया और अविक्रियाके भेदसे द्विविधपना नहीं होता। पारिशेष-न्याय से ये तीन शरीरवाले ही होते हैं ।

[◌] ता०प्रतौ 'उट्ठाविद (जा) आहारसरीरेसु' अ०प्रतौ 'उट्ठविदजा आहारसरीरेसु' इति पाठः ।

आहारकायजोगी आहारमिस्सकायजोगी अत्थि जीवा चदुसरीरा ॥ १४७ ॥

तत्थ बिसरीरा णत्थि, विग्गहगदीए अभावादो। ण तिसरीरा वि, ओरालिय-आहार-तेजा-कम्मइयाणं चदुण्हं सरीराणं तत्थुवलंभादो। ण च ओरालियसरीरस्स उदओ णत्थि त्ति तत्थाभावो वोत्तुं सक्किज्जदे, तत्थ तदुदयसत्तीए संभवादो।

प्राप्तिस्थान :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

कम्मइयकायजोगी णेरइयाणं भंगो ॥ १४८ ॥

होदु णाम एदेसिं बिसरीरत्तं, विग्गहगदीए तेजा-कम्मइयसरीराणमुदयदंसणादो, कथं पुण तिसरीरत्तं ? ण, पदर-लोगपूरणाणं गदकेवलिम्हि तेजा-कम्मइयएहि सह ओरालियसरीरस्स उवलंभादो।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा ओघं ॥ १४९ ॥

तत्थ बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमुवलंभादो। इत्थि-णवुंसयवेदेसु आहार-

आहारक काययोगी और आहारक मिश्रकाययोगी जीव चार शरीरवाले होते हैं ॥ १४७ ॥

इन में दो शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि, यहां विग्रहगतिका अभाव है। तीन शरीरवाले भी नहीं होते, क्योंकि, औदारिकशरीर, आहारकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर ये चार शरीर इनमें पाये जाते हैं। यदि कहा जाय कि औदारिकशरीरका उदय नहीं होता, इसलिए वहां इसका अभाव कहना शक्य है सो ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, वहां उसके उदय होने की शक्ति सम्भव है।

विशेषार्थ- जिस समय प्रमत्तसंयत जीव आहारक शरीरका प्रारम्भ करता है उस समय से लेकर आहारक शरीरकी क्रिया समाप्त होनेतक उसके औदारिकशरीर नामकर्मका उदय नहीं होता, इसलिए वहां औदारिकशरीर का अभाव नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, एक तो उसके औदारिकशरीरके पुनः उदय होनेकी शक्ति विद्यमान है। दूसरे उसके औदारिकशरीरके उदय का फल औदारिकशरीर पूर्ववत् विद्यमान रहता है, इसलिए आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीव के चार शरीर कहे हैं।

कार्मणकाययोगी जीवोंमें नारकियोंके समान भंग है ॥ १४८ ॥

शंका- इनके दो शरीर होवें, क्योंकि, विग्रहगति में तैजसशरीर और कार्मणशरीरका उदय देखा जाता है। तीन शरीर कैसे हो सकते हैं ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त हुए केवली जिनके तैजसशरीर और कार्मणशरीर के साथ औदारिकशरीर भी उपलब्ध होता है।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदी जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ १४९ ॥

क्योंकि, इन जीवोंमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीर उपलब्ध होते हैं।

सरीरुदयाभावादो णत्थि चदुसरीरत्तं ? णं, तत्थ वि विउव्विदुत्तरसरीरेसु चदुसरीरत्तुवलंभादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई ओघं ॥१५०॥

सुगममेदं, बिसरीर-तिसरीराणं दोपयारेहि चदुसरीराणं च उवलंभादो ।

अवगदवेदा अकसाई अत्थि जीवा तिसरीरा ॥१५१॥

काणि तिण्णि सरीराणि ? ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि । बिसरीरा णत्थि, तत्थ अपज्जत्तकालाभावादो । चदुसरीरा वि णत्थि, विउव्वणाहारसरीरुट्ठावणव्वावाराणं तत्थाभावादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी ओघं ॥१५२॥

कथमेत्थ असरीरत्तं, ण आहारत्तं, ण चदुसरीरत्तं ? ण विउव्वणमस्सिदूण तदुवलंभादो ।

शंका– स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी जीवोंमें आहारकशरीरका उदय नहीं होनेसे चार शरीर नहीं होते ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उनमें भी उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेपर चार शरीर उपलब्ध होते हैं ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभकषायवाले जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥१५०॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और दो प्रकारसे चार शरीरवाले जीव यहां उपलब्ध होते हैं ।

अपगतवेदी और अकषायवाले जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥१५१॥

शंका– तीन शरीर कौन हैं ?

समाधान– औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर हैं ।

दो शरीरवाले जीव नहीं होते, क्योंकि, इनमें अपर्याप्त कालका अभाव है । चार शरीरवाले भी नहीं होते, क्योंकि, विक्रियारूप और आहारकशरीरके उपस्थापनरूप व्यापारका वहां अभाव है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुतज्ञानी जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥१५२॥

शंका– यहां अशरीरपना कैसे सम्भव है, आहारकशरीरपना भी नहीं है और चार शरीरपना भी नहीं हैं, इसलिए ओघके समान भंग कैसे हो सकता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, विक्रियाका आश्रय लेकर चार शरीरपनेकी उपलब्धि हो जाती है।

विभंगणाणी मणपज्जवणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा

मार्गदर्शक आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

मणपज्जवणाणीसु आहारसरीरस्स उदयाभावादो णत्थि चदुसरीरत्तं ? ण, विउव्वणमस्सिदूण दोसु णाणेसु चदुसरीरत्तुवलंभादो । णत्थि तिसरीरा, अपज्जत्तकाले एदेसिं णाणाणमभावादो ।

आभिणी-सुद-ओहिणाणी ओघं ।१५४।।

तिसरीर-चदुसरीरभावेण तत्तो भेदाभावादो ।

केवलणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा ।। १५५ ।।

सुगमं ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा संजदासंजदा अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ।।१५६।।

तिसरीरा णत्थि विग्गहगदीए अणुव्वय-महव्वयाणमभावादो ।

परिहारविसुद्धिसंजदा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा अत्थि जीवा तिसरीरा ।।१५७।।

विभंगज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी जीव तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले होते हैं ।।१५३।।

शंका– मनःपर्ययज्ञानवाले जीवोंमें आहारकशरीरका उदय नहीं होनेसे चार शरीरपना नहीं बनता ?

समाधान– नहीं, क्योंकि विक्रियाका आश्रय लेकर उक्त दो ज्ञानोंमें चार शरीरपनेकी उपलब्धि होती है ।

मात्र इनमें दो शरीरवाले जीव नहीं है, क्योंकि अपर्याप्त कालमें इन ज्ञानोंका अभाव है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें ओघके समान भंग है ।।१५४।।

क्योंकि दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरपनेकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

केवलज्ञानी जीव तीन शरीरवाले होते हैं ।।१५५।।

यह सूत्र सुगम है ।

संयम मार्गणाके अनुवादसे संयत, सामायिकशुद्धिसंयत, छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत और संयतासंयत जीव तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले होते हैं ।।१५६।।

दो शरीरवाले नहीं होते, क्योंकि विग्रहगतिमें अणुव्रतों और महाव्रतों का अभाव है ।

परिहारशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत, और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत जीव तीन शरीरवाले होते हैं ।।१५७।।

परिहारसुद्धिसंजदेसु कुदो णत्थि चदुसरीरा? परिहारसुद्धिसंजदस्स विउव्वण-रिद्धीए आहारिद्धीए च सह विरोहादो। सेसं सुगमं।

असंजदा ओघं ॥ १५८ ॥

सुगमं।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी ओघं ॥ १५९ ॥

सुगमं।

केवलदंसणी अत्थि जीवा तिसरीरा ॥ १६० ॥

सुगमं।

लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउलेस्सिया तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्सिया ओघं ॥ १६१ ॥

सुगमं।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ओघं ॥ १६२ ॥

सुगमं।

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

शंका– परिहारशुद्धिसंयत जीवोंमें चार शरीरवाले क्यों नहीं होते ?

समाधान– परिहारशुद्धिसंयत जीवके विक्रियाऋद्धि और आहारकऋद्धिके साथ इस संयमके होनेका विरोध है।

शेष कथन सुगम है।

असंयत जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥१५८॥

यह सूत्र सुगम है।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ १५९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

केवलदर्शनवाले जीव तीन शरीरवाले होते हैं ॥ १६० ॥

यह सूत्र सुगम है।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्या-वाले, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले और शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ १६१ ॥

यह सूत्र सुगम है।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्य अभव्य जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥१६२॥

यह सूत्र सुगम है।

समत्ताणुवादेण समाइट्ठी खइयसम्माइट्टी वेदगसम्माइट्टी उवसमसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी मिच्छाइट्ठी ओघं ॥१६३॥

विसरीर-तिसरीर-चदुसरीरत्तणेण भेदाभावादो ।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं मणजोगिभंगो ॥१६४॥

अपज्जत्तकाले सम्मामिच्छत्ताभावादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी असण्णी ओघं ॥१६५॥

सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहारामणजोगिभंगो ॥१६६॥

सुगमं ।

आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अणाहारो कम्मइयभंगो ॥१६७॥

एदं पि सुगमं ।

एवं संतपरूवणा समत्ता ।

एदमणियोगद्दारं सेसछण्णमणियोगद्दाराणं जेण आसेयं तेण[ग्रे]तेसिमेत्थ परूवणा

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंमें ओघके समान भग्न है ॥१६३॥

क्योंकि दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरपनेकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें मनोयोगी जीवोंके समान भग्न है ॥१६४॥

क्योंकि अपर्याप्त कालमें सम्यग्मिथ्यात्वका अभाव है ।

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भग्न है॥१६५॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें मनोयोगी जीवोंके समान भंग है ॥१६६॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनाहारक जीवोंमें कार्मणकाययोगी जीवोंके समान भंग है ॥१६७॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार सत्प्ररूपणा समाप्त हुई ।

यतः यह अनुयोगद्वार शेष छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय है, इसलिए उनकी यहां पर

[ग्रे] म०प्रतिपाठोऽयम् । ता०प्रतौ 'असेयं (आसियं) तेण' अ०प्रतौ 'आसियं तेण' इति पाठः ।

कायव्वा । तं जहा– दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो– ओघेण आदेसेण य। ओघेण बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता। चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा, पदरस्स असंखे०भागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, तासिं सेडीणं विक्खंभसूची पलिदो० असंखे०भागमेत्तघणंगुलाणि ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयेसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? पदरस्स असंखे०भागो । एवं सत्तसु पुढवीसु । णवरि बिदियादि जाव सत्तमि त्ति सेडीए असंखे०भागो वत्तव्वो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं । पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा,पदरस्स असंखे०भागो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त-मणुसअपज्जत्त-बीइंदिय तीइंदिय-चउरिंदियाणं तेसिं पज्जत्त-अपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्त-पुढवि०आउ०बादर पुढवि०-सुहुमपुढवि०-बादर-सुहुमआउ०-पुढवि०आउ०बादर-सुहुम-पज्जत्तअपज्जत्ताणं

प्ररूपणा करनी चाहिए । यथा–द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है- ओघ और आदेश । ओघसे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं। चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं अर्थात् प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण या असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण हैं । उन जगश्रेणियोंकी विष्कम्भसूची पल्यके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुलप्रमाण है ।

विशेषार्थ– कार्मणकाययोगी जीवोंका प्रमाण अनन्त होनेसे यहाँ दो शरीरवाले जीव अनन्त कहे हैं । तीन शरीरवाले जीव अनन्त हैं यह तो स्पष्ट ही है । रह गये चार शरीरवाले जीव सो पर्याप्त अग्निकायिक और वायुकायिक तथा पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमेंही चार शरीरवाले जीव सम्भव हैं, अतः इनका प्रमाण असंख्यात कहा है । यहा असंख्यातसे क्या लेना चाहिए इस बातका खुलासा क्षत्रकी अपेक्षा किया है ।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमे जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवियोंमें जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहने चाहिए ।

तिर्यंचगतिकी अपेक्षा तिर्यंचोंमें ओघके समान भंग हैं। पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिनी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीर–वाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं अर्थात् जगप्रतरके असंख्यातवें भाग–प्रमाण हैं। पंचेन्द्रियतिर्यंचअपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, पंचेंद्रिय अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, पृथिवीकायिक बादर पर्याप्त व अपर्याप्त, पृथिवीकायिक सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त, जलकायिक बादर पर्याप्त व अपर्याप्त, जलकायिक सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक

बादरतेउ०बादरवाउ०अपज्जत्ताणं सुहुमतेउ०सुहुमवाउ०पज्जत्त-अपज्जत्ताणं बादर-वणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-अपज्जत्ताणं बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा । (तेउ०-वाउ०-) बादरतेउ०-बादरवाउ० तेसिं पज्जत्ताणं बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा ।

मणुसगदीए मणुस्सेसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा, सेडीए असंखे०भागो चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा । मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा ।

देवगदीए देवेसु जाव सहस्सारे त्ति ताव णेरइयभंगो । आणद-पाणदप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु त्ति बिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा। तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरेइंदियपज्जत्ता बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता। चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा, पलिदो० असंखे०-

---

उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, सूक्ष्म वायुकायिक व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्यकशरीर व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। अग्निकायिक,वायुकायिक, बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं। असंख्यात हैं जो जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं। मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं।

देवगतिकी अपेक्षा सामान्य देवोंसे लेकर सहस्त्रार कल्प तकके देवोंमें नारकियोंके समान भंग है। आनत-प्राणत कल्पसे लेकर अपराजित विमानवासी देवों तक दो शरीरवाले द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं। तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं। असंख्यात हैं जो पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं।

विशेषार्थ– यहाँ सहस्त्रारकल्प तकके देवों का भंग नारकियोंके समान कहा है सो यह सामान्य कथन है। विशेषरूपसे सौधर्म ऐशान कल्पतकके देव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं और सानत्कुमारसे लेकर सहस्त्रार कल्प तकके देव जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानने चाहिए। शेष कथन स्पष्ट ही है।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय व बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं। चार शरीरवाले

भागो । बादरेइंदियअपज्जत्त-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ता बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा तेसिं पज्जत्तापज्जत्ता बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । पंचिंदिया पंचिंदियपज्जत्ता तसतसपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खभंगो ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सकायजोगिविभंगणाणीसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा । णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सा चदुसरीरा णत्थि । कायजोगि-णवुंसयवेद-कोध-माण-माया-लोहकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अचक्खुदंसणि-किण्ण-णील--काउलेस्सिय--भवसिद्धिय-अभवसिद्धिय-मिच्छाइट्ठि-आहारि-अणाहारीणं ओघं । ओरालियकायजोगीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा । ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा । कम्मइयकायजोगीसु बिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? अणंता । तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ।

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं जो पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और इनके पर्याप्त व अपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनंत हैं ? वनस्पतिकायिक और निगोद जीव तथा बादर और सूक्ष्म तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनंत है । पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस और त्रसपर्याप्त जीवोंका भङ्ग पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान है ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी, पांचों वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और विभंगज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं । इतनी विशेषता है कि वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीव चार शरीरवाले नहीं होते । काययोगी, नपुंसकवेदवाले, क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले भव्य, अभव्य और मिथ्यादृष्टि जीवोंका भंग ओघके समान है । औदारिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनंत हैं । चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात है । औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनंत हैं । आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं । कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनंत हैं । तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ।

विशेषार्थ – यहां काययोगी आदि जितनी मार्गणाओंमें ओघके समान भंग कहा है सो ये सब मार्गणाएँ अनंत संख्यावाली हैं । अतः इनमें ओघके समान दो शरीरवाले, तीन

वेदाणुवादेण इत्थि-पुरिसवेद-आभिणि-सुद-ओहिणाणि-चक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-तेउ-पम्मलेस्सिय-सम्माइट्ठि-वेदगसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सण्णीणं तसकाइयभंगो।

अवगदवेद-अकसाइ-केवलणाणि-परिहार० सुहुमसांपराइय०-जहाक्खादविहार-सुद्धिसंजद-केवलदंसणीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा। मणपज्जवणाणिसंजद-सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा। संजदासंजद-सम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा। सुक्कलेस्सिय-खइयसम्माइट्ठि-उवसमसम्माइट्ठीसु बिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा। तिसरीरा चदुसरीरा दव्वप० के० ? असंखेज्जा। असण्णीसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वप०के०? अणंता। चदुसरीरा दव्वप०के०? असंखेज्जा।

आहाराणुवादेण आहारएसु तिसरीरा दव्वप० के० ? अणंता। चदुसरीरा दव्वप० के० ? असंखेज्जा* । अणाहारएसु कम्मइयभंगो।

एवं दव्वपमाणपरूवणा समत्ता।

शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंकी संख्या बन जानेसे इनमें ओघके समान जाननेकी सूचना की है। शेष कथन सुगम है।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेद और पुरुषवेदवाले तथा आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवोंका भंग त्रसकायिक जीवोंके समान है।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

विशेषार्थ – इन मार्गणाओंमें एक तो त्रसकायिक जीवोंके समान दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव होते हैं, दूसरे इनकी संख्या असंख्यात है, इसलिए इनकी प्ररूपणा त्रसकायिक जीवोंके समान जानने की सूचना की है।

अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायसंयत, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं। मनःपर्ययज्ञानी, संयत, सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसयत जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है? संख्यात है। संयतासंयत और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले कितने हैं? असंख्यात हैं। शुक्ललेश्यावाले, क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं। तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। असंज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं। चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं।

विशेषार्थ – शुक्ललेश्यावाले, क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीव विग्रहगतिमें संख्यात ही होते हैं, इसलिए इनमें दो शरीरवालोंका प्रमाण संख्यात कहा है। तथा चार शरीरवाले ओघसे ही असंख्यात बतलाये हैं, इसलिए असंज्ञियोंमें चार शरीरवालोंका प्रमाण असंख्यात कहा है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने

---

* अ० प्रतौ ' संखेज्जा ' इति पाठः।

खेत्ताणुगमेण दुविहो णिद्देसो-ओघेण आदेसेण य। ओघेण बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते[1]? सव्वलोगे। चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। एवं सत्तसु पुढवीसु णेयव्वं। तिरिक्खगदीए तिरिक्खकायजोगि-णवुंसयवेद-कोह-माण-माया-लोहकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अचक्खुदंसणि-किण्ण-णील-काउलेस्सिय-भवसिद्धिय-अभवसिद्धिय-मिच्छाइट्ठि-असण्णीसु ओघं। पंचिंदियतिरिक्खतिग-इत्थि-पुरिसवेद-आभिणि-सुद-ओहिणाणि-चक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-तेउ-पम्मलेस्सिय-वेदग-उवसमसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सण्णीसु बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त-

---

हैं? अनन्त हैं। चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। अनाहारकोंमें कार्मणकाययोगी जीवोंके समान भंग है।

इस प्रकार द्रव्यप्रमाणप्ररूपणा समाप्त हुई।

क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है– ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है।

विशेषार्थ – दो शरीरवाले कार्मणकाययोगी होते हैं और तीन शरीरवाले प्रायः आहारक होते हैं। इनका क्षेत्र सर्वलोकप्रमाण होनेसे यहां दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका सर्वलोकप्रमाण क्षेत्र कहा है। तथा चार शरीरवाले वे ही होते हैं जो औदारिकशरीरसे या तो विक्रिया कर रहे हैं या आहारक ऋद्धिके उपस्थापक हैं। ऐसे जीव लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें ही पाये जाते हैं, इसलिए ओघसे चार शरीरवालोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। यद्यपि बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र लोकके संख्यातवें भागप्रमाण कहा है परन्तु उनमें विक्रिया करनेवाले जीव स्वल्प होनेसे उनका वर्तमान क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण ही प्राप्त होता है। आगे भी इन्हीं विशेषताओंको ध्यानमें रखकर और अपना अपना क्षेत्र जानकर वह ले आना चाहिए। यदि कहीं कोई विशेषता होगी तो उसका हम अलगसे निर्देश करेंगे।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। इस प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए। तिर्यंचगतिकी अपेक्षा तिर्यंचोंमें तथा काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भंग है। पंचेन्द्रियतिर्यंचत्रिक, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले, वेदकसम्यग्दृष्टि, उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें

---

[1] अ० प्रतौ 'तिसरीरा दव्व० प० के० खेत्ते' इति पाठः।

मणुसअपज्जत्त-सव्वदेव-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय--तप्पज्जत्तापज्जत्त ☸--पंचिंदिय-तसअपज्जत्ताणं णेरइयभंगो । मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणि-पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त-तस-तसपज्जत्त-सुक्कलेस्सिय-सम्माइट्ठि-खइयसम्माइट्ठीसु बिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे० भागे । तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे० भागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा ।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्तएसु ओघं । बादरेइंदिय-अपज्जत्त०-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्त-पुढवि०-आउ०-बादरपुढवि०-बादरआउ०-तद-पज्जत्त-सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्त--तेउ०-बादरतेउ०--अपज्जत्त०-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्त-वणप्फदिकाइय-णिगोदजीव-बादर-सुहुमप-ज्जत्तापज्जत्त-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तएसु बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे । बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-एसु बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे । बादरतेउ०पज्जत्तएसु

भागप्रमाण क्षेत्र है । पंचेन्द्रियतिर्यंच अपर्याप्त, मनुष्यअपर्याप्त, सब देव, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त व अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त और त्रस अपर्याप्त जीवोंमें नारकियोंके समान भंग है । मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त, मनुष्यिनी तथा पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस, त्रसपर्याप्त, शुक्ललेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्र है ।

विशेषार्थ – यहां मनुष्य आदि मार्गणाओंमें केवलिसमुद्घात सम्भव है इसलिए इस अपेक्षा से तीन शरीरवालोंका क्षेत्र लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण भी बतलाया है । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें ओघके समान भंग है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय व पर्याप्त और अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त बादर जलकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, अग्निकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर अग्निकायिकअपर्याप्त, वायुकायिक, बादर वायुकायिक, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक, सूक्ष्मवायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, वनस्पतिकायिक, निगोदजीव तथा इनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । बादर

☸ अ० का० प्रत्योः ' चउरिंदियतसपज्जत्त– ' इति पाठः ।

बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे०भागे । बादरवाउ-काइयपज्जत्ता चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे०भागे । विसरीरा तिसरीरा केवडि खेते ? लोगस्स संखे०भागे*

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचि०-वेउव्विय०कायजोगि-वेउव्वियमिस्स-कायजोगि-विभंगणाणि-मणपज्जवणाणि-सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजम-संजमासंज-मसम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे । णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सा चदुसरीरा णत्थि।ओरालिय०जोगीसु आहाराणुवादस्स आहारीसु च तिसरीरा केवडि खेत्ते? सव्वलोए । चदुसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे । ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवडि खेत्ते ? सव्वलोगे । आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा केवडि खेत्ते?लोगस्स असंखेज्जदिभागे । अणाहार*कम्मइय० जोगीसु विसरीरा केवडि खेत्ते? सव्वलोगे । तिसरीरा केवडि खेत्तें? लोगस्स असंज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा। णवरि कम्मइय० लोगस्स असंखेज्जदिभागो णत्थि ।

अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें चार शरीरवालोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है ।

विशेषार्थ– बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र लोकके संख्यातवें भागप्रमाण होनेसे इनमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका यह क्षेत्र बन जाता है । शेष कथन सुगम है।

योग मार्गणाके अनुवादसे पाँचो मनोयोगी, पाँचो वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी तथा विभङ्गज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, सामायिकशुद्धिसंयत, छेदोपस्थापना-शुद्धिसंयत, संयतासंयत और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है इतनी विशेषता है कि वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवाले नहीं है । औदारिक-काययोगी और आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है । चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है। सब लोकप्रमाण क्षेत्र है ? आहारककाययोगी और आहारमिश्रकाययोगी जीवोंमे चार शरीर-वाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । अनाहारकों और कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है । लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है । इतनी विशेषता है कि कार्मणकाययोगी जीवोंसे

---

* प्रतिषु 'लोगस्स असंखे०भागे' इति पाठः । * ता०प्रतौ 'आ (अणा) हार-' अ०का०प्रत्योः 'आहार-' इति पाठः ।

अवगदवेद-अकसाइ-केवलणाणि-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजद-केवलदंसणीसु तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा । एवं संजदाणं । **चदुसरीरा लोग०असंखे०भागे । परिहार०सुहुमसांपराय-सुद्धिसंजदेसु तिसरीरा केवडि खेत्ते ? लोगस्स असंखे०भागे ।**

एवं खेत्ताणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

फोसणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो-ओघेण आदेसेण य । ओघेण बिसरीर-तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो । चदुसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो अदीदेण सव्वलोगो ।

आदेसेण णिरयगईए णेरइएसु बिसरीर-तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखेज्जदिभागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा । पढमाए

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र नहीं है ।

विशेषार्थ– अनाहारक अवस्था अयोगिकेवलियोंके भी होती है । वहाँ तीन शरीरोंका सद्भाव बन जाता है, इसलिए तीन शरीरवालोंकी अपेक्षा अनाहारकोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण भी कहा है । परन्तु यह क्षेत्र कार्मणकाययोगी जीवोंमें घटित न होने से उनमें इसका निषेध किया है ।

अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवों में तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण,लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्र है । इसी प्रकार संयतोंके जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि इनमें चार शरीरवालोंका लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है । परिहार-शुद्धिसंयत और सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है ।

इस प्रकार क्षेत्रानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है– ओघ और आदेश । ओघसे दो शरीर और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत काल और वर्तमान काल की अपेक्षा सर्व लोकका स्पर्शन किया है । चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान की अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीतकालकी अपेक्षा सर्व लोकका स्पर्शन किया है ।

विशेषार्थ– औदारिकशरीरसे विक्रिया करते समय मारणान्तिक समुद्घात सम्भव है, इसलिए चार शरीरवालोंका अतीत स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण कहा है । आगे भी यह स्पर्शन इसी प्रकार घटित कर लेना चाहिए । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

आदेशसे नरकगतिमें नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानमें लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीतकालकी

पुढवीए खेत्तभंगो। विदियादि जाव सत्तपुढवि त्ति बिसरीरा-तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखेज्जदिभागो, अदीदेण एवक-वे-तिण्णि-चत्तारि-पंचछच्चोद्दसभागावा देसूणा ?

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु सामण्णतिरिक्ख-कायजोगि-णवुंसयवेद-कोह-माण-माया-लोभकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अचक्खुदंसणि-किण्ण-णील - काउलेस्सिय-भवसिद्धि-अभवसिद्धि-मिच्छाइट्ठि-असण्णीसु ओघभंगो। पंचिंदियतिरिक्ख पंचिंदिय-तिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। पंचिंदिय तिरिक्खअपज्जत्त-मणुसअपज्जत्त-वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपज्जत्तापज्जत्ता-पंचिंदिय अपज्जत्त-तसअपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो।

मणुसगदीए [illegible] चदुसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहि

अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पहली पृथिवीमें क्षेत्रके समान भंग है। दूसरीसे लेकर सातवीं तककी पृथिवियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा क्रमसे त्रसनालीके चौदह भागोंमें से कुछ कम एक भाग, कुछ कम दो भाग, कुछ कम तीन भाग, कुछ कम चार भाग, कुछ कम पाँच भाग और कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

तिर्यञ्चगतिकी अपेक्षा तिर्यञ्चोंमें सामान्य तिर्यञ्च तथा काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोध, कषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत-अचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भंग है। पन्चेन्द्रियतिर्यञ्च, पन्चेन्द्रियतिर्यञ्च पर्याप्त और पन्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनिनी जीवोंमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पन्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्त, मनुष्य, अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त पन्चेन्द्रिय अपर्याप्त और त्रस अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके

केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा।

देवगदीए देवेसु बिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा। भवण-वासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवेसु बिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? लोगस्स असंखे०भागो। तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे०-भागो, अदीदेण अद्धट्ठ अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा। सोहम्मीसाणकप्पवासिय-देवेसु बिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण दिवड्ढ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा देसूणा। सणक्कुमारप्पहुडि जाव सहस्सारकप्पवासियदेवेसु बिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग०

असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ– मनुष्यगतिमें मारणान्तिक समुद्घात और उपपादपदकी अपेक्षा सब लोक-प्रमाण स्पर्शन सम्भव है, इसलिए यहां तीन प्रकारके मनुष्योंमें दो शरीरवाले और चार शरीर-वाले जीवोंका अतीतकालीन स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण कहा है। मात्र उपपादपदके समय चार शरीरवाले नहीं होते इतना विशेष जानना चाहिए। शेष कथन स्पष्ट ही है।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढे तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम डेढ़ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सनत्कुमारसे लेकर सहस्रारगर कल्प तकके देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा

असंखे० भागो, अदीदेण तिण्णि अट्ठ चत्तारि* अद्धपंचम पंच चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो०, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। आणद-पाणद-आरण-अच्चुदकप्पवासियदेवेसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो०, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। णवगेवेज्जविमाणवासियदेवप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो। चदुसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बादरेइंदियअपज्जत्त-

---

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालिके चौदह भागोंमेंसे कमसे कुछ कम तीन भाग, कुछ कम साढे तीन भाग, कुछ कम चार भाग, कुछ कम साढे चार भाग और कुछ कम पाँच भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनत प्राणत, आरण और अच्युत कल्पवासी देवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। नौ ग्रैवेयेक विमानवासी देवोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवों तक इनमें दो शरीर-वालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ – सब देवोंमें जिसका जो उपपाद पदकी अपेक्षा स्पर्शन बतलाया है वह यहां दो शरीरवालोंका स्पर्शन जानना चाहिए और शेष तीन शरीरवालोंका जानना चाहिए। यहां आनत-प्राणत कल्पोंमें दो शरीरवालोंका भी स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भाग-प्रमाण कहा है। सो यह सामान्य कथन प्रतीत होता है, क्योंकि कुछ कम साढे पांच भाग राजुका अन्तर्भाव कुछ कम छह बटे चौदह भागमें हो जाता है। वास्तवमें इनमें उपपादपदकी अपेक्षा स्पर्शन कुछ कम साढे पांच भागप्रमाण बतलाया है अतः यहां दो शरीरवालोंका स्पर्शन भी इतना ही प्राप्त होगा। आगे भी सब स्पर्शन इन विशेषताओंको ध्यानमें रखकर घटित कर लेना चाहिए।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त तथा सूक्ष्म

---

* अ० प्रतौ० ' तिण्णि चत्तारि ' इति पाठः।

सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो। पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहि केव० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो असंखेज्जा भागा* सव्वलोगो वा*, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा सव्वलोगो वा।

कायाणुवादेण पुढवि०-आउ०-बादरपुढवि०-बादरआउ०◌-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरअपज्जत्त-सुहुमपुढवि० [illegible] बिसरीर-तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो। बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु बिसरीरतिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तेउ०-वाउ-बादरतेउ०-बादरवाउकाइएसु बिसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो। चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बादर-

एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पंचेन्द्रिय और पंचेंद्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोक प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभाग प्रमाण और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक तथा बादर पृथिवीकायिक बादर जलकायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर तथा इन तीनोंके अपर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीर और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा

* ता० प्रतौ ' असंखेज्जा भागा ' इति पाठो नास्ति। * म० प्रतिपाठोऽयम्। अ० का० प्रत्योः चदुसरीरेहि के० खेत्तं फो० ? वट्टमाणेण लोग० संखे० भागो। असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा ' इति पाठः। ◌ अ० प्रतौ ' आउ० बादरआउ० ' इति पाठः।

तेउक्काइयपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बादरवाउ० पज्जत्तएसु चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बिसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० संखे० भागो,◎ अदीदेण सव्वलोगो। बादरतेउक्काइय-बादरवाउक्काइयअपज्जत्त-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्ताणं बिसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। एवं वणप्फदि-णिगोदजीवाणं तेसिं चेव बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्ताणं च वत्तव्वं। तस-तसपज्जत्ताणं पंचिंदियपंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचमवचिजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा। चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। ओरालियकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो।

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है? दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त तथा सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवालों जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार वनस्पतिकायिक और निगोद तथा उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके कहना चाहिए। त्रस और त्रस पर्याप्त जीवोंका भंग पंचेंद्रिय और पंचेंद्रिय जीवोंके समान है।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी और वचनयोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। औदारिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार

◎ प्रतिषु 'लोग० असंखे० भागो' इति पाठः।

चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्व-लोगो। वेउव्वियकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ तेरह चोद्दसभागा वा देसूणा। वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु तिस-रीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो। आहारआहार-मिस्सकायजोगीसु चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो। कम्मइयकायजोगीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण सव्व-लोगो। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागा, सव्वलोगो वा◌ ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदेसु तिसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्ट-माणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा।

शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। औदारिक मिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्त-मान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वैक्रियिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम तेरह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आहारककाययोगी और आहारकमि-श्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्त-मान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। कार्मणका-ययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीर-वालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भाग-प्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण

◌ प्रतिषु ' असंखे० भागो सव्वलोगो वा ' इति पाठः।

अवगद-अकसाइ-केवलणाणि-जहाक्खादविहार०केवलदंसणीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा।

णाणाणुवादेण विभंगणाणीसु तिसरीरेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग०असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ तेरह चोद्दसभागा वा देसूणा सव्वलोगो वा। चदुहि सरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु चदुसरीर-तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के०खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। मणपज्जवणाणीसु तिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसरीरेहि ० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा। चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो। सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदाणं

क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, यथाख्यातविहार विशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे विभंगज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ आठ बटे चौदह भाग, कुछ कम तेरह बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें चार शरीरवाले और दो शरीरवाले जीवोंसे कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीतकालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। मनःपर्यय-ज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानी

मणपज्जवभंगो। परिहार-सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो। संजदासंजदाणं तिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु विसरीरा लद्धि पडुच्च अत्थि णिव्वत्तिं पडुच्च णत्थि। जदि अत्थि तो तेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा। चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सव्वलोगो। ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो।

लेस्साणुवादेण तेउलेस्सिएसु विसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे०भागो, अदीदेण दिवड्ड चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखेज्जभागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा देसूणा। पम्मलेस्सिएसु चदुसरीरेहि विसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग०

जीवोंके समान भंग है। परिहारशुद्धिसंयत और सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीर-वालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। संयतासंयतोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भाग-प्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भाग प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। मारणान्तिक की अपेक्षा।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंमें दो शरीरवाले लब्धिकी अपेक्षासे हैं, हैं, निर्वृत्तिकी अपेक्षासे नहीं हैं। यदि हैं तो उन्होंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवाले जीवोंमें कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अवधिदर्शनवाले जीवोंका भंग अवधिज्ञानवाले जीवोंके समान है।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे पीतलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम डेढ़ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है ? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पद्मलेश्यावालोंमें चार शरीरवाले और दो शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा

असंखे० भागो, अदीदेण पंच चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। सुक्कलेस्सिएसु बिसरीर-चउसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग असंखे०-भागो, असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। केवलि-भंगो वा।

समत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु बिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा केवलिभंगोवा। खइयसम्माइट्ठीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा केवलिभंगो वा। बिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं ?

—मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम पांच बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शुक्ललेश्यावालोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभाग प्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन है और केवलज्ञानीका जो स्पर्शन बतला आये वह भी अतीत कालकी अपेक्षा यहां स्पर्शन जानना चाहिए।

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है और केवलज्ञानियोंके जो स्पर्शन बतलाया है वह स्पर्शन भी अतीत कालकी अपेक्षा यहां जानना चाहिए। क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है और केवलज्ञानियोंके समान भंग है। दो शरीरवालों और

अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो। वेदगसम्माइट्ठीणमोहिणाणिभंगो। उवसम-सम्माइट्ठीसु बिसरीर-चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? अदीद वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। सासणसम्माइट्ठीसु बिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण बारह चोद्दसभागा वा देसूणा। चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे०भागो, अदीदेण सत्त चोद्दस-भागा देसूणा। सम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। चदुसरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० लोगस्स असंखे० भागो।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं चक्खुदंसणियभंगो। आहाराणुवादेण आहारीणं ओरा-लियकायजोगिभंगो? अणाहारीणं बिसरीराणं कम्मइयभंगो। तिसरीराणं

चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान और अतीत कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंका भंग अवधिज्ञानी जीवोंके समान है। उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान और अतीत कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम बारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीर-वालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ – सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें चार शरीरवालोंका नीचे कुछ कम पांच राजु स्पर्शन नहीं उपलब्ध होता, क्योंकि, एक तो सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंच और मनुष्य नारकियोंमें तथा मेरुके नीचे एकेंद्रियोंमें मारणान्तिक समुद्घात नहीं करते। दूसरे नारकी तिर्यंचों और मनुष्योंमें मारणान्तिक समुद्घात करते हुए भी चार शरीरवाले नहीं होते। इसलिए सासादनोंमें चार शरीरवालोंका स्पर्शन कुछ कम सात बटे चौदह राजुप्रमाण कहा है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंका भंग चक्षुदर्शनवाले जीवोंके समान है। आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंका भंग औदारिककाययोगी जीवोंके समान है। अनाहारकोंमें

केवलिभंगो। एवं फोसणाणुगमो समत्तो ।

कालाणुगमेण दुविहो णिद्देसो–ओघेण आदेसेण य। ओघेण बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्ण समया। तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिओ। चदुसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु बिसरीरा केवचिरं कालादो

दो शरीरवालोंका भंग कामणकाययोगी जीवोंके समान है। तीन शरीरवालोंका भंग केवलज्ञानियोंके समान है।

इस प्रकार स्पर्शानुगम समाप्त हुआ।

कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है– ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीके बराबर है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है।

विशेषार्थ – कार्मणकाययोगका नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल होनेसे यहां नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका सर्वदा काल कहा है। इसी प्रकार तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव भी निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए नाना जीवकी अपेक्षा इनका सर्वदा काल कहा है। तथा एक जीवकी अपेक्षा कार्मणकाययोगका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल तीन समय होनेसे दो शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल तीन समय कहा है। जो औदारिक शरीरके साथ विक्रिया कर रहा है वह एक समय के लिए तीन शरीरवाला होकर यदि द्वितीय समयमें मर कर दो शरीरवाला हो जाता है तो उसके तीन शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय प्राप्त होता है। यह देखकर एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय कहा है। तथा आहारक अवस्थाका उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिये एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कहा है। किसी जीवने औदारिक शरीरसे विक्रिया प्रारंभ की और दूसरे समयमें मर कर वह दो शरीरवाला हो गया। यह देख कर एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय कहा है। तथा एक जीवके विक्रियाका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। आगे गति आदि मार्गणाओंमें इसी प्रकार कालका विचार कर वह घटित कर लेना चाहिए।

आदेशसे गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवालोंका

होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे भागो। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० दसवाससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि। पढमपुढविप्पहुडि जाव सत्तमपुढविणेरइएसु तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० दसवाससहस्साणि विसमऊणाणि, उक्क० सागरोवमं संपुण्णं। जह० सागरोवमं समऊणं, उक्क० तिण्णि सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जह० तिण्णि सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० सत्त सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जह० सत्त सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० दस सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जह० ◎ दससागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० सत्तारस सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जह० सत्तारस सागरोवमाणि सयऊणाणि, उक्क० बावीसं सागरो० संपुण्णाणि। जह० बावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि।

कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्ष प्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेतीस सागर है। पहिली पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्ष है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण एक सागर है। दूसरी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम एक सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तीन सागर है। तीसरी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम तीन सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण सात सागर है। चौथी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम सात सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण दस सागर है। पांचवी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम दस सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण सत्रह सागर है। छठी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम सत्रह सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण बाईस सागर है। सातवीं पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम बाईस सागर है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागर है।

विशेषार्थ – नरकमें नाना जीव विग्रह गतिसे यदि निरन्तर उत्पन्न हों तो कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ही उत्पन्न होते हैं। सामान्यसे और प्रत्येक पृथिवीमें यही नियम है, इसलिए यहां सर्वत्र नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें

◎ अ० प्रतौ 'उक्क० दससागरोवमाणि समऊणाणि। जह०' इति पाठः।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडु० सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। चदुसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो।

भागप्रमाण कहा है। तथा एक जीव यहां सर्वत्र यदि विग्रहसे उत्पन्न हो तो कमसे कम एक विग्रह और अधिकसे अधिक दो विग्रह लेकर उत्पन्न होता है, इसलिए यहां एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय कहा है। विग्रहके इन दो समयोंकी अपनी जघन्य स्थितिमेंसे कम कर देने पर सर्वत्र एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालों का जघन्य काल होता है और उत्कृष्ट काल अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण है यह स्पष्टही है। तथा नरकगति निरन्तर मार्गणा है, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका काल सर्वदा है यह भी स्पष्ट है।

तिर्यंचगतिकी अपेक्षा तिर्यंचोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय हैं। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी कालप्रमाण है। चार शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। पंचेंद्रियतिर्यंच, पंचेंद्रियतिर्यंच पर्याप्त और पंचेंद्रियतिर्यंच योनिनियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्व-९५ पूर्वकोटि कोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्यप्रमाण है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना-५७ " जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट १५ " काल अन्तर्मुहूर्त है। पंचेंद्रियतिर्यंच अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भाग-

एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं संपुण्णं।

मणुसगदीए मणुस्सेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं काला० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति! णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा।

प्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहण प्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

विशेषार्थ – पहले ओघसे कालका स्पष्टीकरण कर आए हैं। सामान्य तिर्यंचोंमें उसी प्रकार स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। पंचेन्द्रियतिर्यंच आदिमें भी उसी प्रकार अपनी अपनी विशेषता जानकर कालका स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जिस मार्गणामें एक जीव और नाना जीवोंकी अपेक्षा अनाहारकोंका जघन्य और उत्कृष्ट जो काल हो वह वहां दो शरीरवाला काल जानना चाहिए। तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंका काल लाते समय कई बातोंका ध्यान रखनेकी आवश्यकता है। यथा–मार्गणाका द्रव्यप्रमाण कितना है और मार्गणा सान्तर है या निरन्तर आदि। ओघसे कालका स्पष्टीकरण करते समय कुछ विशेषताओंका निर्देश किया ही है उन्हे ध्यानमें रखकर यहां और आगे कालका स्पष्टीकरण लेना चाहिए।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नानाजीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्य है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक

एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि सादिरेयपुव्वकोडितिपुधत्तेणब्भहियाणि। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। मणुसअपज्जत्तेसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलियाए असंखेज्जदिभागो। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं संपुण्णं।

देवगदीए देवेसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि। भवणवासियप्पहुडि जाव सहस्सारकप्पवासियदेवेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एग--

---

जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्य है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है।

विशेषार्थ -- मनुष्य अपर्याप्त यह सान्तर मार्गणा है। इसमें निरन्तर यदि जीव पाये जाते हैं तो वे कमसे कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण काल तक और अधिक से अधिक पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहते हैं। उसके बाद नियमसे अन्तर पड जाता है। इसी विशेषताको ध्यानमें रखकर यहां तीन शरीरवालोंका काल कहा है। शेष कालका स्पष्टीकरण पूर्वमें कही गई विशेषताओंको ध्यानमें रखकर लेना चाहिए।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेतीस सागर है। भवनवासियोंसे लेकर सहस्रार कल्पवासी देवों तक दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें

जीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणा-
पार्श्वनाथ आवलि के असं० भाग प्रमाण जीव होते
जीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० सागरोवमं सादिरेयं। जह० दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० पलिदोवमं सादिरेयं। जह० पलिदोवमस्स अट्ठमभागो बिसमऊणो, उक्क० पलिदोवमं सादिरेयं। जह० पलिदोवमं सादिरेयं, उक्क० बेसागरोवमाणि सादिरेयाणि। जह० बेसागरो० सादिरेयाणि, उक्क० सत्त सागरो० सादिरेयाणि। जह० सत्त सग० सादिरेयाणि उक्क० दस सागरो० सादिरेयाणि। जह० दस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० चोद्दस सागरोव० स दिरेयाणि। जह० चोद्दस सागरो० सादिरेयाणि उक्क० सोलस सागरो० सादिरेयाणि। जह० सोलस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० अट्ठारस सागरो० सादिरेयाणि। आणद-पाणदप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासिय-देवेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया,। तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि, उक्क० वीसं सागरोवमाणि। जह० वीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० बावीसं सागरोवमाणि। जह० बावीसं सागरो० समऊणाणि,

---

भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा भवनवासियोंमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक एक सागर है। व्यन्तरोंमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक एक पल्यप्रमाण है। ज्योतिषियोंमें जघन्य काल दो समय कम पल्यका आठवां भागप्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक एक पल्यप्रमाण है। सौधर्म-ऐशान कल्पमें जघन्य काल साधिक एक पल्य प्रमाण है और उत्कृष्ट काल साधिक दो सागर है। सानत्कुमार माहेन्द्रमें जघन्य काल साधिक दो सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक सात सागर है। ब्रह्म-ब्रह्मोत्तरमें जघन्य काल साधिक सात सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक दस सागर है। लान्तव-कापिष्ठमें जघन्य काल साधिक दस सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक चौदह सागर है। शुक्र महाशुक्रमें जघन्य काल साधिक चौदह सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक सोलह सागर है। शतार-सहस्रारमें जघन्य काल साधिक सोलह सागर है और उत्कृष्ट काल साधिक अठारह सागर है। आनत-प्राणतसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासी तकके देवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा आनत-प्राणतमें जघन्य काल साधिक अठारह सागर है और उत्कृष्ट काल बीस सागर है। आरण-अच्युतमें जघन्य काल एक समय कम बीस सागर है और उत्कृष्ट काल बाईस

असंख्यात वर्ष

उक्क० तेवीसं सागरोवमाणि । जह० तेवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० चदुवीसं सागरोवमाणि । जह० चउवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० पणुवीसं सागरोवमाणि । जह० पणुवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० छव्वीसं सागरोवमाणि । जह० छव्वीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० सत्तावीसं सागरोवमाणि । जह० सत्तावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० अट्ठावीसं सागरोवमाणि । जह० अट्ठावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० एगुणतीसं सागरोवमाणि । जह० एगुणतीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तीस सागरोवमाणि । जह० तीसं सागरो० समऊणाणि उक्क० एक्कत्तीसं सागरोवमाणि । जह० एक्कत्तीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० बत्तीसं सागरोवमाणि । जह० बत्तीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि । सव्वट्ठे जह० तेत्तीसं सागरो० बिसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि ।

इंदियाणुवादेण एइंदिएसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखे०भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । चदुसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं ।

सागर है । प्रथम ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम बाईस सागर है और उत्कृष्ट काल तेईस सागर है । द्वितीय ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम तेईस सागर है और उत्कृष्ट काल चौबीस सागर है । तृतीय ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम चौबीस सागर है और उत्कृष्ट काल पच्चीस सागर है । चतुर्थ ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम पच्चीस सागर है और उत्कृष्ट काल छब्बीस सागर है । पाँचवें ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम छब्बीस सागर है और उत्कृष्ट काल सत्ताईस सागर है । छटे ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम सत्ताईस सागर है और उत्कृष्ट काल अट्ठाईस सागर है । सातवें ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम अट्ठाईस सागर है और उत्कृष्ट काल उनतीस सागर है । आठवें ग्रैवेयक में जघन्य काल एक समय कम उनतीस सागर है और उत्कृष्ट काल तीस सागर है । नौवें ग्रैवेयकमें जघन्य काल एक समय कम तीस सागर है और उत्कृष्ट काल इकतीस सागर है । नौ अनुदिशोंमें जघन्य काल एक समय कम इकतीस सागर है और उत्कृष्ट काल बत्तीस सागर है । चार अनुत्तरविमानोंमें जघन्य काल एक समय कम बत्तीस सागर है और उत्कृष्ट काल तेतीस सागर है । सर्वार्थसिद्धिमें जघन्य काल दो समय कम तेतीस सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तेतीस सागर है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी–उत्सर्पिणीके बराबर है । चार शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय

बादरेइंदिएसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जहण्णुक्कस्सेण एइंदियभंगो । चदुसरीराणं पि एइंदियभंगो । बादरेइंदियपज्जत्तएसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं पडु० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्स-सहस्साणि । चदुसरीरा ओघं । बादरेइंदियअपज्जत्ता बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । सुहुमेइंदिया बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्क० अंगुलस्स असंखे० भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । सुहुमेइंदियपज्जत्ता बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं तिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं । सुहुमेइंदिय-अपज्जत्ता बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा ।

है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । बादर एकेंद्रियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट कालका भंग एकेंद्रियोंके समान है । चार शरीरवालोंके कालका भंग भी एकेंद्रियोंके समान है । बादर एकेंद्रि पर्याप्तकोंमें दो शरीर-वालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । चार शरीरवालोंके कालका भंग ओघके समान है । बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तकोंमें शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । सूक्ष्म एकेंद्रियोंमें दो शरीरवालोंका काल ओघके समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है । नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणि-उत्सर्पिणीके बराबर है । सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंके कालका भंग ओघके समान है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय कम अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है । सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका कालओघके समान है ।

एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय० बिसरीराणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि ◌ वस्ससहस्साणि। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ताणं पंचिंदिय-तिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो। णवरि तिसरीरा केवचिरं का०होंति? णाणा०प०सव्वद्धा। एगजीव प० जह० अंतोमुहुत्तं विसमऊणं, उक्क०संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियअपज्जत्ता बिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीव प० जह० एगसमओ, उक्कस्सेण आवलियाए असंखे०भागो। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ उक्क० बेसमया ❋। तिसरीरा केवचिरं का०होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं । पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त० बिसरीराणं बेइंदियभंगो। तिसरीरा केवचिरं का०होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० सागरोवमसहस्स पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं सागरोवमसदपुधत्तं। चदुसरीरा ओघं। पंचिंदियअपज्जत्ताणं बेइंदियअपज्जत्ताणं भंगो।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंमें दो शरीरवालोंका भंग पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके मान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है।द्वीन्द्रिय पर्याप्त,त्रीन्द्रिय पर्याप्त और चतुरिन्द्रियपर्याप्त जीवोंका भंग पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है। इतनी विशेषता है कि तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है।द्वीन्द्रिय अपर्याप्त,त्रीन्द्रिय अपर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त-प्रमाण है। पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका द्वीन्द्रियोंके समान भंग है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल क्रमसे पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक एक हजार सागरप्रमाण और सौ सागरपृथक्त्वप्रमाण है। चार शरीरवालोंका भंग ओघके समान है। पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान भंग है।

पृ. २६१ पं. २

◌ प्रतिषु 'उक्क० असंखेज्जाणि' इति पाठः। ❋ अ०का०प्रत्योः 'णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० वेसमया' इति पाठः।

कायाणुवादेण पुढवि०-आउ० बिसरीरा तिसरीरा ओघं। णवरि तिसरीराणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमयूणं। बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेय-सरीरा तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० कम्मट्ठिदी। बादरपुढवि-बादरआ-उ०बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्त० बिसरीराणं बेइंदियपज्जत्ताणं भंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिससऊणं उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। बादरपुढवि-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेयस-रीरअपज्जत्ता० बिसरीर तिसरीराणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो। सुहुमपुढवि०-सुहुम-आउ०-सुहुमतेउ०-सुहुमआउ० बिसरीर-तिसरीराणं सुहुमेइंदियभंगो। तेउकाइय-वाउ-का० बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं। बादरतेउकाइय-बादरवाउ० बिसरीर-चदु-सरीराणं बादरेइंदियभंगो। तिसरीराणं बादरपुढविभंगो णवरि एगजीवं प० जह० एग-समओ। बादरतेउ०-बादरवाउ० पज्जत्त० बिसरीराणं बादरपुढविपज्जत्तभंगो।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है। इतनी विशेषता है कि तीन शरीरवालोंका जघन्य काल तीन समय कम क्षुद्र भवग्रहप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक बादर जलकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर जीवोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहप्रमाण है और उत्कृष्ट काल कर्मस्थि-तिप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिका-यिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका भंग द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त, बादर जलकायिक अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एके-न्द्रिय अपर्याप्तकोंमें समान है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक, और सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग सूक्ष्म एके-न्द्रियोंके समान है। अग्निकायिक और वायुकायिकोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है। बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायि-कोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रियोंके समान है। तीन शरीरवालोंका भंग बादर पृथिवीकायिक जीवोंके समान है। इतनी विशेषता है कि एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है। बादर अग्निकायिक पर्याप्त और बादर वायुकायिक पर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले जीवोंका भंग बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तकोंमें

तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एग-समओ, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । चदुसरीरा ओघं । बादरतेउकाइय-बादरवाउ० अपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । वणप्फदिकाइय० बिसरीर-तिसरीरा ओघं । बादरवणप्फदिकाइय० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियभंगो । बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियपज्जत्तभंगो। णवरि एदेसु तिसु वि तिसरीराणमेगसमओ णत्थि। बादरवणप्फदि०अपज्जत्त० बिसरीर तिसरीराणं (बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो। सुहुमवणप्फदि० सुहुमणिगोद बिसरीर-तिसरीराणं) सुहुमेइंदियभंगो । सुहुमवणप्फदि-सुहुमणिगोदजीवपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं सुहुमेइंदियपज्जत्तभंगो । सुहुमवणप्फदि-सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ताणं सुहुमेइंदियअपज्जत्तभंगो । तसकाइय-तसकाइयपज्जत्त० बिसरीर तिसरीर-चदुसरीराणं पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो । णवरि विसेसो सगट्ठिदी भणिदव्वा । तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्ताणं भंगो ।

जोगाणुवादेण पंचमण०-पंचवचि० तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । काय-जोगीसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । ओरालियकायजोगीसु तिसरीरा

पृ-२७५२ समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है? एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्षप्रमाण है। चार शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । बादर अग्निकायिक अपर्याप्त और बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेंद्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । बादर वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेंद्रियोंके समान है। बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेंद्रिय पर्याप्तकोंके समान है। इतनी विशेषता है कि इन तीनों ही वनस्पतिकायिकोंमें तीन शरीरवालोंका एक समय काल नहीं है। बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तकोंमें दो शरीर-वाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेंद्रियोंके समान है। सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है । इतनी विशेषता है कि अपनी स्थिति कहनी चाहिए । त्रस अपर्याप्तकोंका भंग पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । काययोगी जीवोंमें

केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बावीसं वाससहस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। वेउव्वियकायजोगीसु तिसरीराणं मणजोगिभंगो। वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० पलिदोवमस्स असंखे०भागो। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं। तं पुण सव्वट्ठे उप्पण्णस्स होदि। उक्क० अंतोमुहुत्तं। तं पुण सत्तमाए पुढवीए उप्पण्णस्स होदि। आहारकायजोगीसु चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एगजीवं प० जहण्णुक्क० अंतोमुहुत्तं। कम्मइयकायजोगीसु बिसरीरा ओघं। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० तिण्णि समया, उक्क० असंखेज्जा समया। एगजीवं प० जहण्णुक्क० तिण्णि समया।

दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है। औदारिककाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्षप्रमाण है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। वैक्रियिककाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवों का भंग मनोयोगी जीवोंके समान है। वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है जो सर्वार्थसिद्धिमें उत्पन्न होनेवालेके होता है? तथा उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त जो सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेवालेके होता है। आहारककाययोगियोंमें चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। आहारकमिश्रकाययोगियोंमें चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंका भंग ओघके समान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल तीन समय है।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदे बिसरीराणं पंचिंदियपज्जत्तभंगो। तिसरीराणं केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं। चदुसरीरा ओघं। एवं पुरिसवेदाणं। उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं। णवुंसयवेदा ओघं। अवगदवेदा तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा।

कसायाणुवादेण कोध माण-माया-लोभकसाइसु बिसरीरा चदुसरीरा ओघं। तिसरीराणं मणोजोगिभंगो ◎। अकसाईणमवगदवेदभंगो।

णाणाणुवादेण मदि-सुदअण्णाणीसु बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं। विहंगणाणी० तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तूणतेत्तीससागरोवमाणि। चदुसरीरा ओघं। आभिणिबोधिणाणीसु बिसरीराणं पुरिसवेदभंगो। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि। तं जहा- एगो मिच्छाइट्ठी दव्वलिंगी अंतोमुहुत्तब्भहियअट्ठारस

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी जीवोंमें दो शरीरवालोंका भंग पंचेंद्रिय पर्याप्तकोंके समान है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल सौ पल्य पृथक्त्वप्रमाण है। चार शरीरवालोंका भंग ओघके समान है। इसी प्रकार पुरुषवेदी जीवोंके जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें तीन शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल सौ सागरपृथक्त्व-प्रमाण है। नपुंसकवेदी जीवोंका भंग ओघके समान है। अपगतवेदी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभ-कषायवाले जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है। तीन शरीरवाले जीवोंका भंग मनोयोगी जीवोंके समान है। अकषायी जीवोंका भंग अपगतवेदवाले जीवोंके समान है।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीर-वाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है। विभंगज्ञानियोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागर है। चार शरीरवालोंके कालका भंग ओघके समान है। अभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंके भंग पुरुषवेदी जीवोंके समान है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल साधिक छ्यासठ सागर है। यथा- एक मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी अन्तर्मुहूर्त अधिक

◎ अ० का० प्रत्योः 'मणजोगभंगो' इति पाठः।

सागरोवमाणि देवाउअं बंधिदूण आणद-पाणदकप्पवासियदेवेसु उववण्णो, छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो होदूण अट्ठारससागरोवमाणं बहिं तिण्णि* वि करणाणि कादूण उवसमसम्मत्तं घेत्तूण वेदगं पडिवण्णो। पुणो अट्ठारससागरोवमाणि सम्मत्तमणुपालेदूण अविणट्ठेहि तीहि णाणेहि कालं कादूण पुव्वकोडाउओ मणुस्सो जादो। पुणो तिण्णाणी चेव होदूण पुव्वकोडीए ऊणवीससागरोवमट्ठिदीओ देवो जादो। तत्तो चुदो पुव्व-कोडाउओ मणुस्सो जादो। पुणो दोपुव्वकोडीहि ऊणअट्ठावीससागरोवमट्ठिदीओ देवो होदूण पुणो पुव्वकोडाउओ मणुस्सो जादो। पुणो तेत्तीसाउअं बंधिदूण अंतोमुहुत्तावसेसे खइयसम्माइट्ठी होदूण सव्वट्ठे उववण्णो। तदो पुव्वकोडाउओ मणुस्सो होदूण अंतोमुहुत्तावसेसे सिज्झिदव्वए त्ति केवलणाणी जादो। एवमुवसमसम्मत्तंतोमुहुत्तेण पुव्वकोडिअब्भहियतेत्तीससागरोवमेहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि। चदुसरीरा ओघं। मणपज्जवणाणीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा। चदुसरीरा ओघं। केवलणाणी० अवगदवेदभंगो। णवरि एगसमओ णत्थि।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसरीराणमवगदवेदभंगो। चदुसरीरा ओघं। सामाइय-

---

अठारह सागर प्रमाण देवायुका बन्ध करके आनत-प्राणत कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ। छह पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होकर अठारह सागरके बाहर तीनों ही करणोंको करके उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण करके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। पुनः अठारह सागर काल तक सम्यक्त्वका अनुपालन करके विनाशको नहीं प्राप्त हुए तीन ज्ञानोंके साथ मरकर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ। पुनः तीनों ही ज्ञानवाला होकर पूर्वकोटिसे कम बीस सागरकी स्थितिवाला देव हुआ। वहाँसे च्युत होकर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ। पुनः दो पूर्वकोटि कम अट्ठाईस सागरकी आयुवाला देव होकर पुनः पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य हुआ। पुनः तेतीस सागरप्रमाण आयुका बन्ध करके अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहने पर क्षायिक सम्यग्दृष्टि होकर सर्वार्थसिद्धिमें उत्पन्न हुआ। अनन्तर पूर्वकोटिकी आयुवाला मनुष्य होकर अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहनेपर सिद्ध होनेवाला है इसलिए केवलज्ञानी हो गया। इस प्रकार उपशमसम्यक्त्वके अन्तर्मुहूर्त और साधिक पूर्वकोटि तेतीस सागर अधिक छयासठ सागरकाल प्राप्त होता है। चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान है। मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है। चार शरीरवालोंके कालका भंग ओघके समान है। केवलज्ञानी जीवोंमें अपगतवेदवाले जीवोंके समान भंग है। इतनी विशेषता है कि एक समय काल नहीं है।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवालोंमें अपगत वेदवाले जीवोंके समान भंग है। चार शरीरवाले जीवोंका कालका भंग ओघके समान है। सामायिकसंयत और छेदो-

---

* अ०प्रतौ '–सागरोवमाण ब्भहिवं तिण्णि' इति पाठः।

छेदोवट्ठावणसंजदेसु तिसरीर-चदुसरीराणं मणपज्जवभंगो । परिहारसंजदेसु तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । सुहुमसांपराइय० तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । जहाक्खाद० अवगदवेदभंगो । संजदासंजदा तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति ? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । सा वि तिरिक्खेसु तिहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणा कादूण घेत्तव्वा । चदुसरीरा ओघं । असंजदाणं मदिअण्णाणिभंगो ।

चक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो । अचक्खुदंसणी० ओघं । ओहिदंसणीणमोहिणाणी० भंगो । केवलदंसणीणं केवलणाणी०✱भंगो ।

लेस्साणुवादेण किण्ह-णील-काउलेस्सिएसु बिसरीरा चदुसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि, सत्तसागरो० सादिरे०

स्थापनासंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग मनःपर्यय-ज्ञानी जीवोंके समान है । परिहारविशुद्धिसंयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नानाजीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । सूक्ष्मसांपरायसंयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । यथाख्यातसंयतोंमें अपगतवेदवाले जीवोंके समान भंग है । संयतासंयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्वकोटि है । वह भी तिर्यञ्चोंमें तीन अन्तर्मुहूर्त कम करके ग्रहण करना चाहिए । चार शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । असंयतोंमें मत्यज्ञानी जीवोंके समान भंग है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंका भंग त्रसपर्याप्त जीवोंके समान है । अचक्षुदर्शनवाले जीवोंमें ओघके समान भंग है । अवधिदर्शनवाले जीवोंका भंग अवधिज्ञानी जीवोंके समान है । तथा केवलदर्शनवाले जीवोंमें केवलज्ञानी जीवोंके समान भंग है ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल कृष्णलेश्यामें साधिक तेतीस सागर, नीललेश्यामें साधिक सत्रह सागर तथा कापोत लेश्यामें साधिक सात सागर है । यहाँ साधिकका प्रमाण दो अंतर्मुहूर्त

✱ म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रतौ ' केवलदंसणीए (मु) केवलणाणी० ' अ० का० प्रत्योः ' केवलदंसणीए केवलणाणी० ' इति पाठः]

सत्तसागरो० सादिरे० । अविरेगस्स पमाणं वे अंतोमुहुत्ताणि । तेउ-पम्मलेस्सिएसु बिसरीराणं णारगभंगो । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसागरोवमाणि सादिरेयाणि, अट्ठारससागरो० सादिरेयाणि । चदुसरीरा ओघं । सुक्कलेस्सिएसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति०? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । चदुसरीरा ओघ ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धियाणमोघो । सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी० बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमाभिणि०भंगो । खइयसम्माइट्ठी० बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणं सुक्कलेस्सियभंगो । वेदगसम्माइट्ठी० बिसरीर-चदुसरीराणं सम्माइट्ठिभंगो । तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि । उवसमसम्माइट्ठी० बिसरीराणं सुक्कलेस्सियभंगो । तिसरीरा चदुसरीरा केवचिर का० होंत ? णाणाजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्त।

है । पीतलेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंके कालका भंग नारकियोंके समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पीतलेश्यामें साधिक दो सागर तथा पद्मलेश्यामें साधिक अठारह सागर है । चार शरीरवालोंके कालका भंग ओघके समान है । शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल साधिक तेतीस सागर है । चार शरीरवालोंका काल ओघके समान है ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यों और अभव्योंका भंग ओघके समान है । सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग आभिनिबोधिकज्ञानी जीवोंके समान है । क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग शुक्ललेश्यावाले जीवोंके समान है । वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग सम्यग्दृष्टि जीवोंके समान है । तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल छयासठ सागर है । उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले जीवोंके कालका भंग शुक्ललेश्यावाले जीवोंके समान है । तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी

सासणसम्माइट्ठी० बिसरीराणं सम्माइट्ठिभंगो। तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० छ आवलियाओ। सम्मामिच्छाइट्ठी० तिसरीरा चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० दोण्हं पि पलिदो० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। चदुसरीराणं कथमेगसमओ? सम्मामिच्छत्तद्धाए एगसमयावसेसाए विउव्विदाणमेगसमओ। मिच्छाइट्ठी० बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणं पंचिंदियपज्जत्तभंगो। असण्णी० बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमोघं। णेवसण्णि-णेवअसण्णीसु तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं,

---

अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले जीवोंके कालका भंग सम्यग्दृष्टियोंके समान है। तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल छह आवलिप्रमाण है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दोनोंका पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है।

शंका-- चार शरीरवालोंका एक समय काल कैसे है?

समाधान-- सम्यग्मिथ्यात्वके कालमें एक समय शेष रहने पर विक्रिया करनेवालोंके एक समय काल प्राप्त होता है।

मिथ्यादृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान है।

विशेषार्थ-- उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है यह तो स्पष्ट ही है, क्योंकि, जो उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त करता है वह अन्तर्मुहूर्त काल तक उसके साथ नियमसे रहता है। यहाँ उपशमश्रेणिसे नीचे उपशमसम्यक्त्वके साथ मरण नहीं होता इसलिए तथा जो इसके कालमें विक्रिया करके चार शरीरवाला होता है उसके अन्तर्मुहूर्त कालके पहले उपशमसम्यक्त्वसे पतन नहीं होता, इसलिए उपशमसम्यक्त्वमें चार शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। शेष कथन सुगम है।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है। असंज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान है। न संज्ञी और न असंज्ञी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका काल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

उक्क० पुव्वकोडी देसूणा ।

आहाराणुवादेण आहारी० तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । अणाहारी० बिसरीरा ओघं । तिसरीरा केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० जह० तिण्णि समया, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जह० तिण्णि समया, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एवं कालाणुयोगद्दारं समत्तं ।

अंतराणुगमेण दुविहो णिद्देसो-ओघेण आदेसेण य । ओघेण बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होंति ? णाणाजीवं प० णत्थि अंतर णिरंतरं । एगजीव प० जह० खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्क० अंगुलस्स असंखे०भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवे प० णत्थि अंतरं णिरंतर । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्कऽ० अणंतकालमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा ।

काल है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्व-कोटिप्रमाण है ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंके कालका भंग ओघके समान है । अनाहारक जीवोंमें दो शरीरवालोंके कालका भंग ओघके समान है । तीन शरीरवालोंका कितना काल है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल तीन समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है । इस प्रकार कालानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अन्तरानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है--ओघ और आदेश । ओघसे दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है । नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीके बराबर है । तीन शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल है जो असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है ।

विशेषार्थ-दो शरीरवाले अनाहारक होते हैं और अनाहारक जीवोंका कभी अभाव नहीं होता, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवाले जीवोंके अन्तरका निषेध किया है । एक

ऽ ता० प्रतौ चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं पडुच्च ज० एगसमओ उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० इति पाठ ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणेगजीवं प० णत्थि अंतरं । पढमादि जाव सत्तमपुढवि त्ति ताव तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवे प० जह० सव्वासिं पुढवीणमेगसमओ, उक्क० अडदालीसं मुहुत्ता पक्खो मासो बेमासा चत्तारिमासा छम्मासा बारसमासा । एगजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । तिसरीराणमुभयवो वि

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण प्राप्त होता है, क्योंकि, अपर्याप्त जीवकी जघन्य भवस्थितिमेंसे अनाहारकके तीन समय कम कर देने पर शेष काल आहारक अवस्थाका बच रहता है। इसके बाद वह जीव पुनः अनाहारक हो सकता है। तथा उत्कृष्ट अन्तरकाल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, यदि कोई जीव निरन्तर आहारक रहता है तो इतने काल तक ही वह आहारक रहता है। इसके पूर्व और बादमें वह नियमसे अनाहारक होता है। तीन शरीरवाले जीव भी निरंतर पाये जाते हैं, इसलिए ओघसे नाना जीवोंकी अपेक्षा इनके अन्तरकालका निषेध किया है। तथा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त पहले बतला आये हैं। वही यहां एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य और उत्कृष्ट अंतरकाल जानना चाहिए। यदि तीन शरीरवाला एक समयके लिए दो शरीरवाला होकर पुनः तीन शरीरवाला हो जाता है तो जघन्य अंतर एक समय प्राप्त होता है और तीन शरीरवाला अंतर्मुहूर्तके लिए चार शरीरवाला होकर पुनः तीन शरीरवाला हो जाता है तो उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होता है। यह उक्त कथनका तात्पर्य है। चार शरीरवाले नाना जीव भी निरंतर पाये जाते है, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा चार शरीरवालोंके अन्तरकालका निषेध किया है। तथा विक्रिया करके उसका उपसंहार करनेके बाद या आहारक शरीरको उत्पन्न करनेके बाद पुनः विक्रिया या आहारक शरीरकी उत्पत्ति अन्तर्मुहूर्त कालका अन्तर पड़े बिना नहीं हो सकती, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त कहा है। और जो जीव अग्निकायिक पर्याप्त और वायुकायिक पर्याप्त अवस्थाको छोड़कर अनंत काल तक निरंतर एकेन्द्रियोंमें परिभ्रमण करता रहता है उसके इतने काल तक चार शरीरकी उत्पत्ति नहीं होती, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर अनन्त कालप्रमाण कहा है।

आदेशसे गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। पहली पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है। नाना जीवोंकी अपेक्षा सब पृथिवीयोंमें जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पहली पृथिवीमें अडतालीस मुहूर्त, दूसरी पृथिवीमें एक पक्ष, तीसरी पृथिवीमें एक मास, चौथी पृथिवीमें दो मास, पांचवीं पृथिवीमें चार मास, छटी पृथिवीमें छह मास और सातवीं पृथिवीमें बारह मास है। एक जीवकी अपेक्षा अन्तर काल नहीं है निरन्तर है। तीन शरीरवालोंका नाना और एक जीव

ध प्रतिषु 'णिरंतरं) तिसरीराण-' इति पाठः।

णत्थि अंतरं णिरंतरं ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमोघं । पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजीवं प० जह० तिण्णं पि एगसमओ, उक्क० पढमाणमंतोमुहुत्तं, बिदिय-तदीयाणं चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० अपज्जत्तअंतोमुहुत्तब्भहियपुव्वकोडिपुधत्तं बिदिय-तदियतिरिक्खाणं संपुण्णं पुव्वकोडिपुधत्तं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि ।

दोनों प्रकारसे भी अन्तर नहीं है निरन्तरकाल है। - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

विशेषार्थ— नरकमें यदि विग्रहगतिसे उत्पन्न होता है तो प्रारंभके एक या दो समय तक जीव दो शरीरवाला रहता है और उसके बाद तीन शरीरवाला हो जाता है। जो अपनी पर्यायके अन्त तक तीन शरीरवाला ही रहता है। तथा नरकसे निकलकर पुनः नरकमें जीव नहीं उत्पन्न होता, इसलिए तो यहाँ एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंके अन्तर कालका निषेध किया है। तथा नरकगतिका कभी अभाव नहीं होता, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंके अन्तरकालका निषेध किया है। परन्तु यह सम्भव है कि नरकमें या प्रथमादि नरकोंमें कोई जीव कमसे कम एक समय तक न उत्पन्न हो, इसलिए सर्वत्र दो शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय कहा है और सामान्यसे नरकमें अधिकसे अधिक चौबीस मुहूर्त तक कोई जीव नहीं उत्पन्न होता। तथा प्रथमादि नरकोंमें अधिकसे अधिक क्रमसे अडतालीस मुहूर्त, एक पक्ष, एक माह, दो माह, चार माह, छह माह और एक वर्ष तक नहीं उत्पन्न होता, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका सामान्यसे नरकमें और प्रथमादि नरकोंमें उत्कृष्ट अन्तर उक्त कालप्रमाण कहा है।

तिर्यञ्चगतिमें तिर्यञ्चोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्त और पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच योनिनियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा तीनोंका ही जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर प्रथमका अंतर्मुहूर्त है तथा द्वितीय और तृतीयका चौबीस मुहूर्त है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण और शेष दो में दो समय कम अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें अपर्याप्तकोंका अंतर्मुहूर्त मिलाकर पूर्वकोटि पृथक्त्वप्रमाण तथा दूसरे और तीसरे प्रकारके तिर्यञ्चोंमें सम्पूर्ण पूर्वकोटिपृथक्त्वप्रमाण है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। चार शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अंतर पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्यप्रमाण है। पञ्चेन्द्रिय

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त० विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्कस्सेण पण्णारस अंतोमुहुत्ताणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया ।

मणुसगदीए मणुस्सेसु मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु विसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० [illegible] जह० एगसमओ, उक्क० चदुवीस मुहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० पुव्वकोडिपुधत्तं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं । केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० पडुच्च णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णि पलिदो० पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । मणुसअपज्जत्त०

---

५५१ पृ. ४०६ तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह अन्तर्मुहूर्त है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है । पु. ७ अ

विशेषार्थ-सामान्य तिर्यञ्चोंका भंग ओघके समान है यह स्पष्ट ही है । पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्च आदिमें दो शरीरवाले आदिका अन्तर घटित करते समय तिर्यञ्च तिर्यञ्चोंमें उत्पन्न होते हैं इस बातको ध्यानमें रखकर अन्तरको घटित करना चाहिए। यहाँ जो विशेष बात कहनी है वह यह कि पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्त, पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिनी और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्त जीवोंमें लगातार यदि कोई जीव उत्पन्न न हो तो अधिकसे अधिक प्रथममें अन्तर्मुहूर्त काल तक, दूसरे-तीसरे भेदमें चौबीस मुहूर्त तक और अन्तके भेदमें अन्तर्मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता । इन सबमें नहीं उत्पन्न होनेका काल कमसे कम एक समय है यह स्पष्ट ही है । यही कारण है कि इनमें नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर अपने अपने अनुत्पत्तिके काल प्रमाण कहा है । इसी प्रकार आगे भी अपनी अपनी विशेषताका विचार कर अन्तरकाल घटित कर लेना चाहिए ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवालों का अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा तीनोंका ही जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर प्रथममें दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण और शेष दोमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त प्रमाण और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटि-पृथक्त्वप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटि-

तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० जहण्ण० एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एगजीवं प० जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्कस्सेण सत्त अंतोमुहुत्ताणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वेसमया ।

वेवगदीए देवेसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण चदुवीसं मुहुत्तं । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणेगजीवे प० णत्थि अंतरं । भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा त्ति तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवे प० जहण्णेण सत्तेतालीसमुहुत्तसमओ, उक्कस्सेण भवणवासिय—वाणवेंतर—जोइसिय—सोहम्मीसाणदेवाणं अडदालीस मुहुत्ता सणक्कुमार—माहिंदे पक्खो बम्ह—बम्हुत्तर—लांतव—काविट्ठदेवेसु मासो सुक्कमहासुक्क—सदर—सहस्सारकप्पवासियदेवेसु बे मासा आणद—पाणददेवेसु चत्तारि मासा

ध.पु.७ पृ.५०७ पृथक्त्व अधिक तीन पल्य है । मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर सात अन्तर्मुहूर्त है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है ।

विशेषार्थ— पहले अपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह अन्तर्मुहूर्त कह आये हैं और यहाँ सात अन्तर्मुहूर्त प्रमाण ही कहा है । सो इसका कारण यह है कि तिर्यञ्च संज्ञी और असंज्ञी दो प्रकारके होते हैं, इसलिए वहाँ संज्ञीके आठ असंज्ञीके आठ इस प्रकार सोलह भवोंको ग्रहण कर उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त किया गया है । पर मनुष्योंमें संज्ञी ही होते हैं, इसलिए संज्ञियोंके आठ भवोंका ग्रहण कर उत्कृष्ट अन्तर लाया गया है । यहाँ दोनों स्थलों पर भवग्रहणके प्रारम्भमें और अन्तिम भवके ग्रहण करनेके प्रारम्भमें दो शरीरवाला उत्पन्न कराकर यह अन्तरकाल लाना चाहिए ।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीव और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासी तकके देवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर सबका एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर भवनवासी, वानव्यन्तर, ज्योतिषी और सौधर्म-ऐशानकल्पके देवोंमें अडतालीस मुहूर्त, सनत्कुमार-माहेन्द्रमें एक पक्ष, ब्रह्म ब्रह्मोत्तर, लान्तव और कापिष्ठमें एक माह, शुक्र, महाशुक्र, शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंमें दो माह, आनत और प्राणतके देवोंमें

ध.पु.७ पृ.५०८

आरणच्चुददेवेसु छम्मासा णवगेवज्जदेवेसु बारसमासा णवअणुदिस-चत्तारिअणुत्तर-विमाणवासियदेवेसु वासपुधत्तं सव्वट्ठे पलिदोवमस्स संखे०भागो✽ । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं णाणेगजीवे पडुच्च उभयदो वि णत्थि अंतरं णिरंतरं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया ओघं । णवरि चदुसरीराणं एगजीवं पडुच्च उक्कस्सेण पलिदो० असंखे०भागो, वेउव्वियसंतकम्मियाणं चेव उत्तरसरीरविउव्वणणियमदंसणादो । बादरेइंदिय० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंगुलस्स असंखे०भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराण-

चार माह, आरण और अच्युतके देवोंमें छह माह, नौ ग्रैवेयकके देवोंमें बारह माह, नौ अनुदिश और चार अनुत्तरविमानवासी देवोंमें वर्षपृथक्त्व और सर्वार्थसिद्धिमें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा दोनों प्रकारसे अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है ।

विशेषार्थ-- षट्खण्डागम कृतिअनुयोगद्वारमें अन्तरप्ररूपणाके समय भी देवों और उनके अवान्तर भेदोंमें इस अन्तरकालका निर्देश किया है पर वहाँ भवनत्रिकके अड़तालीस मुहूर्त सौधर्मादिकमें एक पक्ष, सनत्कुमारद्विकमें एक माह, ब्रह्मोत्तर आदि चारमें दो महिना, शुक्र आदिचारमें चार महिना, आनत आदि चारमें छह महिना, नौ ग्रैवेयकोंमें बारह महिना अनुदिशों और अनुत्तरविमानोंमें वर्षपृथक्त्व और सर्वार्थसिद्धिमें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण उत्कृष्ट अन्तर कहा है । यहाँ कहे गये अन्तरसे उसमें कहीं कहीं फरक आता है सो जानकर इसका निर्णय करना चाहिए । यह सम्भव है कि इस विषयमें दो उपदेश मिलते हों और उनमेंसे एकका संकलन वहां किया हो और दूसरेका यहां । जो भी हो, हमें यहां सब प्रतियोंमें यह पाठ मिला है, इसलिए उसे वैसा ही रखा है ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रियोंका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, वैक्रियिकसत्कर्मवालोंके ही उत्तर शरीरकी विक्रियाका नियम देखा जाता है । बादर एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीके बराबर है । तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तर-

✽ उक्कस्सेण भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियाणं पादेक्कं अडदालीस मुहुत्ता । सोहम्मीसाणे पक्खो । सणक्कुमार-माहिंदे मासो । बह्म-बह्मोत्तर-लांतव-काविट्ठे वेमासा । सुक्क-महासुक्क-सदार-सहस्सारम्मि चत्तारिमासा । आणद-पाणद-आरणच्चुदेसु छम्मासा । णवगेवज्जेसु बारसमासा । अणुदिसादि जाव अवराइद त्ति वासपुधत्तं । सव्वट्ठे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । ष० खं, पु० ९, पृ० ४०८ ।

मंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं पडुच्च जह० खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं वा, उक्क० * पलिदो० असंखे० भागो । बादरेइंदिय-पज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एग-जीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि । बादरेइंदियअपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एग-जीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं । तिसरीराणं पंचिंदिय-तिरिक्खअपज्जत्तभंगो । सुहुमेइंदिय० बिसरीरा ओघं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया । सुहुमेइंदियपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं तिसमऊणं, उक्क० अंतो-मुहुत्तं । सुहुमेइंदियअपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्क०अंतोमुहुत्तं ।

काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । तीन शरीरवालोंका भंग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है । सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें दो शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर तीन समय है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर तीन समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर तीन समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । उक्त दोनों

---

* ता० का० प्रत्योः ' जह० अंतोमुहुत्तं उक्क० ' इति पाठः ।

दोण्णं पि तिसरीराणं अंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतर णिरंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएसु तेसिं पज्जत्तेसु च बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० जह० सव्वेसिमेगसमओ, उक्क० आवलियस्स अंतोमुहुत्तं तिण्हं पज्जत्ताणं चदुवीस-मुहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वाससहस्साणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो । पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० अन्तोमुहुत्तं चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह० खुद्दाभव-ग्गहणं बिसमऊणं अन्तोमुहुत्तं बिसमऊणं उक्क०* सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुध-त्तेणब्भहियसागरोवमसदपुधत्तं । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजीवं प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अन्तोमुहुत्तं उक्क० साग-रोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं सागरोवमसदपुधत्तं । पंचिंदियअपज्जत्ताणं

ही जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट तीन समय है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर सभीका एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर प्रारम्भके तीनोंमें अन्तर्मुहूर्त तथा तीनों पर्याप्तकोंमें चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर प्रारम्भके तीनोंमें दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण और अन्तके तीनोंमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है तथा उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्षप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंका भंग पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है । पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर पञ्चेन्द्रियोंमें अन्तर्मुहूर्त और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर पञ्चेन्द्रियोंमें दो समय कम क्षुल्लकभवग्रहणप्रमाण और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो समय कम अन्तर्मुहूर्त । तथा उत्कृष्ट अन्तर पञ्चेन्द्रियोंमें पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक एक हजार सागर और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अंतरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है । और उत्कृष्ट अन्तरकाल पञ्चेन्द्रियोंमें पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक एक हजार सागर और पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण

ध.पु. ७ पृ. ५१०

ध.पु. ७ पृ. ५१०

* ता० प्रतौ ' खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं उक्क० ' इति पाठः ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ।

कायाणुवादेण पुढवि०-आउ० बिसरीर-तिसरीराणं सुहुमेइंदियभंगो । बादर-पुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीर० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अन्तरं णिरन्तरं [illegible] जी० प० जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्कस्सेण कम्मट्ठिदी । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अन्तरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया । बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदि०-पत्तेयसरीरपज्जत्त०बिसरीराणमंतरं केवचिरं का०होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । एगजीवं प० जह० अन्तोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वाससहस्साणि । तिसरीराणं बेइंदियपज्जत्तभंगो । बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदि० पत्तेयसरीरअपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं

है । पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका भंग पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च अपर्याप्तकोंके समान है ।

विशेषार्थ—— एकेन्द्रियोंमें चार शरीरोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण क्यों है इस बातके समर्थनमें वीरसेन स्वामीका कहना है कि जिनके वैक्रियिकशरीर आदि चार प्रकृतियोंकी सत्ता है वे ही विक्रिया करते हैं, अन्य नहीं । सामान्य नियम यह है कि जिन एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके देवगतिद्विक, नरकगतिद्विक और वैक्रियिकचतुष्ककी सत्ता होती है वे इनकी नियमसे उद्वेलना करते हैं और उद्वेलनामें जघन्य और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण लगता है। इसका मतलब यह हुआ कि एकेन्द्रियोंमें वैक्रियिकशरीर आदि की सत्ता अधिकसे अधिक पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ही हो सकती है । और जब यह नियम मान लिया गया कि वैक्रियिकशरीरके सत्त्वके रहते हुए ही मनुष्य और तिर्यञ्च विक्रिया करते हैं तब उक्त कालके प्रारम्भमें और अन्तमें विक्रिया कराके ही यह अन्तर लाया जा सकता है । यही कारण कि यहाँ एकेन्द्रियोंमें उनकी काय-स्थिति अधिक होने पर भी एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है ।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके समान है। बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर जीवोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर कर्मस्थिति प्रमाण है। तीन शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर दो समय है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । तीन शरीरवालोंका भंग द्वीन्द्रियपर्याप्तकोंके समान है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त, बादर जलकायिक अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और

ध. पु. ४ पृ. ४११-४१२

बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । तेउ०-वाउ० बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । णवरि विसेसो जत्थ चदुसरीराणमणंतकालो तत्थ पलिदो० असंखे०भागो वत्तव्वो । बादर-तेउ०-बादरवाउ० बिसरीराणं बादरपुढविभंगो । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । बादरतेउक्काइयपज्जत्त० बिसरीराणमंतरं केवचि० का० होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वाससहस्साणि । तिसरीरा ओघं । चदु-सरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमु०, उक्क० संखेज्जाणि वाससहस्साणि।बादरवाउक्काइयपज्जत्त० बिसरी-राणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं बिसमऊणं, उक्क० संखेज्जाणि वाससहस्साणि । तिसरीरा ओघं । चदु-सरीराणमंतरं के० का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० संखेज्जाणि वाससहस्साणि । बादरतेउ० बादरवाउ० अपज्जत्ताणं बादरपुढवि०अपज्जत्तभंगो.सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-पज्जत्ता-

---

तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है। अग्निकायिक और वायु-कायिक जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है। इतना विशेष है कि जहाँ पर चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल कहा है वहाँ पल्य के असंख्यातवें भागप्रमाण कहना चाहिए । बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक जीवोंमें दो शरीरवालोंका भंग बादर पृथिवीकायिक जीवोंके समान है तथा तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष है । बादर अग्निकायिक अपर्याप्त और बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीवोंमें बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीवोंके समान भंग है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भंग सूक्ष्म

पज्जत्ताणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तभंगो । वणप्फदिकाइय० बिसरीरा तिसरीरा ओघं । बादरवणप्फदिकाइय० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियभंगो । बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियपज्जत्तभंगो । बादरवणप्फदिअपज्जत्ताणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । सुहुमवणप्फदिपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तभंगो । णिगोदजीवा बिसरीरा तिसरीरा ओघं । बादरणिगोदजीव० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियभंगो । बादरणिगोदजीवपज्जत्त० बिसरीर-तिसरीराणं बादरेइंदियपज्जत्तभंगो । बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं बादरेइंदियअपज्जत्तभंगो । सुहुमणिगोदपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तभंगो । तस० तस०पज्जत्ताणं पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो । णवरि विसेसो सगट्ठिदी भाणियव्वा । तसअपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्तभंगो ।

जोगाणुवादेण पंचमण० पंचवचि० तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं णाणेगजीवे पडुच्च उभयदो णत्थि । कायजोगि० बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरा ओघं । णवरि चदुसरीर० एयजीवस्स उक्क० पलिदो० असंखे०भागो । ओरालियकायजोगि० तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजी० पडुच्च णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जहण्णुक्कस्सेण

पृ. 290 एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके समान है । वनस्पतिकायिक जीवोंमें दो शरीर वाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । बादर वनस्पतिकायिकोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रियोंके समान है । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंमें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान भंग है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके समान है । निगोद जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । बादर निगोद जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रियोंके समान है । बादर निगोद पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान है । बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका भंग बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है । सूक्ष्म-निगोद तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भंग सूक्ष्म एकेन्द्रिय तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके समान है । त्रस और त्रस पर्याप्त जीवोंका भंग पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय-पर्याप्त जीवोंके समान है । इतना विशेष है कि अपनी अपनी स्थिति कहनी चाहिए । त्रस अपर्याप्तकोंका भंग पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके समान है ।

योग मार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी पाँचों वचनयोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा दोनों प्रकारसे नहीं है । काययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग पृ. 295 ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अंतर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । औदारिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० तिण्णि वाससहस्साणि वेसूणाणि । ओरालिय-मिस्सकायजोगि० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणेगजी० प० णत्थि अंतरं । वेउव्वियकायजोगि० तिसरीराणं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं । वेउव्विय-मिस्स० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० बारसमुहुत्ता । एगजीवं प० उभयदो णत्थि अंतरं । आहारदुगस्स चदुसरी-राणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० वास-पुधत्तं । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । कम्मइयकायजोगि० तिसरीराणमंतरं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं । एगजीवं प० णत्थि अंतरं ।

उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अंतर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन हजार वर्षप्रमाण है । औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तर काल कितना है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । वैक्रियिककाय-योगी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तर-काल नहीं है । वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है? नाना-जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । आहारकद्विकमें चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व प्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तर काल नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व-प्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है ।

वनस्पति की अपेक्षा

पु. ७ पृ. ५१६

विशेषार्थ-- पहले ओघसे चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अंतर अनंत काल कह आये हैं सो वहाँ किसी एक योग और एक इन्द्रियकी प्रधानता न होने से वह अन्तर बन जाता है । किन्तु यहाँ काययोगमें वह घटित नहीं होता, क्योंकि, काययोगका अधिक काल तक सद्भाव एकेन्द्रियोंके होता है और एकेन्द्रियोंमें चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण पहले घटित करके बतला आये हैं इसलिए यहाँ भी वह उतना ही कहा है । तथा औदारिककाययोगके रहते हुए चार शरीरोंकी प्राप्ति यदि हो तो वह जघन्य और उत्कृष्ट रूपसे अन्तर्मुहूर्त काल तक नियम से होती है, इसलिए इसमें तीन शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त कहा है । यद्यपि नरक में और देवोंमें अधिकसे अधिक काल तक कोई जीव उत्पन्न न हो तो चौबीस मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता पर सम्मिलित रूपसे विचार करने पर अधिकसे अधिक काल तक कोई नरकगति या देवगतिमें उत्पन्न न हो तो बारह मुहूर्त तक नहीं उत्पन्न होता, इसलिए वैक्रियिकमिश्रकाय-योगमें तीन शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहूर्त कहा है । कार्मण-

वेदाणुवादेण इत्थिवेदेसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० चदुवीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं तिसमऊणं उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० पलिदोवमसदपुधत्तं । एवं पुरिसवेदस्स । णवरि जत्थ पलिदोवमसदपुधत्तं तत्थ सागरोवमसदपुधत्तं वत्तव्वं । णवुंसयवेदेसु तिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं । अवगदवेद० तिसरीराणं णाणेगजीवे प० उभयदो णत्थि अंतरं ।

कसायाणुवादेण कोध-माण-माया-लोभकसाई० तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अकसाईणमवगदवेदभंगो ।

णाणाणुवादेण मदि-सुदअण्णाणि० तिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा ओघं ।

काययोगियोंमें तीन शरीरवालोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल केवलिसमुद्घातकी अपेक्षासे बतलाया है । तात्पर्य यह है कि केवली जीव एक समयके अन्तरसे भी केवलिसमुद्घात कर सकते हैं और अधिकसे अधिक काल तक यदि कोई जीव केवलिसमुद्घातको न प्राप्त हो तो वर्ष पृथक्त्व काल तक नहीं प्राप्त होता । शेष कथन स्पष्ट ही है ।

वेदमार्गणाके अनुवाद से स्त्रीवेदवालोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर सौ पल्य पृथक्त्वप्रमाण है । तीन शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अंतरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर सौ पल्य पृथक्त्वप्रमाण है । इसी प्रकार पुरुषवेदी जीवोंके जानना चाहिए । इतनी विशेषता है कि जहां सौ पल्य पृथक्त्वप्रमाण अन्तर कहा है वहां सौ सागर पृथक्त्वप्रमाण अन्तर कहना चाहिए । नपुंसकवेदी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । अपगतवेदी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभकषायवाले जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । अकषायी जीवोंमें अपगतवेदी जीवोंके समान भंग है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन

विभंगणाणी० तिसरीर-चदुसरीराणं णाणेगजीवे प० णत्थि अंतरं । आभिणि-सुद-ओहिणाणी० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क०मासपुधत्तं । ओहिणाणीसु वासपुधत्तं । एगजीवं प० जह० वासपुधत्तं, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । तिसरीरा ओघं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं उक्क० छावट्ठि-सागरोवमाणि सादिरेयाणि । मणपज्जवणाणी० तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह०णुक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराण-मंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जह० अंतो-मुहुत्तं, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । केवलणाणीणमवगदवेदभंगो ।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसरीर-चदुसरीराणं मणपज्जवभंगो । सामाइयच्छे-दोवट्ठावणसुद्धिसंजद० तिसरीर-चदुसरीराणं पि एवं चेव वत्तव्वं । परिहारसुद्धि-संजदेसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणेगजी० प० उभयदो वि णत्थि अंतरं । सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी०✱

शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है ? विभंगज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें दो शरीरवालोंका अन्तर-काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर प्रारम्भके दो ज्ञानोंमें मासपृथक्त्व तथा अवधिज्ञानमें वर्षपृथक्त्वप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर सादिक छयासठ सागर है । तीन शरीर-वालोंका भंग ओघके समान है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अंतर साधिक छयासठ सागर है । मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम एक पूर्वकोटिप्रमाण है । केवलज्ञानियोंका भंग अपगतवेदी जीवोंके समान है ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है । सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग इसी प्रकार कहना चाहिए । परिहारविशुद्धि-संयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है । सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतोंमें तीन शरीरवालोंका अन्त-रकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर

✱ ता० प्रतौ ' होदि ? णाणाजीवं ' इति पाठः ।

प० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० छम्मासा । एगजीवं प० णत्थि अंतरं जहाक्खाद-सुद्धिसंजद० तिसरीराणं केवलणाणी० भंगो । संजदासंजदाणं मणपज्जवणाणी० भंगो । असंजदा ओघं ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीणं तसपज्जत्तभंगो । अचक्खुदंसणी० ओघं । ओहिदंसणीणमोहिणाणी० भंगो । केवलदंसणीणं केवलणाणी० भंगो ।

लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउलेस्सिएसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीवं प० जहण्णेण सत्तरससागरोवमाणि तिसम-ऊणाणि सत्तसागरो० तिसमऊणाणि दसवाससहस्साणि तिसमऊणाणि उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि समऊणाणि सत्तसागरो० समऊणाणि सत्तसागरो० समऊणाणि। तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमु० । चदुसरीराणमुभयदो णत्थि अंतरं । तेउलेस्सिएसु तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अडदालीसमुहुत्ता । एगजीवं प० जहण्णेण पलिदोवमं सादिरेयं उक्कस्सेण बेसागरोवमाणि सादिरेयाणि । तिसरीराणमंतर केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं । एगजीव प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्त । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो

छह महीना है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । यथाख्यातशुद्धिसंयतोंमें तीन शरीरवालोंका भंग केवलज्ञानियोंके समान है । संयतासंयतोंका भंग मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है । असयतोंका भंग ओघके समान है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंका भंग असपर्याप्तकोंके समान है । अचक्षुदर्शनवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । अवधिदर्शनवाले जीवोंका भंग अवधिज्ञानियोंके समान है । केवलदर्शनवाले जीवोंका भंग केवलज्ञानियोंके समान है ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका अतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अतरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर कृष्णलेश्यामें दो समय कम सत्रह सागर, नीललेश्यामें दो समय कम सात सागर और कापोतलेश्यामें दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है । तथा उत्कृष्ट अन्तर कृष्णलेश्यामें एक समय कम तेतीस सागर, नीललेश्यामें एक समय कम सत्रह सागर और कापोतलेश्यामें एक समय कम सात सागर है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका उभयतः अंतरकाल नहीं है । पीतलेश्यावालोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अडतालीस मुहूर्त है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर साधिक एक पल्य है और उत्कृष्ट अंतर साधिक दो सागर है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अंतरकाल कितना

होदि ? णाणाजी० प० उभयदो णत्थि अंतरं। पम्मलेस्सिएसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० पक्खो। एगजीवं प० जह० बेसागरो० सादिरेयाणि, उक्क० अट्ठारससागरोवमाणि सादिरेयाणि। तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। चदुसरीराणमंतरं णाणेगजी० प० उभयदो णत्थि। सुक्कलेस्सिएसु बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० चत्तारि मासा। एगजीवं प० जह० अट्ठारससागरोवमाणि सादिरेयाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि समऊणाणि। तिसरीर-चदुसरीराणं तेउलेस्सियभंगो। भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया ओघं।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीणमोहिणाणी० भंगो। खइयसम्माइट्ठी० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० वासपुधत्तं। एगजीवं प० जह० चदुरासीवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरो० समऊणाणि। तिसरीरा ओघं। चदुसरीराणमंतरं* केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं। एगजीवं प० जह० अन्तोमुहुत्तं, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। वेदगसम्माइट्ठी० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प०

है ? नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अंतरकाल नहीं है। पद्मलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर एक पक्ष है। एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर साधिक दो सागर है और उत्कृष्ट अन्तर साधिक अठारह सागर है। तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है। चार शरीरवालोंका अन्तरकाल नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः नहीं है। शुक्ललेश्यावालोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर चार महीना है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर साधिक अठारह सागर है और उत्कृष्ट अन्तर एक समय कम तेतीस सागर है। तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग पीतलेश्यावाले जीवोंके समान है। भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्योंमें और अभव्योंमें ओघके समान भंग है। सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंका भंग अवधिज्ञानियोंके समान है। क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर दो समय कम चौरासी हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट अन्तर एक समय कम तेतीस सागर है। तीन शरीरवालोंका भंग ओघके समान है। चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अंतरकाल नहीं है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर साधिक तेतीस सागर है। वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवालोंका अंतरकाल

* अ० का० प्रत्योः 'ओघं तिसरीराणमंतरं' इति पाठः।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण मासपुधत्तं । एगजीवं प० जहण्णेण वासपुधत्तं उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि । तिसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० णत्थि अंतरं णिरंतरं । एगजीवं प० जह० अंतोमुहुत्तं, उक्क० छावट्ठिसागरोवमाणि देसूणाणि। उवसमसम्माइट्ठी० बिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ उक्क० वासपुधत्तं । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । तिसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण सत्तरादिंदियाणि । एगजीवं प० जह० एगसमओ उक्क० अंतोमुहुत्तं । चदुसरीराणमंतरं केवचिरं का० होदि? णाणाजी० प० जह० एगसमओ, उक्क० सत्तरादिंदियाणि । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । सासणसम्माइट्ठी० बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि ? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदो० असंखेज्जदिभागो । एगजीव प० णत्थि अंतरं । सम्मामिच्छाइट्ठी० तिसरीर-चदुसरीराणमंतरं केवचिरं कालादो होदि? णाणाजी० प० जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदो० असंखेज्जदिभागो । एगजीवं प० णत्थि अंतरं । मिच्छाइट्ठी० ओघं ।

कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर मास-पृथक्त्वप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर वर्षपृथक्त्वप्रमाण है और उत्कृष्ट अंतर कुछ कम छ्यासठ सागर है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है, निरन्तर है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम छ्यासठ सागर है । उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें दो शरीरवालोंका अन्तर-काल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अंतर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर वर्ष-पृथक्त्वप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । तीन शरीरवालोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर सात रात-दिन है । एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अंतर अंतर्मुहूर्त है । चार शरीरवालोंका अंतरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर सात रातदिन है । एक जीवका अपेक्षा अंतरकाल नहीं है । सासादनसम्य-ग्दृष्टियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्या-तवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अन्तरकाल कितना है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है और उत्कृष्ट अन्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकाल नहीं है । मिथ्यादृष्टियोंका भंग ओघके समान है ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं पुरिसवेदभंगो । असण्णी० ओघं । णेव सण्णि-असण्णि० तिसरीराणं णाणेगजीवे प० उभयदो णत्थि अंतरं ।

आहाराणुवादेण आहारिणो तिसरीरा चदुसरीरा ओघं । णवरि चदुसरीराणं उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । अणाहाराणं कम्मइयभंगो । णवरि जम्हि वासपुधत्तमंतरं तम्हि छम्मासा ।

एवं अंतराणुयोगद्दारं समत्तं ।

भावाणुगमेण दुविहो णिद्देसो-ओघेण आदेसेण य । ओघेण तिसरीर-तिसरीर-चदुसरीराणं को भावो ? ओदइओ भावो । एवं णेयव्वं जाव अणाहारए त्ति ।

एवं भावाणुयोगद्दारं समत्तं ।

अप्पाबहुगाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ।१६८।

कुदो ? दव्वट्ठिय-पज्जवट्ठियभेदेण दुविहाणं चेव सिस्साणमुवलंभादो ।

ओघेण सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ १६९ ॥

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंका भंग पुरुषवेदी जीवोंके समान है । असंज्ञियोंका भंग ओघके समान है । न संज्ञी न असंज्ञी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका नाना जीवों और एक जीवकी अपेक्षा उभयतः अन्तरकाल नहीं है ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका भंग ओघके समान है । इतनी विशेषता है कि चार शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है । अनाहारकोंका भंग कार्मणकाययोगियोंके समान है । इतनी विशेषता है कि जहां वर्षपृथक्त्व अन्तर है वहां छह महीना अन्तर कहना चाहिए ।

विशेषार्थ-- अयोगकेवलीका उत्कृष्ट अन्तर छह माह है, इसलिए अनाहारकोंमें तीन शरीरवालोंका उत्कृष्ट अन्तर छह महीना कहा है ।

इस प्रकार अन्तरानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

भावानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है- ओघ और आदेश । ओघसे दो शरीर-वाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कौन भाव है ? औदयिक भाव है । इस प्रकार अनाहारक मार्गणा तक ले जाना चाहिए ।

इस प्रकार भावानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्वानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है- ओघ और आदेश । १६८ ।

क्योंकि, द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिकके भेदसे दो प्रकारके ही शिष्य उपलब्ध होते हैं ।

ओघसे चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १६९ ॥

क्योंकि, ये पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनांगुलोंसे गुणित जगश्रेणिप्रमाण होते हैं ।

असरीरा अणंतगुणा ॥१७०॥

को गुणगारो ? सिद्धाणमसंखे०भागो । को पडिभागो ? चदुसरीरजीवा पडिभागो* ।

बिसरीरा अणंतगुणा ॥१७१॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तेण खंडिदसव्वजीवरासिपमाणत्तादो । को गुणगारो ? सव्वजीवरासिस्स अणंतिमभागो । को पडिभागो ? अंतोमुहुत्तगुणिदसिद्धरासी ।

आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७२॥

को गुणगारो ? अंतोमुहुत्तं ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा बिसरीरा ॥१७३॥

कुदो ? णेरइयरासिं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदएयखंडपमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७४॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । असंखेज्जवासाउएसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

उनसे अशरीरी जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १७० ॥

गुणकार क्या है ? सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? चार शरीरवाले जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है ।

उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १७१ ॥

क्योंकि, सब जीवराशिमें अन्तर्मुहूर्तका भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना इनका प्रमाण है । गुणकार क्या है ? सब जीवराशिका अनन्तवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अन्तर्मुहूर्तसे गुणित सिद्धराशि प्रतिभाग है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १७२ ॥

गुणकार क्या है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणकार है ।

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १७३ ॥

क्योंकि, नारकराशिमें आवलिके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण वहाँ दो शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १७४ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । तथा असंख्यात वर्षकी आयुवालोंमें पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

---

* प्रतिषु ' चदुसरीरजीवपडिभागो ' इति पाठः]

एवं जाव सत्तसु पुढवीसु ॥ १७५ ॥

सत्तसु* पुढवीसु पत्तेयं पत्तेयं अप्पाबहुअपरूवणे कीरमाणे जहा णिरओघम्हि वुत्तं तहा वत्तव्वं ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं ॥ १७६ ॥

जहा मूलोघम्हि अप्पाबहुअपरूवणा कदा तहा तिरिक्खेसु कायव्वा । णवरि असरीरा णत्थि । तं जहा- सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा अणंतगुणा । को गुणगारो? तिसरीराणमसंखे० भागो । को पडि० ? चदुसरीररासी । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो? संखेज्जावलियाओ ।

पंचिंदियतिरिक्खं*-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ १७७ ॥

कुदो? पलिदो० असंखे०भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १७८ ॥

को गुणगारो ? सेडिए असंखे०भागो । तस्स को पडिभागो? चदुसरीरविक्खंभ-

---

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए ॥ १७५ ॥

अलग अलग प्रत्येक पृथिवीमें अल्पबहुत्वका कथन करने पर जिस प्रकार सामान्य नारकियोंमें कहा है उस प्रकार कहना चाहिए ।

तिर्यंचगतिकी अपेक्षा तिर्यंचोंमें ओघके समान भंग है ॥ १७६ ॥

जिस प्रकार मूलोघमें अल्पबहुत्वप्ररूपणा की है उस प्रकार तिर्यंचोंमें करनी चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहां अशरीरी जीव नहीं है । यथा- चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? दो शरीरवालोंके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। प्रतिभाग क्या है ? चार शरीरवालोंकी राशि प्रतिभाग है। उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? संख्यात आवलियां गुणकार है ।

पंचेंद्रिय तिर्यंच, पंचेंद्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिनियोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १७७ ॥

क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण घनांगुलोंसे जगश्रेणिके गुणित करनेपर जो लब्ध आवे उतना यहां चार शरीरवालोंका प्रमाण है ।

उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १७८ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसका प्रतिभाग

---

* ता० प्रतौ सूत्रानन्तरं ' सत्तसु पुढवीसु ' इति पाठो नास्ति ।

* अ० प्रतौ ' पंचिंदियतिरिक्ख- ' इति पाठो नास्ति ।

सूचीए गुणिदसगसगअवहारकालो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥१७९॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । कुदो ? आवलियाए असंखे०भागमेत्त-उवक्कमणकालेण सगसगरासीए ओवट्टिदाए बिसरीराणं पमाणुप्पत्तीदो । विग्गहगदीए चेव उप्पज्जमाणा बहुगा ण उजुगदीए, उज्जुवाए गदीए उप्पज्जमाणोपदेसस्स थोवत्तुवलंभादो । के वि आइरिया उजुगदीए उप्पज्जमाणा जीवा बहुआ त्ति भणंति तेसिमहिप्पाएण गुणगारो पलिदो० असंखे०भागो होदि । एदमत्थपदं सव्वमग्ग-णासु परूवेयव्वं ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता णेरइयाणं भंगो ॥१८०॥

जहा णेरइयाणमप्पाबहुगं परूविदं तहा एत्थ वि परूवेयव्वं । तं जहा— सव्वत्थोवा बिसरीरा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखे०भागो । पलिदो० असंखे०भागो गुणगारो त्ति सव्वमग्गणासु के वि आइरिया भणंति, तण्ण घडदे । कुदो ? संखेज्जावलियाहि सव्वजीवरासिम्मि ओवट्टिदे कम्मइय-रासिपमाणागमण*ण्णहाणुववत्तीदो । जदि उप्पज्जमाणजीवाणमसंखेज्जो भागो विग्गहं

क्या है ? अपने अपने अवहारकाल को चार शरीरवालोंकी विष्कंभसूचीसे गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥१७९॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण उपक्रमण कालसे अपनी अपनी राशिके भाजित करने पर दो शरीर वालोंका प्रमाण उत्पन्न होता है । विग्रहगतिसे ही उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत हैं, ऋजुगतिसे नहीं, क्योंकि, ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेवाले जीव स्तोक हैं ऐसा उपदेश पाया जाता है । कितने ही आचार्य ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत हैं ऐसा कहते हैं, इसलिए उनके अभिप्रायसे गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । यह अर्थपद सब मार्गणाओंमें कहना चाहिए ।

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अपर्याप्तकोंमें नारकियोंके समान भंग है ॥१८०॥

जिसप्रकार नारकियोंका अल्पबहुत्व कहा है उसीप्रकार यहां भी कहना चाहिए । यथा— दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । सब मार्गणाओंमें पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ऐसा भी कितने ही आचार्य कथन करते हैं किन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, संख्यात आवलियोंसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर कार्मणराशिका प्रमाण आता है, अन्यथा वह बन नहीं सकता है । यदि उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी असंख्यातवें

---

* अ० का० प्रत्योः ' –पमाणगमण– ' इति पाठः ।

कुणदि तो पलिदो० असंखे०भागेण गुणिदसंखेज्जावलियाओ सव्वजीवरासिस्स भागहारो होज्ज । ण च एवं, तहाणुवलंभादो तम्हा असंखे०भागो चेव उजुगदीए उप्पज्जदि त्ति घेत्तव्वं ।

मणुसगदीए मणुसा पंचिंदियतिरिक्खाणं भंगो ॥ १८१ ॥

तं जहा- सव्वत्थोवा चदुसरीरा, संखेज्जपमाणत्तादो । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? विसरीराणं संखे०भागो । तस्स को पडिभागो ? चदुसरीरसंखेज्जजीवा । अथवा गुणगारो सेडीए असंखे०भागो । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । पलिदो० असंखे०भागो गुणगारो होदि त्ति पुव्वं व परूवेयव्वं ।

मणसपज्जत्त-मणसिणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ १८२ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागरजी महाराज

विउव्वमाणाणमाहारसरीरेण परिणमंताणं अइथोवत्तदंसणादो ।

विसरीरा संखेज्जगुणा ॥ १८३ ॥

विउव्वमाणजीवेहिंतो विग्गहगदीए उप्पज्जमाणजीवाणं संखेज्जगुणत्तुवलंभादो ।

भागप्रमाण जीवराशि विग्रह करती है तो पल्यके असंख्यातवें भागसे संख्यात आवलियोंके गुणित करने पर समस्त जीवराशिका भागहार होवे । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, उस प्रकार भागहार नहीं उपलब्ध होता, इसलिए असंख्यातवें भागप्रमाण राशि ही ऋजुगतिसे उत्पन्न होती है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए ।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंके समान भङ्ग है ।१८१।

यथा- चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं, क्योंकि, उनका प्रमाण संख्यात है । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? दो शरीरवालोंके संख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? चार शरीरवाले संख्यात जीव प्रतिभाग है । अथवा गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ऐसा पहलेके समान कहना चाहिए ।

मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ।१८२।

क्योंकि, विक्रिया करनेवाले और आहारक शरीररूपसे परिणत हुए मनुष्य अति स्तोक देखे जाते हैं ।

उनसे दो शरीरवाले मनुष्य संख्यातगुणे हैं ।।१८३।।

क्योंकि, विक्रिया करनेवाले जीवोंसे विग्रहगतिसे उत्पन्न होनेवाले उक्त मनुष्य संख्यातगुणे उपलब्ध होते हैं ।

ता० प्रतौ ' गुणगारो (ण-) होज्जदि त्ति ' इति पाठः ।

तिसरीरा संखेज्जगुणा ॥ १८४ ॥

सुगमं ।

मणुसअपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तभंगो ॥ १८५ ॥

तं जहा- सव्वत्थोवा विसरीरा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखे०भागो ।

देवगदीए देवा सव्वत्थोवा[1] विसरीरा ॥ १८६ ॥

कुदो ? सगरासी आवलि०[*] असंखे०भागेण खंडिदेय (खंड-) पमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १८७ ॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । कुदो? संखेज्जवासाउअदेवेसु उप्पज्जमाणजीवाणं बहुत्तुवलंभादो ।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवा त्ति णेयव्वं ॥ १८८ ॥

णवरि जोइसियप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारदेवेसु गुणगारो पलिदो० असंखे०-भागो होदि, तत्थ संखेज्जवासाउआणमभावादो । आणद-पाणदप्पहुडि जाव अवराइदं

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

उनसे तीन शरीरवाले मनुष्य संख्यातगुणे हैं ॥ १८४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्य अपर्याप्तकोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तकोंके समान भंग है । १८५ ।

यथा- दो शरीरवाले सबसे स्तोक हैं। उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

देवगतिकी अपेक्षा दो शरीरवाले देव सबसे स्तोक हैं । १८६ ।

क्योंकि, अपनी राशिको आवलिके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो एक भाग लब्ध आवे तत्प्रमाण दो शरीरवाले देव है ।

उनसे तीन शरीरवाले देव असंख्यातगुणे हैं । १८७ ।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है क्योंकि, संख्यात वर्षकी आयुवाले देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत पाये जाते हैं ।

इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर अपराजित विमानवासी तकके देवोंमें जानना चाहिए । १८८ ।

इतनी विशेषता है कि ज्योतिषियोंसे लेकर शतार सहस्रार कल्प तकके देवोंमें गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, वहां पर संख्यात वर्षकी आयुवाले देवोंका अभाव

---

[1] ता० प्रतौ ' देवा (वेसु) सव्वत्थोवा ' इति पाठः ।

[*] ता० प्रतौ ' सगरासी (सि) आवलि ' इति पाठः ।

ति जेण विसरीरा तत्थ संखेज्जा तेण तत्थ वि गुणगारो पलिदोवमस्स असंखे० भागो।

सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा सव्वत्थोवा विसरीरा ॥ १८९॥

सुगमं।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १९० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरएइंदियपज्जत्ता ओघं ॥१९१॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा। विसरीरा अणंतगुणा। तिसरीरा असंखेज्ज-गुणा त्ति भेदाभावादो।

बादरेइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ता बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ता सव्वत्थोवा विसरीरा ॥ १९२ ॥

विग्गहगदीए सगसगरासीणमसंखे०भागस्स उप्पत्तिदंसणादो। णवरि णिरंतर-रासीसु सगसगट्ठिदीए सगसगदव्वे भागे हिदे एगसमयसंचिदविसरीराणं पमाणं होदि।

है। आनत-प्राणत कल्पसे लेकर अपराजित विमान तकके देवोंमें यतः दो शरीरवाले वहां संख्यात हैं अतः वहां भी गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

सर्वार्थसिद्धिविमानवासी दो शरीरवाले देव सबसे स्तोक हैं ॥१८९॥

यह सूत्र सुगम है।

उनसे तीन शरीरवाले संख्यातगुणे हैं। १९०।

गुणकार क्या है। संख्यात समय गुणकार है।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय-पर्याप्तकोंका भङ्ग ओघके समान है ॥१९१॥

क्योंकि, उनमें चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं। उनसे दो शरीरवाले अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं, इस दृष्टिसे कोई भेद नहीं है।

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त और पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥१९२॥

क्योंकि, विग्रहगतिमें अपनी अपनी राशिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंकी उत्पत्ति देखी जाती है। इतनी विशेषता है कि निरन्तर राशियोंमें अपनी अपनी स्थितिका अपने अपने द्रव्यमें

पार्श्वदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सांतराणं णिरंतरुवक्कमणकालसहिदंतरेण सगट्ठिदिमोवट्टिय णिरंतरुवक्कमणकालेण गुणिदे सव्वुवक्कमणकालो होदि तेण सगसगदव्वे भागे हिदे एगसमयसंचिदबिसरीर-जीवपमाणं होदि ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १९३ ॥

को गुण० ? णिरंतररासीसु संखेज्जावलियाओ । अण्णत्थ आवलि० असंखे०भागो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता मणुसगदिभंगो ॥ १९४ ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखे०गुणा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिदे अत्थि भेदो कुदो? मणुस्सेसु संखेज्जाणं चदुसरीराणं पंचिंदिएसु असंखेज्जाणमुवलंभादो ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयअपज्जत्ता सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता

भाग देनेपर एक समयमें संचित हुए दो शरीरवालोंका प्रमाण होता है । सांतरराशियोंमें निरंतर उपक्रमण कालसे सहित अन्तरसे अपनी स्थितिको भाजित कर जो लब्ध आवे उसे निरन्तर उपक्रमण कालसे गुणित करने पर सब उपक्रमणकालका प्रमाण होता है, पुनः उससे अपने अपने द्रव्यके भाजित करने पर एक समयमें संचित हुए दो शरीरवाले जीवोंका प्रमाण होता है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १९३ ॥

गुणकार क्या है ? निरन्तर राशियोंमें संख्यात आवलियां गुणकार है । अन्यत्र आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

पञ्चेन्द्रिय और पञ्चेन्द्रियपर्याप्तकोंमें मनुष्यगतिके समान भङ्ग है ॥ १९४ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं, इस अल्पबहुत्वसे यहां कोई भेद नहीं है । परन्तु पर्यायार्थिकनयका अवलम्बन करने पर भेद है ही, क्योंकि, चार शरीरवाले जीव मनुष्योंमें संख्यात और पञ्चेन्द्रियोंमें असंख्यात उपलब्ध होते हैं ।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक, जलकायिक, वनस्पतिकायिक, निगोदजीव, उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक और वायुकायिक तथा उनके पर्याप्त

ॐ प्रतिषु '-सचिदसरीर-' इति पाठः ।

सव्वत्थोवा विसरीरा ॥ १९५ ॥

सगसगरासिम्हि संखेज्जावलियपडिभागेण सगसगदोसरीरपमाणुप्पत्तीदो । तसकाइयअपज्जत्तएसु आवलियाए असंखे०भागेण सगरासिम्हि ओवट्टिदे विसरीराणमुप्पत्तिदंसणादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १९६ ॥

को गुण०? आवलि० असंखे०भागो । तसअपज्जत्तएसु अण्णत्थ संखेज्जावलियाओ ।

तेउकाइय-वाउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयपज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता पंचिंदियपज्जत्तभंगो ॥ १९७ ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । तिसरीरा असंखे०गुणा इच्चेवेहि तत्तो भेदाभावादो । गुणगारेण दव्वपमाणेण च भेदो अत्थि सो एत्थ ण विवक्खिदो । सो च भेदो जाणिय परूवेयव्वो ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि--पंचवचिजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ १९८ ॥

और अपर्याप्त तथा त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥ १९५ ॥

क्योंकि, अपनी अपनी राशिमें संख्यात आवलिप्रमाण मध्यम स्थितिका भाग देने पर अपने अपने दो शरीरवालोंका प्रमाण उत्पन्न होता है । त्रसकायिक अपर्याप्तकोंमें आवलिके असंख्यातवें भागसे अपनी राशिके भाजित करने पर दो शरीरवालोंकी उत्पत्ति देखी जाती है।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १९६ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अन्यत्र त्रसअपर्याप्तकोंमें संख्यात आवलियां गुणकार है ।

अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर अग्निकायिकपर्याप्त, बादर वायुकायिक और बादर वायुकायिकपर्याप्त, त्रसकायिक और त्रसकायिक—पर्याप्त जीवोंमें पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान भङ्ग हैं ॥१९७॥

क्योंकि, चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा उनसे इनमें कोई भेद नहीं है । गुणकार और द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा यद्यपि भेद है परन्तु उनकी यहां विवक्षा नहीं है । तथा उस भेदको जानकर कहना चाहिए ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी और पाँचों वचनयोगी जीवोंमें चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥१९८॥

कुदो ? पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ १९९ ॥

को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो ।

कायजोगी ओघं ॥ २०० ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे०-गुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

ओरालियकायजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ २०१ ॥

कुदो ? पलिदो० असंखे०भागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदजगसेडिपमाणत्तादो ।

तिसरीरा अणंतगुणा ॥ २०२ ॥

को गुण? अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्वियकायजोगि-वेउव्वियमिस्स-कायजोगि-आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु णत्थि अप्पा-बहुअं ॥ २०३ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

क्योंकि, पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिको गुणित करने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण चार शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं ॥ १९९ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

काययोगवाले जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ २०० ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

औदारिककाययोगी जीवोंमें चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं ॥ २०१ ॥

क्योंकि, पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिको गुणित करने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण चार शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले अनन्तगुणे हैं ॥ २०२ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीव राशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥ २०३ ॥

क्योंकि, इनमें एक ही पद है ।

कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा तिसरीरा ॥ २०४ ॥

कुदो ? पदर-लोगपूरणगदसजोगीणं संखेज्जाणं चेव उवलंभादो ।

विसरीरा अणंतगुणा ॥ २०५ ॥

को गुण० ? अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदा पंचिंदियभंगो ॥ २०६ ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा असंखेज्जगुणा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

णवुंसयवेदा कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाइ ओघं ॥ २०७ ॥

आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा* । तिसरीरा असंखेज्जगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

अवगदवेद-अकसाईणं णत्थि अप्पाबहुगं ॥ २०८ ॥

कार्मणकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । २०४ ।

क्योंकि, प्रतर और लोकपूरण अवस्थाको प्राप्त हुए सयोगिकेवली संख्यात ही उपलब्ध होते हैं।

उनसे दो शरीरवाले अनन्तगुणे हैं । २०५ ।

गुणकार क्या है ? सब जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदवाले और पुरुषवेदवाले जीवोंमें पंचेन्द्रियोंके समान भंग है । २०६ ।

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा इनमें कोई भेद नहीं है ।

नपुंसकवेदवाले जीवों तथा कषाय मार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले और लोभकषायवाले जीवोंमें ओघके समान भंग है । २०७ ।

क्योंकि, चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

अपगतवेदी और अकषायी जीवोंमें अल्पबहुत्व नहीं है । २०८ ।

---

* अ० प्रतौ ' चदुसरीरा अणंतगुणा ' इति पाठः ।

कुदो ? एगपदत्तादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणी ओघं* ॥२०९॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे०-गुणा इच्चेदेहि विसेसाभावादो ।

विहंगणाणी सव्वत्थोवा* चदुसरीरा ॥२१०॥

कुदो ? पलिदो० असंखे०भागेण गुणिदघणंगुलमेत्तजगसेडिपमाणतिरिक्खविभंगणाणीणमसंखे०भागत्तादो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥२११॥

को गुणगारो ? सेडीए असंखे०भागो ।

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो ॥२१२॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलियाए असंखे०भागो । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे-

---

क्योंकि, इनमें एक ही पद है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुतज्ञानी जीवोंमें ओघके समान भङ्ग है ॥ २०९ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

विभङ्गज्ञानी जीवोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २१० ॥

क्योंकि, पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण घनाङ्गुलोंसे जगश्रेणिके गुणित करने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण चार शरीरवाले जीव हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं ॥ २११ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान भङ्ग है ॥ २१२ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले

---

* ता० प्रतौ ' -सुदअण्णाणीसु ओघं- ' इति पाठः ।

* ता० प्रतौ ' विहंगणाणीसु सव्वत्थोवा ' इति पाठः ।

भागो इच्चेदेसु पदेसु असंखेज्जगुणत्तणेण भेदाभावादो, दव्व-गुणगारगयभेदाणं विवक्खाभावादो ।

मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ॥ २१३ ॥

विउव्वमाणमणपज्जवणाणि* संजदाणं सुट्ठु थोवत्तुवलंभादो ।

तिसरीरा संखेज्जगुणा* ॥ २१४ ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया ।

यापनगर्न [illegible]

केवलणाणीसु अत्थि अप्पाबहुगं ॥ २१५ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २१६ ॥

सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा* संखेज्जगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

परिहारसुद्धिसंजद-सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजद-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदाणं णत्थि अप्पाबहुगं ॥ २१७ ॥

जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है इत्यादि पदोंमें असंख्यातगुणपनेकी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंसे इनमें कोई भेद नहीं है । तथा द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और गुणकारकी अपेक्षा रहनेवाले भेदकी यहां विवक्षा नहीं है ।

मनःपर्ययज्ञानियोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २१३ ॥

क्योंकि, विक्रिया करनेवाले मनःपर्ययज्ञानी संयत जीव बहुत ही स्तोक पाये जाते हैं ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव संख्यातगुणे हैं ॥ २१४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

केवलज्ञानियोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥ २१५ ॥

क्योंकि, उनमें एक ही पद पाया जाता है ।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयत, सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानियोंके समान भङ्ग है ॥ २१६ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव संख्यातगुणे हैं इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा मनःपर्ययज्ञानियोंसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

परिहारशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत जीवोंका अल्पबहुत्व नहीं है ॥ २१७ ॥

---

* ता०प्रतौ '-माणम (णपज्जव) णाणि ' अ०का० प्रत्योः '-माणमणाणि-' इति पाठः ।
* ता०प्रतौ ' तिसरीरा (अ) संखेज्जगुणा ' अ०का० प्रत्योः ' तिसरीरा असंखेज्जगुणा इति पाठः ।
* ता०प्रतौ ' चदुसरीरा । वि (ति) सरीरा ' अ०का० प्रत्यो ' चदुसरीरा तिसरीरा ' इति पाठः ।

कुदो ? एगपदत्तादो ।

संजदासंजदा विभंगणाणिभंगो ॥ २१८ ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुणगारो ? आवलि० असंखे०भागो इच्चेदेसु असंखेज्जगुणत्तणेण भेदाभावादो ।

असंजद-अचक्खुदंसणी ओघं* ॥ २१९ ॥

लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउलेस्सिया भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धिया ओघं ॥ २२० ॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? संखेज्जावलियाओ इच्चेदेण भेदाभावादो ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी ओहिदंसणी तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो ॥ २२१ ॥

कुदो ? पदसंखाए असंखेज्जगुणत्तणेण च भेदाभावादो । अत्थदो पुण अत्थि

क्योंकि, इन मार्गणाओंमें एक ही पद है ।

संयतासंयतोंमें विभङ्गज्ञानियोंके समान भंग है ॥ २१८ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इस प्रकार इनमें असंख्यातगुणत्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

असंयत और अचक्षुदर्शनवाले जीवोंका भंग ओघके समान है ॥ २१९ ॥

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले तथा भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्य और अभव्य जीवोंमें ओघके समान भंग है ॥ २२० ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं और उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात आवलियां गुणकार है । इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा यहां कोई भेद नहीं है ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले और अवधिदर्शनवाले तथा पीतलेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले जीवोंमें पञ्चेन्द्रियपर्याप्तकोंके समान भंग है ॥ २२१ ॥

क्योंकि, पदोंकी संख्या और असंख्यातगुणत्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है । अर्थकी

---

* म०प्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रतौ सूत्रमिदं पृथक् नोपलभ्यते] अ० प्रतौ अस्मिन् सूत्रे ' ओघं ' इति पाठः तथा का० प्रतौ ' असंजद ' इति पाठो नोपलभ्यते ।

भेदो । तं जहा– चक्खुदंसणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? सेडीए असंखे० भागो । तिसरीरा असंखे० गुणा । को गुणगारो । आवलि० असंखे० भागो । ✡ ओहिदंसणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा✱ असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । तिसरीरा✲ असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । तेउलेस्सिएसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखेज्जगुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो । अहवा गुणगारो ण णव्वदे, विसिट्ठुवएसाभावादो । तिसरीरा असंखे० गुणा । को गुण० ? सेडीए असंखे० भागो । एवं पम्मलेस्सियाणं ।

केवलदंसणीणं णत्थि अप्पाबहुगं ॥ २२२ ॥

कुदो ? एगपदत्तादो ।

सुक्कलेस्सिया सव्वत्थोवा तिसरीरा ॥ २२३ ॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

चदुसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ २२४ ॥

अपेक्षा तो भेद है ही । यथा– चक्षुदर्शनवालोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अवधिदर्शनवालोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । पीतलेश्यावालोंमें चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अथवा गुणकारका ज्ञान नहीं है, क्योंकि, इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है । जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इसी प्रकार पद्मलेश्यावालोंके जानना चाहिए ।

केवलदर्शनवालोंमें अल्पबहुत्व नहीं है ॥ २२२ ॥

क्योंकि, इनमें एक ही पद है ।

शुक्ललेश्यावालोंमें दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २२३ ॥

क्योंकि, इनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे चार शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२४ ॥

✡ का० प्रतौ ' ओहिदंसणीसु ' इत आरभ्य ' तेउलेस्सिएसु ' इति यावत् पाठो नोपलभ्यते ।
✱ ता० प्रतौ ' चदुसरीरा । ति (वि) सरीरा ' इति पाठः ।
✲ ता० प्रतौ ' असंखे०भागो । वि (ति) सरीरा ' इति पाठः ।

को गुण० ? पलिदोवमस्स असंखे०भागस्स संखे०भागो ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ २२५ ॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी सासणसम्मा-इट्ठीपंचिंदियपज्जत्तभंगो ॥ २२६ ॥

कुदो? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण०? आवलि० असंखे०भागो । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो त्ति पदसंखाए असंखेज्जगुणत्तणेण[1] च भेदाभावादो ।

खइयसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सव्वत्थोवा तिसरीरा ।२२७[1]

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

चदुसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ २२८ ॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

को गुण० ? पलिदो० असंखे० भागो ।

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२५ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सम्यक्त्व मार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवोंमें पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके समान भंग है ॥ २२६ ॥

क्योंकि, चार शरीरवाले सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है इस प्रकार पदसंख्या और असंख्यातगुणत्वकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं ॥ २२७ ॥

क्योंकि, इनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे चार शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२८ ॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

---

[1] अ०का० प्रत्योः ' पदसंखा असंखेज्जगुणत्तणेण ' इति पाठः ।

तिसरीरा असंखेज्जगुणा ॥ २२९ ॥

को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो ।

सम्मामिच्छाइट्ठी संजदासंजदाणं भंगो ॥ २३० ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

मिच्छाइट्ठीणं ओघं ॥ २३१ ॥

आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा अणंतगुणा । तिसरीरा असंखे०गुणा इच्चेवेहि भेदाभावादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो ॥ २३२ ॥

कुदो ? सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? सेढीए असंखे०भागो । तिसरीरा असंखे०गुणा । को गुण० ? आवलि० असंखे०भागो इच्चेवेदेहि भेदाभावादो ।

उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२९ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें संयतासंयतोंके समान भङ्ग है । २३० ।

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है इस प्रकार इसकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है ।

मिथ्यादृष्टियोंमें ओघके समान भङ्ग है । २३१ ।

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा ओघसे इनमें कोई भेद नहीं है ।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें पञ्चेन्द्रियपर्याप्तकोंके समान भङ्ग है ।२३२।

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तीन शरीरवाले जीव असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंसे संज्ञी जीवोंमें कोई भेद नहीं है ।

असण्णी ओघं ॥ २३३ ॥

सुगममेदं ।

आहाराणुवादेण आहारएसु ओरालियकायजोगिभंगो ॥ २३४॥

सव्वत्थोवा चदुसरीरा । तिसरीरा अणंतगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

अणाहारा कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ २३५ ॥

सव्वत्थोवा तिसरीरा । विसरीरा अणंतगुणा इच्चेदेहि भेदाभावादो ।

एवमप्पाबहुए समत्ते सरीरिसरीरपरूवणा त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

असंज्ञियोंमें ओघके समान भंग है ॥२३३॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंमें औदारिककाययोगी जीवोंके समान भंग है ॥२३४॥

क्योंकि, चार शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे तीन शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं । इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा औदारिककाययोगियोंसे आहारक जीवोंमें कोई भेद नहीं है ।

अयोग केवली की अपेक्षा

अनाहारक जीवोंमें कार्मणकाययोगी जीवोंके समान भंग है ॥२३५॥

क्योंकि, तीन शरीरवाले जीव सबसे स्तोक हैं । उनसे दो शरीरवाले जीव अनन्तगुणे हैं । इस प्रकार इस अल्पबहुत्वकी अपेक्षा कार्मणकाययोगी जीवोंसे अनाहारक जीवोंमें कोई भेद नहीं है ।

विशेषार्थ- बाह्य वर्गणाके मुख्य भेद चार हैं- शरीरिशरीरप्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा, शरीर-विस्रसोपचयप्ररूपणा और विस्रसोपचयप्ररूपणा । साधारणतः संसारी जीवोंके कुल पाँच शरीर होते हैं । उनका जीवोंके साथ कथन करना कि किस जीवके किस अपेक्षासे कितने शरीर होते हैं इसे शरीरिशरीरप्ररूपणा कहते हैं । यहां इसी अनुयोगद्वारका सत्, संख्या आदि आठ अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर विवेचन किया गया है । साधारणतः यहां यही बात बीजरूपमें बतलानी है कि ये पाँच शरीर किस नियमके साथ कितने होते हैं । यह तो सामान्य नियम है कि सब संसारी जीवोंके तैजसशरीर और कार्मणशरीर निरन्तर बना रहता है । इन दो शरीरोंका अयोगिकेवलिके अन्तिम समय तक अभाव नहीं होता । इसका अर्थ यह नहीं कि अनादि काल पहले जीवके साथ जिस तैजस और कार्मणशरीरका सम्बन्ध था उसीका आज भी सम्बन्ध बना हुआ है । अभिप्राय यह है कि बन्धसन्ततिका विच्छेद न होनेसे इन दोनों शरीरोंका संसारमें कभी अभाव नहीं होता । अब शेष रहे तीन शरीर-औदारिकशरीर वैक्रियिकशरीर आहारकशरीर सो ये किसके और कबसे होते हैं इस बातका पहले यहां

पर निर्णय कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है। निश्चित नियम यह है कि जीव विग्रहगतिमें अनाहारक होता है। वर्तमान पर्यायका वियोग होकर उत्तर पर्यायके शरीरके ग्रहणके लिए जीवकी गति दो प्रकारकी होती है– एक ऋजुगति और दूसरी विग्रहगति। ऋजुगतिका अर्थ मोड़े रहित गतिसे है और विग्रहगतिका अर्थ मोड़ेवाली गतिसे है। जो जीव वर्तमान पर्यायका त्याग कर ऋजुगतिसे दूसरी पर्यायके शरीरको ग्रहण करनेके लिए गमन करता है वह अनाहारक नहीं होता, क्योंकि, यहां पर शरीरका त्याग होकर उत्तर पर्यायके शरीरके ग्रहणमें कालभेद उपलब्ध नहीं होता। अब रहा मोड़वाली गतिका विचार, सो उसमें पूर्व पर्यायके त्यागके साथ ही यद्यपि उत्तर पर्यायकी प्राप्ति हो जाती है परन्तु उत्तर पर्यायकी अवस्थितिके लिए शरीरका ग्रहण जब तक जीव मोड़ोंको पार नहीं करता तब तक नहीं होता, इसलिए यह सिद्धान्त स्थिर होता है कि जीव विग्रहगतिमें कमसे कम दो शरीरवाला होता है। उन दो शरीरोंके नाम तैजसशरीर और कार्मणशरीर हैं और ये ही अनादि सम्बन्धवाले हैं। हम पहले कह आये है कि विग्रहगतिमें जीव अनाहारक रहता है। यहां अनाहारकसे तात्पर्य है कि ऐसा जीव औदारिक, वैक्रियिक और आहारक इन तीन शरीरों और छह पर्याप्तियोंके योग्य पुद्गलोंको नहीं ग्रहण करता। विग्रह-गतिमें स्थित जीव एक तो इन तीन शरीरोंके योग्य पुद्गलोंको ग्रहण नहीं करता, इसलिए उसके इनमेंसे किसी भी एक शरीरकी सत्ता नहीं होती। दूसरे, पूर्व पर्यायमें ग्रहण किये गये शरी-रका उसी पर्यायके त्यागके साथ त्याग हो जाता है, इसलिए भी उसके इन तीन शरीरोंमेंसे किसी एक शरीरकी सत्ता नहीं होती। अब यह देखना है कि ये तीन शरीर किस जीवके किस क्रमसे उपलब्ध होते हैं। इस सम्बन्धमें साधारण नियम यह है कि तिर्यंचों और मनुष्योंके जब औदारिक-शरीर नामकर्मका उदय होता है, तब इन पर्यायोंके मिलने पर आहारक होनेके प्रथम समयसे इस जीवके औदारिकशरीर पाया जाता है। देवों और नारकियोंके वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय होता है, इसलिए इनके भवग्रहण करने पर आहारक होनेके प्रथम समयसे लेकर वैक्रियिक-शरीर उपलब्ध होता है। तथा प्रमत्तसंयत जीवके आहारक ऋद्धिकी प्राप्ति होनेपर आहारकशरीर नामकर्मके उदयसे कारण– विशेषके सद्भावमें अन्तर्मुहूर्त काल तक आहारक शरीर उपलब्ध होता है। इसप्रकार अधिकारी भेदसे यह तो ज्ञात हो जाता है कि किसके कबसे लेकर कितने शरीर होते हैं। यदि तिर्यंच और मनुष्य है तो आहारक होनेके पूर्व उसके तैजस और कार्मण ये दो शरीर उपलब्ध होंगे और आहारक होनेके प्रथम समयसे लेकर उसके औदारिक, तैजस और कार्मण शरीर ये तीन शरीर अवश्य ही उपलब्ध होंगे। यदि देव और नारकी है तो आहारक होनेके पूर्व उसके तैजस और कार्मण, ये दो शरीर उपलब्ध होंगे और आहारक होनेके प्रथम समयसे लेकर वैक्रियिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर उपलब्ध होंगे। इस प्रकार अधिकारी भेदसे तीन शरीर किस प्रकार पाये जाते हैं इसका विचार किया। अब चार शरीर किसके किस प्रकार सम्भव हैं इसका विचार करना है। पहले हम यह तो कह ही आये हैं कि किसी प्रमत्त-संयत जीवके योग्य सामग्रीके सद्भावमें अन्तर्मुहूर्त काल तक आहारकशरीरकी प्राप्ति संभव है। इसका यह अर्थ हुआ कि मनुष्य होनेके नाते उसके औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर तो पाये ही जाते हैं साथ ही उसके चौथा आहारकशरीर भी हो जाता है। यह कैसे होता है इसका खुलासा इस प्रकार है– कि जब किसी प्रमत्तसंयत जीवको तत्त्वविषयक सूक्ष्म शंका होती

है और जिस क्षेत्रमें वह है वहाँ उसका परिहार होना सम्भव नहीं होता या जब किसी तीर्थंकरको निष्क्रमण आदि कल्याणककी प्राप्ति होती है और देवादिके आने जानेसे इसकी सूचना मिलने पर वह प्रमत्तसंयत जीव वन्दनाके लिए जाना चाहता है या इसी प्रकारका अन्य कारण मिलने पर वह प्रमत्तसंयत जीव आहारक ऋद्धिके सद्भावमें आहारकशरीर नामकर्मके उदयसे औदारिक शरीरसे भिन्न आहारकशरीरको उत्पन्न करता है और वह आहारकशरीर उक्त प्रयोजनकी पूर्ति कर विघटित हो जाता है । जिस समय आहारकशरीर उत्पन्न होकर अपना कार्य करता है उस समय औदारिकशरीर नामकर्मका उदय नहीं रहता और औदारिककाययोग भी नहीं होता । उतने काल तक औदारिकशरीर बना अवश्य रहता है और पूरी तरहसे जीवका उससे सम्बन्ध विच्छेद भी नहीं होता पर क्रियाका प्रयोजक वह नहीं होता । इस प्रकार ऐसे जीवके औदारिक, आहारक, तैजस और कार्मण ये चार शरीर होते हैं । चार शरीरोंकी प्राप्तिका दूसरा प्रकार यह है कि पर्याप्त अग्निकायिक और पर्याप्त वायुकायिक जीव तथा पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच और मनुष्य औदारिकशरीरके रहते हुए भी विक्रिया करते हैं । इनके वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय न होकर औदारिकशरीरको ही यद्यपि यह विशेषता होती है फिर भी विक्रिया रूप गुणको देखकर इसकी वैक्रियिकशरीर संज्ञा है । साथ ही यह ऐसे ही जीवके होता है जिसके वैक्रियिकशरीर चतुष्ककी सत्ता होती है । श्वेताम्बर कर्मसाहित्यमें तो उस समय वैक्रियिकशरीर चतुष्कका उदय तक माना गया है । इस प्रकार इन जीवोंके औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण ये चार शरीर बन जाते हैं । पांच शरीर किसी एक के सम्भव नहीं हैं, क्योंकि, वैक्रियिक और आहारकशरीरकी प्राप्ति एक साथ नहीं होती । इस प्रकार गति आदि मार्गणाओंमें किस प्रकार किस मार्गणामें कितने शरीर होते हैं यह घटित कर लेना चाहिए । यहाँ एक विशेष बातका निर्देश करना है वह यह कि केवली जिन केवलिसमुद्घातके समय तीन समय तक अनाहारक होते हैं और अयोगिकेवली भी अनाहारक होते हैं फिर भी उनके औदारिक, तैजस और कार्मण ये तीन शरीर उपलब्ध होते हैं । कारण स्पष्ट है । आठ अनुयोगद्वारोंके अन्तमें सब विशेषताओंका संक्षेपमें ज्ञान करानेके अभिप्रायसे इतना निर्देश किया है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होनेपर शरीरिशरीरप्ररूपणा
नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

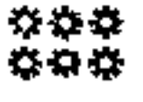

सरीरपरूवणा

सरीरपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्दाराणि- णाम-णिरुत्ती पदेसपमाणाणुगमो णिसेयपरूवणा गुणगारो पदमीमांसा अप्पाबहुए त्ति ॥ २३६ ॥

णामणिरुत्तो किमट्ठं वुच्चदे ? पंचण्णं सरीराणं णामाणि गोण्णाणि णोअगोण्णाणि त्ति जाणावणट्ठं। पदेसपमाणाणुगमो किमट्ठं परूविज्जदे ? ण पंचण्णं[1] सरीराणं पदेसपमाणे[2] अणवगए संते तेसिमवगमाणुववत्तीदो। णिसेय-परूवणा किमट्ठं वुच्चदे ? पंचण्णं सरीराणं समयपबद्धाणं पदेसपिंडस्स बंधमागच्छंतस्स कालो सरिसो ण होदि किंतु विसरिसो होदि। एक्केक्ककालविसेसे एत्तिया एत्तिया परमाणू होंति त्ति जाणावणट्ठं च णिसेयपरूवणा कीरदे। जहण्णदव्वादो उक्कस्सदव्वमेत्तियगुणं होदि त्ति जाणावणट्ठं पंचण्णं सरीराणं पदेसमाहप्पजाणा-

---

शरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा यहां ये छह अनुयोगद्वार होते हैं- नामनिरुक्ति, प्रदेशप्रमाणानुगम, निषेकप्ररूपणा, गुणकार, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व ।। २३६ ।।

नामनिरुक्तिका कथन किसलिए करते है ? पांच शरीरोंके नाम गौण्य हैं नोगौण्य नहीं हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए नामनिरुक्ति अधिकार आया है। प्रदेशप्रमाणानुगमका कथन किसलिए करते है ? पांच शरीरोंके प्रदेशोंके प्रमाणका ज्ञान नहीं होने पर उनका ज्ञान नहीं हो सकता, इसलिए प्रदेशप्रमाणानुगम अधिकार आया है। निषेकप्ररूपणा किसलिए करते हैं? पांच शरीरोंके समयप्रबद्धोंके प्रदेशपिण्डका बंध होने पर उसका काल सदृश नहीं हैं किंतु विसदृश है तथा एक एक काल विशेषमें इतने परमाणु होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए निषेक-प्ररूपणा करते हैं। जघन्य द्रव्यसे उत्कृष्ट द्रव्य इतना गुणा है इस बातका ज्ञान करानेके लिए और पांच शरीरोंके प्रदेशोंके माहात्म्यको जाननेके लिए गुणकार अधिकारका कथन करते हैं।

---

[1] ता०का० प्रत्योः 'परूविज्जदे ? पंचण्णं' इति पाठः। [2] ता०का० प्रत्योः 'पदेसपमाणं' इति पाठः।

यणट्ठं च गुणगारो वुच्चदे । जहण्णुक्कस्सादिपदपरिक्खट्ठं पदमीमांसा वुच्चदे । पंचण्णं सरीराणं पदेसग्गथोवबहुत्तजाणावणट्ठमप्पाबहुअं वुच्चदे । एदेहि छहि अणुयोगद्दारेहि विणा सरीरपरूवणाणुववत्तीदो । एत्थ एदेहि परूवणा कीरदे—

णामणिरुत्तीए उरालमिदि ओरालियं ॥ २३७ ॥

उरालं थूलं बट्टं महल्लमिदि एयट्ठो । कुदो उरालत्तं? ओगाहणाए । सेससरीराणं ओगाहणादो एदस्स सरीरस्स ओगाहणा बहुआ त्ति ओरालियसरीरमुराले त्ति गहिदं । कुदो बहुत्तमवगम्मदे? महामच्छोरालियसरीरस्स पंचजोयणसयविक्खंभेण जोयणसहस्सायामुवलंभादो । इदि सद्दो हेदु-विवक्खाणमुभयवत्तीदो उरालमेव ओरालियमिदि सिद्धं । अथवा सेससरीराणं वग्गणोगाहणादो ओरालियसरीरस्स वग्गणओगाहणा बहुआ त्ति ओरालियवग्गणाणमुरालमिदि सण्णा । ओरालियवग्गणोगाहणाए बहुत्तं कुदो णव्वदे ? चूलियअप्पाबहुआदो । तं जहा– सव्वत्थोवाओ

जघन्यपद और उत्कृष्टपद आदिकी परीक्षा करनेके लिए पदमीमांसा अधिकारका कथन करते हैं। पाँच शरीरोंके प्रदेशोंका अल्पबहुत्व जाननेके लिए अल्पबहुत्व अधिकारका कथन करते हैं। इन छह अनुयोगद्वारोंके बिना शरीरप्ररूपणा नहीं हो सकती, इसलिए यहाँ इनके द्वारा प्ररूपणा करते हैं—

नामनिरुक्तिकी अपेक्षा उराल है इसलिए औदारिक है ॥ २७३ ॥

उराल, स्थूल, और महान् ये एकार्थवाची शब्द हैं ।

शंका— यह उराल क्या है ?

समाधान— अवगाहनाकी अपेक्षा उराल है। शेष शरीरोंकी अवगाहनासे इस शरीरकी अवगाहना बहुत है, इसलिए औदारिकशरीर उराल है ऐसा ग्रहण किया है।

शंका— इसकी अवगाहनाके बहुत्वका ज्ञान कैसे होता है ?

समाधान— क्योंकि, महामत्स्यका औदारिकशरीर पाँचसौ योजन विस्तारवाला और एक हजार योजन आयामवाला देखा जाता है ।

सूत्रमें आया हुआ 'इति' शब्द हेतुवाची और विवक्षावाची बन जाता है, इसलिए उराल औरालिय है ऐसी उसकी निरुक्ति सिद्ध होती है। अथवा शेष शरीरोंकी वर्गणाओंकी अवगाहनकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी वर्गणाओंकी अवगाहना बहुत है इसलिए औदारिकशरीरकी वर्गणाओंकी उराल ऐसी संज्ञा है।

शंका—औदारिकशरीरकी वर्गणाओंकी अवगहना बहुत है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—चूलिकाके अल्पबहुत्वसे जाना जाता है। यथा—कार्मणशरीरकी द्रव्यवर्गणायें

म० प्रतिपाठोऽयम् । ता० का० प्रत्योः 'बहल्लमिदि' इति पाठः । प्रतिषु 'ओरालियं तसद्धा' इति पाठः ।

कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए । मणदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्ज-गुणाओ । भासादव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ । तेयासरीरदव्ववग्ग-णाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ । आहारसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखे०गुणाओ । वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ । ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखे०गुणाओ त्ति । एदेहि उरालेहि पोग्गलेहि भवमिदि ओरालियं अथवा उरालं जेट्ठं पहाणमिदि एयट्ठो (उरालसद्दादो उरालसद्दणिप्फत्तीए कथमोरालियसरीरस्स महल्लत्तं ? णिव्वुइगमणहेदुअट्ठारस सीलसहस्सुप्पत्तिणिमित्तभावादो) तम्हि उराले भवमोरालियं । अथवा उरालमेव ओरालियमिदि घेत्तव्वं । ओरालियसरीरमोगाहणाए चेव सेससरीरेहिंतो महल्लं, ण पदेसग्गेण विस्सासुवचएहि वा त्ति कथं णव्वदे? सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स णाणा-समयसंचिदपदेसा । वेउव्वियसरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा असंखे०गुणा । को गुण०? सेडीए असंखे०भागो आहारसरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा असंखे०गुणा । को गुण०? सेडीए असंखे०भागो । तेजासरीरस्स णाणासमयसंचिदपदेसा अणंतगुणा । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । कम्मइयसरीरस्स

अवगाहनाकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं । मनोद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं । भाषाद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं । तैजसशरीरद्रव्यवर्गणायें अव-गाहना की अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं । आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्या-तगुणी हैं । वैक्रियिकशरीरद्रव्यवगणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं । औदारिक-शरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ।

इन उराल पुद्गलोंसे हुआ है, इसलिए औदारिक है । अथवा उराल, ज्येष्ठ और प्रधान ये एकार्थवाची शब्द हैं ।

(शंका- उदार शब्दसे उराल शब्दकी निष्पत्ति होनेपर औदारिकशरीरकी महत्ता कैसे बनती है ?

समाधान- क्योंकि यह निर्वृत्तिगमनका हेतु है और अठारह हजार शीलोंकी उत्पत्तिका निमित्त है, इसलिए इसकी महत्ता बन जाती है ।)

उस उरालमें जो होता है वह औदारिक है । अथवा उराल ही औदारिक है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शंका- औदारिकशरीर अवगाहनाकी अपेक्षा ही शेष शरीरोंसे महान् है, प्रदेशाग्र और विस्रसोपचयोंकी अपेक्षासे नहीं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- औदारिकशरीरके नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश सबसे स्तोक हैं । उनसे वैक्रियिकशरीरके नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । गुणकार 'क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे आहारकशरीरके नाना समयों में संचित हुए प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे तैजसशरीरके नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । उनसे कार्मणशरीरके

णाणासमयसंचिदपदेसा अणंतगुणा। को गुण०? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। विस्सासुवचयं पडुच्च सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहण्णो विस्सासुवचओ। तस्सेवुक्कस्सओ असंखे०गुणो। को गुण०? पलिदो० असंखे०भागो। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सओ असंखे०गुणो। को गुण०? पलिदो० असंखे०भागो। आहारसरीरस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखे०गुणो। को गुण०? पलिदो० असंखेज्जविभागो। तेजासरीरस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तस्सेवुक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखे०गुणो। को गुण०? पलिदो० असंखे०भागो। कम्मइयसरीरस्स जहण्णस्स जहण्णओ* विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुण०? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखे०गुणो। को गुण०? पलिदो० असंखे०भागो, एवम्हादो अप्पाबहुगादो णव्वदे सुत्तेण विणा एदं कुदो णव्वदे? बंधणगुणाविभागपडिच्छेदप्पाबहुअसुत्तसिद्धत्तादो। तं जहा—सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा। वेउव्वियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा। आहारसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा। तेयासरीरस्स

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

नाना समयोंमें संचित हुए प्रदेश अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनंतगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। विस्रसोपचयकी अपेक्षा औदारिकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय सबसे स्तोक है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय अनंतगुणा है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनंतगुणा गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनंतगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे आहारकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय अनंतगुणा है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनंतगुणा गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे तैजसशरीरका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है। उससे उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उससे कार्मणशरीरके जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय अनंतगुणा है। गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनंतगुणा गुणकार है। उससे उसीके उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। इसे अल्पबहुत्वसे जाना जाता है।

शंका— सूत्रके बिना यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— यह अल्पबहुत्व बन्धनगुणके अविभागप्रतिच्छेदोंके अल्पबहुत्वका प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे सिद्ध है। यथा औदारिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं। उनसे वैक्रियिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं। उनसे आहारकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद

* ता० प्रतौ '— सरीरस्स जहण्णओ' इति पाठः।

अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा कम्मइयसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा। एदं कारणस्सप्पाबहुअं विस्सासुवचयाणं कथं होदि ? ण, विस्सासुवचयमहिकिच्च परूविदअप्पाबहुअस्स अण्णहाभावविरोहादो। जहण्णादो उक्कस्सस्स असंखेज्जगुणत्तं कुदो सिद्धं? अण्णहा जहण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो उक्कस्सियाओ अणंतगुत्तणप्पसंगादो। ण च एवं, उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए हेट्ठा जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए उप्पत्तिप्पसंगादो। जहण्णविस्सासुवचयादो सत्थाणुक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो त्ति सुत्तेण कथं णेदस्स विरोहो ? ण, जीवमुक्कपंचसरीरपरमाणुट्ठिदविस्सासुवचयमहिकिच्च तदप्पबहुअपउत्तीए। तदो ओरालियसरीरस्स ओगाहणादो चेव थूलत्तं घेत्तव्वं।

विविहइड्ढिगुणजुत्तमिदि वेउव्वियं ॥ २३८ ॥

अणिमा महिमा लहिमा पत्ती पागम्मं ईसित्तं वसित्तं कामरूवित्तमिच्चेवमादियाओ अणेयविहाओ इड्ढीओ णाम। एदेहि इड्ढिगुणेहि जुत्तमिदि काऊण वेउव्वियं त्ति भणिदं।

अनन्तगुणे हैं। उनसे तैजसशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं। उनसे कार्मणशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं।

शंका-- यह कारणसम्बन्धी अल्पबहुत्व विस्रसोपचयोंका कैसे हो सकता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, विस्रसोपचयको अधिकृत कर प्ररूपित किये गये अल्पबहुत्वके अन्यथारूप होनेमें विरोध है।

शंका-- अपने जघन्यसे अपना उत्कृष्ट असंख्यातगुणा है यह किस प्रमाणसे सिद्ध है?

समाधान-- यदि ऐसा न माना जावे तो जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणाके अनन्त गुणे होनेका प्रसंग आता है। परन्तु यह है नहीं, क्योंकि, यह होनेपर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणासे नीचे जघन्य बादर निगोदवर्गणाकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है।

शंका-- जघन्य विस्रसोपचयसे स्वस्थानमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है इस सूत्रके साथ इस व्याख्यानका विरोध कैसे नहीं है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, जीवमुक्त पाँच शरीरोंके परमाणुओंपर स्थित हुए विस्रसोपचयको अधिकृत करके उस अल्पबहुत्वकी प्रवृत्ति होती है।

इसलिए औदारिकशरीरका अवगाहनाकी अपेक्षा ही स्थूलपना ग्रहण करना चाहिए।

विविध गुणऋद्धियोंसे युक्त है, इसलिए वैक्रियिक है ॥२३८॥

अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व और कामरूपित्व इत्यादि अनेक प्रकारकी ऋद्धियाँ हैं। इन ऋद्धिगुणोंसे युक्त है ऐसा समझकर वैक्रियिक है ऐसा कहा है।

ता० प्रतौ 'विविहगुणजुत्तमिदि' इति पाठः ।

णिउणाणं वा णिण्णाणं वा सुहुमाणं वा आहारदव्वाणं सुहुमवरमिदि* आहारयं ॥२३९॥

(असंजमबहुलदा आणाकणिट्ठदा सगखेत्ते केवलिविरहो त्ति एदेहि तीहि कारणेहि साहू आहारसरीरं पडिवज्जंति । जल-थल-आगासेसु अक्कमेण सुहुमजीवेहि दुप्परिहरणिज्जेहि अक्कंतेसु असंजमबहुलदा होदि । तप्परिहरणट्ठं हंसांसधवल-मप्पडिहयं आहारवग्गणाक्खंधेहि णिम्मिदं हत्थमेत्तुस्सेहं आहारसरीरं साहू पडि-वज्जंति । तेणेवमाहारपडिवज्जणमसंजमबहुलदाणिमित्तमिदि भण्णदि । अण्णा सिद्धंतो आगमो इदि एयट्ठो । तिस्से कणिट्ठदा सगखेत्ते थोवत्तं आणाकणिट्ठदा णाम । एवं तिविहं कारणं । आगमं मोत्तूण अण्णपमाणाणं गोयरमदक्कमिदूण दिट्ठेसु दव्वपज्जा-एसु संदेहे समुप्पण्णे सगसंदेहविणासणट्ठं परखेत्तट्ठियसुदकेवलि-केवलीणं वा पादमूलं गच्छामि त्ति चिंतविदूण आहारसरीरेण परिणमिय गिरि-सरि सायर मेरु कुलसेल-पायालाणं गंतूण विणएण पुच्छिय विणट्ठसंदेहा होदूण पडिणियत्तिदूण आगच्छंति त्ति भणिदं होइ । परखेत्तम्हि महामुणीणं केवलणाणुप्पत्ती परिणिव्वाणगमणं परिणिक्ख-मणं वा तित्थयराणं तदियं कारणं । विउव्वणरिद्धिविरहिदा आहारलद्धिसंपण्णा साहू ओहिणाणेण सुदणाणेण वा देवागमचिंधेण वा केवलणाणुप्पत्तिमवगंतूण वंदणाभत्तीए

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

***निपुण, स्निग्ध और सूक्ष्म आहारद्रव्योंमें सूक्ष्मतर है, इसलिए आहारक है ॥२३९॥**

(असंयमबहुलता, आज्ञाकनिष्ठता और अपने क्षेत्रमें केवलिविरह इस प्रकार इन तीन कारणोंसे साधु आहारकशरीरको प्राप्त होते हैं । जल, स्थल और आकाशके एक साथ दुष्परिहार्य सूक्ष्म जीवोंसे आपूरित होने पर असंयमबहुलता होती है । उसका परिहार करनेके लिए साधु हंस और वस्त्रके समान धवल, अप्रतिहत, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे निर्मित और एक हाथप्रमाण उत्सेध-वाले आहारकशरीरको प्राप्त होते हैं । इसलिए यह आहारकशरीरका प्राप्त करना असंयमबहुलतानिमित्तक कहा जाता है । आज्ञा, सिद्धान्त और आगम ये एकार्थवाची शब्द हैं । उसकी कनिष्ठता अर्थात् अपने क्षेत्रमें उसका थोड़ा होना आज्ञाकनिष्ठता कहलाती है । यह द्वितीय कारण है । आगमको छोड़कर द्रव्य और पर्यायोंके अन्य प्रमाणका विषय न होने पर तथा उनमें सन्देह होनेपर अपने सन्देहको दूर करनेके लिए परक्षेत्रमें स्थित श्रुतकेवली और केवलीके पादमूलमें जाता हूँ ऐसा विचार कर आहारकशरीररूपसे परिणमन करके गिरि, नदी, सागर, मेरुपर्वत, कुलाचल और पातालमें केवली और श्रुतकेवलीके पास जाकर तथा विनयसे पूछकर सन्देहसे रहित होकर लौट आते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । परक्षेत्रमें महामुनियोंके केवलज्ञानकी उत्पत्ति और परिनिर्वाणगमन तथा तीर्थङ्करोंके परिनिष्क्रमणकल्याणक यह तीसरा कारण है । विक्रियाऋद्धिसे रहित और आहारकलब्धिसे युक्त साधु अवधिज्ञानसे या श्रुतज्ञानसे या देवोंके आगमनके विचारसे केवलज्ञानकी उत्पत्ति जानकर वन्दनाभक्तिसे जाता हूँ ऐसा विचार कर

* म० प्रतिपाठोऽयम् प्रतिषु ' -दव्वाणं वा सुहुमदरमिदि ' इति पाठः ।

गच्छामि त्ति चिंतिदूण आहारसरीरेण परिणमिय तप्पदेसं गंतूण तेसिं केवलीणमण्णेसिं च जिण-जिणहराणं वंदणं काऊण आगच्छंति त्ति भणिदं होदि । एवाणि तिण्णि वि कारणाणि अस्सिऊण घेप्पमाणआहारसरीरस्स णामणिरुत्ती वुच्चदे । तं जहा– णिउणा अण्हा मउआ ☼ त्ति भणिदं होदि । णिण्हा धवला सुगंधा सुट्ठु सुंदरा त्ति भणिदं होदि । अप्पडिहया सुहुमा णाम । आहारवग्गाणं मज्झे णिउणदरं णिण्णदरं खंधं आहारसरीरणिप्पायणट्ठं आहरदि त्ति आहारयं ☽ णिउण-णिण्णाणं कथं सुहुमदरत्तं ? ण, ☾ पढमावत्थं पेक्खिदूण तरतमपच्चयविसयाणं सुहुमदरत्तं पडि विरोहाभावादो । अथवा आहारकद्रव्याणि प्रमाणानि, तेषां निपुणानां मध्ये अति-निपुणं निष्णातानामतिनिष्णातं सूक्ष्माणामतिसूक्ष्ममाहरति परिच्छिनत्तीत्याहारकम् । पंचवण्णाणमाहारसरीरपरमाणूणं कथं सुविकलत्तं जुज्जदे ? ण, विस्सासुवचयवण्ण पडुच्च धवलत्तुवलंभादो ।

तेयप्पहगुणजुत्तमिदि तेजइयं ॥ २४० ॥

शरीरस्कन्धस्य पद्मरागमणिवर्णस्तेजः, शरीरान्निर्गतरश्मिकलापः प्रभा, तत्र भवं

आहारकशरीररूपसे परिणमन कर उस प्रदेशमें जाकर उन केवलियोंकी और दूसरे जिनों व जिनालयोंकी वन्दना करके वापिस आते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इन तीनों ही कारणोंका अवलम्बन लेकर ग्रहण किये जानेवाले आहारकशरीरकी नामनिरुक्ति कहते हैं। यथा– निपुण अर्थात् अण्हा और मृदु यह उक्त कथनका तात्पर्य है । स्निग्ध अर्थात् धवल, सुगन्ध, सुष्ठु और सुन्दर यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अप्रतिहतका नाम सूक्ष्म है । आहा-रद्रव्योंमेंसे आहारकशरीरको उत्पन्न करनेके लिए निपुणतर और स्निग्धतर स्कन्धको आहरण करता है अर्थात् ग्रहण करता है, इसलिए आहारक कहलाता है ☽

शंका-- निपुण और स्निग्ध सूक्ष्मतर कैसे हो सकता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, प्रथम अवस्थाको देखते हुए तर और तम प्रत्ययके विषयभूत पदार्थोंके सूक्ष्मतर होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

अथवा आहारकद्रव्य प्रमाण है । उनमेंसे निपुणोंमें अतिनिपुण, निष्णातोंमें अतिनिष्णात और सूक्ष्मोंमें अतिसूक्ष्मको आहरण करता है अर्थात् जानता है, इसलिए आहारक कहलाता है ।

शंका-- आहारकशरीरके परमाणु पाँच वर्णवाले हैं । उनमें केवल शुक्लपना कैसे बन सकता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, विस्रसोपचयके वर्णकी अपेक्षा धवलपना उपलब्ध होता है।

तेज और प्रभारूप गुणसे युक्त है इसलिए तैजस है ॥ २४० ॥

शरीरस्कंधके पद्मराग मणिके समान वर्णका नाम तेज है । तथा शरीरसे निकली हुई

☼ अ०प्रतौ ' अण्हा मउआ ' इति पाठः । ☽ म०प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु ' सुहुमदरं तण्ण ' इति पाठः । अ–आ–प्रत्योः ' विनिर्गत ' इति पाठः ।

तेजसं शरीरम् । तेजःप्रभागुणयुक्तमिति यावत् । तं तेजइयसरीरं णिस्सरणप्पयमणिस्सरणप्पयं चेदि दुविहं । तत्थ जं तं णिस्सरणप्पयं तं दुविहं–सुहमसुहं चेदि । संजदस्स उग्गचरित्तस्स दयापुरंगमअणुकंपापूरिदस्स इच्छाए दक्खिणांसादो हंससंखवण्णं णिस्सरिदूण मारीदिरमरणाहिवेयणादुब्भिक्खुवसग्गादिपसमणदुवारेण सव्वजीवाणं संजदस्स य जं सुहमुप्पादयदि तं सुहं णाम । कोधं गदस्स संजदस्स वामसादो बारहजोयणायामेण णवजोयणविक्खंभेण सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तबाहल्लेण जासवणकुसुमवण्णेण णिस्सरिदूण सगक्खेत्तब्भंतरट्ठियसत्तविणासं काऊण पुणो पविसमाणं तं जं चेव संजदमाबूरेदि * तमसुहं णाम । जं तमणिस्सरणप्पयं तेजइयसरीरं तं भुत्तण्णपाणपाचयं ✪ होदूण अच्छदि जंतो ।

सव्वकम्माणं परूहणुप्पादयं सुहदुक्खाणं बीजमिदि कम्मइयं ।२४१।

कर्माणि प्ररोहन्ति अस्मिन्निति प्ररोहणं कार्मणशरीरम् । कूष्माण्डफलस्य वृन्तवत्✪ सकलकर्माधारं कार्मणशरीरमिति यावत् । न केवलं सर्वकर्मोत्पत्तेराधार एव किं तु सकलकर्मणामुत्पादकमपि कार्मणशरीर, तेन विना तदुत्पत्तेरभावात् । तत एव सुख-दुःखानां तद् बीजमपि, तेन विना तदसत्त्वाद् । एतेन नामकर्मावयवस्य

रश्मिकलापका नाम प्रभा है । इसमें जो हुआ है वह तैजसशरीर है । तेज और प्रभा गुणसे युक्त तैजसशरीर है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । वह तैजसशरीर निःसरणात्मक और अनिःसरणात्मक इस तरह दो प्रकारका है । उसमें जो निःसरणात्मक तैजसशरीर है वह दो प्रकारका है– शुभ और अशुभ । उग्र चारित्रवाले तथा दयापूर्वक अनुकम्पासे आपूरित संयतके इच्छा होनेपर दाहिने कंधेसे हंस और शखके वर्णवाला शरीर निकलकर मारी, दिरमर, व्याधि, वेदना, दुर्भिक्ष और उपसर्ग आदिके प्रशमनद्वारा सब जीवों और संयतके जो सुख उत्पन्न करता है वह शुभ कहलाता है । तथा क्रोधको प्राप्त हुए संयतके वाम कंधेसे बारह योजन लम्बा, नौ योजन चौडा और सूच्यंगुलके संख्यातवें भागप्रमाण मोटा तथा जपाकुसुमके रंगवाला शरीर निकल कर अपने क्षेत्रके भीतर स्थित हुए जीवोंका विनाश करके पुनः प्रवेश करते हुए जो उसी संयतको व्याप्त करता है वह अशुभ तैजसशरीर है । जो अनिःसरणात्मक तैजसशरीर है वह भुक्त अन्न-पानका पाचक होकर भीतर स्थित रहता है ।

सब कर्मोंका प्ररोहण अर्थात् आधार, उत्पादक और सुख-दुःखका बीज है इसलिए कार्मणशरीर है ।।२४१।।

कर्म इसमें उगते हैं इसलिए कार्मणशरीर प्ररोहण कहलाता है । कूष्मांडफलके वृन्तके समान कार्मणशरीर सब कर्मोंका आधार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । कार्मणशरीर केवल सब कर्मोंकी उत्पत्तिका आधार ही नहीं है । किन्तु सब कर्मोंका उत्पादक भी है, क्योंकि, उसके बिना उनकी उत्पत्ति नहीं होती । इसलिए वह सुखों और दुःखोंका भी बीज है, क्योंकि, उसके बिना

---

* ता० प्रतौ ' संजद मारेदि ' इति पाठः । ✪ ता० प्रतौ '–सरीरं भुत्तण्णपाणपच्चयं ' का० प्रतौ '–सरीर तं भुत्तण्णपाणपचयं ' इति पाठः । ✪ ता० प्रतौ ' वृत्तपत् ' इति पाठः ।

शरीरस्य प्ररूपणा कृता । साम्प्रतमष्टकर्मकलापस्य कार्मणशरीरस्य लक्षणप्रतिपादकत्वेन सूत्रमिदं व्याख्यायते । तद्यथा– भविष्यत्सर्वकर्म्मणां प्ररोहणमुत्पादकं त्रिकालगोचराशेषसुख-दुःखानां बीजं चेति॑ अष्टकर्म्मकलापं कार्मणशरीरम् । कर्म्मणि भवं कार्मणं कर्म्मैव वा कार्म्मणमिति कार्म्मणशब्दव्युत्पत्तेः ।

एवं णामणिरुत्ति त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

उनका सत्त्व नहीं होता । इस द्वारा नामकर्मके अवयवरूप कार्मणशरीरकी प्ररूपणा की है । अब आठों कर्मोंके कलापरूप कार्मणशरीरके लक्षणके प्रतिपादकपनेकी अपेक्षा इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं । यथा– आगामी सब कर्मोंका प्ररोहण, उत्पादक और त्रिकाल विषयक समस्त सुख-दुःखका बीज है इसलिए आठों कर्मोंका समुदाय कार्मणशरीर है, क्योंकि, कर्ममें हुआ इसलिए कार्मण है, अथवा कर्म ही कार्मण है इस प्रकार यह कार्मण शब्दकी व्युत्पत्ति है ।

विशेषार्थ-- शब्दके व्युत्पत्तिलभ्य अर्थको निरुक्ति द्वारा प्रकट किया जाता है । यहां सर्व प्रथम पाँचों शरीरोंकी निरुक्ति दिखलाई गई है । यथा औदारिक शब्द उदार शब्दसे, वैक्रियिक शब्द विक्रिया शब्दसे, आहारक शब्द आहारसे, तैजस शब्द तेजस्से और कार्मण शब्द कर्मसे बना है । उदार, उराल, महत् और स्थूल ये एकार्थवाची शब्द हैं । औदारिकशरीर अवगाहनाकी अपेक्षा अन्य शरीरोंसे बडा है प्रदेशोंकी अपेक्षा नहीं, इसलिए इसकी औदारिक संज्ञा है । यद्यपि सूक्ष्म एकेन्द्रियका औदारिकशरीरकी अवगाहनाकी अपेक्षा सूक्ष्म देखा जाता है फिर भी सब शरीरोंको ध्यानमें लेकर विचार करने पर सबसे बडा यही शरीर सिद्ध होता है, इसलिए इसकी औदारिक संज्ञा है । अणिमा आदि जो आठ प्रकारकी ऋद्धियाँ हैं वे वैक्रियिकशरीरमें पाई जाती हैं । उनके कारण यह शरीर छोटा, बडा, हलका, भारी आदि विविध प्रकारकी विक्रिया करनेमें समर्थ होता है, इसलिए इस शरीरको वैक्रियिक कहते हैं । जो शरीर वैक्रियिकशरीर नामकर्मके उदयसे देवों और नारकियोंके होता है उसमें भी यह विशेषता पायी जाती है और जो शरीर मनुष्यों और तिर्यञ्चोंके विक्रिया रूप प्रयोगविशेषके कारण होता है उसमें भी यह विशेषता पाई जाती है । आहारकशरीरकी प्राप्ति प्रमत्तसंयतके होती है । इसका यह अर्थ है कि यह शरीर अपने कारण कूटके अनुसार यदि होगा तो प्रमत्तसंयतके ही होगा, अन्यके नहीं । एक तो यह शरीर आहार द्रव्यमेंसे सुन्दर, सुगन्ध और स्निग्ध आदि गुणोंसे युक्त वर्गणाओंसे बनता है, इसलिए इसकी आहारक संज्ञा है । दूसरे यह अतिसूक्ष्म आदि गुणयुक्त अर्थको आहरण करनेमें अर्थात् जाननेमें समर्थ है, इसलिए इसकी आहारक संज्ञा है । तैजस शरीर दो प्रकारका होता है– निकलनेवाला और नहीं निकलनेवाला । निकलनेवाला तैजसशरीर शुभ और अशुभ दो प्रकारका होता है । यह दोनों प्रकारका तैजसशरीर संयतके होता है । तथा नहीं निकलने वाला तैजसशरीर भुक्त अन्नपान के पाचनमें समर्थ होता है । यह तेज और प्रभा गुणसे युक्त होता है, इसलिए इसे तैजस कहते हैं । नामकर्मकी ९३ प्रकृतियोंमें एक कार्मणशरीर प्रकृति है । उसके उदयसे ज्ञानावरणादि कर्म कार्मण संज्ञाको प्राप्त होते हैं । अथवा ये सब ज्ञानावरणादि कर्म ही हैं, इसलिए इनकी कार्मण संज्ञा है । इस प्रकार औदारिक आदि पाँच शरीर हैं । इनके ये

॑ अ० प्रतौ '-दुःखानां जीव चेति' इति पाठः ।

पदेसपमाणाणुगमेण ओरालियसरीरस्स केवडियं पदेसग्गं ॥२४२॥

सेससरीरपडिसेहट्ठो ओरालियसरीरणिद्देसो । संखेज्जा-संखेज्जाणंतसंखाओ तिण्णि णवणवभेदाओ केवडिए त्ति णिद्देसो सो अवेक्खदे* । ट्ठिदि-अणुभागादिपडिसेहफलो पदेसग्गणिद्देसो । सेसं सुगमं ।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागा ॥ २४३ ॥

एवमोरालियसरीरस्स जहण्णेण उक्कस्सेण य पदेसग्गपमाणं सुत्तं परूवेदि । विस्सासुवचयेहि सह घेप्पमाणे सव्वजीवेहि अणंतगुणा ओरालियपरमाणू होंति त्ति भणिदे ण, ओरालियसरीरणामकम्मोदएण जीवम्मि संबद्धपोग्गलाणं चेव ओरालियसरीरत्तब्भुवगमादो । ण च तत्थतणविस्सासुवचओ ओरालियणामकम्मजणिदो, ओरालियणोकम्मणिद्ध-लुक्खगुणेण तत्थ तेसिं संबंधादो । तम्हा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता चेव⊛ ओरालियसरीरपरमाणू होंति त्ति घेत्तव्वं ।

एवं चदुण्हं सरीराणं ॥ २४४ ॥

आगमोदयसमिति आचार्य श्री सुदर्शनसागर जी महाराज

औदारिक आदि नाम गौण्य अर्थात् सार्थक नाम है । यहां इनकी नामनिरुक्ति कहनेका यही अभिप्राय है ।

इस प्रकार नामनिरुक्ति अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

प्रदेशप्रमाणानुगमकी अपेक्षा औदारिकशरीरके कितने प्रदेशाग्र हैं ॥ २४२ ॥

शेष शरीरोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'औदारिकशरीर' पदका निर्देश किया है । 'कितना है' पदका निर्देश तीनों नौ भेदरूप संख्यात, असंख्यात और अनन्त इन तीन संख्याओंकी अपेक्षा करता है । स्थिति और अनुभाग आदिका निषेध करना प्रदेशाग्र पदके निर्देशका फल है । शेष कथन सुगम है ।

अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ २४३ ॥

यह सूत्र औदारिकशरीरके जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशप्रमाणका कथन करता है ।

शंका – विस्रसोपचयोंके साथ ग्रहण करनेपर औदारिकशरीरके परमाणु सब जीवोंसे अनन्तगुणे होते हैं ?

समाधान – नहीं, क्योंकि औदारिकशरीर नामकर्मके उदयसे जीवमें सम्बन्धको प्राप्त हुए पुद्गलोंको ही औदारिकशरीररूपसे स्वीकार किया गया है । किंतु वहाँ रहनेवाला विस्रसोपचय औदारिकशरीर नामकर्मके उदयसे नहीं उत्पन्न हुआ है, क्योंकि औदारिक नोकर्मके स्निग्ध और रूक्षगुणके कारण वहाँ विस्रसोपचय परमाणुओंका सम्बन्ध हुआ है । इसलिए सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ही औदारिकशरीरके परमाणु होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

इसी प्रकार चार शरीरोंके प्रदेशाग्र होते हैं ॥ २४४ ॥

* प्रतिषु ' उवेक्खदे ' इति पाठः । ⊛ अ०प्रतौ ' -मेत्तो चेव ' इति पाठः ।

जहा ओरालियसरीरस्स परमाणुपमाणं भणिदं तहा सेसचदुण्णं सरीराणं परमाणुपमाणं वत्तव्वं, अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणत्तणेण सिद्धेहिंतो अणंतगुणहीणत्तणेण भेदाभावादो। एवं पदेसपमाणाणुगमो समत्तमणुयोगद्दारं।

णिसेयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति–समुक्कित्तणा पदेसपमाणाणुगमो अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा पदेसविरओ अप्पाबहुए त्ति ॥२४५॥

प्रागदीपक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एदाणि छ चेव अणुयोगद्दाराणि एत्थ होंति अण्णेसिमसंभवादो। एदेसिं छण्हं पि जहाकमेण अणुयोगद्दाराणं परूवणा कीरदे–

समुक्कित्तणदाए ओरालिय–वेउव्विय–आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय–वेउव्विय–आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि किंचि बिसमयमच्छदि किंचि तिसमयमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ॥२४६॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरके परमाणुओंका प्रमाण कहा है उसी प्रकार शेष चार शरीरोंके परमाणुओंका प्रमाण कहना चाहिए, क्योंकि, अभव्योंसे अनन्तगुणत्व और सिद्धोंसे अनन्तगुणहीनत्वकी अपेक्षा औदारिकशरीरके परमाणुओंसे शेष चार शरीरोंके परमाणुओंमें कोई भेद नहीं है। इसप्रकार प्रदेशप्रमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

निषेकप्ररूपणाकी अपेक्षा वहां ये छह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य — हैं समुत्कीर्तना, प्रदेशप्रमाणानुगम, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा प्रदेशविरच और अल्पबहुत्व ॥ २४५ ॥

यहां ये छह ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वार यहां सम्भव नहीं हैं। अब क्रमसे इन छहों अनुयोगद्वारोंका कथन करते हैं--

समुत्कीर्तनाकी अपेक्षा जो औदारिकशरीरवाला, वैक्रियिकशरीरवाला और आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें बांधे गये हैं उनमेंसे कुछ प्रदेशाग्र जीवमें एक समय तक रहते हैं, कुछ दो समय तक रहते हैं, कुछ तीन समय तक रहते हैं। इस प्रकार क्रमसे उत्कृष्ट रूपसे तीन पल्य, तेतीस सागर और अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ॥ २४६ ॥

एत्थ ताव ओरालियसरीरमस्सिदूण सुत्तत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा— ओरालियसरीरमेवस्स अत्थि त्ति ओरालियसरीरी तेण ओरालियसरीरिणा । पढम-समए चेव आहारो सरीरपाओग्गपोग्गलगहणं जस्स सो पढमसमयआहारओ तेण पढमसमयआहारएण । पढमसमयओरालियसरीरिणा त्ति भणिदं होदि । तेणेव गहणं किमट्ठं कीरदे ? ओरालियसरीरो चेव ओरालियसरीरस्स पदेसरचणं कुणदि ण अण्णसरीरिणो त्ति जाणावणट्ठं । तम्हि भवे ट्ठिदो त्ति तब्भवत्थो पढमसमओ च तब्भवत्थो च पढमसमयतब्भवत्थो तेण पढमसमयतब्भवत्थेण । अविग्गहगदीए उप्प-ज्जमाणेण त्ति भणिदं होदि, अण्णहा पढमसमयतब्भवत्थस्स पढमसमयआहारयत्तविरो-हादो । तेण जीवेण ओरालियसरीरत्ताए ओरालियसरीरसरूवेण जं पढमसमए पदे-सग्गं णिसित्तं पढमसमयबद्धपदेसग्गं त्ति भणिदं होदि । तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि, णोकम्मस्स आबाधाभावेण पढमसमए णिसित्तस्स बिदियसमए चेव परिसदणुवलं-भादो* । किमट्ठमेत्थ णत्थि आबाधा ? सहावियादो । किंचि बिसमयमच्छदि बिदियट्ठिदीए णिसित्तस्स तदियसमए चेव अकम्मभावुवलंभादो । किंचि तिसमय-मच्छदि, तदियट्ठिदीए णिसित्तस्स चउत्थसमए अकम्मपरिणामदंसणादो । एवं जाव

यहाँ सर्वप्रथम औदारिकशरीरका आश्रय लेकर सूत्रके अर्थका कथन करते हैं । यथा— औदारिकशरीर जिसके होता है वह औदारिकशरीरी कहलाता है, उस औदारिकशरीरके द्वारा । प्रथम समयमें ही आहार अर्थात् शरीरके योग्य पुद्गलोंका ग्रहण जिसके होता है वह प्रथम समयवर्ती आहारक कहलाता है, उस प्रथम समयवर्ती आहारके द्वारा । प्रथम समयवर्ती औदारिकशरीरवाले जीवके द्वारा यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका—सूत्रमें 'तेणेव' पदका ग्रहण किसलिए किया है ?

समाधान—औदारिकशरीरवाला ही औदारिकशरीरकी प्रदेशरचना करता है अन्य शरीरवाले नहीं इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'तेणेव' पदका ग्रहण किया है ।

उस भवमें जो स्थित है वह तद्भवस्थ कहलाता है । प्रथम समयवर्ती जो तद्भवस्थ वह प्रथम समयमें तद्भवस्थ है, उस प्रथम समयवाले तद्भवस्थके द्वारा । अविग्रहगतिसे उत्पन्न हुए जीवके द्वारा यह उक्त कथनका तात्पर्य है, क्योंकि, ऐसा नहीं मानने पर प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए जीवका प्रथम समयमें आहारक होनेमें विरोध है । उस जीवके द्वारा 'ओरालियसरीरत्ताए' अर्थात् औदारिकशरीररूपसे जो प्रथम समय प्रदेशाग्र निषिक्त किया है । अर्थात् प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र बाँधा गया है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । वह जीवमें कुछ एक समय तक रहता है, क्योंकि, नोकर्मकी आबाधा नहीं होनेसे प्रथम समयमें निषिक्त हुए प्रदेशाग्रका दूसरे समयमें ही क्षय देखा जाता है ।

शंका—यहां आबाधा किस कारणसे नहीं है ?

समाधान—क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

कुछ दो समय तक रहता है, क्योंकि, जो द्वितीय स्थितिमें निषिक्त हुआ है उसका तीसरे समयमें ही अकर्मपना देखा जाता है । कुछ तीन समय तक रहता है, क्योंकि, तृतीय स्थितिमें

* आ० प्रतौ 'परिसदाणुवलंभादो' इति पाठः ।

उक्कस्सेण किंचि तिण्णि पलिदोवमाणि अच्छदि, तदुवरिमसमए तस्स अकम्मभाव-दंसणादो। एवं वेउव्वियसरीरस्स वि वत्तव्वं। णवरि तत्थ किंचि तेत्तीसं सागरोवमाणि उक्कस्सेण अच्छदि त्ति वत्तव्वं। एवमाहारसरीरस्स वि समुक्कित्तणा कायव्वा। णवरि एवं जाव उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तमच्छदि त्ति वत्तव्वं। बिदियादि-समएसु वि एवं चेव पदेसरचणा कायव्वा।

निषिक्त हुए प्रदेशाग्रका चतुर्थ समयमें अकर्मरूप परिणाम देखा जाता है। इस प्रकार उत्कृष्ट-रूपसे कुछ तीन पल्य काल तक रहता है, क्योंकि, उससे अगले समयमें उसका अकर्मभाव देखा जाता है। इसी प्रकार वैक्रियिकशरीरका भी कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि वहाँ कुछ उत्कृष्ट रूपसे तेतीस सागर काल तक रहता है ऐसा कथन करना चाहिए। इसी प्रकार आहारकशरीरकी समुत्कीर्तनाका भी कथन करना चाहिए। इतनी विशेषता है की इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे वह अन्तर्मुहूर्त काल तक रहता है ऐसा यहाँ कथन करना चाहिए। द्वितीय आदि समयोंमें भी इसी प्रकार प्रदेश रचना करनी चाहिए।

विशेषार्थ-- जिस शरीरके प्रथमादि समयोंमें जितने परमाणु मिलते हैं उनका अपनी अपनी आबाधाके बाद नौ स्थितिके भागहारोंके द्वारा भाग देनेपर जितने भाग प्राप्त होते हैं उनमेंसे जिनकी जितनी स्थिति पडती है उतने काल तक वे रहते हैं। उदाहरणार्थ तीन पल्यकी आयुवाले किसी मनुष्यने प्रथम समयमें ही तद्भवस्थ होकर औदारिकशरीरके परमाणुओंको ग्रहण करके उन्हें तीन पल्यके जितने समय हैं उनमें बाँट दिया तो इनमेंसे जिनकी स्थिति एक समय है वे एक समय तक रह कर निर्जीर्ण हो जाते हैं। जिनकी स्थिति दो समय है वे दो समय तक रह कर निर्जीर्ण हो जाते हैं। इसी प्रकार क्रमसे एक एक समय बढते हुए तीन पल्यके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए। यह प्रथम समयमें ग्रहण किये गये परमाणुओंकी अपेक्षासे विवेचन किया है। आहारक होनेके दूसरे समयमें जिन परमाणुओंका ग्रहण होता है उनकी निषेक रचना प्रथम समयसे नहीं होती, क्योंकि, इनके लिए प्रथम समय गत हो चुका है। इसी प्रकार तृतीयादि समयोंमें ग्रहण किये गये परमाणुओंके विषयमें भी जानना चाहिए। यहाँ दो बातें खासरूपसे समझनेकी हैं। प्रथम तो यह कि नोकर्मकी आबाधा नहीं होती, इसलिए इसकी निषेक रचना उसी समयसे होती है जिस समयमें उसको ग्रहण किया है। और दूसरी बात यह कि नोकर्मकी स्थिति भुज्यमान आयुके अनुसार होती है और इसलिए जिसकी जितनी भवस्थिति होती है या शेष रहती है ग्रहण किये गये नोकर्मकी उतनी ही स्थिति पडती है।

विशेष खुलासा इस प्रकार है- जो औदारिक आदि तीन शरीरोंके लिए वर्गणायें आती हैं उनमेंसे जिसकी जितनी स्थिति है उसके अनुसार उनकी निषेक रचना होती है। निषेक शब्द नि उपसर्ग पूर्वक सिच् धातुसे बना है जिसका अर्थ सिञ्चन करना है। अर्थात् अपनी अपनी स्थितिके प्रत्येक समयमें वर्गणाओंको देना निषेक रचना है। यहां सर्व प्रथम औदारिक और वैक्रियिक इन दो शरीरोंकी निषेक रचनाके सम्बन्धमें विचार करना है। जो जीव एक पर्यायको छोडकर दूसरी पर्यायको ग्रहण करता है वह यदि विग्रहगतिमें स्थित होता है तो उसके विग्रह-गतिमें रहते हुए अपनी अपनी पर्यायके अनुसार औदारिक आदि तीन शरीरके योग्य वर्गणाओंका ग्रहण नहीं होता, क्योंकि, उसके यथासम्भव औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय नहीं होता। किन्तु जब ऐसा जीव यथासम्भव एक, दो या तीन मोडोंको पारकर अवस्थित होता है तब उसके इन नामकर्मोंका उदय होता है और तभी यह जीव इन शरीरोंके योग्य वर्गणाओंको ग्रहण करता है। अर्थात् यदि वह मनुष्य और तिर्यंच है तो उसके औदारिकशरीर

नामकर्मका उदय होता है और इसलिए वह औदारिकशरीरके योग्य नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण करता है। तथा यदि देव और नारकी है तो उसके वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदय होता है और इसलिए वह वैक्रियिकशरीरके योग्य नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण करता है। सूत्रमें प्रथम समय आहारक और प्रथम समय तद्भवस्थ कहनेका यही तात्पर्य है। अब देखना है कि इस प्रकार जो औदारिक और वैक्रियिकशरीरके योग्य वर्गणाओंका प्रथमादि समयोंमें ग्रहण होता है उनकी निषेकरचना किस प्रकार होती है। सूत्रमें कहा है कि प्रथम समयमें जो वर्गणायें ग्रहण की हैं उनमेंसे कुछको प्रथम समयमें निषिक्त करता है, कुछको द्वितीय समयमें निषिक्त करता है। इस प्रकार प्रत्येक समयमें निषिक्त करता हुआ अपनी अपनी स्थितिके अन्तिम समय तक निषिक्त करता है और फिर इसके बाद सूत्रमें औदारिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्य और वैक्रियिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागर बतलाई है सो इसका इतना ही अभिप्राय है कि मनुष्यों और तिर्यंचोंके क्षुल्लकभवग्रहणसे लेकर तीन पल्यके भीतर तथा देव और नारकियोंके दस हजार वर्षसे लेकर तेतीस सागरसे भीतर जिसकी जितनी आयुके अनुसार भवस्थिति हो उसके अनुसार उसके शरीरके लिए ग्रहण किये गये परमाणुओंकी निषेकरचना होती है। उदाहरणार्थ कोई मनुष्य सौ वर्षकी आयु लेकर ऋजुगतिसे उत्पन्न हुआ तो उसके प्रथम समयमें औदारिकशरीरकी जिन वर्गणाओंका ग्रहण होगा उनमेंसे कुछ वर्गणाओंकी एक समय स्थिति पड़ेगी, कुछ वर्गणाओंकी दो समय स्थिति पड़ेगी और कुछ वर्गणाओंकी तीन समय, कुछकी चार समय आदिसे लेकर सौ वर्ष प्रमाण स्थिति पड़ेगी। कर्मवर्गणाओंके ग्रहण होने पर आबाधा कालको छोड़कर उनकी अपनी स्थितिके अनुसार निषेक रचना होती है उस प्रकार इन दो शरीरोंकी बात नहीं है, क्योंकि, इनका भोग प्रथम समयसे ही होने लगता है, इसलिए स्वभावतः निषेक रचना भी इसी क्रमसे होती है। यह तो प्रथम समयमें ग्रहण किये गये पुद्गलोंका विचार हुआ। द्वितीयादि समयोंमें जो नोकर्म वर्गणायें आती हैं उनकी निषेक रचना भी इसी प्रकार जाननी चाहिए। मात्र वहाँ आयुमें एक समय आदि कम हुआ है इसलिए उनकी निषेक रचना जिस समयमें जितनी स्थिति शेष रहती है उसके अनुसार होती है। अर्थात् उक्त मनुष्य दूसरे समयमें औदारिकशरीरके योग्य जिन वर्गणाओंका ग्रहण करेगा उनकी निषेक रचना एक समय कम सौ वर्षके जितने समय होंगे तत्प्रमाण करेगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिए। यह तो औदारिक और वैक्रियिकशरीर के सम्बन्धमें विचार हुआ। आहारकशरीरकी निषेकरचना तो इसी प्रकार होती है। मात्र इसके निषेकोंकी रचना भवस्थिति कालप्रमाण न होकर आहारकशरीरके अवस्थितिकालप्रमाण होती है, क्योंकि, आहारकशरीरका ग्रहण प्रथम समयवर्ती आहारक और प्रथम समयवर्ती तद्भवस्थ जीव नहीं करता। किन्तु इसकी प्राप्ति संयत जीवके होती है, इसलिए जिस समयसे संयत जीव आहारकशरीरके योग्य पुद्गलोंको ग्रहण करता है उस समयसे लेकर आहारकशरीरके समाप्तिकाल तक जो अन्तर्मुहूर्त काल लगता है उतने समयोंमें इस शरीरके योग्य पुद्गलोंकी निषेक रचना करता है। शेष सब व्यवस्था पूर्ववत् जाननी चाहिए। यहाँ इतना विशेष समझना चाहिए कि यद्यपि संयत जीव आहारकशरीरको उत्पन्न करते समय नवीन पर्याय धारण नहीं करता फिर भी उसका उतने काल तक औदारिकशरीरसे योगक्रियाका सम्पर्क छूट कर आहारकशरीरसे संपर्क स्थापित होता है। उसी प्रकार छह पर्याप्तियोंकी पूर्णता आदि विधि होती है, इसलिए इसके एक तरहसे अन्य पर्यायका ग्रहण ही है। यही देखकर इस शरीरकी निषेक रचना का विधान करते हुए भी प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ यह विशेषण लगाया है। इस प्रकार

तेयासरीरिणा तेयासरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि किंचि बिसमयमच्छदि किंचि तिसमयमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि ॥२४७॥

एगजोगमकाऊण किमट्ठं पुधभूदमेदं सुत्तं वुच्चदे ? ण, पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण णिसेगरचणा कीरदे त्ति एत्थ णियमाभावादो। अणादिसंसारे हिंडंतस्स जीवस्स जत्थ कत्थ वि ट्ठाइदूण तेजइयसरीरमेत्तपदेसरचणुवलंभादो। सेसं सुगमं, पुव्वसुत्तत्थेण विसेसाभावादो।

कम्मइयसरीरिणा कम्मइयसरीरत्ताए जं पदेसग्गं णिसित्तं तं किंचि जीवे समउत्तरावलियमच्छदि किंचि विसमउत्तरावलियमच्छदि किंचि तिसमउत्तरावलियमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण कम्मट्ठिदि त्ति ॥२४८॥

एत्थ कम्मट्ठिदि त्ति✿ वुत्ते सत्तरिसागरोवमकोडाकोडी घेत्तव्वा, अट्ठकम्मकलावस्स कम्मइयसरीरत्तब्भुवगमादो। जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं किंचि जीवे समउत्तरा-

---

इन औदारिक आदि तीन शरीरोंकी निषेक रचना किस प्रकार होती है इसका विचार किया।

तैजसशरीरवाले जीवके द्वारा तैजसशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें बांधे जाते है उनमेंसे कुछ जीवमें एक समय तक रहता है, कुछ दो समय तक रहता है और कुछ तीन समय तक रहता है। इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे छयासठ सागर काल तक रहता है ॥ २४७ ॥

शंका– एक सूत्र न करके यह सूत्र अलगरूपसे किसलिए कहा है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, प्रथम समयमें आहार करनेवाला और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जीव निषेक रचना करता है इस प्रकारका यहाँ कोई नियम नहीं है तथा अनादिसे संसारमें घूमते हुए जीवके जहाँ कहीं भी स्थापित करके तैजसशरीरकी प्रदेश रचना उपलब्ध होती है। शेष कथन सुगम है, क्योंकि, पूर्वके सूत्रार्थसे इसमें कोई विशेषता नहीं है।

कार्मणशरीरवाले जीवके द्वारा कार्मणशरीररूपसे जो प्रदेशाग्र बांधे जाते हैं उनमेंसे कुछ जीवमें एक समय अधिक आवलि प्रमाण काल तक रहता है, कुछ दो समय अधिक आवलिप्रमाण काल तक रहता है और कुछ तीन समय अधिक आवलिप्रमाण काल तक रहता है। इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे कर्मस्थिति प्रमाण काल तक रहता है ॥ २४८ ॥

यहाँ पर कर्मस्थिति ऐसा कहने पर सत्तर कोडाकोडी सागरका ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, आठों कर्मोंके समुदायको कार्मणशरीररूपसे स्वीकार किया है। प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र

✿ म०प्रतिपाठोऽयम्। ता०प्रतौ ' कम्मट्ठिदि त्ति ॥१८०॥ (कम्मट्ठिदि त्ति–) वुत्ते ' अ०का० प्रत्योः ' एत्थ कम्मट्ठिदि त्ति ' इति पाठो नास्ति]

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

वलियमच्छवि, बंधावलियादि॰क्कंतमोकड्डिदूण समयाहियावलियाए उदए पादिदस्स दुसमयाहियआवलियाए अकम्मभावदंसणादो। एदं अत्थपदं लद्धूण उवरि सव्वत्थ वत्तव्वं। एवं समुक्कित्तणा त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

पदेसपमाणाणुगमेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥ २४९ ॥

एदं पुच्छासुत्तं अणंताविसंखमवेक्खदे✲। केवडिया इदि बहुवयणणिद्देसो पदेसग्गगदबहुत्तावेक्खो।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥ २५० ॥

निषिक्त होता है उसमेंसे कुछ जीवमें एक समय अधिक एक आवलिप्रमाण काल तक रहता है, क्योंकि, बन्धावलिके बाद द्रव्यका अपकर्षण करके एक समय अधिक आवलिरूप उदय समयमें लाये गये द्रव्यका दो समय अधिक आवलिके अन्तिम समयमें अकर्मपना देखा जाता है। इस अर्थपदको ग्रहण करके आगे सर्वत्र कहना चाहिए।

विशेषार्थ–तैजसशरीर और कार्मणशरीर सन्ततिकी अपेक्षा अनादि सम्बन्धवाले हैं। भवके परिवर्तनके साथ जिस प्रकार औदारिक और वैक्रियिक शरीर बदल जाते हैं उसप्रकार ये नहीं बदलते। विग्रहगतिमें इनकी परम्परा चालू रहती है, इसलिए इन दोनों की निषेक रचना प्रथम समयमें आहरण करनेवाले और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए जीवके द्वारा प्रारम्भ नहीं कराई गई है। किन्तु बन्धकी अपेक्षा कहीं भी प्रथम समय मान कर शरीरोंकी निषेक-रचनाका विधान किया है। तैजसशरीरका शेष विचार औदारिक आदि तीन शरीरोंकी समान है। मात्र कार्मणशरीरकी निषेकरचना और अवस्थितिकालमें कुछ विशेषता है। तात्पर्य यह है कि कार्मणशरीरकी निषेकरचना आबाधा कालको छोड़ कर होती है। तथा कोई भी निषेक बन्धकालसे लेकर कमसे कम एक समय एक आवलि प्रमाण काल तक अवश्य ही अवस्थित रहता है। शेष विचार अन्यत्रसे जान लेना चाहिए।

इस प्रकार समुत्कीर्तना अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

प्रदेशप्रमाणानुगमकी अपेक्षा जो औदारिकशरीरवाला, वैक्रियिकशरीरवाला और आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहार करनेवाले और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर रूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होते हैं वे कितने हैं ।२४९।

यह पृच्छासूत्र अनन्त आदि संख्याकी अपेक्षा करता है। तथा 'केवडिया' इस प्रकार बहुवचनका निर्देश प्रदेशाग्रगत बहुत्वकी अपेक्षा करता है।

अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५० ॥

॰ प्रतिषु 'खंधवलादिआदि–' इति पाठः। ✲ प्रतिषु 'सुत्तेक्खदे' इति पाठः।

एदेण संखेज्जासंखेज्जाणं पडिसेहो कदो । सेसं सुगमं ।

पारदर्शक - आचार्य श्री विद्यानन्द मुनि

जं विदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया । २५१ ।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । २५२ ।

जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥ २५३ ॥

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥ २५४ ॥

एदाणि सुत्ताणि तिण्णं पि सरीराणं परिवाडीए जोजेयव्वाणि☆ ।

एवं जाव उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ॥ २५५ ॥

एवं तिण्णं पि सरीराणं ट्ठिदि पडि णिसित्तपदेसाणं परिवाडीए पमाणपरूवणा कायव्वा । ओरालियसरीरस्स जावुक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि त्ति, वेउव्विय-सरीरस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि त्ति, आहारसरीरस्स अंतोमुहुत्तं त्ति ।

तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्मइयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसितं तं केवडिया ॥ २५६ ॥

इसके द्वारा संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध किया है । शेष कथन सुगम है ।

जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५१ ॥

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५२ ॥

जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥२५३॥

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥२५४॥

इन सूत्रोंकी तीनों ही शरीरोंके विषयमें यथाक्रमसे योजना करनी चाहिए ।

इसप्रकार उत्कृष्टरूपसे तीन पल्य, तेत्तीस सागर अन्तर्मुहूर्त काल तकके निषेकोंका प्रमाण जानना चाहिए ॥२५५॥

इसप्रकार तीनों ही शरीरोंकी स्थितिके प्रति निषिक्त हुए प्रदेशोंकी प्रमाणप्ररूपणा यथाक्रमसे करनी चाहिए । यथा- उत्कृष्टरूपसे औदारिकशरीरके तीन पल्यप्रमाण, वैक्रियिक-शरीरके तेतीस सागरप्रमाण और आहारकशरीरके अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काल तक निषिक्त हुए प्रदेशोंकी प्रमाण प्ररूपणा करनी चाहिए ।

तैजसशरीरवाले और कार्मणशरीरवाले जीवके द्वारा तैजसशरीर और कार्मण शरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥२५६॥

☆ ता० प्रतौ ' जोजेयव्वो (व्वाणि) ' इति पाठः ।

अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२५७॥
जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥२५८॥
एगदृक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२५९॥
जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ॥२६०॥
अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥२६१॥
एवं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ॥२६२॥

एवाणि सुत्ताणि सुगमाणि । णवरि तेजइयसरीरस्स छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मइयसरीरस्स कम्मट्ठिदी घेत्तव्वा । तेजा-कम्मइयसरीराणं पढमसमयाहारपढमसमयतब्भवत्थविसेसणाभावादो पुधजोगो कदो । एसा ट्ठिदिं पडि णिसित्तपरमाणूणं पंचसरीराणि अस्सिऊण जा पमाणपरूवणा कदा । सा किमेगसमयपबद्धमस्सिदूण कदा आहो णाणासमयपबद्धे अस्सिदूण कदा त्ति ? एगसमयपबद्धमस्सिदूण कदा । जदि एगसमयपबद्धमस्सिदूण* कदा तो कम्मइयसरीरस्स आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिध्दोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५७ ॥
जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है ॥ २५८ ॥
अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिध्दोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥ २५९ ॥
जो प्रदेशाग्र तृतीय समयमें निषिक्त होता है वह कितना है । २६० ।
अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिध्दोंके अनन्तवें भागप्रमाण है । २६१ ।

इस प्रकार उत्कृष्टरूपसे छ्यासठ सागर और कर्मस्थिति तकके निषेकोंका प्रमाण जानना चाहिए ॥ २६२ ॥

ये सूत्र सुगम हैं । इतनी विशेषता है कि तैजसशरीरकी छ्यासठ सागरप्रमाण और कार्मण शरीरकी कर्मस्थितिप्रमाण स्थिति लेनी चाहिए । तैजसशरीर और कार्मणशरीरके प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए ये दो विशेषण नहीं होनेसे अलगसे सूत्ररचना की है । यह प्रत्येक स्थितिके प्रति विषिक्त होनेवाले परमाणुओंकी पाँच शरीरोंका आश्रय लेकर उत्पन्न होनेवाली प्ररूपणा की है ।

शंका- वह क्या एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर की है या नाना समयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर की है ?

समाधान- एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर की है ।

शंका- यदि एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर की है तो कार्मणशरीरका आबाधाको

---

* ता० प्रतौ ' एगसमयमस्सिदूण ' इति पाठः ।

पदेसग्गं णिसित्तं तं केत्तियमिदि जं भणिदं तं कथं घडदे । ण एस दोसो, आबाधं मोत्तूण णिसेगट्ठिदीसु जा पढमा ट्ठिदी* तिस्से तत्थ गहणादो । अथवा णाणासमय-पबद्धे अस्सिदूण एसा परूवणा कायव्वा । ण च ओकड्डुक्कड्डुणाहि एत्थ पदेसाणं विसरिसत्तं, सेचोयमस्सिदूण परूविज्जमाणे विसरिसत्ताभावादो । एवं पदेसपमाणाणु-गमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

अणंतरोवणिधाए ओरालिय-वेउव्विय-आहरसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहा-रसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं ॥२६३॥

आहारसरीरस्स पढमसमयतब्भवत्थविसेसेणं कथं जुज्जदे ? ण एस दोसो, ओरालियसरीरं छंडिदूण आहारसरीरेण परिणदस्स अवांतर*गमणमत्थि त्ति पढम-समयतब्भवत्थविसेसणुववत्तीदो । तिण्णं सरीराणं सगसगकम्मट्ठिदीणं पढमसमए जं णिसित्तं पदेसग्गं तं बहुगं होदि उवरि णिसिंचमाणट्ठिदीणं पदेसेहिंतो ।

छोड़ कर प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह कितना है ऐसा जो कहा है वह कैसे घटित होता है ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आबाधाको छोड़कर निषेकस्थितियोंमें जो प्रथम स्थिति है उसका वहां ग्रहण किया है ।

अथवा नाना समयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर यह प्ररूपणा करनी चाहिए । यदि कहा जाय कि अपकर्षण और उत्कर्षणके निमित्तसे यहां परमाणुओंकी विसदृशता हो जायगी सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, सिंचनका आश्रय लेकर कथन करनेपर विसदृशताका अभाव है ।

इस प्रकार प्रदेशप्रमाणानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा जो औदारिक शरीरवाला, वैक्रियिकशरीरवाला और आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारक-शरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है ॥ २६३ ॥

शंका–आहारकशरीरका 'प्रथमसमयतद्भवस्थ' विशेषण कैसे बन सकता है ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, औदारिकशरीरको छोड़ कर आहारकशरीर रूपसे परिणत हुए जीवका अवान्तरगमन है, इसलिए 'प्रथमसमयतद्भवस्थ' विशेषण बन जाता है।

तीन शरीरोंका अपनी अपनी कर्मस्थितियोंके प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह आगेकी स्थितियोंमें प्राप्त होनेवाले प्रदेशोंसे बहुत होता है ।

---

* ता०प्रतौ ' णिसेगट्ठिदीए जा पढमट्ठिदी ' इति पाठः] * अ०का०प्रत्योः ' परिणदस्स अवंतर- ' इति पाठः ।

जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥ २६४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? णिसेगभागहारेण पढमणिसेगं खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तेण। केत्तियमेत्ता एत्थ णिसेगभागहारा ? दोगुणहाणिमेत्ता। गुणहाणिपमाणं केत्तियं ? ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमंतोमुहुत्तं । तेजइय-कम्मइयसरीराणं पुण गुणहाणिपमाणं पलिदोवमस्स असंखे० भागो ।

जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥ २६५ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सगसगणिसेयभागहारेहि रूवूणेहि सगसगबिदियणिसेगेसु खंडिदेसु तत्थ एगखंडमेत्तेण ।

जं चउत्थसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥ २६६ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सगसगणिसेयभागहारेहि दुरूवूणेहि सगसगतदियणिसेगेसु खंडिदेसु तत्थ एगखंडमेत्तेण। एवं णिसेयभागहारो तिरूवूणचदुरूवूणादिकमेण णेयव्वो जाव* पढमगुणहाणि त्ति । पुणो उवरि णिसेगभागहारो चेव होदि। तत्तो उवरि* रूवूणादिकमेण णेयव्वो ।

जो द्वितीय समयमें प्रवेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेषहीन है । २६४ ।

कितना हीन है ? निषेकभागहारसे प्रथम निषेकको भाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होता है उतना हीन है ।

शंका-- यहाँ निषेकभागहार कितना है ?

समाधान-- दो गुणहानिमात्र है ।

शंका-- गुणहानिका प्रमाण कितना है ।

समाधान-- औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरकी गुणहानिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है । परन्तु तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी गुणहानिका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

जो तृतीय समयमें प्रवेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेषहीन है । २६५ ।

कितना हीन है ? एक कम अपने अपने निषेकभागहारसे अपने अपने द्वितीय निषेकके भाजित करने पर वहाँ जो एक भाग लब्ध आवे उतना हीन है ।

जो चतुर्थ समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेषहीन है । २६६ ।

कितना हीन है ? दो कम अपने अपने निषेकभागहारसे अपने अपने तृतीय निषेकके भाजित करने पर वहाँ जो एक भाग लब्ध आवे उतना हीन है । इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्त तक निषेकभागहार तीन कम और चार कम आदि क्रमसे ले जाना चाहिए । पुनः ऊपर निषेकभागहार ही होता है । फिर वहाँ और एक कम आदि क्रमसे ले जाना चाहिए ।

---

* का० प्रतौ 'जाव' इत आरभ्य टीकागतपाठो नोपलभ्यते ।

* ता० प्रतौ होदि] 'तत्थ उवरि' इति पाठः ।

पाठान्तरः एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोव-
माणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ॥२६७॥

एदाओ तिण्णि वि ट्ठिदीओ जहाकमेण तिण्णं णोकम्माणं जोजेयव्वाओ

तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्मइयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं ॥२६८॥

जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥२६९॥

जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ॥२७०॥

एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोव-
माणि कम्मट्ठिदी ॥२७१॥

एत्थ तेजइयसरीरस्स परूवणे कीरमाणे* जहा ओरालियसरीरस्स णिसेयपमाण-
परूवणा कदा तहा कायव्वा, आबाधाभावं पडि विसेसाभावादो । णवरि एत्थ णिसे-
गभागहारो पलिदोवमस्स असंखे० भागो । कम्मइयसरीरस्स पुणो सत्तवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण जं पढमसमए णिसित्तं तं बहुअं । जं बिदियसमए णिसित्तं

इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे तीन पल्य, तेतीस सागर और अन्तर्मुहूर्तके अन्त तक विशेष हीन प्रदेशाग्र निषिक्त होता है ॥ २६७ ॥

ये तीनों स्थितियां यथाक्रमसे तीन नोकर्मोंके लिए योजित कर लेनी चाहिए ।

तैजस शरीर और कार्मण शरीरवाले जीवके द्वारा तैजस शरीर और कार्मण शरीररूपसे जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है ॥ २६८ ॥

जो द्वितीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेष हीन है ॥ २६९ ॥

जो तृतीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह विशेष हीन है ॥ २७० ॥

इस प्रकार छ्यासठ सागर और कर्मस्थितिके अन्त तक विशेष हीन प्रदेशाग्र निषिक्त होता है ॥ २७१ ॥

यहां तैजस शरीरकी प्ररूपणा करनेपर जिस प्रकार औदारिकशरीरकी निषेकप्रमाणप्ररूपणा की है उस प्रकारसे करनी चाहिए, क्योंकि, आबाधाके अभावके प्रति औदारिकशरीरसे यहाँ कोई विशेषता नहीं है । इतनी विशेषता है कि यहाँ पर निषेकभागहार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है । परन्तु कार्मणशरीरका सात हजार वर्षप्रमाण आबाधाको छोडकर जो प्रदेशाग्र आबाधाके बाद प्रथम समयमें निषिक्त होता है वह बहुत है । जो प्रदेशाग्र द्वितीय समयमें

---

* ता०प्रतौ ' परूवणा कीरमाणे ' इति पाठः ।

तं विसेसहीणं। केत्तियमेत्तेण? णिसेगभागहारमेत्तेण पढमणिसेगे खंडिदे तत्थ एगखंड-मेत्तेण। एत्थ णिसेगभागहारो केत्तिओ ? दोगुणहाणिमेत्तो। गुणहाणिपमाणं केत्तियं? पलिदो० असंखे०भागो। जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं एगगोवुच्छ-विसेसमेत्तेण। एवं णेयव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति। अट्ठकम्मकलावे कम्मइय-सरीरे संते एगसमयपबद्धं णाणासमयपबद्धे वा अस्सिदूण अणंतरोवणिधा ण सक्कदे वोत्तुं। तं जहा- ताव णाणासमयपबद्धे अस्सिदूण अणंतरोवणिधा वोत्तुं सक्किज्जदे। कुदो ? जेण कसायपाहुडे एगसमयपबद्धस्स कम्मट्ठिदिणिसित्तस्स समयाहियावलिय-प्पहुडि णिरंतरमणसमयवेदगकालो लब्भदि पलिदो० असंखे०भागमेत्तो। पुणो तद-
गाइदशक * आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
णंतरउवरिमसमयमादि कादूण तस्समयपबद्धस्स अवेदगकालो होदि। जहण्णेण एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे०भागमेत्तो णिरंतरमवेदगकालो होदि। एवमेग-समयपबद्धस्स वेदग-अवेदगकालाणि गच्छंति जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति। जहा कम्मट्ठिदीए एगसमयपबद्धस्स वेदगकालो सांतरो णिरंतरो च होदि तहा सेससव्व समयपबद्धाणं वेदगकालेण सांतरेण णिरंतरेण च होदव्वं, समयपबद्धत्तं पडि भेदा-भावादो। तम्हा कम्मट्ठिदीए णिसित्तसव्वसमयपबद्धाणं पदेसा गोवुच्छागारेण

निषिक्त होता है वह विशेष हीन है। कितना हीन है ? निषेकभागहारसे प्रथम निषेकके भाजित करने पर वहां जो एक भाग लब्ध आवे उतना हीन है।

शंका-- यहाँ निषेकभागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान-- दो गुणहानिमात्र उसका प्रमाण है।

शंका-- गुणहानिका प्रमाण कितना है ?

समाधान-- गुणहानिका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागमात्र है।

जो तृतीय समयमें प्रदेशाग्र निषिक्त होता है वह एक गोपुच्छ विशेषमात्र विशेष हीन है। इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए।

शंका-- आठों कर्मोंके समुदायरूप कार्मणशरीरके होनेपर एक समयप्रबद्ध या नाना समयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर अनन्तरोपनिधाका कथन करना शक्य नहीं है। यथा-नाना समय-प्रबद्धोंका आश्रय लेकर तो अनंतरोपनिधाका कथन करना इसलिए शक्य नहीं है, क्योंकि, यतः कषायप्राभृतमें कर्मस्थितिमें निषिक्त हुए एक समयप्रबद्धका एक समय अधिक आवलिसे लेकर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक प्रत्येक समयमें निरंतर वेदककाल प्राप्त होता है। पुनः तदनंतर उपरिम समयसे लेकर उस समयप्रबद्धका अवेदक काल होता है। जघन्य रूपसे एक समय तक और उत्कृष्टरूपसे पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर अवेदक काल होता है। इस प्रकार एक समयप्रबद्धकी कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक निरन्तर वेदककाल और अवेदककाल होते हुए जाते हैं। जिस प्रकार कर्मस्थितिमें एक समयप्रबद्धका वेदककाल सांतर और निरन्तर होता है उसी प्रकार शेष सब समयप्रबद्धोंका वेदककाल सांतर और निरंतर होना चाहिए, क्योंकि, समयप्रबद्धपनेकी अपेक्षा उनमें कोई भेद नहीं है। इसलिए कर्मस्थितिमें निषिक्त

णिरंतरं णो अच्छंति। तेण संचयमस्सिदूण अणंतरोवणिधाणिए संभवो णत्थि। एग-समयपबद्धमस्सिदूण वि अणंतरोवणिधाए ण संभवो अत्थि। कुदो? सव्वकम्मपढमणिसेयाण मेत्थ संभवाभावादो सव्वकम्मचरमणिसेयाणमेयट्ठिदीए णिवादाभावादो च। तं जहा-कम्मट्ठिदिपढमसमयप्पहुडि उवरि वस्ससदाणि गंतूण हस्स-रदि-पुरिसवेदवेवगइ-वेवगइपाओग्गाणुपुव्वि-समचउरसंठाण-वज्जरिसहवइरणारायणसरीर-संघडणपसत्थविहायगइ-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर आदेज्ज-जसगित्ति-उच्चागोद पण्णा-रसण्हं (वसियाणं) पयडीणं पढमणिसेया होंति। तत्तो उवरि बेवस्ससदाणि गंतूण बिदियसंठाण बिदियसंघडणाणं बारसियाणं बेपयडीणं पढमणिसेया होंति। पुव्विल्ल-णिसेयकलावादो संपहियणिसेयकलाओ संखेज्जभागब्भहिओ। १५, १७। तत्तो उवरि बेवस्ससदाणि गंतूण तदिय-संठाणतदियसंघडणबेपयडीणं चोद्दसियाणं पढमणिसेया णिवदंति १९। ताधे असंखेज्जगुणहीणत्तं फिट्टिदूण णिसेयकलावस्स संखे०भाग-ब्भहियत्तं होदि। तदो वस्ससदमुवरि गंतूण मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-इत्थिवेद-सादावेदणीयपयडीणं पण्णारसियाणं पढमणिसेया होंति २३। ताधे णिसेगो संखेज्जभागब्भहिओ होदि। चउत्थसंठाण-चउत्थसंघडणपयडीणं सोलसि-याणं तत्तो उवरि वस्ससदं गंतूण पढमणिसेया होंति २५। ताधे णिसेयकलाओ

हुए सब समयप्रबद्धोंके प्रदेश गोपुच्छाकाररूपसे निरन्तर नहीं रहते है। इसलिए संचयका आश्रय लेकर अनन्तरोपनिधा सम्भव नहीं है। तथा एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर भी अनन्तरोपनिधा सम्भव नहीं है, क्योंकि, सब कर्मोंके प्रथम निषेक यहाँ सम्भव नहीं हैं तथा सब कर्मोंके अन्तिम निषेकोंका एक स्थितिमें निपात नहीं होता। यथा-कर्मस्थितिके प्रथम समयसे लेकर ऊपर एक हजार वर्ष जाकर हास्य, रति, पुरुषवेद, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, समचतुरस्र संस्थान, वज्रर्षभनाराचसंहनन, प्रशस्त विहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यश:-कीर्ति और उच्चगोत्र इन पन्द्रह दसिय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते है १५। वहाँसे ऊपर दो सौ वर्ष जाकर द्वितीय संस्थान और द्वितीय संहनन इन बारसिय दो प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते हैं १७। पहलेके निषेककलापसे साम्प्रतिक निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है। वहाँसे ऊपर दो सौ वर्ष जाकर तृतीय संस्थान और तृतीय संहनन इन चोदसिय दो प्रकृतियोंके प्रथम निषेक निपतित होते हैं १९। तब असंख्यात गुणहीनत्व मिटकर निषेककलापका संख्यातवां भाग अधिक होता है। वहाँसे सौ वर्ष ऊपर जाकर मनुष्यगति मनुष्यगत्यानुपूर्वी, स्त्रीवेद और सातवेदनीय इन पन्द्रहसीय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते हैं २३। तब निषेक संख्यातवें भाग अधिक होता है। वहाँसे सौ वर्ष ऊपर जाकर चतुर्थ संस्थान और चतुर्थ संहननके प्रथम निषेक होते हैं २५। तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक

ॐ प्रतिष 'अणंतरोवणिधाणिसेगं एग-' इति पाठः।] ॐ ता०प्रतौ 'णिसेयाणमेत्थ' इति पाठः ✽ ता०प्रतौ 'उच्चागोदसोलसण्हं (दसियाणं) पयडीणं पढमणिसेया' आ०प्रतौ 'उच्चगोद तित्थयर कम्मट्ठिदिणिसेया' मा०प्रतौ 'उच्चागोदसोलसण्हं पयडीणं पढमणिसेया' इति पाठः]

संखेज्जभागब्भहिओ होदि । तत्तो उवरि बेवस्ससयाणि गंतूण पंचमसंठाण-पंचमसंघडण--बीइंदिय-तीइंदिय--चउरिंदिय- सुहुम--अपज्जत्त--साहारणपयडीणमट्ठारसियाणं पढमणिसेया पदंति ३३ । ताधे णिसेयकलावो संखेज्जभागब्भहिओ होदि । तत्तो बेवस्ससयाणि उवरि गंतूण अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-णवुंसयवेद-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वि-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-एइंदिय-पंचिंदियजादि-तेजाकम्मइयसरीर-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-हुंडसंठाण--असंपत्तसेवट्टसंघडण--वण्ण-गंध रस-फास-अगुरुअलहुअ-उवघाव-परघाव-उस्सास-अप्पसत्थविहायगइ-आदाव-उज्जोव-थावर-तस- बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-अथिर-असुह-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोदपयडीणं बीसियाणं पढमणिसेया पदंति ७६ । ताधे णिसेयकलावो संखेज्जेहि भागेहि अब्भहिओ होदि । तत्तो उवरि बसवस्ससदमेत्तमद्धाणं गंतूण पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-असादावेदणीय-पंचंतरायपयडीणं तीसियाणं पढमणिसेया पदंति ९६ । ताधे णिसेयकलाओ संखेज्जभागब्भहियो* होदि । तत्तो उवरि बसवस्ससदमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण सोलसकसायाणं पढमणिसेया पदंति ११२ । ताधे णिसेककलावो संखेज्जभागब्भहिओ होदि । तदो उवरिमसंखेज्जभागहीणकमेण तिण्णि वस्ससहस्साणि गंतूण मिच्छत्तस्स पढमणिसेयो पददि ११३। पडिदे वि असंखेज्जभागहाणी चेव, देसघादिकम्मपदेसेहिंतो

होता है। उससे ऊपर दो सौ वर्ष जाकर पञ्चम संस्थान, पञ्चम संहनन, द्वीन्द्रियजाति, त्रीन्द्रियजाति, चतुरिन्द्रियजाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण इन अठारसीय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक होते हैं ३३। तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है। वहाँसे दो सौ वर्ष ऊपर जाकर अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, नपुंसकवेद, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रियजाति, पंचेन्द्रियजाति, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, औदारिकशरीर, औदारिकआंगोपांग, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकआंगोपांग, हुंडसंस्थान, असम्प्राप्तासृपाटिकासंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति, आतप, उद्योत, स्थावर, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशःकीर्ति, निर्माण और नीचगोत्र इन बीसिय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक पडते हैं ७६। तब निषेककलाप संख्यातवें भाग प्रमाण अधिक होता है। वहाँसे एक हजार वर्ष प्रमाण स्थान आगे जाकर पाँच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, असातावेदनीय और पाँच अन्तराय इन तीसिय प्रकृतियोंके प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं ९६। तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है। वहाँसे ऊपर एक हजार वर्षप्रमाण स्थान जाकर सोलह कषायोंके प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं ११२। तब निषेककलाप संख्यातवें भागप्रमाण अधिक होता है। वहाँसे ऊपर असंख्यात भागहीन क्रमसे तीन हजार वर्ष जाकर मिथ्यात्वका प्रथम निषेक प्राप्त होता है ११३। उसके वहाँ पडने पर भी असंख्यातभागहानि ही होती है, क्योंकि, देशघातिकर्मोंके प्रदेशोंसे मिथ्यात्व और बारह कषायरूप सर्वघाति कर्मोंके

---

* अ० का० प्रत्योः 'संखेज्जगुणब्भहियो' इति पाठः ।

मिच्छत्त-बारसकसायाणं सव्वधावीणं पदेसस्स अणंतगुणहीणत्तुवलंभादो। ण च देसघावीणमेगगोवुच्छविसेसस्स अणंतिमभागे पदिदे णिसेयस्स विसेसाहियत्तं जुज्जदे, विरोहादो। उवरि जत्थ दंसियाणं णिसेयरचणा थक्कदि ततो उवरिमअणंतरणिसेओ संखेज्जदिभागहीणो। एवमुवरि अत्थ जत्थ पयडीणं णिसेयरचणा थक्कदि तत्थतत्थ णिसेयो संखेज्जभागहीणो संखेज्जगुणहीणो च होदि त्ति वत्तव्वं। एवं चत्तालीससागरोवमकोडाकोडीओ उवरि गंतूण जावुवरिमअणंतरट्ठिदी तिस्से गोवुच्छो अणंतगुणहीणो होदि। तत्तो उवरि सव्वत्थ असंखेज्जभागहीणो, तेण एगसमयपबद्धमस्सिदूण वि णाणंतरोवणिधा वोत्तुं सक्किज्जदे? एत्थ परिहारो उच्चदे-ण ताव पढमपरूविददोससम्भवो, सेचीयादो मिच्छत्तसंचयगोवुच्छाए अणंतरोवणिधाए भण्णमाणाए सव्वत्थ विसेसहीणत्तुवलंभादो। ण बिदियपक्खे उत्तदोसो वि संभवदि, मिच्छत्तमेक्कं चेव घेत्तूण अणंतरोवणिधाणिरूवणादो। किमट्ठं तं चेवेक्कं घेप्पदे? अण्णासिं पयडीणं ट्ठिदि पडि पहाणत्ताणुवलंभादो। अथवा कम्मट्ठिदि त्ति उत्ते अट्ठण्हं* कम्माणं पुध पुध ट्ठिदीओ घेतव्वाओ। एवं गहिदे ण पुव्वुत्तदोससंभवो, सव्वकम्माणं सगसगजहण्णणिसेगट्ठिदिप्पहुडि जाव तगसगुक्कस्सट्ठिदि त्ति पुध पुध णिसेयरयणाए परूविदत्तादो। एवमणंतरोवणिधा समत्ता।

प्रदेश अनन्तगुणे हीन उपलब्ध होते हैं। यदि कहा जाय कि देशघातियोंके एक गोपुच्छविशेषके अनन्तवें भागके पतन होने पर निषेकका विशेष अधिकपना बन जाता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध आता है। ऊपर जहाँ दसियोंकी निषेकरचना समाप्त होती है उससे उपरिम अनन्तर निषेक संख्यातवें भागप्रमाण हीन होता है। इस प्रकार ऊपर जहाँ जहाँ प्रकृतियोंकी निषेक रचना है वहाँ वहाँ निषेक संख्यातभागहीन और संख्यातगुणहीन होता है ऐसा कहना चाहिए। इस प्रकार चालीस कोडाकोडी सागर ऊपर जाकर जो उपरिम अनंतर स्थिति है उसका गोपुच्छ अनन्तगुणा हीन होता है। वहाँसे ऊपर सर्वत्र असंख्यातभागहीन है, इसलिए एक समयप्रबद्धका आश्रय करके भी अनन्तरोपनिधाका कथन करना शक्य नहीं है।

समाधान-- यहाँ पर परिहारका कथन करते हैं- प्रथम पक्षमें कहे गए दोषोंकी तो सम्भावना है नहीं, क्योंकि, सेचीयरूपसे मिथ्यात्वके संचयकी गोपुच्छाके अनन्तरोपनिधारूपसे कथन करने पर सर्वत्र विशेष हीनपना पाया जाता है। द्वितीय पक्षमें कहा गया दोष भी संभव नहीं है, क्योंकि, एक मिथ्यात्वको ही ग्रहण करके अनन्तरोपनिधाका कथन किया है।

शंका-- उस एकको ही किसलिए ग्रहण करते हैं?

समाधान-- क्योंकि, अन्य प्रकृतियोंकी स्थितिके प्रति प्रधानता उपलब्ध होती है।

अथवा कर्मस्थिति ऐसा कहने पर आठों कर्मोंकी पृथक् पृथक् स्थितियाँ ग्रहण करनी चाहिए। ऐसा ग्रहण करने पर पूर्वोक्त दोष सम्भव नहीं है, क्योंकि, सब कर्मोंकी अपनी अपनी जघन्य निषेकस्थितिसे लेकर अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति तक अलग अलग निषेक रचनाका

---

* ता० प्रतौ 'उत्तअट्ठण्हं' अ० प्रतौ 'वुत्त अट्ठण्णं' का० प्रतौ 'वुत्तअट्ठण्णं' इति पाठः।

परंपरोवणिधाए ओरालिय-वेउव्वियसरीरिणा तेणेव पढमसमय-आहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्वियसरीरत्ताए जं पढमसमयपदेसग्गं तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणं ॥ २७२ ॥

एवाणि दोण्हं सरीराणं जं भवस्स पढमसमए णिमित्तं पदेसग्गं तं पेक्खिदूण

कथन किया है।

विशेषार्थ– अनन्तरोपनिधामें प्रथम स्थानसे द्वितीय स्थानमें, तथा इसी प्रकार द्वितीय आदि स्थानोंसे तृतीय आदि स्थानोंमें कितनी हानि या वृद्धि होती है इसका विचार किया जाता है। यहाँ कर्मके प्रसंगसे निषेक रचनाका विचार करना है। नोकर्मोंके समान उसके सम्बन्धमें सामान्य नियम यह तो है ही कि प्रथम स्थितिमें जो प्रदेशाग्र मिलता है उससे द्वितीयादि स्थितियोंमें वह उत्तरोत्तर हीन मिलता है। पर कितना हीन मिलता है इस प्रश्नका उत्तर देनेके लिए सूत्रकारने यह व्यवस्था दी है कि प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है वह बहुत है। उससे दूसरे समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है वह विशेष हीन है। उससे तीसरे समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है वह विशेष हीन है। इस प्रकार विशेष हीन का यह क्रम कर्मकी अन्तिम स्थिति तक जानना चाहिए। इस पर शंकाकारका यह कहना है कि इस प्रकार जो अनन्तरोपनिधा बतलाई है वह न तो नानासमयप्रबद्धोंका आश्रय लेकर बन सकती है और न एक समयप्रबद्धका आश्रय लेकर ही बन सकती है। कषायप्राभृतमें जो वेदक और अवेदककाल बतलाया है उसे देखते हुए तो नानासमयप्रबद्धोंकी अपेक्षा उक्त प्रकारसे अनन्तरोपनिधा नहीं बन सकती। यदि एक समयप्रबद्धकी अपेक्षा यह अनन्तरोपनिधा मानी जाय तो यह मानना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, एक तो मूल और उत्तर प्रकृतियोंकी अपेक्षा प्रत्येक कर्मकी अपनी अपनी स्थितिके अनुसार अलग अलग आबाधा पड़ती है, दूसरे एक समयमें आए हुए द्रव्यका बटवारा सर्वघाति और देशघातिरूपसे विभाग होकर भिन्न भिन्न प्रकारसे होता है, इसलिए न तो सब कर्मोंकी निषेकरचना एक स्थानसे प्रारम्भ हो सकती है और न समानक्रमसे विभाग होकर सब कर्मोंको द्रव्य ही मिल सकता है। अतः प्रथम स्थितिके प्रदेशाग्रसे द्वितीय स्थितिका प्रदेशाग्र, द्वितीय स्थितिके प्रदेशाग्रसे तृतीय स्थितिका प्रदेशाग्र विशेष हीन होता है इत्यादि क्रम नहीं बन सकता। यह मूल शंका है। इस शंकाका जो समाधान किया है उसका सार यह है कि यहाँ जो अनन्तरोपनिधाका कथन किया है वह एक समयमें आठों कर्मों और उनकी उत्तर प्रकृतियोंके लिए जो द्रव्य मिला है उस सबको मिलाकर कथन नहीं किया गया है किन्तु मिथ्यात्वको या अलग अलग प्रकृतिको ध्यानमें रख कर ही यहां अनन्तरोपनिधाका कथन किया गया है, इसलिए शंकाकारने जो आपत्तियां उठाई हैं उनका परिहार हो जाता है।

इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई।

परम्परोपनिधाकी अपेक्षा जो औदारिकशरीरवाला और वैक्रियिकशरीर-वाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवके द्वारा औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीररूपसे जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उससे अन्तर्मुहूर्त जाकर वह दुगुणा हीन होता है॥ २७२ ॥

इन दोनों शरीरोंका भवके प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उसे देखते हुए

तत्तो अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण णिसित्तं पदेसग्गं दुगुणहीणं होदि। किं पमाणमंतोमुहुत्तं? णिसेगभागहारस्स अद्धमेत्तं। पुणो दुगुणहीणणिसेगादो उवरि तत्तियं चेव अवट्ठिव-मद्धाणं गंतूण जो अण्णो णिसेयो सो तत्तो दुगुणहीणो होदि।

एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जाव उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोव-माणि तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ २७३ ॥

अप्पिदअप्पिददुगुणहीणणिसेगादो उवरि अवट्ठिवअंतोमुहुत्तमद्धाणं गंतूण दुगुणहीणो होदि त्ति घेत्तव्वं। अवट्ठिवसद्दाणमिदि कथं णव्वदे? 'एवं' णिद्देसादो। एवं एदेण* कमेण णेयव्वं जाव तिण्णं पलिदोवमाणं तेत्तीसं सागरो-वमाणं चरिमट्ठिदि त्ति। एगगुणहाणिअद्धाणपरूवणट्ठं* णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणपरूवणट्ठं च उत्तरसुत्तमागदं--

एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तं णाणापदेसगुणहाणिट्ठा-णंतराणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २७४ ॥

उससे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काल ऊपर जाकर वहांकी स्थितिमें निषिक्त हुआ प्रदेशाग्र दुगुणा हीन होता है।

शंका-- यहाँ अन्तर्मुहूर्तका क्या प्रमाण है?

समाधान-- निषेक भागहारके अर्धभागप्रमाण है।

पुनः द्विगुण हीन निषेकसे ऊपर उतना ही अवस्थित अध्वान जाकर जो अन्य निषेक है वह उससे दुगुणा हीन है।

इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे तीन पल्य और तेतीस सागर होने तक दुगुणा हीन होता गया है ॥ २७३ ॥

उत्तरोत्तर विवक्षित दुगुणे हीन निषेकसे ऊपर अवस्थित अन्तर्मुहूर्त अध्वान जाकर स्थित हुआ निषेक दुगुणा हीन होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शंका-- सर्वत्र अवस्थित अध्वान है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-- 'एवं' पदके निर्देशसे जाना जाता है।

इस प्रकार इस क्रमसे तीन पल्य और तेतीस सागरकी अन्तिम स्थितिके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। अब एक गुणहानिअध्वानका कथन करनेके लिए और नाना गुणहानि शलाकाओंके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र आया है--

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है तथा नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ २७४ ॥

---

* ता० प्रतौ 'णिद्देसादो। एवं एदेण' इति पाठः। * प्रतिषु '-अद्धाणं परूवणट्ठं' इति पाठः।

गुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तमिदि सुत्तादो चेव णव्वदे, जुत्तिगोचरमइच्छिऊण ट्ठिदत्तादो । णाणागुणहाणिसलागपमाणं पुण सुत्तादो जुत्तीदो च णव्वदे । तं जहा- अंतोमुहुत्तस्स जदि एगगुणहाणिसलागा लब्भंति तो तिण्णं पलिदोवमाणं तेत्तीसं सागरोवमाणं च किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए णाणापदेस-गुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदो० असंखे०भागमेत्ताणि लब्भंति । एदेसिं थोवबहुत्त-परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं थोवं ॥ २७५ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २७६ ॥

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०भागो ।

आहारसरीरेण वेउव्वियसरीरेण पढमसमय आहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणं ॥२७७॥

ओरालिय-वेउव्वियसरीरेहि सह आहारसरीरस्स परूवणा किण्ण कदा, अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणत्तं पडि भेदाभावादो ? ण, गुणहाणिसलागसंखगदभेद—

गुणहानिस्थानान्तर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है यह बात सूत्रसे ही जानी जाती है, क्योंकि, वह युक्तिकी विषयताका उल्लंघन कर स्थित है। परन्तु नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण सूत्र और युक्ति दोनोंसे जाना जाता है । यथा-अन्तर्मुहूर्तकी यदि गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो तीन पल्य और तेतीस सागरोंकी कितनी गुणहानिशलाकायें प्राप्त होंगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण लब्ध होते हैं । अब इनके अल्पबहुत्वका करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक है ॥ २७५ ॥

क्योंकि, वह अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ।

उससे नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥ २७६ ॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

जो आहारकशरीरवाला जीव है, प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समय में तद्भवस्थ उसी जीवके द्वारा आहारकशरीररूपसे जो प्रथम समयमें प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उससे अन्तर्मुहूर्त जाकर वह दुगुणा हीन होता है ॥ २७७ ॥

शंका-औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके साथ आहारकशरीरकी प्ररूपणा क्यों नहीं की, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्त स्थान जाकर दुगुणा हीन होता है इस अपेक्षासे इनके कथनमें कोई भेद

परूवणट्ठं पुध सुत्तारंभकरणादो ।

एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जावुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ २७८ ॥

अवट्ठिदगुणहाणिअद्धाणमिदि जाणावणट्ठं एवं णिद्देसो कदो, अण्णहा तस्स णिप्फलत्तप्पसंगादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तं णाणापदेसगुणहाणि-ट्ठाणंतराणि संखेज्जा समया ॥ २७९ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पदेसग्गं दुगुणहीणं होदि त्ति एदेण सुत्तेण जाणाविदस्स गुणहाणिअद्धाणपमाणस्स पुणो वि एत्थ परूवणा किमट्ठं कीरदे ? तत्तो णाणागुण-हाणिसलागाणं पमाणमागच्छदि त्ति जाणावणट्ठं कीरदे । तं जहा-- अंतोमुहुत्तस्स जदि एगा गुणहाणिसलागा लब्भदि तो आहारसरीरेण सह अच्छणकालब्भंतरे केत्तियाओ लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संखेज्जाओ णाणा-गुणहाणिसलागाओ लब्भंति ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ २८० ॥

कुदो ? संखेज्जत्तादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ २८१ ॥

नहीं है ।

समाधान-- नहीं, क्योंकि, गुणहानिशलाकाओंके संख्यागत भेदका कथन करनेके लिए अलगसे सूत्रका आरम्भ किया है ।

इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होने तक दुगुणा हीन दुगुणा हीन होता गया है ।२७८।

गुणहानिअध्वान अवस्थित है, इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'एवं' पदका निर्देश किया है, अन्यथा उसके निष्फल होनेका प्रसंग आता है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है और नानाप्रदेशगुणहानि-स्थानान्तर संख्यात समयप्रमाण हैं ॥ २७९ ॥

शंका--' उससे अंतर्मुहूर्त जाकर प्रदेशाग्र दुगुणा हीन होता है ' इस प्रकार इस सूत्रके द्वारा गुणहानि अध्वानके प्रमाणका ज्ञान हो जाता है, इसलिए पुनः इसकी प्ररूपणा किसलिए करते है?

समाधान-- उससे नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण आता है इस बातका ज्ञान करा-नेके लिए उसकी प्ररूपणा करते हैं । यथा- अंतर्मुहूर्तकी यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो आहारकशरीरके साथ रहनेके कालके भीतर वे कितनी प्राप्त होंगी, इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर संख्यात नानागुणहानिशलाकायें प्राप्त होती हैं ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ २८० ॥

क्योंकि, उनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ २८१ ॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

को गुण० ? अंतोमुहुत्तं ।

तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्मइयसरीरत्ताए जं पढमसमए पवेसग्गं तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणं पलिदो० असंखे०भागं गंतूण दुगुणहीणं ॥२८२॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण णिसेगस्स दुगुणहीणत्तं कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो ।

एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ॥२८३॥

सुगममेवं ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-भागो ॥२८४॥

एत्थ वि पुव्वं व गुणहाणिअद्धाणादो णाणागुणहाणिसलागाओ उप्पादेदव्वाओ।

गुणकार क्या है ? गुणकारका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है ।

तैजसशरीरवाले और कार्मणशरीरवाले जीवके द्वारा तैजसशरीर और कार्मणशरीररूपसे प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उससे पल्यके असं-ख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर वह दुगुणा हीन होता है पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर वह दुगुणा हीन होता है ॥ २८२ ॥

शंका-पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थितिस्थान जाकर निषेक दुगुणा हीन होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-इसी सूत्रसे जाना जाता है । और एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि, ऐसा होने पर अनवस्थाका प्रसङ्ग आता है ।

इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे छयासठ सागर और कर्मस्थितिके अन्त तक दुगुणा हीन दुगुणा हीन होता हुआ गया है ॥ २८३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

एकप्रदेशगुणहानिस्थानांतर पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है और नानागुणहानिस्थानान्तर पल्यके प्रथमवर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥२८४॥

यहाँ पर भी पहलेके समान एकगुणहानिअध्वानसे नानागुणहानिशलाकायें उत्पन्न करनी

अथवा जहा वेयणाए णाणागुणहाणिसलागाणं गुणहाणीए च परूवणा कदा तहा एत्थ वि कायव्वा ।

णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ॥ २८५ ॥

पलिदोवमपढमवग्गमूलस्स असंखे०भागमेत्तादो ।

एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं असंखेज्जगुणं ॥ २८६ ॥

असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो । एवं परंपरोवणिधा समत्ता ।

चाहिए । अथवा जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें नानागुणहानिशलाकाओं और एक गुण-हानिकी प्ररूपणा की है उसप्रकार यहां भी करनी चाहिए ।

नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं ॥ २८५ ॥

क्योंकि, वे पल्यके प्रथमवर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

उनसे एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥ २८६ ॥

क्योंकि, वे पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

विशेषार्थ-- यह तो अनन्तरोपनिधाके प्रसंगसे ही बतला आये हैं कि प्रथम स्थितिमें जो द्रव्य मिलता है उससे द्वितीय स्थितिमें मिलनेवाला द्रव्य विशेष हीन होता है आदि । अब यहां परम्परोपनिधामें यह बतलाया गया है कि इस प्रकार आगे आगेकी प्रत्येक स्थितिमें विशेषहीन विशेषहीन होता हुआ वह द्रव्य कितना काल जानेपर आधा, कितना काल जानेपर चतुर्थांश और कितना काल जानेपर अष्टमांश आदि होकर रह जाता है । यहां बतलाया है कि औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरका द्रव्य उत्तरोत्तर अन्तर्मुहूर्त अन्तर्मुहूर्त काल जानेपर उत्तरोत्तर आधा आधा होता जाता है । तथा तैजसशरीर और कार्मणशरीरका द्रव्य उत्तरोत्तर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण काल जानेपर आधा आधा होता जाता है । इसका अभिप्राय यह है कि औदारिक, वैक्रियिक और आहारक शरीरकी अपेक्षा इस प्रकार निषेक रचना होती है जिससे वह प्रथम निषेकमें प्राप्त होनेवाले द्रव्यसे अन्तर्मुहूर्तके अन्तमें प्राप्त होनेवाला निषेक आधा रह जाता है । तथा इससे दूसरे अन्तर्मुहूर्तके अन्तमें प्राप्त होनेवाला निषेक उससे भी आधा रह जाता है । इस प्रकार इन तीन नोकर्मोंकी क्रमसे जो तीन पल्य, तेतीस सागर और अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट स्थिति बतलाई है उसमें इस एक द्विगुणहानिके कालका भाग देनेपर उस उस नोकर्मकी अलग अलग द्विगुणहानियोंका प्रमाण आ जाता है । यहां मूलमें एक द्विगुण-हानिस्थानान्तरसे एक गुणहानि ली गई है और इस एक द्विगुणहानिका अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देने पर जहां जितना लब्ध आता है वहां उतनी द्विगुणहानियां बतलाई गई हैं । इन्हींको नानाद्विगुणहानिस्थानान्तर कहते हैं । यतः तीन पल्य और तेतीस सागरमें अन्तर्मुहूर्तका भाग देनेपर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान प्राप्त होते हैं अतः औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरकी इतनी द्विगुणहानियां बतलाई हैं । तथा अन्तर्मुहूर्तमें अन्तर्मुहूर्तका भाग देनेपर संख्यात समय लब्ध आते हैं अतः आहारकशरीरकी संख्यात द्विगुणहानियां बतलाई हैं । तैजस और कार्मणशरीरकी एकद्विगुणहानि पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिए इसका

पदेसविरए त्ति तत्थ इमो पदेसविरअस्स सोलसवदिओ दंडओ कायव्वो भवदि ॥ २८७ ॥

कर्मपुद्गलप्रदेशो विरच्यते अस्मिन्निति प्रदेशविरचः कर्मस्थितिरिति यावत्। अथवा विरच्यते इति विरचः, प्रदेशश्चासौ विरचश्च प्रदेशविरचः, विरच्यमानकर्मप्रदेशा इति यावत्। तत्थ पढमत्थमस्सिदूण आउट्ठिदीए सोलसवदिओ दंडओ कायव्वो त्ति भणिदं होदि।

सव्वत्थोवा एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ २८८ ॥

जहण्णाउअबंधो[1] जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती णाम। भवस्स पढमसमयप्पहुडि जाव जहण्णाउअबंधस्स चरिमसमयो त्ति ताव एसा जहण्णिया णिव्वत्ति त्ति भणिदं होदि। आबाधा एत्थ किण्ण घेप्पदे ? ण, अप्पिदसरीरस्स तत्थ पदेसाभावादो। एइंदिया बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेएण चउव्विहा। तत्थ कस्स जहण्णिया णिव्वत्ती

छयासठ सागर और सत्तर कोडाकोडीसागरमें भाग देनेपर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान लब्ध आते हैं, इसलिए इनकी इतनी द्विगुणहानियां होती हैं। इस सब विधिका कथन परम्परोपनिधामें किया जाता है, क्योंकि, इसमें परस्परसे कहां कितनी हानि और वृद्धि होती है यह देखा जाता है।

इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई।

प्रदेशविरचका अधिकार है। उसमें प्रदेशविरचका यह सोलहपदवाला दण्डक करने योग्य है ॥ २८७ ॥

कर्मपुद्गलप्रदेश जिसमें विरचा जाता है अर्थात् स्थापित किया जाता है वह प्रदेशविरच कहलाता है। अभिप्राय यह है कि यहां पर प्रदेशविरचसे कर्मस्थिति ली गई है। अथवा विरच पदकी निरुक्ति है- विरच्यते अर्थात् जो विरचा जाता है उसे विरच कहते हैं। तथा प्रदेश जो विरच वह प्रदेशविरच कहलाता है। विरच्यमान कर्मप्रदेश यह उसका अभिप्राय है। इन दोनों अर्थोंमेंसे प्रथम अर्थकी अपेक्षा आयुस्थितिका सोलह पदवाला दण्डक करना चाहिए यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

एकेन्द्रिय जीवकी पर्याप्तनिर्वृत्ति सबसे स्तोक है २८८ ॥

जघन्य आयुबन्धकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति संज्ञा है। भवके प्रथम समयसे लेकर जघन्य आयुबन्धके अन्तिम समय तक यह जघन्य निर्वृत्ति होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका-- यहां पर आबाधाका ग्रहण किसलिए नहीं करते हैं ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, विवक्षित शरीरके वहां प्रदेश नहीं हैं।

शंका-- एकेन्द्रिय जीव बादर और सूक्ष्म तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे चार

---

[1] अ० प्रतौ 'जहण्णाउअबंधो' इति पाठो नोपलभ्यते।

घेप्पदि ? सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्ती घेत्तव्वा । बोण्णमपज्जत्ताणं जहण्णणिव्वत्तीओ किण्ण घेप्पंति? ण, तत्तो उवरि णिव्वत्तिट्ठाणाणं णिरंतरकमेण गमणाभावादो । बादरेइंदियस्स पज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्ती किण्ण घेप्पदे ? ण, सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्तीदो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण द्विदबादरेइंदियजहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीए एइंदियजहण्णणिव्वत्तिस्सविरोहादो । एसा जहण्णिया णिव्वत्ती किमाउअस्स जहण्णबंधो आहो जहण्णसंतमिदि ? जहण्णबंधो घेत्तव्वो ण जहण्णं संतं । कुदो ? जीवणियट्ठाणाणं विसेसाहियत्तण्णहाणुववत्तीदो ।१।।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ २८९ ॥

तं जहा- सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जो जहण्णाउअबंधो सो सव्वो एगं णिव्वत्तिट्ठाणं । तम्हि चेव समउत्तरं पबद्धे बिदियं णिव्वत्तिट्ठाणं । पुणो दुसमउत्तरं पबद्धे तदियं णिव्वत्तिट्ठाणं । एवं तिसमउत्तर-चदुसमउत्तराविकमेण णिरंतरं णिव्वत्तिट्ठाणाणि ताव लब्भंति जाव बावीसं वाससहस्साणि त्ति । एदेहिंतो उवरि ण लब्भंति, एइंदिएसु बावीसवाससहस्सेहिंतो अहियआउअबंधाभावादो । समऊणजहण्णणिव्वत्तीए बावीसवाससहस्सेसु अवणिदाए णिव्वत्तिट्ठाणाणं पमाणं होदि । एवं होदि त्ति कादूण

प्रकारके हैं । उनमेंसे किसकी जघन्य निर्वृत्ति ग्रहण करते हैं ?

समाधान-- सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्ति ग्रहण की जानी चाहिए ।

शंका-- दोनों अपर्याप्तकोंकी जघन्य निर्वृत्तियां क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, उनसे ऊपर निर्वृत्तिस्थानोंकी निरन्तर क्रमसे प्राप्तिका अभाव है ।

शंका-- बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्ति क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य निर्वृत्तिसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर स्थित हुई बादर एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिको एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्ति होनेमें विरोध है ।

शंका-- यह जघन्य निर्वृत्ति क्या आयुकर्मका जघन्य बन्ध है या जघन्य सत्त्व है ?

समाधान-- जघन्य बन्ध ग्रहण करना चाहिए जघन्य सत्त्व नहीं, क्योंकि, अन्यथा जीवनीयस्थान विशेष अधिक नहीं बन सकते ।

उससे निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ॥ २८९ ॥

यथा- सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकका जो जघन्य आयुबन्ध है वह सब एक निर्वृत्तिस्थान है । एक समय अधिक उसीका बन्ध होने पर दूसरा निर्वृत्तिस्थान होता है । पुनः दो समय अधिकका बन्ध होनेपर तीसरा निर्वृत्तिस्थान होता है । इस प्रकार तीन समय अधिक और चार समय अधिकके क्रमसे निरन्तर निर्वृत्तिस्थान बाईस हजार वर्षके प्राप्त होने तक लब्ध होते हैं । इनसे ऊपर नहीं प्राप्त होते, क्योंकि, एकेन्द्रियोंमें बाईस हजार वर्षसे अधिक आयुबन्ध नहीं होता । बाईस हजार वर्षोंमेंसे एक समय कम जघन्य निर्वृत्तिके घटा देनेपर निर्वृत्तिस्थानों-

अंतोमुहुत्तमेत्तजहण्णणिव्वत्तीए देसूणबावीसवस्ससहस्समेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेसु भागे हिदेसु संखेज्जाणि रूवाणि लब्भंति । जं लद्धं सो गुणगारो । २ ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ २९० ॥

बंधट्ठाणेहिंतो जीवणियट्ठाणाणं समत्तं मोत्तूण कुदो विसेसाहियत्तं ? ण भुंजमाणाउअस्स कदलीघादेण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो हेट्ठा जीवणियट्ठाणाणमुवलंभादो । भुंजमाणाउअस्स कदलीघादो अत्थि त्ति कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो, अण्णहा णिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो जीवणियट्ठाणाणं विसेसाहियत्ताणुववत्तीदो । एत्थ कदलीघादम्मि बे उवदेसा, के वि आइरिया जहण्णाउअम्मि आवलियाए असंखे०भागमेत्ताणि जीवणियट्ठाणाणि लब्भंति त्ति भणंति । तं जहा- पुव्वपरूविदसुहुमेइंदियपज्जत्तसव्वजहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणस्स कदलीघादो णत्थि । एवं समउत्तरदुसमउत्तराविणिव्वत्तीणं पि घादो णत्थि । पुणो एदम्हादो जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो संखेज्जगुणमाउअं बंधिदूण सुहुमपज्जत्तेसुववण्णस्स अत्थि कदलीघादो । पुण तं घादयमाणेण सव्वजहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणं समऊणं घादेदूण कदं ताधे तमेगं जीवणियट्ठाणं होदि । पुणो तेणेव विधिणा बिदियजीवेण घादेदूण दुसमऊणं जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणाउए ट्ठविदे

का प्रमाण होता है । इस प्रकार होता है ऐसा समझकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण जघन्य निर्वृत्तिका कुछ कम बाईस हजार वर्षप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंमें भाग देनेपर संख्यात अंक लब्ध आते हैं । यहाँ जो लब्ध आया है वह गुणकार है ।

उनसे जीवनीय स्थान विशेष अधिक हैं । २९० ।

शंका-- जीवनीय स्थान बन्धस्थानोंके समान न होकर विशेष अधिक कैसे हैं ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, भुज्यमान आयुका कदलीघात सम्भव होनेसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे नीचे जीवनीय स्थान उपलब्ध होते हैं ।

शंका-- भुज्यमान आयुका कदलीघात होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- इसी सूत्रसे जाना जाता है, अन्यथा निर्वृत्तिस्थानोंसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक नहीं बन सकते ।

यहाँ कदलीघातके विषयमें दो उपदेश पाये जाते हैं । कितने ही आचार्य जघन्य आयुमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवनीय स्थान लब्ध होते हैं ऐसा कहते हैं । यथा- पहले कहे गये सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी सबसे जघन्य आयुके निर्वृत्तिस्थानका कदलीघात नहीं होता । इसी प्रकार एक समय अधिक और दो समय अधिक आदि निर्वृत्तियोंका भी घात नहीं होता । पुनः इस जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे संख्यातगुणी आयुका बन्ध करके सूक्ष्म पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुए जीवका कदलीघात होता है । पुनः उसका घात करनेवाले जीवने आयुके सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानका घात करके उसे एक समय कम किया तब वह एक जीवनीयस्थान होता है । पुनः उसी विधिसे दूसरे जीवके द्वारा घात करके जघन्य निर्वृत्तिस्थानरूप आयुके दो समय कम स्थापित करने

बिदियं जीवणियट्ठाणं होदि । पुणो अण्णेण विहाणेण घादेदूण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणे तिसमऊणे कदे तदियं जीवणियट्ठाणं होदि । एवमुवरिमआउअवियप्पे घादिय जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं चदुसमऊण-पंचसमऊणादिकमेण ओदारेदव्वं जाव आवलियाए असंखे०भागमेत्तजीवणियट्ठाणाणि जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणे लद्धाणि त्ति । एत्थ एत्तियाणि चेव जीवणियट्ठाणाणि लब्भंति णो वड्ढिमाणि, जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणम्मि आवलिअसंखे०भागादो अधिओ घादो णत्थि त्ति गुरूवएसादो । तेण णिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो जीवणियट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागेण विसेसाहियाणि । जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो हेट्ठा जीवणियट्ठाणाणि चेव, जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणाणि, आउअबंधवियप्पाभावादो । उवरि णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च सरिसाणि, जीवाणं बंधाउअमेत्तकालं जीविदूण अण्णत्थ गमणुवलंभादो* ।

के वि आइरिया एवं भणंति- जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणमुवरिमआउअवियप्पेहि वि घादं गच्छदि । केवलं पि घादं गच्छदि । णवरि उवरिमआउअवियप्पेहि जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं घादिज्जमाणं समऊणदुसमयऊणादिकमेण होयमाणं☆ ताव गच्छदि जाव जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जे✡ भागे ओदरिय संखे०भागो सेसो त्ति । जदि पुण केवलं जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं चेव घादेदि तो तत्थ दुविहो कदलीघादो होदि- जहण्णओ

पर दूसरा जीवनीयस्थान होता है । पुनः इस विधिसे घात कर जघन्य निर्वृत्तिस्थानके तीन समय कम करने पर तीसरा जीवनीयस्थान होता है । इस प्रकार उपरिम आयुविकल्पको घात कर तीन जघन्य निर्वृत्तिस्थानको चार समय और पाँच समय आदिके क्रमसे कम करते हुए जघन्य निर्वृत्तिस्थानमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवनीयस्थानोंके प्राप्त होने तक उतारना चाहिए । यहाँ पर इतने ही जीवनीयस्थान प्राप्त होते हैं अधिक नहीं, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्तिस्थानमें आवलिके असंख्यातवें भागसे अधिक स्थानोंका घात नहीं होता ऐसा गुरुका उपदेश है । इसलिए निर्वृत्तिस्थानोंसे जीवनीयस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण विशेष अधिक हैं । जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे नीचे जीवनीयस्थान ही हैं निर्वृत्तिस्थान नहीं, क्योंकि, वहाँ आयुबन्धके विकल्पोंका अभाव है । ऊपर निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान सदृश हैं, क्योंकि, जीवोंका बँधी हुई आयुमात्र काल तक जी कर अन्यत्र गमन पाया जाता है ।

कितने ही आचार्य इस प्रकार कथन करते हैं- जघन्य निर्वृत्तिस्थान उपरिम आयुविकल्पोंके साथ भी घातको प्राप्त होता है और केवल भी घातको प्राप्त होता है । इतनी विशेषता है कि उपरिम आयुविकल्पोंके साथ घातको प्राप्त होता हुआ जघन्य निर्वृत्तिस्थान एक समय और दो समय आदिके क्रमसे कम होता हुआ वह तब तक जाता है जब तक जघन्य निर्वृत्तिस्थानका संख्यात बहुभाग उतर कर संख्यातवें भागप्रमाण शेष रहता है । यदि पुनः केवल जघन्य निर्वृत्तिस्थानको ही घातता है तो वहाँ दो प्रकारका कदलीघात होता है- जघन्य और उत्कृष्ट ।

---

* ता० प्रतौ ' गमणाणुवलंभादो ' इति पाठः । ☆ प्रतिषु ' जियमाणं ' इति पाठः ।
✡ अ० का० प्रत्योः ' असंखेज्जे ' इति पाठः ।

उक्कस्सओ चेदि। सुट्ठु जदि थोवं घादेदि तो जहण्णियणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जे भागे जोविदूण सेससंखे०भागस्स संखेज्जे भागे संखेज्जदिभागं वा घादेदि। जदि पुण बहुअं घादेदि तो जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणसंखे०भागं जोविदूण संखेज्जे भागे कदलीघादेण घादेदि। तं जहा– एगो तिरिक्खो मणुसो वा सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णाउअं बंधिदूण कालं करिय सुहुमणिगोदपज्जत्तएसुववज्जिय सव्वलहुएण कालेण चदुहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो होदूण एगयारेण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेसु भागेसु जीविदूणप्पहुमाणेण कदलीघादेण घादिदूण ट्ठविदेसु तमेगमपुणरुत्तं जीवणियट्ठाणं होदि। पुणो अण्णो जीवो सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं समउत्तरं बंधिदूणुप्पज्जिय कदलीघादेण पुव्वुत्तजीवणियट्ठाणादो समउत्तरं काऊण अच्छिदो ताधे तं बिदियमपुणरुत्तं जीवणियट्ठाणं होदि। पुणो तदियजीवेण सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णाउअं दुसमउत्तरबंधेण पुव्वुत्तसव्वजहण्णघादट्ठाणस्सुवरि कदलीघादेण दुसमउत्तरे जीवणियट्ठाणे कदे तं तदियमपुणरुत्तं जीवणियट्ठाणं होदि। एवं हेट्ठदो उवरि तिसमउत्तरचदुसमउत्तरादिकमेण णाणाजीवे अस्सिदूण णेयव्वं जाव समऊणसव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं ति। एवं कदे अंतोमुहुत्तूणबावीसवस्ससहस्समेत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणमुवरि सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जा भागा पविसिदूण जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि भवंति। पुव्वुत्तविसेसादो संपहिय विसेसो असंखेज्जगुणो। कुदो? जहण्ण–

यदि अति स्तोकका घात करता है तो जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहु भाग तक जीवित रह कर शेष संख्यातवें भागके संख्यात बहुभाग या संख्यातवें भागका घात करता है। यदि पुनः बहुतका घात करता है तो जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यातवें भागप्रमाण काल तक जीवित रह कर संख्यात बहुभागका कदलीघातद्वारा घात करता है। यथा– एक तिर्यञ्च या मनुष्यके सूक्ष्म निगोद पर्याप्तककी सबसे जघन्य आयुका बन्ध करके और मर कर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हो कर सबसे जघन्य कालके द्वारा चार पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो कर एक बारमें जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागका कदलीघातसे घात कर जीवित कालप्रमाण स्थापित करने पर वह एक अपुनरुक्त जीवनीयस्थान होता है। पुनः अन्य जीव सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकके सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानको एक समय अधिक बाँध कर और वहां उत्पन्न होकर कदलीघातके द्वारा पूर्वोक्त जीवनीय स्थानसे इसे एक समय अधिक करके स्थित हुआ तब वह दूसरा अपुनरुक्त जीवनीयस्थान होता है। पुनः सूक्ष्म निगोद पर्याप्तककी सबसे जघन्य आयुका बंध करनेवाले तीसरे जीवके द्वारा पूर्वोक्त सबसे जघन्य घातस्थानके ऊपर कदलीघातके द्वारा दो समय अधिक जीवनीयस्थानके करने पर वह तीसरा अपुनरुक्त जीवनीयस्थान होता है। इस प्रकार नीचेसे ऊपर तीन समय अधिक और चार समय अधिक आदिके क्रमसे नाना जीवोंका आश्रय लेकर एक समय कम सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। ऐसा करने पर अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्षप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागका प्रवेश कराकर जीवनीयस्थान विशेष अधिक होते हैं। पूर्वोक्त विशेषसे साम्प्रतिक विशेष

णिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेसु भागेसु संखेज्जावलियाणमुवलंभादो । एत्थ पढमवक्खाणं ण भद्दयं, खुद्दाभवग्गहणादो । एइंदियस्स जहण्णिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा त्ति सुत्तेण सह विरुद्धत्तादो । ३ ।।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ।। २९१ ।।

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण वा जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेहि भागेहि वा ऊणसव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणमेत्तेण । ४ ।।

सव्वत्थोवा सम्मुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।।२९२।।

सम्मुच्छिमपज्जत्ता बादरेइंदियपज्जत्त-बेइंदियपज्जत्त-तेइंदियपज्जत्त-चउरिंदियपज्जत्त-असण्णिपंचिंदियपज्जत्त-सण्णिपंचिंदियपज्जत्तभेदेण छव्विहा होंति, तत्थ कस्सेवं गहणं छण्णं पि गहणं कायव्वं, विरोहाभावादो । एदेसिं अपज्जत्ताणं गहणं ण कायव्वं, पज्जत्तणिद्देसेण ओसरिदत्तादो । किमट्ठमपज्जत्ता ओसारिज्जंति ? तेसिं णिव्वत्तिट्ठाणाणं णिरंतरवड्ढीए अभावादो । तेण सम्मुच्छिमपज्जत्तजहण्णणिव्वत्ति त्ति भणिदे छण्णं सम्मुच्छिमपज्जत्ताणमंतोमुहुत्तमेत्तसव्वजहण्णाउआणं गहणं कायव्वं । ५ ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ।। २९३ ।।

असंख्यातगुणा है, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहु भागोंमें संख्यात आवलियाँ उपलब्ध होती हैं। यहाँ पर प्रथम व्याख्यान ठीक नहीं है, क्योंकि, उसमें क्षुल्लक भवका ग्रहण किया है। तथा एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है इस सूत्रके वह विरुद्ध पड़ता है।

उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ।। २९१ ।।

कितनी अधिक है ? आवलिके असंख्यातवें भागसे या जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागसे न्यून जो सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान है उतनी वह अधिक है।

सम्मूर्च्छन जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति सबसे स्तोक है ।। २९२ ।।

शंका-सम्मूर्छन पर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, द्वीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त और संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तके भेदसे छह प्रकारके हैं। उनमेंसे किसका यह ग्रहण किया है ?

समाधान-छहोंका ही ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, ऐसा करनेमें कोई विरोध नहीं है।

मात्र इनके अपर्याप्तकोंका ग्रहण नहीं करना चाहिए, क्योंकि, पर्याप्त पदके निर्देश द्वारा उनको अलग कर दिया है।

शंका-अपर्याप्तकोंको किसलिए अलग किया है ?

समाधान-क्योंकि, उनके निर्वृत्तिस्थानोंकी निरन्तर वृद्धिका अभाव है।

इसलिए सम्मूर्च्छन पर्याप्तकोंकी जघन्य निर्वृत्ति ऐसा कहनेपर छह सम्मूर्छन पर्याप्तकोंकी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण सबसे जघन्य आयुका ग्रहण करना चाहिए।

उससे निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ।। २९३ ।।

अप्पप्पणो सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्सुवरि समउत्तराधिकमेण णिरंतरणिव्वत्तिट्ठाणाणि ताव लब्भंति जाव एइंदिएसु बावीसवाससहस्साणि, बेइंदिएसु बारसवासाणि तेइंदिएसु एगूणवण्ण रादिंदियाणि चउरिंदिएसु छम्मासा सण्णि-असण्णिपंचिंदिएसु पुव्वकोडि त्ति । तदो अप्पप्पणो जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणे समऊणे अप्पप्पणो उक्कस्साउअम्मि सोहिदे णिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति । पुणो अप्पप्पणो जहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जावलियमेत्ताए अप्पप्पणो णिव्वत्तिट्ठाणेसु भागे हिदेसु संखेज्जरूवाणि लब्भंति । जं लद्धं सो गुणगारो । ६ । ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ २९४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण वा अप्पप्पणो सव्वजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि भागे हिदे वा☼ । एत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । ७ । ।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ २९५ ॥

केत्तियमेत्तेण ? अप्पप्पणो सव्वजहण्णजीविदमेत्तेण । ८ । ।

सव्वत्थोवा गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।२९६।

गब्भोवक्कंतियसव्वजहण्णणिव्वत्तीए अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो । ९ । ।

अपने अपने सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे निरन्तर निर्वृत्तिस्थान एकेन्द्रियोंमें बाईस हजार वर्षप्रमाण, द्वीन्द्रियोंमें बारह वर्षप्रमाण, त्रीन्द्रियोंमें उनचास रात-दिनप्रमाण, चतुरिन्द्रियोंमें छह महिनाप्रमाण तथा संज्ञी और असंज्ञी पञ्चेन्द्रियोंमें पूर्वकोटि वर्षप्रमाण होनेतक प्राप्त होते हैं । तदनन्तर अपने अपने एक समय कम जघन्य निर्वृत्तिस्थानको अपनी अपनी उत्कृष्ट आयुमेंसे कम करनेपर निर्वृत्तिस्थान होते हैं । पुनः अपनी अपनी संख्यात आवलिप्रमाण जघन्य निर्वृत्तिका अपने अपने निर्वृत्तिस्थानोंमें भाग देनेपर संख्यात अंक लब्ध आते हैं । यहाँ जो लब्ध आया है वह गुणकार है ।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं ॥ २९४ ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । अथवा अपनी अपनी जघन्य निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं । यहाँ कारणका कथन पहलेके समान करना चाहिए ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है । ॥ २९५ ॥

कितनी अधिक है ? अपने अपने सबसे जघन्य जीवित रहनेका जो प्रमाण है उतनी अधिक है ।

गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति सबसे स्तोक है ॥ २९६ ॥

क्योंकि, गर्भोपक्रान्त जीवकी सबसे जघन्य निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमा है ।

☼ ता०प्रतौ ' भागेहि (दे) वा ' अ०प्रतौ ' भागे वा ' का०प्रतौ ' भागेहि वा ' इति पाठः ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ २९७ ॥

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०भागो। कुदो ? जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणादो समउत्तराविकमेण णिरंतरं जाव तिण्णि पलिदोवमाणि त्ति णिव्वत्तिट्ठाणाणं वुड्ढि-दंसणादो। पुव्वकोडीए उवरि कथं णिरंतरवड्ढी लब्भदे? ण,उस्सप्पिणिकालमस्सि-दूण भरहएरावदमणुस्सेसु पुव्वकोडीए उवरि समउत्तरादिकमेण णिरंतरं तिण्णि पलिदोवमाणि वुड्ढिदंसणादो । १०१ ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ २९८ ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागेण जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणस्स संखेज्जेहि भागेहि वा। एत्थ कारणं जाणिय वत्तव्वं । ११ ।

आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ २९९ ॥

केत्तियमेत्तेण? कदलीघादजहण्णिदसव्वजहण्णजीवणकालमेत्तेण । १२ ।

सव्वत्थोवा उववादिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ३०० ॥

कुदो? दसवाससहस्सपमाणत्तादो । १३ ।

उससे निर्वृत्तिस्थान असंख्यातगुणे हैं। २९७ ।

गुणकारका प्रमाण कितना है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकारका प्रमाण है, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे लेकर एक समय अधिक आदिके क्रमसे निरन्तर तीन पल्य प्रमाण कालतक निर्वृत्तिस्थानोंकी वृद्धि देखी जाती है।

शंका--पूर्वकोटि कालके ऊपर निरन्तर वृद्धि कैसे सम्भव है ?

समाधान--नहीं, क्योंकि, उत्सर्पिणी कालका आश्रय लेकर भरत और ऐरावत क्षेत्रके मनुष्योंमें पूर्वकोटिके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे तीन पल्यप्रमाण कालतक निरन्तर वृद्धि देखी जाती है।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं। २९८ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । अथवा जघन्य निर्वृत्तिस्थानके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं। यहाँ पर कारणका कथन जानकर करना चाहिए।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है । २९९ ।

कितनी अधिक है ? कदलीघातके कारण जो सबसे जघन्य जीवनकाल उत्पन्न होता है उतनी अधिक है।

औपपादिक जन्मवालेकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति सबसे स्तोक है। ३०० ।

क्योंकि, वह दस हजार वर्षप्रमाण है।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ३०१ ॥

कुदो ? दसवस्ससहस्साणमुवरि समउत्तराविकमेण णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च सरिसाणि होदूण गच्छंति जावुक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि त्ति । एत्थ जीवणियट्ठाणाणं णिव्वत्तिट्ठाणाणं च णिरंतरवड्ढी कथं लब्भदे ? ण, दसवस्ससहस्समादिं कादूण समउत्तराविकमेण बंधेण जाव तेत्तीससागरोवमाणि त्ति वड्ढीए विरोहाभावादो, ओवट्टणाघादेण आउअं घादिय देवेसुप्पज्जमाणे अस्सिदूण णिव्वत्तिट्ठाणाणं जीवणियट्ठाणाणं च णिरंतरवड्ढीए विरोहाभावादो च । णिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो जीवणियट्ठाणाणं विसेसाहियत्तमेत्थ किण्ण परूविदं ? ण, देवणेरइएसु आउअस्स कदलीघादाभावादो तत्थ कदलीघादो णत्थि त्ति कुदो णव्वदे ? णिव्वत्ति-जीवणियट्ठाणाणि तुल्लाणि त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । को गुणगारो ? पलिदो० असंखेज्ज—

विभागपडिभागिओ । [आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ ३०२ ॥

उसमें निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं ॥ ३०१ ॥

क्योंकि, दस हजार वर्षके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान समान होकर तेतीस सागरकाल तक जाते हैं ।

शंका— यहाँपर जीवनीयस्थानोंकी और निर्वृत्तिस्थानोंकी निरन्तर वृद्धि कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, दस हजारवर्षसे लेकर एक समय अधिक आदिके क्रमसे बन्धके द्वारा तेतीस सागर काल तक वृद्धि होनेमें कोई विरोध नहीं है और अपवर्तनाघातके द्वारा आयुका घात करके देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका आश्रय लेकर निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थानोंकी निरन्तर वृद्धि होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका— निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा जीवनीयस्थान यहां विशेष अधिक क्यों नहीं कहे हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, देव और नारकियोंमें आयुका कदलीघात नहीं होता ।

शंका— देवों और नारकियोंमें आयुका कदलीघात नहीं होता यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— यहाँ निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान तुल्य हैं यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है; इससे जाना जाता है कि देवों और नारकियोंमें कदलीघात नहीं होता ।

गुणकार क्या है ? पल्यसे असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥ ३०२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणदसवस्ससहस्समेत्तेण । १६ ।

एवं सत्थाणेण सोलसवदियमहादंडओ समत्तो ।

एत्थ अप्पाबहुअं ॥ ३०३ ॥

संपहि सत्थाणेण सोलसवदियअप्पाबहुअं कादूण परत्थाणेण सोलसवदिय-अप्पाबहुअं भणामि त्ति भणिदं होदि ।

सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं ॥ ३०४ ॥

एत्थ खुद्दाभवग्गहणं दुविहं- णिसेयखुद्दाभवग्गहणं घादखुद्दाभवग्गहणं चेदि ।

कितनी अधिक है ? एक समय कम दस हजार वर्षप्रमाण अधिक है ।

विशेषार्थ-- यहाँ पर प्रदेशविरच अधिकारके प्रसंगसे निर्वृत्तिस्थानों और जीवनीय-स्थानोंका सांगोपांग विचार किया गया है । एक जीवके जितनी आयुका बन्ध होता है उसकी निर्वृत्तिस्थान संज्ञा है और एक भवके ग्रहणके समयसे लेकर जितने काल तक जीवित रहता है उसकी जीवनीयस्थान संज्ञा है । यह एकांत नियम नहीं है कि जिस भवकी जितनी आयुका बंध होता है वह उस भवके ग्रहणके समय उतनी नियमसे रहती है । यदि आयुबन्धके भवमें उसका अपवर्तन न हो या द्वितीयादि त्रिभागोंमें अधिक आयुका बंध न हो तो भवग्रहणके समय उतनी ही रहती है और यदि पूर्वोक्त क्रिया हो लेती है तो वह घट बढ भी जाती है । इस प्रकार भवग्रहण करनेके बाद यदि कदलीघात न हो तो भवग्रहणके समय जितनी आयु होती है उतने काल तक यह जीव जीवित रहता है, अन्यथा कदलीघात होनेसे जीवन काल अल्प हो जाता है, इसलिए यहाँ निर्वृत्तिस्थानों और जीवनीयस्थानोंका अलग अलग विचार करके ये कहाँ जघन्य और उत्कृष्ट किस प्रमाणमें प्राप्त होते हैं तथा इनका परस्परमें अल्पबहुत्व कितना है आदि बातोंका यहाँ सांगोपांग विचार किया गया है । यहाँ एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य निर्वृत्ति और जघन्य जीव-नीयस्थानका स्पष्टीकरण करते हुए दो मतोंका उल्लेख किया है । उनका आशय इतना ही है कि एक मतके अनुसार जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिका जितना काल है उसमेंसे आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण कालका घात हो कर जघन्य जीवनीय स्थान प्राप्त होता है और दूसरे मतके अनुसार यह घात काल संख्यात आवलि प्रमाण तक हो सकता है । किन्तु इतना विशेष जानना चाहिए कि जो जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिको लेकर उत्पन्न होता है उसके यह कदलीघात हो कर जघन्य जीवनी-यस्थान नहीं प्राप्त होता किन्तु जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तिस्थानसे अधिक आयु लेकर उत्पन्न होनेवाले जीवके ही यह जघन्य जीवनीयस्थान प्राप्त होता है । विशेष स्पष्टीकरण मूलमें किया ही है ।

इस प्रकार स्वस्थान की अपेक्षा सोलह पदवाला महादण्डक समाप्त हुआ ।

यहाँ अल्पबहुत्व । ३०३ ।

स्वस्थानकी अपेक्षा सोलह पदवाले अल्पबहुत्वका कथन कर अब परस्थानकी अपेक्षा सोलह पदवाले अल्पबहुत्वका कथन करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

क्षुल्लकभवग्रहण सबसे स्तोक है । ३०४ ।

यहाँपर क्षुल्लकभवग्रहण दो प्रकारका है- निषेक क्षुल्लकभवग्रहण और घात क्षुल्लक

तत्थ सुहुमेइंदियअपज्जत्तसंजुत्तो जहण्णाउअबंधो णिसेयखुद्दाभवग्गहणं णाम । णिसेयखुद्दाभवग्गहणादो आवलि० असंखे० भागेणूणजीवणियकालो णिसेयखुद्दाभवग्गहणस्स संखेज्जे भागे घाविदूण ट्ठविदसंखे० भागो वा घादखुद्दाभवग्गहणं । सव्वजहण्णजीवणियकालो घादखुद्दाभवग्गहणं, होदि त्ति भणिदं होदि । एत्थ दोसु खुद्दाभवग्गहणेसु कं घेप्पदे ? घादखुद्दाभवग्गहणं, जहण्णणिव्वत्तीए खुद्दाभवग्गहणत्ताणुववत्तीदो । भवग्गहणं णाम जीवणियकालो सो च खुद्दओ जहण्णओ कवलीघादम्हि चेव होदि ण बंधे, णिव्वत्तीए जहण्णियाए तत्तो संखेज्जगुणत्तदंसणादो । एवं* घादखुद्दाभवग्गहणं सत्तण्णमपज्जत्तजीवसमासाणं सरिसं होदूण संखेज्जावलियमेत्तं । तं कथं णव्वदे ? जुत्तीदो । तं जहा-

तिण्णिसहस्सा सत्तसदाणि तेहत्तरिं च उस्सासा ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागरजी महाराज सत्तहसे चेव मणुयाणं ३७७३ ॥१९॥

एवे मुहुत्तुस्सासे ट्ठविय पुणो एगुस्सासब्भंतरसंखेज्जावलियाहि गुणिदे एगमुहुत्तावलियाओ होंति ।

तिण्णि सदा छत्तीसा छावट्ठिसहस्स चेव मरणाणि ।
अंतोमुहुत्तकाले तावदिया चेव खुद्दभवा ॥२०॥

भवग्रहण । उनमेंसे जो सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तसे युक्त जघन्य आयुका बन्ध है वह निषेक क्षुल्लकभवग्रहण है । तथा निषेकक्षुल्लकभवग्रहणसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कम जो जीवनीय काल है वह अथवा निषेकक्षुल्लकभवग्रहणके संख्यात बहुभागका घात करके स्थापित किया गया जो संख्यातवाँ भाग है वह घातक्षुल्लकभवग्रहण है । सबसे जघन्य जीवनीय काल-प्रमाण घातक्षुल्लकभवग्रहण है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका- यहां दो क्षुल्लकभवग्रहणोंमेंसे किसका ग्रहण किया है ?

समाधान- घातक्षुल्लकभवग्रहणका ग्रहण किया है, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्ति क्षुल्लक-भवग्रहणरूप नहीं बन सकती ।

पु. 261

भवग्रहणका नाम जीवनीयकाल है और वह क्षुल्लक तथा जघन्य कदलीघातके होने पर ही होता है, बन्धके होनेपर नहीं, क्योंकि, जघन्य निर्वृत्ति उससे संख्यातगुणी देखी जाती है । यह घातक्षुल्लकभवग्रहण सात अपर्याप्त जीवसमासोंका समान होकर संख्यात आवलि-प्रमाण है ।

शंका- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- युक्तिसे । यथा-

सभी मनुष्योंके तीन हजार सातसौ तिहत्तर उच्छ्वासोंका एक मुहूर्त होता है । १९ ।

एक मुहूर्तके इन उच्छ्वासोंको स्थापित करके पुनः एक उच्छ्वासके भीतर स्थित संख्यात आवलियोंसे गुणित करनेपर एक मुहूर्तकी आवलियाँ होती हैं ।

अन्तर्मुहूर्तके कालके भीतर छयासठ हजार तीनसौ छत्तीस मरण और उतने ही क्षुल्लक भवग्रहण होते हैं ॥ २० ॥

---

* ता०प्रतौ ' एव ' इति पाठः ।

इदि वयणादो एगमुहुत्तब्भंतरे एत्तियाणि खुद्दाभवग्गहणाणि होंति ६६३३६। एत्तियमेत्तभवग्गहणेसु जदि पुव्वुत्तसंखेज्जावलियाओ लब्भंति तो एगखुद्दाभवग्गहणम्हि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संखेज्जावलियाओ लब्भंति, एइंदियाणं संखेज्जुस्सासेहि एगखुद्दाभवग्गहणस्स णिप्पत्तीदो। तेणेदं सव्वत्थोवं होदि ।१।।

एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा । ३०५।

एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती णाम सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती। एसा खुद्दाभवग्गहणादो संखेज्जगुणा। कुदो ? खुद्दाभवग्गहणादो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स जहण्णणिव्वत्ती संखेज्जगुणा। तस्स चेव सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णिया णिव्वत्ती तत्तो संखेज्जगुणा त्ति गुरुवदेसादो ।२।।

समुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा ।३०६।

कुदो ? बादरेइंदियपज्जत्तयस्स सव्वजहण्णणिव्वत्तीए गहणादो। का णिव्वत्ती णाम ? कदलीघादेण विणा जीवणकालो आउबंधद्धाणंतब्भूदो* जीवणियट्ठाणं पुण णिव्वत्ती ण होदि, तस्स बंधट्ठाणेसु अंतब्भावणियमाभावादो ।३।।

इस वचनके अनुसार एक मुहूर्तके भीतर इतने क्षुल्लकभवग्रहण होते हैं– ६६३३६। इतने भवग्रहणोंमें यदि पूर्वोक्त संख्यात आवलियां लब्ध आती हैं तो एक क्षुल्लकभवग्रहणमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार फलराशिसे इच्छाराशिको गुणित कर प्रमाणराशिका भाग देने पर संख्यात आवलियाँ प्राप्त होती हैं, क्योंकि, एकेन्द्रियोंके संख्यात उच्छ्वासोंसे एक क्षुल्लकभवग्रहणकी उत्पत्ति होती है, इसलिए यह सबसे स्तोक है।

उससे एकेन्द्रिय जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है। ३०५।

एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति इसका अर्थ है सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति। यह क्षुल्लकभवग्रहणसे संख्यातगुणी है, क्योंकि, क्षुल्लकभवग्रहणसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है। उससे उसी सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवकी उत्कृष्ट निर्वृत्ति संख्यातगुणी है। उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ऐसा गुरुका उपदेश है।

उससे सम्मूर्च्छन जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है। ३०६।

क्योंकि, यहाँ बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवकी सबसे जघन्य निर्वृत्तिका ग्रहण किया है।

शंका–[निर्वृत्ति किसे कहते हैं ?

समाधान– कदलीघातके बिना आयुकर्मके बन्धकालके भीतर जो जीवनकाल है उसे निर्वृत्ति कहते हैं।] 5, 5, 52.

परंतु जीवनीयस्थान निर्वृत्ति नहीं होता, क्योंकि, उसका बंधस्थानोंमें अंतर्भाव होनेका

---

* ता० प्रतौ '–बंधट्ठाणंतब्भूदो' इति पाठः ।

गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुण ।३०७।

गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णपज्जत्तणिव्वत्ती णाम गब्भजाणं णिव्वाघादेण बद्ध-जहण्णाउअकालमेत्तजीविदं । कुदो एदिस्से संखेज्जगुणत्तं ? सम्मुच्छिमेहिंतो गब्भजाणं पुधभूदजादिदंसणादो । ४ ।।

ओववादिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा ॥३०८॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । कुदो ? अंतोमुहुत्तेण वस्सस्सहस्सेसु ओव-ट्टिदेसु संखेज्जरूवोवलंभादो । ५ ।।

एइंदियस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥३०९॥

को गुण० ? सादिरेयदोरूवाणि । कुदो ? दसवस्ससहस्सेहि अंतोमुहुत्तूणबा-वीसवस्ससहस्सेसु ओवट्टिदेसु दोहि रूवेहि सह किंचूणपंचमभागस्स उवलंभादो । ६ ।।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥३१०॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागेण एइंदियजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि भागेहि वा । ७ ।। मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

कोई नियम नहीं है ।

उससे गर्भोपक्रान्तिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ।३०७।

गर्भोपक्रान्तिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति इसका अर्थ है गर्भज जीवोंका बद्ध जघन्य आयुके काल तक निर्व्याघातरूपसे जीवित रहना ।

शंका- यह संख्यातगुणी कैसे है ?

समाधान- क्योंकि, सम्मूर्च्छन जीवोंसे गर्भज जीवोंकी पृथक् जाति देखी जाती है ।

उससे औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ॥३०८॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्त कालसे दस हजार वर्षके भाजित करने पर संख्यात अंक उपलब्ध होते हैं ।

उससे एकेन्द्रिय जीवके निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं ॥३०९॥

गुणकार क्या है ? साधिक दो अंक गुणकार है, क्योंकि, दस हजार वर्षमें अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्षके भाजित करनेपर दो और कुछ कम पाँचवां भाग उपलब्ध होता है ।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं ॥३१०॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृ-त्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं ।

ॐ अ० का० प्रत्योः 'अंतोमुहुत्तेण बावीस' इति पाठः]

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ ३११ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सव्वुक्कस्सकदलीघादेण घादिदूण एइंदियाणं जहण्णजीविएण समऊणेण । ८ ।।

सम्मुच्छिमस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ॥ ३१२ ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । कुदो ? बावीसवस्ससहस्सेहि अंतोमुहुत्तूण-पुव्वकोडीए भागे हिदाए संखेज्जरूवोवलंभादो । ९ ।।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ ३१३ ॥

केत्तियमेत्तेण? आवलि० असंखे०भागेण सम्मुच्छिमजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि भागेहि वा । १० ।।

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥ ३१४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सम्मुच्छिमजहण्णजीविएण समऊणेण । ११ ।।

गब्भोवक्कंतियस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ।३१५।

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो ? पुव्वकोडीए अंतोमुहुत्तूणतिण्णि पलिदोवमेसु ओवट्टिदेसु पलिदो० असंखे०भागुवलंभादो । १२ ।।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है । ३११ ।

कितनी अधिक है ? सबसे उत्कृष्ट कदलीघातसे घात कर एकेन्द्रियोंका जो एक समय कम जघन्य जीवित है उतनी अधिक है ।

उससे सम्मूर्च्छन जीवके निर्वृत्तिस्थान संख्यातगुणे हैं । ३१२ ।

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, बाईस हजार वर्षसे अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटिके भाजित करने पर संख्यात अङ्क उपलब्ध होते हैं ।

उनसे जीवनीयस्थान विशेष अधिक हैं । ३१३ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या सम्मूर्च्छन जीवकी जघन्य निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं ।

उससे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है । ३१४ ।

कितनी अधिक है ? सम्मूर्च्छन जीवके एक समय कम जघन्य जीवितका जितना प्रमाण है तत्प्रमाण अधिक है ।

उससे गर्भोपक्रान्त जीवके निर्वृत्तिस्थान असंख्यातगुणे हैं । ३१५ ।

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, पूर्वकोटिका अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्यमें भाग देने पर पल्यका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है ।

जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥३१६॥

के० मेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागेण सव्वजहण्णणिव्वत्तीए संखेज्जेहि भागेहि वा । १३ ॥

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥३१७॥

के० मेत्तेण ? समऊणजहण्णजीविएण समऊणेण । १४ ॥

उववादिमस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणीयट्ठाणाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि ॥३१८॥

को० गुण ? संखेज्जा समया । कुदो ? तीहि पलिदोवमेहि समऊणवसवस्स-सहस्सेहि परिहीणतेत्तीससागरोवमेसु ओवट्टिदेसु संखेज्जरूवोवलंभादो । १५ ॥

उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ॥३१९॥

के० मेत्तेण ? समऊणवसवस्ससहस्समेत्तेण । १६ ॥

एवं परत्थाणेण सोलसवदियदंडओ समत्तो ।

तस्सेव पदेसविरइयस्स इमाणि छअणुयोगद्दाराणि–जहण्णिया अग्ग-ट्ठिदी अग्गट्ठिदिविसेसो अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी

उनसे जीवनीय स्थान विशेष अधिक हैं ॥३१६॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण या सबसे जघन्य निर्वृत्तिके संख्यात बहुभागप्रमाण अधिक हैं ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक हैं ॥३१७॥

कितनी अधिक है ? एक समय कम सबसे जघन्य जीवितका जितना प्रमाण है तत्प्रमाण अधिक है ।

उससे औपपादिक जीवके निर्वृत्तिस्थान और जीवनीयस्थान दोनों ही तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं ॥३१८॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, तीन पल्यका एक समय कम दस हजार वर्षसे हीन तेतीस सागरमें भाग देने पर संख्यात अंक उपलब्ध होते हैं ।

उनसे उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥३१९॥

कितनी अधिक है ? एक समय कम दस हजार वर्षप्रमाण अधिक है ।

इस प्रकार परस्थानकी अपेक्षा सोलह पदवाला दण्डक समाप्त हुआ ।

उसी प्रदेशविरचके ये छह अनुयोगद्वार हैं–जघन्य अग्रस्थिति, अग्रस्थितिविशेष

भागाभागाणुगमो अप्पाबहुए त्ति ॥ ३२० ॥

एदाणि छच्चेव एत्थ अणुयोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो ।

सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहण्णिया अग्गट्ठिदी ।३२१।

जहण्णणिव्वत्तीए चरिमणिसेओ अग्गं णाम । तस्स ट्ठिदी जहण्णिया अग्ग-ट्ठिदी त्ति घेत्तव्वा । जहण्णणिव्वत्ति त्ति भणिदं होदि ।

अग्गट्ठिदिविसेसो असंखेज्जगुणो ॥ ३२२ ॥

मार्गदर्शक को गुणगार ? पल्लिदोवमस्स असंखे० भागो । कुदो ? उक्कस्सअग्गं णाम तिण्णं पलि-दोवमाणं चरिमणिसेओ । तस्स ट्ठिदी तिण्णि पलिदोवमाणि उक्कस्सअग्गट्ठिदी णाम । तत्थ जहण्णअग्गट्ठिदीए अवणिदाए अग्गट्ठिदिविसेसो । तम्हि जहण्णअग्गट्ठिदीए भागे हिदे पलिदो० असंखे०भागुवलंभादो ।

अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि विसेसाहियाणि ॥३२३॥

अग्गट्ठिदिविसेसेहिंतो अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि विसेसा० । केत्तियमेत्तो विसेसो त्ति भणिदे एगरूवमेत्तो त्ति जाणावणट्ठं रूवाहियाणि त्ति भणिदं । एगरूवाहियाणि त्ति पदुप्पण्णे विसेसाहियणिद्देसो ण कायव्वो ? ण एस दोसो, दव्वट्ठियणयाणुग्गहट्ठं

अग्रस्थितिस्थान, उत्कृष्ट अग्रस्थिति, भागाभागानुगम और अल्पबहुत्व । ३२० ।

यहाँ ये छह ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वार सम्भव नहीं हैं ।

औदारिकशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति सबसे स्तोक है । ३२१ ।

जघन्य निर्वृत्तिके अन्तिम निषेककी अग्र संज्ञा है । उसकी स्थिति जघन्य अग्रस्थिति है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । जघन्य निर्वृत्ति यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उससे अग्रस्थितिविशेष असंख्यातगुणा है । ३२२ ।

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, उत्कृष्ट अग्र तीन पल्यके अन्तिम निषेककी संज्ञा है । उस अन्तिम निषेककी जो तीन पल्यप्रमाण स्थिति है वह उत्कृष्ट अग्रस्थिति है । उसमेंसे जघन्य अग्रस्थितिके कम कर देने पर जो लब्ध आवे उतना अग्रस्थितिविशेष होता है । उसमें जघन्य अग्रस्थितिका भाग देने पर पल्यका असंख्यातवाँ भाग उपलब्ध होता है ।

उससे अग्रस्थितिस्थान रूपाधिक विशेष अधिक हैं ॥ ३२३ ॥

अग्रस्थितिविशेषसे अग्रस्थितिस्थान विशेष अधिक है । विशेषका प्रमाण कितना है ऐसा पूछने पर एक अंकप्रमाण है, इस बातका ज्ञान करानेके लिए सूत्रमें 'रूवाहियाणि' ऐसा कहा है ।

शंका-- एक अंकप्रमाण अधिक है ऐसा कहने पर विशेषाधिक पदका निर्देश नहीं करना चाहिए ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यार्थिकनयका अनुग्रह करनेके लिए

विसेसाहियणिद्देसकरणादो । जदि एवं तो विसेसाहियणिद्देसस्स पुव्वणिवाओ कायव्वो ? ण एस दोसो, जदि वि पच्छा णिद्दिट्ठो तो वि एदस्स परूवणा पुव्वं चेव होदि त्ति उवदेसेण विणा वि अवगम्ममाणत्तादो ।

उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी विसेसाहिया ॥३२४॥

केत्तियमेत्तेण ? समऊणजहण्णअग्गट्ठिदिमेत्तेण ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥३२५॥

जहा ओरालियसरीरस्स चदुण्णमणुयोगद्दाराणं परूवणा कदा तहा आहार-सरीरवज्जाणं सेसतिण्णं सरीराणं परूवणा कायव्वा । णवरि कम्मइयसरीरस्स जहण्णिया अग्गट्ठिदी थोवा त्ति वुत्ते सुहुमसांपराइयस्स चरिमबंधो घेत्तव्वो । अग्गट्ठिदिविसेसो असंखेज्जगुणो त्ति वुत्ते पंचिंदियजहण्णियमग्गट्ठिदिं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्तउक्कस्सअग्गट्ठिदीए सोहिय पलिदो० संखे०भागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेसु तत्थ पक्खित्तेसु अग्गट्ठिदिविसेसो होदि । एवम्हि जहण्णअग्गट्ठिदीए भागे हिदे पलिदो० असंखे०भागो आगच्छदि 1 एसो एत्थ गुणगारो । अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि । उक्कस्सिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जेहि पलिदोवमेहि । सेसं सुगमं ।

विशेषाधिक पदका निर्देश किया है ।

शंका–यदि ऐसा है तो विशेषाधिकपदका पूर्व निपात करना चाहिए ?

समाधान–यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यद्यपि विशेषाधिक पदका पश्चात् निर्देश किया तो भी इसकी प्ररूपणा पहले ही होती है यह बात उपदेशके बिना भी जानने योग्य है ।

उनसे उत्कृष्ट अग्रस्थिति विशेष अधिक है ॥ ३२४ ॥

कितनी अधिक है ? एक समय कम जघन्य अग्रस्थितिका जितना प्रमाण है उतनी अधिक है ।

इस प्रकार तीन शरीरोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ॥ ३२५ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी अपेक्षा चार अनुयोगद्वारोंका कथन किया है उसी प्रकार आहारकशरीरको छोड़ कर शेष तीन शरीरोंकी अपेक्षा कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि कार्मणशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति स्तोक है ऐसा कहनेपर सूक्ष्मसाम्परायिक जीवका अन्तिम समयमें होनेवाला बन्ध लेना चाहिए । अग्रस्थितिविशेष असंख्यातगुणा है ऐसा कहने पर पञ्चेन्द्रियकी जघन्य अग्रस्थितिको सत्तर कोडाकोडी सागरप्रमाण उत्कृष्ट अग्रस्थितिमेंसे घटा कर उसमें पल्यके संख्यातवें भागप्रमाण स्थितिबन्धस्थानोंके मिलाने पर अग्रस्थितिविशेष होता है। इसमें जघन्य अग्रस्थितिका भाग देने पर पल्यका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है । यह यहां पर गुणकार है । अग्रस्थितिस्थान एक अधिक है । उत्कृष्ट अग्रस्थिति विशेष अधिक है । कितनी अधिक है ? संख्यात पल्यप्रमाण अधिक है । शेष कथन सुगम है । इतनी विशेषता है

णवरि तेजइयस्स जहण्णिया अग्गट्ठिवी अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सिया अग्गट्ठिवी छावट्ठि-सागरोवमाणि । वेउव्वियसरीरस्स जहण्णिया अग्गट्ठिवी दसवस्ससहस्साणि । उक्कस्सिया अग्गट्ठिवी तेत्तीससागरोवमाणि ।

सव्वत्थोवा आहारसरीरस्स जहण्णिया अग्गट्ठिवी ॥३२६॥

अंतोमुहुत्तप्पमाणत्तादो ।

अग्गट्ठिदिविसेसो संखेज्जगुणो ॥३२७॥

कुदो ? जहण्णअग्गट्ठिवीदो उक्कस्सअग्गट्ठिवीए संखेज्जगुणत्तादो ।

अग्गट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि ॥३२८॥

सुगमं ।

उक्कस्सिया अग्गट्ठिदी विसेसाहिया ॥३२९॥

केत्तियमेत्तेण ? अंतोमुहुत्तमेत्तेण ।

भागाभागाणुगमेण तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि-जहण्णपदे उक्कस्सपदे अजहण्ण-अणुक्कस्सपदे ॥३३०॥

एवमेत्थ तिण्णि चेव अणुयोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो ।

कि तैजसशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है । उत्कृष्ट अग्रस्थिति छयासठ सागर-प्रमाण है । वैक्रियिकशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति दस हजारवर्षप्रमाण है । उत्कृष्ट अग्रस्थिति तेतीस सागरप्रमाण है ।

आहारकशरीरकी जघन्य अग्रस्थिति सबसे स्तोक है ॥३२६॥

क्योंकि, उसका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है ।

उससे अग्रस्थितिविशेष संख्यातगुणा है ॥३२७॥

क्योंकि, जघन्य अग्रस्थितिसे उत्कृष्ट अग्रस्थिति संख्यातगुणी है ।

उससे अग्रस्थितिस्थान रूपाधिक हैं ॥३२८॥

यह सूत्र सुगम है ।

उनसे उत्कृष्ट अग्रस्थिति विशेष अधिक है ॥३२९॥

कितनी अधिक है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अधिक है ।

भागाभागानुगमकी अपेक्षा वहां ये तीन अनुयोगद्वार हैं-जघन्यपद, उत्कृष्टपद और अजघन्य-अनुत्कृष्टपद ॥३३०॥

इस प्रकार यहां पर तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वार यहां पर सम्भव नहीं हैं ।

जहण्णपदेण ओरालियसरीरस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वपदेसग्गस्स केवडियो भागो ॥३३१॥

एदं पुच्छासुत्तं संखेज्जदिभागो असंखे*०भाग-अणंतिमभागे अवेक्खदे⊕ ।

असंखेज्जदिभागो ॥३३२॥

कुदो ? एगसमयपबद्धे विवड्ढगुणहाणीए खंडिदेगखंडपमाणत्तादो। सव्वपदेसग्गस्स त्ति वुत्ते एगसमयपबद्धो चेव घेप्पदि । तिसु पलिदोवमेसु संचिददव्वं ण घेप्पदि त्ति कथं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । एत्थ विवड्ढगुणहाणिपमाणमंतोमुहुत्तं, ओरालियसरीरम्मि अंतोमुहुत्तं गंतूण पढमणिसेगादो दुगुणहीणणिसेगुवलंभादो। एत्थ किं तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए पदिदणिसेयपदेसग्गं घेप्पदि आहो जहण्णणिव्वत्तीए पढमसमए पदिदपदेसग्गमिदि? एत्थ पढमपक्खो घेत्तव्वो, उक्कस्सणिसेगट्ठिदीए जहण्णट्ठिदिपदेसग्गेण अहियारादो ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥३३३॥

जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी जघन्य स्थितिका प्रदेशाग्र सब प्रदेशाग्र के कितने भागप्रमाण है ? ॥३३१॥

यह पृच्छासूत्र संख्यातवें भागप्रमाण है, असंख्यातवें भागप्रमाण है या अनन्तवें भाग-प्रमाण है इस बातकी अपेक्षा करता है ।

असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥३३२॥

क्योंकि, एक समयप्रबद्धमें डेढ़ गुणहानिका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतना उसका प्रमाण है । 'सव्वपदेसग्गस्स' ऐसा कहने पर समयप्रबद्धका ही ग्रहण होता है ।

शंका--तीन पल्यप्रमाण कालके भीतर संचित हुए द्रव्यका ग्रहण नहीं होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान--अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

यहाँ पर डेढ़ गुणहानिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि,, औदारिकशरीरमें अन्तर्मुहूर्त जाकर प्रथम निषेकसे दुगुने हीन निषेक उपलब्ध होते हैं ।

शंका--यहाँ पर क्या तीन पल्योंके प्रथम समयमें प्राप्त हुए निषेकका प्रदेशाग्र ग्रहण करते हैं या जघन्य निर्वृत्तिके प्रथम समयमें प्राप्त हुआ प्रदेशाग्र ग्रहण करते हैं ?

समाधान--यहाँ पर प्रथम पक्षको ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, उत्कृष्ट निषेकस्थितिमें जघन्य स्थितिके प्रदेशाग्रका अधिकार है ।

इसी प्रकार चार शरीरोंका भागाभाग कहना चाहिए ॥३३३॥

---

* ता० प्रतौ 'संखेज्जदिभागो (ग) असंखे०' अ० का० प्रत्योः 'संखेज्जदिभागो असंखे०' इति पाठः ।
⊕ ता० प्रतौ 'उ (अ) अवेक्खदे' अ० का० प्रत्योः 'उवेक्खदे' इति पाठः ।

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णपडिभागाभागो परूविदो तहा एदेसिं परूवेदव्वो, अंतोमुहुत्तमेत्तदिवड्ढगुणहाणीए एगसमयपबद्धं खंडिय तत्थ एगखंडपमाणत्तणेण भेदाभावादो। णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणं दिवड्ढगुणहाणिपमाणमसंखेज्जाणि पलिदोवमाणि पढमवग्गमूलाणि । कम्मइयसरीरस्स सत्तवाससहस्साणि आबाधं मोत्तूण तदणंतरउवरिमट्ठिदीए जं पदेसग्गं णिसित्तं तस्स गहणं कायव्वं। पढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे कीरमाणे जहा वेयणाए परूविदा कदा तहा कायव्वा, पंचसु वि सरीरेसु* पढमणिसेयपमाणेण कीरमाणेसु भेदाभावादो ।

उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सियाए ठिदीए पदेसग्गं सव्वपदेसग्गस्स केवडिओ भागो ॥३३४॥

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥३३५॥

तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयप्पहुडि एगसमयपबद्धे जहाकमेण णिसिंचमाणे तिण्णं* पलिदोवमाणं चरिमसमए जं णिसित्तं पदेसग्गं तमुक्कस्सट्ठिदिपदेसग्गं* णाम। तं सव्वट्ठिदिपदेसग्गाणमसंखे०भागो। तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा। तं

जिस प्रकार औदारिकशरीरका जघन्य पदकी अपेक्षा भागाभाग कहा है उसी प्रकार इन शरीरोंका भी कहना चाहिए; क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तप्रमाण डेढ़ गुणहानिका एक समयप्रबद्धमें भाग देने पर वहाँ एक खण्डप्रमाणपनेकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है। इतनी विशेषता है कि तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी डेढ़ गुणहानिका प्रमाण पल्यके असंख्यात प्रथमवर्गमूलप्रमाण है । तथा कार्मणशरीरकी सात हजार वर्षप्रमाण आबाधाको छोड़कर तदनन्तर उपरिम स्थितिमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त है उसका ग्रहण करना चाहिए । प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यके करने पर जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें प्ररूपणा की है उस प्रकार करनी चाहिए, क्योंकि, पाँचों ही शरीरोंको प्रथम निषेकके प्रमाण रूप करने पर उस कथनसे इसमें कोई भेद नहीं है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका प्रदेशाग्र सब प्रदेशाग्र के कितने भागप्रमाण है ।।३३४।।

यह सूत्र सुगम है ।

असंख्यातवें भागप्रमाण है ।।३३५।।

तीन पल्योंके समयसे लेकर एक समयप्रबद्धके क्रमसे निक्षिप्त होने पर तीन पल्योंके अन्तिम समयमें जो प्रदेशाग्र निक्षिप्त होता है उसकी उत्कृष्ट स्थितिप्रदेशाग्र संज्ञा है । वह सब स्थितियोंमें प्राप्त प्रदेशाग्रोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात

---

* म०प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'पंचसु सरीरेसु' इति पाठः । * ता०प्रतौ 'णिसिंचमाणं तिण्णं' इति पाठः । * ता०प्रतौ 'उक्कस्सपदेसट्ठिदिपदेसग्गं' अ०प्रतौ 'उक्कस्सट्ठिदिपदेसग्गं' इति पाठः ।

जहा- चरिमणिसेयं ट्ठविय, ओरालियसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्ज-पलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्ताओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा असंखेज्जलोगपमाणेण अंतोमुहुत्तमेत्तदिवड्ढगुणहाणिगुणिदेण गुणिदे समयपबद्धदव्वं होदि। तेणेव गुणगारेण णाणा॰समयपबद्धे भागे हिदे चरिमणिसेगो आगच्छदि। तेण भागहारो असंखेज्जलोगो त्ति सिद्धं।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥३३६॥

तं जहा- वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गाणं केवडिओ भागो? असंखे०भागो। तस्स को पडिभागो? असंखेज्जा लोगा। आहारसरीरस्स उक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गाणं केवडिओ भागो? असंखे०भागो। तस्स को पडिभागो? अंतोमुहुत्तं। एवं तेजा-कम्मइयसरीराणं। णवरि पडिभागो अंगुलस्स असंखे०भागो।

अजहण्ण-अणुक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गस्स केवडिओ भागो ॥ ३३७ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सुगमं।

लोक प्रतिभाग है यथा- अन्तिम निषेकको स्थापित करके औदारिकशरीरकी पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण नाना गुणहानिशलाकाओंका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकको दूना करके परस्पर गुणा करनेसे जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न हो उसे अन्तर्मुहूर्त मात्र डेढ गुणहानिसे गुणित करने पर जो आवे उससे गुणित करने पर समयप्रबद्धका द्रव्य होता है। तथा उसी गुणकारका नाना समयप्रबद्धोंमें भाग देने पर अन्तिम निषेक आता है। इसलिए भागहार असंख्यात लोक प्रमाण है यह सिद्ध होता है।

इसी प्रकार चार शरीरोंका भागाभाग कहना चाहिए ॥ ३३६ ॥

यथा- वैक्रियिकशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका प्रदेशाग्र सब स्थितियोंके प्रदेशाग्रोंके कितने भागप्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण है। उसका प्रतिभाग क्या है? असंख्यात लोकप्रमाण प्रतिभाग है। आहारकशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका प्रदेशाग्र सब स्थितियोंके प्रदेशाग्रोंके कितने भागप्रमाण है? असंख्यातवें भागप्रमाण है। उसका प्रतिभाग क्या है? अन्तर्मुहूर्त प्रतिभाग है। इसी प्रकार तैजसशरीर और कार्मणशरीरके विषयमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि यहाँ पर प्रतिभाग अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

अजघन्य-अनुत्कृष्टपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी अजघन्य-अनुत्कृष्ट-स्थितिका प्रदेशाग्र सब स्थितियोंके प्रदेशाग्रके कितने भागप्रमाण है ॥ ३३७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

॰ अ० आ० प्रत्योः 'एग' इति पाठः।

असंखेज्जा भागा ॥ ३३८ ॥

को पडिभागो ? किंचूणदिवड्ढगुणहाणी पडिभागो । तत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण बहुरूवधरिदे गहिदे इच्छिदव्वं होदि त्ति घेत्तव्वं ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥ ३३९ ॥

णवरि अप्पप्पणो गुणहाणिपमाणं जाणिदूण वत्तव्वं ।

अप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि—जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ ३४० ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एवमेत्थ तिण्णि चेव अणुयोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो । एत्थ एगेगट्ठिदिपदेसग्गं जहण्णं णाम, अप्पहाणीभूदकालएगत्तेण कालविसेसस्सेव गहणादो । एगेगगुणहाणी उक्कस्सपदं णाम, एगसमयं पेक्खिदूण गुणहाणिकालस्स उक्कस्सत्तुवलंभादो । तदुभयं जहण्णुक्कस्सपदं णाम ।

जहण्णपदेण सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥३४१॥

जं तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमए णिसित्तं पदेसग्गं तं थोवं । १ ।।

असंख्यात बहुभाग प्रमाण है ॥३३८॥

प्रतिभाग क्या है ? कुछ कम डेढ गुणहानि प्रतिभाग है । डेढ़ गुणहानिका विरलन करके उस विरलन राशिके एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको छोड़कर शेष बहुत अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्यके ग्रहण करने पर इच्छित द्रव्य होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी अपेक्षा भागाभाग जानना चाहिए ॥३३९॥

इतनी विशेषता है कि अपनी अपनी गुणहानिका प्रमाण जान कर कथन करना चाहिए।

अल्पबहुत्वका अधिकार है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार हैं—जघन्यपद उत्कृष्टपद, और जघन्य-उत्कृष्टपद ॥३४०॥

इसप्रकार यहाँ पर तीन ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वार असम्भव है । यहाँ पर एक एक स्थितिके प्रदेशाग्रकी जघन्य संज्ञा है, क्योंकि, अप्रधानीभूत कालके एकत्वकी अपेक्षा कालविशेषका ही यहाँ ग्रहण किया है । एक एक गुणहानिकी उत्कृष्टपद संज्ञा है । क्योंकि, एक समयको देखते हुए गुणहानिके कालमें उत्कृष्टपना पाया जाता है । तथा उन दोनोंकी जघन्योत्कृष्टपद संज्ञा है ।

जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी अन्तिम स्थितिका प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥३४१॥

जो तीन पल्यप्रमाण स्थितिके अन्तिम समयमें निषिक्त प्रदेशाग्र है वह स्तोक है ।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३४२ ॥

तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए जं णिसित्तं पदेसग्गं तं पढमट्ठिदिपदेसग्गं णाम । तं चरिमसमए पदेसग्गादो असंखेज्जगुणं । को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । तं जहा- अंतोमुहुत्तमेत्तगुणहाणीए तिसु पलिदोवमेसु ओवट्टिदेसु लद्धं णाणागुणहाणिसलागाओ होंति । एवंसि किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिपमाणमेदं $\frac{५१२}{९}$ । एदेण चरिमणिसेगे गुणिदे जेण पढमणिसेगो होदि तेण गुणगारो असंखेज्जा लोगा । असंखेज्जलोगमेत्तं कुदो णव्वदे ? परियम्मादो । तं जहा- बेरूवे वग्गिज्जमाणे वग्गिज्जमाणे पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्ताणि वग्गणट्ठाणाणि उवरि गंतूण पलिदोवमच्छेदणयपमाणं पावदि । तं सइं वग्गिदं सूचिअंगुलच्छेदणयपमाणं पावदि । ते छेदणया दुगुणिदा पदरंगुलच्छेदणया होंति । घणंगुलच्छेदणया बुद्धमागब्भहिया । उद्धारपल्लमसंखेज्जगुणं । दीव-सागररूवाणि संखेज्जगुणाणि । रज्जुच्छेदणया विसेसाहिया । सेढिच्छेदणा विसेसाहिया । जगपदरच्छेदणा दुगुणा । घणलोगच्छेदणा बुद्धभागब्भहिया । एवं घणलोग-च्छेदणयपमाणं भणिदं । तदो णियत्तिदूण सूचिअंगुलच्छेदणया वग्गिज्जमाणा वग्गि-ज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखे०भागमेत्ताणि वग्गणट्ठाणाणि उवरि गंतूण पलिदोवम-

---

उससे प्रथम स्थितिमें निषिक्त प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ३४२ ॥

तीन पल्योंके प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र निषिक्त है उसकी प्रथम स्थितिप्रदेशाग्र संज्ञा है। वह अन्तिम समयमें निषिक्त प्रदेशाग्रसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक है। यथा- अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणहानिका तीन पल्योंमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतनी नानागुणहानिशलाकायें होती हैं। इनकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण इतना है $\frac{५१२}{९}$ । इससे अन्तिम निषेकके गुणित करने पर यतः प्रथम निषेकका प्रमाण होता है, अतः गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है।

शंका-- गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- परिकर्मसूत्रसे जाना जाता है। यथा- दोका उत्तरोत्तर वर्ग करने पर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण वर्गणास्थान ऊपर जाकर पल्यके अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त होता है। उसका एक बार वर्ग करने पर सूच्यंगुलके अर्धच्छेदोंका प्रमाण प्राप्त होता है। उन अर्धच्छे-दोंको दूना करने पर प्रतराङ्गुलके अर्धच्छेद होते हैं। उनसे घनाङ्गुलके अर्धच्छेद द्वितीय भागप्रमाण अधिक हैं। उनसे उद्धारपल्यका प्रमाण असंख्यातगुणा है। उससे द्वीपों और सागरोंकी संख्या संख्यातगुणी है। उससे राजुके अर्धच्छेद विशेष अधिक हैं। उनसे जगश्रेणिके अर्धच्छेद विशेष अधिक हैं। उनसे जगप्रतरके अर्धच्छेद दूने हैं। उनसे घनलोकके अर्धच्छेद द्वितीय भागप्रमाण अधिक हैं। इस प्रकार घनलोकके अर्धच्छेदोंका प्रमाण कहा है। यहांसे लौटकर सूच्यंगुलके अर्धच्छेदोंका उत्तरोत्तर वर्ग करके पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण

पढमवग्गमूलं पावदि । तं सट्ठं वग्गिदं पलिदोवमं पावदि । संपहि पलिदोवमादो हेट्ठा असंखेज्जाणि वग्गणट्ठाणाणि ओसरिदूण सूचियंगुलच्छेदणयाणमुवरि तस्सेव उवरिमवग्गादो हेट्ठा घणलोगच्छेदणया होंति त्ति परियम्मे भणिदं । पुणो एदे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे घणलोगो उप्पज्जदि त्ति भणिदं होदि । ओरालियसरीरस्स पुण णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणं जदि घणलोगच्छेदणयमेत्तं होदि तो ओरालियसरीरण्णोण्णब्भत्थरासिपमाणं घणलोगमेत्तं चेव होदि । अथ जदि जत्तिया जगपदरच्छेदणया घणलोगच्छेदणया च तत्तियाओ ओरालियसरीरणाणागुणहाणिसलागाओ होंति तो ओरालियसरीरस्स अण्णोण्णब्भत्थरासिपमाणं जगपदरगुणिदघणलोगमेत्तं होदि । ण च एवं । कुदो ? घणलोगच्छेदणएहिंतो पलिदोवमपढमवग्गमूलादो च ओरालियसरीरणाणागुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । एवं कुदो उवलब्भदे ? जुत्तीदो । तं जहा- ओरालियसरीरस्स एगपदेसगुणहाणिअद्धाणं संखेज्जावलियमेत्तं होदूण अंतोमुहुत्तं होदि । एवं च कुदो णव्वदे ? वग्गणपरंपरोवणिधासुत्तादो। पुणो एत्तियमद्धाणं गंतूण जदि एगगुणहाणिसलागा लब्भदि तो तिण्णं पलिदोवमाणं किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए आवलि०

वर्गणास्थान ऊपर जाकर पल्यका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है । उसका एकबार वर्ग करने पर पल्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अब पल्यसे नीचे असंख्यात वर्गणास्थान उतर कर सूच्यंगुलके अर्धच्छेदोंके ऊपर तथा उसीके उपरिम वर्गसे नीचे घनलोकके अर्धच्छेद होते हैं ऐसा परिकर्ममें कहा है । पुनः इनका विरलन कर और विरलितराशिके प्रत्येक एकको दूना कर परस्पर गुणा करने पर घनलोक उत्पन्न होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । परन्तु औदारिकशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण यदि घनलोकके अर्धच्छेदप्रमाण होता है तो औदारिकशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण घनलोकप्रमाण ही होता है । और जितने जगप्रतरके अर्धच्छेद और घनलोकके अर्धच्छेद हैं उतनी यदि औदारिकशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें होती हैं तो औदारिकशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण जगप्रतरसे गुणित घनलोकप्रमाण होता है । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि, घनलोकके अर्धच्छेदों और पल्यके प्रथम वर्गमूलसे औदारिकशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी उपलब्ध होती हैं ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- युक्तिसे । यथा- औदारिकशरीरका एकप्रदेशगुणहानिअध्वान संख्यात आवलि होकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ।

शंका-- यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- वर्गणापरम्परोपनिधा सूत्रसे जाना जाता है ।

पुनः इतना अध्वान जाकर यदि एक गुणहानिशलाका प्राप्त होती है तो तीन पल्योंका क्या प्राप्त होगा इस प्रकार फलराशिसे गुणित इच्छाराशिमें प्रमाणराशिका भाग देने पर

---

* ता० प्रतौ ' हेट्ठा संखेज्जाणि ' इति पाठः]

असंखे०भागेण पदरावलियं गुणेदूण तेण गुणिदरासिणा उवरि वग्गं गुणेदूण णेयव्वं जाव पलिदोवमबिदियवग्गमूले त्ति। जत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्थ तत्तियाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। एवमेत्तियाओ ओरालियसरीरणाणागुणहाणिसलागाओ होंति। पुणो एवाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी उप्पज्जदि त्ति णत्थि संदेहो। पुणो एदेण रासिणा ओरालियसरीरचरिमणिसेगे गुणिदे तस्सेव पढमणिसेगो होदि त्ति घेत्तव्वं।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३४३ ॥

को गुण० ? संखेज्जावलियमेत्ताओ सादिरेगेगरूवेणूणदिवड्ढगुणहाणीओ। तं जहा- तिसु पलिदोवमेसुप्पज्जिय उप्पण्णपढमसमए ओरालियसरीरणिप्पायणट्ठं गहिदणोकम्मपदेसेहिंतो घेत्तूण तिण्णिपलिदोवमाणं पढमसमए बहुअं पदेसपिंडं णिसिंचदि। बिदियसमए विसेसहीणं णिसिंचदि। एवं णिरंतरं विसेसहीणकमेण ताव णिसिंचदि जाव तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमओ त्ति। पुणो एवं णिसित्तसव्वदव्वे पढमणिसेयपमाणेण कदे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति। पुणो एत्थ पढमणिसेगस्स चरिमणिसेगस्स च अवणयणट्ठं सादिरेगमेगरूवमवणेदव्वं। सेसमेत्तियं होदि-

५७७९/५१२ एदेण पढमणिसेगे गुणिदे तिण्णं पलिदोवमाणं पढमणिसेयं चरिमणिसेगं च

आवलिके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलिको गुणित करके उस गुणित राशिसे ऊपर वर्गको गुणित करके पल्यके द्वितीय वर्गमूलके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। जहाँ जितनी संख्या होती है वहाँ उतने पल्यके प्रथम वर्गमूल आते हैं। इस प्रकार जितनी औदारिकशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें होती हैं। पुनः इनका विरलन करके और विरलितराशिके प्रत्येक एकको दूना करके परस्पर गुणा करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न होती है इसमें सन्देह नहीं है। पुनः इस राशिसे औदारिकशरीरके अन्तिम निषेकके गुणित करने पर उसीका प्रथम निषेक होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा होता है ।३४३।

गुणकार क्या है ? संख्यात आवलिप्रमाण जो साधिक एक अंकसे न्यून डेढ गुणहानि है उतना गुणकार है। यथा- तीन पल्यकी आयुवालोंमें उत्पन्न हो कर उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें औदारिकशरीरको उत्पन्न करनेके लिए ग्रहण किये गये नोकर्मके प्रदेशोंमेंसे लेकर तीन पल्यके प्रथम समयमें बहुत प्रदेशपिण्डको निक्षिप्त करता है। द्वितीय समयमें विशेष हीन प्रदेशपिण्ड निक्षिप्त करता है। इस प्रकार निरन्तर विशेष हीन क्रमसे तीन पल्यके अंतिम समय तक निक्षिप्त करता है। पुनः इस प्रकार निक्षिप्त किये गये सब द्रव्यको प्रथम निषेकके प्रमाणरूपसे करने पर डेढ गुणहानिप्रमाण प्रथम निषेक होते हैं। पुनः यहाँ पर प्रथम निषेक और अंतिम निषेकका अपनयन करनेके लिए साधिक एक अंक घटाना चाहिए। शेषका प्रमाण इतना होता है $\frac{५७७९}{५१२}$। इससे प्रथम निषेकके गुणित करने पर तीन पल्यके प्रथम निषेक और अन्तिम

मोत्तूण मज्झिमसव्वदव्वमागच्छदि । तेण अपढम-अचरिमदव्वस्स असंखेज्जगुणत्तं सिद्धं । मज्झिमदव्वमेदं ५७७९ ।

अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३४४ ॥

मागसूत्रक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेयमेत्तो ५७८८ ।

अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३४५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो ६२९१ ।

सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३४६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ६३०० ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥ ३४७ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णपदप्पाबहुअपरूवणा कदा तहा वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पि कायव्वा, विसेसाभावादो । णवरि तेजासरीरस्स अण्णोण्णब्भत्थरासी असंखेज्जओसप्पिणि-उस्सप्पिणिमेत्तो, पलिदोवमअद्धच्छेदणाहिंतो तेजइयसरीरणागागुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तवंसणादो । एवं कुदो णव्वदे ? कम्मइयसरीरस्स

६३०० - ५१२ + २ = ५७९०

निषेकको छोड कर मध्यके निषेकोंका सब द्रव्य आता है । इसलिए अप्रथम-अचरम द्रव्य असंख्यातगुणा है यह सिद्ध होता है । मध्यका द्रव्य इतना है-- ५७७९ ।

उससे अप्रथम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३४४ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है (५७७९+९) = ५७८८ ।

उससे अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३४५ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? प्रथम निषेकमेंसे अन्तिम निषेकके प्रमाणको कम करके जो शेष रहे उतना है । (५१२ - ९ = ५०३; ५७८८+५०३ =) ६२९१ ।

उससे सब स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३४६ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है । (६२९१+९ = ६३००) ।

इसी प्रकार तीन शरीरोंके प्रदेशाग्रका जघन्यपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहना चाहिए ॥ ३४७ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरके जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व प्ररूपणा की है उसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है । इतनी विशेषता है कि तैजसशरीरकी अन्योन्याभ्यस्त-राशिका प्रमाण असंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंके कालप्रमाण है, क्योंकि, पल्यके अर्धच्छेदोंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी देखी जाती हैं ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

णाणागुणहाणिसलागाहिंतो तेजइयस्स गुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति सुत्तवयणादो। कम्मइयस्स अण्णोण्णब्भत्थरासिपमाणं पलिदो० असंखे०भागो।

जहण्णपदेण सव्वत्थोव आहारसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥ ३४८ ॥

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

कुदो ? गोपुच्छागारेण सव्वणिसेगाणमवट्ठाणादो उक्कस्सट्ठिदिसंजुत्तपरमाणूणं बहुआणमसंभवादो च।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं ॥ ३४९ ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया अण्णोण्णब्भत्थरासी। किमट्ठमण्णोण्णब्भत्थरासी संखेज्जे ? अंतोमुहुत्तमेत्तगुणहाणिअद्धाणेण सयलआहारसरीरट्ठिदिकाले अंतोमुहुत्तमेत्ते भागे हिदे संखेज्जाणं णाणागुणहाणिसलागाणं पमाणुवलंभादो। एदासिमण्णोण्णब्भत्थरासी वि संखेज्जा चेव होदि, पढमट्ठिदिपदेसग्गस्स संखेज्जगुणत्तण्णहाणुववत्तीदो।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३५० ॥

को गुण० ? अंतोमुहुत्तं। किंचूणदिवड्ढगुणहाणि त्ति जं वुत्तं होदि।

समाधान--कार्मणशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हैं, इस सूत्रवचनसे जाना जाता है।

कार्मणशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

जघन्यपदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी अन्तिम स्थितिमें प्रदेशाग्र सबके स्तोक है ॥ ३४८ ॥

क्योंकि, सब निषेक गोपुच्छाके आकाररूपसे अवस्थित हैं और उत्कृष्ट स्थितिसे युक्त परमाणुओंका बहुत होना असंभव है।

उससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ॥ ३४९ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय प्रमाण अन्योन्याभ्यस्तराशि गुणकार है।

शंका--अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण संख्यात क्यों है ?

समाधान--गुणहानिका अध्वान अन्तर्मुहूर्त है। उससे आहारक शरीरके समस्त स्थितिकाल अन्तर्मुहूर्तके भाजित करने पर नानागुणहानियोंका प्रमाण संख्यात उपलब्ध होता है। इनकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण भी संख्यात ही होता है, क्योंकि, अन्यथा प्रथम स्थितिका निषेक संख्यातगुणा नहीं बन सकता।

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ३५० ॥

गुणकार क्या है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणकार है। कुछ कम डेढ़ गुणहानिप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथन तात्पर्य है।

अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५१॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ।

अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५२॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो ।

सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३५३॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो । एवं पंचण्णं सरीराणं जहण्णपदप्पाबहुअं समत्तं ।

प्राप्तिस्थान आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं ॥३५४॥

कुदो ? चरिमगुणहाणिपदेसग्गादो हेट्ठिमहेट्ठिमगुणहाणीणं पदेसग्गस्स दुगुण-दुगुणकमेण १००। २००। ४००। ८००। १६००। ३२००। अवट्ठाणदंसणादो ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥३५५॥

को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । रूवूणणाणागुणहाणिसलागाओ ५ विरलिय विगं

उससे अप्रथम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५१॥

कितना अधिक है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

उससे अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५२॥

कितना अधिक है ? प्रथम निषेकमेंसे अन्तिम निषेकके प्रमाणको कम करने पर जितना शेष रहे उतना अधिक है ।

उससे सब स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३५३॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है ।

इस प्रकार पाँच शरीरोंका जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

उत्कृष्टपदकी अपेक्षा औदारिकशरीरके अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक हैं ॥३५४॥

क्योंकि, अन्तिम गुणहानिके प्रदेशाग्रसे अधस्तन अधस्तन गुणहानियोंका प्रदेशाग्र दूने दूने क्रमसे अवस्थित देखा जाता है । यथा– १००, २००, ४००, ८००, १६००, ३२०० ।

उससे अप्रथम-अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ।३५५।

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । एक कम नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर और विरलित राशिके प्रत्येक एकको दूनाकर परस्पर गुणा करनेपर

करिय अण्णोण्णब्भत्थरासी दूरूवूणा त्ति भणिदं होदि ३० । तस्स पमाणमेदं ३००० ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३५६ ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ३१०० ।

पढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३५७ ॥

केत्तिय० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ३२०० ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३५८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो? चरिमगुणहाणिदव्वेणूणबिदियादिगुणहाणिदव्वमेत्तो ६२०० ।

सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३५९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ६३०० ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥ ३६० ॥

जहा ओरालियसरीरस्स उक्कस्सपदप्पाबहुअं परूविदं तहा वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पि परूवेदव्वं । णवरि तेजा-कम्मइयसरीराणमण्णोण्णब्भत्थरासि-पमाणं णादूण भाणिदव्वं ।

जो अन्योन्याभ्यस्तराशि उत्पन्न हो उसमेंसे दो कम (३२ − २ = ३०) गुणकार शलाका है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । उसका प्रमाण इतना है (१००×३०) ३००० ।

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३५६ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है (३०००+१०० =) ३१०० अप्रथम गुणहानियोंका द्रव्य ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३५७ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है (३०००+१०० =) ३२०० ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३५८ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? द्वितीयादि गुणहानियोंके द्रव्यमेंसे अन्तिम गुणहानिके कम करनेपर जो शेष रहे उतना है (३१०० − १०० = ३०००; ३२००+३००० =) ६२०० ।

उससे सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३५९ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतना है (६२००+१०० =) ६३०० ।

इसी प्रकार तीन शरीरोंकी अपेक्षा जानना चाहिए । ३६० ।

जिस प्रकार औदारिकशरीरका उत्कृष्टपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरका भी कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी अन्योन्याभ्यस्तराशिका प्रमाण जान कर कहना चाहिए ।

सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमगुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं ॥३६१॥

कारणं सुगमं ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं संखेज्जगुणं ।३६२।

को गुण० ? सगअण्णोण्णब्भत्थरासीए चदुरूवूणाए अद्धं ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३६३॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३६४॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३६५॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वेणूणबिदियादिगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३६६॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो । एवमुक्कस्सपदप्पाबहुअं समत्तं ।

आहारकशरीरके अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ।३६१।

कारण सुगम है ।

उससे अप्रथम-अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ३६२।

गुणकार क्या है ? चार कम अपनी अन्योन्याभ्यस्त राशिका अर्धभागप्रमाण गुणकार है (६४ − ४ = ६०; ६० ÷ २ = ३०, १०० × ३० = ३०००)

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६३॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६४॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६५॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? द्वितीयादि गुणहानियोंके द्रव्यमेंसे अन्तिम गुणहानिका द्रव्य कम कर देने पर जो शेष रहे उतना है ।

उससे सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३६६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है ।

इस प्रकार उत्कृष्टपद अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥ ३६७ ॥

कुदो ? उक्कस्सट्ठिदिसंजुत्तपरमाणुपोग्गलाणं बहुआणमणुवलंभादो । ९ ।।

चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३६८ ॥

को गुण० ? किंचूणदिवड्ढगुणहाणीओ $\boxed{\frac{१००}{९}}$ । कुदो चरिमगुणहाणिदव्वे चरिमणिसेयपमाणेण कदे किंचूणदिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगाणं तत्थुवलंभादो ।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३६९ ॥

को गुण० ? असंखेज्जा लोगा । किंचूणदिवड्ढगुणहाणिणा $\boxed{\frac{१००}{९}}$ किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि $\boxed{\frac{५१२}{९}}$ भागे हिदे जं भागलद्धं सो गुणगारो त्ति घेत्तव्वं ५१२ ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गमसंखेज्ज-गुणं ॥ ३७० ॥

को गुण० ? अंतोमुहुत्तं । गुणहाणीए तिण्णिचदुब्भागेण सादिरेगेणऊणदिवड्ढ-

---

जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी अन्तिम स्थितिमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है । ३६७ ।

क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितियुक्त बहुत परमाणु नहीं उपलब्ध होते ।

उससे अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । ३६८ ।

गुणकार क्या है ? कुछ कम डेढ गुणहानिप्रमाण गुणकार है $\frac{१००}{९}$, क्योंकि, अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको अन्तिम निषेकके प्रमाणसे करने पर कुछ कम डेढ गुणहानि प्रमाण अन्तिम निषेक उपलब्ध होते हैं ।

उससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । ३६९ ।

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है । कुछ कम डेढ गुणहानि $\frac{१००}{९}$ का कुछकम अन्योन्याभ्यस्तराशि $\frac{५१२}{९}$ में भाग देनेपर जो भाग लब्ध आवे वह गुणकार है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । $\left(\frac{५१२}{९} \div \frac{१००}{९} - \frac{५१२}{१००},\ \frac{१००}{१} \times \frac{५१२}{१००} = \right)$ ५१२ ।

उससे अप्रथम-अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ।३७०।

गुणकार क्या है ? अन्तर्मुहूर्तप्रमाण गुणकार है । गुणहानिके तीन बटे चार भागसे

गुणहाणि त्ति भणिदं होदि ३०००।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं । ३७१ ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ३१००।

पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३७२ ॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो। कुदो ? बिदियादिगुणहाणिदव्वाणं दुगुणहीण-दुगुणहीणकमेण अवट्ठाणुवलंभादो ३२००।

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३७३ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? पढमचरिमणिसेगेहि ऊणबिदियादिगुणहाणिदव्वमेत्तो ५७७९।

अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३७४ ॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेयमेत्तो ५७८८।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।३७५।

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वेणूणपढमणिसेगमेत्तो ६२००।

अधिक कुछ कम डेढ गुणहानिप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ३०००।

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७१ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है (३००० + १०० =) ३१००।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७२ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिका जितना द्रव्य है उतना है, क्योंकि, द्वितीय आदि गुणहानियोंका द्विगुणहीन द्विगुणहीन क्रमसे अवस्थान उपलब्ध होता है (३१००+१०० =) ३२००।

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७३ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? प्रथम और अन्तिम निषेकसे न्यून द्वितीय आदि गुणहानियोंका जितना द्रव्य है उतना है (६३०० – ५२१ =) ५७७९।

उससे अप्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७४ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है (५७७९ + ९ =) ५७८८।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है । ३७५ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको प्रथम निषेकके द्रव्यमेंसे कम करनेपर जितना शेष रहे उतना है (५१२ – १०० = ४१२, ५७८८ + ४१२ =) ६२००।

अचरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३७६॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणचरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ६२९१ ।

सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३७७॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ६३०० ।

एवं तिण्णं सरीराणं ॥३७८॥

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णुक्कस्सपदप्पाबहुअं परूविदं तहा वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं पि परूवेदव्वं । णवरि चरिमगुणहाणिदव्वादो तेजइयसरीरस्स पढम-ट्ठिदीए णिसित्तदव्वमसंखेज्जगुणं ति भणिदे एत्थ गुणगारो अंगुलस्स असंखे०भागो होदि, दिवड्ढगुणहाणिमेत्तचरिमणिसेगेहि अण्णोण्णब्भत्थरासिमेत्त चरिमणिसेगेसु ओवट्टिदेसु अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तगुणगारुवलंभादो । एत्थ एत्तियमागच्छदि त्ति कुदो णव्वदे ? एत्थेव उवरि भण्णमाणअप्पाबहुगादो णव्वदे । तं जहा-सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि । कम्मइयसरीरस्स णाणापदेस—

उससे अचरम स्थितिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३७६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यमेंसे अन्तिम निषेकके द्रव्यको कम कर देने पर जो शेष रहे उतना है (१०० - ९ = ९१; ६२०० + ९१ = ६२९१ ।

उससे सब स्थितियों और सब गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३७७॥

विशेषका प्रमाण कितना है? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है (६२९१ + ९ =) ६३०० ।

इसीप्रकार तीन शरीरोंकी अपेक्षा जानना चाहिए ॥३७८॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरका जघन्य उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरका भी कहना चाहिए । इतनी विशेषता है कि अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे तैजसशरीरकी प्रथम स्थितिमें निक्षिप्त हुआ द्रव्य असंख्यातगुणा है ऐसा कहने पर यहाँ पर गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है, क्योंकि, डेढ़ गुणहानिप्रमाण अन्तिम निषेकोंसे अन्योन्याभ्यस्तराशिप्रमाण अन्तिम निषेकोंके भाजित करने पर अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार उपलब्ध होता है ।

शंका--यहाँ इतना आता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-यहीं पर आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे जाना जाता है । यथा-आहारक-शरीरके नानागुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक हैं । उनसे कार्मणशरीरके नानागुणहानिस्थानान्तर

गुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि । तेजासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखे०गुणाणि । संपहि कम्मइयसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमच्छेदणएहिंतो असंखे०भागेणूणाओ त्ति आइरिया भणंति । पुणो एवंविहकम्मइयसरीरणाणागुणहाणिसलागाहिंतो तेजइयसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति वग्गणासुत्ते भणिदं । अविरुद्धाइरियाणं उवदेसो पुण पलिदोवमच्छेदणाहिंतो तेजइयसरीरस्स णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति केरिसो गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो त्ति । एदम्हि गुणगारे अत्थियाणि रूवाणि तत्थियाणं पलिदोवमाणमण्णोण्णब्भासे कदे तेजइयणाणागुणहाणिसलागाणमण्णोण्णब्भत्थरासी उप्पज्जदि । पुणो तम्मि अण्णोण्णब्भत्थरासिम्मि विवड्ढगुणहाणीए ओवट्टिदे लद्धमसंखेज्जाणं पलिदोवमाणमण्णोण्णब्भासो आगच्छदि । तेण गुणगारो अंगुलस्स असंखे०भागो त्ति सिद्धं । कम्मइयसरीरगुणगारो पुण पलिदोवमस्स असंखे०भागो त्ति वत्तव्वो । एसो गुणगारविही पुव्वं परूविदजहण्णपदे॑ उक्कस्सपदे च वत्तव्वो ।

जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ॥ ३७९ ॥

कुदो ? उक्कस्सट्ठिदिपरमाणूणं बहुआणं संभवाभावादो ।

असंख्यातगुणे हैं । उनसे तैजसशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं । यहाँ पर कार्मणशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें पल्यके अर्धच्छेदोंसे असंख्यातवें भागप्रमाण कम हैं ऐसा आचार्य कथन करते हैं । पुनः इस प्रकारकी कार्मणशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी है ऐसा वर्गणासूत्रमें कहा है । परन्तु विरोधरहित आचार्योंका उपदेश है कि पल्यके अर्धच्छेदोंसे तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हैं । गुणकार क्या है ? पल्यका असंख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है । इस गुणकारमें जितनी संख्या है उतने पल्योंका परस्पर गुणा करने पर तैजसशरीरकी नानागुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि उत्पन्न होती है । पुनः उस अन्योन्याभ्यस्तराशिमें डेढ गुणहानिका भाग देने पर असंख्यात पल्योंकी अन्योन्याभ्यस्तराशि आती है । इसलिए गुणकार अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह सिद्ध होता है । परन्तु कार्मणशरीरका गुणकार पल्यका असंख्यातवां भागप्रमाण है ऐसा जानना चाहिए । यह गुणकारविधि पहले कहे गये जघन्यपद और उत्कृष्टपदमें भी कहनी चाहिए ।

जघन्य-उत्कृष्टपदकी अपेक्षा आहारकशरीरकी अन्तिम स्थितिमें प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥ ३७९ ॥

क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिके बहुत परमाणु सम्भव नहीं हैं ।

॑ ता० प्रतौ ' पुव्वपरूविदजहण्णपदे ' अ० प्रतौ ' पुव्वं परूविदं जहण्णपदे ' इति पाठः ।

पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं ॥ ३८० ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासि त्ति भणिदं होदि ।

चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ३८१ ॥

को गुण० ? सगविदवड्ढगुणहाणीए संखेज्जदिभागो ।

अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं संखेज्ज-गुणं ॥ ३८२ ॥

को गुण० ? संखेज्जा समया । चदुरूवूणअण्णोण्णब्भत्थरासिस्स अद्धमिदि भणिदं होदि ।

अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं । ३८३ ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥ ३८४ ॥

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं । ३८५ ।

के० विसेसो ? चरिमगुणहाणिदव्वमेत्तेणूणबिदियादिगुणहाणिमेत्तो ।

उससे प्रथम स्थितिमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ॥ ३८० ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कुछकम अन्योन्याभ्यस्त राशिप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उससे अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ३८१ ॥

गुणकार क्या है ? अपनी डेढ गुणहानिके संख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे अप्रथम अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र संख्यातगुणा है ।३८२।

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । चार कम अन्योन्याभ्यस्तराशिका अर्धभागप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उससे अप्रथम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३८३ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतना है ।

उससे प्रथम गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३८४ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अंतिम गुणहानिके द्रव्यका जितना प्रमाण है उतना है ।

उससे अचरम गुणहानिस्थानान्तरोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥ ३८५ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? द्वितीय आदि गुणहानियोंके द्रव्यमेंसे अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८६॥

के० विसेसो ? पढम-चरिमणिसेगेहि ऊणचरिमगुणहाणिदव्वमेत्तो ।

अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८७॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगमेत्तो ।

अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८८॥

के० विसेसो ? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो ।

सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ॥३८९॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? चरिमणिसेयमेत्तो ।

एवं पदेसविरओ त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

णिसेयअप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि- जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥३९०॥

उससे अप्रथम-अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८६॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम गुणहानिके द्रव्यमेंसे प्रथम और अन्तिम निषेकके द्रव्यको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है ।

उससे अप्रथम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८७॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जो प्रमाण है उतना है ।

उससे अचरम स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८८॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? प्रथम निषकके प्रमाणमेंसे अन्तिम निषेकके प्रमाणको कम करनेपर जो शेष रहे उतना है ।

उससे सब स्थितियों और सब गुणहानिस्थानान्तरमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है ॥३८९॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? अन्तिम निषेकका जितना प्रमाण है उतना है ।

इस प्रकार प्रदेशविरच अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

निषेक अल्पबहुत्वका प्रकरण है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं— जघन्यपद, उत्कृष्टपद और जघन्य-उत्कृष्टपद ॥३९०॥

♣ अ० प्रतौ ' पदेसग्गं विसेसग्गं विसेसा० ' इति पाठः ।

एगगुणहाणिअद्धाणं जहण्णपदं णाम, एगसंखत्तादो । णाणागुणहाणिसलागाओ उक्कस्सपदं णाम, अणेगसंखत्तादो । गुणहाणिअद्धाणं पेक्खिदूण णाणागुणहाणिसलागाणमसंखेज्जगुणत्तदंसणादो वा उक्कस्सं णाणागुणहाणिसलागाणं । आहार☼-कम्मइयगुणगारसलागाहि वियहिचारो, पाधण्णपदमस्सिदूण गुणहाणिसलागाणं उक्कस्सववएसादो । दव्वट्ठियणयावलंबणादो त्ति भणिदं होदि ।

जहण्णपदेण सव्वत्थोवमोरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं ॥ ३९१ ॥

कुदो ? अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो । होंता वि तिण्णि गुणहाणिट्ठाणंतराणि सरिसाणि । तं कुदो णव्वदे ? पुव्वुत्ते अप्पाबहुअसुत्ते णिद्देसादो ।

तेयासरीरस्स एयपदेस✱गुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ ३९२ ॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

कम्मइयसरीरस्स एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।३९३।

एकगुणहानिअध्वानका नाम जघन्यपद है, क्योंकि, उसकी संख्या एक है । नानागुणहानि शलाकाओंका नाम उत्कृष्टपद है, क्योंकि, उनकी संख्या बहुत है । अथवा गुणहानि अध्वानको देखते हुए नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी देखी जाती हैं, इसलिए नानागुणहानिशलाकाओंकी उत्कृष्टपद संज्ञा है । आहारकशरीर और कार्मणशरीरकी गुणहानिशलाकाओंके साथ व्यभिचार भी नहीं आता है, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा नानागुणहानिशलाकाओंकी उत्कृष्ट संज्ञा है । द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन लेनेसे यह संज्ञा रखी है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

जघन्यपदकी अपेक्षा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक है ॥ ३९१ ॥

क्योंकि, उसका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है । ऐसा होते हुए भी तीनों गुणहानिस्थानान्तर समान हैं ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- एक सूत्रमें एक वचनका निर्देश होनेसे जाना जाता है ।

उससे तैजसशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । ३९२ ।

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । जो पल्यका असंख्यातवां भाग पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

उससे कार्मणशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । ३९३ ।

☼ ता० प्रतौ '-सलागाओ] (अ) णाहार' अ० का० प्रत्योः 'सलागाओ अणाहार' इति पाठः ।
✱ का० प्रतौ 'तेयासरीरस्स णाणापदेस-' इति पाठः ।

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०भागो । एवं जहण्णपदप्पाबहुअं समत्तं ।

उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि ॥३९४॥

कुदो ? संखेज्जरूवत्तादो ।

कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥३९५॥

को गुणगारो ? पलिदो० असंखे०भागो ।

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तेजासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥३९६॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो ? तेजासरीरस्स एगगुणहाणि*-अद्धाणादो असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तादो कम्मइयसरीरएगगुणहाणिअद्धाणस्स असंखेज्जगुणत्तादो ।

ओरालियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ॥३९७॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

इसप्रकार जघन्यपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर सबसे स्तोक हैं ॥३९४॥

क्योंकि, उनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे कार्मणशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥३९५॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥३९६॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, असंख्यात पल्योंके प्रथम वर्गमूलप्रमाण तैजसशरीरके एकगुणहानि अध्वानसे कार्मणशरीरकी एकगुणहानिका अध्वान असंख्यातगुणा है ।

उनसे औदारिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥३९७॥

---

* ता० प्रतौ ' तेजासरीरस्स णाणागुणहाणि– ' इति पाठः ।

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि* पलिदोवम-पढमवग्गमूलाणि ।

वेउव्वियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्ज-गुणाणि ॥ ३९८ ॥

को गुण० ? असंखेज्जा समया । कुदो ? दोण्णं गुणहाणिअद्धाणाणि सरिसाणि होदूण तेहि विहज्जमाणतिपलिदोवमेहिंतो तेत्तीससागरोवमाणं संखेज्जगुणत्तदंसणादो ।

एवं उक्कस्सपदप्पाबहुअं समत्तं ।

जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेस-गुणहाणिट्ठाणंतराणि ॥ ३९९ ॥

कुदो ? संखेज्जसमयाणं ।- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणं-तरमसंखेज्जगुणं ॥ ४०० ॥

कुदो ? तिण्णि वि गुणहाणिट्ठाणंतराणि सरिसाणि होदूण अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो ।

कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥ ४०१ ॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । जो कि पल्यका असंख्यातवां भाग पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

उनसे वैक्रियिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं ।३९८।

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है, क्योंकि, दोनोंके गुणहानिअध्वान समान हैं इसलिए उनसे भाजित किये जानेवाले तीन पल्योंसे तेतीस सागर संख्यातगुणे देखे जाते हैं ।

इस प्रकार उत्कृष्टपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

जघन्य-उत्कृष्टपदकी अपेक्षा आहारकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर-सबसे स्तोक हैं । ३९९ ।

क्योंकि, उनका प्रमाण संख्यात है ।

उनसे औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका एकप्रदेश-गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । ४०० ।

क्योंकि, तीन ही गुणहानिस्थानांतर सदृश होते हुए प्रत्येकका अध्वान अंतर्मुहूर्तप्रमाण है ।

उनसे कार्मणशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ।४०१।

* का० प्रतौ ' को गुणगारो असंखेज्जाणि ' इति पाठः ।

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो ।

तेयासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥४०२॥

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो ।

तेयासरीरस्स एगपदेस*गुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।४०३।

को गुण०? असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ।

कम्मइयसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।४०४।

को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो ।

ओरालियसरीरस्स णाणागुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्ज-गुणाणि ॥४०५॥

को गुण० असंखेज्जाणि पलिदोवमच्छेदणयपढमवग्गमूलाणि ।

वेउव्वियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्ज-गुणाणि ॥४०६॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥४०२॥

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥४०३ ।

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

उससे कार्मणशरीरका एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है ॥४०४।

गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे औदारिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं ॥४०५॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात पल्योंके जितने अर्धच्छेद हों उतने प्रथम वर्गमूलप्रमाण गुणकार है ।

उनसे वैक्रियिकशरीरके नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर संख्यातगुणे हैं ॥४०६॥

---

* ता० प्रतौ ' तेयासरीरस्स णाणा (एग) पदेस- ' अ० का० प्रत्योः 'तेणासरीरस्स णाणापदेस-' इति पाठः ।

को गुण० ? संखेज्जा समया ।

एवं णिसेयपरूवणा समत्ता ।

गुणगारे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि-जहण्णपदं उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ॥ ४०७ ॥

जहण्णदव्वमस्सिदूण जो गुणगारो तं जहण्णपदं णाम । उक्कस्सदव्वमस्सिदूण जो गुणगारो तमुक्कस्सपदं णाम । उभयमस्सिऊण जो गुणगारो तं जहण्णुक्कस्सपदं णाम ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जहण्णपदे सव्वत्थोवा ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो ॥ ४०८ ॥

कुदो ? सहावियादो । जहण्णपदप्पाबहुए कीरमाणे सेडीए असंखे०भागो गुणगारो होदि त्ति भणिदं होदि । तं जहा- सव्वत्थोवमोरालियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं । तं पुण एगसमयपबद्धमेत्तं सुहुमेइंदियअपज्जत्तएण पढमसमयतब्भवत्थेण जहण्णउववादजोगेण अपज्जत्तणिव्वत्तणणिमित्तं गहिदणोकम्मपदेसग्गं । वेउव्विय-सरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमसंखे०गुणं । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । एदं पि एगसमयपबद्धमेत्तं असण्णिपच्छायददेव-णेरइएसु उप्पण्णेण पढमसमयआहारएण

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

इस प्रकार निषेकप्ररूपणा समाप्त हुई ।

गुणकारका प्रकरण है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं—जघन्यपद, उत्कृष्टपद और जघन्य-उत्कृष्टपद ॥४०७॥

जघन्य द्रव्यका आश्रय कर जो गुणकार है वह जघन्यपद कहलाता है । उत्कृष्टपदका आश्रय कर जो गुणकार है वह उत्कृष्टपद कहलाता है और दोनोंका आश्रय कर जो गुणकार है वह जघन्य-उत्कृष्टपद कहलाता है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरका जघन्य गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४०८॥

क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व करने पर जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । यथा-औदारिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है । परन्तु वह प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवके द्वारा जघन्य उपपादयोगसे अपर्याप्तिकी रचना के लिए ग्रहण किया गया नोकर्मप्रदेशाग्र एक समयप्रबद्धमात्र होता है । उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यह भी प्रथम समयमें आहारक हुए तथा प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए ऐसे असंज्ञियोंमें से आकर देव और नारकियोंमें

पढमसमयतब्भत्थेण जहण्णउववादजोगेण गहिदणोकम्मपदेसग्गं । आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । एवं पि एगसमयपबद्धमेत्तं आहारसरीरमुट्ठावेंतसंजदेण पढमसमयतप्पाओग्गजहण्णपरिणामजोगेण गहिदणोकम्मपदेसग्गं ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥४०९॥

एदेण सुत्तेण तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णदव्वाणं गुणगारो परूविदो । तं जहा-आहारसरीरस्स जहण्णपदेसग्गादो तेजासरीरस्स जहण्णपदेसग्गमणंतगुणं । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एवं पि अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स☼ एयंताणुवड्ढीए वड्ढमाणयस्स जहण्णजोगिस्स सामित्तचरिमसमयए वट्टमाणस्स होदि । कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमणंतगुणं । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । एवं पि खविदकम्मंसियलक्खणेणागदअजोगिचरिमसमए वट्टमाणअघादिचदुक्कदव्वं घेत्तव्वं ।

एवं जहण्णपदप्पाबहुअं समत्तं ।

उत्पन्न हुए जीवके द्वारा जघन्य उपपादयोगसे ग्रहण किया गया नोकर्मप्रदेशाग्र एक समयप्रबद्ध प्रमाण होता है । उससे आहारकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । यह भी आहारकशरीरको उत्पन्न करनेवाले संयतके द्वारा प्रथम समयमें तत्प्रायोग्य जघन्य परिणामयोगके द्वारा ग्रहण किया गया नोकर्मप्रदेशाग्र एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है ।

तैजसशरीर और कार्मणशरीरका जघन्य गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥४०९॥

इस सूत्रके द्वारा तैजसशरीर और कार्मणशरीरके जघन्य द्रव्योंका गुणकार कहा गया है । यथा--आहारकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रसे तैजसशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह प्रदेशाग्र भी एकान्तवृद्धिसे वृद्धिगत जघन्य योगवाले और स्वामित्वके अन्तिम समयमें विद्यमान अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके होता है । उससे कार्मणशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है । यह भी क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आये हुए अयोगी जीवके अन्तिम समयमें विद्यमान अघातिचतुष्कके द्रव्यरूप ग्रहण करना चाहिए ।

इस प्रकार जघन्य पदकी अपेक्षा अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

पु. 394 427

☼ ता० प्रतौ '-जीवपज्जत्तयस्स' इति पाठः ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो ॥४१०॥

जहण्णउववादजोगेण बद्धएगोरालियसमयपबद्धादो उक्कस्सपरिणामजोगेण बद्धएगोरालियसमयपबद्धो तिण्णिपलिदोवमसंचिददिवड्ढगुणहाणिमेत्तउक्कस्सओरालियसमयपबद्धा वा असंखेज्जगुणा। एत्थ गुणगारो पलिदो० असंखे०भागो।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥४११॥

जहा ओरालियसरीरजहण्णदव्वादो उक्कस्सदव्वं पलिदो० असंखे०भागगुणं तहा सेसचदुण्णं सरीराणं पि सगसगजहण्णसमयपबद्धादो सगसगउक्कस्ससमयपबद्धो गुणिदकम्मंसियलक्खणेण संचिददिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा वा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागगुणा। णवरि एगुक्कस्ससमयपबद्धं पडुच्च जोगगुणगारो गुणिदकम्मंसियलक्खणेण संचिदसव्वुक्कस्सदव्वं पडुच्च जोगगुणगारेण गुणिददिवड्ढगुणहाणीओ गुणगारो होदि। णवरि कम्मइयसरीरस्स जहण्णदव्वमुक्कस्सदव्वं च दिवड्ढगुणहाणिगुणिदसमयपबद्धमेत्तं होदि, अणादिबंधेण बंधत्तादो। एत्थ वि जहण्णदव्वादो उक्कस्सदव्वगुणगारो जोगगुणगारमेत्तो। एवमुक्कस्सपदेण सत्थाणप्पाबहुअं समत्तं।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरका उत्कृष्ट गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१०॥

जघन्य उपपादयोगसे बन्धको प्राप्त हुए औदारिकशरीरके एक समयप्रबद्धसे उत्कृष्ट परिणामयोगसे बन्धको प्राप्त हुआ औदारिकशरीरका एक समयप्रबद्ध अथवा तीन पल्य कालके भीतर संचित हुए डेढ़ गुणहानि प्रमाण औदारिकशरीरके उत्कृष्ट समयप्रबद्ध असंख्यातगुणे हैं। यहाँ पर गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी अपेक्षासे जानना चाहिए ॥४११॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरके जघन्य द्रव्यसे उसका उत्कृष्ट द्रव्य पल्यके असंख्यातवें भागगुणा कहा है उसीप्रकार शेष चार शरीरोंके भी अपने अपने जघन्य समयप्रबद्धसे अपना अपना उत्कृष्ट समयप्रबद्ध अथवा गुणितकर्मांशिकलक्षणसे सञ्चित हुए डेढ़ गुणहानिप्रमाण समयप्रबद्ध पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणे हैं। इतनी विशेषता है कि एक उत्कृष्ट समयप्रबद्धकी अपेक्षा योगगुणकार ही गुणकार होता है और गुणितकर्मांशिकलक्षणसे सञ्चित हुए सर्वोत्कृष्ट द्रव्यकी अपेक्षा योगगुणकारसे गुणित डेढ़ गुणहानियाँ गुणकार होता है। इतनी और विशेषता है कि कार्मणशरीरका जघन्य द्रव्य और उत्कृष्ट द्रव्य डेढ़ गुणहानिगुणित समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, उसका अनादिसम्बन्धरूपसे बन्ध उपलब्ध होता है। यहाँ भी जघन्य द्रव्यसे उत्कृष्ट द्रव्य लानेके लिए गुणकार योगगुणकारप्रमाण है।

इस प्रकार उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

जहण्णुक्कस्सपदेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो ॥४१२॥

उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥४१३॥

तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥४१४॥

तस्सेव उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥४१५॥

एवेहि चदुहि वि सुत्तेहि जहण्णुक्कस्सपदप्पाबहुअस्स गुणगाराणं परूवणा कदा । तं जहा-सव्वत्थोवमोरालियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं, सुहुमेइंदियअपज्जत्तजहण्णउववादजोगेण आगदएगसमयपबद्धत्तादो । तस्सेव उक्कस्सयं पदेसग्गमसंखेज्ज-गुणं । को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो ? तिपलिदोवमाउअमणुस्सचरिम-समयउक्कस्सदव्वग्गहणादो । वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुण० ? सेडीए असंखे० भागो । कुदो ? असण्णिपच्छायदेण देवेण णेरइएण वा जहण्णउववादजोगेण संचिदएगसमयपबद्धपमाणत्तादो । कथं जहण्णजोगिस्स दव्वं

जघन्य-उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारक-शरीरका जघन्य गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१२॥

तथा उत्कृष्ट गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१३॥

तैजसशरीर और कार्मणशरीरका जघन्य गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है ॥४१४॥

तथा उन्हींका उत्कृष्ट गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥४१५॥

इन चारों ही सूत्रोंके द्वारा जघन्यपद और उत्कृष्टपदकी अपेक्षा अल्पबहुत्वके गुणकारोंकी प्ररूपणा की है । यथा-औदारिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है; क्योंकि, वह सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य उपपाद योगके द्वारा ग्रहण किये गए एक समयप्रबद्धप्रमाण है । उससे उसीका उत्कृष्ट प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, तीन पल्यकी आयुवाले मनुष्योंके अन्तिम समयमें जो उत्कृष्ट द्रव्य होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है । उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यात-गुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, वह असंज्ञी जीवोंमेंसे आकर उत्पन्न हुए देव या नारकीके द्वारा जघन्य उपपादयोगसे संचित हुए एक समय-प्रबद्धप्रमाण होता है ।

सेडीए असंखे०भागगुणं होज्ज ? ण, जादिविसेसेण वेउव्वियजहण्णसमयपबद्धस्स सेडीए असंखेज्जदिभागगुणत्तं पडि[*] विरोधाभावादो । तस्सेव उक्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुण० ? पलिदोवमासंखे०भागो । कुदो ? गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागदआरणच्चुदकप्पवासियदेवस्स चरिमसमयसंचयग्गहणादो । आहारसरीरस्स जहण्णयं पवेसग्गमसंखे०गुणं । को गुण० ? को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । कुदो ? उत्तरसरीरमुट्ठावेंतपढमसमयसाहुस्स जहण्णजोगेणागदएगसमयपबद्धग्गहणादो । एत्थ वि जादिविसेसेणेव गुणगारो सेडीए असंखे०भागो होदि त्ति घेत्तव्वो । तस्सेव उक्कस्सयं पवेसग्गमसंखेज्जगुणं । को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो ? उत्तरसरीरं विउव्विदूण मूलसरीरं पविसमाणचरिमसमयआहारसाहुस्स उक्कस्ससंचयग्गहणादो । तेजइयसरीरस्स जहण्णयं पवेसग्गमणंतगुणं । को गुण०[*] ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । कुदो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तजहण्णएगंताणुवड्ढिजोगकालस्स चरिमसमयतेजइयदव्वग्गहणादो । पुव्विल्लाणं गुणगारो सेडीए असंखे०भागो । एदस्स गुणगारो कथमणंतो होज्ज ? साभावियादो । तस्सेव उक्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणं । को

शंका-- जघन्य योगवालेका द्रव्य जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणा कैसे होता है?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, जातिविशेषके कारण वैक्रियिकशरीरके जघन्य समयप्रबद्धके जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाणगुणे होने में कोई विरोध नहीं है ।

उससे उसीका उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, गुणितकर्मांशिकलक्षणसे आए हुए आरण-अच्युत कल्पवासी देवके अन्तिम समयमें जो संचय होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है । उससे आहारकशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले साधुके जघन्य योगसे जो एक समयप्रबद्ध प्राप्त होता है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है । यहाँ पर भी जातिविशेषके ही कारण गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा ग्रहण करना चाहिए । उससे उसीका उत्कृष्ट प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, उत्तरशरीरकी विक्रिया करके मूल शरीरमें प्रवेश करनेवाले अन्तिम समयवर्ती आहारकशरीरी साधुके जो उत्कृष्ट संचय होता है उसका यहाँ ग्रहण किया है । उससे तैजसशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगकालके अन्तिम समयमें जो तैजसशरीरका द्रव्य होता है उसका यहां ग्रहण किया है ।

शंका-- पहलेके शरीरोंका गुणकार जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । ऐसी अवस्थामें इस शरीरका गुणकार अनन्त कैसे हो सकता है ?

समाधान-- ऐसा स्वभाव है ।

[*] अ० प्रतौ ' जहण्णजोगिस्स दव्वं सेडीए असंखे०भागगुणत्तं पडि ' इति पाठः ।

[*] ता० प्रतौ ' पवेसग्गमसंखे०गुणं (मणंतगुणं) को गुण० ' इति पाठः ।

गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो सत्तमाए पुढवीए चरिमसमयणेरइयस्स गुणिदकम्मंसियस्स उक्कस्स*तेजादव्वग्गहणादो । कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पवेसग्गमणंतगुणं । को गुण० ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो । कुदो ? खविदकम्मंसियलक्खणेणागदचरिमसमयअजोगिदव्वग्गहणादो । तस्सेव उक्कस्सदव्वमसंखे०गुणं । को गुण० ? पलिदो० असंखे०भागो । कुदो गुणिदकम्मंसियलक्खणेणागदसत्तमपुढविचरिमसमयणेरइयदव्वग्गहणादो । महाबं०

एवं गुणगारो त्ति समत्तमणुओगद्दारं ।

पदमीमांसाए तत्थ इमाणि दुवे अणुयोगद्दाराणि—जहण्णपदे उक्कस्सपदे ॥४१६॥

जत्थ पंचण्णं सरीराणं जहण्णदव्वपरिक्खा कीरदि सा जहण्णपदमीमांसा । जत्थ उक्कस्सदव्वपरिक्खा कीरदि सा उक्कस्सपदमीमांसा ।

उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं पवेसग्गं कस्स ॥४१७॥

उससे उसीका उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, सातवीं पृथिवीमें अन्तिम समयवर्ती नारकीके गुणितकर्मांशिकविधिसे जो तैजसशरीरका उत्कृष्ट द्रव्य होता है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है । उससे कार्मणशरीरका जघन्य प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे आए हुए अन्तिम समयवर्ती अयोगिकेवलीके जो द्रव्य होता है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है । उससे उसीका उत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, गुणितकर्मांशिकलक्षणसे आये हुए सातवीं पृथिवीके अन्तिम समयवर्ती नारकीका जो द्रव्य है उसका यहाँ पर ग्रहण किया है ।

इस प्रकार गुणकार अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

पदमीमांसाका प्रकरण है । उसमें ये दो अनुयोगद्वार होते हैं-जघन्यपद और उत्कृष्टपद ॥४१६॥

जहाँ पाँचों शरीरोंके जघन्य द्रव्यकी परीक्षा की जाती है वह जघन्य पदमीमांसा है और जहाँपर उत्कृष्ट द्रव्यकी परीक्षा की जाती है वह उत्कृष्ट पदमीमांसा है ।

उत्कृष्टपदकी अपेक्षा औदारिक शरीरके उत्कृष्ट प्रवेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४१७॥

---

* ता० प्रतौ ' -कम्मंसियउक्कस्स- ' इति पाठः ।

किं देवस्स किं णेरइयस्स किं तिरिक्खस्स किं मणुस्सस्स किं पज्जत्तस्स किमपज्जत्तस्स किं सण्णिस्स किमसण्णिस्स किमेइंदियस्स इच्चादिपुच्छाओ एत्थ कायव्वाओ।

अण्णदरस्स उत्तरकुरु-देवकुरुमणुअस्स तिपलिदोवम-

मागंदर्शक **ट्ठिदियस्स** [illegible]

इत्थि-पुरिसवेदेहि सम्मत्त-मिच्छत्तादिगुणेहि य दव्वविसेसो णत्थि त्ति जाणावणट्ठ-मण्णदरणिद्देसो कदो। सेसगइपडिसेहट्ठं सेसमणुस्सपडिसेहट्ठं च उत्तरकुरु-देवकुरु-मणुस्सग्गहणं कदं। किमट्ठमण्णेसिं पडिसेहो कदो? अण्णत्थ बहुसादाभावादो। असा-देण ओरालियसरीरपोग्गलस्स बहुअस्स अपचयदंसणादो। उत्तरकुरु-देवकुरुमणुआ सव्वे तिपलिदोवमट्ठिदिया चेव तदो तिपलिदोवमट्ठिदियस्से त्ति विसेसणमजुत्तं? ण एस दोसो, उत्तरकुरु-देवकुरुमणुआ तिपलिदोवमट्ठिदिया चेवे त्ति तत्थ सेसाउट्ठिदिवि-यप्पपडिसेहफलत्तादो। ण च एदं सुत्तं मोत्तूण अण्णं सुत्तमत्थि जेण उत्तरकुरु-देवकुरु-मणुआ तिपलिदोवमट्ठिदिया चेव होंति त्ति णव्वदि तदो सफलमेदं विसेसणं। समयाहिय-दुपलिदोवमे आदिं[✡]कादूण जाव समऊणतिण्णिपलिदोवमाणि त्ति ट्ठिदिवियप्पपडिसेहट्ठं

क्या देव है, क्या नारकी है, क्या तिर्यञ्च है या क्या मनुष्य है; क्या पर्याप्त है या क्या अपर्याप्त है; क्या संज्ञी है या क्या असंज्ञी है; तथा क्या एकेन्द्रिय है आदि पृच्छायें यहाँ पर करनी चाहिए।

जो तीन पल्यकी आयुवाला उत्तरकुरु और देवकुरुका अन्यतर मनुष्य है ।४१८।

स्त्रीवेद और पुरुषवेदके कारण तथा सम्यक्त्व और मिथ्यात्व आदि गुणोंके कारण द्रव्य विशेष नहीं होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए अन्यतरपदका निर्देश किया है। शेष गतियोंका निषेध करनेके लिए तथा शेष मनुष्योंका निषेध करनेके लिए उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्योंके इस पदका ग्रहण किया है।

शंका-- अन्यके उत्कृष्ट स्वामित्वका किसलिए निषेध किया है?

समाधान-- क्योंकि, अन्यत्र बहुत सातका अभाव है, क्योंकि, असातासे औदारिक-शरीरके बहुत पुद्गलका अपचय देखा जाता है।

शंका-- उत्तरकुरु और देवकुरुके सब मनुष्य तीन पल्यकी स्थितिवाले ही होते हैं इसलिए 'तीन पल्यकी स्थितिवाले के' यह विशेषण युक्त नहीं है?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य तीन पल्यकी स्थितिवाले ही होते हैं ऐसा कहनेका फल वहाँपर शेष आयुस्थितिके विकल्पोंका निषेध करना है; और इस सूत्रको छोडकर अन्य सूत्र नहीं है जिससे यह ज्ञान हो कि उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य तीन पल्यकी स्थितिवाले ही होते है, अतः यह विशेषण सफल है। अथवा एक समय अधिक दो पल्यसे लेकर एक समय कम तीन पल्य तकके स्थितिविकल्पोंका निषेध करनेके लिए

✡ ता० प्रतौ '-दुपलिदोवमआदि' इति पाठः।

वा तिपलिदोवमग्गहणं । ण च सव्वट्ठसिद्धिदेवाउअं व णिव्विअप्पं तदाउअं, तप्प-रूवयसुत्त-वक्खाणाणमणुवलंभादो । संपहि तस्स मणुयस्स लक्खणपरूवणट्ठमुत्तर-सुत्तं भणदि--

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सेण जोगेण आहारिदो । ४१९ ।

सरीरपाओग्गपोग्गलपिंडग्गहणमाहारो । तत्थ पढमसमयआहारएण आहारिदो । बिदियादिसमयआहारपडिसेहट्ठं पढमसमएण आहारो विसेसिदो । एसो पढमसमय-आहारो पढमसमयतब्भवत्थो बिदियसमयतब्भवत्थो तदियसमयतब्भवत्थो वि अत्थि, तत्थ बिदिय-तदियसमयतब्भवत्थाहाराणं पडिसेहट्ठं पढमसमयतब्भवत्थविसेसणेण* पढमसमयआहारो विसेसिदो । विग्गहगदीए उप्पण्णे को दोसो ? ण, दोसमयसंचय-दव्वस्स✱ अभावप्पसंगादो । उक्कस्सजोगो जस्स पढमसमयआहारस्स सो उक्कस्सो जोगो तेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो । अणाहारवियप्पपडिसेहट्ठं एवकारणिद्देसो कदो । एवमुप्पण्णपढमसमए आहारविसेसं परूविय संपहि बिदियादिसमएसु आहार-

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सूत्रमें तीन पल्यकी स्थितिवाले पदका ग्रहण किया है। सर्वार्थसिद्धिके देवोंकी आयु जिस प्रकार निर्विकल्प होती है उस प्रकार वहाँकी आयु निर्विकल्प नहीं होती, क्योंकि, इस प्रकारकी आयुकी प्ररूपणा करनेवाला सूत्र और व्याख्यान नहीं उपलब्ध होता ।

अब उस मनुष्यके लक्षणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

उसी मनुष्यने प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया ॥ ४१९ ॥

शरीरके योग्य पुद्गलपिण्डका ग्रहण करना आहार है। वहाँ प्रथम समयमें आहारक होकर आहार ग्रहण किया। द्वितीय आदि समयोंमें आहारका प्रतिषेध करनेके लिए 'प्रथम समय' पदसे आहारको विशेषित किया है। यह प्रथम समयका आहार प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर, दूसरे समयमें तद्भवस्थ होकर और तीसरे समयमें तद्भवस्थ होकर भी होता है, अतः वहाँ द्वितीय और तृतीय समयमें तद्भवस्थ होकर जो आहार होता है उसका प्रतिषेध करनेके लिए 'प्रथम समयमें तद्भवस्थ' इस विशेषणसे प्रथम समयके आहारको विशेषित किया है।

शंका-- विग्रहगतिसे उत्पन्न होनेमें क्या दोष है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, दो समयमें संचित हुए द्रव्यके अभावका प्रसंग आता है।

प्रथम समयमें आहारक जिस जीवके जो उत्कृष्ट योग होता है वह उत्कृष्ट योग वहाँपर विवक्षित है। उस उत्कृष्ट योगसे आहार ग्रहण किया। अनाहार विकल्पका निषेध करनेके लिए 'एवकार' पदका निर्देश किया है। इस प्रकार उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आहार विशेषका कथन

* अ० प्रतौ 'विसेसणं' का० प्रतौ 'विसेसण' इति पाठः ।
✱ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'दोससंचयदव्वस्स' इति पाठः ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

गहणक्कमपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥ ४२० ॥

पढमसमयजोगादो बिदियसमयजोगो असंखेज्जगुणो। बिदियादो तदियसमयजोगो असंखेज्जगुणो। एवं णेयव्वं जाव एगंताणुवड्ढिचरिमसमओ त्ति। एत्थ गुणगारपमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। एत्थ गुणगारो जहण्णओ वि उक्कस्सओ वि अत्थि। णवरि जहण्णादो उक्कस्सो असंखेज्जगुणो। तत्थ जहण्णवड्ढिपडिसेहट्ठमुक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो त्ति भणिदं। एदेण एयंताणुवड्ढीए आहारणक्कमो परूविदो। किमट्ठं उक्कस्सजोगेणेव आहारा विज्जदि ? बहुपोग्गलग्गहणट्ठं।

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ।४२१।

छपज्जत्तिसमाणणकालो जहण्णओ उक्कस्सओ वि अंतोमुहुत्तमेत्तो। तत्थ सव्वजहण्णेण अंतोमुहुत्तेण कालेण सव्वाहि य पज्जत्तीहि[☼] पज्जत्तयदो त्ति वुत्तं होदि। किमट्ठं अपज्जत्तकालो लहुओ घेप्पदि ? पज्जत्तकालपरिणामजोगेहिंतो अपज्जत्तकालएगंताणुवड्ढिजोगेहि असंखेज्जगुणहीणेहि[✱] बहुपोग्गलग्गहणाभावादो।

करके अब द्वितीय आदि समयोंमें आहारग्रहणके क्रमका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं---

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ। ४२० ॥

प्रथम समयके योगसे द्वितीय समयका योग असंख्यातगुणा है। दूसरे समयके योगसे तीसरे समयका योग असंख्यातगुणा है। इस प्रकार एकान्तानुवृद्धियोगके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए। यहाँपर गुणकारका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। यहाँ पर गुणकार जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। इतनी विशेषता है कि जघन्यसे उत्कृष्ट असंख्यातगुणा है। उनमेंसे जघन्य वृद्धिका प्रतिषेध करनेके लिए उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ यह कहा है। इसद्वारा एकान्तानुवृद्धिसे आहारग्रहणका क्रम कहा गया है।

शंका-- उत्कृष्ट योगसे ही आहारग्रहण क्यों कराया गया है ?

समाधान-- बहुत पुद्गलोंके ग्रहण करनेके लिए।

अन्तर्मुहूर्त अर्थात् सबसे लघु काल द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ। ४२१।

छह पर्याप्तियोंके पूरा होनेका काल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उनमेंसे सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका-- लघु अपर्याप्त काल किसलिए ग्रहण किया जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, पर्याप्तकालीन परिणामयोगोंसे अपर्याप्तकालीन एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणे हीन होते हैं अतः उनके द्वारा बहुत पुद्गलोंका ग्रहण नहीं होता, इसलिए अपर्याप्त काल लघु ग्रहण किया है।

☼ अ० प्रतौ 'सव्वाहि पज्जत्तीहि' इति पाठः। ✱ ता० प्रतौ 'असंखेज्जगुणेहि' इति पाठः।

तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ॥ ४२२ ॥

सव्वाओ पज्जत्तीओ समाणिय भासंतस्स जस्स अप्पाओ भासद्धाओ सो उक्कस्सदव्वसामी होदि । भासाकालस्स ♠ थोवत्तं किमट्ठमिच्छिज्जदे? ण, भासा-वावारेण जणिदपरिस्समेण भासापोग्गलणमभिघादेण य बहुआणं ओरालियपोग्गलाणं परिसदणप्पसंगादो ।

अप्पाओ मणजोगद्धाओ ॥ ४२३ ॥

चिंताजणिदपरिस्समेण परिगलंतपोग्गलक्खंधपडिसेहट्ठं अप्पाओ मणजोग-द्धाओ त्ति भणिदं ।

अप्पा छविच्छेदा ॥ ४२४ ॥

छवी सरीरं । तस्स णहादीणं ✡ किरियाविसेसेहि खंडणं छेदो णाम । ते छेदा तत्थ अप्पा थोवा, बहुआणं किरियाणमंतरे तव्विरोहाभावादो । जेहि सरीरपीडा होदि ते तत्थ अप्पाणि त्ति भावत्थो ।

अंतरे ण कदाइ विउव्विदो ॥ ४२५ ॥

उसके बोलनेके काल अल्प हैं ॥ ४२२ ॥

सब पर्याप्तियोंको समाप्त करके बोलते हुए जिसके भाषाकाल अल्प हैं वह उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी है ।

शंका- भाषाकालका स्तोकपना किसलिए चाहते हैं ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, भाषाके व्यापारसे जो परिश्रम होता है उससे तथा भाषा-रूप पुद्गलोंका अभिघात होनेसे बहुत औदारिकशरीरके पुद्गललोंकी निर्जरा होनेका प्रसंग आता है, इसलिए भाषाकालका स्तोकपना चाहते हैं ।

मनोयोगके काल अल्प हैं ॥ ४२३ ॥

चिन्ताके कारण जो परिश्रम होता है उससे गलनेवाले पुद्गलस्कन्धोंका निषेध करनेके लिए ' मनोयोगके काल अल्प हैं ' यह कहा है ।

छविछेद अल्प हैं । ४२४ ।

छवि शरीरको कहते हैं । उसके नख आदिका क्रियाविशेषके द्वारा खण्डन करना छेद है । वे छेद वहां अल्प अर्थात् स्तोक हैं, क्योंकि, बहुत क्रियाओंके बिना उसके होनेमें कोई विरोध नहीं आता । जिनसे शरीरपीडा होती है वे वहां अल्प हैं यह इसका भावार्थ है ।

आयुकालके मध्य कदाचित् विक्रिया नहीं की ॥ ४२५ ॥

♠ ता० प्रतौ 'भासकालस्स' इति पाठः । ✡ प्रतिषु 'तस्सणहादीणं' इति पाठः ।

एत्थंतरे तिपलिदोवमाउअमणुपालेमाणो ण कदा विउव्विदो । कुदो? तत्थ परिचत्तोरालियसरीरस्स विउव्वणप्पयमोरालियसरीरं गेण्हंतस्स केवलं तप्परिसडण-प्पसंगादो । ण चेदं विउव्वणसरीरं ओरालियं, विप्पडिसेहादो ।

थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्त-द्धमच्छिदो* ॥ ४२६ ॥

जवमज्झं णाम अट्ठसमयपाओग्गजोगट्ठाणाणि । तेहिंतो उवरिमजोगट्ठाणेसु हेट्ठिमजोगट्ठाणेहिंतो असंखेज्जगुणेसु अंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो✡ । किमट्ठं ? बहुपोग्गल-ग्गहणट्ठं । तत्थ बहुअं कालं किण्ण अच्छदि ? ण, अंतोमुहुत्तादो उवरि तत्थ अच्छणस्स संभवाभावादो । एदं कालदेसामासियसुत्तत्थपरूवणट्ठं✡ । एवमुवजोग-जवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्तद्धमच्छदि त्ति ण घेत्तव्वं किंतु तिण्णं पलिदोवमाणम-ब्भंतरे जदा जदा संभवदि तदा तदा जवमज्झस्स उवरि जोगट्ठाणेसु चेव परिणमदि त्ति घेत्तव्वं ।

See पु.2 पृ.238
पु.15 पृ.64
But see पु.14 पृ.282
पु.10 पृ.296
पु.9 पृ.328

' एत्थंतरे ' अर्थात् तीन पल्यप्रमाण आयुका पालन करते हुए कदाचित् विक्रिया नहीं की, क्योंकि, औदारिकशरीरका त्याग कर विक्रियारूप औदारिकशरीरको ग्रहण करनेवालेके केवल उसकी निर्जरा होनेका प्रसंग आता है । यह विक्रियारूप शरीर भी औदारिक है ऐसा कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, विक्रियारूप शरीरके औदारिक होनेका निषेध है ।

जीवितव्य कालके स्तोक शेष रहनेपर योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ॥ ४२६ ॥

आठ समयप्रायोग्य योगस्थानोंको यवमध्य कहते हैं । उससे अधस्तन योगस्थानोंसे असंख्यातगुणे उपरिम योगस्थानोंमें अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ।

शंका– वहां अन्तर्मुहूर्त काल तक किसलिए रहा ?

समाधान– बहुत पुद्गलोंका संग्रह करनेके लिए ।

शंका– वहां बहुत काल तक क्यों नहीं रहता है?

समाधान– नहीं, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्त कालसे अधिक कालतक वहां रहना सम्भव नहीं है ।

काल देशामर्षक सूत्रके अर्थका कथन करनेके लिए यह वचन है । इससे उपयोगयव-मध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त कालतक रहता है यह ग्रहण नहीं करना चाहिए । किन्तु तीन पल्यप्रमाण कालके भीतर जब जब सम्भव है तब तब यवमध्यके ऊपरके योगस्थानोंमें ही परिणमन करता है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए ।

---

* ता०प्रतौ 'जीविदव्वमेत्तमंतरमत्थि तत्थ (जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्स) उवरिमंतोमुहुत्तत्थ (द्ध) मच्छिदो ' अ०का०प्रत्योः ' जीविदव्वमेत्तमंतरमत्थि तत्थ उवरिमंतोमुहुत्तत्थमच्छि दो ' इति पाठः । ✡ अ०प्रतौ 'अंतोमुहुत्तत्थमच्छिदो' इति पाठः । ✡ ता०प्रतौ '–पुत्तत्थ (त्तमद्ध) परूवणट्ठं' इति पाठः ।

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जविभाग-मच्छिदो ॥ ४२७ ॥

जाव चरिमजीवगुणहाणी तत्थ आवलियाए असंखेज्जविभागमत्थिदूण ताव चरिमजोगेहिंतो तत्थतणजोगाणमसंखेज्जगुणत्तादो । कालजवमज्झादो उवरि अच्छ-माणेसु जदि चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे अच्छंताणं बहुदव्वलाहो होदि तो आवलि० असंखे०भागं मोत्तूण तत्थ बहुकालं किण्ण अच्छाविदो? ण, तत्थ बहुकालमच्छण-संभवाभावादो । एवं हि कालदेसामासियसुत्तं तेण कालमेत्तं मोत्तूण जवमज्झस्स उवरिमच्छमाणो जाव संभवदि ताव चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे चेव अच्छदि त्ति भणिदं होदि ।

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ॥ ४२८ ॥

किमट्ठमेत्थ उक्कस्सजोगं णीदो? जोगवड्ढीदो पदेसबंधवड्ढी बहुगी होदि त्ति जाणावणट्ठं । दो समए मोत्तूण सव्वत्थ भवट्ठिदिम्मि उक्कस्सजोगं किण्ण णीदो?

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहा ॥ ४२७ ॥

क्योंकि, जो अन्तिम जीवगुणहानि है वहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका आश्रय लेकर अन्तिम योगसे वहांके योग असंख्यातगुणे होते है ।

शंका - कालयवमध्यके ऊपर रहनेवाले जीवोंमसे यदि अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्त-रमें रहनेवाले जीवोंको बहुत द्रव्यका लाभ होता है तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालको छोडकर वहां बहुत काल तक क्यों नहीं ठहराया ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, वहां बहुत काल तक रहना सम्भव नहीं है इसलिए वहां आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालसे अधिक काल तक नही ठहराया ।

यह भी कालदेशामर्षक सूत्र है, इसलिए मात्र कालकी विवक्षा न करके यवमध्यके ऊपर रहता हुआ जब तक सम्भव है तब तक अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें ही रहता है यह उक्त सूत्रके कथनका तात्पर्य है ।

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥ ४२८ ॥

शंका - यहां उत्कृष्ट योगको किसलिए प्राप्त कराया है ?

समाधान - योगवृद्धिसे प्रदेशबन्धकी वृद्धि बहुत होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यहां उत्कृष्ट योगको प्राप्त कराया है ।

शंका - दो समयको छोडकर सर्वत्र भवस्थितिके भीतर उत्कृष्ट योगको क्यों नहीं प्राप्त कराया ?

ण, उक्कस्सजोगेण① विसमय-तिसमय-चदुसमयं मोत्तूण सव्वत्थ भवट्ठिदम्मि बहु-कालपरिणमणसत्तीए अभावादो। एदं भवदेसामासियसुत्तं। तेण एत्थ भवम्मि जाव संभवो अत्थि ताव उक्कस्सजोगं चेव गदो त्ति गेण्हियव्वं। एत्थ संकिलेसावासो किण्ण परूविदो? काणाणुसमाणउजुगदीए पडुप्पत्तिमाणाए कसायवड्ढि-हाणीहि कज्जा-भावादो संकिलेसे संते ओलंबणकरणकरणेण बहुणोकम्मपोग्गलाणं गलणप्पसंगादो च।

तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं ॥ ४२९ ॥

तिरिक्खो मणुस्सो वा दाणेण दाणाणुमोदेण वा तिपलिदोवमाउट्ठिदिएसु उत्तरकुरुदेवकुरुमणुस्सेसु आउअं बंधिदूण एवमेदेण कमेण कालगदसमाणो② उजुग-दीए देवकुरु-उत्तरकुरुवेसु उववज्जिय पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सुववादजोगेण आहारिदूण तमाहारिदणोकम्मपदेसं तिण्णं पलिदोवमाणं पढमस-मयमादिं कादूण जाव चरिमसमओ त्ति ताव गोवुच्छागारेण णिसिंचिय तदो बिदिय-समयप्पहुडि उक्कस्सेगंताणुवड्ढिजोगेण वड्ढमाणो अंतोमुहुत्तकालमसंखेज्जगुणाए सेडीए णोकम्मपदेसमाहारिदूण तिण्णं पलिदोवमाणं णिसिंचमाणो सव्वलहुं पज्जत्तीओ

समाधान—नहीं, क्योंकि, उत्कृष्ट योगके साथ दो समय, तीन समय और चार समयको छोड़कर सर्वत्र भवस्थितिके भीतर बहुत काल तक परिणमन करनेकी शक्तिका अभाव है।

यह भवदेशामर्षक सूत्र है, इसलिए इस भवमें जब तक सम्भव है तब तक उत्कृष्ट योगको ही प्राप्त हुआ ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए।

see 4,10 पृ. 228 शंका—यहां पर संक्लेशावासका कथन क्यों नहीं किया है?

2,5,330 समाधान—क्योंकि, मर कर ऋजुगतिके प्राप्त होने पर कषायकी वृद्धि और हानिसे कोई प्रयोजन नहीं है और संक्लेशके सद्भावमें अवलम्बनाकरणके करनेसे बहुत नोकर्मपुद्गलोंके गलनेका प्रसंग प्राप्त होता है, इसलिए यहां संक्लेशावासका ग्रहण नहीं किया है।

अन्तिम समयमें तद्भवस्थ हुए उस जीवके औदारिकशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशाग्र होता है ॥ ४२९ ॥

किसी तिर्यञ्च और मनुष्यने दान या दानके अनुमोदनसे तीन पल्यकी स्थितिवाले देवकुरु और उत्तरकुरुके मनुष्योंकी आयुका बन्ध किया। इस प्रकार इस क्रमसे मर कर ऋजुगतिसे देवकुरु और उत्तरकुरुमें उत्पन्न हुआ। पुनः प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर उत्कृष्ट उपपाद योगसे आहार ग्रहण कर उन ग्रहण किये गये नोकर्मप्रदेशोंको तीन पल्यके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तक गोपुच्छाकारसे निक्षिप्त किया। फिर द्वितीय समयसे लेकर उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धि योगसे वृद्धिको प्राप्त होता हुआ अन्तर्मुहूर्त काल तक असंख्यात-गुणित श्रेणिरूपसे नोकर्मप्रदेशोंको ग्रहण कर तीन पल्यप्रमाण कालमें निक्षिप्त किया। पुनः

---

① ता० का० प्रत्योः 'णीरो? उक्कस्सजोगेण इति पाठः। ② म०प्रतिपाठोऽयम्। ता० प्रतौ बंधिदूण एदेण कालगदसमाणो अ० का० प्रत्योः बंधिदूण एवमेदेण कालगदसमाणो इति पाठः।

समाणिय परिणामजोगम्मि णिवदिय सुत्तवुत्तविहाणेण आगंतूण चरिमसमयट्ठिदो उक्कस्सदव्वसामी होदि त्ति भावत्थो। सिविओ तस्से त्ति णिद्देसो ण णिप्फलो, तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स जीवस्स जमोरालियसरीरं तस्सुक्कस्सयं पदेसग्गमिदि संबंधे कीरमाणे सहलत्तुवलंभादो।

एत्थ संचयाणुगमो भागहारपमाणाणुगमो समयपबद्धपमाणाणुगमो चेदि एदेहि तीहि अणुयोगद्दारेहि उवसंहारो उच्चदे– तत्थ संचयाणुगमस्स परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि। परूवणदाए तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयसंचिददव्वं सामित्तचरिमसमए अत्थि। विदियसमयसंचिददव्वं पि अत्थि। एवं णेयव्वं जाव तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमयसंचिददव्वं ति। परूवणा गदा। तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयसंचिददव्वं केत्तियमत्थि त्ति भणिदे एगसमयपबद्धस्स चरिमगोपुच्छमेत्तमत्थि। जं बिदियसमयसंचिददव्वं तं सामित्तसमए चरिम-दुचरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि। जं तदियसमए संचिददव्वं तं सामित्तसमए चरिम-दुचरिम-तिचरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि। एवं गंतूण कम्मट्ठिदिचरिमसमयसंचिददव्वमेगसमयपबद्धमेत्तमत्थि। पमाणं गदं। अप्पाबहुअं पदेसविरहिय अप्पाबहुए परूविद त्ति णेह वुच्चदे।

भागहारपमाणाणुगमे भण्णमाणे पढमसमए संचिदस्स भागहारो वुच्चदे– एगसमयपबद्धमसंखेज्जेहि लोगेहि खंडिदूण तत्थ एगखंडमेत्तं पढमसमयसंचिददव्वं होदि।

अतिशीघ्र पर्याप्तियोंको समाप्त करके और परिणामयोगको प्राप्त होकर सूत्रमें कही गई विधिसे आकर जो अन्तिम समयमें स्थित होता है वह उत्कृष्ट द्रव्यका स्वामी होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। सूत्रमें द्वितीय 'तस्स' पदका निर्देश निष्फल नहीं है, क्योंकि, उस चरम समयवर्ती तद्भवस्थ जीवके जो औदारिकशरीर होता है उसके उत्कृष्ट प्रदेशाग्र होता है ऐसा सम्बन्ध करने पर उसकी सफलता उपलब्ध होती है।

यहाँ पर सञ्चयानुगम, भागहारप्रमाणानुगम और समयप्रबद्धप्रमाणानुगम इन तीन अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर उपसंहारका कथन करते हैं। उनमेंसे संचयानुगमके प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार हैं। प्ररूपणाका कथन करने पर तीन पल्यप्रमाण कालके प्रथम समयमें संचित हुआ द्रव्य स्वामित्वके अन्तिम समयमें है। द्वितीय समयमें संचित हुआ द्रव्य भी है। इस प्रकार तीन पल्यके अन्तिम समयमें संचित हुए द्रव्यके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। प्ररूपणा समाप्त हुई। तीन पल्यके प्रथम समयमें संचित द्रव्य कितना है ऐसा पूछने पर एक समयप्रबद्धके अन्तिम गोपुच्छप्रमाण है। जो दूसरे समयमें संचित द्रव्य है वह स्वामित्व समयमें चरम और द्विचरम गोपुच्छप्रमाण है। जो तिसरे समयमें संचित द्रव्य है वह स्वामित्व समयमें चरम, द्विचरम और त्रिचरम गोपुच्छप्रमाण है। इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें संचित हुआ द्रव्य एक समयप्रबद्धप्रमाण है। प्रमाण समाप्त हुआ। अल्पबहुत्वका कथन प्रदेशविरहित अल्पबहुत्वके समय कर आये हैं, इसलिए यहाँ नहीं करते।

भागहारप्रमाणानुगमका कथन करने पर प्रथम समयमें संचित हुए द्रव्यका भागहार कहते हैं– एक समयप्रबद्धमें असंख्यात लोकका भाग देकर वहाँ जो एक भागप्रमाण द्रव्य

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

See पृ. 373

असंखेज्जलोगाणमद्धेण किंचूणेण एगसमयपबद्धे खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं बिदियसमयसंचिदवव्वं होदि । पढमभागहारस्स तिभागेण किंचूणेण एगसमयपबद्धे खंडिदे तदियसमयसंचिदवव्वं होदि । एवं गंतूण कम्मट्ठिदिचरिमसमए जं बद्धं कम्मं तस्स एगरूवं भागहारो होदि । तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए संचिदवव्वं चरिमणिसेगमेत्तं होदु णाम बिदियसमयसंचिदवव्वं पुण चरिम-दुचरिमणिसेयमेत्तं ण होदि, तिण्णं पलिदोवमाणमुवरि णिसेयरचणाभावादो । एवमुवरिमसमयपबद्धसंचिदवव्वेसु वि एगादिएगुत्तरकमेण णिसेगा ण संचिणंति त्ति परूवेदव्वं? एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं जहा- तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए बद्धं णोकम्मं तस्सेव तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसयमादिं कादूण जाव चरिमसमओ त्ति ताव गोपुच्छागारेण णिसिंचदि । जं बिदियसमए बद्धं णोकम्मपदेसग्गं तं बिदियसयप्पहुडिगोवुच्छागारेण णिसिंचमाणो ताव गच्छदि जाव तिण्णं पलिदोवमाणं दुचरिमसमओ त्ति । पुणो कम्मट्ठिदिचरिमसमए अप्पिदसमयपबद्धस्स चरिम-दुचरिमगोवुच्छं च णिसिंचदि, उवरि आउट्ठिदीए अभावादो । तदियसमए जं बद्धं णोकम्मपदेसग्गं तं तदियसमयप्पहुडि णिसिंचमाणो ताव गच्छदि जाव दुचरिसमओ त्ति । तदो चरिमसमए अप्पिदसमयपबद्धस्स चरिम-दुचरिम-तिचरिमगोवुच्छाओ णिसिंचदि । पुणो एवं गंतूण तिण्णं पलिदोवमाणं जं

प्राप्त हो वह प्रथम समयमें संचित द्रव्य है । असंख्यात लोकके कुछ कम अर्धभागका एक समयप्रबद्धमें भाग देने पर वहां जो एक भागप्रमाण द्रव्य प्राप्त हो वह द्वितीय समयमें संचित द्रव्य है । प्रथम भागहारके कुछ कम तृतीय भागका एक समयप्रबद्धमें भाग देने पर तीसरे समयमें संचित द्रव्य होता है । इस प्रकार जाकर कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें जो वह बद्ध कर्म है उसका एक अंक भागहार होता है ।

शंका- तीन पल्योंके प्रथम समयमें संचित हुआ द्रव्य अन्तिम निषेकप्रमाण होओ, किन्तु द्वितीय समयमें संचित द्रव्य चरम और द्विचरम निषेकप्रमाण नहीं होता, क्योंकि, तीन पल्योंके ऊपर निषेकरचनाका अभाव है । इसी प्रकार उपरिम समयप्रबद्धोंमें संचित हुए द्रव्योंमें भी एकादि एक अधिक क्रमसे निषेकोंका संचय नहीं बन सकता ऐसा यहां कथन करना चाहिए?

समाधान – यहां इस शंकाका समाधान करते हैं । यथा- तीन पल्योंके प्रथम समयमें जो बद्ध नोकर्म है उसे उन्हीं तीन पल्योंके प्रथम समयसे लेकर अन्तिम समय तक गोपुच्छाकार रूपसे निक्षिप्त करता है । जो दूसरे समयमें बद्ध नोकर्मप्रदेशाग्र है उसे दूसरे समयसे लेकर गोपुच्छाकार रूपसे निक्षिप्त करता हुआ जब तक जाता है जब तक तीन पल्योंका द्विचरम समय है । पुनः नोकर्मस्थितिके अन्तिम समयमें विवक्षित समयप्रबद्धके चरम द्विचरम गोपुच्छको निक्षिप्त करता है, क्योंकि, ऊपर आयुस्थितिका अभाव है । तीसरे समयमें बद्ध जो नोकर्मप्रदेशाग्र है उसे तीसरे समयसे लेकर निक्षिप्त करता हुआ तब तक जाता है जब तक द्विचरम समय प्राप्त होता है । अनन्तर अन्तिम समयमें विवक्षित समयप्रबद्धके चरम, द्विचरम और त्रिचरम गोपुच्छोंको निक्षिप्त करता है । पुनः इस प्रकार जाकर तीन पल्योंके द्विचरम समयमें जो बद्ध

बद्धं णोकम्मं पदेसग्गं तस्स पढमगोवुच्छं दुचरिमसमए णिसिंचिदूण पुणो सेससव्वं दव्वं चरिमसमए णिसिंचदि । पुणो तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमए जं बद्धं कम्मं तं सव्वं पुंजं कादूण चरिमसमए चेव णिसिंचदि । तेण कारणेण पुव्वुत्तभागहारपरूवणा जुज्जदे ।

अण्णे के वि आइरिया एवं भणंति ।जहा-गलिदसेसम्मि आउअम्मि सव्वे समयपबद्धा समयाविरोहेण णिसिंचिज्जंति त्ति । तं जहा–तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमए जं बद्धं कम्मं तं तम्हि चेव पढमसमए बहुगं णिसिंचदि । तत्तो उवरि विसेसहीणं णिसिंचदि जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । पुणो जं चरिमसमए णिसित्तं पदेसग्गं तस्स भाग-हारो असंखेज्जा लोगा होंति । जं तिण्णं पलिदोवमाणं बिदिए समए पबद्धं णोकम्म-पदेसग्गं तं बिदियसमए बहुगं णिसिंचदि । तत्तो उवरि विसेसहीणं णिसिंचदि जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । संपहि जं चरिमसमए णिसित्तपदेसग्गं तस्स भागहारो पुव्वुत्तभागहारादो विसेसहीणो होदि, चरिमणिसेगस्स असंखे०भागेणब्भहियदुचरि-मणिसेगस्स चरिमसमए उवलंभादो । तदियसमए जं संचिददव्वं तस्स वि भागहारो पुव्वुत्तभागहारादो विसेसहीणो होदि, चरिम-दुचरिमगोवुच्छाणमसंखे०भागेण-ब्भहियतिचरिमगोवुच्छमेत्तसंचयदंसणादो । एवं गंतूण तिण्णं पलिदोवमाणं दुचरि-मसमए जं बद्धं णोकम्मपदेसग्गं तस्स अद्धं सादिरेयं दुचरिमसमए णिसिंचिदूण पुणो चरिमसमए अद्धं किंचूणं णिसिंचदि । पुणो जं चरिमसमए

नोकर्मप्रदेशाग्र है उसके प्रथम गोपुच्छको द्विचरम समयमें निक्षिप्त करके पुनः शेष द्रव्यको अन्तिम समयमें निक्षिप्त करता है । पुनः तीन पल्योंके अन्तिम समयमें जो बद्ध नोकर्म है उसका पूरा पुंज बनाकर उसे अन्तिम समयमें ही निक्षिप्त करता है । इसलिए पूर्वोक्त भागहारका कथन बन जाता है ।

अन्य कितने ही आचार्य इस प्रकार कथन करते हैं । यथा–गल कर जो आयु शेष रही है उसके भीतर सब समयप्रबद्धोंको शास्त्र परिपाटीके अनुसार निक्षिप्त करते हैं । यथा–तीन पल्योंके प्रथम समयमें जो बद्ध कर्म है उसके बहुभागको उसी प्रथम समयमें निक्षिप्त करता है । उससे आगेके समयोंमें नोकर्मस्थितिके अन्तिम समय तक विशेष हीन क्रमसे निक्षिप्त करता है । पुनः जो प्रदेशाग्र अन्तिम समयमें निक्षिप्त हुआ है उसका भागहार असं-ख्यात लोकप्रमाण है । जो तीन पल्योंके दूसरे समयमें नोकर्मप्रदेशाग्र बँधा है उसमेंसे दूसरे समयमें बहुभाग निक्षिप्त करता है । उससे आगे नोकर्मस्थितिके अन्तिम समय तक विशेष हीन क्रमसे निक्षिप्त करता है । अब जो अन्तिम समयमें निक्षिप्त प्रदेशाग्र है उसका भागहार पूर्वोक्त भागहारसे विशेष हीन होता है, क्योंकि, अन्तिम निषेकके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक द्विचरम निषेक अन्तिम समयमें पाया जाता है । तृतीय समयमें जो संचित द्रव्य है उसका भी भागहार पूर्वोक्त भागहारसे विशेष हीन होता है, क्योंकि, चरम और द्विचरम गोपुच्छोंके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक त्रिचरम गोपुच्छमात्राका संचय वहां देखा जाता है । इस प्रकार जाकर तीन पल्योंके द्विचरम समयमें जो बद्ध नोकर्म प्रदेशाग्र है उसके साधिक अर्धभागको द्विचरम समयमें निक्षिप्त करके पुनः अन्तिम समयमें कुछ कम

णिसित्तपदेसग्गं तस्स साविरेयदोरूवाणि भागहारो होदि । जं चरिमसमए पबद्धं णोकम्मपदेसग्गं तस्स एगरूवं भागहारो होदि । एवं दोहि पयारेहि भागहार-परूवणा कदा ।

संपहि पढमिल्लणिसेगोववेसमस्सिदूण समयपबद्धपमाणाणुगमो वुच्चदे । तं जहा- चरिमसमए संचिदपदेसग्गमेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, तत्थ वयाभावादो । दुचरियसमए संचिदपदेसग्गं किंचूणेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, पढमणिसेगाभावादो । तिचरिमसमयसंचिदपदेसग्गं किंचूणेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, पढम-बिदियणिसेगा-भावादो । एवं गंतूण पढमसमयसंचिददव्वमेगसमयपबद्धस्स असंखेज्जदिभागो होदि, चरियणिसेयपमाणत्तादो । जेणेवं तेण सव्वमेदं दव्वं दिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्ध-पमाणं होदि । अंतोमुहुत्तमेत्तसमयपबद्धा होंति त्ति भावत्थो ।

संपहि णिसेगस्स बिदियमुवदेसमस्सिदूण समयपबद्धपमाणाणुगमं कस्सामो । तं जहा- तिण्णं पलिदोवमाणं चरिमसमए संचिदपदेसग्गं तमेगसमयपबद्धमेत्तं होदि, वयाभावादो । जं दुचरिमसमयसंचिददव्वं तं तमेगसमयपबद्धस्स किंचूणमद्धं होदि, गलिदसाविरेयद्धत्तादो । जं तिचरिमसमयसंचिददव्वं तं समयपबद्धस्स किंचूणतिभाग-मेत्तं होदि, गलिदसाविरेयवेत्तिभागत्तादो । एवं पलिदोवमेण आणिदूण णेयव्वं

अर्धभागको निक्षिप्त करता है । पुनः अन्तिम समयमें जो निक्षिप्त प्रदेशाग्र है उसका साधिक दो अंक भाग होता है । तथा अन्तिम समयमें जो बद्ध नोकर्म प्रदेशाग्र है उसका एक अंक भागहार होता है । इस तरह दो प्रकारसे भागहार प्ररूपणा की ।

अब पहलेके निषेकोपदेशका अवलम्बन लेकर समयप्रबद्धोंके प्रमाणका अनुगम करते हैं । यथा- अन्तिम समयमें संचित हुआ प्रदेशाग्र एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, उसके व्ययका अभाव है । द्विचरम समयमें संचित हुआ प्रदेशाग्र कुछ कम एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, अन्तमें इसके प्रथम निषेकका अभाव है । त्रिचरिम समयमें संचित हुआ प्रदेशाग्र कुछ कम एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, अन्तमें इसके प्रथम और द्वितीय निषेकका अभाव है । इस प्रकार जाकर प्रथम समयमें संचित हुआ द्रव्य एक समयप्रबद्धके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहता है, क्योंकि, अन्तमें उसका अन्तिम निषेकमात्र उपलब्ध होता है । यतः इस प्रकार है अतः यह सब द्रव्य डेढगुणहानिमात्र समयप्रबद्धप्रमाण होता है । अन्तर्मुहूर्तके जितने समय हैं उतने समयप्रबद्ध होते हैं यह उक्त कथनका भावार्थ है ।

अब निषेकके द्वितीय उपदेशका अवलम्बन लेकर समयप्रबद्धोंके प्रमाणका अनुगम करते हैं । यथा- तीन पल्योंके अन्तिम समयमें जो संचित हुआ है वह एक समयप्रबद्धप्रमाण होता है, क्योंकि, उसके व्ययका अभाव है । जो द्विचरम समयमें संचित हुआ द्रव्य है वह एक समयप्रबद्धका कुछ कम अर्धभागप्रमाण होता है, क्योंकि, इसका साधिक अर्धभाग गल चुका है । जो तृतीय समयमें संचित द्रव्य है वह समयप्रबद्धका कुछ कम तृतीय भागमात्र होता है, क्योंकि, इसके तीन भागोंमेंसे साधिक दो भाग गल चुके हैं । इस प्रकार पल्योपमके द्वारा जान

जाव तिण्णं पलिदोवमाणं पढमसमयो त्ति । एत्थ संदिट्ठी- | १ | १/२ | १/३ | १/४ | १/५ | १/६ | १/७ | १/८ | १/९ | १/१० | १/११ |

| १/१२ | १/१३ | १/१४ | १/१५ | १/१६ | १/१७ | १/१८ | १/१९ | १/२० | १/२१ | १/२२ | १/२३ | १/२४ | १/२५ | १/२६ | १/२७ | १/२८ | १/२९ | १/३० | १/३१ | १/३२ |

एत्थ एगगुणहाणिअद्धाणमेत्तमोदरिदूण बद्धपदेसग्गसंचयस्स भागहारो गुणहाणिमेत्तो गुणहाणिअद्धाणं पुण एत्थ संखेज्जावलियाओ तेणेदम्हि समकरणं कादूण मेलाविदे असंखेज्जा समयपबद्धा होंति । तं जहा- ताव चरिमेगगुणहाणिसंचयमस्सिदूण असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुप्पत्तिं भणिस्सामो- चरिमगुणहाणिपढमसमयसंचयस्स भागहारो एगगुणहाणी । तस्स पमाणमेदं $\frac{१}{३२}$ । उवरिमसमयसंचिददव्वं जदि वि विसेसाहियं तो वि जाव चरिमगुणहाणीए अद्धमुवरि गच्छदि ताव समयं पडि संचिददव्वं चरिमगुणहाणिपढमसमयसंचएण सरिसं ति गहिदे एत्थंतरे जावसव्वसंचयसमूहो एगसमयपबद्धस्स अद्धं होदि । पुणो तदो उवरि एगगुणहाणीए चदुब्भागमेत्तअद्धाणस्स सव्वसंचयसमूहो वि एगसमयसमूहो वि एगसमयपबद्धस्स अद्धं होदि। एवमेगगुणहाणिअट्ठमभाग-सोलसभाग-बत्तीसभाग-चउसट्ठिभागादि उवरिम-

---

कर तीन पल्योंके प्रथम समय तक ले जाना चाहिए। यहाँ सदृष्टि- १, $\frac{१}{२}$, $\frac{१}{३}$, $\frac{१}{४}$, $\frac{१}{५}$, $\frac{१}{६}$, $\frac{१}{७}$, $\frac{१}{८}$, $\frac{१}{९}$, $\frac{१}{१०}$, $\frac{१}{११}$, $\frac{१}{१२}$, $\frac{१}{१३}$, $\frac{१}{१४}$, $\frac{१}{१५}$, $\frac{१}{१६}$, $\frac{१}{१७}$, $\frac{१}{१८}$, $\frac{१}{१९}$, $\frac{१}{२०}$, $\frac{१}{२१}$, $\frac{१}{२२}$, $\frac{१}{२३}$, $\frac{१}{२४}$, $\frac{१}{२५}$, $\frac{१}{२६}$, $\frac{१}{२७}$, $\frac{१}{२८}$, $\frac{१}{२९}$, $\frac{१}{३०}$, $\frac{१}{३१}$, $\frac{१}{३२}$ यहाँ पर एक गुण-

हानिअध्वानमात्र उतरकर बँधे हुए प्रदेशाग्रके संचयका भागहार गुणहानिप्रमाण होता है । परंतु यहाँ पर गुणहानिअध्वान संख्यातआवलिप्रमाण है । इसलिए इसका समीकरण करके मिलाने-पर असंख्यात समयप्रबद्ध होते हैं । यथा- पहले अन्तिम एक गुणहानिके संचयका अवलम्बन लेकर असंख्यात समयप्रबद्धोंकी उत्पत्तिका कथन करेंगे- अन्तिम गुणहानिके प्रथम समयमें संचित हुए द्रव्यका भागहार एक गुणहानि है । उसका प्रमाण यह है $\frac{१}{३२}$। उपरिम समयमें संचित हुआ द्रव्य यद्यपि विशेष अधिक होता है तो भी जब तक अन्तिम गुणहानिका अर्धभाग-प्रमाण ऊपर जाता है तब तक प्रत्येक समयमें संचित हुआ द्रव्य अन्तिम गुणहानिके प्रथम समयमें संचित हुए द्रव्यके समान है, इसलिए उसका ग्रहण करने पर इतने कालके मध्यमें जो सम्पूर्ण संचय होता है वह एक समयप्रबद्धका अर्धभागप्रमाण होता है । पुनः उसके ऊपर एक गुणहानिके चतुर्थ भागमात्र अध्वानका सब संचय समूह भी तथा एक समयका समूह भी एक समयप्रबद्धका अर्धभागप्रमाण होता है । इस प्रकार एक गुणहानिके आठवें भाग, सोलहवें भाग,

अद्धाणेसु एगेगसमयपबद्धस्स अद्धमद्धमुप्पज्जदि त्ति णादव्वं । एवमुप्पण्णसमयपबद्धस्स अद्धाणि संखेज्जावलियच्छेदणयमेत्ताणि होंति । ते च छेदणया असंखेज्जा, जहण्ण-परीत्तासंखेज्जस्स अद्धच्छेदणएहि जहण्णपरीत्तासंखेज्जे गुणिदे आवलियद्धच्छेदणय-सलागुप्पत्तीदो । तम्हा असंखेज्जसमयपबद्धमेत्तो ओरालियसरीरपदेसग्गसंचओ होदि त्ति घेत्तव्वं । एवं दो वि उवदेसे अस्सिदूण असंखेज्जसमयपबद्धमेत्तपदेसग्गं होदि त्ति सिद्धं । णवरि पुव्विल्लउवदेसेण लद्धसमयपबद्धेहिंतो पच्छिल्लउवदेसेण लद्धसमय-पबद्धा असंखेज्जगुणहीणा । एत्थ बिदियउवदेसो ण घडदे, सामित्तसुत्तेण सह विरुद्धत्तादो । तं जहा- जदि बिदियवियप्पो घेप्पदि तो जत्थ उदये दो समयपबद्धा गलंति तत्तो हेट्ठा चेव उक्कस्ससामित्तेण होदव्वं ण चरिमसमए, आयादो वयस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । ण च एवं, सुत्तविरुद्धस्स वक्खाणत्तविरोहादो ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥ ४३० ॥

एदम्हादो ओकड्डणवसेण एगपरमाणुम्हि फिट्टे अणुक्कस्सट्ठाणमुप्पज्जदि । एवं दो-तिण्णि-चत्तारिआदिकमेण ऊणं कादूण अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव एगविगलपक्खेवो परिहीणो त्ति । तदो एगजोगपक्खेवेण परिहीणजोगट्ठाणेण बंधाविय सरिसं कायव्वं । एवं जाणिदूण ओदारिय अणुक्कस्सट्ठाणाणि उप्पादे-

---

बत्तीसवें भाग और चौसठवें भाग आदि उपरिम अध्वानोंके जाने पर एक समयप्रबद्धका आधा आधा उत्पन्न होता है ऐसा यहां जानना चाहिए । इस प्रकार उत्पन्न हुए समयप्रबद्धके अर्ध-भाग संख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदप्रमाण होते हैं । और वे अर्धच्छेद असंख्यात हैं; क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतासंख्यातके गुणित करने पर एक आवलिके अर्धच्छेदों की शलाकायें उत्पन्न होती हैं । इसलिए औदारिकशरीरके प्रदेशाग्रका संचय असं-ख्यात समयप्रबद्धप्रमाण है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार दोनों ही उपदेशोंका आश्रय लेकर असंख्यात समयप्रबद्धप्रमाण प्रदेशाग्र होता है यह सिद्ध हुआ । इतनी विशेषता है कि पहलेके उपदेशके अनुसार जो समयप्रबद्ध लब्ध आते हैं उनसे पिछले उपदेशके अनुसार लब्ध हुए समयप्रबद्ध असंख्यातगुणे हीन होते हैं । इनमेंसे यहां पर द्वितीय उपदेश घटित नहीं होता, क्योंकि, उसका स्वामित्व सूत्रके साथ विरोध आता है । यथा- यदि द्वितीय विकल्पको ग्रहण करते हैं तो जहां पर उदयमें दो समयप्रबद्ध गलते हैं उससे पूर्व ही उत्कृष्ट स्वामित्व होना चाहिए, अन्तिम समयमें उत्कृष्ट स्वामित्व नहीं होना चाहिए, क्योंकि, वहां द्वितीय उपदेशके अनुसार आयसे व्यय असंख्यातगुणा उपलब्ध होता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, जो सूत्रविरुद्ध हो उसके व्याख्यान होनेमें विरोध आता है ।

उससे व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट प्रदेशाग्र है । ४३० ॥

पहले जो उत्कृष्ट प्रदेशाग्र कह आये हैं उसमेंसे अपकर्षण वश एक परमाणुके नष्ट होने पर अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार दो, तीन और चार आदि कम करनेके एक विकल प्रक्षेपके हीन होने तक अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न करने चाहिए । अनन्तर एक योगप्रक्षेपसे हीन योगस्थानके द्वारा बन्ध कराकर सदृश करना चाहिए । इस प्रकार जानकर उतारते हुए जघन्य

दव्वाणि जाव जहण्णट्ठाणे त्ति।

उक्कस्सपदेण वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स।४३१।

सुगमं ।

अण्णदरस्स आरण-अच्चुदकप्पवासियदेवस्स बावीससागरोव-मट्ठिदियस्स ॥ ४३२ ॥

सम्मत्त-मिच्छत्तादीहि दव्वविसेसो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं अण्णदरस्स णिद्देसो कदो । हेट्ठिम-उवरिमदेवाणं णेरइयाणं च पडिसेहट्ठं आरणच्चुदकप्पवासिय-वेत्तणिद्देसो कदो । संखेज्जवस्साउसु सव्वट्ठसिद्धिदेवेसु दीहाउएसु उक्कस्ससामित्तं किण्ण दिज्जदे? ण, णवगेवज्जादिउवरिमदेवेसु उक्कस्सजोगपरावत्तणवाराणं पउरमणुवलंभादो । उक्क-स्सजोगपरावत्तणवारा तत्थ पउरा ण लब्भंति त्ति कुदो णव्वदे? एदम्हादो चेव सुत्तादो उवरि ओगाहणा दहरा त्ति तत्थ ण सामित्तं दिज्जदि त्ति ण वोत्तुं जुत्तं, जोगवसेण आगच्छमाणकम्मणोकम्मपोग्गलाणमोगाहणादो संखाविसेसाणुप्पत्तीदो । हेट्ठिमदेवेसु

स्थानके प्राप्त होने तक अनुत्कृष्ट स्थान उत्पन्न करने चाहिए ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है।४३१।

यह सूत्र सुगम है ।

जो बाईस सागरकी स्थितिवाला आरण और अच्युत कल्पवासी अन्यतर देव है ॥ ४३२ ॥

सम्यक्त्व और मिथ्यात्व आदिके निमित्तसे द्रव्य विशेष नहीं होता इस बातका ज्ञान करानेके लिए अन्यतर पदका निर्देश किया है । अधस्तन और उपरिम देवोंका तथा नारकियोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'आरण और अच्युत कल्पवासी देव' पदका निर्देश किया है ।

शंका- दीर्घ आयुवाले सर्वार्थसिद्धिके देवोंमें उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, नौ ग्रैवेयक आदि ऊपरके देवोंमें उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरमात्रामें नहीं उपलब्ध होते ।

शंका- वहाँ उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरमात्रामें नहीं उपलब्ध होते यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान- इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

ऊपर अवगाहना ह्रस्व है, इसलिए वहाँ पर स्वामित्व नहीं देना चाहिए यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, योगके वशसे आनेवाले कर्म और नोकर्म पुद्गलोंकी अवगाहनाके कारण संख्याविशेष नहीं उत्पन्न होती ।

शंका- नीचेके देवोंमें उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

उक्कस्ससामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण तत्थ दीहाउआभावादो । सत्तमपुढविणेरइएसु दीहाउएसु उक्कस्सजोगेसु किण्ण दिज्जदे ? ण, तेसु संकिलेसबहुलेसु बहुणोकम्मणिज्जरदंसणादो । एक्कारससागरोवमसंचयादो संकिलेसेण गलमाणदव्वं बहुअमिदि कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । आरण-अच्चुददेवेसु सेसाउट्ठिदिपडिसेहट्ठं बावीससागरोवमट्ठिदिणिद्देसो कदो ।

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो ॥ ४३३ ॥

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥ ४३४ ॥

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥ ४३५ ॥

तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ॥ ४३६ ॥

अप्पाओ मणजोगद्धाओ ॥ ४३७ ॥

एवाणि सुत्ताणि सुगमाणि ।

णत्थि छविच्छेदा ॥ ४३८ ॥

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहाँ पर लम्बी आयुका अभाव है ।

शंका-- सातवीं पृथिवीके नारकियोंकी आयु लम्बी होती है और उत्कृष्ट योग भी है, इसलिए वहाँ उत्कृष्ट स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वे संक्लेशबहुल होते हैं, इसलिए उनमें बहुत नोकर्मोंकी निर्जरा देखी जाती है ।

शंका-- ग्यारह सागरके भीतर होनेवाले संचयसे संक्लेशवश गलनेवाला द्रव्य बहुत है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

आरण और अच्युत कल्पके देवोंमें शेष आयुका प्रतिषेध करनेके लिए ' बाईस सागरकी स्थितिवाले ' पदका निर्देश किया है ।

उसी देवने प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया ॥ ४३३ ॥

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥ ४३४ ॥

सबसे लघु अन्तर्मुहूर्त काल द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ४३५ ॥

उसके बोलनेके काल अल्प हैं ॥ ४३६ ॥

मनोयोगके काल अल्प हैं ॥ ४३७ ॥

ये सूत्र सुगम हैं ।

उसके छविच्छेद नहीं होते ॥ ४३८ ॥

वेउव्वियसरीरस्स छेदभेदावीणमभावादो ।

अप्पदरं विउव्विदो ॥ ४३९ ॥

कुदो बहुविउव्वणाए बहुआणं परमाणुपोग्गलाणं गलणप्पसंगादो ।

थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्सुवरिमंतोमुहुत्तद्ध-मच्छिदो ॥ ४४० ॥

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो ॥ ४४१ ॥

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ॥ ४४२ ॥

तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स वेउव्वियसरीरस्स उक्क-स्सपदेसग्गं ॥ ४४३ ॥

एदेसिं सुत्ताणं जहा ओरालियसरीरम्मि परूवणा कदा तहा कायव्वा, विसेसाभावादो ।

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥ ४४४ ॥

एदं पि सुगमं ।

क्योंकि, वैक्रियिकशरीरके छेद व भेद आदिक नहीं पाये जाते । पु.५०।

उसने अल्पतर विक्रिया की ॥ ४३९ ॥

क्योंकि, बहुत विक्रिया करनेसे बहुत परमाणुपुद्गलोंके गलन होनेका प्रसंग प्राप्त होता है।

जीवितव्यके स्तोक शेष रहने पर वह योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा ॥ ४४० ॥

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहा ॥ ४४१ ॥

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥ ४४२ ॥

अन्तिम समयमें तद्भवस्थ हुआ वह जीव वैक्रियिकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशा-ग्रका स्वामी है ॥ ४४३ ॥

इन सूत्रोंकी जिस प्रकार औदारिकशरीरके प्रसंगसे प्ररूपणा की है उस प्रकार करनी चाहिए, क्योंकि, कोई विशेषता नहीं है ।

उससे व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट है । ४४४ ।

यह सूत्र सुगम है ।

उक्कस्सपदेण आहारसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ।४४५।

सुगमं ।

अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तरसरीरं णिउव्विदयस्स ॥४४६ ॥

ओगाहणादीहि दव्वभेदो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं अण्णदरणिद्देसो कदो । पमादेण तत्थ आहारसरीरस्स उदओ अत्थि त्ति जाणावणट्ठं पमत्तग्गहणं कदं । असंजदपडिसेहट्ठं संजदग्गहणं कदं ।

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्स-जोगेण आहारिदो ॥ ४४७ ॥

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥ ४४८ ॥

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो । ४४९ ।

तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ॥ ४५० ॥

अप्पाओ मणजोगद्धाओ ॥ ४५१ ॥

णत्थि छविच्छेदा ॥ ४५२ ॥

थोवावसेसे णियत्तिदव्वए त्ति जोगजवमज्झट्ठाणाए मितद्ध-

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा आहारकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ।४४५।

यह सूत्र सुगम है ।

उत्तर शरीरकी विक्रिया करनेवाला जो अन्यतर प्रथम संयत जीव है ॥ ४४६ ॥

अवगाहना आदिकी अपेक्षा द्रव्यभेद नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए अन्यतर पदका निर्देश किया है । प्रमादके होने पर वहाँ आहारकशरीरका उदय नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'प्रमत्त' पदका ग्रहण किया है । असंयतका प्रतिषेध करनेके लिए 'संयत' पदका ग्रहण किया है ।

339
उसी जीवने प्रथम समयमें आहारक और प्रथम समयमें तद्भवस्थ होकर योगद्वारा आहारको ग्रहण किया ॥ ४४७ ॥

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥ ४४८ ॥

सबसे लघु अन्तर्मुहूर्त कालद्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ४४९ ॥

उसके बोलनेके काल अल्प हैं ॥ ४५० ॥

मनोयोगके काल अल्प हैं ॥ ४५१ ॥

छविच्छेद नहीं हैं ॥ ४५२ ॥

निवृत्त होनेके कालके थोड़ा शेष रह जाने पर योगयवमध्यस्थानके

मच्छिदो ॥ ४५३ ॥

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-
मच्छिदो ॥ ४५४ ॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सयं जोगं गदो ॥ ४५५ ॥

तस्स चरिमसमयणियत्तमाणस्स तस्स आहारसरीरस्स उक्क-
स्सयं पवेसग्गं ॥ ४५६ ॥

एदाणि सुत्ताणि सुगमाणि । णवरि एसो पमत्तसंजदो आहारसरीरमुट्ठावेंतो अपज्जत्तकाले अपज्जत्तजोगं पडिवज्जदि त्ति घेत्तव्वं, अण्णहा उक्कस्सियाए वड्ढीए आहारमिस्सद्धाए वड्ढणाणुववत्तीदो । किं च णिसेगरचणाए कीरमाणाए अवट्ठिव-सरूवेणेव णिसेगरचणा होदि ण गलिदसेसा । कथमेवं णव्वदे? आहारसरीरपरिसवण-कालस्स अंतोमुहुत्तपमाणपरूवणादो । ण च कालभेदेण विणा एक्कम्मि चेव समए णिसित्ताणमेगसमएण विणा अंतोमुहुत्तेण गलणं संभवदि, विरोहादो । सेसं सुगमं । एवं तिरिक्ख-मणुस्सेसु वेउव्वियसरीरस्स वि णिसेयरचणा वत्तव्वा, अण्णहा तत्थ परिसवणकालस्स अंतोमुहुत्तपमाणत्तविरोहादो ।

ऊपर परमित काल तक रहा ॥४५३॥

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहा ॥४५४॥

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥४५५॥

निवृत्त होनेवाला वह जीव अन्तिम समयमें आहारकशरीरके उत्कृष्ट प्रवेशा-
ग्रका स्वामी है ॥४५६॥

ये सूत्र सुगम हैं । इतनी विशेषता है कि यह प्रमत्तसंयत जीव आहारकशरीरको उत्पन्न करता हुआ अपर्याप्त कालमें अपर्याप्त योगको प्राप्त होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए, अन्यथा उत्कृष्ट वृद्धिद्वारा आहारमिश्रकालके भीतर वृद्धि नहीं बन सकती । दूसरे निषेक रचना करने पर अवस्थितरूपसे ही निषेकरचना होती है, गलितशेष निषेकरचना नहीं होती ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, आहारकशरीरकी निर्जरा होनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण कहा है ।

यदि कहा जाय कि कालभेदके विना एक ही समयमें निक्षिप्त हुए प्रदेशोंका एक समयके बिना अन्तर्मुहूर्तमें गलना सम्भव है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध आता है । शेष कथन सुगम है । इसी प्रकार तिर्यञ्चों और मनुष्योंमें वैक्रियिकशरी-रकी भी निषेकरचना कहनी चाहिए, अन्यथा वहाँ पर क्षीण होनेका काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होनेमें विरोध आता है ।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥ ४५७ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सपदेण तेजासरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ।४५८।

सुगमं ।

अण्णदरस्स ॥ ४५९ ॥

ओगाहणादीहि पदेसग्गस्स विसेसाभावपदुप्पायणट्ठमण्णदरणिद्देसो कदो ।

जो जीवो पुव्वकोडाउओ अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधदि ॥ ४६० ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जो जीवो पुव्वकोडाउओ सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधदि सो तेजइयसरीरस्स छावट्ठिसागरोवमाणं पढमसमयपबद्धमेत्तचरिमसमओ त्ति ताव गोपुच्छागारेण णिसेगरचणं करेदि। जो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधंतो* ट्ठिदो

विशेषार्थ-- यहाँ पर आहारकशरीरकी निषेक रचना गलित शेष न बतलाकर अवस्थितस्वरूप बतलाई है । इसका यह अभिप्राय है कि आहारकशरीरके उत्पन्न होनेके समयसे लेकर उसके समाप्त होने तकका जितना काल है, प्रत्येक समयमें निषेकरचना उतने समयप्रमाण होती है । मान लीजिए आहारकशरीरका अवस्थान काल आठ है तो प्रथम समयमें ग्रहण किये गये समयप्रबद्धके आठ निषेक होंगे । दूसरे समयमें ग्रहण किये गये समयप्रबद्धके भी आठ ही निषेक होंगे । एक समय गल गया है, इसलिए आठ समयोंमेंसे एक समय कम निषेकरचना नहीं होगी । इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए । मनुष्य और तिर्यञ्च जो वैक्रियिकशरीर उत्पन्न करते हैं उसकी निषेकरचना भी इसी प्रकार जाननी चाहिए ।

उससे व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट है ।।४५७।।

यह सूत्र सुगम है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा तैजसशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ।४५८

यह सूत्र सुगम है ।

जो अन्यतर जीव है ।।४५९।।

अवगाहना आदिके द्वारा प्रदेशाग्रमें कोई विशेषता नहीं उत्पन्न होती इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'अन्यतर' पदका निर्देश किया है ।

जो पूर्वकोटिकी आयुवाला जीव नीचे सातवीं पृथ्वीके नारकियोंके आयुकर्मका बन्ध करता है ।।४६०।।

जो पूर्वकोटिकी आयुवाला जीव सातवीं पृथ्वीके नारकियोंमें आयुकर्मका बन्ध करता है वह तैजसशरीरके छ्यासठसागरप्रमाण स्थितिके प्रथम समयप्रबद्धसे लेकर अन्तिम समय तक गोपुच्छाकाररूपसे निषेकरचना करता है । जो सातवीं पृथिवीके नारकियोंकी आयुका बन्ध

---

* प्रतिषु 'बंधदि तो' इति पाठः ।

सो चेव तेजइयसरीरणोकम्मस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधदि त्ति ण घेत्तव्वं किंतु जो पुव्वकोडाउओ जीवो पज्जत्तयदो उक्कस्सजोगी उवरि पुव्वकोडितिभागावसेसे सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअबंधक्खमो सो तेजइयसरीरणोकम्मस्स उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधदि त्ति घेत्तव्वं, तत्थ तहाणुवलंभादो। किमट्ठं पुव्वकोडाउओ चेव बंधाविज्जदि? तत्थ उक्कस्सजोगपरावत्तणवाराणं पउरमुवलंभादो। तं पि कुदो णव्वदे? अंतोमुहुत्तं मोत्तूण विदियपुव्वकोडिणिद्देसण्णहाणुववत्तीदो। जदि एवं तो पुव्वकोडिआउएसु चेव भमाडिय तेजइयसरीरणोकम्मस्स उक्कस्ससंचओ किण्ण कीरदे? ण, बहुवारं कालं कादूणुप्पज्जमाणस्स अपज्जत्तजोगेहि थोवदव्वसंचयप्पसंगादो। णेरइएसु दोहि पुव्वकोडीहि वेसूणाहि ऊणतेत्तीससागरोवमाउअं बंधावेदव्वं, अण्णहा णेरइयचरिमसमए छावट्ठिसागरोवमाणं परिसमत्तिविरोहादो।

कमेण कालगदसमाणो अधो सत्तमाए पुढवीए उववण्णो। ४६१।

करता हुआ है वही तैजसशरीर नोकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करता है ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए, किन्तु जो पूर्वकोटिकी आयुवाला पर्याप्त और उत्कृष्ट योगवाला जीव आगे पूर्वकोटिके त्रिभाग शेष रहनेपर सातवीं पृथिवीके नारकियोंकी आयुका बन्ध करनेमें समर्थ है वह तैजसशरीर नोकर्मकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध करता है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए। अन्यथा पूर्वकोटिकी आयुवाला बांधता है इस प्रकारके नियम करनेका कोई फल नहीं रहता।

शंका- पूर्वकोटिकी आयुवाले जीवके ही तैजसशरीरकी उत्कृष्ट स्थितिका बन्ध क्यों कराया है?

समाधान- क्योंकि वहांपर उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरतासे उपलब्ध होते हैं।

शंका- यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान- अन्यथा अन्तर्मुहूर्तको छोडकर उससे भिन्न पूर्वकोटि पदका निर्देश नहीं बन सकता, इससे ज्ञात होता है कि उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरतासे वहीं पर उपलब्ध होते हैं।

शंका- यदि ऐसा है तो पूर्वकोटिकी आयुवालोंमें ही भ्रमण कराकर तैजसशरीर नोकर्मका उत्कृष्ट संचय क्यों नहीं प्राप्त करते?

समाधान- नहीं, क्योंकि बहुत बार मरकर उत्पन्न होनेवाले जीवके अपर्याप्त योगोंके द्वारा स्तोक द्रव्यके संचयका प्रसंग प्राप्त होता है।

नारकियोंकी आयुका बन्ध कराते समय कुछ कम दो पूर्वकोटि कम तेतीस सागरप्रमाण आयुकर्मका बन्ध कराना चाहिए, अन्यथा नारकीके अन्तिम समयमें छ्यासठ सागरकी परिसमाप्ति होनेमें विरोध आता है।

वह क्रमसे मरा और नीचे सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न हुआ ॥ ४६१ ॥

कदलीघादेण विणा जीविदूण मुदो त्ति जाणावणट्ठं कमेण कालगदो☼ त्ति भणिदं। सत्तमा पुढवी अधो चेव होदि ण अण्णत्थे त्ति जाणावणट्ठं अधो णिद्देसो कदो। जत्थ आउअं बद्धं तत्थेव णियमेण उप्पज्जदि त्ति जाणावणट्ठं बिदियसत्तम-पुढविग्गहणं कदं। सत्तमपुढवीए चेव किमट्ठं उप्पाइदो ? ण, तत्थ संकिलेसेण बहु-दव्वस्स उक्कड्डणुवलंभादो अण्णत्थ एवंविहसंकिलेसाभावादो। आउअपमाणणिद्देसो किण्ण कदो ? तदाउअस्स वेसूणसत्तपदुप्पायणट्ठं।

तदो उवट्ठिदसमाणो पुणरवि पुव्वकोडाउएसुववण्णो ॥४६२॥

पुणो पुव्वकोडीए किमट्ठमुप्पाइदो। ण, तत्थ उक्कस्सजोगपरावत्तणवाराणं पउरमुवलंभादो। तं पि कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो।

तेणेव कमेण आउअमणुपालइत्ता तदो* कालगदसमाणो पुणरवि अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु उववण्णो ॥ ४६३ ॥

कदलीघादेण ओवट्टणाघादेण च विणा जीविदूण मुदो त्ति जाणावणट्ठं तेणेव

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

कदलीघातके बिना जीवन धारण कर मरा इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'कमेण काल-गदो' पदका कथन किया है। सातवीं पृथिवी नीचे ही होती है अन्यत्र नहीं इस बातका ज्ञान करानेके लिए 'अधः' पदका निर्देश किया है। जहां की आयुका बंध करता है वहां ही नियमसे उत्पन्न होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए दूसरी बार सप्तम पृथिवी पदका ग्रहण किया है।

शंका-- सातवीं पृथिवीमें ही क्यों उत्पन्न कराया है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहां पर संक्लेशके कारण बहुत द्रव्यका उत्कर्षण उपलब्ध होता है। तथा अन्यत्र इस प्रकारका संक्लेश नहीं पाया जाता।

शंका-- आयुके प्रमाणका निर्देश किसलिए नहीं किया ?

समाधान-- उसकी आयु कुछ कम होती है इस बातका कथन करनेके लिए आयुके प्रमाणका निर्देश नहीं किया है।

वहांसे निकलकर फिर भी पूर्वकोटिकी आयुवालोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ४६२ ॥

शंका-- पुनः पूर्वकोटिकी आयुवालोंमें किसलिए उत्पन्न कराया है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहां पर उत्कृष्ट योगके परावर्तनके बार प्रचुरतासे पाये जाते हैं।

शंका-- यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- इसी सूत्रसे जाना जाता है।

उसी क्रमसे आयुका पालन करके मरा और पुनः नीचे सातवीं पृथिवीके नारकियोंमें उत्पन्न हुआ ॥ ४६३ ॥

कदलीघात और अपरावर्तनाघातके बिना जीवन धारण कर मरा इस बातका ज्ञान करानेके

☼ ता० प्रतौ 'जाणावणट्ठं कालगदो' इति पाठः।

* का० प्रतौ 'तदो कालगदसमाणो' इत आरभ्य 'बिदियपुढवि-' इतः पूर्वं पाठो नास्ति।

कमेण आउअमणुपालइत्ता त्ति भणिदं । बिदियपुव्वकोडिचरिमसमए तेत्तीससागरोवमाणि समाणिय णेरइएसु तेत्तीसं सागरोवमट्ठिदिएसु उववण्णो त्ति भणिदं होदि※ । संपहि तिसु वि अपज्जत्तद्धासु आवासयपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि ।

तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो ॥ ४६४ ॥

एदेहि तीहि वि सुत्तेहि उववादजोगमाहप्पं जाणाविदं । विग्गहगदीए किण्ण उप्पाइदो ? पज्जत्तकालयड्ढावणट्ठं ण उप्पाइदो ।

उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ॥ ४६५ ॥

अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ॥४६६॥

तत्थ य भवट्ठिदिं तेत्तीससागरोवमाणि आउअमणुपालइत्ता ।४६७।

उक्कस्सदव्वं करेदि त्ति भणिदं होदि । सेसं सुगमं । दोसु पुव्वकोडीसु दोसु णिरयाउएसु च आवासयपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि –

लिए ' उसी क्रमसे आयुका पालन कर ' यह पद कहा है । दूसरी पूर्वकोटिके अन्तिम समयमें तेतीस सागर समाप्त करके तेतीस सागरकी आयुवाले नारकियोंमें उत्पन्न हुआ यह उक्त कथन का तात्पर्य है । अब तीनों अपर्याप्त कालोंमें आवश्यकोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं–

प्रथम समयमें आहारक हुए और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुए उसी जीवने उत्कृष्ट योगसे आहारको ग्रहण किया ॥ ४६४ ॥

इन तीनों ही सूत्रोंके द्वारा उपपाद योगके माहात्म्यका ज्ञान कराया गया है ।

शंका – विग्रहगतिमें क्यों नहीं उत्पन्न कराया है ?

समाधान – पर्याप्तका काल बढानेके लिए नहीं उत्पन्न कराया है ।

उत्कृष्ट वृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त हुआ ॥ ४६५ ॥

सबसे अल्प अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हुआ ॥ ४६६ ॥

वहां तेतीस सागर आयुप्रमाण भवस्थितिका पालन कर ॥ ४६७ ॥

वह उत्कृष्ट द्रव्यको करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। शेष कथन सुगम है। अब दो पूर्वकोटियोंमें और दो नारक आयुओंमें आवश्यकोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं–

※ ता० प्रतौ ' आउअमणुपालइत्ता त्ति भणिदं होदि ' इति पाठः ।

बहुसो बहुसो उक्कस्सियाणि जोगट्ठाणाणि गच्छदि ॥ ४६८ ॥

एत्थ उक्कस्से त्ति उत्ते आदेसुक्कस्स-ओघुक्कस्साणं दोण्णं पि गहणं कायव्वं। किमट्ठमुक्कस्सजोगेसु हिंडाविज्जदि ? बहुपोग्गलग्गहणट्ठं ।

बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसपरिणामो भवदि । ४६९ ।

संचिदपोग्गलाणमुक्कड्डणट्ठं । ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपोग्गलाणमुक्कड्डणा णत्थि । कार्मणशरीरकी उत्कर्षणा होती है, इसलिए सूत्रमें 'सव्वसंसा' पदका उपदेश किया है। पुणरवि आदेसुक्कस्सजोगविसेसपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

एवं संसरिदूण थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोगजवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो । ४७० ।

चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभागमच्छिदो । ४७१ ।

दुचरिम-तिचरिमसमए उक्कस्ससंकिलेसं गदो । ४७२ ।

बहुत बहुत बार उत्कृष्ट योगस्थानोंको प्राप्त होता है । ४६८ ।

यहां पर 'उत्कृष्ट' ऐसा कहने पर आदेश उत्कृष्ट और ओघ उत्कृष्ट दोनों ही का ग्रहण करना चाहिए ।

शंका— उत्कृष्ट योगवालोंमें किसलिए घुमाते हैं ?

समाधान— बहुत पुद्गलोंका संग्रह करनेके लिए ।

बहुत बहुत बार विपुल संक्लेश परिणामवाला होता है । ४६९ ।

संचित हुए पुद्गलोंका उत्कर्षण करनेके लिए यह सूत्र आया है । औदारिकशरीर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके पुद्गलोंका उत्कर्षण नहीं होता ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— क्योंकि, उन शरीरोंके उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन करते समय इस सूत्रका उपदेश नहीं दिया है ।

अब फिर भी आदेश उत्कृष्ट योगविशेषका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

इस प्रकार परिभ्रमण करके जीवितव्यके स्तोक शेष रहने पर योगयवमध्यके ऊपर अन्तर्मुहूर्त काल तक ठहरा । ४७० ।

अन्तिम जीवगुणहानिस्थानान्तरमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक रहा । ४७१ ।

द्विचरम और त्रिचरम समयमें उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त हुआ । ४७२ ।

चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ॥ ४७३ ॥

तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स तेजइयसरीरस्स* उक्कस्सयं पदेसग्गं ॥ ४७४ ॥

संपहि एत्थ उवसंहारे भण्णमाणे संचयाणुगमो भागहारपमाणाणुगमो समयपबद्धपमाणाणुगमो चेवि एदाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि होंति । एदेहि तिहि अणुयोगद्दारेहि उवसंहारो उच्चदे । तं जहा– कम्मट्ठिदिपढमसमए जं बद्धं तेजइयसरीरणोकम्मपदेसग्गं तं सामित्तचरिमसमए‡ चरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि । जं कम्मट्ठिदिबिदियसमए पबद्धं णोकम्मपदेसग्गं तं सामित्तचरिमसमए चरिम-दुचरिमगोवुच्छमेत्तमत्थि । एवं णेयव्वं जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति । एवं संचयाणुगमो गदो । छावट्ठिसागरोवमाणं‡ पढमसमए जं बद्धं तेजइयसरीरणोकम्मपदेसग्गं तम्मि अंगुलस्स असंखे० भागेण खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं कम्मट्ठिदिचरिमसमए अत्थि । तेजइयसरीरकम्मट्ठिदिअंतरेणागुणहाणिसलागाओ विरलिय दुगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे असंखेज्जाणि पलिदोवमाणि उप्पज्जंति । पुणो एदेण अण्णोण्णब्भत्थरासिणा असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलमेत्तदिवड्ढगुणहाणीसु गुणिदासु भागहारो उप्पज्जदि त्ति भणिदं

चरम और द्विचरम समयमें उत्कृष्ट योगको प्राप्त हुआ ॥ ४७३ ॥

चरम समयवर्ती तद्भवस्थ वह जीव तैजसशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४७४ ॥

अब यहां पर उपसंहारका कथन करने पर संचयानुगम, भागहारप्रमाणानुगम और समयप्रबद्धप्रमाणानुगम ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं। इन तीन अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर उपसंहारका कथन करते हैं। यथा– कर्मस्थितिके प्रथम समयमें जो तैजसशरीर नोकर्म– प्रदेशाग्र बन्धको प्राप्त हुआ है, स्वामित्वके अन्तिम समयमें वह अन्तिम गोपुच्छमात्र शेष रहता है। जो कर्मस्थितिके द्वितीय समयमें नोकर्मप्रदेशाग्र बन्धको प्राप्त हुआ है वह स्वामित्वके अंतिम समयमें चरम और द्विचरम गोपुच्छमात्र शेष रहता है। इस प्रकार कर्मस्थितिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए। इस प्रकार संचयानुगमका कथन समाप्त हुआ। छ्यासठ सागरके प्रथम समयमें जो तैजसशरीर नोकर्मप्रदेशाग्र बन्धको प्राप्त हुआ है उसमें अङ्गुलके असंख्यातवें भाग का भाग देने पर एक खण्डमात्र कर्मस्थितिके अन्तिम समयमें शेष रहता है। तैजसशरीर नोकर्मस्थिति अन्तर नानागुणहानि शलाकाओंका विरलन कर और विरलन राशिके प्रत्येक एकको दूना कर परस्पर गुणा करने पर असंख्यात पल्य उत्पन्न होते हैं। पुनः इस अन्योन्याभ्यस्त राशिसे असंख्यात पल्योंके प्रथमवर्गमूलप्रमाण डेढ गुणहानियोंके गुणित करने पर भागहार

---

* ता० प्रतौ ' तस्स पत्तेय (तेजइय) सरीरस्स ' अ०का०प्रत्योः ' तस्स पत्तेयसरीरस्स ' इति पाठः।

‡ प्रतिषु ' सामित्तं चरिमसमए ' इति पाठः। ‡ ता० प्रतौ '–सागरोवमाणि (णं)' इति पाठः।

होदि। एवं भागहारो जाणिदूण परूवेयव्वो जाव कम्मट्ठिदिचरिमसमओ त्ति। एवं भागहारपरूवणा गदा। तेजइयसरीरस्स छावट्ठिसागरोवमसंचिदसव्वदव्वे समयपबद्धपमाणेण कदे दिवड्ढगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा होंति। एवमुक्कस्सपदेसपरूवणा समत्ता।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ॥ ४७५ ॥

एत्थ ओकड्डणं बंधं च अस्सिदूण अणंताणमणुक्कस्सट्ठाणाणं[ ] परूवणा कायव्वा।

उक्कस्सपदेण कम्मइयसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ॥४७६॥

सुगमं।

जो जीवो बादरपुढविजीवेसु बेहि सागरोवमसहस्सेहि सादिरेगेहि ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो ॥ ४७७ ॥

जहा वेदणाए वेदणीयं तहा णेयव्वं ॥ ४७८ ॥

जहा वेयणदव्वविहाणेण सामित्तपरूवणा कदा तहा एत्थ वि णिरवसेसा कायव्वा, विसेसाभावादो[*]। एवं पंचण्णं सरीराणं उक्कस्सं सामित्तं समत्तं।

उत्पन्न होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार नोकर्मस्थितिके अन्तिम समय तक भागहारका जानकर कथन करना चाहिए। इस प्रकार भागहार प्ररूपणा समाप्त हुई। तैजसशरीरके छयासठ सागरके भीतर संचित हुए सब द्रव्यको समयप्रबद्धके प्रमाणसे करने पर डेढ गुणहानि मात्र समयप्रबद्ध होते हैं। इस प्रकार उत्कृष्ट प्रदेशप्ररूपणा समाप्त हुई।

उससे तद्व्यतिरिक्त अनुत्कृष्ट प्रदेशाग्र है ॥ ४७५ ॥

यहाँ पर उत्कर्षण और बन्धका आश्रय लेकर अनन्त अनुत्कृष्ट स्थानोंका कथन करना चाहिए।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा कार्मणशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ।४७६।

यह सूत्र सुगम है।

जो जीव बादर पृथिवी जीवोंमें दो हजार सागर कम कर्मस्थितिप्रमाण काल तक रहा है वह कार्मणशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४७७ ॥

यहाँ शेष वेदनामें वेदनीयका जिस प्रकार उत्कृष्ट स्वामित्व कहा है उस प्रकार जानना चाहिए ॥ ४७८ ॥

जिस प्रकार वेदनद्रव्यविधानकी अपेक्षा स्वामित्वका कथन किया है उस प्रकार यहां पर समग्र कथन करना चाहिए, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है।

इस प्रकार पाँच शरीरोंके उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन समाप्त हुआ।

[ ] ता० प्रतौ ' मणुक्कस्सट्ठाण (ट्ठाणाणं) ' इति पाठः।

[*] अ० प्रतौ ' णिरवसेसा विसेसाभावादो ' इति पाठः।

जहण्णपदेण ओरालियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।४६९।

सुगमं ।

अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स । ४८० ।

ओगाहणादीहि पदेसग्गस्स संखाकयभेदो णत्थि त्ति अण्णदरग्गहणं कदं । बादर—णिगोदादिजीवपडिसेहट्ठं सुहुमणिगोदजीवणिद्देसो कदो । पज्जत्तपडिसेहट्ठं अपज्जत्तग्गहणं कदं । किमट्ठं सुहुमणिगोदअपज्जत्तेसु चेव जहण्णसामित्तं दिज्जदे ? ण, सुहुमणिगोदअपज्जत्तजहण्णउववादजोगादो इदरेसिं जहण्णउववादजोगाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । तस्सेव सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स विसेसपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

पढमसमयआहारस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स ओरालियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं । ४८१ ।

बिदियादिसमयआहारपडिसेहट्ठं पढमसमयआहारयस्स त्ति वुत्तं । किमट्ठं तप्पडिसेहो कीरदे ? एयंताणुवड्ढिआदिजोगेहिंतो बहुपोग्गलागमो होदि त्ति तप्पडिसेहट्ठं [illegible] महाराज

जघन्य पदकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है । ४७९ ।

यह सूत्र सुगम है ।

जो अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव है । ४८० ।

अवगाहना आदिकी अपेक्षा प्रदेशाग्रका संख्याकृत भेद नहीं है, इसलिए 'अन्यतर' पदका ग्रहण किया है । बादर निगोद आदि जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'सूक्ष्म निगोद जीव' पदका निर्देश किया है । पर्याप्तकोंका प्रतिषेध करनेके लिए 'अपर्याप्त' पदका ग्रहण किया है ।

शंका – सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंमें ही जघन्य स्वामित्व किसलिए दिया जाता है ?

समाधान–नहीं, क्योंकि, सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके जघन्य उपपाद योगसे दूसरे जीवोंके जघन्य उपपादयोग असंख्यातगुणे उपलब्ध होते हैं । अब उसी सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके विशेषणोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं–

प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जघन्य योगसे युक्त वह जीव औदारिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है । ४८१ ।

द्वितीय आदि समयोंमें आहारक होनेका निषेध करनेके लिए 'प्रथम समयमें आहारक हुआ' पद कहा है ।

शंका – द्वितीय आदि समयोंमें आहारक होनेका प्रतिषेध किसलिए करते हैं ?

समाधान – एकान्तानुवृद्धि आदि योगोंके द्वारा आनेवाले बहुत पुद्गलोंका निषेध करनेके

विग्गहगदीए चउत्थसमयतब्भवत्थस्स पढमसमयआहारयाणं पडिसेहट्ठं पढमसमयतब्भवत्थस्से त्ति भणिदं किमट्ठं विग्गहगदीए पडिसेहो कीरदे ? ण विग्गहगदीए आगदाणं सव्वजहण्णउववादजोगासंभवादो । तं कुदो णव्वदे? पढमसमयतब्भवत्थस्से त्ति सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । उववादजोगा असंखेज्जवियप्पा अत्थि तेसिं पडिसेहट्ठं जहण्णजोगिस्से त्ति भणिदं ।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥ ४८२ ॥

एदम्हादो वदिरित्तजहण्णवव्वं तमजहण्णं त्ति घेत्तव्वं ।

जहण्णपदेण वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ॥४८३॥

सुगमं ।

अण्णदरस्स देव-णेरइयस्स असण्णिपच्छायदस्स ॥ ४८४ ॥

असण्णिपच्छायदणिद्देसो किमट्ठं कीरदे ? असण्णीहिंतो आगदस्सेव जहण्णउववादजोगो होदि ण अण्णस्से त्ति कीरदे ।

लिए द्वितीय आदि समयोंमें आहारक होनेका प्रतिषेध किया है ।

द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ समयमें तद्भवस्थ होकर प्रथम समयवर्ती आहारक होता है उसका निषेध करनेके लिए ' प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ ' पद कहा है

शंका– विग्रहगतिका प्रतिषेध किसलिए करते है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, विग्रहगतिसे आये हुए जीवोंके सबसे जघन्य उपपादयोगका होना असम्भव है ।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समधान– प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ यह सूत्र वचन अन्यथा बन नहीं सकता है । इससे जाना जाता है कि विग्रहगतिसे आये हुए जीवोंके जघन्य उपपादयोग नहीं होता ।

उपपादयोगके असंख्यात विकल्प हैं उनका प्रतिषेध करनेके लिए ' जघन्य योगवालेके ' यह वचन कहा है ।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र होता है ॥ ४८२ ॥

इससे व्यतिरिक्त जो जघन्य द्रव्य है वह अजघन्य है ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

जघन्य पदकी अपेक्षा वैक्रियिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ।४८३।

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञियोंमेंसे आकर उत्पन्न हुआ जो अन्यतर देव और नारकी जीव है । ४८४ ।

शंका– ' असंज्ञियोंमेंसे आकर उत्पन्न हुआ ' पदका निर्देश किसलिए करते हैं ?

समाधान– असंज्ञियोंमेंसे आये हुए जीवके ही जघन्य उपपादयोग होता है अन्यके नहीं इसलिए उक्त पदका निर्देश करते हैं ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ॥ ४८५ ॥

एत्थ जथा ओरालियसरीरस्स परूवणा कदा तथा कायव्वा। ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं जहण्णउववादजोगेण आगदएयसमयपबद्धत्तणेण भेदाभावादो।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥ ४८६ ॥

सुगमं।

जहण्णपदेण आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ॥४८७॥

सुगमं।

अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तरं विउव्विदस्स ॥ ४८८ ॥

सुगमं।

पढमसमयआहारयस्स पढमसमयतब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ॥ ४८९ ॥

कथमाहारसरीरग्गहणस्स भवसण्णा? न, पुव्वंशरीरपरित्यागद्वारेणोत्तरशरीरोपादानस्य भवव्यपदेशात्। जदि आहारसरीरग्गहणं भवो होदि तो तत्थ अपज्जत्त-

---

प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जघन्य योगवाला यह जीव वैक्रियिकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४८५ ॥

यहां पर जिस प्रकार औदारिकशरीरकी अपेक्षा कथन किया है उस प्रकार कथन करना चाहिए, क्योंकि, औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरमें जघन्य उपपादयोगसे आये हुए एक समयप्रबद्धपनेकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥ ४८६ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यपदकी अपेक्षा आहारकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है।४८७।

यह सूत्र सुगम है।

उत्तर विक्रियाकरनेवाला जो अन्यतर प्रमत्तसंयत जीव है ॥ ४८८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

प्रथम समयमें आहारक हुआ और प्रथम समयमें तद्भवस्थ हुआ जघन्य योगवाला वह जीव आहारकशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४८९ ॥

शंका- आहारकशरीरग्रहणकी भव संज्ञा कैसे है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, यहां पूर्वशरीरका त्याग होकर उत्तर शरीरका ग्रहण होता है, इसलिए इसकी भव संज्ञा है।

5११
4339

कालेण वि होदव्वं ? होदु णाम, आहारमिस्सकायजोगद्धाए तस्स अपज्जत्तभाव-ब्भुवगमादो। जदि एवं तो भवस्स पढमसमए उववादजोगेण होदव्वं ? सच्चमेदं, इच्छिज्जमाणत्तादो। जदि एवं तो पमत्तसंजदस्स दो जीवसमासा पावेंति ? होदु एवं पि* विरोहाभावादो। ण च जीवट्ठाणसुत्तेण सह विरोहो, तत्थ ओरालियसरीरे पज्जत्ते संते चेव संजमो उप्पज्जदि ण तम्मि अपज्जत्ते इदि मणम्मि कादूण अपज्ज-त्तजीवसमासपडिसेहादो। सेसं सुगमं।

पूर्णाशीक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥ ४९० ॥

एवं पि सुगमं।

जहण्णपदेण तेजासरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ॥ ४९१ ॥

सुगमं।

अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयस्स एयंताणुवड्ढीए वड्ढमाणस्स जहण्णजोगिस्स तस्स तेयासरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ॥ ४९२ ॥

शंका-- यदि आहारकशरीरका ग्रहण भव है तो वहाँ पर अपर्याप्त काल भी होना चाहिए।

समाधान-- होओ, क्योंकि, आहारकमिश्रकाययोगके कालके भीतर उसका अपर्याप्तभाव स्वीकार किया गया है।

शंका-- यदि ऐसा है तो भवके प्रथम समयमें उपपादयोग होना चाहिए ?

समाधान-- यह कहना सत्य है, क्योंकि, यह बात हमें इष्ट है।

शंका-- यदि ऐसा है तो प्रमत्तसंयत जीवके दो जीवसमास प्राप्त होते हैं ?

समाधान-- ऐसा भी होओ, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है। ऐसा मानने पर जीवस्थानसूत्रके साथ विरोध नहीं आता, क्योंकि, वहाँ पर औदारिक शरीरके पर्याप्त होने पर ही संयम होता है, औदारिकशरीरके अपर्याप्त रहते हुए नहीं होता ऐसा मनमें विचार कर अपर्याप्त जीवसमासका निषेध किया है। शेष कथन सुगम है।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥ ४९० ॥

यह सूत्र भी सुगम है।

जघन्य पदकी अपेक्षा तैजसशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ॥४९१॥

यह सूत्र सुगम है।

एकान्तानुवृद्धि योगसे वृद्धिको प्राप्त होनेवाला और जघन्य योगसे युक्त जो अन्यतर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव है वह तैजसशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४९२ ॥

---

* ता० प्रतौ 'एवं पि' इति पाठः।

जहा इदरेसिं सरीराणं जहण्णुववादजोगम्मि चेव एगसमयपबद्धं घेत्तूण जहण्णसामित्तं दिण्णं तहा तेयासरीरस्स किण्ण दिज्जदे ? ण, तत्थ पुव्वसंचिदसमयपबद्धाणं संभवेण तेयासरीरस्स जहण्णभावाणुववत्तीदो । उवरि जहण्णएयंताणुवड्ढीए वड्ढमाणस्स पदेसवड्ढी चेव होदि तदो एयंताणुवड्ढिअद्धाए अब्भंतरे* कथं जहण्णसामित्तं दिज्जदे ? ण एस दोसो, एयंताणुवड्ढिजोगेण आगच्छमाणपदेसग्गादो परिणामजोगेणागदसमयपबद्धाणं गलमाणाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो । जदि एवं तो सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तं मोत्तूण अण्णेसिमेयंताणुवड्ढीए जहण्णसामित्तं किण्ण दिज्जदे ? ण, अण्णेसिं जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगेहि सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जहण्णएयंताणुवड्ढिजोगाणमसंखेज्जगुणहीणत्तुवलंभादो । किं च सण्णिपंचिंदियपज्जत्तएसु तेजइयसरीरणोकम्मउक्कस्सट्ठिदी छावट्ठिसागरोवममेत्ता, सुहुमेइंदिएसु पुण अंतोमुहुत्तमेत्ता, अणंतगुणहीणकसायत्तादो । पंचिंदियसमयपबद्धेहिंतो सुहुमेइंदियसमयपबद्धा असंखेज्जगुणहीणा असंखेज्जगुणहीणजोगत्तादो । तेण सुहुमणिगोदेसु* पंचिंदियसमयपबद्धे गालिय तत्थ संचिदसमयपबद्धे परिणामजोगेणागदे अंतोमुहुत्तमेत्ते सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तएयंताणु-

---

शंका-- जिस प्रकार इतर शरीरोंका जघन्य उपपादयोगमें ही एक समयप्रबद्धको ग्रहण कर जघन्य स्वामित्व दिया है उस प्रकार तैजसशरीरका क्यों नहीं दिया जाता ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहाँ पर पूर्वसंचित समयप्रबद्ध सम्भव होने से तैजसशरीरका जघन्यपना नहीं बन सकता ।

शंका-- ऊपर जघन्य एकान्तानुवृद्धिसे वृद्धिको प्राप्त होनेवाले जीवके प्रदेशवृद्धि ही होती है, इसलिए एकान्तानुवृद्धिके कालके भीतर जघन्य स्वामित्व कैसे दिया जा सकता है ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एकान्तानुवृद्धि योगके द्वारा आनेवाले प्रदेशाग्रसे परिणामयोगसे आये हुए समयप्रबद्धोंके गलनेवाले प्रदेशाग्र असंख्यातगुणे उपलब्ध होते हैं ।

शंका-- यदि ऐसा है तो सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकको छोड़कर अन्य जीवोंके एकान्तानुवृद्धिके द्वारा जघन्य स्वामित्व क्यों नहीं दिया जाता ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अन्य जीवोंके जघन्य एकान्तानुवृद्धि योगसे सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तक जीवके जघन्य एकान्तानुवृद्धियोग असंख्यातगुणे हीन उपलब्ध होते हैं । दूसरे संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें तैजसशरीर नोकर्मकी उत्कृष्ट स्थिति छयासठ सागरप्रमाण होती है परन्तु सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है, क्योंकि, उनके अनन्तगुणी हीन कषाय पाई जाती है । तथा पञ्चेन्द्रिय जीवके समयप्रबद्धसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवके समयप्रबद्ध असंख्यातगुणे हीन होते हैं, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके असंख्यातगुणा हीन योग पाया जाता है, इसलिए सूक्ष्म निगोद जीवोंमें पञ्चेन्द्रियसम्बन्धी समयप्रबद्धोंको गलाकर वहाँ परिणामयोगसे आये हुए अन्तर्मुहूर्तप्रमाण संचित हुए समयप्रबद्धोंको सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवके अंतर्मुहूर्त एकान्तानुवृद्धि योगकालके भीतर गलाकर एकान्तानुवृद्धियोगसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण समय-

---

* ता० का० प्रत्योः '-अद्धाणं अब्भंतरे' इति पाठः ।

* ता० प्रतौ 'अणंतगुणहीणकसायत्तादो । तेण सुहुमणिगोदेसु' इति पाठः ।

गालिय अंतोमुहुत्तपमाणमेयंताणुवड्ढिजोगसमयपबद्धेसु गहिदेसु तेजासरीरस्स जहण्णदव्वं होदि त्ति वत्तव्वं। णिल्लेवणट्ठाणाणं पमाणमुक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखे० भागो त्ति भणिदं तेण कम्मट्ठिदीए असंखेज्जभागमेत्तसमयपबद्धाणं संचएण सामित्तचरिमसमए होदव्वमिदि ? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि होंति त्ति कम्मस्स परूविदत्तादो। ण च कम्म णोकम्माणमेयत्तं, कारण-कज्जाणमेयत्तविरोहादो। तेजासरीरणोकम्मस्स जहण्णट्ठिदी एइंदियजीवसमासेसु सुहुमणिगोदअपज्जत्तएयंताणुवड्ढिकालादो थोवेत्ति कुदो णव्वदे ? अण्णदरस्से त्ति वयणादो। अण्णहा खविदकम्मंसियलक्खणेण सुहुमणिगोदेसु हिंडिदूण आगदो त्ति भणेज्ज ? ण च एवं, तदो णव्वदे जहण्णट्ठिदी एयंताणुवड्ढिकालादो थोवे त्ति।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥ ४९३ ॥

सुगमं।

जहण्णपदेण कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ॥४९४॥

सुगमं।

अण्णदरस्स जीवो सुहुमणिगोदजीवेसु पलिदोवमस्स असंखे-

प्रबद्धोंके ग्रहण करने पर तैजसशरीरका जघन्य द्रव्य होता है ऐसा यहाँ कहना चाहिए।

शंका-- निर्लेपनस्थानोंका उत्कृष्ट प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है ऐसा कहा है, इसलिए स्वामित्वके अन्तिम समयमें कर्मस्थितिके असंख्यातवें भागप्रमाण समयप्रबद्धोंका संचय होना चाहिए।

समाधान-- नहीं, क्योंकि, पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपस्थान होते हैं यह कर्मकी अपेक्षा कथन किया है। और कर्म तथा नोकर्म एक नहीं है, क्योंकि, कारण और कार्यको एक होनेमें विरोध आता है।

शंका-- एकेन्द्रिय जीवसमासोंमें तैजसशरीर नोकर्मकी जघन्य स्थिति सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके एकान्तानुवृद्धिकालसे स्तोक है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- 'अन्यतरके' इस वचनसे जाना जाता है। अन्यथा क्षपितकर्मांशिकलक्षणसे सूक्ष्म निगोद जीवोंमें घूमकर आया हुआ जीव ऐसा कहते। परन्तु ऐसा नहीं कहा है। इससे जाना जाता है कि जघन्य स्थिति एकान्तानुवृद्धिके कालसे स्तोक है।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥ ४९३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्य पदकी अपेक्षा कार्मणशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी कौन है ।४९४।

यह सूत्र सुगम है।

अन्यतर जो जीव सूक्ष्म निगोद जीवोंमें पल्यका असंख्यातवां भाग कम

जजदिभागेण ऊणयं कम्मट्ठिदिमच्छिदो । एवं जहा वेयणाए वेयणीयं तहा णेयव्वं । णवरि थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति चरिमसमयभवसिद्धिओ जादो तस्स चरिमसमयभवसिद्धियस्स तस्स कम्मइयसरीरस्स ✡ जहण्णयं पदेसग्गं ॥ ४९५ ॥

जहा वेयणाए जहण्णदव्वविहाणे परूविदं तहा परूवेयव्वं ।

तव्वदिरित्तमजहण्णं ॥ ४९६ ॥

सुगमं ।

एवं पदमीमांसा समत्ता ।

अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवं ओरालियसरीरस्स पदेसग्गं ॥४९७॥

कुदो ? सहावियादो ।

वेउव्वियसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ४९८ ॥

को गुण० ? सेडीए असंखे०भागो । एसो चेव गुणगारो होदि त्ति कुदो णव्वदे ? पुव्वं परूविदगुणगाराणुयोगद्दारादो ।

कर्मस्थितिप्रमाण काल तक रहा । इस प्रकार जैसे वेदना अनुयोगद्वारमें वेदनीय-कर्मकी अपेक्षा कहा है वैसे जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि जीवितव्यके स्तोक प्रमाणमें शेष रहने पर अन्तिम समयवर्ती भवसिद्ध हुआ वह अन्तिम समयवर्ती भवसिद्ध जीव कार्मणशरीरके जघन्य प्रदेशाग्रका स्वामी है ॥ ४९५ ॥

जिस प्रकार वेदना अनुयोगद्वारमें जघन्य द्रव्यविधान प्ररूपणाके समय कहा है उस प्रकार कथन करना चाहिए ।

उससे व्यतिरिक्त अजघन्य प्रदेशाग्र है ॥ ४९६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

इस प्रकार पदमीमांसा समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्वकी अपेक्षा औदारिकशरीरका प्रदेशाग्र सबसे स्तोक है ॥४९७॥

क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उससे वैक्रियिकशरीरका प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ४९८ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका— यह ही गुणकार होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— पूर्वमें कहे गये गुणकार अनुयोगद्वारसे जाना जाता है ।

✡ ता० प्रतौ 'जादो तस्स कम्मइयसरीरस्स' इति पाठः ।

आहारसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ॥ ४९९ ॥

को गुणगारो ? सेडीए असंखेज्जदिभागो ।

तेयासरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ॥ ५०० ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

कम्मइयसरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ॥ ५०१ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

एवमप्पाबहुए समत्ते सरीरपरूवणा समत्ता होदि ।

सरीरविस्सासुवचयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्दाराणि अविभागपडिच्छेदपरूवणा वग्गणपरूवणा फड्डयपरूवणा अंतरपरूवणा सरीरपरूवणाए अप्पाबहुए त्ति ॥ ५०२ ॥

मार्गदर्शक :- [illegible]

को विस्सासुवचओ णाम । पंचण्णं सरीराणं परमाणुपोग्गलाणं जे णिद्धादिगुणेहि तेसु पंचसरीरपोग्गलेसु लग्गा पोग्गला तेसिं विस्सासुवचओ त्ति सण्णा । तेसिं विस्सासुवचयाणं संबंधस्स जो कारणं पंचसरीरपरमाणुपोग्गलगओ णिद्धादिगुणो तस्स वि विस्सासुवचओ त्ति सण्णा, कारणे कज्जुवयारादो । एदेहि छहि अणुयोग—

उससे आहारकशरीरका प्रदेशाग्र असंख्यातगुणा है ॥ ४९९ ॥

गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे तैजसशरीरका प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है ॥ ५०० ॥

गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उससे कार्मणशरीरका प्रदेशाग्र अनन्तगुणा है ॥ ५०१ ॥

गुणकार क्या है? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर शरीरप्ररूपणा समाप्त होती है ।

शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणाकी अपेक्षा यहां ये छह अनुयोगद्वार होते हैं— अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा, वर्गणाप्ररूपणा, स्पर्धकप्ररूपणा, अन्तरप्ररूपणा, शरीरप्ररूपणा और अल्पबहुत्व ॥ ५०२ ॥

see पृ ५५०, ५६०, ५६८

शंका– विस्रसोपचय किसकी संज्ञा है ?

समाधान– पाँच शरीरोंके परमाणुपुद्गलोंके मध्य जो पुद्गल स्निग्ध आदि गुणोंके कारण उन पांच शरीरोंके पुद्गलोंमें लगे हुए हैं उनकी विस्रसोपचय संज्ञा है । उन विस्रसोपचयोंके सम्बन्धका पाँच शरीरोंके परमाणु पुद्गलगत स्निग्ध आदि गुणरूप जो कारण है उसकी भी विस्रसोपचय संज्ञा है, क्योंकि, यहां कारणमें कार्यका उपचार किया है ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

द्वारेहि बंधणगुणस्स परूवणा कीरदे । कारणे अवगदे तक्कारणाणुसारिस्स कज्जस्स वि अवगमादो ।

अविभागपडिच्छेदपरूवणदाए एक्केक्कम्मि ओरालियपदेसे केवडिया* अविभागपडिच्छेदा ॥ ५०३ ॥

किं संखेज्जा किमसंखेज्जा किमणंता त्ति एदेण पुच्छा कदा ।

अणंता अविभागपडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा ॥ ५०४ ॥

को अविभागपडिच्छेदो णाम ? एगपरमाणुम्हि जा जहण्णिया वड्ढी* सो अविभागपडिच्छेदो णाम । तेण पमाणेण परमाणुं जहण्णगुणे उक्कस्सगुणे वा छिज्जमाणे अणंताविभागपडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता होंति ।

एवडिया अविभागपडिच्छेदा ॥ ५०५ ॥

जेत्तिया अविभागपडिच्छेदा एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि विस्सासुवचयपरमाणू एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि एगबंधणबद्धा तत्तिया चेव, कज्जस्स कारणाणुसारित्त--

---

अब इन छह अनुयोगद्वारोंका अवलम्बन लेकर बन्धनगुणका कथन करते हैं, क्योंकि, कारणका ज्ञान हो जाने पर उस कारणके अनुकूल कार्यका भी ज्ञान हो जाता है ।

अविभागप्रतिच्छेद प्ररूपणाकी अपेक्षा एक एक औदारिक प्रदेशमें कितने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥ ५०३ ॥

क्या संख्यात होते हैं, क्या असंख्यात होते हैं या क्या अनन्त होते हैं इस प्रकार इस सूत्र द्वारा पृच्छा की गई है ।

अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं जो कि सब जीवोंसे अनन्तगुणे होते हैं ॥ ५०४ ॥

शंका-- अविभागप्रतिच्छेद किसे कहते हैं ?

समाधान-- एक परमाणुमें जो जघन्य वृद्धि होती है उसे अविभागप्रतिच्छेद कहते हैं । उस प्रमाणसे परमाणुओंके जघन्य गुण अथवा उत्कृष्ट गुणका छेद करनेपर सब जीवोंसे अनन्तगुणे अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ।

इतने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥ ५०५ ॥

एक एक परमाणुमें जितने अविभागप्रतिच्छेद होते हैं, एक एक परमाणुमें एक बंधनबद्ध विस्रसोपचय परमाणु भी उतने ही होते है, क्योंकि, कार्य कारणके अनुसार देखा जाता है ।

---

* अ० का० प्रत्योः '-पदेसा केवडिया' इति पाठः ।

* ता० प्रतौ 'जो जहण्णिया वड्ढी अ० का० प्रत्योः 'जा जहण्णियसट्ठी' इति पाठः ।

दंसणादो। एत्थ सव्वजीवेहि अणंतगुणत्तं पडि सरिसत्तं, ण संखाए। कुदो ? जहण्ण-अणुभागेण लग्गथोव*विस्सासुवचयणिप्फण्णजहण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो* जहण्णाणु-भागादो अणंतगुणाणुभागेणागदविस्सासुवचयणिप्फण्णउक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो। कथं विस्सासुवचयाणमविभागपडिच्छेदसण्णा ? कज्जे कारणु-वयारादो। अविभागपडिच्छेदकज्जविस्सासुवचयाणं पि तव्ववएससिद्धीए।

वग्गणपरूवणदाए अणंता अविभागपडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा एया वग्गणा भवदि ॥ ५०६ ॥

जहण्णवग्गणाए उक्कस्सवग्गणाए अजहण्ण-अणुक्कस्सवग्गणाए अविभाग-पडिच्छेदाणं पमाणं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयाणमुवलंभादो।

एवमणंताओ वग्गणाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाण-मणंतभागो* ॥ ५०७ ॥

एत्तियाओ वग्गणाओ घेत्तूण एगमोरालियसरीरट्ठाणं होदि। एवमसंखेज्जलोग-मेत्तसव्वट्ठाणाणं पत्तेयं पत्तेयं अभवसिद्धिएहि अणंतगुण-सिद्धाणमणंतभागमेत्तवग्गणाओ होंति त्ति परूवेदव्वं। असंखेज्जलोगमेत्तसव्वजीवरासीसु अट्ठंकं पडि गुणगारसरूवेण

यहाँ पर सब जीवोंसे अनन्तगुणत्वकी अपेक्षा समानता है, संख्याकी अपेक्षा नहीं, क्योंकि, जघन्य अनुभागके कारण लगे हुए स्तोक विस्रसोपचयोंसे निष्पन्न जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणाकी अपेक्षा जघन्य अनुभागसे अनन्तगुणे अनुभागके कारण आये हुए विस्रसोपचयोंसे निष्पन्न उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग आता है।

शंका— विस्रसोपचयोंकी अविभागप्रतिच्छेद संज्ञा कैसे है ?

समाधान— कार्यमें कारणका उपचार करनेसे अविभागप्रतिच्छेदोंके कार्यरूप विस्र-सोपचयोंकी वह संज्ञा सिद्ध होती है।

वर्गणाप्ररूपणाकी अपेक्षा सब जीवोंसे अनन्तगुणे ऐसे अनन्त अविभागप्रति-च्छेदोंकी एक वर्गणा होती है ॥ ५०६ ॥

यह जघन्य वर्गणा, उत्कृष्ट वर्गणा और अजघन्य अनुत्कृष्ट वर्गणाका प्रमाण है, क्योंकि, सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु उपलब्ध होते हैं।

इस प्रकार अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण अनन्त वर्गणायें होती हैं ॥ ५०७ ॥

इतनी वर्गणाओंका आश्रय लेकर एक औदारिकशरीरस्थान होता है। इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण सब स्थानोंकी अलग अलग अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण वर्गणायें होती हैं ऐसा कथन करना चाहिए। अष्टांकके प्रति असंख्यात लोकप्रमाण सब जीवराशियों

---

* का० प्रतौ 'लग्गं थोवं' इति पाठः। * अ० प्रतौ '-णिप्फण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो' इति पाठः।
* ता० प्रतौ 'सिद्धाणमणंतभागा' इति पाठः।

पविट्ठासु वि वग्गणाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणाओ सिद्धाणमणंतभागमेत्ताओ चेव होंति, जहण्णवग्गणअविभागपडिच्छेदेहिंतो तत्थ जहण्णएगेगवग्गणाए सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तअविभागपडिच्छेदुवलंभादो ।

फड्डयपरूवणदाए अणंताओ वग्गणाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो तमेगं फड्डयं भवदि ॥ ५०८ ॥

एत्तियाहि चेव वग्गणाहि एगं फड्डयं होदि त्ति कुदो णव्वदे ? एवम्हादो चेव सुत्तादो । किं फड्डयं णाम ? जत्थ कमवड्ढी कमहाणी च दिस्सदि तं फड्डयं । को कमो ? पढमवग्गणादो बिदियवग्गणा जत्तिएण वड्ढिदा तत्तियमेत्तेणेव अणंतरुवरिमवग्गणाए जा वड्ढी सो कमो णाम । जत्थ एसो कमो अत्थि तमेगं फड्डयं । एवम्हि कमे फिट्टे फड्डयंतरं होदि । एवं सव्वफड्डयाणं पि पत्तेयं पत्तेयं वत्तव्वं ।

एवमणंताणि फड्डयाणि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ॥ ५०९ ॥

एवडियाणि फड्डयाणि घेत्तूण एगेगमोरालियसरीरट्ठाणं होदि । एत्थ अणंत-

---

के गुणकाररूपसे प्रविष्ट होने पर भी वर्गणायें अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ही होती हैं, क्योंकि, जघन्य वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंसे वहां पर जघन्य एक एक वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद सब जीवोंसे अनन्तगुणे उपलब्ध होते हैं ।

स्पर्धकप्ररूपणाकी अपेक्षा अभव्योंसे अनन्तगुणी और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण जो अनन्त वर्गणायें हैं वे मिलकर एक स्पर्धक होता है ॥ ५०८ ॥

शंका–इतनी ही वर्गणायें मिलकर एक स्पर्धक होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान– इसी सूत्रसे जाना जाता है ।

शंका–स्पर्धक किसे कहते हैं ?

समाधान–जहां पर क्रमवृद्धि और क्रमहानि दिखाई देती है उसे स्पर्धक कहते हैं ।

शंका–क्रम क्या है ?

समाधान–प्रथम वर्गणासे द्वितीय वर्गणा जितने अविभागप्रतिच्छेदोंसे वृद्धिको प्राप्त हुई है उतने ही अविभागप्रतिच्छेदोंसे जो अनन्तर उपरिम वर्गणामें वृद्धि है वह क्रम है । जहां पर यह क्रम है वह एक स्पर्धक है । इस क्रमके बिगड़ने पर दूसरा स्पर्धक प्रारम्भ होता है । इस प्रकार सब स्पर्धकोंका अलग अलग कथन करना चाहिए ।

इस प्रकार अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण अनन्त स्पर्धक होते हैं ॥ ५०९ ॥

इतने स्पर्धकोंको मिला कर एक एक औदारिकशरीरस्थान होता है । यहां पर अनन्त-

---

ता० का० प्रत्योः ' अणंतगुण-सिद्धाण– ' इति पाठः ।

भागवड्डि-असंखेज्जभागवड्डि-संखेज्जभागवड्डि-संखेज्जगुणवड्डि-असंखेज्जगुणवड्डि-अणंतगुणवड्डीओ घेत्तूण एगं छट्ठाणं होदि। एरिसाणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि छट्ठाणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं। तेसिं परूवणाए कीरमाणाए जहा भावविहाणे परूविदं तहा परूवेदव्वं।

अंतरपरूवणदाए एक्केक्कस्स फड्डयस्स केवडियमंतरं ॥५१०॥

सुगमं।

सव्वजीवेहि अणंतगुणा। एवडियमंतरं ॥ ५११ ॥

एगेण दोहि तीहि संखेज्जेहि असंखेज्जेहि वा अविभागपडिच्छेदेहि फड्डयंतरं ण णिप्पज्जदि किंतु सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तअविभागपडिच्छेदेहि चेव फड्डयंतरं णिप्पज्जदि त्ति घेत्तव्वं। ट्ठाणंतरपरूवणा एत्थ किण्ण कदा? ण, फड्डयंतरे अवगदे ट्ठाणंतरस्स वि अवगमादो।

सरीरपरूवणदाए अणंता अविभागपडिच्छेदा सरीरबंधणगुणपण्णच्छेदणणिप्पण्णा ॥ ५१२ ॥

सरीरं सहावो सीलमिदि एयट्ठो। तस्स परूवणदाए अणंता अविभागपडिच्छेदा होंति त्ति पुव्वमविभागपडिच्छेदपरूवणाए परूविदं। ते कत्तो णिप्पण्णा त्ति पुच्छिदे

भागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि और अनन्तगुणवृद्धि ये मिला कर एक षट्स्थान होता है। ऐसे असंख्यात लोकप्रमाण षट्स्थान होते हैं ऐसे यहाँ ग्रहण करना चाहिए। उनका कथन करने पर जिस प्रकार भावविधानमें कथन किया है उस प्रकार करना चाहिए। ५, ६, १२ पृ. १२४-१२८

अन्तरप्ररूपणाकी अपेक्षा एक एक स्पर्धकका कितना अन्तर है। ५१० ॥

यह सूत्र सुगम है।

सब जीवोंसे अनन्तगुणा अन्तर है। इतना अन्तर है ॥ ५११ ॥

एक, दो, तीन, संख्यात और असंख्यात अविभागप्रतिच्छेदोंका आश्रय लेकर स्पर्धकोंका अन्तर नहीं उत्पन्न होता है किन्तु सब जीवोंसे अनन्तगुणे अविभागप्रतिच्छेदोंका आश्रय लेकर ही स्पर्धकोंका अन्तर उत्पन्न होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शंका-- यहाँ पर स्थानोंके अन्तरका कथन क्यों नहीं किया?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, स्पर्धकोंके अन्तरका ज्ञान होने पर स्थानोंके अन्तरका भी ज्ञान हो जाता है।

शरीरप्ररूपणाकी अपेक्षा शरीरके बन्धनके कारणभूत गुणोंका प्रज्ञासे छेद करने पर उत्पन्न हुए अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ॥ ५१२ ॥

शरीर, शील और स्वभाव ये एकार्थवाची शब्द हैं। उसकी प्ररूपणा करने पर अनन्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं ऐसा पहले अविभागप्रतिच्छेद प्ररूपणाके समय

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

ॐ प्रतिषु ' एगेगदोहि ' इति पाठः।

सरीरबंधणगुणपण्णच्छेदणणिप्पण्णा । अणंताणंतपोग्गलसमवाओ सरीरं । तेसिं पोग्गलाणं जेण गुणेण परोप्परं बंधो होदि सो बंधणगुणो णाम । तस्स गुणस्स पण्णच्छेदणेण बुद्धिच्छेदणेण णिप्पण्णा पुव्वुत्ता अविभागपडिच्छेदा होंति, गुणेसु अण्णच्छेदाणमसंभवादो । पण्णच्छेदणे त्ति वयणेण सेसणवण्णं छेदणाणं पडिसेहो कदो । ताओ सेसणवण्णाओ छेदणाओ त्ति वुत्ते तासिं परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

छेदणा पुण दसविहा ॥ ५१३ ॥

छिद्यते पृथक्क्रियतेऽनेनेति छेदना । सा च दशविधा भवति संक्षेपेण । तासिं परूवणट्ठमुत्तरगाहासुत्तं भणदि—

णाम ट्ठवणा दवियं सरीरबंधणगुणप्पवेसा य ।
वल्लरि अणुत्तडेसु य उप्पइया पण्णभावे य ॥ ५१४ ॥

तत्थ सचित्त-अचित्तदव्वाणि अण्णेहिंतो पुध काऊण गण्णा जाणावेदि त्ति णामच्छेदणा । ट्ठवणा दुविहा सब्भावासब्भावट्ठवणाभेदेण । सा वि छेदणा होदि, ताए अण्णेसिं दव्वाणं सरूवायगमादो । दवियं णाम उप्पाद-ट्ठिदि-भंगलक्खणं । तं पि छेदणा होदि, दव्वदो दव्वंतरस्स परिच्छेददंसणादो । ण च एसो असिद्धो, कुडवादो

कह आये हैं । वे किससे निष्पन्न होते हैं ऐसा पूछने पर वे शरीरबन्धके कारणभूत गुणोंका प्रज्ञासे छेद करने पर उत्पन्न होते हैं यह कहा है । अनन्तानन्त पुद्गलोंके समवायका नाम शरीर है । उन पुद्गलोंका जिस गुणके कारण परस्पर बन्ध होता है उसका नाम बन्धनगुण है । उस गुणका प्रज्ञासे छेद करनेके कारण अर्थात् बुद्धिसे छेद करनेके कारण निष्पन्न हुए पूर्वोक्त अविभागप्रतिच्छेद होते हैं, क्योंकि, गुणोंमें अन्य किसी द्वारा छेदोंका होना सम्भव नहीं है । 'प्रज्ञाच्छेदन' इस वचन द्वारा शेष नौ प्रकारके छेदोंका निषेध किया है । वे नौ प्रकारके छेद कौनसे हैं ऐसा पूछने पर उनका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

परन्तु छेदना दस प्रकारकी है ॥ ५१३ ॥

छिद्यते अर्थात् जिसके द्वारा पृथक् किया जाता है उसकी छेदना संज्ञा है । वह संक्षेपमें दस प्रकारकी होती है । उसका कथन करनेके लिए आगेका गाथासूत्र कहते हैं—

नामछेदना, स्थापनाछेदना, द्रव्यछेदना, शरीरबन्धनगुणछेदना, प्रदेशछेदना, वल्लरिछेदना, अणुछेदना, तटछेदना, उत्पातछेदना और प्रज्ञाभावछेदना इसप्रकार छेदना दस प्रकारकी है ॥ ५१४ ॥

उनमेंसे सचित्त और अचित्त द्रव्योंको अन्य द्रव्योंसे पृथक् करके जो संज्ञाका ज्ञान कराती है वह नामछेदना है । स्थापना दो प्रकारकी है- सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापना वह भी छेदना है, क्योंकि, उस द्वारा अन्य द्रव्योंके स्वरूपका ज्ञान होता है । जो उत्पाद, स्थिति और व्ययलक्षणवाला है वह द्रव्य कहलाता है । वह भी छेदना है, क्योंकि, द्रव्यके दूसरे द्रव्यका ज्ञान होता हुआ

धण्णाणं तुलादो तगरादीणं दंडादो जोयणादीणं परिच्छेदुवलंभादो। पंचण्णं सरीराणं बंधणगुणो वि छेदणा णाम, पण्णाए छिज्जमाणत्तादो अविभागपडिच्छेदपमाणेण छिज्जमाणत्तादो वा। पदेसो वि छेदणा होदि, उड्ढाहोमज्झादिपदेसेहि सव्वदव्वाणं छेदवंसणादो। कुढारादीहि अडइरुक्खादिखंडणं वल्लरिच्छेदो णाम। परमाणुगद-एगादिदव्वसंखाए[1] अण्णेसि दव्वाणं संखावगमो अणुच्छेदो णाम। अथवा पोग्गलागासादीणं णिव्विभागच्छेदो अणुच्छेदो णाम। दोहि वि तडेहि[2] णदीपमाणपरिच्छेदो अथवा दव्वाणं सयमेव छेदो तडच्छेदो णाम। ण च पदेसच्छेदे[3] एसो पददि, तस्स बुद्धिकज्जत्तादो[4]। ण वल्लरिच्छेदे पददि, तस्स पउरुसेयत्तादो। णाणुच्छेदे पददि, परमाणुपज्जत्तच्छेदाभावादो। रत्तीए इंदाउह-धूमकेउआदीणमुप्पत्ती पडिमारोहो भूमिकंप-रुहिरवरिसादओ च उप्पाइया छेदणा णाम, एदेसुप्पादैः राष्ट्रभङ्ग-नृपपातादितर्कणात्। मदि-सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणेहि छहव्वावगमो पण्णभावच्छेदणा णाम। एदासु दससु छेदणासु णव छेदणाओ अवणिय सरीरबंधणगुणच्छेदणाए गहणं कदं, अण्णच्छेदणेहि एत्थ कज्जाभावादो। ओरालियसरीरस्सेव अविभागपडिच्छेदादि—

पार्श्वभ्युदय आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

देखा जाता है। यह असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि, कुडव से धान्योंका, तुलासे तगर आदिका और दण्डसे योजन आदिका परिज्ञान होता हुआ उपलब्ध होता है। पाँच शरीरोंका बन्धनगुण भी छेदना है, क्योंकि, उसका प्रज्ञाद्वारा छेद किया जाता है। या अविभागप्रतिच्छेदके प्रमाणसे उसका छेद किया जाता है। प्रदेश भी छेदना होती है, क्योंकि, ऊर्ध्वप्रदेश, अधःप्रदेश और मध्यप्रदेश आदि प्रदेशोंके द्वारा सब द्रव्योंका छेद देखा जाता है। कुठार आदिके द्वारा जङ्गलके वृक्ष आदिका खण्ड करना वल्लरिछेदना कहलाती है। परमाणुगत एक आदि द्रव्योंकी संख्याद्वारा अन्य द्रव्योंकी संख्याका ज्ञान होना अणुच्छेदना कहलाती है। अथवा पुद्गल और आकाश आदिके निर्विभाग छेदका नाम अणुच्छेदना है। दोनों ही तटोंके द्वारा नदीके परिमाणका परिच्छेद करना अथवा द्रव्योंका स्वयं ही छेद होना तटच्छेदना है। इसका प्रदेशछेदमें अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि, वह बुद्धिका कार्य है। वल्लरिच्छेदमें भी अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि, वह पौरुषेय होता है। अणुच्छेदमें भी अन्तर्भाव नहीं होता, क्योंकि, इसका परमाणु पर्यन्त छेद नहीं होता। रात्रिमें इन्द्रधनुष और धूमकेतु आदिकी उत्पत्ति तथा प्रतिमारोध, भूमिकम्प और रुधिरकी वर्षा आदि उत्पातछेदना है, क्योंकि, इन उत्पातोंके द्वारा राष्ट्रभङ्ग और राजाका पतन आदिका अनुमान किया जाता है। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंका ज्ञान होना प्रज्ञाभावछेदना है। यहाँ इन दस छेदनाओंमें से नौ छेदनाओंको छोड़कर शरीरबन्धनगुणछेदनाका ग्रहण किया है; क्योंकि, अन्य छेदनाओंसे यहाँ कोई प्रयोजन नहीं है।

शंका— यहाँ पर औदारिकशरीरके ही अविभागप्रतिच्छेद आदिका कथन किया है, शेष

---

[1] ता० प्रतौ 'परमाणुगम (द) एगादिदव्वसंखाए' अ० का० प्रत्योः 'परमाणुगमएगादिदव्वसंखाए' इति पाठः। [2] ता० प्रतौ 'वि तदी (तडे) हि' अ० का० प्रत्योः 'वि तदीहि' इति पाठः। [3] अ० प्रतौ 'पदेमे छेदे' इति पाठः। [4] अ० का० प्रत्योः 'बुद्धिकयत्तादो' इति पाठः।

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

परूवणा कदा सेससरीराणं किण्ण कदा ? ण, एक्कस्स परूवणदाए कदाए तत्तो चेव सेसाणं सरूवावगमादो* । उवरि भण्णमाणअप्पाबहुगादो च णव्वदे जहा सेसाणं पि सरीराणं एसेव परूवणा होदि त्ति । तेसिमविभागपडिच्छेदाणमभावे उवरिमअप्पाबहुआणुववत्तीए☆ ।

अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स अविभाग-पडिच्छेदा ॥ ५१५ ॥

ओरालियसरीरस्स अणंतपरमाणूणं अविभागपडिच्छेदसमूहो थोवो होदि । कुदो ? सहाविदादो ।

वेउव्वियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥ ५१६ ॥

को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

आहारसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥ ५१७ ॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तेयासरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥ ५१८ ॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

शरीरोंके अविभागप्रतिच्छेद आदिका कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, एकका कथन करने पर उसीसे शेषके स्वरूपका ज्ञान हो जाता है । तथा आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे भी जानते हैं कि शेष शरीरोंकी भी यही प्ररूपणा है । यदि उनके अविभागप्रतिच्छेद न हों तो आगे कहा जानेवाला अल्प-बहुत्व नहीं बन सकता है ।

अल्पबहुत्वकी अपेक्षा औदारिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद सबसे स्तोक हैं ॥ ५१५ ॥

औदारिकशरीरके अनन्त परमाणुओंके अविभागप्रतिच्छेदोंका समूह स्तोक है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उनसे वैक्रियिकशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१६ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उनसे आहारकशरीरके अविभाग प्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१७ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उनसे तैजसशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१८ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

---

* ता० प्रतौ ' सरूवागमादो ' इति पाठः] ☆ ता० प्रतौ '-णुववत्ती (ए-)' अ० का० प्रत्योः '-णुववत्ती ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

कम्मइयसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ॥ ५१९ ॥

को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एवं छहि अणुयोगद्दारेहि बंधणगुणस्सेव परूवणा कदा । तत्थतणविस्सासुवचयाणं किण्ण परूवणा कीरदे? ण, तक्कारणपरूवणाए कदाए तेसिं पि परूवणा कदा चेव होदि त्ति तेसिं पुध परूवणा ण कीरदे । तम्हा तेसिं विस्सासुवचयाणं पि एदं चेव अप्पाबहुअं परूवेदव्वं । ण च अविभागपडिच्छेदमेत्तविस्सासुवचएहि होदव्वं चेवे त्ति णियमो अत्थि, णाइयं कारणानि कार्यवन्ति–भवन्तीति न्यायात् । एवं सरीरविस्सासुवचयपरूवणा समत्ता ।

विस्सासुवचयपरूवणदाए एक्केक्कम्हि जीवपदेसे केवडिया विस्सासुवचया उवचिदा ॥ ५२० ॥

एसा विस्सासुवचयपरूवणा पुणरुत्ता, सरीरविस्सासुवचयपरूवणाए चेव विस्सासुवचयाणं परूविदत्तादो । तदो एसा ण परूवेदव्वा त्ति? ण एस दोसो, सरीरभूदपंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्स सरीरविस्सासुवचयपरूवणाए परूवणा कदा । संपहि एदीए विस्सासुवचयपरूवणाए जीवेण मुक्काणं पंचण्णं सरीराणं पोग्गलाण–

उनसे कार्मणशरीरके अविभागप्रतिच्छेद अनन्तगुणे हैं ॥ ५१९ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

शंका-- इस प्रकार छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर बन्धनगुणकी ही प्ररूपणा की है । वहां रहनेवाले विस्रसोपचयोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं करते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, उनके कारणकी प्ररूपणा करने पर उनकी भी प्ररूपणा की गई के समान होती है, इसलिए उनकी अलगसे प्ररूपणा नहीं करते हैं । इसलिए उन विस्रसोपचयोंकी अपेक्षा भी यही अल्पबहुत्व कहना चाहिए । और विस्रसोपचय अविभागप्रतिच्छेदप्रमाण होने ही चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, कारण नियमसे कार्यवाले नहीं होते हैं ऐसा न्याय है ।

इस प्रकार शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणा समाप्त हुई ।

विस्रसोपचयप्ररूपणाकी अपेक्षा एक एक जीवप्रदेश पर कितने विस्रसोपचय उपचित हैं ५२० ॥

शंका-- यह विस्रसोपचयप्ररूपणा पुनरुक्त है, क्योंकि, शरीरविस्रसोपचय प्ररूपणाके समय ही विस्रसोपचयोंका कथन कर आये हैं, इसलिए इसका कथन नहीं करना चाहिए ?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, शरीरभूत पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयका शरीरविस्रसोपचयप्ररूपणाके समय कथन किया है । अब इस विस्रसोपचयप्ररूपणाके द्वारा जिन्होंने औदयिक भावको नहीं छोड़ा है और जो समस्त लोकाकाशके प्रदेशोंको व्याप्त कर

मच्चत्तओदइयभावाणं सव्वलोगागासपदेसमाऊरिय ट्ठियाणं विस्सासुवचय-परूवणा कीरदे, तदो पउणरुत्तियाभावादो परूवेदव्वा त्ति सिद्धं । एक्केक्कम्हि जीवपदेसे इदि उत्ते एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि त्ति घेत्तव्वं । कधं परमाणुस्स जीव-पदेसण्णा? आधेये आधारोवयारादो । ण च जीवादो अवेदाणमाधाराधेयभावो णत्थि, भूदपुव्वगदिणाएण तदुवलंभादो । जीव-पोग्गलाणमण्णोण्णाणुगयत्ते परमाणुस्स वि जीवपदेसत्तवएसाविरोहादो वा । सेसं सुगमं ।

अणंता विस्सासुवचया उवचिदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा ॥५२१॥

पंचण्णं सरीराणं एक्केक्को परमाणू जीवमुक्को वि संतो सव्वजीवे अणंत-गुणमेत्तविस्सासुवचएहि उवचिदो होदि । तेण कारणेण एदे धुवक्खंधसांतरणिरंतर-वग्गणासु सरिसधणिया होदूण णिवदंति ।

ते च सव्वलोगागदेहि बद्धा ॥ ५२२ ॥

किमट्ठमिदं सुत्तं वुच्चदे ?

एयक्खेत्तोगाढं सव्वपदेसेहि कम्मणो जोग्गं ।
बंधइ जहुत्तहेऊ सादियमह अणादियं चेदि ॥ २१ ॥

इदि वयणादो जम्हि पदेसे जो जीवो ट्ठिदो तत्थ ट्ठिदा चेव पोग्गला मिच्छत्तादि-

---

स्थित हैं ऐसे जीवके द्वारा छोड़े गये पाँच शरीरोंकी विस्रसोपचयप्ररूपणा करते हैं, इसलिए पुनरुक्त दोषका अभाव होनेसे उसका कथन करना चाहिए यह सिद्ध होता है ।

एक एक जीवप्रदेश पर ऐसा कहने पर एक एक परमाणुपर ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

शंका-- परमाणुकी जीवप्रदेश संज्ञा कैसे है ?

समाधान-- आधेयमें आधारका उपचार करनेसे परमाणुकी जीवप्रदेश संज्ञा है । यदि कहा जाय कि जो जीवके द्वारा नहीं वेदे जा रहे हैं उनमें आधार-आधेयभाव नहीं बन सकता, सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, भूतपूर्व गतिन्यायके अनुसार आधार-आधेयभावकी उपलब्धि हो जाती है । अथवा जीव और पुद्गलोंके परस्परमें अनुगत होने पर परमाणुकी भी जीवप्रदेश संज्ञा होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शेष कथन सुगम है ।

अनन्त विस्रसोपचय उपचित हैं जो कि सब जीवोंसे अनन्तगुणे हैं ॥ ५२१ ॥

पाँच शरीरोंका एक एक परमाणु जीवसे मुक्त होकर भी सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचयोंसे उपचित होता है, इसलिए ये ध्रुवस्कन्धसान्तरनिरन्तर वर्गणाओंमें समान धनवाले हो कर अन्तर्भावको प्राप्त होते हैं ।

वे सब लोकमेंसे आकर बद्ध हुए हैं ॥ ५२२ ॥

शंका-- यह सूत्र किसलिए कहते हैं ?

समाधान-- अपने अपने कहे गये हेतुके अनुसार कर्मके योग्य सादि, अनादि और सब जीवप्रदेशोंके साथ एक एक क्षेत्रावगाहीपनेको प्राप्त हुआ पुद्गल बँधता है ॥ २१ ॥

इस वचनके अनुसार जिस प्रदेश पर जो जीव स्थित है वहां स्थित जो पुद्गल हैं वे ही

पंचएहि जहा पंचसरूवेण परिणमंति तहा विस्सासुवचया वि किं तत्थ ट्ठिदा चेव बंधमागच्छंति आहो णागच्छंति त्ति पुच्छिदे तण्णिण्णयत्थमिदं सुत्तमागयं । ते पंचसरीरक्खंधा सव्वलोगागदेहि विस्सासुवचएहि बद्धा होंति । सव्वलोगागासपदेसट्ठिया पोग्गला समीरणादिवसेण गदिपरिणामेण वा आगंतूण तेहि सह बंधमागच्छंति त्ति भणिदं होदि । अहवा एदस्स सुत्तस्स अण्णहा अवयारो कीरदे । तं जहा– ते पंचसरीरपोग्गला जीवमुक्का होदूण कत्थ अच्छंति त्ति वुत्ते तप्पदेसपरूवणट्ठमिदं सुत्तमागदं । सव्वलोगगदा णाम सव्वागासपदेसा, तेहि विरहिदआगासाभावादो । तेहि सव्वागासपदेसेहि ते बद्धा सह गदा होंति । पंचसरीरपोग्गला जीवमुक्कसमए चेव सव्वागासमावूरिदूण अच्छंति त्ति भणिदं होदि । संपहि तत्थ तेसिमवट्ठाणसरूवपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमागदं–––

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तेसिं चउव्विहा हाणी–दव्वहाणी खेत्तहाणी कालहाणी भावहाणी चेवि ॥ ५२३ ॥

तेसिं जीवादो विप्फट्टिय सव्वलोगं गदाणं चउव्विहाए हाणीए परूवणं कस्सामो, अण्णहा तव्विसयणिण्णयाणुववत्तीदो ।

मिथ्यात्व आदि कारणोंसे जिस प्रकार पाँच रूपसे परिणमन करते हैं उसी प्रकार वहाँ पर स्थित हुए ही विस्रसोपचय भी क्या बन्धको प्राप्त होते हैं या बन्धको नहीं प्राप्त होते हैं, इस प्रकार इस बातका निर्णय करनेके लिए यह सूत्र आया है ।

वे पाँचों शरीरोंके स्कन्ध समस्त लोकमेंसे आये हुए विस्रसोपचयोंके द्वारा बद्ध होते हैं । सब लोकाकाशके प्रदेशोंपर स्थित हुए पुद्गल समीरण आदिके वशसे या गतिरूप परिणामके कारण आकर उनके साथ सम्बन्धको प्राप्त होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अथवा इस सूत्रका अन्य प्रकारसे अवतार कहते हैं । यथा––– वे पाँच शरीरोंके पुद्गल जीवसे मुक्त होकर कहाँ पर रहते हैं ऐसा पूछने पर उनके रहनेके प्रदेशका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है । ' सव्वलोगगदा ' इस पदका अर्थ सब लोकाकाशके प्रदेश हैं, क्योंकि, उनसे रहित आकाशका अभाव है । आकाशके उन सब प्रदेशोंके साथ वे बद्ध हैं अर्थात् उनके साथ रहते हैं । पाँचों शरीरोंके पुद्गल जीवसे मुक्त होनेके समयमें ही समस्त आकाशको व्याप्त कर रहते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । अब वहाँ उनके अवस्थानके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र आया है–––

उनकी चार प्रकारकी हानि होती है–– द्रव्यहानि, क्षेत्रहानि, कालहानि और भावहानि ॥ ५२३ ॥

जीवसे अलग हो कर सब लोकको प्राप्त हुए उन पुद्गलोंका चार प्रकारकी हानिद्वारा कथन करते हैं, अन्यथा उस विषयका निर्णय नहीं हो सकता ।

दव्वहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे एयपदेसियवग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५२४ ॥

जे ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा जीवादो विफट्टसमए चेव अण्णेहि परमाणूहि असंजुत्ता संता सव्वलोगमावूरिय ट्ठिदा तेसिं गहिदसलागाओ बहुगाओ । बहुत्तं कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, विरोहादो । जीवादो पुधभूदाणं पंचसरीरपोग्गलाणमेसा परूवणा त्ति कुदो णव्वदे ? एयपदेसियवग्गणाए दव्वा बहुआ त्ति सुत्तादो । ण च पंचसरीरेसु जीवसहिदेसु एयपदेसियवग्गणाए दव्वमत्थि, अगहणाए गहणभावविरोहादो । अविरोहे वा अभेदो होज्ज, अणंताणंतपरमाणुसमुदयसमागमेण विणा ओरालियसरीरभावविरोहादो । ते च परमाणू अणंताणंतेहि विस्सासुवचएहि पादेक्कं उवचिदा, तत्थ अणंताणं बंधणगुणविभागपडिच्छेदाणं संभवादो । ण च परमाणुम्हि ओदइयभावे* संते अणंताणंताणं बंधणगुणाविभागपलिच्छेदाणमभावो होदि, विरोहादो# ।

द्रव्यहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरकी एकप्रदेशी वर्गणाके जो द्रव्य हैं वे बहुत हैं जो कि अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५२४ ॥

जो औदारिकशरीरके नोकर्मप्रदेश जीवसे अलग होनेके समयमें ही अन्य परमाणुओंसे असंयुक्त होकर सब लोकको व्याप्त कर स्थित हैं उनकी ग्रहण की गई शलाकायें बहुत हैं ।

शंका-- इनका बहुत्व किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- इसी सूत्रसे जाना जाता है । और एक प्रमाण अन्य प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है ।

शंका-- जीवसे पृथक् हुए पाँच शरीरोंके पुद्गलोंकी यह प्ररूपणा है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- एकप्रदेशी वर्गणाके द्रव्य बहुत हैं इस सूत्रसे जाना जाता है । और जीव सहित पाँच शरीरोंमें एकप्रदेशी वर्गणाका द्रव्य नहीं है, क्योंकि, अग्रहण योग्य वर्गणाके ग्रहणभावके होनेमें विरोध आता है । यदि अविरोध माना जाता है तो अभेद हो जायगा, क्योंकि, अनन्तानन्त परमाणुसमुदयसमागमके बिना उनके औदारिकशरीररूप होनेमें विरोध आता है ।

वे परमाणु अलग अलग अनन्तानन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं, क्योंकि, उनमें बंधनगुणके अनंत अविभागप्रतिच्छेद सम्भव हैं । और परमाणुमें औदयिकभावके रहते हुए बन्धनगुणके अनंतानंत अविभागप्रतिच्छेदोंका अभाव नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा होनेका विरोध है ।

---

* ता० प्रतौ ' ओदइए (हि) भावे ' इति पाठः ।

का० प्रतौ ' बंधणगुणाविभागपडिच्छेदाणमभावो होदि विरोहादो ' इति पाठः]

जे दुपदेसियवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५२५ ॥

जे ओरालियसरीरपदेसा जीवादो विफट्टसमए चेव दो दो अण्णोण्णबंधगया तेसिं दुविदसलागाओ पुव्वसलागाहिंतो विसेसहीणाओ । केत्तियमेत्तेण ? हेट्ठिमसलागाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणेण सिद्धाणमणंतभागेण खंडिदूण तत्थ एयखंडमेत्तेण । एसो किं दोण्हं परमाणूणं समुदयसमागमो अणंतेहि विस्सासुवचएहि पादेक्कमुवचिदो ।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५२६ ॥

एत्थ तिपदेसिय-चदुपदेसिय पादेक्कवग्गणाए दव्वा विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा त्ति संबंधो कायव्वो, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो☼ । अणंतविस्सासुवचएहि उवचिदतिपदेसियवग्गणसलागाओ विसेसहीणाओ । तत्तो अणंतविस्सासुवचएहि उवचिदचदुप्पदेसियवग्गणसलागाओ विसेसहीणाओ । एवं णेयव्वं

मार्गदर्शक ... आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जो द्विप्रदेशी वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं जो अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५२५ ॥

जो औदारिकशरीरके प्रदेश जीवसे अलग होते समय ही परस्परमें दो दो होकर बन्धको प्राप्त हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें पूर्वकी शलाकाओंसे विशेष हीन हैं । कितनी हीन हैं ? अधस्तन शलाकाओंको अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाणसे भाजित कर वहां जो एक भाग लब्ध आता है उतनी हीन हैं । यह दो दो परमाणुओंका समुदयसमागम भी अलग अलग अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ।

इसी प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, छहप्रदेशी, सातप्रदेशी, आठप्रदेशी, नौप्रदेशी, दसप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाके जो द्रव्य हैं वे विशेषहीन हैं जो प्रत्येक अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५२६ ॥

यहां पर त्रिप्रदेशी और चतुःप्रदेशी आदिमें प्रत्येक वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ऐसा सम्बन्ध करना चाहिए, अन्यथा सूत्रका अर्थ नहीं बन सकता । अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित त्रिप्रदेशी वर्गणाशलाकायें विशेष हीन हैं । उनसे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित चतुःप्रदेशी वर्गणाशलाकायें विशेष हीन हैं । इस प्रकार अनन्त

☼ ता० का० प्रत्योः ' सुत्तट्ठाणुववत्तीदो ' इति पाठः ।

जाव अणंतविस्सासुवचएहि उवचिदअणंताणंतपदेसियवग्गणाए दव्वे त्ति । सव्वत्थ एत्थ भागहारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागमेत्तो । सो किमवट्ठिदो अणवट्ठिदो त्ति ण णव्वदे, गुरूवदेसाभावादो ।

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं पंचविहा हाणी—अणंतभागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी ॥ ५२७ ॥

एवमणंतभागहाणीए चेव* अणंताणि ट्ठाणाणि गंतूण तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदव्ववियप्पेसु गदेसु जो विही* तप्परूवणट्ठमेदं सुत्तमागदं । तत्थ अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तदव्ववियप्पे सेसे सलागाणं पंच हाणीओ होंति । तत्थ एक्केक्किस्से हाणीए अद्धाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । तं कुदो णव्वदे ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण पंच हाणीओ होंति त्ति वयणादो । अणंतभागहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं णिरुद्धट्ठाणादो गंतूण सलागाणं असंखेज्जभागहाणी होदि । तदो प्पहुडि असंखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणं णिरंतरं गंतूण संखेज्ज—

विस्रसोपचयोंसे उपचित अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाके द्रव्योंके प्राप्त होने तक जानना चाहिए । यहां पर सर्वत्र भागहार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण है । वह क्या अवस्थित है या अनवस्थित है यह ज्ञात नहीं है, क्योंकि, इस विषयमें गुरुका उपदेश नहीं पाया जाता ।

उसके बाद अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी पाँच प्रकार की हानि होती है— अनन्तभागहानि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि ॥ ५२७ ॥

इस प्रकार अनन्तभागहानिके द्वारा ही अनन्त स्थान जाकर उसके बाद अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यविकल्पोंके जाने पर जो विधि है उसका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है । यहां अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण द्रव्यविकल्पोंके शेष रहने पर शलाकाओंकी पाँच हानियाँ होती हैं । उनमेंसे एक एक हानिका अध्वान अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर पाँच हानियाँ होती हैं इस वचनसे जाना जाता है ।

विवक्षित स्थानसे अनन्तभागहानिद्वारा अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर शलाकाओंकी असंख्यातभागहानि होती है । वहांसे लेकर असंख्यातभागहानिद्वारा अंगुलके

---

* अ० प्रतौ '—भागहाणी चेव ' इति पाठः ।

* अ० का० प्रत्योः ' दव्ववियप्पेसु जो विही ' इति पाठः ।

भागहाणी होदि । तदो प्पहुडि संखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्त-सद्धाणं गंतूण सलागाणं संखेज्जगुणहाणी होदि । तदो प्पहुडि संखेज्जगुणहाणीए णिरंतरमंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि । तदो प्पहुडि असंखेज्जगुणहाणी ताव गच्छदि जाव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो त्ति उवरि ण गच्छदि, दव्ववियप्पाभावादो त्ति भणिदं होदि । एदेसिं पि भागहाराणं पमाणमेत्तिय-मिदि ण णव्वदे अंगुलस्स असंखेज्जदिभागाणं चदुण्णं पि सरिसत्तमसरिसत्तं च ण णव्वदे, विसुट्ठुवएसाभावादो ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥ ५२८ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स पंचविहा हाणी परूविदा तहा एदेसिं पि चदुण्णं[1] सरीराणं जीवादो विफट्टपोग्गलाणं पंचविहा हाणि परूवेदव्वा, विसेसाभावादो ।

खेत्तहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे एयपदेसियखेत्तोगाढ-वग्गणाए दव्वा ते बहुगा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५२९ ॥

जे जीवादो अवेदा ओरालियसरीरणोकम्मपदेसा एगो वा दो वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा एगबंधणबद्धा होदूण एगेगागासपदेसे अच्छंति तेसिं दुविव-

---

असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान निरन्तररूपसे जाकर संख्यातभागहानि होती है । वहाँसे लेकर संख्यातभागहानिद्वारा अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर शलाकाओंकी संख्यात-गुणहानि होती है । वहाँसे लेकर संख्यातगुणहानिद्वारा निरन्तररूपसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर असंख्यातगुणहानि होती है । वहाँसे लेकर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने तक असंख्यातगुणहानि होती है । इससे आगे असंख्यातगुणहानि नहीं होती है, क्योंकि, आगे द्रव्यविकल्पोंका अभाव है यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इन भागहारोंका भी प्रमाण इतना है यह ज्ञात नहीं है । तथा चारों अंगुलके असं-ख्यातवें भागोंका भी प्रमाण सदृश है या असदृश है यह ज्ञात नहीं है, क्योंकि, इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका अभाव है ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ॥५२८॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी पाँच प्रकारकी हानि कही है उसी प्रकार इन चार शरीरोंके भी जीवसे अलग हुए पुद्गलोंकी पाँच प्रकारकी हानि कहनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

क्षेत्रहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जो एक प्रदेश क्षेत्रावगाही वर्गणाके द्रव्य हैं वे बहुत हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥५२९॥

जो जीवसे अवेद औदारिकशरीरनोकर्मप्रदेश हैं वे एक, दो, संख्यात, असंख्यात और अनन्त एकबन्धप्रबद्ध होकर एक एक आकाशप्रदेशमें स्थित हैं । उनकी स्थापित की गई

---

[1] अ० प्रतौ 'एदेसिं चदुण्णं' इति पाठः ।

सलागाओ बहुगाओ । ते च पादेक्कमणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा । एगपदेसियस्स पोग्गलस्स होदु णाम एगागासपदेसे अवट्ठाणं, कथं दुपदेसिय-तिपदेसिय-संखेज्जासंखेज्ज-अणंतपदेसियक्खंधाणं तत्थावट्ठाणं ? ण, तत्थ अणंतोगाहणगुणस्स संभवादो । तं पि कुदो णव्वदे जीव-पोग्गलाणमाणंतियत्तण्णहाणुववत्तीदो ।

जे दुपदेसियक्खेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५३० ॥

जे जीवादो अवेदा संता ओरालियसरीरणोकम्मक्खंधा दुपदेसियखेत्तमोगाहिदूण ट्ठिदा तेसिं गहिदसलागाओ पुव्विल्लसलागाहिंतो विसेसहीणाओ । केत्तियमेत्तेण ? अणंतरहेट्ठिमसलागाणमसंखेज्जदिभागेण । को पडिभागो ? तप्पाओग्गअसंखेज्जरूव-पडिभागो । एदे वि अणंतेहि विस्सासुवचएहि पादेक्कमुवचिदा ।

एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्ज-पदेसियखेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५३१ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

शलाकायें बहुत हैं । और वे प्रत्येक अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ।

शंका-- एकप्रदेशी पुद्गलका एक आकाशप्रदेशमें अवस्थान होओ परन्तु द्विप्रदेशी, त्रिप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी स्कन्धोंका वहाँ अवस्थान कैसे हो सकता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहाँ अनन्तको अवगाहन करनेका गुण सम्भव है ।

शंका-- यह भी किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- यदि एक आकाशप्रदेशमें अनन्तके अवगाहन करनेका गुण न हो तो जीवों और पुद्गलोंकी संख्या अनन्त नहीं बन सकती है ।

जो द्विप्रदेशी क्षेत्रावगाही वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५३० ॥

जो जीवसे अवेद होते हुए औदारिकशरीरके नोकर्मस्कन्ध द्विप्रदेशी क्षेत्रका अवगाहन कर अवस्थित हैं उनकी ग्रहण की गई शलाकायें पहिलेकी शलाकाओंसे विशेष हीन हैं । कितनी हीन हैं ? अनंतर अधस्तन शलाकाओंके असंख्यातवें भागप्रमाणहीन हैं । प्रतिभाग क्या है ? तत्प्रायोग्य असंख्यात अङ्क प्रतिभाग है । ये प्रत्येक भी अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्ट-प्रदेशी, नवप्रदेशी, दसप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी और असंख्यातप्रदेशी क्षेत्रावगाही वर्ग-णाके जो द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं । ५३१

एत्थ तियादिसु पादेक्कं पदेसियखेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा त्ति संबंधो कायव्वो। तं जहा- तिपदेसियखेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा विसेसहीणा असंखेज्जविभागेण अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा। चदुपदेसियखेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा असंखे० भागहीणा* अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा। एवं णेयव्वं जाव असंखेज्जपदेसियखेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा त्ति। एत्थ सव्वत्थ णिरंतरमसंखेज्जभागहाणी चेव दुविदसलागाणं होदि त्ति घेत्तव्वं। एवं णिरंतरकमेण असंखेज्जभागहाणीए आगदसव्वद्धाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो? आहार-तेजा-कम्मइयसरीरउक्कस्सवग्गणाणं पि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताए चेव ओगाहणाए उवलंभादो। खेत्तवियप्पाणमंगुलस्स असंखेज्जदिभागावसेसे असं- [illegible] तप्परूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि-

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं चउव्विहाहाणी- असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्ज- गुणहाणी ॥ ५३२ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे-तदो तप्पाओग्गणिरुद्धट्ठाणादो असंखेज्जभागहाणीए

यहां पर प्रत्येक तीन आदि प्रदेशरूप क्षेत्रमें अवगाही वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ऐसा सम्बन्ध करना चाहिए। यथा त्रिप्रदेशी क्षेत्रमें अवगाही वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं। विशेषका प्रमाण असंख्यातवां भाग है। ये अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं। चतुःप्रदेशी क्षेत्रमें अवगाही वर्गणाके द्रव्य असंख्यातवें भागहीन हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उचित हैं। इस प्रकार असंख्यातप्रदेशी क्षेत्रमें अवगाहना करके स्थित हुए वर्गणाके द्रव्योंके प्राप्त होनेतक ले जाना चाहिए। यहां पर सर्वत्र स्थापित की गई शलाकाओंकी निरन्तर असंख्यात भागहानि ही होती है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार निरन्तर क्रमसे असंख्यातभागहानिरूपसे आया हुआ सर्वअध्वान अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, आहारकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी उत्कृष्ट वर्गणाओंकी भी अवगाहना अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण ही उपलब्ध होती है। अब क्षेत्र विकल्पोंके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहने पर असंख्यातभागहानिके असंख्यातवें भागमें जो विधि होती है उसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

उससे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी चार प्रकारकी हानि होती है- असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि ॥ ५३२ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं-- उससे अर्थात् तत्प्रायोग्य निरुद्ध क्षेत्रसे असंख्यात-

---

* म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु ' असंखे-गुणहीणा ' इति पाठः।

णिरंतरमंगुलस्स असंखे० भागं गंतूण सलागाणं संखेज्जभागहाणी होदि । तदो संखेज्जभागहाणीए उवरि णिरंतर✡मंगुलस्स असंखे० भागं गंतूण पुणो संखे० गुणहाणी♠ होदि । तदो संखेज्जगुणहाणीए उवरि णिरंतरमंगुलस्स असंखे० भागं गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि । तदो उवरि णिरंतरमसंखेज्जगुणहाणी अंगुलस्स✡ असंखे० भागं गच्छदि जाव खेत्तवियप्पाणं पज्जवसाणे त्ति ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥ ५३३ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स चउव्विहा खेत्तहाणी परूविदा तहा सेसचदुण्णं सरीराणं पि परूवेयव्वं, विसेसाभावादो ।

कालहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे✡ एगसमयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥५३४॥

जे जीवादो अवेदा ओरालियणोकम्मपरमाणू एयसमयमोदइयभावेण अच्छिय विदियसमए पारिणामियभावं गच्छंति तेसिं दुविदसलागाओ बहुगाओ ते च अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा, बंधणगुणस्स तत्थ अणंताविभागपडिच्छेदाणं संभवादो ।

प्राप्तिस्थान - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

भागहानिके निरन्तररूपसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने पर संख्यातभागहानि होती है । फिर आगे संख्यातभागहानिके निरन्तर रूपसे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने पर संख्यातगुणहानि होती है । फिर आगे संख्यातगुणहानिके निरन्तररूपसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण स्थान जाने पर असंख्यातगुणहानि होती है । फिर आगे निरन्तररूपसे संख्यातगुणहानि अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान होकर क्षेत्रविकल्पोंके समाप्त होनेतक जाती है ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी क्षेत्रहानि कहनी चाहिए ॥ ५३३ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी चार प्रकारकी क्षेत्रहानि कही है उसी प्रकार शेष चार शरीरोंकी भी कहनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

कालहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जो एक समय स्थितिवाले वर्गणाके द्रव्य हैं वे बहुत हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५३४ ॥

जो जीवसे अवेद औदारिकशरीरनोकर्मपरमाणु एक समय तक औदयिक भावरूपसे रह कर दूसरे समयमें पारिणामिकभावको प्राप्त होते हैं उनकी स्थापित की गई शलाकायें बहुत हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं, क्योंकि, उनमें बन्धनगुणके अनन्त अविभागप्रतिच्छेद सम्भव हैं ।

✡ आ० प्रतौ '–हाणीए णिरंतर–' इति पाठः । ♠ म० प्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु ' गंतूण संखे०–गुणहाणी ' इति पाठः । ✡ ता० प्रतौ '–गुणहाणी (ए) असंखे०' अ० का० प्रत्योः ' गुणहाणीए असंखे० ' इति पाठः । ✡ अ० प्रतौ ' जो ' इति पाठः ।

जे दुसमयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५३५ ॥

जे ओदइयभावेण दुसमयमच्छिदूण पारिणामियभावं गच्छंति ओरालिय-पोग्गला अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा तेसिं मेलाविदसलागाओ असंखेज्ज-भागहीणाओ। एत्थ भागहारो एत्तिओ त्ति ण णव्वदे।

एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्जसमय-ट्ठिदिवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५३६ ॥

एत्थ तियादिसु सव्वत्थ समयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा विसेसहीणा अणंतेहि विस्सा-सुवचएहि उवचिदा त्ति संबंधो कायव्वो। तं जहा— तिसमयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा दुसमयट्ठिदिदव्ववग्गणसलागाहिंतो असंखेज्ज० भागहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा। चदुसमयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा तिसमयट्ठिदिदव्ववग्गणसलागाहि☼ असंखे०-भागहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा। एवं णिरंतरं असंखे० भागहाणी वत्तव्वा जाव असंखेज्जलोगमेत्तट्ठाणेसु अंगुलस्स असंखे० भागमेत्तट्ठाणाणि सेसाणि त्ति।

जो दो समय स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५३५ ॥

जो औदयिकभावके साथ दो समय तक रहकर पारिणामिकभावको प्राप्त होते हैं वे औदारिक पुद्गल अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं। उनकी मिलाकर इकट्ठी की गई शला-कायें असंख्यातभागहीन हैं। यहां पर भागहारका प्रमाण इतना है यह ज्ञात नहीं है।

इस प्रकार तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, दस, संख्यात और असंख्यात समय तक स्थित रहनेवाली वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और प्रत्येक अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५३६ ॥

यहां पर सर्वत्र तीन आदि समयकी स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य विशेष हीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ऐसा संबंध करना चाहिए। यथा- तीन समयकी स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य दो समयकी स्थितिवाली द्रव्यवर्गणाओंकी शलाकाओंसे असंख्यातभागहीन हैं और अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं। चार समयकी स्थितिवाली वर्गणाके द्रव्य तीन सम-यकी स्थितिवाली द्रव्यवर्गणाकी शलाकाओंसे असंख्यातभागहीन है और वे अनन्त विस्रसोपच-योंसे उपचित हैं। इस प्रकार असंख्यात लोकप्रमाण स्थानोंमें अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानोंके शेष रहने तक निरन्तररूपसे असंख्यातभागहानि कहनी चाहिए।

☼ ता० प्रतौ ' दव्वा (तिसमयट्ठिदिदव्ववग्गण-) सलागाहि ' अ० का० प्रत्योः ' दव्वा सलागाहि ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं चउव्विहा हाणी- असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्ज- गुणहाणी ॥ ५३७ ॥

असंखेज्जभागहाणिअद्धाणस्स असंखे० भागे अंगुलस्स असंखे० भागे सेसे जो विही तस्स परूवणट्ठमिदं सुत्तमागयं । अप्पिदट्ठाणादो असंखे० भागहाणीए अंगुलस्स असंखे० भागमेत्तद्धाणमुवरि गंतूण संखेज्जभागहाणी✡ होदि । तदो संखेज्जभाग- हाणीए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणमुवरि गंतूण संखेज्जगुणहाणी होदि । पुणो संखेज्जगुणहाणीए अंगुलस्स असंखे० भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि । तदो असंखे० गुणहाणीए अंगुलस्स असंखे० भागमेत्तद्धाणं गंतूण असंखे० गुणहाणी समप्पदि, उवरि दव्वाभावादो । अंगुलस्स असंखे० भागं गंतूण चउव्विहा हाणी होदि त्ति सुत्तादो च णव्वदे जहा जीवादो अवेदाणं चेव पोग्गलाणमेसा परूवणा त्ति, जीवसहिदाणं ओरालियसरीरादीणमंगुलस्स असंखे० भागमेत्तकाल- ट्ठिदीए अभावादो ।

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥ ५३८ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स परूवणा कदा तहा चदुण्णं सरीराणं परूवणा

उससे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी चार प्रकारकी हानि होती है -- असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि और असंख्यातगुणहानि ॥ ५३७ ॥

असंख्यातभागहानि अध्वानके असंख्यातवें भागके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहने पर जो विधि है उसका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है । विवक्षित स्थानसे असं- ख्यातभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जानेपर संख्यातभागहानि होती है । पुनः संख्यातभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जानेपर संख्यात- गुणहानि होती है । पुनः संख्यातगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जानेपर असंख्यातगुणहानि होती है । पुनः असंख्यातगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जानेपर असंख्यातगुणहानि समाप्त होती है, क्योंकि, इससे आगे द्रव्यका अभाव है । अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर चार प्रकारकी हानि होती है इस सूत्रसे जाना जाता है कि जीवसे अवेदरूप पुद्गलोंकी ही यह प्ररूपणा है, क्योंकि, जीवसहित औदारिक- शरीर आदिकी स्थिति अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक नहीं पायी जाती ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए ॥ ५३८ ॥

जिस प्रकार औदारिकशरीरकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार चार शरीरोंकी प्ररूपणा

✡ ता० प्रतौ ' असंखेज्जगुण (भाग) हाणी ' इति पाठः ।

कायव्वा, विसेसाभावादो ।

भावहाणिपरूवणदाए ओरालियसरीरस्स जे[1] एयगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा[2] ।५३९।

एयगुणजुत्तवग्गणाए अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदाए दव्वा सलागाहि बहुआ । एत्थ सलागाहि त्ति अज्झाहारो कायव्वो, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो[3] । एयगुणं ति किं घेप्पदि ? जहण्णगुणस्स सो गहणं । च जहण्णगुणो अणंतेहि अविभागपडिच्छेदेहि णिप्पण्णो । तं कथं णव्वदे? सो अणंतविस्सासुवचएहि उवचिदो त्ति[4] सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । ण च एक्कम्हि अविभागपडिच्छेदे संते एगविस्सासुवचयं मोत्तूण अणंता विस्सासुवचया तत्थ संबंधे अत्थि, तेसिं संबंधस्स णिप्पच्चयत्तप्पसंगादो । ण च तस्स विस्सासुवचएहि बंधो वि अत्थि, जहण्णवज्जे त्ति सुत्तेण सह विरोहादो ।

जे दुगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५४० ॥

करनी चाहिए, क्योंकि, उससे इसमें कोई विशेषता नहीं है ।

भावहानिप्ररूपणाकी अपेक्षा औदारिकशरीरके जो एक गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य हैं वे बहुत हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५३९ ॥

अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित एक गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य शलाकाओंकी अपेक्षा बहुत हैं । यहाँ पर ' सलागाहि ' पदका अध्याहार करना चाहिए, अन्यथा सूत्रका अर्थ नहीं बन सकता है ।

शंका-- एक गुणसे क्या ग्रहण किया जाता है ?

समाधान-- जघन्य गुण ग्रहण किया जाता है ।

वह जघन्य गुण अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंसे निष्पन्न होता है ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ।

समाधान-- वह अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित है यह सूत्र अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है कि वह अनन्त अविभाग प्रतिच्छेदोंसे निष्पन्न होता है ।

यदि कहा जाय कि एक अविभागप्रतिच्छेदके रहते हुए वहाँ केवल एक विस्रसोपचय न होकर अनन्त विस्रसोपचय सम्भव हैं सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसी अवस्थामें उनका सम्बन्ध बिना कारणके होता है ऐसा प्रसंग प्राप्त होता है । यदि कहा जाय कि उसका विस्रसोपचयोंके साथ बन्ध भी होता है सो यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ' जघन्य गुणवालेके साथ बन्ध नहीं होता ' इस सूत्रके साथ विरोध आता है ।

जो दो गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य हैं वे विशेषहीन हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ५४० ॥

---

[1] ता० प्रतौ ' जो ' इति पाठः । [2] अ० प्रतौ ' अचिदा ' का० प्रतौ ' अवचिदा ' इति पाठः ।
[3] प्रतिषु ' गुत्तट्ठाणुववत्तीदो ' इति पाठः । [4] अ० का० प्रत्योः ' अचिदो त्ति ' इति पाठः ।

जदि अणंतेहि अविभागपडिच्छेदेहि सहिदजहण्णगुणे एगगुणसद्दो वट्टदे तो दोसु✡ जहण्णगुणेसु दुगुणसद्देण पयट्टियव्वं, अण्णहा दुसद्दपउत्तीए अणुवलंभादो ? ण एस दोसो, जहण्णगुणस्सुवरि एगाविभागपडिच्छेदे वड्ढिदे दुगुणभावदंसणादो। कथमेयकस्सेव अविभागपडिच्छेदस्स बिदियगुणत्तं ? ण, तेत्तियमेत्तस्सेव गुणंतरस्स दव्वंतरे वड्ढिदंसणादो। गुणस्स✤ बिदियो अवत्थाविसेसो बिदियगुणो णाम। तदियो अवत्थाविसेसो तदियगुणो णाम। तेण जहण्णगुणेण सह दुगुण-तिगुणत्तमेत्थ जुज्जदे, अण्णहा दुगुणगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा त्ति सुत्तं होज्ज। ण च एवं, अणुवलंभादो। एवंविहदुगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा सलागाहि पुव्वसलागाहिंतो अणंतभागहीणा। जहा पारिणामियभावेण ट्ठिदपरमाणुपोग्गलाणमेगपरमाणुसंबंधणिमित्तवग्गणगुणो संभवदि तहा एदेसिमोरालियसरीरपोग्गलाणं जीवादो अवेदाणं किण्ण संभवदि ? ण, मिच्छत्ताविपच्चएहि बज्झमाणसमए चेव सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणत्तेण वड्ढिबंधण-गुणाणमोरालियादिपरमाणूणं जीवमुक्काणं पि अच्चत्तओदइयभावाणमणंतबंधण-गुणस्सुवलंभादो।

शंका-- यदि अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंसे युक्त जघन्य गुणमें 'एक गुण' शब्द प्रवृत्त रहता है तो दो जघन्य गुणोंमें 'दो गुण' शब्दकी प्रवृत्ति होनी चाहिए, अन्यथा 'दो' शब्दकी प्रवृत्ति नहीं उपलब्ध होती ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जघन्य गुणके ऊपर एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि होने पर दो गुणभाव देखा जाता है।

शंका-- एक ही अविभागप्रतिच्छेदकी द्वितीय गुण संज्ञा कैसे है ?

समधान-- क्योंकि, मात्र उतने ही गुणान्तरकी द्रव्यान्तरमें वृद्धि देखी जाती है।

गुणके द्वितीय अवस्थाविशेषकी द्वितीय गुण संज्ञा है और तृतीय अवस्था विशेषकी तृतीय गुण संज्ञा है। इस लिए जघन्य गुणके साथ द्विगुणपना और त्रिगुणपना यहां बन जाता है। अन्यथा 'द्विगुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य' ऐसा सूत्र प्राप्त होगा। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, इस प्रकारका सूत्र उपलब्ध नहीं होता। इस प्रकार दोगुण युक्त वर्गणाके द्रव्य शलाकाओंकी दृष्टिसे पूर्वकी शलाकाओंसे अनन्तभागहीन हैं।

शंका-- जिस प्रकार परिणामिकभावरूपसे स्थित हुए परमाणु पुद्गलोंमें एक परमाणुके सम्बन्धका निमित्तभूत वर्गणागुण सम्भव है उस प्रकार जीवसे अवेदरूप इन औदारिकशरीर पुद्गलोंमें क्यों सम्भव नहीं है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, मिथ्यात्व आदि कारणोंसे बन्ध होते समय ही जिनमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे बन्धनगुण वृद्धिको प्राप्त हुए हैं तथा जीवसे पृथक् होकर भी जिन्होंने औदारिकभावका त्याग नहीं किया है ऐसे औदारिक परमाणुओंमें अनन्त बन्धनगुण उपलब्ध होते हैं। ५, ३, ७. १०४

✡ अ० का० प्रत्योः 'ते दोसु' इति पाठः। ✤ अ० का० प्रत्योः 'वड्ढिदंसण गुणस्स' इति पाठः।

एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंत अणंताणंतगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ॥ ५४१ ॥

तिगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ते विसेसहीणा त्ति एत्थ संबंधो पुव्वं व कायव्वो । एवं पादेक्कं भणिऊण णेयव्वं जाव सेचीयादो सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तट्ठाणेसु अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तभावट्ठाणाणि सेसाणि त्ति । किंतु एत्थ सव्वत्थ अणंतभागहाणी [illegible] - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं छव्विहा हाणी —

विशेषार्थ— यहांपर औदारिकशरीरकी एक गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्यसे दो गुणयुक्त वर्गणाका द्रव्य विशेषहीन बतलाया है। इस पर यह शंका की गई है कि जब कि एक गुणयुक्त वर्गणाका अर्थ एक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गणा न होकर अनन्त अविभागप्रतिच्छेदोंसे युक्त जघन्य वर्गणा है ऐसी अवस्थामें इससे एक अधिक अविभागप्रतिच्छेदवाली वर्गणाके द्रव्यको दो गुणयुक्त कैसे कह सकते हैं, क्योंकि, यहां पर दूने अविभागप्रतिच्छेदोंकी वृद्धि नहीं हुई है। वीरसेन स्वामीने इस शंकाका जो समाधान किया है उसका आशय यह है कि यहां पर जघन्य गुणको एक मान लिया है और उसपर एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि होने पर उसे दो गुणयुक्त कहा है, क्योंकि, जघन्य गुणयुक्त द्रव्यसे भिन्न द्रव्यमें उतनी ही वृद्धि देखी जाती है। आगे तीन गुणयुक्त द्रव्यमें भी इसी प्रकार एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि जाननी चाहिए। यह पूछने पर कि यह अर्थ कैसे फलित किया गया है वीरसेनस्वामी ने यह उत्तर दिया है कि सूत्रमें 'दुगुणजुत्त' पदको देखकर यह अर्थ फलित किया है। यदि सूत्रकारको जघन्य गुणसे दूना अर्थ इष्ट होता तो वे 'दुगुणजुत्त' पदके स्थानमें 'दुगुणगुणजुत्त' ऐसे पदका प्रयोग करते। पर उन्होंने जब ऐसे पदका प्रयोग न करके 'दुगुणजुत्त' पदका ही प्रयोग किया है। इससे ज्ञात होता है कि उन्हें जघन्य गुणके ऊपर एक अविभागप्रतिच्छेदकी वृद्धि इष्ट है और उसे ही वे दुगुणजुत्त अर्थात् दो गुणयुक्त शब्द द्वारा व्यक्त कर रहे हैं। और यह मानना ठीक नहीं है कि यहां पर जघन्य गुणसे एक परमाणुमें सम्भव जघन्य गुण ले लिया जाय, क्योंकि, मिथ्यात्व आदि कारणोंसे ये औदारिक शरीर की वर्गणायें जीवके साथ बन्धको प्राप्त हुई हैं, इसलिए जीवसे अलग होनेपर भी इनमें एक परमाणुका गुण सम्भव नहीं हो सकता।

इसी प्रकार तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, दस, संख्यात, असंख्यात, अनन्त और अनन्तानन्त गुणयुक्त वर्गणाके जो द्रव्य हैं वे विशेष हीन हैं और वे अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं ॥ ५४१ ॥

तीन गुणयुक्त वर्गणाके द्रव्य अनन्त विस्रसोपचयोंसे उपचित हैं और वे विशेष हीन हैं इस प्रकार यहाँ पर पहलेके समान सम्बन्ध करना चाहिए। इसप्रकार सेचीयकी अपेक्षा सब जीवोंसे अनन्तगुणे स्थानोंमें अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान शेष रहने तक प्रत्येक स्थानका कथन करके ले जाना चाहिए। किन्तु यहाँ सर्वत्र अनन्तभागहानि ही होती है।

उससे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर उनकी छह प्रकारकी

अणंतभागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी अणंतगुणहाणी ॥ ५४२ ॥

अप्पिदट्ठाणादो अणंतभागहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणं गंतूण सलागाणमसंखेज्जभागहाणी होदि । तदो असंखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणं उवरि गंतूण संखेज्जभागहाणी होदि । तदो संखेज्जभागहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण संखेज्जगुणहाणी होदि । तदो संखेज्जगुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण असंखेज्जगुणहाणी होदि । तदो असंखेज्जगुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण अणंतगुणहाणी होदि । पुणो अणंतगुणहाणीए अंगुलस्स असंखे०भागमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण ट्ठाणाणि समप्पंति ।

प्रतिलिपिकार : आचार्य श्री सूर्यसागर जी महाराज

एवं चदुण्णं सरीराणं ॥ ५४३ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स परूविदं तहा सेससरीराणं पि परूवेयव्वं, विसेसाभावादो । संपहि जीवादो अवेदाणं पंचसरीरपोग्गलाणं विस्सासुवचयस्स माहप्पपरूवणट्ठं उवरिमअप्पाबहुअं भणदि–

ओरालियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सा–

हानि होती है- अनंतभागहानि, असंख्यातभागहानि, संख्यातभागहानि, संख्यातगुणहानि, असंख्यातगुणहानि और अनन्तगुणहानि । ५४२ ।

विवक्षित स्थानसे अनन्तभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर शलाकाओंकी असंख्यातभागहानि होती है । फिर वहाँसे आगे असंख्यातभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर संख्यातभागहानि होती है । पुनः वहाँसे आगे संख्यातभागहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर संख्यातगुणहानि होती है । पुनः वहाँसे आगे संख्यातगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर असंख्यातगुणहानि होती है । पुनः वहाँसे आगे अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर अनन्तगुणहानि होती है । पुनः अनन्तगुणहानिके अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान आगे जाकर स्थान समाप्त होते हैं ।

इसी प्रकार चार शरीरोंकी अपेक्षा प्ररूपणा करनी चाहिए । ५४३ ।

जिस प्रकार औदारिक शरीरका कथन किया है उसी प्रकार शेष शरीरोंका भी कथन करना चाहिए, क्योंकि, उससे यहाँ पर कोई विशेषता नहीं है ।

अब जीवसे अवेदरूप पाँच शरीरपुद्गलोंके विस्रसोपचयके माहात्म्यका कथन करनेके लिए आगेका अल्पबहुत्व कहते हैं---

जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे स्तोक

सुवचओ थोवो ॥५४४॥

ओरालियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदं ति वुत्ते जीवादो अवेदो एगो ओरालियपरमाणू घेत्तव्वो, तस्स विस्सासुवचओ थोवो अप्पे त्ति भणिदं होदि ।

तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४५॥

तस्सेव एगोरालियपरमाणुस्स उक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो, एगपरमाणु-जहण्णबंधणगुणादो तत्थेव उक्कस्सबंधणगुणस्स अणंतगुणत्तवंसणादो । को गुण— गारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४६॥

ओरालियसरीरपरमाणूणं जीवादो पुधभूदाणं सव्वुक्कस्सो समुदयसमागमो ओरालियसरीरुक्कस्सं णाम । तस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥५४७॥

है ॥५४४॥

जघन्य औदारिकशरीरका जघन्यपद ऐसा कहनेपर जीवसे अवेदरूप एक औदारिक परमाणु ग्रहण करना चाहिए । उसका विस्रसोपचय स्तोक अर्थात् अल्प है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५४५॥

उसी एक औदारिक परमाणुका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है, क्योंकि, एक परमाणुके जघन्य बन्धनगुणसे वहीं पर उत्कृष्ट बन्धनगुण अनन्तगुणा देखा जाता है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५४६॥

जीवसे पृथग्भूत औदारिकशरीर परमाणुओंका सबसे उत्कृष्ट समुदायसमागम उत्कृष्ट औदारिकशरीर कहलाता है । उसका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५४७॥

कुदो ? उक्कस्सदव्वजहण्णबंधणगुणादो तस्सेव उक्कस्सबंधणगुणस्स अणंत-गुणत्तुवलंभादो । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

एवं वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइयसरीरस्स ॥ ५४८ ॥

जहा ओरालियसरीरस्स जहण्णुक्कस्सभेदभिण्णचदुहि पदेहि अप्पाबहुअं परूविदं तहा एदेसिं चदुण्णं पि सरीराणं परूवेयव्वं । एदेण सत्थाणप्पाबहुअपरूवणा कदा होदि । संपहि परत्थाणप्पाबहुअपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि-

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥ ५४९ ॥

पुव्वसुत्तादो वेउव्वियसरीरस्से त्ति अणुवट्टदे । तेणेवं पदसंबंधो कायव्वो । तं जहा- ओरालियउक्कस्सपदेसग्गउक्कस्सविस्सासुवचयादो वेउव्वियसरीरस्स जहण्ण-यस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । जहण्णे त्ति उत्ते जीवादो पुधभूदेगवेउ-व्वियपरमाणू घेत्तव्वो । को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । कुदो ? सामावियादो ।

तस्सेव जहण्णयस्सुक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥ ५५० ॥

क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यके जघन्य बन्धनगुणसे उसीका उत्कृष्ट बन्धनगुण अनन्तगुणा उपलब्ध होता है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

इसी प्रकार वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीरकी अपेक्षा जानना चाहिए । ५४८ ।

जिस प्रकार औदारिकशरीरका जघन्य और उत्कृष्ट भेदसे भेदको प्राप्त हुए चार पदोंके द्वारा अल्पबहुत्व कहा है उसी प्रकार इन चार शरीरोंका भी कहना चाहिए । इसके द्वारा स्वस्थान अल्पबहुत्वप्ररूपणा की गई है । अब परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

जघन्यका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । ५४९ ।

पूर्वके सूत्रसे ' वैक्रियिकशरीर ' पदकी अनुवृत्ति होती है । इसलिए इस प्रकार सम्बन्ध करना चाहिए । यथा- औदारिकशरीरके उत्कृष्ट प्रदेशाग्रके उत्कृष्ट विस्रसोपचयकी अपेक्षा जघन्य वैक्रियिकशरीरका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । जघन्य ऐसा कहनेपर जीवसे अलग हुए वैक्रियिकशरीरका एक परमाणु लेना चाहिए । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

उसीके जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ।५५० ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तस्सेव वेउव्वियएगपरमाणुस्स उक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो । को गुण ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥ ५५१ ॥

वेउव्वियपरमाणूणं जीवादो पुधभूदाणमुक्कस्सो समुदायसमागमो उक्कस्सं णाम । तस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ एगपरमाणुउक्कस्सविस्सासुवचयादो अणंतगुणो। एत्थ गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो ।

तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥ ५५२ ॥

को गुण० ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । कुदो? सामावियादो । एवेसि सुत्ताणमावत्तिं कादूण उवरिमसरीराणमप्पाबहुअं वुच्चदे । तं जहा-वेउव्वियसरीरउक्कस्सविस्सासुवचयादो आहारसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तेजासरीरस्स* जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो । तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे

उसी वैक्रियिकशरीरके एक परमाणुका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है ।

उसी उत्कृष्टका जघन्य पदमें विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥ ५५१ ॥

जीवसे अलग हुए वैक्रियिकशरीरके परमाणुओंके समुदयसमागमको उत्कृष्ट कहते हैं । उसका जघन्य विस्रसोपचय एक परमाणुके उत्कृष्ट विस्रसोपचयसे अनन्तगुणा है । यहां पर गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

उसीके उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥५५२ ॥

गुणकार क्या है? सब जीवोंसे अनन्तगुणा गुणकार है, क्योंकि ऐसा होना स्वाभाविक है । अब इन सूत्रोंकी आवृत्ति करके आगेके शरीरोंका अल्पबहुत्व कहते हैं । यथा वैक्रियिकशरीरके उत्कृष्ट विस्रसोपचयसे जघन्य आहारकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसी उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । जघन्य तैजसशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है । उसी

---

* अ० का० प्रत्योः ' जहण्णओ विस्सासुवचओ अनंतगुणो । तेजासरीरस्स इति पाठः ।

उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स☼ उक्कस्सपदे उक्कस्सओ* विस्सासुवचओ अणंतगुणो। कम्मइयसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। सव्वत्थ गुणगारो सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एदमप्पाबहुगं बाहिरवग्गणाए पुधभूदं ति काऊण के वि आइरिया जीवसंबद्धपंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्सुवरि परूवेंति तण्ण घडदे, जहण्णपत्तेयसरीरवग्गणादो उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो। उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणादो जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणाए अणंतगुणहीणत्तप्पसंगादो च। तम्हा सव्वत्थोवो ओरालियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो?

जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनंतगुणा है। जघन्य कार्मणशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी जघन्यका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट पदमें उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनंतगुणा है। सर्वत्र गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा है। यह अल्पबहुत्व बाह्य वर्गणासे पृथग्भूत है ऐसा मानकर कितने ही आचार्य जीवसम्बद्ध पांच शरीरोंके विस्रसोपचयके ऊपर कथन करते हैं परन्तु वह घटित नहीं होता, क्योंकि, ऐसा माननेपर जघन्य प्रत्येकशरीरवर्गणासे उत्कृष्ट प्रत्येकशरीरवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है तथा उत्कृष्ट बादरनिगोदवर्गणासे जघन्य सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके अनन्तगुणे हीन होनेका प्रसंग प्राप्त होता है। इसलिए जघन्य औदारिकशरीरका जघन्य पदमें जघन्य विस्रसोपचय सबसे स्तोक होकर भी अनन्तगुणा है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? गुणकार पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। उसी उत्कृष्टका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। वैक्रियिकशरीरके

☼ अ० का० प्रत्योः 'जहण्णो विस्सासुवचओ अणंतगुणो। उक्कस्सयस्स' इति पाठः।

* अ० प्रतौ 'उक्कस्सयस्स उक्कस्सओ' इति पाठः।

सेडीए असंखेज्जदिभागो। तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्ज-गुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। आहारसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्ज-गुणो। को गुणगारो? सेडीए असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागो। तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुण-गारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तेजासरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णओ विस्सासु-वचओ अणंतगुणो। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। तस्सेव☼ उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो । को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कम्मइयसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो। को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि

जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीके जघन्यका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। आहारकशरीरके जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। तैजसशरीरके जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। कार्मणशरीरके जघन्यका जघन्य विस्रसोपचय अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ?

☼ अ० का० प्रत्योः ' अणंतगुणो तस्सेव ' इति पाठः।

अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो। तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो। तस्सेव उक्कस्सओ विस्सासुवचओ असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जविभागो। एवं जीवसहियाणं पंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्स एदेण अप्पाबहुएण होदव्वं, अण्णहा सचित्त-अचित्तवग्गणाणं गुणगारेण सह विरोहादो। जीवसहियाणं विस्सासुवचयस्स जहा अप्पाबहुअं परूविदं तहा जीवादो पुधभूदाणं विस्सासुवचयस्स किण्ण वुच्चदे ? ण, जीवादो पुधभावेण णट्ठपुव्विल्लबंधणगुणाणं जहण्णस्स उक्कस्ससामित्तेण सरीरोगाहणमावण्णाणं समयपबद्धप्पाबहुअं मोत्तूण अण्णस्स अप्पाबहुअस्स असंभवादो। ण च जुत्तीए सुत्तं बाहिज्जदि, सयलबाहावेवस्स वयणस्स सुत्तववएसादो। संपहि विस्सासुवचयस्स जीवपडिबद्धस्स जहण्णस्स उक्कस्ससामित्तपरूवणट्ठं तेसिं थोवबहुत्तपरूवणट्ठं च उत्तरसुत्तं भणदि--

बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए चरिमसमयछदुमत्थस्स सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स जहण्णओ विस्सासुव-

---

अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीके उत्कृष्टका जघन्य विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। उसीका उत्कृष्ट विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है। जीवसहित पाँच शरीरोंके विस्रसोपचयका यह अल्पबहुत्व होना चाहिए, अन्यथा सचित्त अचित्त वर्गणाओंके गुणकारके साथ विरोध आता है।

शंका-- जीवसहित शरीरोंके विस्रसोपचयका जिस प्रकार अल्पबहुत्व कहा है उस प्रकार जीवसे पृथग्भूत शरीरोंके विस्रसोपचयका अल्पबहुत्व क्यों नहीं कहते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, जीवसे पृथक् होनेके कारण जिनका पहलेका बन्धन गुण नष्ट हो गया है और जो जघन्य तथा उत्कृष्ट स्वामित्वकी अपेक्षा शरीरोंकी अवगाहनाको प्राप्त हैं उनके समयप्रबद्ध सम्बन्धी अल्पबहुत्वको छोडकर अन्य अल्पबहुत्व सम्भव नहीं है। और युक्तिके द्वारा सूत्र बाधित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि, समस्त बाधाओंसे रहित वचन की सूत्र संज्ञा है।

अब जीव प्रतिबद्ध जघन्य विस्रसोपचयके उत्कृष्ट स्वामित्वका कथन करनेके लिए और उनके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

शरीरकी सबसे जघन्य अवगाहनामें विद्यमान अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ जीवके

अ० का० प्रत्योः 'सरीरगाहणागमावण्णाणं' इति पाठः।

चओ थोवो ॥ ५५३ ॥

चरिमसमयछदुमत्थस्स सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा होदि त्ति एत्थ पदसंबंधो कायव्वो । एदेण जहण्णबादरणिगोद-वग्गणसामित्तपरूवणदुवारेण जहण्णविस्सासुवचयस्स सामी परूविदो । चरिमसमय-छदुमत्थाणं गहणं किमट्ठं कीरदे? ण, तत्थ गुणसेडिमरणेण मदावसिट्ठाणमावलियाए असंखे०भागमेत्तपुलवियाणं गहणट्ठं तक्करणादो । असंखेज्जगुणाए सेडीए कम्मपदेसाणं तत्थतणविस्सासुवचयाणं च गलणट्ठं पि चरिमसमयछदुमत्थग्गहणं कीरदे । सव्व-जहण्णियाए सरीरोगाहणाए त्ति वुत्ते अवट्ठिदरयणिपमाणोगाहणाए गहणं कायव्वं । किमट्ठं तग्गहणं कीरदे ? थोवविस्सासुवचयगहणट्ठं । रस-रुहिर-मांस-मेदट्ठि-मज्ज सुक्काणि विस्सासुवचओ णाम । ते च थोवा जहण्णोगाहणाए चेव होंति ण महंतीए, तेसिं बहुत्तेण विणा ओगाहणाए बहुत्तविरोहादो । तत्थोवत्तं पि बादरणिगोदाणं थोवत्तविहाणट्ठं । तम्हा अवट्ठिदरयणिपमाणुस्सेहो विविहोववासेहि ज्झाडिदणिस्सेस-रोमाहियमंसो ज्झाणाबूरणेण थोवीकयबादरणिगोदपुलवियकलावो चरिमसमयखीण-कसाओ जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए जहण्णविस्सासुवचयाणं सामी होदि त्ति सिद्धं ।

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जघन्य बादरनिगोद वर्गणाका जघन्य विस्रसोपचय स्तोक है ॥५५३॥

शरीरकी सबसे जघन्य अवगाहनामें विद्यमान अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थ जीवके जघन्य बादरनिगोदवर्गणा होती है इस प्रकार यहाँ पर पदसम्बन्ध करना चाहिए। इसके आश्रयसे जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके स्वामित्वकी प्ररूपणाद्वारा जघन्य विस्रसोपचयका स्वामी कहा है।

शंका-- अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थोंका ग्रहण किसलिए करते हैं ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वहाँ पर गुणश्रेणि मरणसे मरनेके बाद बची हुई आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंके ग्रहण करनेके लिए तथा असंख्यात गुणित श्रेणिरूपसे कर्मप्रदेशोंकी और तत्रस्थ विस्रसोपचयोंकी निर्जरा करनेके लिए अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थोंका ग्रहण करते हैं।

सबसे जघन्य शरीरकी अवगाहनामें ऐसा कहने पर साढे तीन हाथप्रमाण अवगाहनाका ग्रहण करना चाहिए।

शंका-- उसका ग्रहण किसलिए करते हैं ?

समाधान-- स्तोक विस्रसोपचयका ग्रहण करनेके लिए।

See पु. 430, 440, 468

रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र इनकी विस्रसोपचय संज्ञा है। वे जघन्य अवगाहनामें स्तोक ही होते हैं, बडी अवगाहनामें नहीं, क्योंकि, उनका बहुत्व हुए बिना अवगाहनाका बहुत्व होनेमें विरोध है। वह स्तोकपना भी बादरनिगोदके स्तोकपनेका विधान करनेके लिए वहाँ ग्रहण किया है। इसलिए मनुष्यके मानसे जिसका साढे तीन अरत्निप्रमाण उत्सेध है, नानाप्रकारके उपवासों द्वारा जिसने समस्त रोम और अधिक मांसको गला डाला है और ध्यानसमाधि द्वारा जिसने बादरनिगोद पुलविकलापको स्तोक कर दिया है ऐसा अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीव जघन्य बादरनिगोद वर्गणाके जघन्य विस्रसोपचयोंका स्वामी होता

एवं बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो अप्पो त्ति भणिदं होदि । एदं सुत्तं बाहिरवग्गणाए ण होदि, जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए सामित्तपदुप्पायणादो ? ण, विस्सासुवचयसामित्तं मोत्तूण बादरणिगोदवग्गणाए पहाणत्ताभावादो ।

सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए छण्णं जीवणिकायाणं एयबंधणबद्धाणं सपिंडिदाणं संताणं सव्वुक्कस्सियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ॥ ५५४ ॥

एदेण सुत्तेण सुहुमणिगोदउक्कस्सवग्गणाए सामित्तपरूवणदुवारेण उक्कस्सविस्सासुवचयस्स सामित्तं परूविदं । तं जहा- सव्वुक्कस्सियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स महामच्छस्स उक्कस्सिया सुहुमणिगोदवग्गणा होदि । कुदो? छण्णं जीवणिकायाणं एयबंधणबद्धाणं सपिंडिदाणं संताणं तत्थुवलंभादो । छण्णं जीवणिकायाणं सरीरसमवाओ एयबंधणं णाम । तेण एयबंधणेण बद्धाणं सपिंडिदाणमबद्धाणं च जीवाणं गहणं कायव्वं । संपहि पुणो एवंविहसुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए उक्कस्सओ विस्सासुवचओ होदि । कुदो? तत्थतणाणंतजीवतिसरीराणंतपरमाणुपोग्गलाणं बंधणगुणेण संबद्धणोकम्मपोग्गलाणं बहुत्तुवलंभादो । सो च

है यह सिद्ध हुआ । इस प्रकार जघन्य बादर निगोद वर्गणाका जघन्य विस्रसोपचय स्तोक अर्थात् अल्प होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका— यह सूत्र बाह्य वर्गणाके विषयमें नहीं है, क्योंकि, इस द्वारा जघन्य बादर निगोदवर्गणाका स्वामी कहा गया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, विस्रसोपचयके स्वामीको छोडकर बादर निगोद वर्गणाकी प्रधानता नहीं है ।

एक बन्धनबद्ध और पिण्ड अवस्थाको प्राप्त हुए जीवोंकी सर्वोत्कृष्ट शरीर अवगाहनामें विद्यमान जीवकी उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणाका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है ॥ ५५४ ॥

इस सूत्र द्वारा सूक्ष्म निगोद उत्कृष्ट वर्गणाके स्वामित्वकी प्ररूपणा द्वारा उत्कृष्ट विस्रसोपचयका स्वामित्व कहा है । यथा- सबसे उत्कृष्ट शरीरकी अवगाहनामें विद्यमान महामत्स्यकी उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणा होती है, क्योंकि, वहां पर एक बन्धनबद्ध और पिण्डीभूत छह जीवनिकाय उपलब्ध होते हैं । छह जीवनिकायोंके शरीरसमवायकी एकबन्धन संज्ञा है । इसलिए एक बन्धनरूपसे बंधे हुए और पिण्डीभूत होकर सम्बद्ध हुए जीवका ग्रहण करना चाहिए । इस प्रकार इस तरहकी उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणामें उत्कृष्ट विस्रसोपचय होता है, क्योंकि, वहांके अनन्त जीवोंके तीन शरीरके अनन्त परमाणु पुद्गलोंके बन्धनगुणके कारण सम्बन्धको प्राप्त हुए

उक्कस्सओ विस्सासुवचओ बादरणिगोदजहण्णविस्सासुवचयादो अणंतगुणो । बादरणिगोदवग्गणाए आवलियाए असंखे० भागमेत्तपुलवियासु अणंतजीवा अत्थि । सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए वि अणंता जीवा अत्थि किंतु बादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो महामच्छदेहट्ठिदजीवा असंखेज्जगुणा होंता वि विस्सासुवचएण अणंतगुणा । तिण्णं सचित्तवग्गणाणं मज्झे जहण्णबादरणिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणा असंखेज्जगुणा त्ति जं भणिदं तेण सह एदं सुत्तं किण्ण विरुज्झदे ? ण विरुज्झदे, जहण्णबादरणिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणा अणंतगुणे त्ति एत्थ णिद्देसाभावादो । किंतु जहण्णबादरणिगोदवग्गणसामियस्स जहण्णविस्सासुवचयादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए आधारभूदमहामच्छट्ठिदअणंतजीवाणं विस्सासुवचयकलाओ अणंतगुणो त्ति भणिदं होदि । तत्थ ट्ठिदसव्वजीवा सुहुमणिगोदवग्गणा होंति, बादराणं अण्णोण्णेण असंबद्धसुहुमणिगोदवग्गणाणं च उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणत्तविरोहादो ।

एदेसिं चेव परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि जीवपमाणाणुगमो पदेसपमाणाणुगमो अप्पाबहुए त्ति ॥ ५५५ ॥

एदेसिं विस्सासुवचयाणं अणंतगुणत्तसाहणट्ठं इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि एत्थ हवंति ।

बहुत नोकर्म परमाणु पुद्गल उपलब्ध होते हैं । वह उत्कृष्ट विस्रसोपचय बादर निगोद जघन्य विस्रसोपचयसे अनन्तगुणा है । बादर निगोद वर्गणाकी आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंमें अनन्त जीव होते हैं तथा उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें भी अनन्त जीव होते हैं । किन्तु बादरनिगोदवर्गणाके जीवोंसे महामत्स्यके देहमें स्थित जीव असंख्यातगुणे होते हुए भी विस्रसोपचयकी अपेक्षा अनन्तगुणे हैं ।

शंका– तीन सचित्त वर्गणाओंके मध्यमें जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा असंख्यातगुणी है यह जो कहा है उसके साथ यह सूत्र विरोधको क्यों नहीं प्राप्त होता ?

समाधान– विरोधको नहीं प्राप्त होता, क्योंकि, जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा अनन्तगुणी है इस प्रकारका यहां पर निर्देश नहीं पाया जाता । किन्तु जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके स्वामीके जघन्य विस्रसोपचयसे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके आधारभूत महामत्स्यमें अनन्त जीवोंका विस्रसोपचयकलाप अनन्तगुणा है ऐसा कहा है । परन्तु वहां पर स्थित सब जीव सूक्ष्मनिगोदवर्गणा नहीं हैं, क्योंकि, बादरोंके और परस्परमें सम्बन्धको नहीं प्राप्त हुए सूक्ष्मनिगोदवर्गणाओंके उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणा होनेमें विरोध आता है ।

इनकी ही प्ररूपणा करनेपर यहां ये तीन अनुयोगद्वार होते हैं – जीवप्रमाणानुगम, प्रदेशप्रमाणानुगम और अल्पबहुत्व ॥ ५५५ ॥

इन विस्रसोपचयोंके अनन्तगुणत्वकी सिद्धि करनेके लिए यहां ये तीन अनुयोगद्वार

जीवपमाणाणुगमेण पुढविकाइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५५६ ॥

असंखेज्जलोगमेत्ता भणिदं होदि ।

आउक्काइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५५७ ॥

तेउक्काइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५५८ ॥

वाउक्काइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५५९ ॥

एदे चत्तारि वि जीवणिकाया असंखेज्जलोगमेत्ता ।

वणप्फदिकाइया जीवा अणंता ॥ ५६० ॥

तसकाइया जीवा असंखेज्जा ॥ ५६१ ॥

जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । एवं जीवपमाणाणुगमो समत्तो ।

पदेसपमाणाणुगमेण पुढविकाइयजीवपदेसा* असंखेज्जा । ५६२ ।

पुढविकाइयजीवे पुव्वपरूविदे एगेणघणलोगेण गुणिदे जीवपदेसपमाणुप्पत्तीदो । जीवपमाणादो चेव विस्सासुवचयाणं पमाणे अवगदे संते जीवपदेसाणं पमाणं किमट्ठं

होते हैं ।

जीवप्रमाणानुगमकी अपेक्षा पृथिवीकायिक जीव असंख्यात हैं ॥ ५५६ ॥

असंख्यात लोकप्रमाण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

जलकायिक जीव असंख्यात हैं ॥ ५५७ ॥

अग्निकायिक जीव असंख्यात हैं ॥ ५५८ ॥

वायुकायिक जीव असंख्यात हैं । ५५९ ।

ये चारों ही जीवनिकाय असंख्यात लोकप्रमाण हैं ।

वनस्पतिकायिक जीव अनन्त हैं । ५६० ।

त्रसकायिक जीव असंख्यात हैं । ५६१ ।

त्रसकायिक जीव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

इस प्रकार जीवप्रमाणानुगम समाप्त हुआ ।

प्रदेशप्रमाणानुगमकी अपेक्षा पृथिवीकायिक जीवोंसे प्रदेश असंख्यात हैं । ५६२ ।

पहले कहे गये पृथिवीकायिक जीवोंको एक घनलोकसे गुणित करनेपर पृथिवीकायिक जीवोंके प्रदेशोंका प्रमाण उत्पन्न होता है ।

शंका-- जीवोंके प्रमाणसे ही विस्रसोपचयोंके प्रमाणका ज्ञान हो जानेपर यहां पर जीवोंके प्रदेशोंका प्रमाण किस लिए कहा है ?

---

* अ० का०प्रत्योः ' पुढविकाइयपदेसा ' इति पाठः ।

एत्थ वुच्चदे ? ण, एक्केक्कम्हि जीवपदेसे अणंतओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणू अत्थि, एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि अणंताणंता विस्सासुवचया च अत्थि, एक्केक्कम्हि जीवे एगेगघणलोगमेत्ता चेव जीवपदेसा अत्थि त्ति जाणावणट्ठं जीवपदेसपमाण-परूवणा कीरदे । एक्केक्कम्हि जीवपदेसे एगपरमाणुणा विणा कथमणंता परमाणू सम्मांति*? ण, कम्मपरमाणूणमाणंतियं फिट्टियूण तेसिमसंखेज्जपमाणत्तप्पसंगादो । ण च एवं, सव्वसुत्तेहि सह विरोहप्पसंगादो तम्हा । जुत्तीए विणा सुत्तबलेणेव एक्के-क्कम्हि जीवपदेसे अणंताणंतपरमाणूणमत्थित्तपरूवणट्ठं पदेसपमाणाणुगमो आगदो ।

आउक्काइयजीवपदेसा* असंखेज्जा ॥ ५६३ ॥

तेउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥ ५६४ ॥

वाउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥ ५६५ ॥

वणप्फदिकाइयजीवपदेसा अणंता ॥ ५६६ ॥

तसकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा ॥ ५६७ ॥

सुगमाणि एदाणि सुत्ताणि । एवं पदेसपमाणाणुगमो समत्तो ।

मागदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

समाधान- नहीं, क्योंकि, एक एक जीवप्रदेशमें अनन्त औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु हैं तथा एक एक परमाणुपर अनन्तानन्त विस्रसोपचय हैं इस प्रकार इस बातका ज्ञान करानेके लिए तथा एक एक जीवके एक एक घनलोकप्रमाण ही जीवप्रदेश हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए यहां पर जीवके प्रदेशोंके प्रमाणका कथन किया है ।

शंका- एक एक जीवप्रदेश पर एक परमाणुके बिना अनन्त परमाणु कैसे समाते हैं ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, ऐसा माननेपर कर्मपरमाणुओंकी अनन्तता नष्ट होकर उनके असंख्यातप्रमाण प्राप्त होनेका प्रसंग आता है । परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा माननेपर सब सूत्रोंके साथ विरोध होनेका प्रसंग प्राप्त होता है । इसलिए युक्तिके विना सूत्रके बलसे ही एक एक जीवप्रदेश पर अनन्तानन्त परमाणुओंके अस्तित्वका कथन करनेके लिए प्रदेश-प्रमाणानुगम आया है ।

अप्कायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥ ५६३ ॥

अग्निकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥ ५६४ ॥

वायुकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥ ५६५ ॥

वनस्पतिकायिक जीवोंके प्रदेश अनन्त हैं ॥ ५६६ ॥

त्रसकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यात हैं ॥ ५६७ ॥

ये सूत्र सुगम हैं । इस प्रकार प्रदेशप्रमाणानुगम समाप्त हुआ ।

---

* ता प्रतौ ' सम्मंति ' इति पाठः ।

अप्पाबहुअं दुविहं--जीवअप्पाबहुअं चेव पदेसअप्पाबहुअं चेव ॥ ५६८ ॥

एवमप्पाबहुअं एत्थ दुविहं चेव होदि । जीवअप्पाबहुगादो चेव पदेसअप्पाबहुअं णज्जदि तेण तण्ण वत्तव्वं त्ति? ण, सव्वेसिं जीवाणं जीवपदेसा सरिसा चेव होंति त्ति जाणावणट्ठं जीवअप्पाबहुगादो पदेसअप्पाबहुगं पुध परूविदं । अहवा जीवअप्पाबहुगादो चेव तण्णावगमिदि तप्परूवणा ण णिरत्थिया, सुत्तेण विणा गुरुवएसस्स अप्पवुत्तीए ।

जीवअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा तसकाइयजीवा ॥ ५६९ ॥

जगपदरस्स असंखेज्जविभागत्तादो ।

तेउक्काइयजीवा असंखेज्जगुणा ॥ ५७० ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

पुढविकाइया जीवा[1] विसेसाहिया ॥ ५७१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो? असंखेज्जा लोगा, तेउक्काइयजीवाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है- जीवअल्पबहुत्व और प्रदेशअल्पबहुत्व । ५६८ ।

इस प्रकार अल्पबहुत्व यहाँ पर दो प्रकारका ही होता है ।

शंका-- जीवअल्पबहुत्वसे ही प्रदेशअल्पबहुत्वका ज्ञान हो जाता है, इसलिए उसका कथन नहीं करना चाहिए ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, सब जीवोंके जीवप्रदेश समान ही होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए उसका कथन किया है । गुरुके उपदेशसे ही उसका ज्ञान हो जाता है, इसलिए उनका कथन करना निरर्थक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि, सूत्रके विना गुरुके उपदेशकी प्रवृत्ति नहीं होती ।

जीवअल्पबहुत्वकी अपेक्षा त्रसकायिक जीव सबसे स्तोक हैं । ५६९ ।

क्योंकि, वे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

उनसे तैजस्कायिक जीव असंख्यातगुणे हैं । ५७० ।

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार है ।

उनसे पृथिवीकायिक जीव विशेष अधिक हैं । ५७१ ।

विशेषका प्रमाण कितना है ? तैजस्कायिक जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण जो असंख्यात लोक हैं उतना विशेषका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है । इसी प्रकार सर्वत्र कथन करना चाहिए ।

---

[1] अ० प्रतौ 'पुढविकाइया जीवा' इति पाठः ।

आउकाइयजीवा विसेसाहिया ॥ ५७२ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा ।

वाउक्काइया जीवा* विसेसाहिया ॥ ५७३ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो? असंखेज्जा लोगा ।

वणप्फदिकाइया जीवा* अणंतगुणा ॥ ५७४ ॥

को गुणगारो ? सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो । एवं जीवअप्पाबहुअं समत्तं ।

पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा तसकाइयपदेसा ॥ ५७५ ॥

घणलोगगुणिदतत्थतणतसजीवपमाणत्तादो ।

तेउक्काइयपदेसा असंखेज्जगुणा ॥ ५७६ ॥

पुढविकाइयपदेसा विसेसाहिया । ५७७ ।

आउक्काइयपदेसा विसेसाहिया । ५७८ ।

वाउक्काइयपदेसा विसेसाहिया । ५७९ ।

वणप्फदिकाइयपदेसा अणंतगुणा । ५८० ।

उनसे अप्कायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ ५७२ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण असंख्यात लोक है ।

उनसे वायुकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ ॥ ५७३ ॥

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण असंख्यात लोक है ।

उनसे वनस्पतिकायिक जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ५७४ ॥

गुणकार क्या है ? सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । इस प्रकार जीवअल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

प्रदेशअल्पबहुत्वकी अपेक्षा त्रसकायिक जीवोंके सबसे स्तोक हैं । ५७६ ।

यहाँ त्रस जीवोंके प्रमाणको घनलोकसे गुणित करनेपर उनके प्रदेशोंका प्रमाण प्राप्त होता है

उनसे अग्निकायिक जीवोंके प्रदेश असंख्यातगुणे हैं । ५७६ ।

उनसे पृथिवीकायिक जीवोंके प्रदेश विशेष अधिक हैं । ५७७ ।

उनसे अप्कायिक जीवोंके प्रदेश विशेष अधिक हैं । ५७८ ।

उनसे वायुकायिक जीवोंके प्रदेश विशेष अधिक हैं । ५७९ ।

उनसे वनस्पतिकायिक जीवोंके प्रदेश अनन्तगुणे हैं । ५८० ।

---

* अ० प्रतौ ' वाउक्काइया ' इति पाठः । * अ० का० प्रतौ ' वणप्फदिकाइया ' इति पाठः ।

एवाणि सुत्ताणि सुगमाणि। अणेवं महामच्छसरीरे अणंता जीवा अणंताणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा जहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो असंखेज्जगुणा अत्थि तेण विस्सासुवचएण एत्थ तत्तो अणंतगुणेण होदव्वमिदि जहण्णबादरणिगोदवग्गण-जीवेहिंतो महामच्छदेहट्ठिदजीवा✤ असंखेज्जगुणा चेव, बादरणिगोदवग्गणाए एग-णिगोदसरीरे वि सव्वजीवरासीए असंखेज्जदिभागमेत्तजीवोवलंभादो। ण च तत्थ तिस्से अणंतिमभागमेत्तजीवा होंति, बादरणिगोदजहण्णवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगो-दवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो। ण च एवं, पुव्वुत्तगुणगारेण सह विरोहादो। जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए जहण्णविस्सासुवचयादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सविस्सासुवचओ वि असंखेज्जगुणो चेव, अण्णहा जहण्णबादरणिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो। ण च महामच्छउक्कस्सविस्सा-सुवचओ अणंतगुणो होदि, जहण्णबादरणिगोदवग्गणादो उक्कस्ससुहुमणिगोदवग्ग-णाए अणंतगुणत्तप्पसगादो। तम्हा एदेण♋ जीवेण अप्पाबहुएण महामच्छदेहउक्क-स्सविस्सासुवचयस्स अणंतगुणत्तं ण साहिज्जदि त्ति सिद्धं? एत्थ परिहारो उच्चदे। तं जहा– एसो [illegible] वग्गणसमूहमेत्तो ण होदि किंतु तस्स पुट्ठीए संभूदउट्ठियकलावो ततो

ये सूत्र सुगम हैं।

शंका– चूंकि यह बात है कि महामत्स्यके शरीरमें अनन्त जीव अनन्तानन्त विस्रसोपचयों से उपचित होते हैं तो भी जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके जीवोंसे असंख्यातगुणे होते हैं, इसलिए विस्रसोपचयको यहाँपर उनसे अनन्तगुणा होना चाहिए, अतः जघन्य बादरनिगोद वर्गणाके जीवोंसे महामत्स्यके शरीरमें स्थित जीव असंख्यातगुणे ही होते हैं, क्योंकि, बादरनि-गोदवर्गणाके एक निगोदशरीरमें भी सब जीवराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव उपलब्ध होते हैं। वहाँ उसके अनन्तवें भागप्रमाण जीव होते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानने पर जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है। परन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा मानने पर पूर्वोक्त गुणकारके साथ विरोध आता है। जघन्य बादरनिगोदवर्गणाके जघन्य विस्रसोपचयसे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका उत्कृष्ट विस्र-सोपचय भी असंख्यातगुणा ही है, अन्यथा जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्मनिगोदव-र्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है। परन्तु महामत्स्यका उत्कृष्ट विस्रसोपचय अन-न्तगुणा नहीं है, क्योंकि, जघन्य बादरनिगोदवर्गणासे उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोदवर्गणाके अनन्तगुणे होनेका प्रसंग प्राप्त होता है, इसलिए इस जीव अल्पबहुत्वसे महामत्स्यके देहका उत्कृष्ट विस्र-सोपचय अनन्तगुणा नहीं सिद्ध किया जा सकता है यह बात सिद्ध होती है?

समाधान– यहाँ इस शंकाका परिहार करते हैं। यथा– यह महामत्स्यका आहाररूप जो पुद्गलकलाप है वह प्रत्येकशरीर, बादरनिगोदवर्गणा और सूक्ष्मनिगोदवर्गणाका समुदायमात्र नहीं होता है किन्तु उसकी पीठपर आकर जमी हुई जो मिट्टीका प्रचय है वह और उसके कारण

✤ ता० प्रतौ 'उवचिदा जहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो महामच्छदेहट्ठिदजीवा' इति पाठः।

♋ ता० का० प्रत्योः 'अणंतगुणो होदि। तम्हा एदेण' इति पाठः।

समुच्छिदपत्थर-सज्जज्जुण-णिंब कयंबंब-जंबु-जंबीर-हरि-हरिणादओ च विस्ससोवचय-यंतब्भूदा दट्ठव्वा । ण च तत्थ मट्टियादीणमुप्पत्ती असिद्धा, सइलोदए पडिदपण्णाणं पि सिलाभावेण परिणामदंसणादो सुत्तिवुडपडिदोदबिंदूणं मुत्ताहलागारेण परिणामुवलंभादो । ण च तत्थ सम्मुच्छिमपंचिंदियजीवाणमुप्पत्ती असिद्धा, पाउसपारंभवासजलधरणिसंबंधेण भेंडुअ-मच्छ-कच्छयादीणमुप्पत्तिदंसणादो । ण च एदेसिं विस्सासुवचयत्तमसिद्धं, कम्मोदयमंतरेणुवचिदाणं विस्सासुवचयत्तं पडि विरोहाभावादो । ण च एदेसिं महामच्छत्तमसिद्धं, माणुसजडरुप्पण्णगंडवालाणं पि माणुसवयएसुवलंभादो । सव्वेसिमेदेसिं गहणादो सिद्धं उक्कस्सविस्सासुवचयस्स अणंतगुणत्तं । अथवा ओरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गलाणं बंधणगुणेण जे एयबंधणबद्धा पोग्गला विस्सासुवचय-सण्णिया तेसिं सचित्तवग्गणाणं अंतब्भावो होदि, जीवेण सह तेसिमण्णोण्णाणुगयत्त-दंसणादो । जे पुण तेसिं सचित्तवग्गणसण्णिदपोग्गलाणं बंधणगुणेण तत्थ समवेदा पोग्गला जे च सीसवालदंता इव तज्जोणिभावेणुप्पण्णा च जीवेण अणणुगयभावादो अलद्धसचित्तवग्गणववएसा ते एत्थ विस्सासुवचया घेत्तव्वा । ण च णिज्जीवविस्सासुव-चयाणं अत्थित्तमसिद्धं, रुहिर-वस-सुक्क-रस-सेंभ-पित्त-मुत्त-खरिस-मत्थुलिंगादीणं जीववज्जियाणं विस्सासुवचयाणमुवलंभादो । ण च दंतहड्डवाला इव सव्वे विस्सासुव-

---

उत्पन्न हुए पत्थर, सर्ज नामके वृक्षविशेष, अर्जुन, नीम, कदम्ब, आम, जामुन, जम्बीर, सिंह और हरिण आदिके ये सब विस्रसोपचयमें अन्तर्भूत जानने चाहिए। वहाँ मिट्टी आदिकी उत्पत्ति प्रसिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, शैलके पानीमें गिरे हुए पत्तोंका शिलारूपसे परिणमन देखा जाता है तथा शुक्तिपुटमें गिरे हुए जलबिन्दुओंका मुक्ताफलरूपसे परिणमन उपलब्ध होता है। वहाँ पञ्चेन्द्रिय सम्मूर्च्छन जीवोंकी उत्पत्ति असिद्ध है यह बात भी नहीं है, क्योंकि, वर्षाकालके प्रारंभमें वर्षाके जल और पृथिवीके संबंधसे मेंढक, चूहा, मछली और कछुआ आदिकी उत्पत्ति देखी जाती है। इनका विस्रसोपचयपना असिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि कर्मोदयके बिना उपचित हुए पुद्गलोंके विस्रसोपचय होनेमें कोई विरोध नहीं आता है। इनका महामत्स्य होना असिद्ध है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, मनुष्यके जठरमें उत्पन्न हुई कृमिविशेषकी भी मनुष्य संज्ञा उपलब्ध होती है। इन सबके ग्रहण करनेसे उत्कृष्ट विस्रसोपचय अनन्तगुणा है यह बात सिद्ध होती है। अथवा औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु पुद्गलोंके बन्धनगुणके कारण जो एक बन्धनबद्ध विस्रसोपचय संज्ञावाले पुद्गल हैं उनका सचित्तवर्गणाओंमें अन्तर्भाव होता है, क्योंकि, उनका जीवके साथ परस्परमें अनुगतपना देखा जाता है। परन्तु उन सचित्तवर्गणा संज्ञावाले पुद्गलोंके बन्धन गुणके कारण जो पुद्गल वहाँ समवेत होते हैं और जो सीसपालमें दाँतोंके समान उनके योनिरूपसे उत्पन्न हुए हैं वे जीवसे अनुगत नहीं होनेके कारण सचित्तवर्गणा संज्ञाको नहीं प्राप्त होते, इसलिए उन्हें यहाँ विस्रसोपचयरूपसे ग्रहण करना चाहिए। निर्जीव विस्रसोपचयोंका अस्तित्व असिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, जीवरहित रुधिर, वसा, शुक्र, रस, कफ, पित्त, मूत्र, खरिस और मस्तकमेंसे निकलने-वाले चिकने द्रवरूप विस्रसोपचय उपलब्ध होते हैं। दाँतोंकी हड्डियोंके समान सभी विस्रसोपचय

५,५५० ५६० ५३०

चया णिज्जीवा[1] पच्चक्खा चेव, अणुभावेण अणंताणं विस्सासुवचयाणं आगमचक्खु-गोयराणमुवलंभादो । एदे विस्सासुवचया महामच्छदेहभूदछज्जीवणिकायविसया अणंतगुणा त्ति घेत्तव्वा । किफला एसा परूवणा? दुविहविस्सासुवचयपदुप्पायणफला ।

एवं विस्सासुवचयपरूवणाए समत्ताए बाहिरिया वग्गणा समत्ता होदि ।

चूलिया

एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम ॥५८१॥

पुव्वं सूचिदअत्थाणं विसेसपरूवणादो । संपहि ' जत्थेय मरदि जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं । वक्कमदि जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं ॥' एदिस्से गाहाए पुव्वं परूविदाए[2] पच्छिमद्धस्स अत्थविसेसणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि —

जो णिगोदो पढमदाए वक्कममाणो अणंता वक्कमंति जीवा । एयसमएण[*] अणंताणंतसाहारणजीवेण घेत्तूण एगसरीरं भवदि असंखेज्जलोगमेत्तसरीराणि घेत्तूण एगो णिगोदो होदि ॥५८२॥

प्रत्यक्षसे निर्जीव ही होते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, अनुभावके कारण आगमचक्षुके विषयभूत अनन्त विस्रसोपचय उपलब्ध होते हैं । महामत्स्यके देहमें उत्पन्न हुए छह जीवनिकायोंको विषय करनेवाले ये विस्रसोपचय अनन्तगुणे होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

शंका– इस प्ररूपणाका क्या फल है ?

समाधान– दो प्रकारके विस्रसोपचयोंका कथन करना इसका फल है ।

इस प्रकार विस्रसोपचयप्ररूपणाके समाप्त होनेपर बाह्य वर्गणा समाप्त होती है ।

चूलिका

इससे आगेका ग्रन्थ चूलिका है ॥५८१॥

क्योंकि, इसमें पहिले सूचित किये गये अर्थोंका विशेषरूपसे कथन किया है । अब ' जहां एक जीव मरता है वहां अनन्त जीवोंका मरण होता है और जहां एक जीव उत्पन्न होता है वहां अनन्त जीवोंका उत्पाद होता है । ' पहले कही गई इस गाथा के उत्तरार्धके अर्थमें विशेषता दिखलाने के लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

प्रथम समयमें जो निगोद उत्पन्न होता है उसके साथ अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं । यहाँ एक समयमें अनन्तानन्त साधारण जीवोंको ग्रहण कर एक शरीर होता है । तथा असंख्यात लोकप्रमाण शरीरों को ग्रहण कर एक निगोद होता है ॥५८२॥

---

[1] अ० प्रतौ ' णिजीवा ' इति पाठः । [2] अ० का० प्रत्योः ' पुव्वपरूवणदाए ' इति पाठः ।
[*] ता० प्रतौ ' वक्कमंति जहा एयसमएण ' इति पाठः ।

णिगोदो पुलवियो त्ति एयट्ठो । तस्संतो अच्छंति जाणि सरीराणि सरीराणमंतो जे वसंति अणंताणंता जीवा तेसिं सव्वेसिं पि णिगोदा त्ति सण्णा, आधेये आधारोवयारादो । जो णिगोदो त्ति भणिदे णिगोदजीवो एगो घेत्तव्वो । पुलवियाणं सरीराणं वा गहणं ण होदि, तेसिमाणंतियाभावादो । पढमदाए उप्पत्तीए पढमभावेण वक्कममाणो उप्पज्जिजमाणो जो णिगोदो तेण सह अणंता जीवा वक्कमंति । एगसमएण जम्हि समए अणंता जीवा उप्पज्जंति तम्मि चेव समए सरीरस्स पुलवियाए च उप्पत्ती होदि, तेहि विणा तेसिमुप्पत्तिविरोहादो । कत्थ वि पुलवियाए पुव्वं पि उप्पत्ती होदि, अणेगसरीराधारत्तादो । एसा परूवणा किमेगसरीरमाहारं काऊण परूविज्जदि आहो एगपुलवियमाहारं काऊण परूविज्जदि त्ति ? उभयमवि आहारं काऊण परूवणा कीरदे । एदं कुदो णव्वदे ? अंतोमुहुत्तमस्सिदूण उप्पत्तिकाल—परूवणादो । ण च खंधेसु कमाकमेहि उप्पज्जमाणाणेगपुलवियेसु अंतोमुहुत्तालंबणं जुत्तं, गलोइ थूहल्लयादीणं बादरणिगोदक्खंधाणं पुलवियाणं अणेगकालावट्ठाण—दंसणादो ।

बिदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ॥ ५८३ ॥

निगोद और पुलवि ये एकार्थवाची शब्द है । उनके भीतर जो शरीर रहते हैं और शरीरोंके भीतर जो अनन्तानन्त जीव रहते हैं उन सभी की आधार में आधेयका उपचार होनेसे निगोद संज्ञा है । सूत्र में ' जो निगोदो ' ऐसा कहने पर एक निगोद जीव लेना चाहिए । इससे पुलवियों और शरीरोंका ग्रहण नहीं होता है, क्योंकि, वे अनन्त नहीं हैं । ' पढमदाए ' अर्थात् उत्पत्ति की प्रथम अवस्थारूपसे उत्पन्न होनेवाला जो निगोद जीव है उसके साथ अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं । ' एगसमएण ' अर्थात् जिस समयमें अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं उसी समयमें शरीर की और पुलविकी उत्पत्ति होती है, क्योंकि, इनके विना अनन्त जीवोंकी उत्पत्ति होनेमें विरोध है । कहीं पर पुलविकी पहले भी उत्पत्ति होती है, क्योंकि, वह अनेक शरीरोंका आधार है ।

शंका— यह प्ररूपणा क्या एक शरीरको आधार करके की जा रही है या एक पुलविको आधार करके की जा रही है ?

समाधान— दोनोंको ही आधार करके यह प्ररूपण की जा रही है ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— अन्तर्मुहूर्तका आश्रय लेकर चूंकि उत्पत्तिकालकी प्ररूपणा की गई है इससे जाना जाता है कि दोनोंका आधार बनाकर यह प्ररूपणा की जा रही है । और स्कन्धोंमें क्रम और अक्रम से उत्पन्न होनेवाली अनेक पुलवियोंमें अन्तर्मुहूर्तका अवलम्बन करना युक्त नहीं है, क्योंकि, गिलोय, थूवर और आदा आदि बादर निगोद स्कन्धोंमें पुलवियोंका अनेक काल तक अवस्थान देखा जाता है ।

दूसरे समयमें असंख्यातगुणे हीन निगोद जीव उत्पन्न होते हैं ॥५८३॥

✿ अ० प्रतौ ' णिगोद त्ति ' इति पाठ ।

तम्हि चेव सरीरे पढमसमयउप्पण्णजीवेहिंतो बिदियसमए उप्पज्जमाणजीवा असंखेज्जगुणहीणा । को भागहारो ? आवलियाए असंखेज्जविभागो ।

तदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति । ५८४ ।

तत्थेव सरीरे बिदियसमए वक्कंतजीवेहिंतो तदियसमए उप्पज्जंतजीवा असंखेज्जगुणहीणा । भागहारो सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जविभागो ।

एवं जाव असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए णिरंतरं वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जविभागो । ५८५ ।

एत्थतणआवलियाए असंखेज्जविभागस्स पमाणमावलियपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जविभागो । कुदो एदं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । एएण सुत्तेण पढमकंडयपरूवणा कदा ।

तदो एक्को वा दो वा तिण्णि वा समए अंतरं काऊण णिरंतरं वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जविभागो । ५८६ ।

एक्को वा दो वा तिण्णि वा समए जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जविभागो अंतरं काऊणे त्ति पदसंबंधो कायव्वो । आवलियाए असंखेज्जविभागसद्दो अंतरकाले*

उसी शरीरमें प्रथम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंसे दूसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हीन होते हैं । भागहार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भागहार है ।

तीसरे समयमें असंख्यातगुणे हीन निगोद जीव उत्पन्न होते हैं । ५८४ ।

उसी शरीरमें दूसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंसे तीसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हीन होते हैं । सर्वत्र भागहार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक निरन्तर असंख्यातगुणे हीन श्रेणिरूपसे निगोद जीव उत्पन्न होते हैं ॥ ५८५ ॥

यहां पर आवलिके असंख्यातवें भागका प्रमाण आवलिके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग है ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

इस सूत्रके द्वारा प्रथम काण्डककी प्ररूपणा की ।

उसके बाद एक, दो और तीन समयसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण कालका अन्तर करके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक निरन्तर निगोद जीव उत्पन्न होते हैं ॥ ५८६ ॥

एक, दो और तीन समयसे लेकर उत्कृष्टसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अन्तर करके ऐसा यहां पदसम्बन्ध करना चाहिए ।

---

* ता० प्रतौ ' अंतरकालो (ले) ' इति पाठः ।

वक्कमणकाले च संबंधिज्जदि त्ति कुदो णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । अंतरमेगसमओ वि दो समया वि होंति उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एवं सव्वंतराणं पमाणपरूवणा♠ कायव्वा, एदिस्से अंतरपरूवणाए देसामासियत्तादो । एवमंतरं♣ काऊण अणंतरसमए असंखेज्जगुणहीणा जीवा उप्पज्जंति । एवमेगबीसमयमादिं काऊण ताव णिरंतरं उप्पज्जंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो त्ति । एद विदिय✿कंदयमुवलक्खणं काऊण सेसकंदयाणं पि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं परूवणा कायव्वा । णवरि पढमकंदयपमाणं जहण्णं उक्कस्सं पि आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सेसउक्कमणकंदयाणमंतरकंदयाणं❁ च पमाणं जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो । अंतराणि एगादिसमइयाणि होंतु णाम, तत्थ एगो वा दो वा तिण्णि वा त्ति अंतरपमाणपरूवणुवलंभादो । ण उक्कमणकंदयमेगसमइयं, तत्थ तदणुवलंभादो त्ति? ण, अंतरम्हि वुत्तएगादिसमयाणं उक्कमणसुत्तस्स अवयवभावेण पवत्तिदंसणादो । एवमेदेण सुत्तेण उक्कमंतजीवाणं तक्कालंतराणं च परूवणा कदा ।

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

शंका— 'आवलिके असंख्यातवें भाग' शब्दका अन्तरकाल और उत्पत्तिकाल दोनोंसे सम्बन्ध है यह किस प्रमाणसे जाना जाता ?

समाधान— अविरुद्ध आचार्य वचनसे जाना जाता है ।

अन्तर एक समय भी होता है, दो समय भी होता है और उत्कृष्टरूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है । इस प्रकार सब अन्तरोंके प्रमाणका कथन करना चाहिए, क्योंकि, यह अन्तरप्ररूपणा देशामर्षक है । इस प्रकार अन्तर करके अनन्तर समयमें असंख्यातगुणे हीन जीव उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार एक और दो समयसे लेकर उत्कृष्टसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक निरन्तर उत्पन्न होते है । इस दूसरे काण्डकको उपलक्षण करके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष काण्डकोंकी भी प्ररूपणा करनी चाहिए । इतनी विशेषता है कि जघन्य और उत्कृष्ट प्रथम काण्डकका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है । शेष उपक्रमणकाण्डकों और अन्तरकाण्डकोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

शंका— अन्तर एक आदि समयवाले होवें, क्योंकि, उस विषयमें एक, दो और तीन इस प्रकार अन्तरके प्रमाणकी प्ररूपणा उपलब्ध होती है, उपक्रमण काण्डक एक समयवाला नहीं हो सकता, क्योंकि, इसके विषयमें इस प्रकारकी कोई प्ररूपणा नहीं उपलब्ध होती ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अन्तरके विषयमें कहे गये एक आदि समयोंकी उत्पत्ति-सूत्रके अवयवरूपसे प्रवृत्ति देखी जाती है ।

इस प्रकार इस सूत्रके द्वारा उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी और उनके कालके अन्तरोंकी प्ररूपणा की है ।

♠ ता० प्रतौ 'सव्वंतराणि (णं) परूवणा' अ० का० प्रत्योः 'सव्वंतराणि पमाणपरूवणा' इति पाठः ।
♣ अ० का० प्रत्योः 'एदमंतरं' इति पाठः । ✿ ता० प्रतौ 'एवं विदिय-' इति पाठः ।
❁ अ० का० प्रत्योः '-कंदयाणमंतरं कंदयाणं' इति पाठः]

संपहि एदेण सूचिदपमाणसेडीओ भणिस्सामो– पढमसमए वक्कमंति जीवा केवडिया ? अणंता । विदियसमए वक्कमंति जीवा केवडिया? अणंता । एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तकालो त्ति । तदो एक्कं वा दो वा समयं आदिं कादूण अंतरं होदि जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-कालो त्ति । तदो उवरिमसमए अणंता जीवा वक्कमंति । एवमेगसमयमादिं कादूण वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तकालो त्ति । एवं सांतर-णिरंतरकमेण वक्कमाणजीवाणं* पमाणं वत्तव्वं जाव वक्कमणकाल*चरिमसमओ त्ति । वक्कमणकालपमाणं पुण अंतोमुहुत्तं, तत्तो उवरि उप्पत्तिसंभवाभावादो । पमाणपरूवणा गदा ।

सेडिपरूवणा दुविहा– अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरो-वणिधा एक्किस्से पुलवियाए एगसरीरे वा पढमसमए वक्कमंति जीवा बहुआ । विदिय-समए वक्कमंति जे जीवा ते असंखेज्जगुणहीणा ♠ । तदियसमए जे वक्कमंति जीवा ते असंखेज्जगुणहीणा । एवं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपढमकंदयचरिमसमओ त्ति । तदो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमंतरं होदि । तदो विदियकंदयआदिसमए वक्कमति जीवा* पढमकंदयचरिमसमए वक्कमविजीवेहिंतो(?) असंखेज्जगुणहीणा । एवं णिरंतरं णेयव्वं जाव विदियकंदयचरिमसमओ त्ति । एवमावलियाए असंखेज्ज-

अब इसके द्वारा सूचित होनेवाली प्रमाणश्रेणियोंका कथन करेंगे-- प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव कितने हैं ? अनन्त हैं । दूसरे समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव कितने हैं? अनन्त हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ले जाना चाहिए । उसके बाद एक या दो समयसे लेकर उत्कृष्ट रूपसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक अन्तर होता है । उसके अगले समयमें अनन्त जीव उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार एक समयसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक जीव उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार सान्तर-निरन्तर क्रमसे उत्कृष्ट कालके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण कहना चाहिए । तथा उपक्रमणकालका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि, उसके आगे उत्पत्ति सम्भव नहीं है । इस प्रकार प्रमाण प्ररूपणा समाप्त हुई ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है- अनंतरोपनिधा और परंपरोपनिधा । उनमेंसे अनंतरोपनिधा की अपेक्षा एक पुलविमें या एक शरीरमें प्रथम समयमें बहुत जीव उत्पन्न होते हैं। दूसरे समयमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे असंख्यातगुण हीन होते हैं । तीसरे समयमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे असंख्यातगुणेहीन होते हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रथम कांडकके अन्तिम समय तक जानना चाहिए । उसके बाद आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालका अंतर होता है । उसके बाद दूसरे कांडकके प्रथम समयमें जो जीव उत्पन्न होते हैं वे प्रथम कांडकके अंतिम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंसे असंख्यातगुणे हीन होते हैं । इस प्रकार दूसरे कांडकके अंतिम समय तक निरन्तर क्रमसे ले जाना चाहिए । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण

* अ० का०प्रत्योः ' वक्कमणं जीवाण ' इति पाठः । * ता० प्रतौ ' जावुक्कस्सकाल– ' इति पाठः । ♠ ता० प्रतौ ' जीवा असंखेज्जगुणहीणा ' इति पाठः । * ता० प्रतौ ' वक्कमंति (त) जीवा ' इति पाठः । (?) ता० प्रतौ ' वक्कमदि (मंत) जीवेहिंतो ' अ० का० प्रत्योः ' वक्कमिदिजीवेहिंतो ' इति पाठः ।

विभागमेत्तवक्कमणकंडयाणमणंतरोवणिधा वत्तव्वा। भागहारो सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो वक्कमंतजीवपमाणुप्पायणे होदि। परंपरोवणिधा णत्थि*। कुदो ? समयं पडि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए जीवाणं वक्कमणुवलंभादो।

अप्पाबहुअं दुविहं-- अद्धाअप्पाबहुअं चेव जीवअप्पाबहुअं चेव ॥ ५८७ ॥

एवमप्पाबहुअं दुविहं चेव होदि, तदियादीणमसंभवादो।

अद्धाअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवो सांतरसमए वक्कमण-कालो ॥ ५८८ ॥

को सांतरसमए - वक्कमणकालो णाम ? पढमवक्कमणकंडयकालं मोत्तूण बिदियादिवक्कमणकंडयाणं सयलकालकलावो।

णिरंतरसमए वक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ॥ ५८९ ॥

को णिरंतरसमए वक्कमणकालो ? पढमवक्कमण✡कंडयद्धाणं, तत्थंतराभावादो। को गुण०? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

उपक्रमण काण्डकोंकी अनन्तरोपनिधा कहनी चाहिए। सर्वत्र उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण उत्पन्न करनेके लिए भागहार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। परंपरोपनिधा नहीं है, क्योंकि, प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे हीन श्रेणिरूपसे जीवोंकी उत्पत्ति उपलब्ध होती है।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है- अद्धाअल्पबहुत्व और जीव अल्पबहुत्व। ५७८।

इस प्रकार अल्पबहुत्व दो प्रकारका ही होता है, क्योंकि, तृतीय आदिका अभाव है।

अद्धाअल्पबहुत्वकी अपेक्षा सांतर समयमें उपक्रमणकाल सबसे स्तोक है।५८८।

शंका-- सान्तर समयमें उपक्रमणकाल किसे कहते हैं ?

समाधान--(प्रथम उपक्रमण काण्डकके कालको छोड़कर द्वितीय आदि उपक्रमणकाण्डकोंके समस्त कालकलापको सान्तर समयमें उपक्रमणकाल कहते हैं।)

निरन्तर समयमें उपक्रमणकाल असंख्यातगुणा है। ५८९।

शंका-- निरन्तर समयमें उपक्रमण काल किसे कहते हैं ?

समाधान--(प्रथम उपक्रमण काण्डकके कालको निरन्तर समयमें उपक्रमणकाल कहते हैं क्योंकि, वहां पर अन्तरका अभाव है।)

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

---

* अ० का० प्रत्योः 'अत्थि' इति पाठः। ✡ अ० का० प्रत्योः 'सांतरसमयवक्कमणकालो' इति पाठः। ✡ प्रतिषु 'वक्कमणकालो णाम ? पढमवक्कमणकालो णाम पढमवक्कमण-' इति पाठः।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सांतरणिरंतरसमए वक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥ ५९० ॥

केत्तियमेत्तेण ? बिदियादिवक्कमणकंदयकालमेत्तेण । एदेण सुत्तेण सूचिद-विसेसप्पाबहुअं वत्तइस्सामो ।

सव्वत्थोवो सांतरसमयवक्कमणकालविसेसो ॥ ५९१ ॥

उक्कस्ससांतरउवक्कमणकालम्मि जहण्णसांतरउवक्कमणकाले सोहिदे जो सुद्धसेसो सो सांतरसमयवक्कमणकालविसेसो णाम । सो थोवो होदि ।

णिरंतरसमयवक्कमण[ऍ]कालविसेसो असंखेज्जगुणो ॥ ५९२ ॥

पढमतणवक्कमणकंदयं णिरंतरसमयवक्कमणकालो णाम । सो जहण्णो वि अत्थि उक्कस्सो वि । जहण्णकाले उक्कस्सकालादो[*] सोहिदे णिरंतरसमयवक्क-मणकालविसेसो होदि । सो पुव्विल्लविसेसादो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ॥ ५९३ ॥

केत्तियमेत्तेण? सांतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण । बिदियादिवक्कमणकंदयाण-मुक्कस्सकालम्मि समुदिदम्मि तेसिं चेव जहण्णकालसमूहे सोहिदे सुद्धसेसो वक्कमण-

---

सान्तरनिरन्तर समयमें उपक्रमणकाल विशेष अधिक है ॥ ५९० ॥

कितना अधिक है ? द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंका जितना काल है उतना अधिक है । अब इस सूत्र द्वारा सूचित होनेवाले विशेष अल्पबहुत्वको बतलाते हैं--

सान्तर समयमें उपक्रमण कालविशेष सबसे स्तोक है । ५९१ ।

उत्कृष्ट सान्तर उपक्रमण कालमेंसे जघन्य सान्तर उपक्रमण कालको कम कर देने पर जो शेष रहता है उसे सान्तर समय सम्बन्धी उपक्रमण कालविशेष कहते हैं । वह स्तोक है ।

निरन्तर समयमें उपक्रमण कालविशेष असंख्यातगुणा है । ५९२ ।

प्रथमतन उपक्रमणकाण्डकका नाम निरन्तर समय उपक्रमण काल है । वह जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । उत्कृष्ट कालमेंसे जघन्य कालके कम करने पर निरन्तर समय उपक्रमणकाल विशेष होता है । वह पहलेके विशेषसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सांतर-निरन्तर उपक्रमण कालविशेष विशेष अधिक है । ५९३ ।

कितना अधिक है ? सान्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है । द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंके समुदित उत्कृष्ट कालमेंसे जघन्य काल समूहके कम कर देने

[ऍ] ता० का० प्रत्योः ' णिरंतरवक्कमण-- ' इति पाठः ।

[*] अ० का० प्रत्योः ' जहण्णेव उक्कस्सकालादो ' इति पाठः ।

कालविसेसो णाम । तत्तियमेत्तेण अहियमिदि भणिदं होदि ।

जहण्णपदेण सव्वत्थोवो सांतरवक्कमण॑सव्वजहण्ण कालो ॥५९४॥

बिदियादिवक्कमणकंडयाणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं सव्वजहण्ण—कालकलावो सांतरवक्कमणजहण्णकालो णाम । सो थोवो ।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ सांतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥ ५९५ ॥

बिदियादिवक्कमणकंडयाणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणं उक्कस्सकाल—कलावो उक्कस्सगो सांतरवक्कमणकालो णाम । सो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

जहण्णपदेण जहण्णगो णिरंतरवक्कमणकालो असंखेज्ज—गुणो ॥ ५९६ ॥

पढमवक्कमणकंडयकालो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जो जहण्णओ णिरंतरवक्कमणकालो सो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

पर जो शेष रहता है वह उपक्रमण कालविशेष है । उतना अधिक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा सांतर उपक्रमण सबसें जघन्य काल सबसे स्तोक है ।५९४।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंके सबसे जघन्य कालकलापकी सान्तर उपक्रमण जघन्य काल संज्ञा है । वह स्तोक है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट सांतर समय उपक्रमणकाल विशेष अधिक है ।५९५।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण द्वितीय आदि उपक्रमण काण्डकोंके उत्कृष्ट काल-कलापकी उत्कृष्ट सान्तर उपक्रमण काल संज्ञा है । वह विशेष अधिक है । कितना अधिक है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा जघन्य निरन्तर उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है ।५९६।

प्रथम उपक्रमण काण्डक काल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । उसमें जो जघन्य निरन्तर उपक्रमण काल है वह असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

॑ ता० प्रतौ ' सांतर (समय) वक्कमण—' इति पाठः ।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ णिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ । ५९७ ।

केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

जहण्णपदेण* सांतरणिरंतरवक्कमणसव्वजहण्णकालो विसेसाहिओ । ५९८ ।

केत्तियमेत्तेण ? णिरंतरवक्कमणकालविसेसेण परिहीणजहण्णसांतरवक्कमणकालमेत्तेण । सो पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो विसेसो होदि ।

उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ।५९९।

केत्तियमेत्तेण ? जहण्णवक्कमणकाले उक्कस्सवक्कमणकालम्मि सोहिदे सुद्धसेसमेत्तेण ।

सव्वत्थोवो सांतरवक्कमणकालविसेसो ॥ ६०० ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

विदयकंडयप्पहुडि जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तवक्कमणकंडयाणं कालकलावो सांतरवक्कमणकालो णाम । सो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जहण्णे* उक्कस्सादो सोहिदे सुद्धसेसो सांतरवक्कमणकालविसेसो णाम । सो थोवो ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा निरन्तर उपक्रमण काल विशेष अधिक है । ५९७ ।

कितना अधिक है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमण सबसे जघन्य काल विशेष अधिक है ॥ ५९८ ॥

कितना अधिक है ? निरन्तर उपक्रमण काल विशेषसे हीन जघन्य सान्तर उपक्रमण कालका जितना प्रमाण है उतना अधिक है । और वह विशेष आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमणकाल विशेष अधिक है । ५९९ ।

कितना अधिक है । उत्कृष्ट उपक्रमणकालमेंसे जघन्य उपक्रमणकालके कम करने पर जो शेष रहे उतना अधिक है ।

सान्तर उपक्रमणकालविशेष सबसे स्तोक है । ६०० ।

द्वितीय काण्डकसे लेकर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण उपक्रमण काण्डकोंके काल-कलापको सान्तर उपक्रमण काल कहते हैं । वह जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है । वहाँ उत्कृष्टमें से जघन्यको कम करने पर जो शेष रहे वह सान्तर उपक्रमण कालविशेष कहलाता है । वह स्तोक है ।

---

* अ० का० प्रत्योः ' जहण्णपदेण ' इति पाठो नास्ति । * अ० प्रतौ ' जहण्णेण ' इति पाठः ।

णिरंतरवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ॥ ६०१ ॥

पढमवक्कमणकंडयजहण्णकाले तस्सेव उक्कस्सकालम्हि सोहिदे सेसो णिरंतरवक्कमणकालविसेसो णाम । सो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ॥ ६०२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सांतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण ।

जहण्णपदेण सांतरसमयवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो । ६०३ ।

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

उक्कस्सपदेण सांतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ । ६०४ ।

केत्तियमेत्तेण ? सांतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण ।

जहण्णपदेण णिरंतरसमयवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ।६०५।

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

उक्कस्सपदेण* णिरंतरसमयवक्कमणकालो विसेसाहिओ ।६०६।

केत्तियमेत्तेण ? णिरंतरवक्कमणकालविसेसमेत्तेण ।

निरन्तर उपक्रमण कालविशेष असंख्यातगुणा है ॥ ६०१ ॥

प्रथम उपक्रमण काण्डकके जघन्य कालको उसीके उत्कृष्ट कालमेंसे घटा देने पर जो शेष रहे वह निरन्तर उपक्रमण काल विशेष कहलाता है। वह असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

सांतर-निरन्तर उपक्रमण कालविशेष विशेष अधिक है । ६०२ ॥

कितना अधिक है ? सान्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा सान्तर समय उपक्रमणकाल असंख्यातगुणा है । ६०३ ।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा सान्तर समय उपक्रमण काल विशेष अधिक है ।६०४।

कितना अधिक है ? सांतर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

जघन्य पदकी अपेक्षा निरन्तर समय उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है ।६०५।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा निरन्तर समय उपक्रमण काल विशेष अधिक है ।६०६।

कितना अधिक है ? निरन्तर उपक्रमण कालविशेषका जितना प्रमाण है उतना अधिक है ।

---

* अ० प्रतौ ' उक्कस्सपदे ' इति पाठः ।

जहण्णपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ॥६०७॥

सुगमं ।

उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्कमणकालो विसेसाहिओ ।६०८।

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सयं वक्कमणंतरमसंखेज्जगुणं ॥ ६०९ ॥

एगपुलवियाए सरीरे वा उप्पज्जमाणजीवाणं आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्तंतरकंडएसु जमुक्कस्सं वक्कमणंतरं तमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

अवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ॥ ६१० ॥

को अवक्कमणकालो ? अंतरं । आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तजहण्णंतर-कंडएसुꝺ उक्कस्संतरकंडएहिंतो सोहिदेसु सुद्धसेसवक्कमणंतरविसेसो । तमावलियाए असंखेज्जदिभागगुणं त्ति भणिदं होदि ।

पबंधणकालविसेसो विसेसाहिओ ॥ ६११ ॥

जघन्य पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमण काल विशेष अधिक है । ६०७ ।

यह सूत्र सुगम है ।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा सान्तर-निरन्तर उपक्रमण काल विशेष अधिक है । ६०८ ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्ट उपक्रमण अंतर असंख्यातगुणा है । ६०९ ।

एक पुलवि या एक शरीरमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके जो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अन्तरकाण्डक होते हैं उनमें जो उत्कृष्ट उत्पन्न होनेका अन्तर है वह असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अप्रक्रमण कालविशेष असंख्यातगुणा है । ६१० ।

शंका-- अप्रक्रमणकाल किसे कहते हैं ?

समाधान- अन्तरको अप्रक्रमणकाल कहते हैं ।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जघन्य अन्तर काण्डकोंको उत्कृष्ट अन्तर काण्डकोंमेंसे घटा देनेपर शेष अप्रक्रमण अन्तर विशेष होता है । वह आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण गुणा है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

प्रबन्धनकालविशेष विशेष अधिक है । ६११ ।

ꝺ अ० प्रतौ ' असंखे० भागमेत्तकालाणं जहण्णंतरकंदएसु ' इति पाठः]

अवक्कमणावक्कमणकालाणं समासो पबंधणकालो णाम। सो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि। तत्थ जहण्णो उक्कस्सादो सोहिदे पबंधणकालविसेसो होदि। सो विसेसाहियाओ। केत्तियमेत्तेण ? जहण्णवक्कमणकाले उक्कस्सवक्कमणकालम्मि सोहिदे सुद्धसेसमेत्तेण। आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तेण त्ति भणिदं होदि।

जहण्णपदेण जहण्णओ अवक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ।।६१२।।

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

जहण्णपदेण जहण्णओ पबंधणकालो विसेसाहिओ ।। ६१३ ।।

केत्तियमेत्तेण? जहण्णवक्कमणकालमेत्तेण।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ अवक्कमणकालो विसेसाहिओ।।६१४।।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? जहण्णवक्कमणकालेणूणअवक्कमणकालविसेसमेत्तो।

उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ पबंधणकालो* विसेसाहिओ ।।६१५।।

केत्तियमेत्तेण ? उक्कस्सवक्कमणकालमेत्तेण।

एवं कालअप्पाबहुअं समत्तं।

उत्पत्ति काल (प्रक्रमण) और अप्रक्रमण कालोंका समुदाय प्रबन्धनकाल है। वह जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। वहाँ उत्कृष्टमें से जघन्यको कमकर देनेपर प्रबन्धनकालविशेष होता है। वह विशेष अधिक है। कितना अधिक है ? उत्कृष्ट प्रक्रमण कालमेंसे जघन्य प्रक्रमणकालको घटा देनेपर जो शेष रहे उतना अधिक है। वह आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

जघन्य पदकी अपेक्षा जघन्य अप्रक्रमण काल असंख्यातगुणा है ।। ६१२ ।।

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है।

जघन्य पदकी अपेक्षा जघन्य प्रबन्धनकाल विशेष अधिक है ।। ६१३ ।।

कितना अधिक है ? जघन्य प्रक्रमणकालका जितना प्रमाण है उतना अधिक है।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट अप्रमणकाल विशेष अधिक है ।। ६१४ ।।

विशेषका प्रमाण कितना है ? जघन्य उपक्रमकालसे न्यून अप्रक्रमणकाल विशेषका जितना प्रमाण है उतना विशेषका प्रमाण है।

उत्कृष्ट पदकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रबन्धनकाल विशेष अधिक है ।। ६१५ ।।

कितना अधिक है ? उत्कृष्ट प्रक्रमणकालका जितना प्रमाण है उतना अधिक है।

इसप्रकार काल अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

---

* ता० प्रतौ ' उक्कस्सपबंधणकालो ' इति पाठः।

जीवअप्पाबहुए त्ति ॥ ६१६ ॥

जं जीवअप्पाबहुअं भणिदं तमेगकंडयं णाणाकंडयाणि च अस्सिऊण वत्तइस्सामो । तत्थ ताव एगकंडयमस्सिऊण वुच्चदे—

सव्वत्थोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा ॥६१७॥

पढमकंडयस्स चरिमसमए जे उप्पज्जमाणा जीवा ते अणंता होदूण थोवा होंति, असंखेज्जगुणहीणकमेण पढमसमयप्पहुडि णिरंतरमुप्पत्तीदो ।

अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।६१८।

पढमकंडयस्स पढम-चरिमसमएसु उप्पण्णजीवे मोत्तूण सेसमज्झिमसमएसु वक्कमिदजीवा अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमिदजीवा होंति । ते असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥६१९॥

केत्तियमेत्तेण ? पढमकंडयस्स चरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

पढमसमए वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ॥६२०॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥६२१॥

जीव अल्पबहुत्वका प्रकरण है ॥६१६॥

जो जीव अल्पबहुत्व कहा है उसे एककाण्डक और नाना काण्डकोंका आश्रय लेकर बतलावेंगे । उनमेंसे पहले एक काण्डकका आश्रय लेकर कहते हैं–

अन्तिम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव सबसे थोडे हैं ॥६१७॥

प्रथम काण्डकके अन्तिम समयमें जो उत्पन्न हुए जीव हैं वे अनन्त होकर भी स्तोक हैं, क्योंकि, प्रथम समयसे लेकर वे निरन्तर असंख्यातगुणे हीन क्रमसे उत्पन्न होते हैं ।

अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥६१८॥

प्रथम काण्डकके प्रथम समय और अन्तिम समयमें उत्पन्न जीवोंको छोड कर शेष बीचके समयोंमें उत्पन्न हुए जीव अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न हुए जीव होते हैं । वे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अप्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥६१९॥

कितने अधिक हैं ? प्रथम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥६२०॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥६२१॥

केत्तियमेत्तेण ? अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

सव्वेसु समएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥ ६२२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? चरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण । एवं पढमकंडयजीवअप्पाबहुअं परूविदं । जहा पढमकंडयस्स एवं जीवअप्पाबहुअं परूविदं तहा सेससव्वकंडयाणं पि परूवेदव्वं, विसेसाभावादो । संपहि णाणाकंडयजीवअप्पाबहुअं वत्तइस्सामो । तं जहा--

सव्वत्थोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा* ॥ ६२३ ॥

आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तसांतरवक्कमणकंडयाणं चरिमकंडयचरिमसमए वक्कमिदजीवा थोवा ।

अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।६२४।

पढमकंडयपढमसमए चरिमकंडयचरिमसमए वक्कमिदजीवे मोत्तूण सेसआवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तकंडयाणं जीवा अपढम-अचरिमसमएसु वक्कंता णाम । ते असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥ ६२५ ॥

कितने अधिक हैं ? अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

सब समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६२२ ॥

कितने अधिक हैं ? अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं । इस प्रकार प्रथम काण्डकसम्बन्धी जीव अल्पबहुत्वका कथन किया । जिस प्रकार प्रथमकांडकका यह जीव अल्पबहुत्व कहा है इसी प्रकार शेष सब कांडकोंके जीव अल्पबहुत्वोंका भी कथन करना चाहिए । अब नाना कांडकसंबंधी जीव अल्पबहुत्वको बतलावेंगे । यथा--

अन्तिम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव सबसे थोडे हैं ॥ ६२३ ॥

सान्तर उपक्रमणकाण्डक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । उनके अन्तिम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीव थोडे हैं ।

अप्रथम-अचरम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६२४ ॥

प्रथम काण्डकके प्रथम समयमें और अन्तिम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंको छोडकर शेष आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काण्डकोंके जीव अप्रथम-अचरम-समयोंमें उत्पन्न होनेवाले कहलाते हैं । वे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अप्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६२५ ॥

---

* अ० प्रतौ ' जीवा ' इति स्थाने ' जीवा विसेसाहिया ' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तेण चरिमकंडयचरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

पढमसमए[1] वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ॥ ६२६ ॥

को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ॥ ६२७ ॥

केत्तियमेत्तेण ? अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

सव्वेसु समएसु वक्कमिदजीवा विसेसाहिया ॥ ६२८ ॥

केत्तियमेत्तेण ? चरिमसमए वक्कमिदजीवमेत्तेण ।

एवं जीवअप्पाबहुअं समत्तं ।

सव्वो बादरणिगोदो पज्जत्तो वा वामिस्सो वा ॥ ६२९ ॥

खंधंडरावासपुलवियाओ अस्सिदूण एवं सुत्तं परूविदं ण सरीरं, एगम्मि सरीरे पज्जत्तापज्जत्तजीवाणमवट्ठाणविरोहादो । किमट्ठमिदं सुत्तमागदं ? खंधंडरावासपुलवियासु किं बादर-सुहुमणिगोदजीवा सुद्धा पज्जत्ता चेव होंति आहो अपज्जत्ता चेव किं वामिस्सा त्ति पुच्छिदे एवं होंति त्ति जाणावणट्ठं इदं सुत्तमागदं । सव्वो बादरणिगोदो

कितने अधिक हैं ? अन्तिम काण्डकके अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

प्रथम समयमें उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६२६ ॥

गुणकार क्या है ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

अचरम समयोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६२७ ॥

कितने अधिक हैं ? अप्रथम-अचरम समयोंमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

सब समयोंमें उत्पन्न हुए जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६२८ ॥

कितने अधिक हैं ? अन्तिम समयमें उत्पन्न हुए जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं ।

इस प्रकार जीव अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

सब बादर निगोद पर्याप्त हैं या मिश्ररूप हैं ॥ ६२९ ॥

स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंका आश्रय लेकर यह सूत्र कहा गया है, शरीरोंका आश्रय लेकर नहीं कहा गया है, क्योंकि, एक शरीरमें पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका अवस्थान होनेमें विरोध है ।

शंका-- यह सूत्र किसलिए आया है ?

समाधान-- स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंमें क्या बादर और सूक्ष्म निगोद जीव केवल पर्याप्त ही होते हैं या अपर्याप्त ही होते हैं या क्या मिश्र होते हैं ऐसा पूछनेपर इस प्रकार होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह सूत्र आया है ।

---

[1] अ० प्रतौ 'पढमए' इति पाठः ।

पज्जत्तो वा होदि । कुदो ? बादरणिगोदपज्जत्तेहि सह खंधंडरावासपुलवियासु उप्पण्णबादरणिगोदअणंतापज्जत्तएसु अंतोमुहुत्तेण कालेण णिस्सेसं मुदेसु सुद्धाणं बादरणिगोदपज्जत्ताणं चेव तत्थावट्ठाणदंसणादो । किमट्ठमपज्जत्ताणं पुव्वं चेव सव्वेसिं मरणं होदि । पज्जत्ताउआदो अपज्जत्ताउअस्स थोवत्तुवलंभादो अपुव्वाणं बादरणिगोदाणं उप्पत्तीए विणट्ठजोगत्तादो च । एत्तो हेट्ठा पुण बादरणिगोदो वामिस्सो होदि, खंधंडरावासपुलवियासु बादरणिगोदपज्जत्तापज्जत्ताणं अणंताणं* सहावट्ठाणदंसणादो ।

सुहुमणिगोदवग्गणाए पुण णियमा वामिस्सो* ॥ ६३० ॥

सुहुमणिगोदवग्गणाए पज्जत्तापज्जत्ता च जेण सव्वकालं संभवंति तेण सा णियमा पज्जत्तापज्जत्तजीवेहि वामिस्सा होदि । किमट्ठं सव्वकालं संभवंति ? सुहुमणिगोदपज्जत्तापज्जत्ताणं वक्कमणपदेस-कालणियमाभावादो । एत्थ पदेसे एत्तियं चेव कालमुप्पत्ती परदो ण उप्पज्जंति त्ति जेण णियमो णत्थि# तेण सा सव्वकाले वामिस्सा त्ति भणिदं होदि । ' वक्कमदि जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं ' एदस्स गाहापच्छि-

———————— मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सब बादर निगोद जीव पर्याप्त होते हैं, क्योंकि, बादर निगोद पर्याप्तकोंके साथ स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंमें उत्पन्न हुए अनन्त बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर सबके मर जानेपर वहाँ केवल बादर निगोद पर्याप्तकोंका ही अवस्थान देखा जाता है ।

शंका— सब अपर्याप्तकोंका पहले ही मरण क्यों होता है ?

समाधान— क्योंकि, पर्याप्तकोंकी आयुसे अपर्याप्तकोंकी आयु स्तोक उपलब्ध होती है और अपूर्व बादर निगोदोंकी उत्पत्तिके कारणभूत योगका नाश हो जाता है ।

परन्तु इससे पूर्व बादर निगोद व्यामिश्र होता है, क्योंकि, स्कंध, अण्डर, आवास और पुलवियोंमें अनंत बादर निगोद पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका एक साथ अवस्थान देखा जाता है ।

परन्तु सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें नियमसे मिश्ररूप है ॥ ६३० ॥

यतः सूक्ष्मनिगोदवर्गणामें पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्वदा सम्भव हैं, इसलिए वह नियमसे पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंसे मिश्ररूप होती है ।

शंका— उसमें सर्वकाल किसलिए सम्भव हैं ?

समाधान— क्योंकि, सूक्ष्म निगोद पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंकी उत्पत्तिके प्रदेश और कालका कोई नियम नहीं है । इस प्रदेशमें इतनी ही कालतक उत्पत्ति होती है आगे उत्पत्ति नहीं होती इस प्रकारका चूंकि नियम नहीं है इसलिए यह सूक्ष्मनिगोदवर्गणा सर्वदा मिश्ररूप होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

इस प्रकार वक्कमदि ' जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं ' गाथाके इस पश्चिमार्धके अर्थका कथन

---

* ता० प्रतौ '–पज्जत्तापज्जत्ताणं (पज्जत्ताणं) अणंताणं ' अ० का० प्रत्योः ' पज्जत्तापज्जत्ताणं पज्जत्ताणं ' इति पाठः । * ता० प्रतौ ' वामिस्सा ' इति पाठः । # अ०का० प्रत्योः ' अत्थि ' इति पाठः ।

मद्धस्स अत्थपरूवणा समत्ता। ' जत्थेव मरदि जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं ' एदस्स गाहापढमद्धस्स अत्थपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि —

जो णिगोदो जहण्णएण वक्कमणकालेण वक्कमंतो जहण्णएण पबंधणकालेण पबद्धो तेसिं बादरणिगोदाणं तहा पबद्धाणं मरण-वक्कमेण णिग्गमो होदि ॥ ६३१ ॥

बादरणिगोदाणं वक्कमणकालो उप्पत्तिकालो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जो णिगोदो जहण्णेण उप्पत्तिकालेण उप्पज्जमाणो तस्स पबंधणकालो जहण्णओ वि अत्थि उक्कस्सओ वि अत्थि । तत्थ जहण्णएण पबंधणकालेण जो पबद्धो । जो णिगोदो जहण्णेण वक्कमणकालेण वक्कममाणो जहण्णेण पबंधणकालेण पबद्धो तस्स मरणक्कमं परूवेमि त्ति भणिदं होदि । अणंताणं णिगोदाणं कथमेगव-यणेण णिद्देसो ? ण, सरीरदुवारेण तेसिमेयत्तमत्थि त्ति एगवयणेण णिद्देसाविरो-हादो । को पबंधणकालो णाम? प्रबध्नन्ति एकत्वं गच्छन्ति अस्मिन्निति प्रबन्धनः । प्रबन्धनश्चासौ कालश्च प्रबन्धनकालः । तेण पबंधणकालेण पबद्धाणं बादरणिगो-दाणं मरणक्कमेण णिग्गमो होदि । केरिसाणं बादरणिगोदाणं त्ति भणिदे ' तहा

किया। अब इसी गाथाके ' जत्थेव मरदि जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं ' इस पूर्वार्धके अर्थका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

जो निगोद जघन्य उत्पत्तिकालके द्वारा उत्पन्न होकर जघन्य प्रबन्धनकालके द्वारा बन्धको प्राप्त हुआ है उन बादर निगोदोंका उस प्रकारसे बन्ध होनेपर मरणके क्रमानुसार निर्गम होता है। ६३१।

बादर निगोदोंका प्रक्रमणकाल अर्थात् उत्पत्तिकाल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। वहाँ जो निगोद जघन्य उत्पत्ति कालके द्वारा उत्पन्न होता है उसका प्रबन्धनकाल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उनमेंसे जघन्य प्रबन्धनकालके द्वारा जो बन्धको प्राप्त हुआ अर्थात् जो निगोद जघन्य उत्पत्तिकालके द्वारा उत्पन्न होकर जघन्य प्रबन्धन कालके द्वारा बन्धको प्राप्त होता है उसके मरणके क्रमका कथन करते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका— अनन्त निगोदोंका एक वचनके द्वारा निर्देश कैसे किया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, शरीर द्वारा उनका एकत्व है इसलिए एक वचन द्वारा निर्देश करनेमें विरोध नहीं है।

शंका— प्रबन्धनकाल किसे कहते हैं ?

समाधान— बंधते हैं अर्थात् एकत्वको प्राप्त होते हैं जिसमें उसे प्रबन्धन कहते हैं। तथा प्रबन्धनरूप जो काल वह प्रबन्धनकाल कहलाता है।

उस प्रबन्धनकालके द्वारा प्रबद्ध हुए बादर निगोदोंका मरणके क्रमसे निर्गम होता है। किस प्रकारके बादर निगोदोंका ऐसा पूछनेपर कहा है— ' तहा पबद्धाणं ' अर्थात् उस पहले कहे गये

पबद्धाणं ' तेण पुव्वमणिदपयारेण असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए पबद्धाणं समुप्पण्णाण-
[illegible] असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए णिग्गमो णत्थि किंतु मरणक्कमेण णिग्गमो
होदि त्ति भणिदं होदि । कत्तो तेसिं णिग्गमो ? एगसरीरादो । जहण्णसंचयकालेण
संचिदाणं अण्णोण्णाणुगयभावेण जहण्णकालमवट्ठिदाणं मरणक्कमेण णिग्गमो होदि ।
उप्पत्तिकमेण ण होदि त्ति किमट्ठं वुच्चदे ? ण, एत्थ जहण्णक्कमणकालेण संचि-
दाणं जहण्णपबंधणकालेण पबद्धाणं चेव मरणक्कमेण णिग्गमो होदि त्ति णियमा-
भावादो । किंतु जहण्णक्कमण-जहण्णपबंधणकालवयणं देसामासियं तेण सव्वुक्क-
मणकालेसु संचिदाणं सव्वपबंधणकालेसु पबद्धाणं उप्पत्तिकमेण णिग्गमो ण होदि* ।
किंतु मरणक्कमेण होदि त्ति पत्तेयं पत्तेयं परूवणा कायव्वा । एक्कम्हि सरीरे
उप्पज्जमाणबादरणिगोदा किमक्कमेण उप्पज्जंति आहो कमेण । जदि अक्कमेण
उप्पज्जंति तो अक्कमेणेव मरणेण वि होदव्वं, एक्कम्हि मरंते संते अण्णेसिं मरणाभावे
साहारणत्तविरोहादो । अह जइ♣ कमेण असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए उप्पज्जंति तो
मरणं पि जवमज्झागारेण ण होदि, साहारणत्तस्स विणासप्पसंगादो त्ति । एत्थ परिहारो

प्रकारके अनुसार असंख्यातगुणी हीन श्रेणिरूपसे बँधे हुए और उत्पन्न हुए निगोदोंका उत्पत्तिके क्रमसे अर्थात् असंख्यातगुणी हीन श्रेणिरूपसे निर्गम नहीं होता किन्तु मरणके क्रमसे निर्गम होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका-- किससे उनका निर्गम होता है ?

समाधान-- एक शरीरसे ।

शंका-- जघन्य संचयकाल द्वारा संचयको प्राप्त हुए और परस्पर अनुगतरूपसे जघन्य कालतक अवस्थित हुए जीवोंका मरणके क्रमसे निर्गम होता है, उत्पत्तिके क्रमसे नहीं होता है यह किसलिए कहते हैं ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, यहांपर जघन्य उत्पत्तिकालके द्वारा संचित हुए और जघन्य प्रबन्धनकालके द्वारा बन्धको प्राप्त हुए जीवोंका ही मरणके क्रमसे निर्गम होता है इस प्रकारका नियम नहीं है । किन्तु जघन्य उत्पत्तिकाल और जघन्य प्रबन्धनकाल वचन देशामर्षक है । इससे सब उत्पत्ति कालोंमें संचित हुए और सब प्रबन्धन कालोंमें बन्धको प्राप्त हुए जीवोंका उत्पत्तिके क्रमसे निर्गम नहीं होता है, किन्तु मरणके क्रमसे निर्गम होता है, इस प्रकार अलग अलग प्ररूपणा करनी चाहिए ।

शंका-- एक शरीरमें उत्पन्न होनेवाले बादर निगोद जीव क्या अक्रमसे उत्पन्न होते हैं या क्रमसे ? यदि अक्रमसे उत्पन्न होते हैं तो अक्रमसे ही मरण होना चाहिए, क्योंकि, एकके मरनेपर दूसरों का मरण न होनेपर उनके साधारण होनेमें विरोध आता है । और यदि क्रमसे असंख्यातगुणी हीन श्रेणिरूपसे उत्पन्न होते हैं तो मरण भी यवमध्यके आकाररूपसे नहीं हो सकता है, क्योंकि, साधारणपनेके विनाशका प्रसंग आता है ?

---

* मप्रतिपाठोऽयम् । अ० प्रतौ ' णिग्गमो (ण) होदि ' अ० का० प्रत्योः ' णिग्गमो होदि ' इति पाठः] ♣ मप्रतिपाठोऽयम्] प्रतिषु ' अइ जइ ' इति पाठः ।

वुच्चदे– असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए कमेण वि उप्पज्जंति अक्कमेण वि अणंता जीवा एगसमए उप्पज्जंति । ण च साहारणत्तं फिट्टदि ।

साहारणआहारो साहारणआणपाणगहणं च ।
साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणियं ॥ २२ ॥

एदीए गाहाए भणिदलक्खणाणमभावे साधारणत्तविणासादो । तदो एगसरीरुप्पण्णाणं मरणक्कमेण णिग्गमो होदि त्ति एवं पि ण विरुज्झदे । ण च एगसरीरुप्पण्णा सव्वे समाणाउआ चेव होंति त्ति णियमो अत्थि जेण अक्कमेण तेसिं मरणं होज्ज । तम्हा एगसरीरट्ठिदाणं पि मरणजवमज्झं समिलाजवमज्झं च होदि त्ति घेत्तव्वं । संपहि सो मरणक्कम्मो दुविहो जवमज्झकमेण अजवमज्झकमेण चेदि । तत्थ जवमज्झकमेण मरणविहाणमुवरि भणिस्सदि । अजवमज्झकमेण जो णिग्गमो तप्परूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

सव्वुक्कस्सियाए गुणसेडीए मरणेण मदाणं सव्वचिरेण कालेण णिल्लेविज्जमाणाणं तेसिं चरिमसमए मदावसिट्ठाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३२ ॥

मरणगुणसेडी जहण्णा वि अत्थि उक्कस्सा वि अत्थि । तत्थ जहण्णगुणसेडि–

समाधान–– यहां इस शंका का परिहार करते हैं–– असंख्यातगुणी हीन श्रेणिके क्रमसे भी उत्पन्न होते हैं और अक्रमसे भी अनन्त जीव एक समयमें उत्पन्न होते हैं। और साधारणपना भी नष्ट नहीं होता है, क्योंकि––

साधारण आहार और साधारण श्वास-उच्छ्वासका ग्रहण यह साधारण जीवोंका साधारण लक्षण कहा है ॥ २२ ॥

इस प्रकार इस गाथा द्वारा कहे गये लक्षणोंके अभावमें ही साधारणपनेका विनाश होता है। इसलिए एक शरीरमें उत्पन्न हुए निगोदोंका मरणके क्रमसे निर्गम होता है इस प्रकार यह कथन भी विरोधको नहीं प्राप्त होता। और एक शरीरमें उत्पन्न हुए सब समान आयुवाले ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है, जिससे अक्रमसे उनका मरण होवे, इसलिए एक शरीरमें स्थित हुए निगोदोंका मरण यवमध्य और शमिलायवमध्य है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। वह मरण दो प्रकारका है– यवमध्यके क्रमसे और अयवमध्यके क्रमसे। उनमेंसे यवमध्यके क्रमसे मरणविधिका कथन आगे करेंगे। अयवमध्यके क्रमसे जो निर्गम है उसका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं–––

सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणि द्वारा मरणसे मरे हुए तथा सबसे दीर्घ काल द्वारा निर्लेप्यमान होनेवाले उन जीवोंके अन्तिम समयमें मृत होनेसे बचे हुए निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ॥ ६३२ ॥

मरणगुणश्रेणि जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उनमेंसे जघन्य गुणश्रेणिमरणका

मरणणिवारणट्ठं सव्वुक्कस्सियाए गुणसेडीए मरणं तेण मरणेण मदाणं ति भणिदं। णिल्लेवणकालो जहण्णओ वि उक्कस्सओ वि अत्थि। तत्थ जहण्णणिल्लेवणकाल-णिवारणट्ठं सव्वचिरेण कालेण णिल्लेविज्जमाणाणं ति भणिदं। तेसिं चरिमसमए मदावसिट्ठाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागो णिगोदाणं ति भणिदे खीणकसायचरिम-समए मदावसिट्ठाणं जीवाणं आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं पुलवियाणं पमाणं होदि त्ति भणिदं होदि। खीणकसायचरिमसमए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोद-सरीराणि होंति। तत्थ एक्केक्कम्हि सरीरे मदावसिट्ठजीवा अणंता भवंति। तेसि-माधारभूदपुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ होंति त्ति। एदेण जहण्ण-बादरणिगोदवग्गणापमाणपरूवणा कदा।

एत्थ चत्तारि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति-- परूवणा पमाणं सेडि अप्पाबहुअं चेदि। एदेहि चदुहि अणुयोगद्दाराणि खीणकसायकालब्भंतरे बज्झमाण*-थूहल्लयादिसु वा मरंतजीवाणं परूवणा कीरदे। तं जहा- अत्थि खीणकसायपढम-समए मदजीवा। बिदियसमए मदजीवा वि अत्थि। तदियसमए मरणंतजीवा वि अत्थि। एवं णेयव्वं जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। एवं परूवणा गदा।

खीणकसायपढमसमए मदजीवा केत्तिया? अणंता। बिदियसमए मदजीवा केत्तिया? अणंता। तदियसमए मदजीवा केत्तिया? अणंता। एवं णेयव्वं जाव खीण-

---

निवारण करनेके लिए सर्वोत्कृष्ट गुणश्रेणि द्वारा जो मरण है उस मरणसे मरे हुए जीवोंका ऐसा कहा है। निर्लेपनकाल जघन्य भी है और उत्कृष्ट भी है। उनमें से जघन्य निर्लेपनकाल[५०१] का निवारण करनेके लिए सबसे दीर्घ कालके द्वारा निर्लेप्यमान हुए जीवोंका ऐसा कहा है। 'तेसिं चरिमसमए मदावसिट्ठाणं आवलियाए असंखे० भागो णिगोदाणं' ऐसा कहने पर क्षीण-कषायके अन्तिम समयमें मरनेके बाद बचे हुए जीवोंमें निगोद अर्थात् पुलवियोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। क्षीणकषायके अन्तिम सम-यमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं। वहां एक एक शरीरमें मरनेके बाद बचे हुए जीव अनन्त होते हैं। तथा उनकी आधारभूत पुलवियां आवलिके असंख्यात भागप्रमाण होती हैं। इस द्वारा जघन्य बादर निगोद वर्गणाके प्रमाणकी प्ररूपणा की गई है।

यहां चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि और अल्पबहुत्व। इन चार अनुयोगद्वारोंका आश्रय लेकर क्षीणकषायकालके भीतर मरनेवाले अथवा थूवर और आर्द्रक आदिमें मरनेवाले जीवोंकी प्ररूपणा करते हैं। यथा– क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरे हुए जीव हैं। दूसरे समयमें मरे हुए जीव हैं और तिसरे समयमें मरनेवाले जीव हैं। इस प्रकार क्षीण-कषायके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिए। इस प्रकार प्ररूपणा समाप्त हुई।

क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरे हुए जीव कितने हैं? अनन्त हैं। दूसरे समयमें मरे हुए जीव कितने हैं? अनन्त हैं। तीसरे समयमें मरे हुए जीव कितने हैं? अनन्त हैं। इस प्रकार

---

* अ० का० प्रत्योः 'बज्झमाण–' इति पाठः।

कसायचरिमसमओ त्ति । एवं पमाणाणुगमो समत्तो ।

सेडिपरूवणा दुविहा– अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधा वुच्चदे । तं जहा खीणकसायपढमसमए मरंता जीवा थोवा । बिदियसमए मरंता जीवा विसेसाहिया । तदियसमए मरंता जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव आवलियपुधत्तं त्ति । विसेसो पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण होदि । तदणंतरउवरिमसमयप्पहुडि संखेज्जदिभागब्भहिया जाव विसेसाहियमरणचरिमसमओ त्ति । विसेसो पुण संखेज्जरूवपडिभागेण । तदो खीणकसायकालस्स असंखेज्जदिभागे आवलियाए असंखेज्जदिभागे सेसे गुणसेडिमरणं होदि । तदो विसेसाहियमरणचरिमसमए भवजीवेहिंतो गुणसेडिमरणपढमसमए मरंता जीवा असंखेज्जगुणा । को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । बिदियसमए मरंता जीवा असंखेज्जगुणा । एवमसंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा मरंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । के वि आइरिया जीवे मोत्तूण पुलवियाणमुवरि इमं परूवणं कुणंति तेसिं गुणगारपमाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो वि ण होदि । कुदो? आवलियाए असंखेज्जदिभागेसु जहण्णपरित्तासंखेज्जमेत्तेसु वि अण्णोण्णगुणिदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाणमुप्पत्तीदो । एवमणंतरोवणिधा समत्ता ।

क्षीणकषायके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिए । इस प्रकार प्रमाणानुगम समाप्त हुआ ।

श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकारकी है– अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा । उनमेंसे पहले अनन्तरोपनिधाका कथन करते हैं । यथा क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरनेवाले जीव स्तोक हैं । दूसरे समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । तीसरे समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार आवलिपृथक्त्वप्रमाण कालतक उत्तरोत्तर प्रत्येक समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक विशेष अधिक हैं । परन्तु विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागका भाग देनेसे प्राप्त होता है । आवलिपृथक्त्वके बाद अगले समयसे लेकर विशेष अधिकके क्रमसे मरनेवाले जीवोंके अन्तिम समयतक उत्तरोत्तर प्रत्येक समयमें संख्यातवें भाग अधिक संख्यातवें भाग अधिक जीव मरते हैं । यहाँ विशेषका प्रमाण संख्यातका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उतना है । अनन्तर क्षीणकषायके कालके असंख्यातवें भागप्रमाण अर्थात् आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण शेष रहनेपर गुणश्रेणिमरण होता है । अतः विशेष अधिक मरणके अन्तिम समयमें मरे हुए जीवोंसे गुणश्रेणि मरणके प्रथम समयमें मरनेवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । दूसरे समयमें मरनेवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं । इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समयके प्राप्त होनेतक प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे जीव मरते हैं । कितने ही आचार्य जीवोंको छोडकर पुलवियोंका अवलम्बन लेकर यह प्ररूपणा करते हैं । उनके मतमें गुणकारका प्रमाण पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण भी नहीं होता है, क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातप्रमाण भी आवलिके असंख्यातवें भागोंके परस्पर गुणा करनेपर पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियोंकी उत्पत्ति होती है । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

पारमार्थिक ट्रस्ट हस्तिनापुर

खीणकसायपढमसमए मदजीवेहिंतो आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तमद्धाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि। एवमेत्तियमेत्तियमवट्ठिदमद्धाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि। जाव असंखेज्जविभागब्भहियमरणचरिमसमओ त्ति। तत्तो उवरि संखेज्जसमयमेत्तमद्धाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि जाव संखेज्जविभागब्भहियमरणचरिमसमओ त्ति। तेण परं णिरंतरकमेण असंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। एत्थ तिण्णि अणुयोगद्दाराणि-परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेदि। परूवणदाए एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं णाणागुणहाणिट्ठाणंतरसलागाओ च अत्थि। पमाणं- असंखेज्जभागब्भहियमरणम्मि एगजीव-दुगुणवड्ढिट्ठाणंतरमावलियाए असंखेज्जदिभागो। संखेज्जभागब्भहियमरणम्मि एगजीवदुगुणवड्ढिअद्धाणं संखेज्जसमयमेत्तं होदि। णाणागुणहाणिसलागपमाणमावलियाए संखेज्जदिभागो। अप्पाबहुअं सव्वत्थोवं एगजीवदुगुणवड्ढिट्ठाणंतरं। णाणागुणहाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ। एवं परम्परोवणिधा समत्ता।

अप्पाबहुअं- सव्वत्थोवा खीणकसायपढमसमए मदजीवा। अपढम-अचरिमसमएसु मदजीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो? खीणकसायपढम-चरिमसमएसु मदजीवे मोत्तूण तत्थ सेसासेसमदजीवग्गहणादो। अचरिमसमए मदजीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? पढमसमए मदजीवमेत्तेण। चरिमसमए मदजीवा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर दूनी वृद्धि होती है। इस प्रकार इतने इतने अवस्थित स्थान जाकर दूनी वृद्धि होती है और यह दूनी वृद्धिका क्रम असंख्यातवें भाग अधिक मरणके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक जानना चाहिये। उसके आगे संख्यात समय प्रमाण स्थान जाकर दूनी वृद्धि होती है और यह क्रम संख्यातवें भाग अधिक मरणके अन्तिम समय तक जानना चाहिए। उसके आगे निरन्तरक्रमसे क्षीणकषायके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे होते हैं। यहां तीन अनुयोगद्वार हैं- प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व। प्ररूपणा की अपेक्षा एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर है और नानागुणहानिस्थानान्तर शलाकायें हैं। प्रमाण- असंख्यातभागवृद्धिरूप मरणमें एकजीवद्विगुणवृद्धिस्थानान्तर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। संख्यातभागवृद्धिरूप मरणमें एकजीवद्विगुणवृद्धिअध्वान संख्यात समयप्रमाण है। नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। अल्पबहुत्व- एकजीवद्विगुणवृद्धिस्थानान्तर सबसे स्तोक है। नानागुणहानिशलाकायें असंख्यातगुणी हैं। इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई।

अल्पबहुत्व- क्षीणकषायके प्रथम समयमें मृत जीव सबसे थोडे हैं। अप्रथम-अचरम समयोंमें मृत जीव असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है, क्योंकि, क्षीणकषायके प्रथम और अन्तिम समयमें मरे हुए जीवोंको छोडकर वहां शेष समस्त मृत जीवोंको ग्रहण किया है। अचरम समयमें मृत जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं? प्रथम समयमें मृत जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं। अन्तिम समयमें मृत जीव

अपढमसमए मदजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? अपढम-अचरिमसमएसु मद-जीवमेत्तेण । सव्वेसु समएसु मदजीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पढमसमए मदजीवमेत्तेण । एवं अप्पाबहुअं समत्तं ।

संपहि खीणकसायकाले जहण्णाउअमेत्ते सेसे बादरणिगोदा ण उप्पज्जंति खीणकसायसरीरे । कुदो ? जीवणियकालाभावादो । एदस्स अत्थस्स जाणावणट्ठं आउआणमप्पाबहुअं भणदि ।

एत्थ अप्पाबहुअं--सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं ॥६३३॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

कुदो? एइंदियस्स बंधणिसेयखुद्दाभवग्गहणं घादिय उप्पइवसव्वजहण्ण--जीवणियकालग्गहणादो । खीणकसायकाले एत्तियमेत्ते सेसे बादर-सुहुमणिगोदजीवा णियमा ण उप्पज्जंति त्ति घेत्तव्वं ।

एइंदियस्स जहण्णिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा ॥६३४॥

कुदो ? बादर-सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं घादेण विणा जहण्णजीवणियकाल-ग्गणादो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया ॥६३५॥

असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है । अप्रथम समयमें मृत जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं? अप्रथम-अचरम समयोंमें मृत जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं । सब समयोंमें मृत जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ? प्रथम समयमें मृत जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं । इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब क्षीणकषायके कालमें जघन्य आयुप्रमाण कालके शेष रहनेपर क्षीणकषायके शरीरमें बादर निगोद जीव नहीं उत्पन्न होते हैं, क्योंकि, जीवनीय कालका अभाव है । इस प्रकार इस अर्थका ज्ञान करानेके लिए आयुओंका अल्पबहुत्व कहते हैं--

यहाँ अल्पबहुत्व- क्षुल्लकभवग्रहण सबसे स्तोक है ॥ ६३३ ॥

क्योंकि, एकेन्द्रियके बन्धको प्राप्त हुए निषेकरूप क्षुल्लकभवग्रहणका घात करके उत्पन्न कराये गए सबसे जघन्य जीवनीयकालका यहां ग्रहण किया है । क्षीणकषायके कालमें इतने कालके शेष रहनेपर बादरनिगोद जीव और सूक्ष्म निगोद जीव नियमसे नहीं उत्पन्न होते हैं यह यहांपर ग्रहण करना चाहिए । ५११ पु. ११।

एकेन्द्रियकी जघन्य निर्वृत्ति संख्यातगुणी है ॥ ६३४ ॥

क्योंकि, बादर और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके घात हुए बिना प्राप्त हुए जघन्य जीवनीय कालका ग्रहण किया है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

वही उत्कृष्ट निर्वृत्ति विशेष अधिक है ॥ ६३५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तो* । जहण्णाउआदो उक्कस्साउअं असंखेज्जगुणमिदि** के वि आइरिया भणंति तमेदेण सह किण्ण विरुज्झदे? ण, वक्खाणेण सुत्तस्स बाधाभावादो । जवमज्झमरणचरिमसमए मोत्तूण गुणसेडिमरणचरिमसमए चेव जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा होदि त्ति जाणावणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३६ ॥

खीणकसायचरिमसमए जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा होदि । तत्थ णिगोदाणं पमाणं आवलियाए असंखेज्जविभागो । के णिगोदा णाम ? पुलवियाओ । एदेण पल्लंगुल-जगसेडि-पदरादीणमसंखेज्जदिभागो पडिसिद्धो । सुत्तेण विणा जहण्णिया बादरणिगोदवग्गणा खीणकसायचरिमसमए चेव होदि त्ति कुदो णव्वदे? सुत्ताविरुद्धाइरियवयणादो । जहण्णसुहुमणिगोदवग्गणाए [illegible] सुत्तं भणदि—

विशेषका प्रमाण कितना है ? विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है ।

शंका-- जघन्य आयुसे उत्कृष्ट आयु असंख्यातगुणी है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । उसके साथ विरोध कैसे नहीं होता ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, व्याख्यानसे सूत्रमें बाधा नहीं आती ।

अब यवमध्यमरणके अन्तिम समयको छोडकर गुणश्रेणिमरणके अन्तिम समयमें ही जघन्य बादर निगोद वर्गणा होती है इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

जघन्य बादर निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र होता है ॥ ६३६ ॥

क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोद वर्गणा होती है । वहां निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है ।

शंका-- निगोद कौन है ?

समाधान-- पुलवियां ।

इस वचनके द्वारा पल्य, अङ्गुल, जगश्रेणि और जगप्रतर आदिके असंख्यातवें भागका प्रतिषेध हो जाता है ।

शंका-- सूत्रके बिना जघन्य बादर निगोद वर्गणा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें ही होती है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- सूत्राविरुद्ध आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

अब जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणाके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं–

---

* अ० प्रतौ ' असंखे०भागो भागमेत्तो ' इति पाठः ।

** अ० प्रतौ ' उक्कस्साउअ संखेज्जगुणमिदि ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सुहुमणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३७ ॥

एसा जहण्णिया सुहुमणिगोदवग्गणा जले थले आगासे वा होदि, दव्व-खेत्त-काल-भावणियमाभावादो। एदिस्से वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ अणंताणंतजीवावूरिदअसंखेज्जलोगमेत्तसरीराओ होंति। संपहि सुहुमणिगोदुक्कस्स-वग्गणाए पमाणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३८ ॥

जा उक्कस्सिया सुहुमणिगोदवग्गणा तत्थ पुलवियाणं पमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागो चेव। एवेण पल्लस्स असंखेज्जदिभागादिसंखापडिसेहो कदो। एसा पुण सुहुमणिगोदुक्कस्सवग्गणा महामच्छसरीरे चेव होंति ण अण्णत्थ, उवदेसाभावादो। संपहि बादरणिगोदुक्कस्सवग्गणाए पमाणपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि-

बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभाग-मेत्तो णिगोदाणं ॥ ६३९ ॥

जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है ॥ ६३७ ॥

यह जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणा जलमें, स्थलमें और आकाशमें होती है, इसके लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावका कोई नियम नहीं है। इसका भी अनन्तानन्त जीवोंसे व्याप्त असंख्यात लोकप्रमाण शरीरवाली आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियाँ होती हैं। अब उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणाके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र है ॥ ६३८ ॥

जो उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणा है उसमें पुलवियोंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही है। इस वचन द्वारा पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण आदि संख्याका प्रतिषेध किया है। परन्तु यह उत्कृष्ट सूक्ष्म निगोद वर्गणा महामत्स्यके शरीरमें ही होती है, अन्यत्र नहीं होती, क्योंकि, अन्यत्र होती है ऐसा उपदेश नहीं पाया जाता। अब उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाके प्रमाणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणामें निगोदोंका प्रमाण जगश्रेणिके असंख्यातवें भागमात्र है ॥ ६३९ ॥

मूलय-थूहल्लयादिसु सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवीओ अणंतजीवावूरिद-असंखेज्जलोगसरीराओ घेत्तूण बादरणिगोदुक्कस्सवग्गणा होदि । णिगोदवग्गणाणं कारणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

एदेसिं चेव सव्वणिगोदाणं* मूलमहाखंधट्ठाणाणि ॥६४०॥

सव्वणिगोदाणमिदि वुत्ते सव्वबादरणिगोदाणमिदि घेत्तव्वं । सुहुमणिगोदा किण्ण गहिदा? ण एत्थेव ते उप्पज्जंति अण्णत्थ ण उप्पज्जंति त्ति णियमाभावादो । महाक्खंधस्स ट्ठाणाणि त्ति भणिदे महाक्खंधस्स अवयवा त्ति घेत्तव्वं, ट्ठाणसद्दस्स सरूवपज्जायस्स वंसणादो । तेण महाक्खंधावयवा सव्वणिगोदाणमुप्पण्णा मूलं कारणमिदि भणिदं होदि । ण च मूलसद्दो कारणत्थे अप्पसिद्धो, 'स्त्रियो मूलमनर्थानाम्' इत्यत्र मूलशब्दस्य कारणपर्यायस्योपलम्भात् । महाक्खंधस्स ट्ठाणाणं परूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि--

अट्ठ पुढवीओ टंकाणि कूडाणि भवणाणि विमाणाणि विमाणिंदियाणि विमाणपत्थडाणि णिरयाणि णिरइंदियाणि णिरय-

---

मूली, थूवर और आर्द्रक आदिमें अनन्त जीवोंसे व्याप्त असंख्यात लोकप्रमाण शरीरवाली जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियाँ होती हैं । इन्हें ग्रहण कर बादरनिगोद उत्कृष्ट वर्गणा होती है । अब निगोद वर्गणाओंके कारणका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

इन्हीं सब निगोदोंका मूल महास्कंधस्थान हैं ॥ ६४० ॥

सब निगोदोंका ऐसा कहनेपर सब बादर निगोदोंका ऐसा कहना चाहिए ।

शंका- सूक्ष्म निगोदोंका ग्रहण क्यों नहीं किया है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, यहाँ ही वे उत्पन्न होते हैं, अन्यत्र उत्पन्न नहीं होते ऐसा कोई नियम नहीं है ।

महास्कन्धके स्थान ऐसा कहनेपर महास्कन्धके अवयव ऐसा ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, स्थान शब्द स्वरूप पर्यायवाची देखा जाता है । इसलिए महास्कन्धके अवयव सब निगोदोंकी उत्पत्तिमें मूल अर्थात् कारण हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है । मूल शब्द कारणरूप अर्थमें अप्रसिद्ध है यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, 'स्त्रियो मूलमनर्थानाम्' अर्थात् स्त्रियां अनर्थोंका मूल है इस वचनमें मूल शब्द कारणवाची उपलब्ध होता है । अब महास्कन्धके स्थानोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

आठ पृथिवियां टङ्क, कूट, भवन, विमान, विमानेन्द्रक, विमानप्रस्तर, नरक

---

* ता०प्रतौ 'चेव (सव्व-) णिगोदाणं अ०का०प्रत्योः 'चेव णिगोदाणं' इति पाठः ।

पत्थडाणि गच्छाणि गुम्माणि* वल्लीणि लदाणि तणवणप्फदि-आदीणि ।। ६४१ ।।

धम्मादिसत्तणिरय*पुढवीओ ईसप्पभारपुढवीए सह अट्ठ पुढवीओ महाखंधस्स ट्ठाणाणि होंति । सिलामयपव्वएसु उक्किण्णवावी कूण-तलाय-जिणघरादीणि टंकाणि णाम । मेरु-कुलसेल-विंझ-सज्झादिपव्वया कूडाणि णाम । वलहि-कूडविवज्जिया सुरणरावासा भवणाणि णाम । वलहि-कूडसमण्णिदा पासादा विमाणाणि णाम । उडुआदीणि विमाणाणिंदियाणि णाम । सग्गलोअसेडिबद्ध-पइण्णया विमाणपत्थडाणि णाम । णिरयसेडिबद्धाणि णिरयाणि णाम । सेडिबद्धाणं मज्झिमणिरयावासा णिरइंदयाणि णाम । तत्थतणपइण्णया णिरयपत्थडाणि णाम । गच्छ-गुम्म-तणवणप्फदि-लदावल्लीणमत्थो जाणिय वत्तव्वो । एदाणि महाक्खंधट्ठाणाणि । एदेण महाखंधस्स इंदियगेज्झाणमवयवाणं परूवणा कदा । जे पुण इंदियाणमगेज्झा सुहुमा महाक्खंधावयवा एदेहि समवेदा ते वि आगमचक्खूहि वट्टव्वा । सचित्तवग्गणाओ एवं जहण्णाओ एवं च उक्कस्साओ । महाखंधवग्गणाए जहण्णुक्कस्सभावा एवं होंति त्ति जाणावणट्ठं उत्तरमुत्तं भणदि–

नरकेन्द्रक, नरकप्रस्तर, गच्छ, गुल्म, वल्ली, लता और तृणवनस्पति आदि महास्कन्धस्थान हैं ।। ६४१ ।।

ईषत्प्राग्भार पृथिवीके साथ धर्मा आदि सात नरक पृथिवियां मिलकर आठ पृथिवियां महास्कन्धके स्थान हैं । शिलामय पर्वतोंमें उकीरे गए वापी, कुआ, तालाब और जिनघर आदि टङ्क कहलाते हैं । मेरुपर्वत, कुलपर्वत, विन्ध्यपर्वत और सह्यपर्वत आदि कूट कहलाते हैं । वलभि और कूटसे रहित देवों और मनुष्योंके आवास भवन कहलाते हैं । वलभि और कूटसे युक्त प्रासाद विमान कहलाते हैं । उडु आदिक विमान इन्द्रक कहलाते हैं । स्वर्गलोकके श्रेणिबद्ध और प्रकीर्णक विमान विमानप्रस्तर कहलाते हैं । नरकके श्रेणिबद्ध नरक कहलाते हैं । श्रेणिबद्धोंके मध्यमें जो नरकवास हैं वे नरकेन्द्रक कहलाते हैं । तथा वहाँ के प्रकीर्णक नरकप्रस्तर कहलाते हैं । गच्छ, गुल्म, तृण वनस्पति, लता और वल्लीका अर्थ जानकर कहना चाहिए । ये महास्कन्धस्थान हैं । इस सूत्र द्वारा महास्कन्धके इन्द्रियग्राह्य अवयवोंका कथन किया है । परन्तु जो इन्द्रिय अग्राह्य सूक्ष्म महास्कन्धके अवयव हैं जो कि निगोदोंसे समवेत हैं वे भी आगमचक्षुओंसे जानने चाहिए । सचित्तवर्गणाएं इस प्रकार जघन्य और इस प्रकार उत्कृष्ट होती हैं । महास्कन्धवर्गणामें जघन्य और उत्कृष्टभाव इस प्रकार होते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं---

---

* अ० का० प्रत्योः 'गुणाणि' इति पाठः ।

* अ० का० प्रत्योः 'धम्मादिसत्तणिरय–' इति पाठः ।

जदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणं जहण्णपदे तदा बादरतस-पज्जत्ताणं उक्कस्सपदे ॥ ६४२ ॥

जदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणं जहण्णभावो होदि तदा बादरतसपज्जत्ताणं उक्कस्सभावो होदि । कुदो ? बादरतसपज्जत्ताणं कर-चरण-सरीराणं छेदण-भेदणादि-वावारेण महाक्खंधावयवाणं भेदप्पसंगादो ।

जदा बादरतसपज्जत्ताणं जहण्णपदे तदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणमुक्कस्सपदे ॥ ६४३ ॥

कुदो ? तसबादरजीवेसु थोवेसु संतेसु कर चरणादिवावारेण महाक्खंधस्स घादाभावादो । संपहि मरणजवमज्झ-सम्मिलाजवमज्झादीणं परूवणट्ठं एसा संदीट्ठी जहाकमेण ट्ठवेदव्वा—

एसो बिदियतिभागो णत्थि

बा० सु० णिगोदअपज्जत्ताणं आउअबंधजवमज्झमेदं ।

बा० सु० णि० अपज्जत्ताणं

मार्गदर्शक - आचार्यश्री विद्यासागर

जब मूल महास्कन्धस्थानोंका जघन्य पद होता है तब बादर त्रस पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट पद होता है ॥ ६४२ ॥

जब मूल महास्कन्धस्थानोंका जघन्यभाव होता है तब बादर त्रसपर्याप्तकोंका उत्कृष्ट भाव होता है, क्योंकि, बादर त्रसपर्याप्तकोंके हाथ, पैर, और शरीरोंके छेदन, भेदन आदि व्यापारद्वारा महास्कन्धके अवयवोंका भेद प्राप्त होता है ।

जब बादर त्रसपर्याप्तकोंका जघन्य पद होता है तब मूल महास्कन्धोंका उत्कृष्ट पद होता है ॥ ६४३ ॥

क्योंकि, त्रसबादर जीवोंके स्तोक होनेपर हाथ और पैर आदिके व्यापार द्वारा महा-स्कन्धका घात नहीं होता । अब मरणयवमध्य और शर्मिलायवमध्य आदिका कथन करनेके लिए यह संदृष्टि क्रमसे स्थापित करनी चाहिए--

यह द्वितीय त्रिभाग
यहाँ आवश्यक

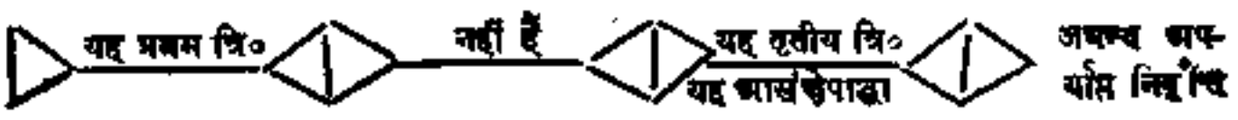

बा० सू० निगोद अपर्याप्तकोंकी चार अपर्याप्तियोंका यह निर्वृत्ति यवमध्य है

बा० सू० अ० क्षुल्लकभवग्रहण निगोदोंका यह आयु बन्ध यवमध्य है

बा० सू० निगोद अप-र्याप्तकोंका यह मरण-यवमध्य है ।

जहण्णिया अपज्जत्त-
एसो तदियतिभागो णिव्वत्ती
असंखेपद्धा एसा खुद्दाभवग्गहणं
बाद० सु० णि० अपज्जत्ताणं
मरणजवमज्झमेदं ।

००००००००० सू० णि० अपज्जत्ताणं उक्कस्सणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि एदाणि	००००००००००० बादरणिगोदअपज्जत्ताणं उक्कस्स-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि

एसो विदियतिभागो, णत्थि
एसो पढमतिभागो एत्थ आवासयाणि
रक्तवर्ण रक्तवर्ण
मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

बादरसुहुमणिगोदपज्जत्ताणं सरीर-णिव्वत्तिजवमज्झमेदं ।

बा० सु० णिगोदपज्जत्ताणं आउअबंधजवमज्झमेदं ।

एसो तदियतिभागो
रक्तवर्ण

बादरसुहुमणिगोदपज्जत्ताणं मरणजवमज्झमेदं ।

०८८००००००	०००८०००८०००
ये सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान हैं	ये बादर निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान हैं

यह द्वितीय त्रिभाग
यहाँ आवश्यक
यह प्रथम त्रि० नहीं है यह तृ० त्रि०
रक्तवर्ण रक्तवर्ण रक्तवर्ण

बा० सू० निगोद पर्याप्तकों का यह शरीर निर्वृत्ति यवमध्य है ।

बा० सू० निगोद पर्याप्तकोंका यह आयु यव-मध्य है ।

बा० सू० निगोद पर्याप्तकोंका यह मरण यवमध्य है ।

(१) एदमंतरं–

आहारसरीरणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि एदाणि ००००००००	अंतरं	आहारसरीरिंदिय-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि ००००००००	अंतरं	आहारसरीरआणापाण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि ००००००००	

अंतरं	आहारसरीरभासा-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि ००००००००	अंतरं	आहारसरीरमण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	आहारसरीरणिल्ले-वणट्ठाणाणि एदाणि		

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

(२) एदमंतरं

अंतरं	०००००००० वेउव्वियसरीर-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००० वेउव्वियसरीरइंदिय-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००० वेउव्वियसरीरआणापाण णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि

यह अन्तर है

ये आहारशरीर निर्वृत्तिस्थान हैं ००००००००	अन्तर	ये आहारशरीरेन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान हैं ००००००००	अन्तर	ये आहारशरीरश्वासोच्छ्वास निर्वृत्तिस्थान हैं– ००००००००	

अन्तर	य आहारशरीरभाषा निर्वृत्तिस्थान हैं ००००००००	अन्तर	ये आहारशरीरमन निर्वृत्तिस्थान हैं ००००००००		ये आहारशरीर निर्लेपनस्थान हैं ००००००००		

२ यह अन्तर है ।

०००००००० ये वैक्रियिकशरीर निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००० ये वैक्रियिकशरीरेन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००० ये वैक्रियिकशरीरश्वासोच्छ्वास निर्वृत्तिस्थान हैं	

अंतरं	०००००००००० वेउव्वियसरीराभासा-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००० वेउव्वियमणणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००००० वेउव्वियसरीरणिल्ल-वणट्ठाणाणि एदाणि

(३) एवमंतरं

०००००००००० ओरालिय[illegible]-ट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००००० [illegible]णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००००० ओरालियसरीरआणावाण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	

अंतरं	०००००००००० ओरालियसरीरभासा-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००० ओरालियसरीरमण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि एदाणि	अंतरं	०००००००००००००० ओरालियसरीरणिल्ले-वणट्ठाणाणि एदाणि

अन्तर	०००००००००० ये वैक्रियिकशरीरभाषा निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००० वे वैक्रियिकशरीरमन निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००००० ये वैक्रियिकशरीर निर्लेपनस्थान हैं

३ यह अन्तर है

०००००००००० ये औदारिकशरीर निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००००० ये औदारिकशरीरेन्द्रिय निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००००० ये औदारिकशरीरोच्छ्वास निर्वृत्तिस्थान हैं	

अन्तर	०००००००००००० ये औदारिकशरीर भाषा निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००० ये औदारिकशरीरमन निर्वृत्तिस्थान हैं	अन्तर	०००००००००००००० ये औदारिकशरीर निर्लेपनस्थान हैं

सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं	बादरणिगोदपज्जत्ताणं	पत्तेयसरीरपज्जत्ताणं
एइंदियपज्जत्ताणं उक्कस्स-बावीससहस्साणि	सम्मुच्छिमपज्जत्ताण-मुक्कस्सपुव्वकोडी	❖❖❖❖❖ ○○○○○
गब्भोवक्कंतियाणमुक्कस्स-तिण्णिपलिदोवमाणि	उववादियाणमुक्कस्सतेत्तीससागरोवमाणि	

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एवं बादर-सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं तेसिं पज्जत्ताणं च चत्तारि संदिट्ठीओ ट्ठविय 'जत्थेय मरइ जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं । वक्कमदि जत्थ एयो वक्कमणं तत्थणंताणं ॥' एदीए गाहाए सूचिदणिव्वत्तिजवमज्झ-मरणजवमज्झ-आउअबंधजवमज्झाणं तिण्णं सरीराणं पज्जत्तिणिव्वत्तिट्ठाणादीणं परूवणट्ठं च उत्तरगंथो आगदो-

सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी	बादरनिगोद पर्याप्तकोंके		प्रत्येक शरीरपर्याप्तकोंके
एकेन्द्रियपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट २२ हजार वर्ष	सम्मूर्छन पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट पूर्वकोटि	❖❖❖❖❖ ○○○○○	गर्भजोंकी उत्कृष्ट तीन पल्य
औपपादिकोंकी उत्कृष्ट तेतीस सागर			

इस प्रकार बादर निगोद अपर्याप्त और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त तथा उनके पर्याप्तकोंकी चार संदृष्टियाँ स्थापित कर 'जहाँ एक जीव मरता है वहाँ अनन्त जीवोंका मरण होता है और जहाँ एक जीव उत्पन्न होता है वहाँ अनन्त जीवोंकी उत्पत्ति होती है।' इस गाथा द्वारा सूचित हुए निर्वृत्तियवमध्य, मरणयवमध्य और आयुबन्ध यवमध्योंका तथा तीन शरीरोंके पर्याप्ति-निर्वृत्ति स्थानादिकोंका कथन करनेके लिए आगेका ग्रन्थ आया है-

एत्तो सव्वजीवेसु महादंडओ कायव्वो भवदि ॥ ६४३ ॥

सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं। तं तिधा विहत्तं–हेट्ठिल्लए तिभाए सव्वजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती। मज्झिल्लए तिभाए णत्थि आवासयाणि। उवरिल्लए तिभागे आउअबंधो जवमज्झं समिलामज्झे त्ति वुच्चदि ॥ ६४४ ॥

जं सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं तं तिवहित्तं कायव्वं। किमट्ठं तिधा विहज्जदे ? तत्थ तिसु भागेसु आवासयपरूवणट्ठं। सव्वजहण्णखुद्दाभवग्गहणं त्ति वुत्ते घातखुद्दाभवग्गहणं घेत्तव्वं, अण्णत्थ आउअस्स खुद्दभावाणुववत्तीदो। हेट्ठिल्लए तिभागे सव्वजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ति त्ति भणिदे जम्हि बादर-सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तेहि आहार-सरीरिंदिय-आणपाणचत्तारिअपज्जत्तीओ णिव्वत्तिज्जंति जवमज्झसरूवेण सो पढमतिभागो णाम। उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि पढमतिभागस्स संखेज्जदिभागमेत्त मद्धाणमुवरि गंतूण जहा सुहुम-बादरणिगोदअपज्जत्ताणं आहार-सरीरिंदिय-आणपाणपज्जत्तीओ समाणिज्जंति जवसरूवेण ट्ठिदजीवेहि तेण हेट्ठिल्लए तिभागे सव्वजीवाणं जहण्णिया

यहांसे आगे सब जीवोंमें महादण्डक करना चाहिए ॥ ६४३ ॥

क्षुल्लकभवग्रहण सबसे स्तोक है। वह तीन प्रकारका है– अधस्तन त्रिभागमें सब जीवोंकी जघन्य अपर्याप्तनिर्वृत्ति होती है, मध्यम त्रिभागमें आवश्यक नहीं होते और उपरिम त्रिभागमें यवमध्य होता है। उसे शमिलायवमध्य कहा जाता है॥ ६४४ ॥

जो सबसे स्तोक क्षुल्लकभवग्रहण है उसके तीन भेद करने चाहिए।

शंका – उसके तीनों भेद किसलिए करते हैं ?

समाधान– उसके तीनों भेदोंमें आवश्यकोंका कथन करनेके लिए उसके तीन भेद करते हैं।

सबसे जघन्य क्षुल्लकभवग्रहण ऐसा कहनेपर घातक्षुल्लकभवग्रहण लेना चाहिए, क्योंकि, अन्यत्र आयुका क्षुल्लकपना नहीं बन सकता है। अधस्तन त्रिभागमें सब जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति ऐसा कहनेपर जिसमें बादर निगोद अपर्याप्त जीव और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोच्छ्वास इन चार अपर्याप्तिकोंको यवमध्यरूपसे रचते हैं वह प्रथम त्रिभाग है।

शंका – उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर प्रथम त्रिभागके संख्यातवें भागप्रमाण स्थान ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त और बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंकी आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोच्छ्वास पर्याप्तियां यतः यवमध्यरूपसे स्थित जीवोंके द्वारा समाप्त की जाती हैं अतः

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अपज्जत्तणिव्वत्ति त्ति ण घडदे? ण एस दोसो, विसयसत्तमिमस्सिदूण सुत्तपवुत्तीदो। पढमतिभागविसए जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती होदि त्ति जं भणिदं होदि। ण च विसयसत्तमी असिद्धा,

औपश्लेषिकवैषयिकाभिव्यापक इत्यपि।
आधारस्त्रिविधः प्रोक्तः कटाकाशतिलेषु च ॥ २३ ॥

इति वचनात्। अथवा पढमतिभागस्स संखेज्जदिभागो पढमतिभागो वि पढमतिभागो णाम 'ग्रामो दग्धः पटो दग्धः' इत्येवमादिषु समुदायेषु प्रवृत्तानां शब्दानामवयवेष्वपि वृत्तिदर्शनात्। मज्झिल्लए तिभाए णत्थि आवासयाणि त्ति भणिदे पढमतिभागस्स संखेज्जा भागा बिदियतिभागो सयलो च एसो मज्झिल्लतिभागो णाम। कथमेदस्स किंचूणदोतिभागस्स (१) मज्झिल्लतिभागववएसो? ण एस दोसो, तिण्णं खंडाणं समविवक्खाभावादो। एत्थ एवंविहे तिभागे मरणजवमज्झ-आउअबंधजवमज्झ-णिव्वत्तिजवमज्झावासयाणि णत्थि त्ति भणिदं होदि। उवरिल्लए तिभागे आउअबंधो जवमज्झं त्ति वुत्ते तदियतिभागे सुहुम-बादरअपज्जत्ताणमाउअबंधो होदि। सो चेव जवमज्झं होदि। कुदो? जीवेहि जवमज्झागारेण अवट्ठाणादो। जवस्स मज्झिमपदेसो जवमज्झं त्ति एत्थ ण घेत्तव्वं

अधस्तन त्रिभागमें सब जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है यह कथन घटित नहीं होता?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विषयरूप सप्तमीका आश्रय लेकर सूत्रकी प्रवृत्ति हुई है। प्रथम त्रिभागको विषय करके जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। और विषय सप्तमी असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि–

कट, आकाश और तिलमें औपश्लेषिक, वैषयिक और अभिव्यापक इस प्रकार आधार तीन प्रकारका कहा है ॥ २३ ॥

ऐसा वचन है। अथवा प्रथम त्रिभागका संख्यातवां भाग भी प्रथम त्रिभाग कहलाता है। यथा– ग्राम जला, वस्त्र जला इत्यादि प्रयोगोंके करने पर समुदायमें प्रवृत्त हुए शब्दोंकी वृत्ति अवयवोंमें भी देखी जाती है। मध्यके त्रिभागमें आवश्यक नहीं है ऐसा कहनेपर प्रथम त्रिभागका संख्यात बहुभाग और पूरा द्वितीय त्रिभाग यह सब मध्यका त्रिभाग कहलाता है।

शंका – कुछ कम दो त्रिभागकी मध्यका त्रिभाग संज्ञा कैसे हो सकती है?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तीनों खण्ड समान होते हैं ऐसी विवक्षा नहीं है।

यहां इस प्रकारके त्रिभागमें मरणयवमध्य, आयुबन्धयवमध्य और निर्वृत्तियवमध्य ये आवश्यक नहीं हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है। उपरिम त्रिभागमें आयुबन्ध यवमध्य है ऐसा कहने पर उसका आशय है कि तीसरे त्रिभागमें सूक्ष्म अपर्याप्त और बादर अपर्याप्तका आयुबंध होता है और वही यवमध्य होता है, क्योंकि जीव यवमध्यके आकारसे अवस्थित हैं। यहां पर यवमध्य पदसे यवका मध्यम प्रदेश ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए किन्तु यवका मध्य अर्थात्

---

(१) ता० प्रतौ ' किंचूणतिभागस्स ' इति पाठः।

किंतु जवस्स मज्झमब्भंतरमंतो त्ति घेत्तव्वं । अथवा समिलामज्झे त्ति वुच्चदि, जुवखीली समिला णाम । दोण्णं समिलाणं मज्झं समिलामज्झं तेण समाणत्तादो समिलामज्झं । एवं सव्वेसिं जवमज्झाणं जवमज्झं समिलामज्झे त्ति दोणामाणि होंति । तदियतिभागसमयप्पहुडि जाव असंखेपद्धाए पढमसमओ त्ति ताव उवरिमतिभागस्स संखेज्जा भागा जेण आउअबन्धजवमज्झस्स विसओ तेण उवरिल्लए तिभाए आउअबंधजवमज्झमिदि ण घडदे ? ण, [illegible] इति न्यायात्तदियतिभागस्स संखेज्जाणं भागाणं पि किंचूणाणं तदियतिभागववएसेण सह विरोहाभावादो। एसा परूवणा सरीरखंधंडरावासपुलवियाओ अस्सिदूण ण परूवेयव्वा, तत्थ णियमाणुवलंभादो। किंतु जहण्णमाउअमस्सिदूण णिव्वत्तिसमिला जवमज्झाणि परूवेयव्वाणि । मरणजवमज्झं पुण णाणाउअविसयं चेव, समाणाउआणं कमेण मरणाणुववत्तीदो ।

तस्सुवरिमसंखेपद्धा* ॥ ६४५ ॥

जहण्णओ आउअबंधकालो जहण्णविस्समणकालपुरस्सरो असंखेपद्धा णाम । सो जवमज्झचरिमसमयप्पहुडि ताव होदि जाव जहण्णाउअबंधकालचरिमसमओ त्ति । एसा वि असंखेपद्धा तदियतिभागम्मि चेव होदि, अज्जवि खुद्दाभवग्गहणस्स संभवादो ।

भीतरी भाग ऐसा ग्रहण करना चाहिए । अथवा शमिलामध्य ऐसा कहते हैं युगकीलीका नाम शमिला है और दो शमिलाओंके मध्यका नाम शमिलामध्य है । उसके समान होनेसे उसे शमिलामध्य कहते हैं । इस प्रकार सब यवमध्यके यवमध्य और शमिलामध्य ये दो नाम हैं ।

शंका – तीसरे त्रिभागके प्रथम समयसे लेकर आसंक्षेपाद्धाके प्रथम समय तक उपरिम त्रिभागका संख्यात बहुभाग यतः आयुबंधयवमध्यका विषय है अतः उपरिम त्रिभागमें आयुबंधयवमध्य घटित नहीं होता है ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, एकदेश विकृत वस्तु अनन्यके समान अर्थात् उसीके समान होती है इस न्यायके अनुसार तृतीय त्रिभागके कुछ कम संख्यात बहुभागोंकी तृतीय त्रिभाग संज्ञा रखनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

यह प्ररूपणा शरीरके स्कन्ध, अण्डर, आवास और पुलवियोंका आश्रय लेकर नहीं करनी चाहिए, क्योंकि, वहां कोई नियम नहीं उपलब्ध होता । किंतु जघन्य आयुका आश्रय लेकर निर्वृत्ति शमिला यवमध्योंकी प्ररूपणा करनी चाहिए । परन्तु मरणयवमध्य नाना आयुओंको ही विषय करता है, क्योंकि, समान आयुवालोंका क्रमसे मरण नहीं बन सकता ।

उसके ऊपर आसंक्षेपाद्धा है ॥ ६४५ ॥

जघन्य विश्रमणकाल पूर्वक जघन्य आयुबन्धकाल आसंक्षेपाद्धा कहा जाता है । वह यवमध्यके अन्तिम समयसे लेकर जघन्य आयुबन्धकालके अन्तिम समय तक होता है । यह आसंक्षेपाद्धा तृतीय त्रिभागमें ही होता है, क्योंकि अभी भी ऊपर क्षुल्लक भवग्रहण सम्भव है ।

* प्रतिषु ' तस्सुवरिमसंखेयद्धा ' इति पाठः ।

असंखेपद्धस्सुवरि◎ खुद्दाभवग्गहणं ॥ ६४६ ॥

आउअबंधे संते जो उवरि विस्समणकालो सव्वजहण्णो तस्स खुद्दा*भवग्गहणं ति सण्णा। सो तत्तो उवरि होदि। कथमेदस्स खुद्दाभवग्गहणववएसो ? 'समुदायेषु प्रवृत्ताः शब्दा अवयवेष्वपि वर्तन्ते' इति न्यायेन तस्य तदविरोधात्। एदं पि खुद्दाभवग्गहणं तदियतिभागे चेव, एदेण विणा तदियतिभागस्स संपुण्णत्ताणुववत्तीदो। अथवा असंखेपद्धस्सुवरि खुद्दाभवग्गहणं ति वुत्ते जहण्णाउअबंधकालचरिमसमयादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण हेट्ठिल्लभागेण सह घादखुद्दाभवग्गहणं होदि त्ति घेत्तव्वं।

खुद्दाभवग्गहणस्सुवरि जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ६४७ ॥

घादखुद्दाभवग्गहणस्सुवरि ततो संखेज्जगुणं अद्धाणं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ताणं बंधेण जहण्णं जं णिसेयखुद्दाभवग्गहणं तस्स जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ति त्ति सण्णा। एत्थं वि पुव्वं व दोहि पयारेहि वक्खाणं कायव्वं।

जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ॥ ६४८ ॥

[illegible] श्री सुविधिसागर जी महाराज

आसंक्षेपाद्धाके ऊपर क्षुल्लकभवग्रहण है ॥ ६४६ ॥

आयुबन्धके होने पर जो सबसे जघन्य विश्रमणकाल है उसकी क्षुल्लकभवग्रहण संज्ञा है। वह आयुबन्धकालके ऊपर होता है।

शंका – इसकी क्षुल्लक भवग्रहण संज्ञा कैसे है ?

समाधान – समुदायोंमें प्रवृत्त हुए शब्द उनके अवयवोंमें भी प्रवृत्ति करते हैं इस न्यायके अनुसार इसकी क्षुल्लकभवग्रहण संज्ञा होनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

यह क्षुल्लकभवग्रहण भी तृतीय त्रिभागमें ही होता है क्योंकि, इसके बिना तृतीय त्रिभाग सम्पूर्ण नहीं होता। अथवा आसंक्षेपाद्धाके ऊपर क्षुल्लक भवग्रहण है ऐसा कहने पर जघन्य आयुबन्धकालके अन्तिम समयसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जा कर नीचेके भागके साथ घात क्षुल्लक भवग्रहण होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

क्षुल्लकभवग्रहणके ऊपर जघन्य अपर्याप्त निर्वृति होती है ॥ ६४७ ॥

घात क्षुल्लक भवग्रहणके ऊपर उससे संख्यातगुणा अध्वान जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके बन्धसे जो जघन्य निषेक क्षुल्लक भवग्रहण होता है उसकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति संज्ञा है। यहां पर भी पहलेके समान दो प्रकारसे व्याख्यान करना चाहिए।

जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्तिके ऊपर उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होती है ॥ ६४८ ॥

◎ प्रतिषु 'असंखेपस्सुवरि' इति पाठः। * अ० प्रतौ 'तस्सखुद्दा' इति पाठः।

णिसेयखुद्दाभवग्गहणस्सुवरि समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणि गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि । सा च अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया, पढमसमयप्पहुडि सव्वकालग्गहणादो । घादखुद्दा-भवग्गहणचरिमसमयप्पहुडि जाव णिसेयखुद्दाभवग्गहणचरिमसमओ त्ति ताव णिसेय-खुद्दाभवग्गहणस्स संखेज्जेसु भागेसु मरणजवमज्झं होदि, तमेत्थ किण्ण परूविदं ? ण एस दोसो, जवमज्झमिदि अणुवट्टदे तेणेव संबंधो (1) कायव्वो जहण्णिया अपज्जत्त-णिव्वत्ती जवमज्झं होदि त्ति । तेण जवमज्झस्स एत्थ अत्थित्तं परूविदं चेव । हेट्ठिल्लए विभागजहण्णियाए अपज्जत्तणिप्पत्ती जवमज्झं होदि त्ति, एवमदिक्कंते सुत्तं वि संबंधो कायव्वो, जवमज्झस्स मज्झदीवयत्तेण अवट्ठाणुवलंभादो । एसा सव्वा वि परूवणा बादरणिगोदाणं । संपहि सुहुमणिगोदाणं परूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

तं चेव सुहुमणिगोदजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती । ६४९ ।

तम्हि चेव बादरणिगोदणिव्वत्तिजवमज्झस्स गब्भे बादरजवमज्झस्स पढम-चरिमसमए असंखेज्जदिभागेण अपावेदूण सुहुमणिगोदजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती होदि ।

आदर्शक

निषेकक्षुल्लकभवग्रहणके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्या-तवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है । वह अपर्याप्तनिर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है, क्योंकि, यहां पर प्रथम समयसे लेकर समस्त कालका ग्रहण किया है ।

शंका-- घात क्षुल्लक भवग्रहणके प्रथम समयसे लेकर निषेक क्षुल्लक भवग्रहणके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक उसमें निषेक क्षुल्लक भवग्रहणके संख्यात बहुभागोंमें मरणयव-मध्य होता है उसका यहां पर कथन क्यों नहीं किया ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यवमध्य पदकी अनुवृत्ति होती है, इसलिए इस प्रकार सम्बन्ध कर लेना चाहिए कि जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति यवमध्य होता है' इसलिए यवमध्यका यहाँ पर अस्तित्व कहा ही है । अधस्तन भागमें जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति यवमध्य होता है । इसी प्रकार पिछले सूत्रमें भी सम्बन्ध करना चाहिए, क्योंकि, यवमध्यका मध्यदीपकरूपसे अवस्थान उपलब्ध होता है ।

यह सब प्ररूपणा बादर निगोदोंकी है । अब सूक्ष्म निगोदोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

वही सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति है । ६४९ ।

उसी बादर निगोद निर्वृत्ति यवमध्यके भीतर बादर यवमध्यके प्रथम और अन्तिम समयको आवलिके असंख्यातवें भागद्वारा प्राप्त न कर सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य अपर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

---

(1) ता० प्रतौ '-मिदि वुत्ते अणुवट्टदे तेणेव संबंधो ' इति पाठः ।

उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ॥६५०॥

सुगमं ।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवसयाणि होंति ॥६५१॥

पढमदाए पढमसमयप्पहुडि जाव सुहुमणिगोदजीवाणं उक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती तत्थ इमाणि उवरि भण्णमाणआवासयाणि होंति, ण अण्णत्थ, असंभवादो । एवाणि पढमदाए वत्तव्वाणि, एदेहिंतो सेसावासयाणं सिद्धीए ।

तदो जवमज्झं गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्तयाणं[1] णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६५२॥

तदो इदि वुत्ते उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण जवमज्झस्स पढमसमयो होदि त्ति वत्तव्वं । कुदो? पढमसमयप्पहुडि उवरि ताव संखेज्जावलियाओ त्ति तत्थ णिल्लेवणट्ठाणाणमभावादो[*] । तत्थ ताणि णत्थि त्ति कुदो णव्वदे? अपज्जत्तणिव्वत्तणकालो जहण्णओ वि संखेज्जावलियमेत्तो चेव होदि त्ति गुरूवएसादो । जवमज्झमिदि किरियाविसेसणं, तेण जहा जवमज्झं होदि तहा गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाण

उपरिम उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है ।६५०॥

यह सूत्र सुगम है ।

वहाँ प्रथम समयसे लेकर ये आवश्यक होते हैं ॥६५१॥

पढमदाए अर्थात् प्रथम समयसे लेकर सूक्ष्म निगोद जीवोंकी उत्कृष्ट अपर्याप्त निर्वृत्ति तक वहाँ ये आगे कहे जानेवाले आवश्यक होते हैं अन्यत्र नहीं होते, क्योंकि, अन्यत्र उनका होना असम्भव है । ये प्रथम समयसे कहने चाहिए, क्योंकि, इनसे शेष आवश्यकोंकी सिद्धि होती है ।

तदनन्तर यवमध्यके व्यतीत होनेपर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं ॥६५२॥

तदो ऐसा कहनेपर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर यवमध्यका प्रथम समय होता है ऐसा यहाँ कहना चाहिए, क्योंकि, प्रथम समयसे लेकर ऊपर संख्यात आवलि काल तक वहाँ निर्लेपनस्थानोंका अभाव है ।

शंका-- वहाँ वे नहीं हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, अपर्याप्त निर्वृत्तिकाल जघन्य भी संख्यात आवलिप्रमाण ही है ऐसा गुरुका उपदेश है । इससे जाना जाता है कि प्रथम समयसे लेकर संख्यात आवलिप्रमाण काल होने तक निर्लेपनस्थान नहीं होते ।

यवमध्य यह क्रियाविशेषण है, इससिए जिस प्रकार यवमध्य होता है उस प्रकार जाकर

---

[1] ता० प्रतौ '-णिगोदअपज्जत्तयाणं' इति पाठः ।

[*] अ० प्रतौ 'ट्ठाणाणि समभावादो' इति पाठः]

णिल्लेवणट्ठाणाणि होंति त्ति भाणिदव्वं । किं णिल्लेवणं णाम? आहार-सरीरिंदिय-आणपाणअपज्जत्तीणं णिव्वत्ती णिल्लेवणं णाम । जदि अपज्जत्तो ण तिस्से णिव्वत्ती अत्थि, विप्पडिसेहादो? ण अपज्जत्तीए वि अपज्जत्तिसरूवेण णिप्पत्तिपडि विरोहाभावादो । ताणि च णिल्लेवणट्ठाणाणि जवमज्झं गदाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि होंति । एवं कुदो☼ णव्वदे ? एवम्हादो चेव सुत्तादो । ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थापसंगादो । एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे । तं जहा— उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण चदुण्णमपज्जत्तीणं सिग्घं णिव्वत्तया सुहुमणिगोदअपज्जत्तया थोवा । ण च चत्तारि अपज्जत्तीओ वि जुगवं ण णिल्लेविज्जंति✱, आहार-सरीरिंदिय-आणपाणपज्जत्तीणं कमेण✲ णिप्पण्णाणमक्कमेण पच्छा णिल्लेवणुवलंभादो । णिप्पत्ति-णिल्लेवणाणं भेदमुवरि भणिस्सामो । तदो समउत्तराए ट्ठिदीए णिव्वत्तिया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव आवलियाए असंखेज्जभागमेत्तद्धाणं गदं ति । पुणो तत्थ जवमज्झं होदि ।

सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान होते हैं ऐसा कहलाना चाहिए ।

शंका-- निर्लेपन किसे कहते हैं ?

समाधान-- आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोछ्वास अपर्याप्तियोंकी निर्वृत्तिको निर्लेपन कहते हैं ।

शंका-- यदि अपर्याप्त है तो उसकी निर्वृत्ति नहीं होती, क्योंकि, अपर्याप्तिकी निर्वृत्ति होनेका निषेध है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अपर्याप्तिकी भी अपर्याप्तिरूपसे निष्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

वे निर्लेपनस्थान यवमध्यको प्राप्त हुए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।

शंका-- इस प्रकार किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- इसी सूत्रसे जाना जाता है । और एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता, क्योंकि, ऐसा मानने पर अनवस्थाका प्रसंग आता है ।

यहाँ पर यवमध्यके स्वरूपकी प्ररूपणा करते हैं । यथा- उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर चार अपर्याप्तियोंके शीघ्र निर्वर्तक सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव थोडे हैं । चार अपर्याप्तियाँ एक साथ निर्लेपनभावको नहीं प्राप्त होती यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि, क्रमसे निष्पन्न हुई आहार, शरीर, इन्द्रिय और आनापान पर्याप्तियोंका बादमें अक्रमसे निर्लेपन भाव देखा जाता है । निष्पत्ति और निर्लेपनमें जो भेद है उसे आगे कहेंगे । उससे एक समय अधिक स्थितिके निर्वर्तक जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक हैं । पुनः वहाँ पर यवमध्य होता है । यवमध्यके उपरिम समयमें चार

☼ ता० प्रतौ ' एवं कुदो ' इति पाठः । ✱ ता० प्रतौ ' णिल्लेविज्जदि ' इति पाठः ।
✲ ता० प्रतौ '–पज्जत्तीणि (ण) कमेण ' का० प्रतौ '–ज्जत्तीणि कमेण ' इति पाठः ।

जवमज्झस्सुवरिमसमए चत्तारि अपज्जत्तिणिल्लेवया जीवा विसेसहीणा। एवं* विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण उवरि आवलि० असंखे०भागमेत्तमद्धाणं गंतूण चत्तारिअपज्जत्तिणिल्लेवया जीवा समप्पंति। उप्पण्णसमयप्पहुडि आहारवग्गणादो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणं सिद्धाणमणंतभागमेत्तं पदेसपिंडं घेत्तूण आहार-सरीरिंदिय-आणापाणपज्जत्तीओ जुगवदेव पारंभिय तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण आहारअपज्जत्ति समाणिय तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सरीरअपज्जत्ति समाणेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पासिंदियअपज्जत्ति समाणेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण आणपाणअपज्जत्ति समाणेदि। तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण चत्तारि वि अपज्जत्तीओ जुगवं णिल्लेवेदि त्ति भणिदं होदि। एवं सव्वणिल्लेवणट्ठाणाणं अत्थपरूवणा पुध पुध कायव्वा। एत्थ गुणहाणिअद्धाणस्स णाणागुणहाणिसलागाणं च पमाणमावलि० असंखे०भागो। एत्थ एगा वि गुणहाणी णत्थि त्ति के वि आइरिया भणंति। एत्थ जवमज्झहेट्ठिमअद्धाणादो उवरिमअद्धाणं सरिसमिदि के वि आइरिया भणंति। के वि विसेसाहियमिदि भणंति। के वि संखेज्जगुणं, के वि असंखे०गुणं ति। तेणेत्थ अम्हाणं ण णिच्छओ अत्थि। तदो जाणिऊण वत्तव्वं।

तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं* णिल्ले-

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

अपर्याप्तियोंके निर्लेपन करनेवाले जीव विशेष हीन हैं। इस प्रकार विशेष हीन विशेष हीन होते हुए आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर चार अपर्याप्तियोंका निर्लेपन करनेवाले जीव समाप्त होते हैं। उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर आहारवर्गणामेंसे अभव्योंसे अनंतगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण प्रदेशपिण्डको ग्रहण कर आहार, शरीर, इन्द्रिय और आनापान पर्याप्तियोंको एकसाथ प्रारम्भ करके अनन्तर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहार अपर्याप्तिको समाप्त कर फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर शरीर अपर्याप्तिको समाप्त करता है। फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर स्पर्शनेन्द्रिय अपर्याप्तिको समाप्त करता है। फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर आनापान अपर्याप्तिको समाप्त करता है। फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर चारों ही अपर्याप्तियोंको एकसाथ निर्लेपित करता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। इस प्रकार सब निर्लेपनस्थानोंकी अर्थप्ररूपणा अलग अलग करनी चाहिए। यहां पर गुणहानिअध्वान और नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। यहाँ पर भी गुणहानि नहीं है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। तथा यहाँ पर यवमध्यका उपरिम अध्वान अधस्तन अध्वानके समान है ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं। तथा कितने ही आचार्य विशेष अधिक है ऐसा कहते हैं। तथा कितने ही संख्यातगुणा और कितने ही असंख्यातगुणा कहते हैं, इस लिए इस विषयमें हमारा कोई निश्चय नहीं है, इसलिए जानकर कथन करना चाहिए।

अनन्तर यवमध्य जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें

* ता० प्रतौ 'विसेसाहिया] एवं' इति पाठः।
* ता० प्रतौ '-णिगोदअपज्जत्तयाणं' इति पाठः।

वणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥ ६५३ ॥

तदो इदि णिद्देसो किमट्ठं कदो? उप्पण्णपढमसमए चेव चत्तारि अपज्जत्तीओ अक्कमेण आढप्पंति[*] त्ति जाणावणट्ठं कदो। उप्पण्णपढमसमए चेव चत्तारि अपज्जत्तीओ अक्कमेणाढाविय उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं वुत्तविहाणेण कमेण समाणिय तेसिं णिल्लेविज्जमाणट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि। तेसु ट्ठाणेसु ट्ठिदजीवा जवमज्झागारेण होंति त्ति एदेण सुत्तेण जाणाविदं। सेसं जहा सुहुमणिगोद-अपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणाणं परूवणा कदा तहा एत्थ वि कायव्वा। णवरि सुहुमणिगोद-जवमज्झस्स पढमणिल्लेवणट्ठाणादो हेट्ठा आवलियाए असंखे०भागमेत्ताणि णिल्लेवण-ट्ठाणाणि ओसरिदूण बादरणिगोदअपज्जत्तपढमणिल्लेवणट्ठाणं होदि। सुहुमणिगोदअप-ज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणजवमज्झादो बादरणिगोदअपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणजवमज्झं पुव्वं चेव आरंभदि त्ति भणिदं होदि। सुहुमणिगोदजवमज्झस्स चरिमणिल्लेवणट्ठाणादो आवलि-याए असंखे०भागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्तस्स चरिम-णिल्लेवणट्ठाणं होदि। सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झादो आवलि० असंखे०भागमेत्त-णिल्लेणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्तजवमज्झं होदि। एवं[*] सुत्तेण

भागप्रमाण निर्लेपनस्थान होते हैं ॥ ६५३ ॥

शंका-- तदो यह निर्देश किसलिए किया है ?

समाधान-- उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही चार अपर्याप्तियोंको युगपत् प्रारम्भ करता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए तदो यह निर्देश किया है।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही चार अपर्याप्तियोंको युगपत् आरम्भ करके ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके उक्त विधिसे क्रमसे समाप्त करके उनके निर्लेप-नस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण और उन स्थानोंमें स्थित जीव यवमध्यके आकारसे होते हैं इस बातका इस सूत्र द्वारा ज्ञान कराया गया है। शेष जिस प्रकार सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त-कोंके निर्लेपनस्थानोंका कथन किया है उस प्रकार यहां भी करना चाहिए। इतनी विशेषता है कि सूक्ष्म निगोद यवमध्यके प्रथम निर्लेपनस्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्ले-पनस्थान उतरकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका प्रथम निर्लेपनस्थान होता है। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकके निर्लेपनस्थान यवमध्यसे बादर निगोद अपर्याप्तकका निर्लेपनस्थान यवमध्य पहले ही आरंभ होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके अन्तिम निर्लेपनस्थानसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपन स्थान ऊपर जाकर बादर निगोद अपर्याप्तका अंतिम निर्लेपनस्थान होता है। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके यवमध्यसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका यवमध्य होता है।

---

[*] ता० प्रतौ ' आढवंति ' इति पाठः।

[*] ता० का० प्रत्योः ' चरिमणिल्लेवणट्ठाणं होदि। सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झादो एवं ' इति पाठः।

णागविरुद्धाइरियवयणेण णव्वदे । तदो सुहुमणिगोदजीवादो तम्मज्झादो च उवरि जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि होंति त्ति सुत्तदुत्तादो वा एसो विसेसोवगम्मदे । हेट्ठिमभागस्स आवलियाए असंखे०भागमेत्तमेदेणेव देसामासियसुत्तेणावगंतव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणमाउअ-बंधजवमज्झं ॥ ६५४॥

तदो जवमज्झं गंतूणे त्ति अभणिय तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण आउअबंधजवमज्झ-मिदि किमट्ठं भणिदं ? जहा आहारादिपज्जत्तीणं उप्पण्णपढमसमए चेव पारंभो होदि तहा आउअबंधस्स पारंभो ण होदि किंतु उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि सगजहण्ण-जीवियस्स वेतिभागे गंतूण तिभागावसेसे आउअबंधो होदि त्ति जाणावणट्ठं भणिदं । एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे । तं जहा- तदियतिभागपढमसमए आउअबंधया जीवा जदि वि अणंता तो वि उवरिमजीवे पेक्खिदूण थोवा । बिदियसमए आउअ-बंधया जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण आउअं बंधंति जवमज्झे त्ति । तदो अणंतरउवरिमसमए विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सुहुमणिगोद-

---

शंका-- सूत्रके बिना यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

अथवा सूक्ष्म निगोदके यवसे और उसके मध्यसे ऊपर यवमध्य जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीव के निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं इस प्रकार यह विशेष सूत्रके अर्थका परामर्श करनेसे जाना जाता है । अधस्तन भागका जो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है वह इसी देशामर्षक सूत्रसे जानना चाहिए ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका आयुबन्ध यवमध्य होता है ॥ ६५४ ॥

शंका-- उसके बाद यवमध्य जाकर ऐसा न कहकर उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर ऐसा किसलिए कहा है ?

समाधान-- जिस प्रकार आहार आदि पर्याप्तियोंका उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही प्रारम्भ होता है उस प्रकार आयुबन्धका प्रारम्भ नहीं होता किन्तु उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अपने जघन्य जीवित रहनेके दो त्रिभाग जाकर एक त्रिभाग शेष रहने पर आयुबन्ध होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए कहा है ।

यहां पर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते हैं । यथा- तृतीय त्रिभागके प्रथम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले जीव यद्यपि अनन्त हैं तो भी आगेके जीवोंको देखते हुए थोड़े हैं । दूसरे समयमें आयुका बन्ध करनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक जीव आयुका बन्ध करते हैं । उसके बाद अनन्तर उपरिम समयोंमें विशेष हीन विशेष हीन जीव आयुका बन्ध करते हैं । इस प्रकार यह क्रम सूक्ष्म निगोद

अपज्जत्ताणं असंखेपद्धाए पढमसमओ त्ति । एत्थ जवमज्झस्स हेट्ठा आवलियाए असंखेज्जदिभागो उवरि अंतोमुहुत्तं एगगुणहाणिअद्धाणं णाणागुणहाणिसलागाओ च आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति के वि आइरिया भणंति । के वि पुण एत्थ एगं पि दुगुणवड्ढिपमाणं णत्थि त्ति भणंति ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणमाउअ-बंधजवमज्झं ॥ ६५५ ॥

एत्थ जधा सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणमाउअबंधजवमज्झस्स परूवणा कदा तहा कायव्वा । णवरि सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झस्स जहण्णट्ठाणादो हेट्ठा आवलि० असंखे०भागमेत्तट्ठाणाणि ओसरिदूण बादरणिगोदअपज्जत्ताणं पढमं आउअबंधट्ठाणं होदि । सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झस्स चरिमट्ठाणादो उवरि आवलियाए असंखे०-भागट्ठाणाणि गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्ताणं जवमज्झस्स चरिमट्ठाणं होदि । एवं जवमज्झदेसस्स वि वत्तव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरण-जवमज्झं ॥ ६५६ ॥

तदो अंतोमुहुत्तमिदि वुत्ते उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव खुद्दाभवग्गहणचरिम-

---

अपर्याप्तकोंके आसंक्षेपाद्धाके प्रथम समयके प्राप्त होने तक चालू रहता है । यहां पर एकगुण-हानिका अध्वान यवमध्यके नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है और ऊपर अन्तर्मुहूर्त-प्रमाण है । तथा नानागुणहानिशलाकायें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं । परन्तु कितने ही आचार्य यहां पर एक भी द्विगुणवृद्धिका प्रमाण नहीं है ऐसा कहते हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका आयुबन्ध यवमध्य होता है । ६५५ ।

यहां पर जिस प्रकार सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्त जीवोंके आयुबन्धयवमध्यका कथन किया है उस प्रकार करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तके यवमध्यके जघन्य स्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान सरककर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका प्रथम आयुबन्धस्थान होता है । तथा सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यके अन्तिम स्थानसे ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यका अन्तिम स्थान होता है । इसी प्रकार यवमध्यदेशका भी कथन करना चाहिए ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरणयवमध्य होता है । ६५६ ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर क्षुल्लकभव-

समओ त्ति ताव एत्तियमद्धाणं गंतूण मरणजवमज्झस्स पारंभो होदि त्ति घेत्तव्वं। एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे। तं जहा–खुद्दाभवग्गहणचरिमसमए मरंता जीवा अणंता वि होदूण उवरिमेहिंतो थोवा। तदणंतरउवरिमसमए मरंता जीव विसेसाहिया। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया मरंति जाव जवमज्झे त्ति। तेण परं विसेसहीणा होदूण मरंति जाव णिसेयखुद्दाभवग्गहणचरिमसमओ त्ति। एत्थ मरणजवमज्झस्स हेट्ठिमउवरिमअद्धाणं सव्वं णिसेयखुद्दाभवग्गहणस्स संखेज्जा भागा। किंतु हेट्ठा आवलि० असंखे०भागो उवरि अंतोमुहुत्तं। एत्थ वि गुणहाणिअद्धाण-णाणागुणहाणिसलागासु आइरियाणं पुव्वं व विप्पडिवत्ती परूवेयव्वा। एदेसिं तिण्ण जवमज्झाणमब्भंतरे एगा वि दुगुणवड्ढी णत्थि एसो अत्थो जुत्तिसंतो। कुदो? सुत्तम्मि णाणागुणहाणिसलागाणमेगगुणहाणिअद्धाणस्स च पमाणपरूवणाभावादो। ण च संतमत्थं सुत्तं वक्खाणाणि वा ण परूवेंति, विरोहादो*।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरण-जवमज्झं। ६५७।

जहा सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झस्स परूवणा कदा तहा

ग्रहणके अन्तिम समय तक इतना स्थान जाकर मरणयवमध्य का प्रारम्भ होता है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। यहाँ पर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते है। यथा– क्षुल्लकभवग्रहणके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीव अनन्त होकर भी आगेके जीवोंसे स्तोक होते है। उससे अनन्तर उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक होते हैं। इस प्रकार यवमध्यके प्राप्त होने तक मरनेवाले जीव प्रति समयमें विशेष अधिक विशेष अधिक होते हैं। उसके बाद निषेक क्षुल्लकभवग्रहणके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक प्रत्येक समयमें विशेष हीन विशेष हीन जीव मरते हैं। यहाँ पर मरण यवमध्यका अधस्तन और उपरिम सब अध्वान निषेक क्षुल्लक भवग्रहणका संख्यात बहुभागप्रमाण होता है। किन्तु अधस्तन अध्वान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है और उपरिम अध्वान अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। यहाँ पर गुणहानिअध्वान और नानागुणहानिशलाकाओंके विषयमें आचार्योंमें विवाद है सो इसका कथन पहलेके समान करना चाहिए। इन तीनों ही यवमध्योंके बीचमें एक भी द्विगुणवृद्धि नहीं है यह अर्थ युक्तिको लिए हुए है, क्योंकि, सूत्रमें नानागुणहानिशलाकाओंके और एक गुणहानिअध्वानके प्रमाणका कथन नहीं किया है। सूत्र व व्याख्यान सद्रूप अर्थका व्याख्यान नहीं करते हैं ऐसा नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका मरणयवमध्य होता है ॥ ६५७ ॥

जिस प्रकार सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंके मरणयवमध्यका कथन किया है उस प्रकार

---

* ता० प्रतौ ' परूवेंति त्ति, ' विरोहादो ' इति पाठः।

बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं✱ पि मरणजवमज्झस्स परूवणा कायव्वा । णवरि बादरणिगोदअपज्जत्ताण मरणजवमज्झे पारंभिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणे गदे संते पच्छा सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झस्स पारंभो होदि । सुहुमणिगोदअपज्जत्तजवमज्झे समत्ते संते पच्छा उवरि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तद्धाणं गंतूण बादरणिगोदअपज्जत्ताणं मरणजवमज्झं समप्पदि । के वि अंतोमुहुत्तमिदि भणंति । एवं दोण्णं जवाणं मज्झे देसपरूवणा जाणिदूण कायव्वा । जहण्णाउअम्मि संचय गदसुहुमणिगोदअपज्जत्तएसु कालं कादूण णिट्ठिदेसु जहण्णाउअम्मि संचयं गदबादर-णिगोदअपज्जत्ता पच्छा कालं काऊण समप्पंति त्ति भणिदं होदि ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं णिव्वत्ति-ट्ठाणाणि आवलि० असंखेज्ज० भागमेत्ताणि ॥ ६५८ ॥

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूणे त्ति वुत्ते मरणजवमज्झचरिमसमयादो उवरि अंतो-मुहुत्तं गंतूण णिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति त्ति ण घेत्तव्वं । किंतु उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तं गंतूण मरणजवमज्झचरिमसमयप्पहुडि णिव्वत्तिट्ठाणाणि उवरि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि होंति त्ति घेत्तव्वं । कुदो ? सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ताआउअस्स णिसेयट्ठिदिवियप्पाणं णिव्वत्तिट्ठाणत्तब्भुवगमादो☼ । तं जहा- सुहुमणिगोदजीव—

बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके भी मरणयवमध्यका कथन करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि बादर निगोद अपर्याप्तकोंके मरणयवमध्यको प्रारम्भ करके आवलिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण स्थान जाने पर बादमें सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यका प्रारम्भ होता है । सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके यवमध्यके समाप्त होनेपर बादमें ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान जाकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंका मरण यवमध्य समाप्त होता है । यहां कितने ही आचार्य अन्तर्मुहूर्त काल कहते हैं । इस प्रकार दोनों यवोंके मध्यमें देशप्ररूपणा जानकर करनी चाहिए । जघन्य आयुके भीतर संचित हुए बादर निगोद अपर्याप्तकोंके मरकर समाप्त होनेके बाद जघन्य आयुके भीतर संचित हुए बादर निगोद अपर्याप्त जीव मरकर समाप्त होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते हैं ॥ ६५८ ॥

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर ऐसा कहने पर मरणयवमध्यके अन्तिम समयसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर निर्वृत्तिस्थान होते हैं ऐसा नहीं ग्रहण करना चाहिए । किन्तु उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त जाकर मरणयवमध्यके अन्तिम समयसे लेकर निर्वृत्तिस्थान ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकी आयुके जो निषेकस्थितिविकल्प हैं उन्हें निर्वृत्तिस्थानरूपसे स्वीकार किया है ।

☼ अ० का० प्रत्योः '–णिगोदआज्जत्ताणं' इति पाठः ।

✱ ता० प्रतौ 'णिव्वत्तिट्ठाणतुवगमादो' इति पाठः ।

अपज्जत्तयस्स सव्वजहण्णं णिसेयखुद्दाभवग्गहणं तमेगं णिव्वत्तिट्ठाणं । पुणो जं समउत्तरं णिसेयखुद्दाभवग्गहणं तं बिदियणिव्वत्तिट्ठाणं । जं दुसमउत्तरं णिसेयखुद्दाभवग्गहणं तं तदियणिव्वत्तिट्ठाणं । एवं तिसमयउत्तरादिकमेण* आवलि० असंखे०भागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणि णिरंतरमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ताणं सव्वुक्कस्सआउणिव्वत्तिट्ठाणं होदि त्ति सिद्धं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं* णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥ ६५९ ॥

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूणे त्ति वुत्ते एत्थ♠ वि उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव मरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति ताव एदमंतोमुहुत्तमेत्तद्धाणं गंतूण मरणजवमज्झचरिमसमयप्पहुडि उवरि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि बादरणिगोदजीवअपज्जत्ताणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं । णवरि एदाणि बादरणिगोदअपज्जत्तणिव्वत्तिट्ठाणाणि सुहुमणिगोदअपज्जत्तउक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणादो उवरि आवलि० असंखे०भागमेत्तमद्धाणं* गंतूण ट्ठिदाणि त्ति घेत्तव्वं । कुदो एवं णव्वदे ? तत्तो पच्छा एदस्स सुत्तस्स णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो ।

यथा– सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवका सबसे जघन्य जो निषेक क्षुल्लकभवग्रहण है वह एक निर्वृत्तिस्थान है । पुनः जो एक समय अधिक क्षुल्लकभवग्रहण है वह दूसरा निर्वृत्तिस्थान है । जो दो समय अधिक निषेक क्षुल्लक भवग्रहण है वह तिसरा निर्वृत्तिस्थान है । इस प्रकार एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान निरन्तर ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंका सर्वोत्कृष्ट आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है यह सिद्ध हुआ ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते हैं ॥ ६५९ ॥

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर ऐसा कहने पर यहाँ भी उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर मरणयवमध्यके अन्तिम समयतक यह अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान जाकर मरणयवमध्यके अन्तिम समयसे लेकर ऊपर बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते हैं ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए । इतनी विशेषता है कि बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंके ये निर्वृत्तिस्थान सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थानसे ऊपर आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर स्थित हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए ।

See पृ. ५१३

शंका–– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान–– क्योंकि, उसके बाद इस सूत्रका निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है ।

---

* ता० का० प्रत्योः ' एवं तिसमउत्तरादिकमेण ' इति पाठः । ♣ ता० प्रतौ ' बादरणिगोदअपज्जत्तयाणं ' इति पाठः । ♠ ता० प्रतौ ' गंतूणे त्ति एत्थ ' इति पाठः । * का० प्रतौ ' मेत्तद्धाणं ' इति पाठः ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं ॥६६०॥

बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्सणिव्वत्तिमेत्तमद्धाणं उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि उवरि गंतूण सव्वबादरसुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं णिव्वत्तीए अंतरं होदि। बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्साउआदो उवरि सव्वेसिमपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं णत्थि त्ति भणिदं होदि। कथमेदं णव्वदे? 'सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं' इदि वयणादो। जदि पंचिंदियअपज्जत्तादीणमुक्कस्साउअं बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्साउआदो अहियं होज्जतो 'सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं' त्ति वयणं णिरत्थयं जाएज्ज। ण, ण च एवं सुत्तस्स णिरत्थयं, विरोहादो*। एदेण णव्वदे जहा सव्वेसिमपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं सरिसं ति। एवस्स अंतरस्स पमाणमंतोमुहुत्तं कुदो णव्वदे? अविरुद्धाइरियवयणादो। एत्तियमेत्तमंतरिदूण उवरि ओरालियसरीरस्स जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि त्ति घेत्तव्वं। एगो बादरणिगोदअपज्जत्तएसु दीहाउएसु जीवो उववण्णो। अण्णेगो जीवो तम्हि चेव समए सुहुमणिगोदपज्जत्तएसु सव्वजहण्णाउएसु उववण्णो। पुणो एसो सुहुमणिगोदपज्जत्तो जाव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयदो ण होदि ताव पुव्वं चेव बादरणिगोदअपज्जत्तो अंतोमुहुत्तमत्थि त्ति कालं कादूण भवांतरं गच्छदि त्ति भणिदं होदि।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है।६६०।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्वृत्तिप्रमाण स्थान ऊपर जाकर बादर निगोद अपर्याप्त और सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है। बादर निगोद अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयुसे ऊपर सब अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु नहीं है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है इस वचनसे जाना जाता है।

यदि पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त आदिकी उत्कृष्ट आयु बादर निगोद अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयुसे अधिक होवे तो सब जीवोंकी निर्वृत्तिका अन्तर होता है यह वचन निरर्थक हो जाता। परन्तु इस प्रकार सूत्र निरर्थक नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध आता है। इससे जाना जाता है कि सब अपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु समान होती है।

शंका-- इस अन्तरका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है।

इतना अन्तर देकर ऊपर औदारिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है ऐसा यहां पर ग्रहण करना चाहिए। दीर्घ आयुवाले बादर निगोद अपर्याप्तकोंमें एक जीव उत्पन्न हुआ। तथा अन्य एक जीव उसी समय सबसे जघन्य आयुवाले सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंमें उत्पन्न हुआ। पुनः यह सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव जबतक शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त नहीं होता है उसके पूर्व तक ही बादर निगोद अपर्याप्त सम्बन्धी अन्तर्मुहूर्त है इसलिए वह मरकर भवान्तरमें चला जाता है

* का० प्रतौ 'णिरत्थयविरोहादो' इति पाठः।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि भवंति ॥६६१॥

इमाणि उवरि भणिस्समाणाणि पढमदाए पढमं चेव आवासयाणि होंति । केसिमेदाणि पढमं चेव आवासयाणि? पज्जत्तजीवाणं । ण च अपज्जत्ताणं सरीराहीणं पज्जत्तिट्ठाणाणि॑ संभवंति, अपज्जत्तणामकम्मोदयपरतंत्ताणं पज्जत्तभावविरोहादो ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥६६२॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि बादरणिगोदअपज्जत्तउक्कस्साउअमेत्तं पुणो अण्णेगमंतोमुहुत्तमेत्तं च उवरि गंतूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि चेव होंति वड्ढिमाणि ऊणाणि वा ण होंति त्ति भणिदं होदि। सरीरणिव्वत्तिट्ठाणं णाम किं वुत्तं होदि ? सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तिणिव्वत्ती॑ सरीरणिव्वत्तिट्ठाणं णाम । आहारपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणाणि किण्ण परूविदाणि ? ण, तेसिं सरीरपज्जत्तीए अंतब्भावेण पुधपरूवणाकरणादो । तेसिं तिण्णं सरीराणं

वर्गपर्यंत — आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

वहां सर्व प्रथम ये आवश्यक होते हैं ॥ ६६१ ॥

ये ऊपर कहे जानेवाले आवश्यक पढमदाए अर्थात् पहले ही होते हैं ।

शंका– किनके ये सर्व प्रथम आवश्यक होते हैं ?

समाधान– पर्याप्त जीवोंके होते हैं । यह कहना ठीक नहीं है कि अपर्याप्त जीवोंके शरीर आदिके पर्याप्तिस्थान सम्भव हैं, क्योंकि, वे अपर्याप्त नामकर्मके उदयके अधीन होते हैं, इसलिए उनके पर्याप्तभावके होनेमें विरोध है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थान होते हैं ॥ ६६२ ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद अपर्याप्तकोंके उत्कृष्ट आयुप्रमाण तथा अन्य एक अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ऊपर जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं । न वृद्धिको लिए होते हैं न कम ही होते हैं यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

शंका– शरीरनिर्वृत्तिस्थान इसका क्या तात्पर्य है ?

समाधान–(शरीरपर्याप्तिकी निर्वृत्तिका नाम शरीरनिर्वृत्तिस्थान है ।)

शंका– आहारपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थान क्यों नहीं कहे ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उनका शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव हो जानेके कारण उनका अलगसे कथन नहीं किया है ।

॑ ता० प्रतौ ' पज्जत्तट्ठाणाणि ' इति पाठः । ॒ अ०का०प्रत्योः ' पज्जत्ती णिव्वत्ती ' इति पाठः ।

णिव्वत्तिट्ठाणाणि सरिसाणि ण होंति त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमं विसेसाहियाणि ॥ ६६३ ॥

जहाकमेण णिद्दिट्ठपरिवाडीए विसेसाहियाणि । तं जहा– एक्को जीवो तिरिक्खेसु♥ मणुस्सेसु वा उववण्णो । पुणो तम्हि चेव समए अण्णेगो जीवो वेवेसु णेरइएसु वा उववण्णो♠ । पुणो तम्हि चेव समए अण्णेगेण पमत्तसंजदेण आहारसरीरमुट्ठावेदुमाढत्तं । तदो एदे तिण्णि जणा एगसमए चेव आहारसरीरवग्गणादो पदेसपिंडं घेत्तूण सगसग-छपज्जत्तीओ पढमसमयप्पहुडि णिव्वत्तंति✡ । एवं णिव्वत्तयमाणाणं♠ जहण्णणिव्वत्ति-कालो वि अत्थि उक्कस्सणिव्वत्तिकालो वि अत्थि । तत्थाहारसरीरस्स जहण्णणिव्वत्ति-अद्धा⊕ थोवा । वेउव्वियसरीरस्स जहण्णणिव्वत्तिअद्धा विसेसाहिया । ओरालियस-रीरस्स जहण्णणिव्वत्तिअद्धा⊛ विसेसाहिया । तेण कारणेण आहारसरीरस्स सरीर-पज्जत्तीए जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं पुव्वं चेव होदि । पुणो एदम्हादो समउत्तरं पि आहा-रसरीरणिव्वत्तिट्ठाणमत्थि । एदम्हादो वि बिसमयउत्तरं पि आहारणिव्वत्तिट्ठाणं अत्थि ।

उन तीन शरीरोंके निर्वृत्तिस्थान समान नहीं होते इस बातका ज्ञान करानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके यथाक्रमसे विशेष अधिक हैं ॥ ६६३ ॥

यथाक्रमसे अर्थात् निर्दिष्ट की गई परिपाटीके अनुसार विशेष अधिक हैं । यथा– एक जीव तिर्यञ्चोंमें या मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । पुनः उसी समय अन्य एक जीव देवों या नार-कियोंमें उत्पन्न हुआ । पुनः उसी समय अन्य एक जीवने आहारकशरीरको उत्पन्न करनेके लिए प्रारम्भ किया । अतः ये तीनों जीव एक समयमें ही आहारकशरीरवर्गणामेंसे प्रदेशपिण्डको ग्रहण कर अपनी अपनी छह पर्याप्तियोंकी प्रथम समयसे लेकर रचना करते हैं । इस प्रकार रचना करनेवाले जीवोंका जघन्य निर्वृत्तिकाल भी होता है और उत्कृष्ट निर्वृत्तिकाल भी होता है । उनमेंसे आहारकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिकाल स्तोक होता है । उससे वैक्रियिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिकाल विशेष अधिक होता है । उससे औदारिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिकाल विशेष अधिक होता है । इस कारणसे आहारकशरीरकी शरीरपर्याप्तिका जघन्य निर्वृत्तिस्थान पहले ही होता है । पुनः इससे एक समय अधिक भी आहारकशरीरका निर्वृत्तिस्थान होता है । इससे दो समय अधिक भी आहारकशरीरका निर्वृत्तिस्थान होता है । इस प्रकार तीन समय अधिक

♥ ता० प्रतौ ' जीवा तिरिक्खेसु ' इति पाठः । ♠ ता० प्रतौ ' णेरइएसु उववण्णो ' इति पाठः ।
✡ ता० प्रतौ ' णिव्वत्तं ति ' इति पाठः । ♠ ता० प्रतौ ' णिव्वत्तयमाणाणं ' इति पाठः ।
⊕ ता० प्रतौ ' जहण्णणिव्वत्ती अद्धा ' इति पाठः । ⊛ ता० प्रतौ ' जहण्णणिव्वत्ती अद्धा ' इति पाठः ।

एवं तिसमउत्तरादिकमेण आवलियअसंखे० भागमेत्तआहारसरीरणिव्वत्तिट्ठाणेसु उप्पण्णेसु तत्थ वेउव्वियसरीरपज्जत्तीए सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तत्तो उवरि वेउव्वियआहारसरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखे०-मेत्तमद्धाणं सह गच्छंति । तदो उवरिमसमए ओरालियसरीरपज्जत्तीए सव्वजहण्ण-णिव्वत्तिट्ठाणं होदि । एत्तो प्पहुडि तिण्णं पि सरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणेसु समउत्तरादि-कमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु सह गदेसु आहारसरीरस्स सरीरपज्जत्ति-णिव्वत्तिट्ठाणमुक्कस्सं थक्कदि । पुणो जम्हि आहारसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कं तत्तो उवरि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु ओरालिय-वेउ-व्वियसरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं* थक्कदि । पुणो जम्हि वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कं । तत्तो प्पहुडि उवरि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरा-
मार्गदर्शक लियसरीरस्स उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । एदमेदेण कमेणुप्पण्णतिण्णिसरीरसव्वति-ट्ठाणाणि पत्तेयमावलि० असंखे०भागमेत्ताणि होदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि होंति। एदेण सुत्तेण कहिदत्थस्स णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

एत्थ अप्पाबहुअं-- सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिव्व-त्तिट्ठाणाणि ॥ ६६४ ॥

आदिके क्रमसे आहारकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके उत्पन्न होनेपर वहां वैक्रियिकशरीर पर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है। उसके आगे वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थान एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थान तक साथ जाते हैं। उससे उपरिम समयमें औदारिकशरीरपर्या-प्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है। उससे आगे तीनों ही शरीरोंके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक एक साथ जानेपर आहारकशरीरका उत्कृष्ट शरीरपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। पुनः जिस स्थानमें आहा-रकशरीरका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है उससे आगे एक समय अधिक आदिके क्रमसे औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट स्थान श्रान्त होता है। पुनः जिस स्थानमें वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है उससे लेकर आगे एक समय अधिक आदिके क्रमसे आव-लिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। इस प्रकार इस क्रमसे उत्पन्न हुए तीनों शरीरोंके सब निर्वृत्तिस्थान प्रत्येक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होकर भी क्रमसे विशेष अधिक होते हैं। अब इस सूत्रद्वारा कहे गये अर्थका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं---

इनके विषयमें अल्पबहुत्व – औदारिक शरीरके निर्वृत्तिस्थान सबसे स्तोक

---

* ता० प्रतौ ' उक्कस्सट्ठाणं ' इति पाठः ।

कुदो ? वेउव्वियसरीरणिव्वत्तिट्ठाणमंतो पविसिय ओरालियसरीरजहण्ण-णिव्वत्तिट्ठाणमुप्पत्तीदो ओरालियसरीरस्स उवरिमणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो ओरालिय-णिव्वत्तिट्ठाणादो हेट्ठिमवेउव्वियसरीरणिव्वत्तिट्ठाणाणं विसेसाहियत्तदंसणादो ।

वेउव्वियसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ६६५ ।

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण । कारणं पुव्वमेव परूविदं ।

आहारसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥६६६॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण । आहारसरीरउक्कस्सणिव्वत्ति-ट्ठाणादो उवरिमवेउव्वियणिव्वत्तिट्ठाणेहि सुद्धहेट्ठिमआहारणिव्वत्तिट्ठाणेहि वा विसेसाहियाणि ।

प्रदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए* असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥ ६६७ ॥

ओरालियसरीरस्स उक्कस्ससरीरणिव्वत्तिट्ठाणादो अंतोमुहुत्तमेत्तअद्धाणं गंतूण तिण्णं सरीराणमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि होंति । सरीर-पज्जत्तीए पज्जत्तयदो होदूण जाव अंतोमुहुत्तं ण गदो ताव सव्वो जीवो इंदिय-पज्जत्तीए पज्जत्तयदो ण होदि त्ति भणिदं होदि ।

होते हैं ॥ ६६४ ॥

क्योंकि, वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थान भीतर प्रविष्ट होकर औदारिकशरीरका जघन्य निर्वृत्तिस्थान उत्पन्न होता है । तथा औदारिकशरीरके उपरिम निर्वृत्तिस्थानोंसे औदारिक-शरीरके निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा अधस्तन वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक देखे जाते हैं ।

वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । ६६५ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । कारणका कथन पहले ही किया है ।

आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । ६६६ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । आहारकशरीरके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थानकी अपेक्षा तथा उपरिम वैक्रियिकशरीरके निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा अथवा केवल अधस्तन आहारकशरीरके निर्वृत्तिस्थानोंकी अपेक्षा विशेष अधिक हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । ६६७ ।

औदारिकशरीरके उत्कृष्ट शरीरनिर्वृत्तिस्थानसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान जाकर तीन शरीरोंके इंद्रियोंके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं । शरीरपर्याप्तिसे पर्याप्त होकर जबतक अन्तर्मुहूर्त नहीं गया है तबतक सब जीवराशि इन्द्रियपर्याप्तिसे पर्याप्त नहीं होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

---

* का० प्रतौ '–द्वाणमावलि०' इति पाठः ।

ओरालिय--वेउव्विय--आहारसरीराणं जहाकमं विसेसाहियाणि ॥ ६६८ ॥

तं जहा-ओरालियसरीरउक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणादो सव्वजहण्णमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणं गंतूण आहारसरीरस्स सव्वजहण्णमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु आहार-सरीरिंदियणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो वेउव्वियसरीरस्स सव्वजहण्णमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । एत्तो प्पहुडि वेउव्विय-आहारसरीराणमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण उवरि गंतूण तदो ओरालियसरीरस्स सव्वजहण्णमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । पुणो ओरालिय वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु इंदियणिव्वत्तिट्ठाणेसु उवरि गदेसु आहार-सरीरस्स सव्वुक्कस्समिंदियणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । पुणो तदणंतरउवरिमसमयप्पहुडि समउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु ओरालियसरीर-वेउव्वियसरीराणमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स सव्वुक्कस्समिंदियणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि। तदो उवरि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु ओरालिय-सरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु सव्वुक्कस्समोरालियसरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तेणेदाणि अण्णोण्णं पेक्खिदूण जहाकमेण विसेसाहियाणि त्ति सिद्धं । एवस्सेव

ये इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके क्रमसे विशेष अधिक हैं ॥ ६६८ ।

यथा- औदारिकशरीरके उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थानसे सबसे जघन्य अन्तर्मुहूर्तमात्र अध्वान जाकर आहारकशरीरका सबसे जघन्य इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान होता है । उससे एक समय अधिक और दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आहारकशरीर सम्बन्धी इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके जानेपर वैक्रियिकशरीरका सबसे जघन्य इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान होता है । उससे आगे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान होने तक समय अधिक और दो समय अधिक आदिके क्रमसे ऊपर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान जाकर उसके आगे औदारिकशरीरका सबसे जघन्य इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान होता है । पुनः औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके एक समय अधिक और दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर जानेपर आहारकशरीरका सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान प्राप्त होता है । पुनः उसके आगे उपरिम समयसे लेकर एक समय अधिक आदिके क्रमसे औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर वैक्रियिकशरीरका सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान प्राप्त होता है । उसके आगे औदारिकशरीर इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक, दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होने पर औदारिकशरीरका सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान प्राप्त होता है । इसलिए इन्हें परस्पर देखते हुए ये यथाक्रमसे विशेष अधिक

सुत्तस्स णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एत्थ अप्पाबहुअं- सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स इंदिय-णिव्वत्तिट्ठाणाणि ॥ ६६९ ॥

कुदो ? साहाविया दो। ण च सहावो परपज्जणियोगारुहो, अव्ववत्थावत्तीदो।

वेउव्वियसरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।६७०।

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण । ओरालियउवरिमइंदियणि-व्वत्तिट्ठाणेहि ऊणवेउव्वियहेट्ठिमइंदियणिव्वत्तिट्ठाणेहि विसेसाहियाणि । एदमत्थपद-मुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

आहारसरीरस्स इंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ६७१ ।

केत्तियमेत्तेण ? आवलि० असंखे०भागमेत्तेण ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं आणापाण-भासामण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि ।। ६७२ ।।

ओरालियसरीरस्स उक्कस्सइंदियणिव्वत्तिट्ठाणादो उवरि अंतोमुहुत्तमेत्तम-द्धाणं गंतूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमाणापाणणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि०

है यह सिद्ध हुआ । अब इसी सूत्रका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं-

यहाँ अल्पबहुत्व-औदारिकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान सबसे थोड़े हैं ।६६९।

क्योंकि, ऐसा होना स्वाभाविक है । और स्वभाव दूसरेके प्रश्नके योग्य नहीं होता, क्योंकि, ऐसा होनेपर अव्यवस्थाकी आपत्ति आती है ।

वैक्रियिकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ।।६७०।।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके अधस्तन इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंमेंसे औदारिकशरीरके उपरिम इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानोंका कम कर देने पर जितने शेष रहते हैं उतने अधिक होते हैं । यह अर्थपद आगे सर्वत्र कहना चाहिए ।

आहारकशरीरके इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ।।६७१।।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके आनापान, भाषा और मननिर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।।६७२।।

औदारिकशरीरके उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त अध्वान जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें

असंखे० भागमेत्ताणि होंति । तदो ओरालियसरीरस्स उक्कस्सआणापाणणिव्वत्तिट्ठा-णादो अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण ओरालिय वेउव्विय-आहारसरीराणमा-[illegible] असंखे० भागमेत्ताणि मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति । तदो अंतोमुहुत्तमेत्तद्धाण-मुवरि गंतूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमावलि० असंखे० भागमेत्ताणि मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि होंति त्ति घेत्तव्वं ।

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणि जहाकमं विसेसा-हियाणि । ६७३ ।

ओरालियसरीरस्स सव्वुक्कस्सइंदियणिव्वत्तिट्ठाणादो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण आहा-रसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो समउत्तरादिक-मेण आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तेसु आहारसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्ति-ट्ठाणेसु उवरि गदेसु तदो वेउव्वियसरीरस्स सव्वजहण्णमाणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्ति-ट्ठाणं होदि । तत्तो उवरि वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण आवलि० असंखे० भागमेत्तेसु आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियस-रीरस्स सव्वजहण्णमाणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरिमोरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं तिण्हं पि समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखे० भाग-

---

भागप्रमाण होते हैं । फिर औदारिकशरीरके उत्कृष्ट आनापाननिर्वृत्तिस्थानसे अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान ऊपर जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आवलिके असं-ख्यातवें भागप्रमाण भाषानिर्वृत्तिस्थान होते हैं । फिर अन्तर्मुहूर्त मात्र अध्वान ऊपर जाकर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण मन-निर्वृत्तिस्थान होते हैं ऐसा यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए ।

ये निर्वृत्तिस्थान औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके क्रमसे विशेष अधिक होते हैं ॥ ६७३ ॥

औदारिकशरीरके सबसे उत्कृष्ट इन्द्रियनिर्वृत्तिस्थानसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारक-शरीरकी आनापानपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उससे आहारकशरीरकी आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ऊपर जाने पर उसके बाद वैक्रियिकशरीरकी सबसे जघन्य आनापानपर्याप्तिका निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके जानेपर औदारिकशरीरकी सबसे जघन्य आनापानपर्याप्तिका निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर इन तीनोंके ही एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्ति-

---

 का० प्रतौ ' उक्कस्सइंदियणिव्वत्तिट्ठाणादो ' इति पाठः ।

 का० प्रतौ ' सव्वजहण्णं णिव्वत्तिट्ठाणं ' इति पाठः ।

मेत्तेसु आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो आहारसरीरस्स उक्कस्सआणा-पाणपज्जत्तिणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं समउ-त्तराधिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु आणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो वेउव्वियसरीरस्स आणापाणपज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि समउत्तराधिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु ओरालियसरीरस्स आणापाण-पज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो ओरालियसरीरस्स उक्कस्सआणापाणपज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तेणेदाणि ट्ठाणाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि ।

तदो एदेसिमुक्कस्सट्ठाणेहिंतो उवरिमंतोमुहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स भासाप-ज्जत्तीए जहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि समउत्तराधिकमेण आवलि० असंखे०-भागमेत्तेसु आहारसरीरस्स भासापज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स भासापज्जत्तीए सव्वजहण्णणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि वेउव्वियआहारसरीराणं समउत्तराधिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु भासाणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालि-यसरीरस्स सव्वजहण्णं भासाणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं भासाणिव्वत्तिट्ठाणेसु आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु गदेसु आहार-सरीरस्स भासापज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो ओरालिय-वेउव्वि-यसरीराणं समउत्तराधिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु भासापज्जत्तीए

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

स्थानोंके जानेपर उसके बाद आहारकशरीरकी आनापानपर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आनापान पर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर उसके बाद वैक्रियिकशरीरकी आनापान पर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीरकी आनापानपर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर उसके बाद औदारिकशरीरका आनापानपर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । इसलिए ये स्थान क्रमसे विशेष अधिक हैं ।

अनन्तर इनके उत्कृष्ट स्थानोंसे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरकी भाषापर्याप्तिका जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । इसके बाद ऊपर आहारकशरीरके भाषापर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर वैक्रियिकशरीरकी भाषापर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भाषानिर्वृ-त्तिस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका सबसे जघन्य भाषानिर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थानोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर आहारकशरीरकी भाषापर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीरकी भाषापर्याप्तिके निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यतावें भागप्रमाण ऊपर जाने पर वैक्रियिकशरीरकी

णिव्वत्तिट्ठाणेसु उवरि गदेसु वेउव्वियसरीरस्स भासापज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि समयउत्तराधिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु भासापज्जत्तीए णिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स भासापज्जत्तीए उक्कस्सणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तेणेदाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि ।

मार्गदर्शक - आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज तदो ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरउक्कस्सभासापज्जत्तिट्ठाणाणमुवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स मणपज्जत्तीए सव्वजहण्णं णिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि समयउत्तराधिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु आहारसरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स सव्वजहण्णं मणणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि वेउव्वियआहारसरीराणं समयउत्तराधिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स सव्वजहण्णं मणणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । तदो उवरि ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं समयउत्तराधिकमेण आवलि० असंखे०भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु तदो आहारसरीरस्स उक्कस्समणणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं समयउत्तराधिकमेण आवलि० असंखेभागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्समणणिव्वत्तिट्ठाणं थक्कदि । तदो उवरि समयउत्तराधिकमेण आवलि०असंखे०भागमेत्तेसु मणणिव्वत्तिट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स उक्कस्सं मणणिव्वत्तिट्ठाणं[1] थक्कदि । एदाणि वि जहाकमेण

भाषापर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण भाषापर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके जानेपर औदारिकशरीरकी भाषापर्याप्तिका उत्कृष्ट निर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। इसलिए ये क्रमसे विशेष अधिक हैं।

पुनः औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके उत्कृष्ट भाषापर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरकी मनःपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । इसके बाद ऊपर आहारकशरीरके मनःनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर वैक्रियिकशरीरकी मनःपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर सम्बन्धी मनःपर्याप्ति निर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर औदारिकशरीरकी मनःपर्याप्तिका सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थान होता है । उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीर सम्बन्धी मनःनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर आहारकशरीरका उत्कृष्ट मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है। उसके बाद ऊपर औदारिकशरीर और वैक्रियिकशरीर सम्बन्धी मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जाने पर वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । उसके बाद एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका उत्कृष्ट मनःपर्याप्तिनिर्वृत्तिस्थान श्रान्त होता है । ये

[1] ता० प्रतौ ' सरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणं ' इति पाठः ।

सत्थाणे विसेसाहियाणि ।

एत्थ अप्पाबहुअं– सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स आणा-पाणभासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि ॥ ६७४ ॥

कारणं सुगमं ।

वेउव्वियसरीरस्स आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ ६७५ ॥

ओरालियसरीरस्स आणापाणणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो वेउव्वियसरीरस्स आणापाणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ओरालियसरीरस्स भासाणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो वेउव्वियसरीरस्स भासाणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ओरालियसरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो वेउव्वियसरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । सव्वत्थ विसेसपमाणमावलि० असंखेज्जदिभागो ।

आहारसरीरस्स आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ ६७६ ॥

वेउव्वियसरीरस्स आणापाणणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो आहारसरीरस्स आणापाणणिव्वत्तिट्ठाणाणि *विसेसाहियाणि । वेउव्वियसरीरस्स भासाणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो आहार-

---

भी स्वस्थानमें क्रमसे विशेष अधिक हैं ।

यहाँ अल्पबहुत्व– औदारिकशरीरके आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान सबसे स्तोक हैं ॥६७४॥

कारण सुगम है ।

वैक्रियिकशरीरके आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥६७५॥

औदारिकशरीरके आनापान निर्वृत्तिस्थानोंसे वैक्रियिकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । औदारिकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थानोंसे वैक्रियिकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । तथा औदारिकशरीरके मननिर्वृत्तिस्थानोंसे वैक्रियिकशरीरके मननिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । सर्वत्र विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

आहारकशरीरके आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं ॥६७६॥

वैक्रियिकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थानोंसे आहारकशरीरके आनापाननिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थानोंसे आहारकशरीरके भाषानिर्वृत्तिस्थान

---

* ता० प्रतौ ' आणापाणभासाणिव्वत्तिट्ठाणाणि ' इति पाठः ।

सरीरस्स मासाणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । वेउव्वियसरीरस्स मणणिव्वत्ति-ट्ठाणेहिंतो आहारसरीरस्स मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । सव्वत्थ विसेस-पमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागो । सरीरिंदियपज्जत्तीणं पुध परूवणं किमट्ठं कदं? एदं सत्थाणअप्पाबहुअं चेव परत्थाणप्पाबहुअं ण होदि त्ति जाणावणट्ठं । सव्वेसिमेगवारेण णिद्देसे कीरमाणे पुण ओरालियसरीरस्स सरीरिंदिय-आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणमुवरि वेउव्वियसरीरस्स सरीरिंदिय-आणापाण-भासा-मण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि किण्ण विसेसाहियाणि त्ति आसंका उप्पज्जेज्ज । तण्णिराकरणट्ठ पुणो णिद्देसो कदो । ओरालियसरीरस्स पुण सरीरिंदिय-आणापाण-भासा-मणणिव्व-त्तिट्ठाणाणि अण्णोण्णेण सरिसाणि । कुदो एवं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । एवं सव्वसरीरपज्जत्तीणं पि सत्थाणे सरिसत्तं भाणियव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥ ६७७ ॥

तिण्णं सरीराणमुक्कस्समणणिव्वत्तिट्ठाणाणमुवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरी-राणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि होंति । किं णिल्लेवण-

---

विशेष अधिक हैं । वैक्रियिकशरीरके मनोनिर्वृत्तिस्थानोंसे आहारकशरीरके मनोनिर्वृत्तिस्थान विशेष अधिक हैं । सर्वत्र विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

शंका– शरीरपर्याप्ति और इन्द्रियपर्याप्तिकी अलगसे प्ररूपणा किसलिए की है ?

समाधान– यहां पर स्वस्थान अल्पबहुत्व ही है, परस्थान अल्पबहुत्व नहीं है इस बातका ज्ञान करानेके लिए उनकी अलगसे प्ररूपणा की है । सबका एकबार निर्देश करने पर पुनः औदारिकशरीरके शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर वैक्रियिक-शरीरके शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान क्यों विशेष अधिक नहीं हैं ऐसी आशंका उत्पन्न हो सकती थी अतः उसका निराकरण करनेके लिए फिरसे निर्देश किया है ।

परन्तु औदारिकशरीरके शरीर इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मनोनिर्वृत्तिस्थान परस्परमें समान हैं ।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान– अविरुद्ध आचार्यवचनसे जाना जाता है ।

इसीप्रकार सब शरीरोंकी पर्याप्तियोंकी भी स्वस्थानमें समानता कहलानी चाहिए ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६७७ ॥

तीन शरीरोंके उत्कृष्ट मनोनिर्वृत्तिस्थानोंके ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर तीन शरीरोंके निर्ले-पनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।

ट्ठाणं णाम? जत्थ अप्पज्जत्तिणिमित्तं पोग्गलाणमागमो थक्कदि तण्णिल्लेवणट्ठाणं णाम। छसु पज्जत्तीसु णिप्पण्णासु पुणो जो घेप्पदि पोग्गलपिंडो सो सरीरस्स चेव होदि ण पज्जत्तीणं, णिप्पण्णाणं णिप्पत्तिविरोहादो त्ति। एत्थ परिहारो उच्चदे। तं जहा— आगदपोग्गलेसु अंतोमुहुत्तेण सत्तधादुसरूवेण परिणदेसु सरीरपज्जत्ती णाम। ण च तम्हि काले♣ सरीरणिप्पत्ती अत्थि✡ चम्म-रोम-णह कालेज्ज-फुप्फुसादीणं णिप्पत्तीए तदो अभावादो। सच्छेसु♣ पोग्गलेसु मिलिदेसु तब्बलेण बज्झत्थग्गहण-सत्तीए समुप्पत्ती✡ इंदियपज्जत्ती णाम। ण च तम्हि काले बज्झिंदियाणं♠ णिप्पत्ती अत्थि, बज्झिंदिएसु अट्ठणिप्पण्णेसु चेव सगसगविसयग्गहणसत्तीए समुप्पत्तीदो। ण च अंतोमुहुत्तकालेणेव अक्खिपुड-चक्खु[※] गोलियादीणं णिप्पत्ती अत्थि, मोरंडयरसेसु तहाणुवलंभादो। एवं सेसपज्जत्तीओ वि सगसगदव्वेसु अट्ठणिप्पण्णेसु चेव णिप्पज्जंति त्ति वत्तव्वं। तासिं दव्वपज्जत्तीणमट्ठणिप्पण्णाणं णिप्पत्तिणिमित्तं पोग्गलपिंडो पज्जत्तयदस्स♠ वि आगच्छदि। एवमागच्छमाणे जत्थ पंचण्णं पज्ज-त्तीणं दव्वुवयरणाण◆मक्कमेण णिप्पत्ती होदि तण्णिल्लेवणट्ठाणं णाम। जेण छप्प-पज्जत्तिमयं सरीरं तेण णिल्लेविदे संते पच्छा आगच्छमाणपोग्गलक्खंधो वि छण्णं पज्जत्तीणं चेव आगच्छदि त्ति णिल्लेवण—

शंका — निर्लेपनस्थान किसे कहते हैं ? जहां पर छह पर्याप्तियोंके लिए पुद्गलोंका आना रुक जाता है उसे निर्लेपनस्थान कहते हैं। इसलिए छह पर्याप्तियोंके निष्पन्न होने पर पुनः जो पुद्गलपिण्ड ग्रहण किया जाता है वह शरीरका ही होता है पर्याप्तियोंका नहीं होता, क्योंकि, निष्पन्नोंकी निष्पत्ति माननेमें विरोध आता है ?

समाधान — यहां पर इस शंकाका समाधान करते हैं। यथा— आये हुए पुद्गलोंके अन्तर्मुहूर्त कालद्वारा सात धातुरूपसे परिणत होने पर शरीरपर्याप्ति कहलाती है। उस कालमें शरीरकी निष्पत्ति नहीं है, क्योंकि, उससे चर्म, रोम, नख, कलेजा और फुप्फुस आदिकी निष्पत्ति नहीं होती। स्वच्छ पुद्गलोंके मिलने पर उनके बलसे बाह्य अर्थके ग्रहण करनेकी शक्तिका उत्पन्न होना इन्द्रियपर्याप्ति कहलाती है। उस कालमें बाह्य इन्द्रियोंकी निष्पत्ति नहीं होती है, क्योंकि, इन्द्रियोंके अर्ध निष्पन्न होने पर ही अपने अपने विषयको ग्रहण करनेकी शक्ति उत्पन्न हो जाती है। और अन्तर्मुहूर्त कालके द्वारा ही अक्षिपुट और चक्षुगोलक आदिकी निष्पत्ति हो नहीं सकती, क्योंकि, मोर जो अण्डे देती है उनसे रसों में उस प्रकारकी उपलब्धि नहीं होती। इसी प्रकार शेष पर्याप्तियां भी अपने अपने द्रव्योंके अर्ध निष्पन्न होने पर ही निष्पन्न हो जाती हैं ऐसा कहना चाहिए। उन अर्धनिष्पन्न द्रव्यपर्याप्तियोंकी निष्पत्तिके लिए पर्याप्त जीवके भी पुद्गलपिंड आता है। इस प्रकार पुद्गल पिण्डके आने पर जहां पर पांच पर्याप्तियोंके द्रव्य उपकरणोंकी युगपत् निष्पत्ति होती है उसे निर्लेपनस्थान कहते हैं। यतः शरीर छह पर्याप्तिमय है, अतः निर्लेपित होने पर बादमें आनेवाला पुद्गलस्कन्ध भी छह पर्याप्तियोंके लिये ही आता है, इसलिए वहां

♣ ता० प्रतौ णाम. तम्हि काले इति। ✡ ता० प्रतौ अ (ण) त्थि इति पाठः। ♣ का० प्रतौ सव्वेसु इति पाठः। ✡ ता० प्रतौ समुप्पज्जंती इति पाठः। ♠ का० प्रतौ बज्जिंदियाणं इति पाठः। ※ म० प्रतिपाठोऽयम्। ता० प्रतौ अत्थि चक्खु— का० प्रतौ अत्थिकुडचक्खु— इति पाठः। ♠ म० प्रतिपाठोऽयम्। प्रत्योः पज्जयदस्स इति पाठः। ◆ का० प्रतौ दव्वयरणाण इति पाठः।

ट्ठाणाभावो ण वोत्तुं सक्किज्जदे, पुव्वमागदपोग्गलक्खंधेहि व पच्छा गहिदपोग्गलक्खंधेहि दव्वपज्जत्तीणं संठाणंतरस्स अवयवंतरस्स वा अणुवलंभेण तेसिं तत्थ वावाराभावादो। तेण कारणेण णिल्लेविदे संते जं पोग्गलगहणं सरीरट्ठं पुव्विल्लं पज्जत्तिणिमित्तमिदि[1] वुत्ते परमत्थदो पुण सव्वं पोग्गलग्गहणं सरीरट्ठं चेव, सरीरवदिरित्तपज्जत्तीणमभावादो।

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमेण विसेसाहियाणि ॥ ६७८ ॥

ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणमुक्कस्समणिव्वत्तिट्ठाणेहिंतो उवरि अंतोमुहुत्तं गंतूण आहारसरीरस्स जहण्णा णिल्लेवणट्ठाणं होदि। तदो समउत्तराविकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु आहारसरीरणिल्लेवणट्ठाणेसु उवरि गदेसु वेउव्वियसरीरस्स जहण्णणिल्लेवणट्ठाणं होदि। तदो वेउव्विय-आहारसरीराणं समउत्तराविकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स जहण्णणिल्लेवणट्ठाणं विस्सदि। तदो समउत्तराविकमेण तिण्णं सरीराणं णिल्लेवणट्ठाणेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु गदेसु आहारसरीरस्स उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं थक्कदि। तदो समउत्तराविकमेण उवरि ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं

निर्लेपनस्थानोंका अभाव कहना शक्य नहीं है, क्योंकि, पहले आए हुए पुद्गलस्कन्धोंके समान बादमें ग्रहण किये गये पुद्गलस्कन्धोंद्वारा द्रव्यपर्याप्तियोंके संस्थानान्तरकी या अवयवान्तरकी उपलब्धि नहीं होनेसे उनका उनके निर्माणमें व्यापार नहीं होता। इस कारण निर्लेपित होने पर जो पुद्गलोंका ग्रहण होता है वह शरीरके लिए होता है या पूर्व पर्याप्तियोंके लिए होता है ऐसा पूछने पर उसका उत्तर यह है कि परमार्थसे सब पुद्गलोंका ग्रहण शरीरके लिए ही होता है, क्योंकि, शरीरको छोडकर पर्याप्तियोंका अभाव है।

वे निर्लेपनस्थान औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके क्रमसे विशेष अधिक हैं ॥ ६७८ ॥

औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके उत्कृष्ट मनोनिर्वृतिस्थानोंके आगे अन्तर्मुहूर्त जाकर आहारकशरीरका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है। उसके बाद आहारकशरीरसम्बन्धी निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ऊपर जाने पर वैक्रियिक शरीरका जघन्य निर्लेपनस्थान होता है। उसके बाद वैक्रियिक और आहारक शरीरसम्बन्धी निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर औदारिकशररीका जघन्य निर्लेपनस्थान दिखलाई देता है। उसके बाद तीनों शरीरोंके निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर आहारकशरीरका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान प्राप्त होता है। उसके बाद औदारिकशरीर

---

[1] का० प्रतौ 'पज्जत्तणिमित्तमिदि' इति पाठः।

णिल्लेवणट्ठाणेसु आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तेसु गदेसु वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं थक्कदि* । तदो समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेसु णिल्लेवणट्ठाणेसु गदेसु ओरालियसरीरस्स उक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं थक्कदि । तेण जहाकमं विसेसाहियाणि ।

एत्थ अप्पाबहुगं– सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि ॥ ६७९ ॥

कारणं सुगमं ।

वेउव्वियसरीरस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।६८०।

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

आहारसरीरस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । ६८१ ।

केत्तियमेत्तेण? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण । एवं गंथमस्सिदूण पढमसंदिट्ठी परूवेयव्वा । संपहि बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ते अस्सिदूण मरणजवमज्झादीणं परूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि ।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि होंति ॥ ६८२ ॥

और वैक्रियिकशरीरके निर्लेपनस्थानोंके एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानेपर वैक्रियिकशरीरका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान प्राप्त होता है । उसके बाद एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोंके जाने पर औदारिकशरीरका उत्कृष्ट निर्लेपनस्थान प्राप्त होता है । इसलिए ये यथाक्रम विशेष अधिक हैं ।

यहांपर अल्पबहुत्व– औदारिकशरीरके निर्लेपनस्थान सबसे स्तोक हैं ।६७९।

कारणका कथन सुगम है ।

वैक्रियिकशरीरके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ६८० ॥

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं ।

आहारकशरीरके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ६८१ ॥

कितनेमात्र अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक हैं । इस प्रकार ग्रंथका आश्रय लेकर प्रथम संदृष्टिका कथन करना चाहिए । अब बादर निगोद पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका आश्रय लेकर मरणयवमध्य आदिका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं--

वहां सर्वप्रथम ये आवश्यक होते हैं ॥ ६८२ ॥

---

* का० प्रतौ '–णिल्लेवणं थक्कदि' इति पाठः ।

बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं* पढमदाए पढमं चेव एदाणि भण्णमाणावास-याणि होंति, सेसाणि पच्छा होंति त्ति भणिदं होदि ।

तदो जवमज्झं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्ति-ट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ॥ ६८३ ॥

बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं सव्वजहण्णाउअं तिण्णि भागे कादूण तत्थ पढम-तिभागस्स संखेज्जदिभागे जाणि आवासयाणि ताणि भणिस्सामो । तदो जवमज्झं गंतूणे त्ति भणिदे उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि पज्जत्तीणं पारंभं कादूण तदो अंतोमुहुत्त-मुवरि जहा जवमज्झं तहा गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ताणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आव-लियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि होंति । का णिव्वत्ती णाम? चदुण्णं पज्जत्तीणं णिल्ले-वणं णिव्वत्ती । णिव्वत्ति त्ति भणिदे एत्थ जवमज्झकमो वुच्चदे । तं जहा- चत्तारि पज्जत्तीओ सव्वलहुएण कालेण णिव्वत्तया जीवा थोवा । तदुवरिमसमए णिव्वत्तया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोदणिल्लेव-णट्ठाणजीवजवमज्झे त्ति । तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव चदुण्णं पज्जत्तीणमुक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं ति । जवमज्झस्स हेट्ठिम-उवरिमाणि चदुण्णं पज्जत्तीणं-

---

बादर निगोद पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके पढमदाए अर्थात् प्रथम ही ये कहे जानेवाले आवश्यक होते हैं। शेष आवश्यक बादमें होते है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

उसके बाद यवमध्य जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६८३ ॥

बादर निगोद पर्याप्त और सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंकी सबसे जघन्य आयुके तीन भाग करके वहाँ प्रथम त्रिभागके असंख्यातवें भागमें जो आवश्यक होते हैं उन्हें कहेंगे । उसके बाद यवमध्य जाकर ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर पर्याप्तियोंका प्रारम्भ करके उसके बाद अन्तर्मुहूर्त ऊपर जिस प्रकार यवमध्य है उस प्रकार जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ।

शंका-- निर्वृत्ति किसे कहते हैं ?

समाधान--चार पर्याप्तियोंके निर्लेपनको निर्वृत्ति कहते है ।

निर्वृत्ति ऐसा कहने पर यहाँ यवमध्यके क्रमका कथन करते हैं । यथा- चार पर्याप्तियोंके सबसे अल्प कालके द्वारा निर्वृत्तक जीव सबसे थोडे हैं । उसके उपरिम समय में निर्वृत्तक जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सूक्ष्म निगोद निर्लेपनस्थान जीव यवमध्यके प्राप्त होने तक जीव विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं । उसके बाद चार पर्याप्तियोंके उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानके

---

* ता० प्रतौ ' बादरसुहुमणिगोदपज्जत्ताणं ' अयं पाठः सूत्रत्वेन निर्दिष्टः ।

णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि । एत्थ एगा वि गुणहाणी णत्थि । कुदो? सुत्ते गुणहाणिपमाणपरूवणाभावादो ।

तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्ति-ट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥ ६८४ ॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदसव्वजहण्णणिल्लेवणट्ठाणादो हेट्ठा आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तमोसरिदूण बादरणिगोदपज्जत्तजीवा चदुण्णं पज्जत्तीणं णिव्वत्तया थोवा । तदुवरिमसमए णिव्वत्तया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्त-णिल्लेवणट्ठाणाणि त्ति । ताधे सुहुमणिगोदपज्जत्तसव्वजहण्णणिल्लेवणट्ठाणेण बादर-णिगोदपज्जत्तणिल्लेवणट्ठाणं सरिसं होदि । तदुवरिमसमए बादरणिगोदपज्जत्तजीवा चदुण्णं पज्जत्तीणं णिव्वत्तया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तजवमज्झं त्ति । तदुवरिमसमए बादरणिगोदपज्जत्ता चदुण्णं पज्जत्तीणं णिव्वत्तया विसेसाहिया । एवं विसेसाहिय-विसेसाहियकमेण आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं जवमज्झं होदि । तदुवरि विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोद-

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

प्राप्त होनेतक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं । चार पर्याप्तियोंके यवमध्यके अधस्तन और उपरिम निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । यहाँ पर एक भी गुणहानि नहीं है, क्योंकि, सूत्रमें गुणहानिके प्रमाणका कथन नहीं किया है ।

उसके बाद यवमध्य जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्वृत्तिस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६८४ ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोदोंके सबसे जघन्य निर्वृत्तिस्थानसे नीचे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण सरककर चार पर्याप्तियोंके निर्वत्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव थोडे हैं। उससे उपरिम समयमें निर्वत्तक जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान जाने तक निर्वत्तक जीव विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। तब जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके सबसे जघन्य निर्लेपनके साथ बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका निर्लेपनस्थान समान होता है। उससे उपरिम समयमें चार पर्याप्तियोंके निर्वत्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्त यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। उससे उपरिम समयमें चार पर्याप्तियोंके निर्वत्तक बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार विशेष अधिक विशेष अधिकके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका यवमध्य होता है। उससे ऊपर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्लेपन-स्थान प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जाते हैं। उससे ऊपर विशेष हीन क्रमसे

पज्जत्तउक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणे त्ति । तदुवरि विसेसहीणकमेण आवलियाए असंखेज्ज-दिभागमेत्तमद्धाणं गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणं होदि । होतं पि पढमतिभागस्स चरिमसमयादो हेट्ठा अंतोमुहुत्तमोसरिदूण भवदि । संपहि बादर-णिगोदपज्जत्तउक्कस्सणिल्लेवणट्ठाणादो उवरिमेदे पढमतिभागस्स संखेज्जेसु भागेसु बिदियतिभागे सयले च णत्थि आवासयाणि, तत्थ आउअबंधाभावादो ।

मार्गदर्शक :- सव्वो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणमाउअबंध-जवमज्झं ॥ ६८५ ॥

उप्पण्णपढमसमए आउअबंधस्स पारंभो ण होदि, णिच्छएण सगजहण्णाउअ-बेतिभागेऊ गंतूण चेव आउअबंधो होदि त्ति जाणावणट्ठमंतोमुहुत्तग्गहणं कदं । एत्थ जवमज्झसरूवपरूवणा कीरदे । तं जहा–उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि पढमबिदियतिभागे बोलेवूण तदियतिभागपढमसमए आउअबंधया सुहुमणिगोदपज्जत्तजीवा थोवा । तदुवरिमसमए आउअबंधया जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण ताव गच्छंति जाव आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमद्धाणं गंतूण सुहुमणिगो-दपज्जत्ताणमाउअबंधजवमज्झट्ठाणमुप्पण्णं त्ति । तेण परं विसेसहीणा होदूण गच्छंति जाव अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं चरिमआउअबंधट्ठाणं त्ति ।

आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट निर्लेपन-स्थान होता है । ऐसा होता हुआ भी प्रथम त्रिभागके अन्तिम समयसे पीछे अन्तर्मुहूर्त सरक कर होता है । अब बादर निगोद पर्याप्तकोंके उत्कृष्ट निर्लेपनस्थानसे प्रथम त्रिभागके उपरिम संख्यात बहुभागोंमें और सम्पूर्ण द्वितीय त्रिभागमें आवश्यक नहीं हैं, क्योंकि, वहाँ आयुका बन्ध नहीं होता ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका आयुबन्धयवमध्य होता है ॥ ६८५ ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें आयुबन्धका प्रारम्भ नहीं होता है । निश्चयसे अपनी जघन्य आयुके दो त्रिभाग जाकर ही आयुका बन्ध होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए ' अन्तर्मुहूर्त ' पदका ग्रहण किया है । यहाँ पर यवमध्यके स्वरूपका कथन करते हैं । यथा– उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर प्रथम और द्वितीय त्रिभागको बिताकर तीसरे त्रिभागके प्रथम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव थोडे हैं । उससे उपरिम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले जीव विशेष अधिक है । इस प्रकार आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण अध्वान जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके आयुबन्धयवमध्यस्थानके उत्पन्न होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं । उसके बाद अन्तर्मुहूर्त अध्वान ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके अन्तिम आयुबन्धस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं ।

ऊ का० प्रतौ '–बेत्तिभागे ' इति पाठः ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं आउअ-बंधजवमज्झं ॥ ६८६ ॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिसगजहण्णाउअस्स बेतिभागमेत्तमद्धाणं गंतूण तदिय-तिभागपढमसमए बादरणिगोदपज्जत्तजीवा आउअबंधया थोवा होंता वि सुहुमणिगो-दपज्जत्ततदियतिभागपढमसमयादो अंतोमुहुत्तं हेट्ठा ओसरिदूण एदमाउअबंधट्ठाणं होदि । किं कारणं? जेण बादरणिगोदो घादेण थोवमाउअं दुवेदि त्ति । तदुवरिमसमए बादरणिगोदपज्जत्ता आउअबंधया जीव विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण गच्छंति जाव सुहुमपज्जत्ताउअबंधतदियतिभागपढमसमयो त्ति । तदुवरि विसेसाहिया जाव सुहुमपज्जत्ताउअबंधजवमज्झे त्ति । तदुवरि विसेसाहिया जाव बादरपज्जत्ताउअबंधजवमज्झे त्ति । तदुवरि विसेसहीणा जाव सुहुमचरिमआउअबंध-ट्ठाणे त्ति । तदुवरि विसेसहीणा बादरउक्कस्साउअबंधणिल्लेवणट्ठाणे त्ति । तदुवरि *अंतोमुहुत्तं गंतूण असंखेपद्धाओ होदि । असंखेपद्धाए उवरि* * अंतोमुहुत्तं गंतूण बादर-सुहुमणिगोदपज्जत्ताणं घादजणिदं सव्वजहण्णजीवणियट्ठाणं होदि ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं मरण-

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका आयुबन्धयवमध्य होता है ॥ ६८६ ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर सबसे जघन्य आयुके दो तीन भागप्रमाण अध्वान जाकर तृतीय त्रिभागके प्रथम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव सबसे थोडे हैं। ऐसा होते हुए भी सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके तृतीय त्रिभागके प्रथम समयसे अन्तर्मुहूर्त पीछे सरक कर यह आयुबन्धस्थान होता है। कारण क्या है? क्योंकि, बादर निगोद जीव घात द्वारा स्तोक आयुको शेष रखता है। उससे उपरिम समयमें आयुका बन्ध करनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं। इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके आयुबन्धके तीसरे त्रिभागके प्रथम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जाते हैं। उससे ऊपर सूक्ष्म पर्याप्तके आयुबन्ध यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक होते हैं। उससे ऊपर बादर पर्याप्तके आयुबन्ध यवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक होते हैं। उससे ऊपर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तके अन्तिम आयुबन्ध स्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं। उससे ऊपर बादर निगोद पर्याप्तके उत्कृष्ट आयुबन्ध निर्लेपनस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जाते हैं। उससे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर असंक्षेपाद्धा होता है। असंक्षेपाद्धासे ऊपर अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्तको व सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंका घातसे उत्पन्न हुआ सबसे जघन्य जीवनीय स्थान होता है।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तक जीवोंका मरण यवमध्य

✡ प्रत्यो। 'असंखेयद्धा' इति पाठः। * प्रत्यो। 'असंखेयद्धा उवरि' इति पाठः।

जवमज्झं ॥ ६८७ ॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि जाव अंतोमुहुत्तं अतिक्कमिय सव्वजहण्णुव्वट्टणाकालमागंतूण सव्वजहण्णजीवणियकालचरिमसमए मरंता सुहुमपज्जत्ता जीवा थोवा । तदुवरिमसमए मरंता जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरंति जाव सुहुमणिगोदमरणजवमज्झं त्ति । तदुवरि विसेसहीणा विसेसहीणा जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तजीवेण बद्धजहण्णाउअणिव्वत्तिट्ठाणे त्ति ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झं ॥ ६८८ ॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि घादेदूण ट्ठविदसव्वजहण्णजीवणियकालमेत्तमुवरि गंतूण तस्स चरिमसमए मरंता बादरणिगोदपज्जत्ता जीवा थोवा । तदुवरिमसमए मरंता जीवा विसेसाहिया । एवं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरंति जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तमरणजवमज्झपढमसमओ त्ति । तेण परं विसेसाहिया विसेसाहिया होदूण मरंति जाव सुहुमपज्जत्तमरणजवमज्झं त्ति । तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा होदूण मरंति जाव बादरपज्जत्तमरणजवमज्झं ति । तेण परं विसेसहीणा विसेसहीणा

होता है ॥ ६८७ ॥

उत्पन्न होनेके पहले समयसे लेकर सब से जघन्य घात क्षुल्लकभवग्रहणका अन्तर्मुहूर्त जाकर सबसे जघन्य जीवनीय कालके अन्तिम समयमें मरनेवाले सूक्ष्म पर्याप्त जीव स्तोक हैं । उससे उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सूक्ष्म निगोद मरण यवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जीव मरते हैं । उससे ऊपर सूक्ष्म निगोदपर्याप्त जीव द्वारा बद्ध जघन्य आयुनिर्वृत्तिस्थानके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन जीव मरते हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका मरणयवमध्य होता है । ६८८ ।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर घात करके स्थापित किये गये सबसे जघन्य जीवनीय कालमात्र ऊपर जाकर उसके अन्तिम समयमें मरनेवाले बादर निगोद पर्याप्त जीव थोड़े हैं। उससे उपरिम समयमें मरनेवाले जीव विशेष अधिक हैं । इस प्रकार सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्रथम समयके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक होकर जीव मरते हैं । उससे आगे सूक्ष्म पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं । उसके बाद बादर पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन

☆ ता० प्रतौ '–जीवणि (का) य काल–' का० प्रतौ '–जीवणिकायकाल–' इति पाठः ।

✱ ता० प्रतौ ' होदूण जाव ' इति पाठः । ✪ ता० प्रतौ ' विसेसाहिया विसेसाहिया ' इति पाठ ।

होदूण गच्छंति जाव सुहुमणिगोदपज्जत्तमरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति । तेण परं विसेसहीणा जाव बादरपज्जत्तमरणजवमज्झचरिमसमओ त्ति ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥६८९॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमुवरि गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ताणं बंधेण जहण्णमाउअं होदि । तमेगं णिल्लेवणट्ठाणं । समउत्तराआउअं बिदियणिल्लेवणट्ठाणं । एवं समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि लब्भंति । तत्थेव सुहुमणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥६९०॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडि अंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं बंधेण जहण्णाउअं होदि । तमेगं णिल्लेवणट्ठाणं । समउत्तरेपबद्धे बिदियं णिल्लेवणट्ठाणं । एवं विसमउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बादरणिगोदपज्जत्ताणं उक्कस्साउअणिल्लेवणट्ठाणं होदि । तत्थेव बादरणिगोदपज्जत्ताणमुक्कस्साउअं होदि त्ति घेत्तव्वं ।

जीव मरते हैं । उसके बाद सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष हीन विशेष हीन होकर जीव जाते हैं । उसके बाद बादर निगोद पर्याप्तकोंके मरणयवमध्यके अन्तिम समयके प्राप्त होने तक विशेष हीन होकर जीव जाते हैं ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६८९ ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त ऊपर जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी बन्धसे जघन्य आयु होती है । वह एक निर्लेपनस्थान है । इससे एक समय अधिक आयु दूसरा निर्लेपनस्थान है । इस प्रकार एक समय अधिक आदिके क्रममें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान प्राप्त होते हैं । वहीं पर सूक्ष्म निगोद पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६९० ॥

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अध्वान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंकी बन्धसे जघन्य आयु होती है । वह एक निर्लेपनस्थान है । एक समय अधिक आयुका बन्ध होने पर दूसरा निर्लेपनस्थान होता है । इस प्रकार दो समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बादर निगोद पर्याप्तकोंका उत्कृष्ट आयु निर्लेपनस्थान होता है । तथा वहीं पर बादर निगोद पर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट आयु होती है ऐसा यहां पर ग्रहण करना चाहिए ।

तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्ताणि ॥ ६९१ ॥

तम्हि चेवे त्ति णिद्देसो किमट्ठं कीरदे? बादरणिगोदाणमाधारभूदपत्तेयसरीरपज्जत्तजीवग्गहणट्ठं । कुदो ? बादरणिगोदपदिट्ठिदाणमुक्कस्सआउअस्स वि पमाणमंतोमुहुत्तमेत्तं चेवे त्ति गुरुवदेसादो । उप्पण्णसमयप्पहुडि बंधेण सव्वजहण्णाउअमेत्तमद्धाणं गंतूण पत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स एयमाउअणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । एवं समउत्तरादिकमेण आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तआउअणिल्लेवणट्ठाणाणि उवरि गंतूण बंधेण पत्तेयसरीरपज्जत्तयस्स बादरणिगोदपदिट्ठिदस्स उक्कस्साउअणिव्वत्तिट्ठाणं होदि । एदेसि णिल्लेवणट्ठाणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तमागयं ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एत्थ अप्पाबहुगं-- सव्वत्थोवाणि सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि ॥ ६९२ ॥

कुदो ? आवलियाए असंखेज्जविभागपमाणत्तादो ।

बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ ६९३ ॥

वहीं पर प्रत्येकशरीर पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं ॥ ६९१ ॥

शंका-- ' तम्हि चेव ' ऐसा निर्देश किसलिए करते हैं ?

समाधान-- बादर निगोदोंके आधारभूत प्रत्येक शरीर पर्याप्तकोंके ग्रहण करनेके लिए उक्त निर्देश किया है, क्योंकि, बादर निगोद प्रतिष्ठितोंकी उत्कृष्ट आयुका प्रमाण भी अन्तर्मुहूर्त ही है ऐसा गुरुका उपदेश है ।

उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर बन्धसे प्राप्त सबसे जघन्य आयुमात्र अध्वान जाकर प्रत्येकशरीर पर्याप्तका एक आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है । इस प्रकार एक समय अधिक आदिके क्रमसे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण आयुनिर्लेपनस्थान ऊपर जाकर बन्धसे बादर निगोद प्रतिष्ठित प्रत्येकशरीर पर्याप्तका उत्कृष्ट आयुनिर्वृत्तिस्थान होता है । इन निर्लेपनस्थानोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए आगे सूत्र आया है--

यहां पर अल्पबहुत्व- सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान सबसे थोडे हैं ॥ ६९२ ॥

क्योंकि, वे आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

बादर निगोद पर्याप्त जीवोंके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं ॥ ६९३ ॥

---

* ता० प्रतौ सूत्रमिदं सूत्रत्वेनोल्लिखितम् ।

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेहि ।

तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ॥ ६९४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जविभागमेत्तणिव्वत्तिट्ठाणेहि ।

तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि हवंति ॥ ६९५ ॥

एवमेइंदियणामावासयाणि भणिऊण संपहि एइंदियाणं पंचिंदियाणं च आवासयपरूवणट्ठमिदं सुत्तमागयं —

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं समिलाजवमज्झं ॥ ६९६ ॥

अणादियसिद्धांतपदमस्सिदूण आउअबंधजवमज्झस्स समिलाजवमज्झं त्ति समण्णा ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं समिलाजवमज्झं ॥ ६९७ ॥

एत्थ वि पुव्वं व आउअबंधजवमज्झस्स गहणं कायव्वं । एवस्स सुत्तस्स

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्वृत्तिस्थानोंसे अधिक हैं ।

वहीं पर प्रत्येकशरीर पर्याप्तकोंके निर्लेपनस्थान विशेष अधिक हैं । ६९४ ।

कितने अधिक हैं ? आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण स्थानोंसे अधिक हैं ।

वहां सर्वप्रथम ये आवश्यक होते हैं । ६९५ ।

इस प्रकार एकेन्द्रियोंके आवश्यकोंका कथन करके अब एकेन्द्रियों और पञ्चेन्द्रियोंके आवश्यकोंका कथन करनेके लिए यह सूत्र आया है---

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीवोंका शमिलायवमध्य होता है । ६९६ ।

But see पृ. 503

अनादि सिद्धान्तपदका आश्रय लेकर आयुबन्धयवमध्यकी शमिलायवमध्य यह संज्ञा है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर निगोद पर्याप्त जीवोंका शमिलायवमध्य होता है । ६९७ ।

यहाँ पर भी पहले के समान आयुबन्धयवमध्यका ग्रहण करना चाहिए ।

शंका-- इस सूत्रका बादमें आरम्भ किसलिए किया है ?

पच्छारंभो किमट्ठं कदो? पुव्विल्लजवमज्झादो उवरि गंतूण एदं जवमज्झं समत्तं त्ति जाणावणट्ठं कदो ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्त-णिव्वत्ती ॥ ६९८ ॥

एवं भणिदे बंधेण सुहुमणिगोदपज्जत्तयस्स जहण्णाउअं घेत्तव्वं, अण्णस्स असंभावादो ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सम्मुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्त-णिव्वत्ती ॥ ६९९ ॥

एवं भणिदे उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण पंचिंदिय-सम्मुच्छिमस्स बंधेण जहण्णाउअं घेत्तव्वं ।

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्ज-त्तणिव्वत्ती ॥ ७०० ॥

उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण बंधेण गब्भोवक्कंतियस्स पज्जत्तयस्स* जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि । सम्मुच्छिमजहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीदो

समाधान-- पहलेके यवमध्यके ऊपर जाकर यह यवमध्य समाप्त होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए बादमें इस सूत्रका आरम्भ किया है ।

उसके बाद अन्तर्मुहूर्त जाकर एकेन्द्रियकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है ।६९८।

ऐसा कहने पर बन्धसे प्राप्त सूक्ष्म निगोद पर्याप्त की जघन्य आयु लेनी चाहिए क्योंकि, अन्यकी आयु लेना असम्भव है ।

फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर सम्मूर्च्छिमकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है । ६९९ ।

ऐसा कहने पर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण अध्वान ऊपर जाकर पञ्चेन्द्रियसम्मूर्च्छिमकी बन्धसे प्राप्त जघन्य आयु लेनी चाहिए ।

फिर अन्तर्मुहूर्त जाकर गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है । ७०० ।

उत्पन्न होनेके पहले समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तमात्र अध्वान ऊपर जाकर बन्धसे गर्भोप-क्रान्त पर्याप्त जीवकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्ति होती है । सम्मूर्च्छिमकी जघन्य पर्याप्तनिर्वृत्तिसे

---

* का० प्रतौ सूत्रानन्तरं ' एवं भणिदे उप्पण्णपढमसमयप्पहुडिमंतोमुहुत्तमेत्तमद्धाणमुवरि गंतूण पंचि-दियसम्मुच्छिमस्स बंधेण गब्भोवक्कंतियस्स जत्तयस्स ' इति पाठः ।

एसा उवरि होदि त्ति भणिदं होदि ।

तदो बसवाससहस्साणि गंतूण ओघवाविय्स्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ७०१ ॥

तदो इदि वुत्ते उप्पण्णपढमसमयादो त्ति घेत्तव्वं, अण्णहा बसवाससहस्सा-णुववत्तीदो । ओघवादिया त्ति वुत्ते देव-णेरइयाणं गहणं कायव्वं ।

तदो बावीसवाससहस्साणि गंतूण एइंदियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ७०२ ॥

एइंदियस्स बंधेण जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तमेत्ता होदि । पुणो एदिस्से उवरिमसमउत्तराविकमेण सुहुम-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि णिल्लेवणट्ठाणाणि सम्मुच्छिम-गब्भोवक्कंतिय-ओववादिय-सव्वजहण्णपज्जत्तणिव्वत्तीओ च बोलेऊण बादरपुढविकाइयपज्जत्तयस्स बावीसवास-सहस्समेत्ता बंधेण उक्कस्सिया णिव्वत्ती होदि ।

तदो पुव्वकोडिं गंतूण सम्मुच्छिमस्स उक्कस्सिया पज्जत्त णिव्वत्ती ॥ ७०३ ॥

यह आगे चलकर होती है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

फिर दस हजार वर्ष जाकर औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति होती है । ७०१ ।

' तदो ' ऐसा कहनेपर उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर यह अर्थ लेना चाहिए, अन्यथा दस हजार वर्ष नहीं बन सकते हैं । ' ओघवादिया ' ऐसा कहनेपर देवों और नारकियोंका ग्रहण करना चाहिए ।

फिर बाईस हजार वर्ष जाकर एकेन्द्रिय जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है । ७०२ ।

एकेन्द्रियकी बन्धकी अपेक्षा जघन्य पर्याप्तिनिर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है । पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंके आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण निर्लेपनस्थानोंको तथा सम्मूर्च्छिम, गर्भोपक्रान्त और औपपादिकोंके सबसे जघन्य पर्याप्त निर्वृत्तियोंको बिताकर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तककी बन्धकी अपेक्षा बाईस हजार वर्षप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

फिर पूर्वकोटि जाकर सम्मूर्च्छिम जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।७०३।

सम्मुच्छिमपंचिंदियपज्जत्तयस्स बंधेण जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तमेत्ता होदि । पुणो तिस्से उवरि समउत्तर-दुसमउत्तरादिकमेण बावीसवाससहस्साणि बोलेदूण सम्मुच्छिमपंचिंदियपज्जत्तयस्स पुव्वकोडिमेत्ता बंधेण उक्कस्सिया णिव्वत्ती होदि।

तदो तिण्णि पलिदोवमाणि गंतूण गब्भोवक्कंतियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ७०४ ॥

गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया । पुणो तिस्से उवरि समउत्तरादिकमेण पुव्वकोडिं बोलेदूण तिण्णिपलिदोवममेत्ता गब्भोवक्कंतियस्स बंधेण उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि।

आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

तदो तेत्तीसं सागरोवमाणि गंतूण ओववादियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ॥ ७०५ ॥

ओववादियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती दसवाससहस्समेत्ता । तिस्से उवरि समउत्तरादिकमेण तिण्णि पलिदोवमाणि बोलेदूण ओवादियाणं तेत्तीससागरोवममेत्ती उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती होदि । एसा सव्वा वि परूवणा ण परूवेयव्वा,

---

सम्मूच्छिम पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकी बन्धकी अपेक्षा जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्त-प्रमाण होती है । पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक, दो समय अधिक आदिके क्रमसे बाईस हजार वर्ष बिताकर आगे सम्मूच्छिम पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तकी बन्धकी अपेक्षा पूर्वकोटिप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

फिर तीन पल्य जाकर गर्भोपक्रान्त जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है । ७०४ ।

गर्भोपक्रान्त जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होती है । पुनः इसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे पूर्वकोटिप्रमाण बिताकर गर्भोपक्रान्त जीवकी बन्धकी अपेक्षा तीन पल्यप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

फिर तेतीस सागर जाकर औपपादिक जीवकी उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ॥ ७०५ ॥

औपपादिक जीवकी जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति दस हजार वर्षप्रमाण है । उसके ऊपर एक समय अधिक आदिके क्रमसे तीन पल्य बिता कर औपपादिक जीवोंकी तेतीस सागरप्रमाण उत्कृष्ट पर्याप्त निर्वृत्ति होती है ।

शंका— यह सब प्ररूपणा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि, सोलहपदिक महादण्डकमें जघन्य

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सोलसवदिए महादंडए जहण्णट्ठिदि-उक्कस्सट्ठिदि☼विसेसेसु परूविज्जमाणेसु परूविदत्तादो । ण एस दोसो, बादर-सुहुमणिगोदाणं जहण्णाउअप्पहुडि● जाव तेसिं उक्कस्साउए त्ति ताव तत्थेव मरणजवमज्झ-आउअबंधजवमज्झ-णिव्वत्तिट्ठाणजवमज्झाणि होंति । अण्णस्स ण होंति त्ति परूविदे तेसिमण्णेसिमाउअवियप्पाणं संभालणट्ठमिदरेसिमाउआणं पमाणपरूवणाकरणादो । एवं ' जत्थेय मरइ जीवो ' एदस्स गाहाए अत्थपरूवणा समत्ता ।

पुव्वं तेवीसवग्गणाओ परूविदाओ । तत्थ इमाओ गहणपाओग्गाओ इमाओ च अगहणपाओग्गाओ त्ति परूवणा कदा । संपहि इमाओ पंचण्हं सरीराणं गेज्झाओ इमाओ च अगेज्झाओ त्ति जाणावेंतो भूदबलिभडारओ उत्तरसुत्तकलावं परूवेदि--

तस्सेव बंधणिज्जस्स तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगद्दाराणि णायव्वाणि भवंति- वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूवणा पदेसट्ठदा अप्पाबहुए त्ति ॥ ७०६ ॥

एवाणि चत्तारि चेव एत्थ अणुयोगद्दाराणि होंति, अण्णेसिमसंभवादो ।

स्थिति और उत्कृष्ट स्थितिविशेषका कथन करने पर कथन हो ही जाता है ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बादर निगोद और सूक्ष्म निगोद जीवोंकी जघन्य आयुसे लेकर उनकी उत्कृष्ट आयुके प्राप्त होने तक वहीं पर मरणयवमध्य, आयुबन्धयवमध्य और निर्वृत्तिस्थानयवमध्य होते हैं अन्यके नहीं होते हैं ऐसा कथन करने पर उन अन्य जीवोंके आयुविकल्पों की सम्हाल करनेके लिए इतर जीवोंकी आयुके प्रमाणका कथन किया है ।

इस प्रकार ' जत्थेय मरइ जीवो ' इस गाथाकी अर्थप्ररूपणा समाप्त हुई ।

पहले तेईस प्रकारकी वर्गणाओंका कथन कर आये हैं । उनमें ये ग्रहणप्रायोग्य हैं और ये अग्रहणप्रायोग्य हैं यह प्ररूपणा की ही है । अब ये पाँच शरीरोंके ग्रहण योग्य हैं और ये ग्रहण योग्य नहीं हैं ऐसा जानते हुए भूतबलि भट्टारक उत्तरसूत्रकलापका कथन करते हैं--

उसी बन्धनीयके यहाँ ये चार अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं--वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, प्रदेशार्थता और अल्पबहुत्व ॥७०६॥

यहां पर ये चार ही अनुयोगद्वार होते हैं, क्योंकि, अन्य अनुयोगद्वार यहां पर सम्भव नहीं हैं ।

☼ ता० प्रतौ ' जहण्णट्ठिदि - (उक्कस्सट्ठिदि) उक्कस्सट्ठिदि- ' इति पाठः ।

● ता० प्रतौ '- णिगोदाणं (जहण्ण) जहण्णाउअप्पहुडि ' का० प्रतौ ' णिगोदाणं जहण्णं जहण्णाउअप्पहुडि ' इति पाठः ।

वग्गणपरूवणदाए इमा एयपदेसिया परमाणुपोग्गलदव्व-वग्गणा णाम ॥ ७०७ ॥

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥ ७०८ ॥

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ॥

तासिमणंताणंतपदेसिय*परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरि-
मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज
माहारसरीरदव्ववग्गणा णाम ॥ ७१० ॥

आहारसरीरदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥७११॥

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेजादव्ववग्गणा णाम ॥ ७१२ ॥

तेजादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७१३ ॥

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासादव्ववग्गणा णाम ॥ ७१४ ॥

भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७१५ ॥

वर्गणाप्ररूपणाकी अपेक्षा यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है ।७०७।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है । ७०८ ।

इसप्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पञ्चप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्टप्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी, संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी, अनन्तप्रदेशी और अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा होती है । ७०९ ।

उन अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर आहारशरीरद्रव्य-वर्गणा होती है । ७१० ।

आहारशरीरद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ।७११ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर तैजसद्रव्यवर्गणा होती है । ७१२ ।

तैजसद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । ७१३ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर भाषाद्रव्यवर्गणा होती है । ७१४ ।

भाषाद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । ७१५ ।

---

* ता० प्रतौ ' तासिमणंतपदेसिय-' इति पाठः ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७१६ ॥

मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७१७ ॥

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ।७१८।

एवमुवरिमसुत्ताणं पि सव्वेसिमुच्चारणा कायव्वा । पुणो एदेसिमत्थे भण्णमाणे जहा अब्भंतरवग्गणाए परूविदं तहा परूवेयव्वं । एदेहि सव्वेहि [✠] सुत्तेहि पुव्वुत्तवग्गणाणं चेव संभालणं कदं । कुदो ? पुव्वं परूविदत्थस्सेव परूवणादो ।

एवं वग्गणपरूवणा गदा ।

वग्गणणिरूवणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ [✱] ॥ ७१९ ॥

पंचण्णं सरीराणं जा गेज्झा सा गहणपाओग्गा णाम । जा पुण तासिमगेज्झा (सा) अगहणपाओग्गा णाम । तासिं दोण्णं मज्झे कत्थ इमा पदवि त्ति पुच्छा कदा । एयपदेसियवग्गणा एक्का चेव, तत्थ कधं गहणपाओग्गाओ त्ति बहुवयण—

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर मनोद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१६॥

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१७॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कार्मणद्रव्यवर्गणा होती है ॥७१८॥

इसी प्रकार आगेके सभी सूत्रोंकी भी उच्चारणा करनी चाहिये । पुनः इनके अर्थका कथन करते समय जिसप्रकार आभ्यन्तरवर्गणामें कथन किया है उस प्रकार कथन करना चाहिये । इन सब सूत्रोंके द्वारा पूर्वोक्त वर्गणाओंकी ही सम्हाल की गई है, क्योंकि, इन द्वारा पहले कहे गये अर्थका ही कथन किया गया है ।

इस प्रकार वर्गणाप्ररूपणा अनुयोगद्वारा समाप्त हुआ ।

वर्गणानिरूपणाकी अपेक्षा यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहण प्रायोग्य है या ग्रहणप्रायोग्य नहीं है ॥७१९॥

पाँच शरीरोंके जो ग्रहणप्रायोग्य है वह ग्रहण योग्य कहलाती है । परन्तु जो उनके ग्रहणयोग्य नहीं है वह अग्रहणप्रायोग्य कहलाती है । उन दोनोंके मध्य इसका समावेश किसमें होता है इस प्रकारकी पृच्छा इस सूत्रमें की गई है ।

शंका— एकप्रदेशी वर्गणा एक ही है । वहां ' गहणपाओग्गाओ ' इस प्रकार बहुवचनका निर्देश नहीं बन सकता है ?

[✠] ता० प्रतौ ' सव्वेहि सुत्तेहि ' इति पाठः]

[✱] ता० प्रतौ ' किमगहणपाओग्गाओ ' इत्यग्रे ' णाम ' इत्यधिकः पाठः]

णिद्देसो जुज्जदे ? ण, जादिदुवारेण एयत्तमावण्णाए वत्तिभेदेण जणिदबहुत्तं

मार्गदर्शक:- पं. अजितकुमार शास्त्री महाराज

पडि अहुवयणणिद्देसुववत्तीदो ।

अगहणपाओग्गाओ इमाओ एयपदेसियसव्वपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाओ ॥ ७२० ॥

पंचण्णं सरीराणं गहणपाओग्गाओ ण होंति हत्थिहत्थस्स सरिसओ व्व । कुदो ? साभावियादो ।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ॥ ७२१ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

अगहणपाओग्गाओ ॥ ७२२ ॥

एदं पि सुगमं ।

एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ

समाधान-- नहीं, क्योंकि, यद्यपि जातिकी अपेक्षा वह एक है फिर भी व्यक्ति-भेदसे वह बहुत्वको प्राप्त है, इसलिए बहुवचन निर्देश बन जाता है ।

ये एकप्रदेशी सब परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणायें अग्रहणप्रायोग्य हैं ॥७२०॥

जिस प्रकार हाथीके हाथसे सरसों ग्रहण योग्य नहीं होता है उसी प्रकार ये पाँच शरीरोंके ग्रहणयोग्य नहीं होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती हैं या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥ ७२१ ॥

यह पृच्छासूत्र सुगम है ।

अग्रहणप्रायोग्य होती हैं । ७२२ ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार त्रिप्रदेशी, चतुःप्रदेशी, पंचप्रदेशी, षट्प्रदेशी, सप्तप्रदेशी, अष्ट-प्रदेशी, नवप्रदेशी, दशप्रदेशी संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी

ॐ का० प्रतौ ' तत्थ गहणपाओग्गाओ त्ति बहुवयणणिद्देसो (ण-) जुज्जदे ' इति पाठः ।

ॐ ता० प्रतौ ' एयत्तमावण्णाए वं (वे) त्तिभेदेण ' इति पाठः ।

किमगहणपाओग्गाओ ॥ ७२३ ॥

सुगममेदं ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री [illegible]

अगहणपाओग्गाओ ॥ ७२४ ॥

एदं पि सुगमं ।

अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं गहण-पाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ॥ ७२५ ॥

सुगमं ।

काओ चि गहणपाओग्गाओ काओ चि अगहण[*]पाओग्गाओ ॥ ७२६ ॥

आहारवग्गणाए जहण्णवग्गणप्पहुडि जाव महाखंधदव्ववग्गणे त्ति ताव एदाओ अणंताणंतपदेसियवग्गणाओ त्ति एत्थ सुत्ते घेत्तव्वाओ। तत्थ आहार-तेज-भासा-मण-कम्मइयवग्गणाओ गहणपाओग्गाओ अवसेसाओ अगहणपाओग्गाओ त्ति घेत्तव्वं ।

तासिमणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरिमा-हारदव्ववग्गणा णाम ॥ ७२७ ॥

परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती हैं या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२३॥

यह सूत्र सुगम है ।

अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२४॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा क्या ग्रहणप्रायोग्य होती हैं या क्या अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२५॥

यह सूत्र सुगम है ।

कोई ग्रहणप्रायोग्य होती हैं और कोई अग्रहणप्रायोग्य होती हैं ॥७२६॥

आहारवर्गणाकी जघन्य वर्गणासे लेकर महास्कन्धद्रव्यवर्गणा तक ये सब अनन्तानन्त-प्रदेशी वर्गणायें हैं इस प्रकार यहाँ सूत्रमें ग्रहण करना चाहिए । उनमेंसे आहारवर्गणा, तैजस-वर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणा ये ग्रहणप्रायोग्य हैं, अवशेष अग्रहणप्रायोग्य हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए ।

उन अनन्तानन्तप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥७२७॥

---

[*] का० प्रतौ ' काओ वे गहणपाओग्गाओ काओ वे अगहण-' इति पाठः ।

उवरि त्ति वुत्ते मज्झे इदि घेत्तव्वं अण्णहा उवरिसद्दाणुववत्तीदो। अथवा हेट्ठिमअणंताणंतपदेसियवग्गणाणमुवरि आहारवग्गणा होंति त्ति घेत्तव्वं। एदेण सुत्तेण आहारवग्गणा एदेण सरूवेण परिणमदि त्ति जाणावेंतेण तदवट्ठाणपदेसपरूवणा कदा।

जागृतिक – आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

आहारदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७२८ ॥

केण लक्खणेण जाणिज्जदि, किं वा तत्तो णिप्पज्जमाणमिदि एदेण* सुत्तेण पुच्छा कदा।

आहारदव्ववग्गणं तिण्णं सरीराणं गहणं पवत्तदि ॥ ७२९ ॥

जिस्से परमाणुपोग्गलक्खंधे घेत्तूण तिण्णं सरीराणं गहणं णिप्पत्ती पवत्तदि* होदि सा आहारदव्ववग्गणा णाम। तिण्णं सरीराणं णामणिद्देसट्ठं गहणसरूवपरूवणट्ठं च उत्तरसुत्तं भणदि—

ओरालिय–वेउव्विय–आहारसरीराणं जाणि दव्वाणि घेत्तूण ओरालिय–वेउव्विय–आहारसरीरत्ताए परिणामेदूण* परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि आहारदव्ववग्गणा णाम ॥ ७३० ॥

ऊपर ऐसा कहने पर मध्यमें ऐसा ग्रहण करना चाहिए, अन्यथा ऊपरपना नहीं बन सकता है। अथवा अधस्तन अनन्तानन्तप्रदेशी वर्गणाओंके ऊपर आहारवर्गणा होती है ऐसा ग्रहण करना चाहिए। इस सूत्रद्वारा आहारवर्गणा इस रूपसे परिणमन करती है ऐसा जानते हुए उसके अवस्थानके प्रदेशका कथन किया है।

आहारद्रव्यवर्गणा क्या है ॥ ७२८ ॥

वह किस लक्षणसे जानी जाती है, अथवा उससे क्या निष्पन्न होता है इस प्रकार इस सूत्रद्वारा पृच्छा की गई है।

आहारद्रव्यवर्गणा तीन शरीरोंके ग्रहणके लिए प्रवृत्त होती है ॥ ७२९ ॥

जिसके परमाणुपुद्गलस्कन्धको ग्रहणकर तीन शरीरोंका ग्रहण अर्थात् निष्पत्ति होती है वह आहारद्रव्यवर्गणा है। अब तीन शरीरोंके नामोंका निर्देश करनेके लिए और ग्रहणके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके जिन द्रव्योंको ग्रहणकर औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीररूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥ ७३० ॥

---

* ता० प्रतौ 'णिप्फज्जमाणइत्ति (णिप्पज्जमाणमिदि) एदेण' का० प्रतौ 'णिप्फज्जमाणइज्जदे एदेण' इति पाठः। * ता० प्रतौ 'गहणं णिव्वत्ती पवत्तदि' का० प्रतौ 'गहण–णिप्फत्ती पवत्तदि' इति पाठः। * का० प्रतौ 'परिणमिदूण' इति पाठः।

आहारसरीरवग्गणाए अंतो काओ वि वग्गणाओ ओरालियसरीरपाओग्गाओ काओ वि वेउव्वियसरीरपाओग्गाओ काओ वि आहारसरीरपाओग्गाओ। एवमाहार सरीरवग्गणा तिविहा होदि। एदिस्से तिविहत्तं कुदो णव्वदे ? उवरिमगणमाण-ओगाहणप्पाबहुगादो कज्जभेदण्णहाणुववत्तीदो वा। जाणि ओरालिय-वेउव्विय-आहार सरीराणं पाओग्गाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण पाविऊण ओरालिय वेउव्विय-आहार-सरीरत्ताए ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं सरूवेण ताणि परिणामेदूण परिण-मावियं जेहि सह परिणमंति बंधं गच्छंति जीवा ताणि दव्वाणि आहारदव्ववग्गणा णाम। जदि एदेसिं तिण्णं सरीराणं वग्गणाओ ओगाहणभेदेण संखाभेदेण च भिण्णाओ तो आहारदव्ववग्गणा एक्का चेवे त्ति किमट्ठं उच्चदे ? ण, अगहण-वग्गणाहि अंतराभावं पडुच्च तासिमेगत्तुवएसादो। ण च संखाभेदो असिद्धो, उवरिमगणमाणअप्पाबहुएणेव तस्स सिद्धीदो।

आहारदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७३१ ॥

एदेण अगहणवग्गणावट्ठाणपदेसो परूविदो।

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७३२ ॥

आहारशरीरवर्गणाके भीतर कुछ वर्गणायें औदारिकशरीरके योग्य हैं, कुछ वर्ग-णायें वैक्रियिकशरीरके योग्य हैं और कुछ वर्गणायें आहारकशरीरके योग्य हैं। इस प्रकार आहारशरीरवर्गणा तीन प्रकार की है।

शंका-- यह तीन प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- आगे कहे जानेवाले अवगाहना अल्पबहुत्वसे जाना जाता है। अथवा अन्यथा कार्यभेद नहीं बन सकता है इससे जाना जाता है कि वह तीन प्रकारकी है।

जो औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरके योग्य द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर अर्थात् प्राप्तकर औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीररूपसे अर्थात् औदारिकशरीर, वैक्रियिक-शरीर और आहारकशरीरके आकारसे उन्हें परिणामकर जिनके साथ जीव परिणमन करते हैं अर्थात् बन्धको प्राप्त होते हैं उन द्रव्योंकी आहारद्रव्यवर्गणा संज्ञा है।

शंका-- यदि तीन शरीरोंकी वर्गणायें अवगाहनाके भेदसे और संख्याके भेदसे अलग अलग हैं तो आहारद्रव्यवर्गणा एक ही है ऐसा किसलिए कहते हैं।

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अग्रहणवर्गणाओंके द्वारा अन्तरके अभावकी अपेक्षा इन वर्गणाओंके एकत्वका उपदेश दिया गया है। और संख्याभेद असिद्ध नहीं है, क्योंकि, आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्वसे ही उसकी सिद्धि होती है।

आहारद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा है। ७३१।

इस सूत्रद्वारा अग्रहणद्रव्यवर्गणाके अवस्थानके प्रदेशका कथन किया है।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है। ७३२।

किलक्खणेणे त्ति भणिदं होदि ।

अगहणदव्ववग्गणा आहारदव्वमधिच्छिदा[1] तेयादव्ववग्गणं ण पावदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७३३ ॥

आहारदव्वमधिच्छिदा एदेण[2] तिण्णं सरीराणमप्पाओग्गत्तं आहारदव्ववग्गणाए उक्कस्सवग्गणादो वि अगहणजहण्णवग्गणाए रूवाहियत्तं परूविदं । तेयादव्ववग्गणं ण पावदि एदेण तेजा-भास-मण-कम्माणमप्पाओग्गत्तं तेजाजहण्णवग्गणादो एदिस्से उक्कस्सवग्गणाए रूवूणत्तं च परूविदं[3] । ताणं दव्वाणमंतरे एदासिं दोण्णं वग्गणाणं विच्चाले अगहणदव्ववग्गणा णाम । एदेण द्विदपदेसपरूवणा कदा ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेयादव्ववग्गणा णाम ॥ ७३४ ॥

मार्गदर्शक :- अ[illegible]सुत्तेण तेयादव्ववग्गणाए पमाणं परूविदं ।

तेयादव्ववग्गणा णाम का ॥ ७३५ ॥

सुगममेदं पुच्छासुत्तं ।

क्या लक्षणवाली है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा आहारद्रव्यसे प्रारंभ होकर तैजसद्रव्यवर्गणाको नहीं प्राप्त होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥ ७३३ ॥

'आहारदव्वमधिच्छिदा' इस वचन द्वारा अग्रहणवर्गणा तीन शरीरोंके अयोग्य है और आहारद्रव्यवर्गणाकी उत्कृष्ट द्रव्यवर्गणासे भी जघन्य अग्रहण वर्गणा एक प्रदेश अधिक है यह कहा गया है । 'तेयादव्ववग्गणं ण पावदि' इस वचन द्वारा यह तैजसवर्गणा, भाषा-वर्गणा, मनोवर्गणा और कार्मणवर्गणाके अयोग्य और जघन्य तैजसवर्गणासे यह उत्कृष्ट वर्गणा एक प्रदेश न्यून है यह कहा गया है । 'ताणं दव्वाणं अंतरे' अर्थात् इन दोनों वर्गणाओंके बीच में अग्रहणद्रव्यवर्गणा है । इस द्वारा उसके स्थित होनेके प्रदेशका कथन किया गया है ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर तैजसद्रव्यवर्गणा है ॥ ७३४ ॥

इस सूत्र द्वारा तैजसद्रव्यवर्गणाका प्रमाण कहा गया है ।

तैजसद्रव्यवर्गणा क्या है ॥ ७३५ ॥

यह पृच्छासूत्र सुगम है ।

---

[1] ता० प्रतौ '-मधिच्छिदा' इति पाठः । [2] ता० प्रतौ '-मधिच्छिदा (ए) एदेण' इति पाठः ।
[3] ता० प्रतौ 'अरूविदं' इति पाठः ।

तेयावग्गवग्गणा तेयासरीरस्स गहण पवत्तदि ॥ ७३६ ॥

तेजासरीरस्स तेयासरीरट्ठं गहणं जत्तो पवत्तदि[1] सा तेजावग्गणा त्ति भण्णदि । एवस्स णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

जाणि दव्वाणि घेत्तूण तेयासरीरत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि तेजादव्ववग्गणा णाम ॥ ७३७ ॥

जाणि दव्वाणि घेत्तूण पाविदूण तेजासरीरत्ताए तेजासरीरसरूवेण परिणामेदूण मिच्छादिपच्चएहि परिणमाविय परिणमंति संबंधं गच्छंति जीवा ताणि दव्वाणि तेजा दव्ववग्गणा णाम ।

तेजादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७३८ ॥

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७३९ ॥

अगहणदव्ववग्गणा तेजादव्वमविच्छिदा भासादव्वं ण पावेदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४० ॥

सुगममेदं सुत्ततियं ।

तैजसद्रव्यवर्गणासे तैजससशरीरका ग्रहण होता है ॥ ७३६ ॥

' तेयासरीरस्स ' अर्थात् तैजससशरीरके लिए ग्रहण जिससे होता है वह तैजसवर्गणा कही जाती है । अब इसका निर्णय करने के लिए आगेका सूत्र कहते हैं ।

जिन द्रव्योंको ग्रहणकर तैजससशरीररूपसे परिणमा कर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी तैजसद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥ ७३७ ॥

जिन द्रव्योंको ग्रहण कर अर्थात् प्राप्त कर तैजससशरीररूपसे ' परिणामेदूण ' अर्थात् मिथ्यात्व आदि कारणोंसे परिणमा कर जीव ' परिणमंति ' अर्थात् सम्बन्धको प्राप्त होते हैं वे द्रव्य तैजसद्रव्यवर्गणा कहलाते हैं ।

तैजसद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है ॥ ७३८ ॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है ॥ ७३९ ॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा तैजसद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर भाषाद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥ ७४० ॥

ये तीन सूत्र सुगम हैं ।

---

[1] का० प्रतौ ' पवत्तदि ' इति पाठः ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासादव्ववग्गणा णाम ॥ ७४१ ॥

भासादव्ववग्गणा णाम का ॥ ७४२ ॥

सुगमेदं सुत्तदुअं ।

भासादव्ववग्गणा चउव्विहाए भासाए गहणं पवत्तदि ॥७४३॥

जा वग्गणा चउव्विहाए भासाए गहणं होदूण पवत्तदि सा भासादव्ववग्गणा होदि । एदस्स णिण्णयत्थमुत्तरसुत्तं भणदि—

मागदिक्ष · आ[illegible]

सच्चभासाए मोसभासाए सच्चमोसभासाए असच्चमोसभासाए जाणि दव्वाणि घेत्तूण सच्चभासत्ताए मोसभासत्ताए सच्चमोसभासत्ताए असच्चमोसभासत्ताए परिणामेदूण णिस्सारंति जीवा ताणि दव्वाणि भासादव्ववग्गणा णाम ॥ ७४४ ॥

भासादव्ववग्गणा सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभेदेण चउव्विहा । एवं चउव्विहत्तं कुदो[✪]ऽवगम्मदे? चउव्विह[✱]भासाकज्जण्णहाणुववत्तीदो । चउव्विहभासाणं

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।७४१।

भाषाद्रव्यवर्गणा क्या है ।।७४२।।

ये दो सूत्र सुगम हैं ।

भाषाद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी भाषारूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है ।७४३।

जो वर्गणा चार प्रकारकी भाषारूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है वह भाषाद्रव्यवर्गणा है । अब इसका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं—

सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषाके जिन द्रव्योंको ग्रहण कर सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषारूपसे परिणामा कर जीव उन्हें निकालते हैं उन द्रव्योंकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।। ७४४ ।।

भाषाद्रव्यवर्गणा सत्य, मोष, सत्यमोष और असत्यमोषके भेदसे चार प्रकारकी है ।

शंका— यह चार प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— उसका चार प्रकारका भाषारूप कार्य अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है कि वह चार प्रकारकी है ।

चार प्रकारकी भाषाके योग्य जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर तालु आदिके व्यापार द्वारा

✪ ता० प्रतौ ' चउव्विहा] तं चउव्विहा कुदो ' इति पाठः ।

✱ ता० प्रतौ ' णव्वदे तचउव्विह— ' इति पाठः ।

पाओग्गाणि जाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण सच्च-मोस-सच्चमोस-असच्चमोसभासाणं सरूवेण तालुवाविवावारेण परिणमाविय जीवा मुहादो णिस्सारेंति ताणि दव्वाणि भासादव्ववग्गणा णाम ।

भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४५ ॥

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७४६ ॥

अगहणदव्ववग्गणा भासादव्वमधिच्छिदा मणदव्वं ण पावेदि ताणं दव्वाणमंतरे* अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४७ ॥

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सुगममेदं सुत्तत्तियं ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७४८ ॥

मणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७४९ ॥

मणदव्ववग्गणा चउट्विहस्स* मणस्स गहणं पवत्तवि ।७५०।

एदाणि वि सुगमाणि ।

सच्चमणस्स मोसमणस्स सच्चमोसमणस्स असच्चमोसमणस्स जाणि

सत्यभाषा, मोषभाषा, सत्यमोषभाषा और असत्यमोषभाषारूपसे परिणमाकर जीव मुखसे निकलते हैं, अतएव उन द्रव्योंकी भाषाद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।

भाषाद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ॥ ७४५ ॥

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है । ७४६ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा भाषाद्रव्यवर्गणासे प्रारंभ होकर मनोद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः उन द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है ।७४७।

ये तीन सूत्र सुगम हैं ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर जो होती है उसकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७४८ ।

मनोद्रव्यवर्गणा क्या है । ७४९ ।

मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारके मनरूपसे ग्रहण होकर प्रवृत्त होती है । ७५० ।

ये सूत्र भी सुगम हैं ।

सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनके जिन द्रव्योंको ग्रहणकर

---

* ता० प्रतौ ' ताणि (णं) दव्वाणमंतरे ' का० प्रतौ ' ताणि दव्वाणमंतरे ' इति पाठः ।

* का० प्रतौ ' -वग्गणाए चउव्विहस्स ' इति पाठः ।

दव्वाणि घेत्तूण सच्चमणत्ताए मोसमणत्ताए सच्चमोसमणत्ताए असच्चमोसमणत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि मणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५१ ॥

मणदव्ववग्गणा चउव्विहा- सच्चमणपाओग्गा मोसमणपाओग्गा सच्चमोसमणपाओग्गा असच्चमोसमणपाओग्गा चेदि । मणदव्ववग्गणाए चउव्विहत्तं कुदो णव्वदे? मणदव्ववग्गणादो णिप्पज्जमाणदव्वमणस्स चउव्विहभावण्णहाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं।

मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५२ ॥

अगहणदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७५३ ॥

अगहणदव्ववग्गणा मणदव्वमविच्छिदा[*] कम्मइयवव्वं ण पावेदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५४ ॥

एदाणि वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥७५५॥

सत्यमन, मोषमन, सत्यमोषमन और असत्यमोषमनरूपसे परिणमा कर जीव परिणमन करते हैं उन द्रव्योंकी मनोद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७५१ ।

मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है-- सत्यमनप्रायोग्य, मोषमनप्रायोग्य, सत्यमोषमनप्रायोग्य और असत्यमोषमनप्रायोग्य ।

शंका-- मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- मनोद्रव्यवर्गणासे उत्पन्न होनेवाला द्रव्यमन चार प्रकारका अन्यथा बन नहीं सकता है इससे जाना जाता है कि मनोद्रव्यवर्गणा चार प्रकारकी होती है ।

शेष कथन सुगम है ।

मनोद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर अग्रहणद्रव्यवर्गणा होती है । ७५२ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा क्या है । ७५३ ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणा मनोद्रव्यवर्गणासे प्रारम्भ होकर कार्मणद्रव्यको नहीं प्राप्त होती है, अतः इन दोनों द्रव्योंके मध्यमें जो होती है उसकी अग्रहणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७५४ ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

अग्रहणद्रव्यवर्गणाओंके ऊपर कार्मणद्रव्यवर्गणा होती है । ७५५ ।

---

[*] का० प्रतौ '– मविच्छिदा' इति पाठः ।

कम्मइयदव्ववग्गणा णाम का ॥ ७५६ ॥

कम्मइयदव्ववग्गणा अट्ठविहस्स कम्मस्स गहणं पवत्तदि ।७५७।

प्रकाशक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सुगमाणि एदाणि सुत्ताणि । एदेसि सुत्ताणं णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

णाणावरणीयस्स दंसणावरणीयस्स वेयणीयस्स मोहणीयस्स आउअस्स णामस्स गोदस्स अंतराइयस्स जाणि दव्वाणि घेत्तूण णाणावरणीयत्ताए दंसणावरणीयत्ताए वेयणीयत्ताए मोहणीयत्ताए आउअत्ताए णामत्ताए गोदत्ताए अंतराइयत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम ॥ ७५८ ॥

णाणावरणीयस्स जाणि पाओग्गाणि दव्वाणि ताणि चेव मिच्छत्तादिपच्चएहि पंचणाणावरणीयसरूवेण परिणमंति ण अण्णेसि सरूवेण । कुदो ? अप्पाओग्गत्तादो । एवं सव्वेसिं कम्माणं वत्तव्वं, अण्णहा णाणावरणीयस्स जाणि दव्वाणि ताणि घेत्तूण मिच्छादिपच्चएहि णाणावरणीयत्ताए परिणामेदूण जीवा परिणमंति त्ति सुत्ताणुववत्तीदो । जदि एवं तो कम्मइयवग्गणाओ अट्ठ त्ति किण्ण परूविदाओ? ण, अंतराभावेण तयोवदेसाभावादो । एदाओ अट्ठ वि वग्गणाओ किं पुध पुध अच्छंति आहो

कार्मणद्रव्यवर्गणा क्या है ।। ७५६ ॥

कार्मणद्रव्यवर्गणा आठ प्रकारके कर्मका ग्रहणकर प्रवृत्त होती है । ७५७ ।

ये सूत्र सुगम हैं । अब इन सूत्रोंका निर्णय करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं-

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तरायके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहणकर ज्ञानावरणरूपसे, दर्शनावरणरूपसे, वेदनीयरूपसे, मोहनीयरूपसे, आयुरूपसे, नामरूपसे, गोत्ररूपसे और अन्तरायरूपसे परिणमा कर जीव परिणमन करते हैं, अतः उन द्रव्योंको कार्मणद्रव्यवर्गणा संज्ञा है । ७५८ ।

ज्ञानावरणीयके योग्य जो द्रव्य हैं वे ही मिथ्यात्व आदि प्रत्ययोंके कारण पाँच ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमन करते हैं, अन्यरूपसे वे परिणमन नहीं करते, क्योंकि, वे अन्यके अयोग्य होते हैं । इसी प्रकार सब कर्मोंके विषयमें कहना चाहिए, अन्यथा ज्ञानावरणीयके जो द्रव्य हैं उन्हें ग्रहण कर मिथ्यात्व आदि प्रत्ययवश ज्ञानावरणीयरूपसे परिणमाकर जीव परिणमन करते हैं यह सूत्र नहीं बन सकता है ।

शंका-- यदि ऐसा है तो कार्मणवर्गणायें आठ हैं ऐसा कथन क्यों नहीं किया है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अन्तरका अभाव होनेसे उस प्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता ।

करंबियाओ त्ति ? पुध पुध ण अच्छंति किंतु करंबियाओ । कुदो एवं णव्वदे ? ' आउअभागो थोवो णामा-गोदे समो तदो अहिओ ' एदीए गाहाए णव्वदे । सेसं जाणिदूण वत्तव्वं ।

एवं वग्गणणिरूवणा समत्ता ।

पदेसट्ठदा- ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ ॥ ७५९ ॥

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाणं पदेसपरिमाणं पुव्वं चेव आहारवग्गणणिरूवणाए परूविदं । तमेत्थ किमट्ठं वुच्चदे ? ओरालियवग्गणापदेसे अस्सिदूण वण्णादिपरूवणं करेमि त्ति जाणावणट्ठं वुच्चदे ।

पंचवण्णाओ ॥ ७६० ॥

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ सुक्किल-रुहिर-किण्ण-णील-पीदवण्णसंजुत्ताओ होंति । कथं एकम्हि परमाणुम्हि पंचण्णं वण्णाणं संभवो? ण एक्केक्कम्हि परमाणुम्हि एक्केक्को चेव वण्णपज्जाओ, किंतु ओरालियसरीरवग्गणाए जेण काओचि सुक्किलवण्णाओ काओचि रुहिरवण्णाओ काओचि किण्णवण्णाओ काओचि णीलवण्णाओ

शंका-- ये आठ ही वर्गणायें क्या पृथक् पृथक् रहती हैं या मिश्रित होकर रहती हैं?

समाधान-- पृथक् पृथक् नहीं रहती हैं किन्तु मिश्रित होकर रहती हैं ।

See पु 10 पृ. 512

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- ' आयु कर्मका भाग स्तोक है । नाम कर्म और गोत्र कर्म का भाग उससे अधिक है । इस गाथा से जाना जाता है ' ।

शेष का कथन जानकर करना चाहिये ।

इस प्रकार वर्गणानिरूपणा समाप्त हुई ।

प्रदेशार्थता- औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्तप्रदेशवाली होती हैं ॥ ७५९ ॥

शंका-- औदारिकशरीरकी द्रव्यवर्गणाओंके प्रदेशोंका परिणाम पहले ही आहारवर्गणानिरूपणामें किया है, उसे यहां किसलिए कहते हैं ?

समाधान-- औदारिकवर्गणाके प्रदेशोंका आश्रय लेकर वर्ण आदिका कथन करते हैं इस बातका ज्ञान करानेके लिए कहते हैं ।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥ ७६० ॥

औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणायें शुक्ल, लाल, कृष्ण, नील और पीतवर्णसे संयुक्त होती हैं ।

शंका-- एक परमाणुमें पाँच वर्ण कैसे होते हैं ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, एक एक परमाणुमें एक एक ही वर्णपर्याय होती है । किन्तु औदारिकशरीरवर्गणाकी चूंकि कुछ वर्गणायें शुक्लवर्णवाली होती हैं, कुछ लालवर्णवाली होती हैं

काओचि पीदवण्णाओ काओचि करंबियवण्णाओ, तेणेवाणं पंचवण्णत्तं जुज्जदे। जदि एवं तो ओरालियसरीरवग्गणाए एक्कतीसवण्णभेदा पावेंति ? ण, पंचवण्णेहि एयंतेण पुधभूदसंजोगाभावादो।

पंचरसाओ ॥ ७६१ ॥

ओरालियसरीरवग्गणासु तित्त-कडुअ-कसायंबिल-महुरभेदेण पंच रसा होंति। एदे पंच वि रसा एक्केक्कपरमाणुम्हि जुगवं ण होंति, किंतु कमेण होंति। वग्गणासु पुण अक्कमेण कमेण वि होंति, अणंताणंतपरमाणूणं समुदयसमागमेण समुप्पण्ण-वग्गणासु पंचवण्णाणं व पंचरसाणमक्कमेण वुत्तीए विरोहाभावादो। एत्थ वि एक्क-तीसं रसभेदा परूवेदव्वा।

दुगंधाओ ॥ ७६२ ॥

सुरहिगंधो दुरहिगंधो त्ति दो चेव गंधभंगा संखेवेण। विसेसदो पुण सुरहिगंधो दुरहिगंधो वि अणेयविहो, जाइ-केयइ णेमालियाविफुल्लेसु अणेयगंधुवलंभादो। एदेहि दोहि गंधेहि ओरालियपरमाणू कमेण संजुत्ता होंति, वग्गणाओ पुण अक्कमक्कमेहि

कुछ कृष्णवर्णवाली होती है, कुछ नीलवर्णवाली होती हैं, कुछ पीतवर्णवाली होती हैं और कुछ मिश्रवर्णवाली होती हैं इसलिए इनके पाँच वर्ण बन जाते हैं।

शंका-- यदि ऐसा है तो औदारिकशरीरवर्गणाके इकतीस वर्णके भेद प्राप्त होते हैं?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, पाँच वर्णसे संयोगी भेद सर्वथा पृथग्भूत नहीं होते।

पाँच रसवाली होती हैं। ७६१।

औदारिकशरीर वर्गणाओंमें तिक्त, कटुक, कषाय, आम्ल और मधुरके भेदसे पाँच रस होते होते हैं। ये पाँचों रस एक एक परमाणुमें एक साथ नहीं होते हैं किन्तु क्रमसे होते हैं। परन्तु वर्गणाओंमें अक्रमसे होते हैं और क्रमसे भी होते हैं, क्योंकि, अनन्तानन्त परमाणुओंके समुदयसमागमसे उत्पन्न हुई वर्गणाओंमें पाँच वर्णोंके समान पाँच रसोंकी अक्रमसे वृत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं है। यहाँ पर भी इकतीस रसके भेद कहने चाहिए।

विशेषार्थ-- रसके मूल भेद पाँच हैं, इसलिए प्रत्येक भेद पाँच हुए। इन पाँचोंके द्विसंयोगी भेद दस होते हैं, त्रिसंयोगी भेद भी दस होते हैं, चतुःसंयोगी भेद पाँच होते हैं और पाँचसंयोगी भेद एक होता है। इस प्रकार कुल भेद इकतीस होते हैं। पाँच वर्णोंके इकतीस भेद इसी प्रकार ले आने चाहिए।

दो गन्धवाली होती हैं। ७६२।

सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध इस प्रकार संक्षेपसे गन्धके भंग दो ही हैं। विशेषकी अपेक्षा तो सुरभिगन्ध और दुरभिगन्ध अनेक प्रकार का होता है, क्योंकि, जाति, केतकी और नेमाली आदि फूलोंमें अनेक प्रकारकी गन्ध उपलब्ध होती हैं। इन दो प्रकार की गन्धोंसे औदारिक परमाणु क्रमसे संयुक्त होते हैं। परन्तु वर्गणायें क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं, क्योंकि

संजुज्जंति, सावयवेसु तव्विरोहादो ।

अट्ठफासाओ ॥ ७६३ ॥

कक्कड-मउअ-णिद्ध- हलुक्ख-गुरु-लहु-सीदुण्हभेदेण अट्ठ मूलफासा होंति । संजोगेण पुण दुसदपंचवण्णफासभेदा । ते एत्थ ण गहिदा, संगहे असंगहस्सअभावादो । एदेहि अट्ठफासेहि ओरालियवग्गणाओ अक्कमक्कमेहि संजुत्ताओ होंति ।

वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंत-पदेसियाओ ॥ ७६४ ॥

पंचवण्णाओ ॥ ७६५ ॥

पंचरसाओ ॥ ७६६ ॥

दुगंधाओ ॥ ७६७ ॥

अट्ठफासाओ ॥ ७६८ ॥

आर्षिक आचार्य [illegible] ओरालियसरीरस्स पंचसुत्तपरूवणा कदा तहा कायव्वा ।

सावयव पदार्थोंमें ऐसा होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥ ७६३ ॥

कर्कश, मृदु, स्निग्ध, रूक्ष, गुरु, लघु, शीत और उष्णके भेदसे मूल स्पर्श आठ होते हैं । परन्तु संयोगसे दो सौ पचयन स्पर्शके भेद होते हैं । उनका यहां पर ग्रहण नहीं किया है, क्योंकि, संग्रहमें प्रत्येक का अभाव है । इन आठ स्पर्शोंसे औदारिकशरीरवर्गणायें क्रमसे और अक्रमसे संयुक्त होती हैं ।

वैक्रियिक शरीर द्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥ ७६४ ॥

वे पांच वर्णवाली होती हैं ॥ ७६५ ॥

पाँच रसवाली होती हैं ॥ ७६६ ॥

दो गन्धवाली होती हैं ॥ ७६७ ॥

आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥ ७६८ ॥

जिस प्रकार औदारिकके पाँच सूत्रोंका कथन किया है उसी प्रकार इन पांच सूत्रोंका कथन करना चाहिये ।

आहारसरीरवग्गणाओ पदेसट्ठयाए अणंताणंतपदेसियाओ ॥ ७६९ ॥

सुगमं ।

पंचवण्णाओ ॥ ७७० ॥

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

जदि एदाओ पंचवण्णाओ, आहारसरीरं धवलं चेवे त्ति कथं जुज्जदे ? ण, विस्सासुवचयस्स धवलत्तं दट्ठूण तदुवदेसादो ।

पंचरसाओ ॥ ७७१ ॥

एत्थ असुहरसाणं संभवे संते आहारसरीरस्स महुरत्तं कथं जुज्जदे ? ण, अप्पसत्थरसाणं वग्गणाणं अव्वत्तरसभावेण तत्थ महुररसुवदेसादो ।

दुगंधाओ ॥ ७७२ ॥

एत्थ वि आहारसरीरस्स सुअंधत्तं पुव्वं व परूवेयव्वं* ।

अट्ठफासाओ ॥ ७७३ ॥

आहारकशरीरवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥७६९॥

यह सूत्र सुगम है ।

वे पाँच वर्णवाली होती हैं ॥७७०॥

शंका– यदि ये पाँच वर्णवाली होती हैं तो आहार शरीर धवल ही होता है यह कैसे बन सकता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, विस्रसोपचयकी धवलताको देखकर वह उपदेश दिया है ।

पाँच रसवाली होती हैं ॥७७१॥

शंका– यहाँ अशुभ रस की सम्भावना होने पर आहारकशरीर मधुर होता है यह कैसे बन सकता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, अप्रशस्त रसवाली वर्गणाओंका अव्यक्त रस होनेसे वहां मधुर रसका उपदेश दिया गया है ।

दो गन्धवाली होती हैं ॥७७२॥

यहाँ पर भी आहारकशरीरका सुगन्धपना पहलेके समान कहना चाहिये ।

आठ स्पर्शवाली होती हैं ॥७७३॥

---

* मप्रतिपाठोऽयम् । ता० प्रतौ ' सुअंधत्तं परूवेयव्वं ' का०प्रतौ ' सुअत्तं परूवेयव्वं ' इति पाठः ।

एत्थ वि आहारसरीरस्स सुहफासो पुव्वं परूवेयव्वो । अथवा असुहरसगंध-फासवग्गणाओ आहारसरीरागारेण परिणमंतीओ सुहरस-गंध-फासेहि परिणमंति त्ति वत्तव्वं✽ ।

तेजासरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंत-पदेसियाओ ॥ ७७४ ॥ आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

पंचवण्णाओ ॥ ७७५ ॥

पंचरसाओ ॥ ७७६ ॥

दोगंधाओ ॥ ७७७ ॥

सुगमभेदं सुत्तचउक्कं ।

चदुफासाओ ॥ ७७८ ॥

णिद्ध-लुक्खाणमेक्कदरो सीदुण्हाणमेक्कदरो कक्खड-मउआणमेक्कदरो गरुअ-लहुआणमेक्कदरो फासो✿ । एवम्मि खंधे पडिवक्खफासो ण होदि त्ति कुदो णव्वदे ? चत्तारि फासा त्ति णिद्देसण्णहाणुववत्तीदो ।

यहां पर भी आहारकशरीरका शुभ स्पर्श पहले के समान कहना चाहिए । अथवा अशुभ रस, अशुभ गन्ध और अशुभ स्पर्शवाली वर्गणायें आहारकशरीररूपसे परिणमन करती हुई शुभ रस, शुभ गन्ध और शुभ स्पर्शरूपसे परिणमन करती हैं ऐसा यहां पर कहना चाहिए ।

तैजसशरीरकी द्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥ ७७४ ॥

वे पाँच वर्णवाली होती हैं । ७७५ ।

पांच रसवाली होती हैं । ७७६ ।

दो गन्धवाली होती हैं । ७७७ ।

ये चार सूत्र सुगम हैं ।

चार स्पर्शवाली होती हैं । ७७८ ।

स्निग्ध और रूक्षमेंसे कोई एक, शीत और उष्णमेंसे कोई एक, कर्कश और मृदुमेंसे कोई एक तथा गुरु और लघुमेंसे कोई एक स्पर्श होता है ।

शंका- इस स्कन्धमें प्रतिपक्ष स्पर्श नहीं होता है यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान- सूत्रमें चार स्पर्शोंका निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे जाना जाता है।

✽ ता० प्रतौ ' वत्तव्वं ' इति स्थाने ' पेत्तव्वं ' इति पाठः । ✿ ता० प्रतौ '-मेक्कदरो फासो ' इति यावत् सूत्रत्वेन निबद्धं ।

भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठयाए अणंताणंतपदेसियाओ ॥ ७७९ ॥

पंचवण्णाओ ॥ ७८० ॥

पंचरसाओ ॥ ७८१ ॥

दुगंधाओ ॥ ७८२ ॥

चदुफासाओ ॥ ७८३ ॥

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

एवेसिं पंचण्णं सुत्ताणमत्थो जहा तेजासरीरस्स पंचण्णं सुत्ताणं परूविदो तहा परूवेयव्वो ।

एवं पदेसट्ठदा समत्ता ।

अप्पाबहुगं दुविहं- पदेसअप्पाबहुअं चेव ओगाहणअप्पाबहुअं चेव ॥ ७८४ ॥

पुव्वं बाहिरवग्गणाए पंचसरीरागारेण परिणदपोग्गलाणमप्पाबहुगं परूविदं । संपहि पंचण्णं सरीराणं वग्गणाणं✱ पदेसस्स थोवबहुत्तपरूवणट्ठं पदेसअप्पाबहुगमागदं

भाषाद्रव्यवर्गणायें, मनोद्रव्यवर्गणायें और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तानन्त प्रदेशवाली होती हैं ॥ ७७९ ॥

वे पांच वर्णवाली होती हैं ॥ ७८० ॥

पांच रसवाली होती हैं ॥ ७८१ ॥

दो गन्धवाली होती हैं ॥ ७८२ ॥

चार स्पर्शवाली होती हैं ॥ ७८३ ॥ But see तत्त्वार्थसार अ. ५ श्लो. ५४

तैजसशरीरके पाँच सूत्रोंका अर्थ जिस प्रकार कहा है उस प्रकार इन पाँच सूत्रोंका अर्थ कहना चाहिये ।

इस प्रकार प्रदेशार्थता समाप्त हुई ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है- प्रदेशअल्पबहुत्व और अवगाहना अल्पबहुत्व ।७८४।

पहले बाह्य वर्गणा अनुयोगद्वारमें पाँच शरीररूपसे परिणत हुए पुद्गलोंका अल्पबहुत्व कहा है । अब पाँच शरीरोंकी वर्गणाओंके प्रदेशोंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए

✱ ता० प्रतौ ' सरीराणं च वग्गणाणं ' इति पाठः ।

पंचसरीरपाओग्गवग्गणाणं पि थोवबहुत्तमब्भंतरवग्गणाए परूविदं ति एत्थ पदेस-अप्पाबहुए ण कज्जमिदि वोत्तुं ण जुत्तं, ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरपाओग्ग-वग्गणाणं थोवबहुत्तस्स तत्थ परूवणाभावादो। पंचण्णं सरीराणमोगाहणप्पाबहुअं वेयणखेत्तविहाणे परूविदं त्ति कट्टु [illegible] पंचण्णं सरीराणं पाओग्ग-वग्गणाणमोगाहणाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमोगाहणअप्पाबहुअमागयं।

पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए ॥ ७८५ ॥

एदमप्पाबहुअं जोगेणागच्छमाणएगसमयपबद्धवग्गणाणं परूविदं ण सव्ववग्गणाणं। कुदो एदं णव्वदे? आहारसरीरवग्गणाए वग्गणग्गेण पदेसग्गेण च तेजासरीरवग्गणादो अणंतगुणाए तत्तो अणंतगुणहीणत्तविरोहादो। तेण एगेण जोगेण आगच्छमाण-ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसग्गेण वग्गणग्गेण च* थोवाओ त्ति भणिदं। आहारसरीरवग्गणाए वग्गणग्गे असंखेज्जे खंडे कदे तत्थ बहुभागा आहारवग्गणाए वग्गणग्गं होदि, सेसे असंखेज्जे खंडे कदे बहुभागा वेउव्वियसरीरपाओग्गवग्गणग्गं होदि। सेसेगभागो ओरालियपाओग्गवग्गणग्गं होदि। तेण थोववग्गणाहिंतो थोवाओ

प्रदेश अल्पबहुत्व आया है। पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंका भी अल्पबहुत्व आभ्यन्तर वर्गणा अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए यहाँ पर प्रदेश अल्पबहुत्वसे कोई प्रयोजन नहीं है ऐसा कहना योग्य नहीं है, क्योंकि, औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर और आहारकशरीरके योग्य वर्गणा-ओंके अल्पबहुत्वका वहां पर कथन नहीं किया है। पाँच शरीरों की अवगाहनाका अल्प-बहुत्व वेदनाक्षेत्रविधान अनुयोगद्वारमें कहा है, इसलिए उसका यहाँ पर कथन नहीं करते हैं किन्तु पाँच शरीरोंके योग्य वर्गणाओंकी अवगाहनाओंके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए अवगाहना अल्पबहुत्व यहाँपर आया है।

प्रदेशअल्पबहुत्व-औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं। ७८५।

यह अल्पबहुत्व योगसे आनेवाले एक समयप्रबद्धकी वर्गणाओंका कहा है सब वर्गणाओंका नहीं।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान— वर्गणाग्र और प्रदेशाग्रकी अपेक्षा तैजसशरीरवर्गणासे आहारवर्गणा अनन्तगुणी होती है। उससे अनन्तगुणी हीन होने में विरोध आता है। इसलिए एक योग से आनेवाली औदारिकशरीर द्रव्यवर्गणायें प्रदेशाग्र और वर्गणाग्रकी अपेक्षा स्तोक हैं यह कहा है।

आहारवर्गणाके वर्गणाग्रके असंख्यात खण्ड करने पर वहाँ बहुभाग प्रमाण आहारक शरीर प्रायोग्य वर्गणाग्र होता है। शेष के असंख्यात खण्ड करने पर बहुभागप्रमाण वैक्रियिक-शरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र होता है। तथा शेष एक भागप्रमाण औदारिकशरीरप्रायोग्य वर्गणाग्र

---

* ता० प्रतौ 'वग्गणग्ग च' इति पाठः।

चेव आगच्छंति त्ति ओरालियसरीरवग्गणाणं थोवत्तं भणिदं त्ति के वि भणंति । एसो अत्थो ण घडदे, तेजा[illegible]णासु एदस्स अत्थस्स पवुत्तीए अदंसणादो । तेण पुविल्लत्थो चेव घेत्तव्वो ।

वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ॥७८६॥

जेण जोगेण ओरालियसरीरट्ठमाहारवग्गणादो ओरालिय०वग्गणाओ एगसमएणागमणपाओग्गाओ ताहिंतो तत्तो तम्हि चेव समए अण्णस्स जीवस्स तेणेव जोगेण वेउव्वियसरीरट्ठमागममणपाओग्गाओ असंखेज्जगुणाओ । कुदो ? सभावियादो । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो ।

आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ॥७८७॥

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण आहारवग्गणादो आहारसरीरदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । कुदो*? सभावियादो । को गुणगारो? सेढीए असंखेज्जदिभागो ।

तेजासरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंतगुणाओ ॥७८८॥

होता है, इसलिए औदारिकशरीरवर्गणायें स्तोक कही हैं ऐसा कितने ही आचार्य कथन करते हैं किन्तु यह अर्थ भला नहीं है, क्योंकि, तैजसशरीर वर्गणा आदिमें इस अर्थकी प्रवृत्ति नहीं देखी जाती, इसलिए पहलेका अर्थ ही ग्रहण करना चाहिए ।

वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७८६॥

जिस योगसे औदारिकशरीरके लिए आहारवर्गणाओंमेंसे औदारिकशरीरवर्गणायें एक समयमें आगमनप्रायोग्य होती हैं उन्हीं वर्गणाओंमेंसे उसी समयमें अन्य जीवके उसी योगसे वैक्रियिकशरीरके लिए आगमनयोग्य वर्गणायें असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७८७॥

उसी समयमें उसी योगसे आहारवर्गणामेंसे आनेवाली आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें असंख्यातगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

तैजसशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थताकी अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ॥७८८॥

---

* ता० प्रतौ ' असंखे०गुणाओ ? (मणदव्ववग्गणाओअसंखेज्जगुणाओ) । कुदो इति पाठः । तथा का० प्रतौ कृतसंशोधनमवलोक्य म० प्रतावपि असंज्जगुणाओ मणदव्ववग्गणाओ असंखेज्जगुणाओ । कुदो ' इति पाठः प्रतिभाति ।

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण तेजासरीरदव्ववग्गणादो तेजासरीरट्ठमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ । कुदो ? साभावियादो । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंतगुणाओ ॥ ७८९ ॥

तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण भासावग्गणादो भासापज्जाएण परिणममाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ । तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण मणदव्ववग्गणादो दव्वमणट्ठमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ । तम्हि चेव समए तेणेव जोगेण कम्मइयदव्ववग्गणादो अट्ठण्णं कम्माणमागच्छमाणवग्गणाओ पदेसग्गेण अणंतगुणाओ । सव्वत्थ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।

एवं पदेसअप्पाबहुअं समत्तं ।

ओगाहणअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए ॥ ७९० ॥

कुदो ? एगम्हि घणंगुले अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे एगकम्मइय--

---

उसी समयमें उसी योगके द्वारा तैजसशरीरद्रव्यवर्गणाओंमेंसे तैजसशरीरके लिए आनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण गुणकार है ।

भाषाद्रव्यवर्गणायें मनोद्रव्यवर्गणायें और कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणायें प्रदेशार्थता की अपेक्षा अनन्तगुणी हैं ॥७८९॥

उसी समयमें उसी योगसे भाषावर्गणाओंमेंसे भाषारूप पर्यायसे परिणमन करनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं । उसी समयमें उसी योगसे मनोद्रव्यवर्गणाओंमेंसे द्रव्यमनके लिए आनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं । उसी समयमें उसी योगसे कार्मणद्रव्यवर्गणाओंमेंसे आठों कर्मोंके लिए आनेवाली वर्गणायें प्रदेशाग्रकी अपेक्षा अनन्तगुणी होती हैं । सर्वत्र गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण होता है ।

इस प्रकार अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अवगाहनाअल्पबहुत्व— कार्मणशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा सबसे स्तोक हैं ॥७९०॥

क्योंकि, एक घनांगुलमें अंगुलके असंख्यातवें भागका भाग देने पर एक कार्मणवर्गणाकी

वग्गणाए ओगाहणुप्पत्तीदो ।

मणदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए* असंखेज्जगुणाओ ॥ ७९१ ॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । घणंगुलभागहारादो असंखेज्ज-गुणहीणा कथमणंतगुणहीणवग्गणाणमोगाहणा असंखेज्जगुणा होज्ज ? ण एस दोसो, घणागारेण ट्ठिदलोहगोलियाए ओगाहणादो थोवपदेसस्स फेणपुंजस्स ओगाहणाए बहुत्तुवलंभादो । एदमत्थपदमुवरि सव्वत्थ वत्तव्वं ।

भासादव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्ज*गुणाओ ॥७९२॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो ।

तेजासरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए* असंखेज्जगुणाओ। ७९३ ।

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो एसो णव्वदे । अविरुद्धा-इरियवयणादो ।

आहारसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ।७९४।

अवगाहना उत्पन्न होती है ।

मनोद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९१॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका– अनन्तगुणी हीन वर्गणाओंकी घनांगुलके भागहारसे असंख्यातगुणी हीन अवगाहना असंख्यातगुणी कैसे हो सकती है ?

समाधान– यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, घनाकाररूपसे स्थित लोहकी गोलाकी अवगाहनासे स्तोक प्रदेशवाले फेनपुंजकी अवगाहना बहुत उपलब्ध होती है ।

यह अर्थपद ऊपर सर्वत्र कहना चाहिए ।

भाषाद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९२॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

तैजसशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९३॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान– अविरुद्ध आचार्य वचनसे जाना जाता है ।

आहारकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९४॥

---

* ता० प्रतौ '–वग्गणाए (ओ) ओगाहणाए ' का०प्रतौ '–वग्गणाए ओगाहणाए ' इति पाठः । * ता०प्रतौ '–वग्गणाए (ओ) ओगाहणाओ (ए) असंखेज्ज– ' इति पाठः । * का०प्रतौ '–वग्गणाए ओगाहणाए ' इति पाठः । * ता० प्रतौ ' ओगाहणाओ (ए) असंखेज्जगुणाओ ' इति पाठः ।

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जविभागो ।

वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥ ७९५ ॥

को गुणगारो ? अंगुलस्स असंखेज्जविभागो ।

ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ॥ ७९६ ॥

को गुणगारो? अंगुलस्स असंखेज्जविभागो ।

एवमोगाहणप्पाबहुए समत्ते बंधणिज्जं* समत्तं होदि ।

जं तं बंधविहाणं तं चउव्विहं–पयडिबंधो ट्ठिदिबंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि ॥ ७९७ ॥

एदेसिं चदुण्णं बंधाणं विहाणं भूदबलिभडारएण महाबंधे सप्पबंधेण लिहिदं ति अम्हेहि एत्थ ण लिहिदं । तदो सयले महाबंधे एत्थ परूविदे बंधविहाणं समप्पदि ।

एवं बंधणअणुयोगद्दारं समत्तं ।

गुणकार क्या है ? अङ्गुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

वैक्रियिकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९५॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

औदारिकशरीरद्रव्यवर्गणायें अवगाहनाकी अपेक्षा असंख्यातगुणी हैं ॥७९६॥

गुणकार क्या है ? अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार है ।

इसप्रकार अवगाहना अल्पबहुत्वके समाप्त होने पर

बन्धनीय अनुयोगद्वार समाप्त होता है ।

जो बन्धविधान है वह चार प्रकारका है– प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध ॥ ७९७ ॥

इन चारों बन्धोंका विधान भूतबलि भट्टारकने महाबन्धमें विस्तारके साथ लिखा है, इसलिए हमने यहाँ पर नहीं लिखा है । इसलिए सकल महाबन्धके यहाँ पर कथन करने पर बन्धविधान समाप्त होता है ।

इसप्रकार बन्धन अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

---

* का०प्रतौ ' –णप्पाबहुएसु वुत्ते बंधणिज्जं ' इति पाठः ।

१ बंधणअणुयोगद्दारसुत्ताणि

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
१	बंधणे त्ति चउव्विहा कमविभासा– बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविहाणे त्ति ।	१
२	जो सो बंधो णाम सो चउव्विहो– णामबंधो ट्ठवणबंधो दव्वबंधो भावबंधो चेदि ।	२
३	बंधणयविभासणदाए को णओ के बंधे इच्छदि ।	२
४	णेगम-ववहार-संगहा सव्वे बंधे ।	३
५	उजुसुदो ट्ठवणबंधं च णेच्छदि ।	३
६	सद्दणओ णामबंधं भावबंधं च इच्छदि ।	३
७	जो सो णामबंधो णाम सो जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णामं कीरदि बंधो त्ति सो सव्वो णामबंधो णाम ।	४
८	जो सो ट्ठवणबंधो णाम सो दुविहो– सब्भावट्ठवणबंधो चेव असब्भाव-ट्ठवणबंधो चेव ।	४
९	जो सो सब्भावासब्भावट्ठवणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो– कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्प-कम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे एव-मादिया सब्भाव-असब्भावट्ठवणाए ठविज्जदि बंधो त्ति सो सव्वो सब्भाव-असब्भावट्ठवणबंधो णाम ।	५
१०	जो सो दव्वबंधो णाम सो थप्पो ।	७
११	जो सो भावबंधो णाम सो दुविहो– आगमदो भावबंधो चेव णोआगमदो भावबंधो चेव ।	७
१२	जो सो आगमदो भावबंधो णाम तस्स णिद्देसो– बंधपाहुडं जाणओ जाणदि जहा जीवो कम्मबंधो णिबंधो कम्मबंधविहाणं जो महाराज वायणोवगदं सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एवमादिया उवजोगा भावे त्ति कट्टु जावदिया उवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो भावबंधो णाम ।	७
१३	जो सो णोआगमदो भावबंधो णाम सो दुविहो– जीवभावबंधो चेव अजीव-भावबंधो चेव ।	९
१४	जो सो जीवभावबंधो णाम सो तिविहो– विवागपच्चइयो जीवभाव-बंधो चेव अविवागपच्चइयो जीवभाव-बंधो चेव तदुभयपच्चइओ जीवभाव-बंधो चेव ।	९
१५	जो सो विवागपच्चइओ जीवभावबंधो णाम तत्थ इमो णिद्देसो– देवे त्ति वा मणुस्से त्ति वा तिरिक्खे त्ति वा णेरइए त्ति वा इत्थिवेदे त्ति वा पुरिसवेदे त्ति वा णवुंसयवेदे त्ति वा कोहवेदे त्ति वा माणवेदे त्ति वा मायवेदे त्ति वा लोहवेदे त्ति वा रागवेदे त्ति वा दोसवेदे त्ति वा मोहवेदे त्ति वा किण्हलेस्से त्ति वा णीललेस्से त्ति वा काउलेस्से त्ति वा	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	तेउलेस्से त्ति वा पम्मलेस्से त्ति वा सुक्कलेस्से त्ति वा असंजदे त्ति वा अविरदे त्ति वा अण्णाणे त्ति वा मिच्छादिट्ठि त्ति वा जे चामण्णे एवमादिया कम्मोदयपच्चइया उदयविवागणिप्पण्णा भावा सो सव्वो विवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।	११
१६	जो सो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम सो दुविहो- उवसमिओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो चेव ।	१२
१७	जो सो ओवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- से उवसंतकोहे उवसंतमाणे उवसंतमाए उवसंतलोहे उवसंतरागे उवसंतदोसे उवसंतमोहे उवसंतकसायवीयरागछदुमत्थे उवसमियं सम्मत्तं उवसमियं चारित्तं जे चामण्णे एवमादिया उवसमिया भावा सो सव्वो उवसमियो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।	१४
१८	जो सो खइओ अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- से खीणकोहे खीणमाणे खीणमाये खीणलोहे खीणरागे खीणदोसे खीणमोहे खीणकसायवीयरायछदुमत्थे खइयसम्मत्तं खइयचारित्तं खइया दाणलद्धी खइया लाहलद्धी खइया भोगलद्धी खइया परिभोगलद्धी खइया वीरियलद्धी केवलणाणं केवलदंसणं सिद्धे बुद्धे परिणिव्वुदे सव्वदुक्खाणमंतयडे त्ति जे चामण्णे एवमादिया खइया भावा सो सव्वो खइयो अविवागपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।	१५
१९	जो सो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- खओवसमिय एइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं वीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं तीइंदियलद्धि त्ति वा खओवसमिय चउरिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं पंचिंदियलद्धि त्ति वा खओवसमियं मदिअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं सुदअण्णाणि त्ति वा खओवसमियं विहंगणाणि त्ति वा खओवसमियं आभिणिबोहियणाणि त्ति वा खओवसमियं सुदणाणि त्ति वा खओवसमियं ओहिणाणि त्ति वा खओवसमियं मणपज्जवणाणि त्ति वा खओवसमियं चक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं अचक्खुदंसणि त्ति वा खओवसमियं ओहिदंसणि त्ति वा खओवसमियं सम्मामिच्छत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं सम्मत्तलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमासंजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं संजमलद्धि त्ति वा खओवसमियं दाणलद्धि त्ति वा खओवसमियं लाहलद्धि त्ति वा खओवसमिय भोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं परिभोगलद्धि त्ति वा खओवसमियं वीरियलद्धि त्ति वा खओवसमियं से आयारधरे त्ति वा खओवसमियं सूदयडधरे त्ति वा खओवसमियं ठाणधरे त्ति वा खओवसमियं समवायधरे त्ति वा खओवसमियं वियाहपण्णत्तिधरे त्ति वा खओवसमियं णाहधम्मधरे त्ति वा खओवसमियं उवासयज्झेणधरे त्ति वा खओवसमियं अंतयडधरे त्ति वा खओवसमियं अणुत्तरोववादियदसधरे त्ति वा खओवसमियं पण्णवागरणधरे त्ति वा खओवसमियं विवागसुत्तधरे त्ति वा खओवसमियं दिट्ठिवादधरे त्ति वा खओवसमियं गणि त्ति वा खओवसमियं वाचगे त्ति वा खओवसमियं	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	दसपुव्वहरे त्ति वा खओवसमियं चोद्दसपुव्वहरे त्ति वा जे चामण्णे एवमादिया खओवसमियभावा सो सव्वो तदुभयपच्चइयो जीवभावबंधो णाम ।	१९
२०	जो सो अजीवभावबंधो णाम सो तिविहो- विवागपच्चइयो अजीव-भावबंधो चेव अविवागपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव तदुभयपच्चइयो अजीवभावबंधो चेव ।	२२
२१	जो सो विवागपच्चइयो अजीव-भावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- पओगपरिणदा वण्णा पओगपरिणदा सद्दा पओगपरिणदा गंधा पओग-परिणदा रसा पओगपरिणदा फासा पओगपरिणदा गदी पओगपरिणदा ओगाहणा पओगपरिणदा संठाणा पओगपरिणदा खंधा पओगपरिणदा खंधदेसा पओगपरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया पओग-परिणदसंजुत्ता भावा सो सव्वो विवागपच्चइयो अजीवभावबंधो णाम ।	२३
२२	जो सो अविवागपच्चइयो अजीव-भावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- विस्ससापरिणदा वण्णा विस्ससा-परिणदा सद्दा विस्ससापरिणदा गंधा विस्ससापरिणदा रसा विस्ससा-परिणदा फासा विस्ससापरिणदा गदी विस्ससापरिणदा ओगाहणा विस्ससा-परिणदा सठाणा विस्ससापरिणदा खंधा विस्ससापरिणदा खंधदेसा विस्ससापरिणदा खंधपदेसा जे चामण्णे एवमादिया विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो अविवाग-पच्चइयो अजीवभावबंधो णाम ।	२५
२३	जो सो तदुभयपच्चइयो अजीव-भावबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- पओअपरिणदा वण्णा वण्णा विस्ससा-परिणदा पओअपरिणदा सद्दा सद्दा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा गंधा गंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा रसा रसा विस्ससापरिणदा पओअ-परिणदा फासा फासा विस्ससा-परिणदा पओअपरिणदा गदी गदी विस्ससापरिणदा । पओअपरिणदा ओगाहणा ओगाहणा विस्ससा-परिणदा । पओअपरिणदा संठाणा संठाणा विस्ससापरिणदा पओअ-परिणदा खंधा खंधा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधदेसा खंधदेसा विस्ससापरिणदा पओअपरिणदा खंधपदेसा खंधपदेसा विस्ससा-परिणदा जे चामण्णे एवमादिया पओअ-विस्ससापरिणदा संजुत्ता भावा सो सव्वो तदुभयपच्चइओ अजीवभावबंधो णाम ।	२६
२४	जो सो थप्पो दव्वबंधो णाम सो दुविहो- आगमदो दव्वबंधो चेव णोआगमदो दव्वबंधो चेव ।	२७
२५	जो सो आगमदो दव्वबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- ट्ठिद जिद परि-जिदं वायणोवगद सुत्तसमं अत्थसमं गंथसमं णामसमं घोससमं । जा तत्थ वायणा वा पुच्छणा वा पडिच्छणा वा परियट्टणा वा अणुपेहणा वा थय-थुदि-धम्मकहा वा जे चामण्णे एव-मादिया अणुवजोगा दव्वे त्ति कट्टु जावदिया अणुवजुत्ता भावा सो सव्वो आगमदो दव्वबंधो णाम ।	२८
२६	जो सो णोआगमदो दव्वबंधो सो दुविहो- पओअबंधो चेव विस्ससा-बंधो चेव ।	२८
२७	जो सो पओअबंधो णाम सो थप्पो ।	२८
२८	जो सो विस्ससाबंधो णाम सो	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	दुविहो- सादियविस्ससाबंधो चेव अणादियविस्ससाबंधो चेव ।	२८
२९	जो सो सादियविस्ससाबंधो णाम सो थप्पो ।	२८
३०	जो सो अणादियविस्ससाबंधो णाम सो तिविहो- धम्मत्थिया अधम्मत्थिया आगासत्थिया चेदि ।	२९
३१	धम्मत्थिया धम्मत्थियदेसा धम्मत्थिय-पदेसा अधम्मत्थिया अधम्मत्थियदेसा अधम्मत्थियपदेसा आगासत्थिया आगासत्थियदेसा आगासत्थियपदेसा एदासिं तिण्णं पि अत्थिआणमण्णोण्ण-पदेसबंधो होदि ।	२९
३२	जो सो थप्पो सादियविस्ससाबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- वेमादा णिद्धदा वेमादा लुक्खदा बंधो ।	३०
३३	समणिद्धदा समलुक्खदा भेदो ।	३०
३४	णिद्धणिद्धा ण बज्झंति लुक्खलुक्खा य पोग्गला । णिद्धलुक्खा य बज्झंति रूवारूवी य पोग्गला ।।	३१
३५	वेमादा णिद्धदा वेमादा लुक्खदा बंधो ।	३२
३६	णिद्धस्स णिद्धेण दुराहिएण लुक्खस्स लुक्खेण दुराहिएण । णिद्धस्स लुक्खेण हवेदि बंधो जहण्णवज्जे विसमे समे वा ।।	३३
३७	से तं बंधणपरिणामं पप्प से अब्भाणं वा मेहाणं वा संज्झाणं वा विज्जूणं वा उक्काणं वा कणयाणं वा दिसा-दाहाणं वा धूमकेदूणं वा इंदाउहाणं वा से खत्तं पप्प कालं पप्प उदुं पप्प अयणं पप्प पोग्गलं पप्प जे चामण्णे एव-मादिया अंगमलप्पहुडीणि बंधण-परिणामेण परिणमंति सो सव्वो सादियविस्ससाबंधो णाम ।	३४
३८	जो सो थप्पो पओअबंधो णाम सो दुविहो- कम्मबंधो चेव णोकम्म-बंधो चेव ।	३६
३९	जो सो कम्मबंधो णाम सो थप्पो ।	३७
४०	जो सो णोकम्मबंधो णाम सो पंचविहो- आलावणबंधो अल्लीवण-बंधो संसिलेसबंधो सरीरबंधो सरीरिबंधो चेदि ।	३७
४१	जो सो आलावणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- दारुवाणं वा वेत्तवाणं वा जाणाणं वा जुगाणं वा गड्डीणं वा गिल्लीणं वा रहाणं वा सदणाण वा सिवियाणं वा गिहाणं वा पासादाणं वा गोउराणं वा तोरणाण वा से कट्ठेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा वम्मेण वा दब्भेण वा जे चामण्णे एवमादिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि आलावियाणं बंधो होदि सो सव्वो आलावणबंधो णाम ।	३८
४२	जो सो अल्लीवणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- से कडयाणं वा कुड्डाणं वा गोवरपीडाणं वा पागाराणं वा साडियाणं वा जे चामण्णे एवमा-दिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि अल्ली-विदाणं बंधो होदि सो सव्वो अल्ली-वणबंधो णाम ।	३९
४३	जो सो संसिलेसबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो- जहाकट्ठ-जदूणं अण्णोण्ण-संसिलेसिदाणं बंधो संभवदि सो सव्वो संसिलेसबंधो णाम ।	४१
४४	जो सो सरीरबंधो णाम सो पंचविहो- ओरालियसरीरबंधो वेउव्वियसरीर-बंधो आहारसरीरबंधो तेयासरीरबंधो कम्मइयसरीरबंधो चेदि ।	४१
४५	ओरालिय-ओरालियसरीरबंधो ।	४२
४६	ओरालिय-तेयासरीरबंधो ।	४२
४७	ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो ।	४२
४८	ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ।	४३
४९	वेउव्विय-वेउव्वियसरीरबंधो ।	४३
५०	वेउव्विय-तेयासरीरबंधो ।	४३

परिशिष्ट ~~इमो णिद्देसो- सुविहिसागरजीवो महाराज~~

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
५१	वेउव्विय-कम्मइयसरीरबंधो ।	४३
५२	वेउव्विय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ।	४३
५३	आहार-आहारसरीरबंधो ।	४३
५४	आहार-तेयासरीरबंधो ।	४३
५५	आहार-कम्मइयसरीरबंधो ।	४३
५६	आहार-तेया-कम्मइयसरीरबंधो ।	४४
५७	तेया-तेयासरीरबंधो ।	४४
५८	तेया-कम्मइयसरीरबंधो ।	४४
५९	कम्मइय-कम्मइयसरीरबंधो ।	४४
६०	सो सव्वो सरीरबंधो णाम ।	४४
६१	जो सो सरीरिबंधो णाम सो दुविहो- सादियसरीरिबंधो चेव अणादिय- सरीरिबंधो चेव ।	४४
६२	जो सो सादियसरीरिबंधो णाम सो जहा सरीरबंधो तहा णेदव्वो ।	४५
६३	जो अणादियसरीरिबंधो णाम तस्स अट्ठण्णं जीवमज्झपदेसाणं अण्णोण्ण- पदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादिय- सरीरिबंधो णाम ।	४६
६४	जो सो तप्पो कम्मबंधो णाम तस्स कम्मे त्ति तहा णेदव्वं ।	४६
६५	जे ते बंधगा णाम तेसिमिमो णिद्देसो- गदि इंदिए काए जोगे वेदे कसाए णाणे संजमे दंसणे लेस्सा भविय सम्मत्त सण्णि आहारे चेदि ।	४७
६६	गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया बंधा तिरिक्खा बंधा देवा बंधा मणुसा बंधा वि अत्थि अबंधा वि अत्थि सिद्धा अबंधा । एवं खुद्दाबंधएक्कारसअणु- योगद्दारं णेयव्वं ।	४७
६७	एवं महादंडया णेयव्वा ।	४७
६८	जं तं बंधणिज्जं णाम तस्स इममणु- गमणं कस्सामो-वेदणअप्पा पोग्गला, पोग्गला खंधसमुद्दिट्ठा खंधा वग्गण- समुद्दिट्ठा ।	४८
६९	वग्गणाणमणुगमणट्ठदाए तत्थ इमाणि अट्ठ अणुओगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति-वग्गणा वग्गणदव्वसमुदा- हारो अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा अवहारो जवमज्झं पदमीमांसा अप्पा- बहुए त्ति ।	४९
७०	वग्गणा त्ति तत्थ इमाणि वग्गणाए सोलस अणुयोगद्दाराणि-वग्गण- णिक्खेवे वग्गणाणयविभासणदाए वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूवणा, वग्ग- णधुवाधुवाणुगमो वग्गणसांतरणिरंतराणुगमो वग्गणओजजुम्माणुगमो वग्गणखेत्ताणुगमो वग्गणफोसणाणुगमो वग्गणकालाणुगमो वग्गणअंतराणुगमो वग्गणभावाणुगमो वग्गणउवणयणाणु- गमो वग्गणपरिमाणाणुगमो वग्गणभागा- भागाणुगमो वग्गणअप्पाबहुए त्ति ।	५०
७१	वग्गणणिक्खेवे त्ति छव्विहे वग्गण- णिक्खेवे- णामवग्गणा ट्ठवणवग्गणा दव्ववग्गणा खेत्तवग्गणा कालवग्गणा भाववग्गणा चेदि ।	५१
७२	वग्गणणयविभासणदाए को णओ काओ वग्गणाओ इच्छदि । णेगम- ववहार-संगहा सव्वाओ ।	५२
७३	उजुसुदो ट्ठवणवग्गणं णेच्छदि ।	५३
७४	सद्दणओ णामवग्गणं भाववग्गणं च इच्छदि ।	५३
७५	वग्गणदव्वसमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि चोद्दस अणुयोगद्दाराणि-वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूवणा वग्गणधुवाधुवाणुगमो वग्गणसांतरणिरंतराणुगमो वग्गण- ओजजुम्माणुगमो वग्गणखेत्ताणुगमो वग्गणफोसणाणुगमो वग्गणकालाणुगमो वग्गणअंतराणुगमो वग्गणभावाणुगमो वग्गणउवणयणाणुगमो वग्गणपरिमा- णाणुगमो वग्गणभागाभागाणुगमो वग्गणअप्पाबहुए त्ति ।	५३

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
७६	वग्गणपरूवणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ।	५४
७७	इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ।	५५
७८	एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-परित्तपदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ।	५७
७९	अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरि आहारदव्ववग्गणा णाम ।	५९
८०	आहारदव्ववग्गणाणमुवरि अगहण-दव्ववग्गणा णाम	५९
८१	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेयादव्व-वग्गणा णाम ।	६०
८२	तेयादव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्व-वग्गणा णाम ।	६०
८३	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासादव्व-वग्गणा णाम ।	६१
८४	भासादव्ववग्गणाणमुवरि अगहण-दव्ववग्गणा णाम ।	६२
८५	अगहणदव्ववग्गणाए उवरि मणदव्व-वग्गणा णाम ।	६२
८६	मणदव्ववग्गणाणमुवरि अगहणदव्व-वग्गणा णाम ।	६३
८७	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइय-दव्ववग्गणा णाम ।	६३
८८	कम्मइयदव्ववग्गणाणमुवरि धुवक्खंध-दव्ववग्गणा णाम ।	६३
८९	धुवक्खंधदव्ववग्गणाणमुवरि सांतर-णिरंतरदव्ववग्गणा णाम ।	६४
९०	सांतरणिरंतरदव्ववग्गणाणमुवरि धुव-सुण्णवग्गणा णाम ।	६५
९१	धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि पत्तेय-सरीरदव्ववग्गणा णाम ।	६१
९२	पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाणमुवरि धुव-सुण्णदव्ववग्गणा णाम ।	८३
९३	धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि बादर-णिगोददव्ववग्गणा णाम ।	८४
९४	बादरणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि धुव-सुण्णदव्ववग्गणा णाम ।	११२
९५	धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि सुहुम-णिगोदवग्गणा णाम ।	११३
९६	सुहुमणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि धुव-सुण्णदव्ववग्गणा णाम ।	११६
९७	धुवसुण्णवग्गणाणमुवरि महाक्खंध-दव्ववग्गणा णाम ।	११७
९८	वग्गणणिरूवणिदाए इमा एयपदेसिय-परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं सांतरणिरंतरा किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१२०
९९	उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण ।	१२१
१००	इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्व-वग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१२१
१०१	उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेद-संघादेण ।	१२१
१०२	तिपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा चदु० पंच० छ० सत्त० अट्ठ० णव० दस० संखेज्ज० असंखेज्ज० परित्त० अपरित्त० अणंत० अणंताणंतपदे-सियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेद-संघादेण ।	१२३
१०३	उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेद-संघादेण ।	१२४
१०४	आहार० अगहण० तेया अगहण० मण० अगहण० कम्मइय० धुव-क्खंधदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण	

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधासागर जी महाराज

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१२५
१०५	उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१२५
१०६	ध्रुवखंधदव्ववग्गणाणमुवरि सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१२५
१०७	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१२५
१०८	उवरिल्लीणं दव्वाणं भेदेण हेट्ठिल्लीणं दव्वाणं संघादेण सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१२७
१०९	सांतरणिरंतरदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१२७
११०	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१२८
१११	पत्तेयसरीरवग्गणाए उवरि बादरणिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१३०
११२	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१३०
११३	बादरणिगोददव्ववग्गणाणमुवरि सुहुमणिगोददव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१३१
११४	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१३२
११५	सुहुमणिगोदवग्गणाणमुवरि महाखंधदव्ववग्गणा णाम किं भेदेण किं संघादेण किं भेदसंघादेण ।	१३३
११६	सत्थाणेण भेदसंघादेण ।	१३३
११७	तत्थ इमाए बाहिरियाए वग्गणाए अण्णा परूवणा कायव्वा भवदि ।	२२३
११८	तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति–सरीरिसरीरपरूवणा सरीरपरूवणा सरीरविस्सासुवचयपरूवणा विस्सासुवचयपरूवणा चेदि ।	२२४
११९	सरीरिसरीरपरूवणदाए अत्थि जीवा पत्तेय-साधारणसरीरा ।	२२५
१२०	तत्थ जे ते साहारणसरीरा ते णियमा वणप्फदिकाइया । अवसेसा पत्तेयसरीरा ।	२२५
१२१	तत्थ इमं साहारणलक्खणं भणिदं ।	२२६
१२२	साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च । साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणिदं ॥	२२६
१२३	एयस्स अणुग्गहणं बहूण साहारणाणमेयस्स । एयस्स जं बहूणं समासदो तं पि होदि एयस्स ॥	२२८
१२४	समगं वक्कंताणं समगं तेसि सरीरणिप्पत्ती । समगं च अणुग्गहणं समगं उस्सासणिस्सासो ॥	२२९
१२५	जत्थेउ मरइ जीवो तत्थ दु मरणं भवे अणंताणं । वक्कमइ जत्थ एक्को वक्कमणं तत्थणंताणं ॥	२३०
१२६	बादरसुहुमणिगोदा बद्धा पुट्ठा य एयमेएण । ते हु अणंता जीवा मूलयथूहल्लयादीहि ॥	२३१
१२७	अत्थि अणंता जीवा जेहि ण पत्तो तसाण परिणामो । भावकलंकअपउरा णिगोदवासं ण मुंचंति ॥	२३२
१२८	एगणिगोदसरीरे जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा । सिद्धेहि अणंतगुणा सव्वेण वि तीदकालेण ।	२३४
१२९	एदेण अट्ठपदेण तत्थ इमाणि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति संतपरूवणा दव्वपमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो फोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि ।	२३७
१३०	संतपरूवणदाए दुविहो णिद्देसो–ओघेण आदेसेण ।	२३७
१३१	ओघेण अत्थि जीवा, तिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा असरीरा ।	२३७
१३२	आदेसेण गदियाणुवादेण णिरय–	२३७

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	गईए णेरइएसु अत्थि जीवा तिसरीरा तिसरीरा ।	२३८
१३३	एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ।	२३८
१३४	तिरिक्खगदीए तिरिक्ख-पंचिंदिय-तिरिक्ख पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु ओघं ।	२३८
१३५	पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता अत्थि जीवा तिसरीरा तिसरीरा ।	२३९
१३६	मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओघं ।	२३९
१३७	मणुसअपज्जत्ता अत्थि जीवा तिसरीरा तिसरीरा ।	२३९
१३८	देवगदीए देवा अत्थि जीवा तिसरीरा तिसरीरा ।	२४०
१३९	एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा ।	२४०
१४०	इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरे-इंदिया तेसिं पज्जत्ता पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता ओघं ।	२४०
१४१	बादरएइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदिया तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदियअप-ज्जत्ता णेरइयभंगो ।	२४१
१४२	कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा तेसिं बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदि-काइयपत्तेयसरीरा तेसिं पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउक्काइयअपज्जत्ता बादरवाउक्काइयअपज्जत्ता सुहुमतेउ-काइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अप-ज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता अत्थि जीवा तिसरीरा तिसरीरा ।	२४१
१४३	तेउक्काइया वाउक्काइया बादर-तेउक्काइया बादरवाउक्काइया तेसिं पज्जत्ता तसकाइया तसकाइयप-ज्जत्ता ओघं ।	२४२
१४४	जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंच-वचिजोगी ओरालियकायजोगी अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ।	२४२
१४५	कायजोगी ओघं ।	२४३
१४६	ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्विय-यकायजोगि-वेउव्वियमिस्सकाय-जोगीसु अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४३
१४७	आहारकायजोगी आहारमिस्स-कायजोगी अत्थि जीवा चदुसरीरा ।	२४४
१४८	कम्मइयकायजोगी णेरइयाणं भंगो ।	२४४
१४९	वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा ओघं ।	२४४
१५०	कसायाणुवादेण कोधकसाई माण-कसाई मायकसाई लोभकसाई ओघं ।	२४५
१५१	अवगदवेदा अकसाई अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४५
१५२	णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुद-अण्णाणी ओघं ।	२४५
१५३	विभंगणाणी मणपज्जवणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ।	२४६
१५४	आभिणि-सुद-ओहिणाणी ओघं ।	२४६
१५५	केवलणाणी अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४६
१५६	संजमाणुवादेण संजदा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा संजदा-संजदा अत्थि जीवा तिसरीरा चदुसरीरा ।	२४६
१५७	परिहारविसुद्धिसंजदा सुहुमसांप-राइयसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहार-सुद्धिसंजदा अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४६
१५८	असंजदा ओघं ।	२४७
१५९	दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी अचक्खु-दंसणी ओहिदंसणी ओघं ।	२४७
१६०	केवलदंसणी अत्थि जीवा तिसरीरा ।	२४७
१६१	लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउ-	

मार्गदर्शक आचार्य श्री सुविधासागर जी महाराज

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	लेस्सिया तेउ पम्म-सुक्कलेस्सिया ओघं ।	२४७
१६२	भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया ओघं ।	२४७
१६३	समत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी खइय-सम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उवसम-सम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी मिच्छा-इट्ठी ओघं ।	२४८
१६४	सम्मामिच्छाइट्ठीणं मणजोगिभंगो ।	२४८
१६५	सण्णियाणुवादेण सण्णी असण्णी ओघं ।	२४८
१६६	आहाराणुवादेण आहारा मण-जोगिभंगो ।	२४८
१६७	अणाहारा कम्मइयभंगो ।	२४८
१६८	अप्पाबहुगाणुगमेण दुविहो णिद्देसो ओघेण आदेसेण य ।	३०१
१६९	ओघेण सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३०१
१७०	असरीरा अणंतगुणा ।	३०२
१७१	विसरीरा अणंतगुणा ।	३०२
१७२	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०२
१७३	आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु सव्वत्थोवा विसरीरा ।	३०२
१७४	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०२
१७५	एवं जाव सत्तसु पुढवीसु ।	३०३
१७६	तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं ।	३०३
१७७	पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३०३
१७८	विसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०३
१७९	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०४
१८०	पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता णेरइयाणं भंगो ।	३०४
१८१	मणुसगदीए मणुसा पंचिंदिय-तिरिक्खाणं भंगो ।	३०५
१८२	मणुसपज्जत्त मणुसिणीसु सव्व-त्थोवा चदुसरीरा ।	३०५
१८३	विसरीरा संखेज्जगुणा ।	३०५
१८४	तिसरीरा संखेज्जगुणा ।	३०६
१८५	मणुसअपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्जत्तभंगो ।	३०६
१८६	देवगदीए देवा सव्वत्थोवा विसरीरा।	३०६
१८७	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०६
१८८	एवं भवणवासियप्पहुडि जाव अव-राइदविमाणवासियदेवा त्ति णेयव्वं।	३०६
१८९	सव्वसिद्धिविमाणवासियदेवा सव्व-त्थोवा विसरीरा ।	३०७
१९०	तिसरीरा संखेज्जगुणा ।	३०७
१९१	इंदियाणुवादेण एइंदिया बादर-एइंदियपज्जत्ता ओघं ।	३०७
१९२	बादरेइंदियअपज्जत्ता सुहुमेइंदिय-पज्जत्तापज्जत्ता बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियपज्जत्ता अपज्जत्ता पंचि-दियअपज्जत्ता सव्वत्थोवा विसरीरा।	३०७
१९३	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०८
१९४	पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता मणुसगदि-भंगो ।	३०८
१९५	कायाणुवादेण पुढविकाइया आउ-काइया वणप्फदिकाइया णिगोद-जीवा बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरतेउक्काइय-बादरवाउकाइयअपज्जत्ता-सुहुमतेउ-काइय-सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता अप-ज्जत्ता तसकाइयअपज्जत्ता सव्व-त्थोवा विसरीरा ।	३०९
१९६	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३०९
१९७	तेउकाइय-वाउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइयपज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता पंचिंदियपज्जत्त-भंगो ।	३०९
१९८	जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंच-वचिजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा।	३०९
१९९	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१०
२००	कायजोगी ओघं ।	३१०

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
२०१	ओरालियकायजोगीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३१०
२०२	तिसरीरा अणंतगुणा ।	३१०
२०३	ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्विय-कायजोगि-वेउव्वियमिस्सकाय-जोगि-आहारकायजोगि-आहारमिस्स-कायजोगीसु णत्थि अप्पाबहुअं ।	३१०
२०४	कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा तिसरीरा ।	३११
२०५	तिसरीरा अणंतगुणा ।	३११
२०६	वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदा पंचिंदियभंगो ।	३११
२०७	णवुंसयवेदा कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई ओघं ।	३११
२०८	अवगदवेद-अकसाईण णत्थि अप्पा-बहुगं ।	३११
२०९	णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुद अण्णाणि ओघं ।	३१२
२१०	विहंगणाणी सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३१२
२११	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१२
२१२	आभिणि-सुद ओहिणाणीसु पंचि-दियपज्जत्ताणं भंगो ।	३१२
२१३	मणपज्जवणाणीसु सव्वत्थोवा चदुसरीरा ।	३१३
२१४	तिसरीरा संखेज्जगुणा ।	३१३
२१५	केवलणाणीसु णत्थि अप्पाबहुगं ।	३१३
२१६	संजमाणुवादेण संजदा सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा मणपज्ज-वणाणिभंगो ।	३१३
२१७	परिहारसुद्धिसंजद-सुहुमसांपराइय-सुद्धिसंजद-जहाक्खादविहारसुद्धि-संजदाणं णत्थि अप्पाबहुगं ।	३१३
२१८	संजदासंजदा विभंगणाणिभंगो ।	३१४
२१९	असंजद-अचक्खुदंसणी ओघं ।	३१४
२२०	लेस्साणुवादेण किण्ण-णील-काउ-लेस्सिया भवियाणुवादेण भव-सिद्धिय-अभवसिद्धिया ओघं ।	३१४
२२१	दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी ओहि-दंसणी तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो ।	३१४
२२२	केवलदंसणीणं णत्थि अप्पाबहुगं ।	३१५
२२३	सुक्कलेस्सिया सव्वत्थोवा तिसरीरा	३१५
२२४	चदुसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१५
२२५	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१६
२२६	सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा सासणसम्माइट्ठी पंचिंदियपज्जत्तभंगो ।	३१६
२२७	खइयसम्माइट्ठी उवसमसम्माइट्ठी सव्वत्थोवा तिसरीरा ।	३१६
२२८	चदुसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१६
२२९	तिसरीरा असंखेज्जगुणा ।	३१७
२३०	सम्मामिच्छाइट्ठी संजदासंजदाणं भंगो ।	३१७
२३१	मिच्छाइट्ठी ओघं ।	३१७
२३३	सण्णियाणुवादेण सण्णी पंचिंदिय-पज्जत्ताणं भंगो ।	३१७
२३३	असण्णी ओघं ।	३१८
२३४	आहाराणुवादेण आहारएसु ओरा-लियकायजोगिभंगो ।	३१८
२३५	अणाहारा कम्मइयकायजोगिभंगो ।	३१८
२३६	सरीरपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्दाराणि-णमणिरुत्ती-पदेसपमाणाणुगमो णिसेयपरूवणा गुणगारो पदमीमांसा अप्पा-बहुए त्ति ।	३२१
२३७	णामणिरुत्तीए उरालमिदि ओरालियं ।	३२२
२३८	विविहइड्ढिगुणजुत्तमिदि वेउव्वियं ।	३२५
२३९	णिवुणाणं वा णिण्णाणं वा सुहु-माणं वा आहारदव्वाणं सुहुमदर—मिदि आहारयं ।	३२६
२४०	तेयप्पगुणजुत्तमिदि तेजइयं ।	३२७
२४१	सव्वकम्माणं पल्हणुप्पाद्य सुहु-	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	दुक्खाणं बीजमिदि कम्मइयं ।	३२८
२४२	पदेसपमाणाणुगमेण ओरालिय-सरीरस्स केवडियं पदेसग्गं ।	३३०
२४३	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाण-मणंतभागा ।	३३०
२४४	एवं चदुण्हं सरीराणं ।	३३०
२४५	णिसेयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति समुक्कित्तणा पदेसपमाणाणुगमो अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा पदेसविरओ अप्पाबहुए त्ति ।	३३१
२४६	समुक्कित्तणदाए ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमय-आहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीर-त्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि किंचि दिसमयमच्छदि किंचि तिसम-यमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि तेत्तीससागरो-वमाणि अंतोमुहुत्तं ।	३३१
२४७	तेयासरीरिणा तेयासरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं जीवे किंचि एगसमयमच्छदि किंचि दिसमयमच्छदि किंचि तिसमय-मच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण छावट्टि-सागरोवमाणि ।	३३५
२४८	कम्मइयसरीरिणा कम्मइयसरीर-त्ताए जं पदेसग्गं णिसित्तं तं किंचि जीवे समउत्तरावलियमच्छदि किंचि दिसमउत्तरावलियमच्छदि किंचि तिसमउत्तरावलियमच्छदि एवं जाव उक्कस्सेण कम्मट्ठिदि त्ति ।	३३५
२४९	पदेसपमाणाणुगमेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमयआहारएण पढमसमय-तब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेस-ग्गं णिसित्तं तं केवडिया ।	३३६
२५०	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाण-मणंतभागो ।	३३६
२५१	जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ।	३३७
२५२	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।	३३७
२५३	जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ।	३३७
२५४	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।	३३७
२५५	एवं जाव उक्कस्सेण तिण्णिपलिदो-वमाणि तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ।	३३७
२५६	तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्म-इयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ।	३३७
२५७	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।	३३८
२५८	जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ।	३३८
२५९	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाण-मणंतभागो ।	३३८
२६०	जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं केवडिया ।	३३८
२६१	अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो ।	३३८
२६२	एवं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरो-वमाणि कम्मट्ठिदी ।	३३८
२६३	अणंतरोवणिधाए ओरालिय-वेउ-व्विय-आहारसरीरिणा तेणेव पढम-समयआहारएण पढमसमयतब्भव-त्थेण ओरालिय-वेउव्विय-आहार-सरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं बहुअं ।	३३९

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
२६४	जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ।	३४०
२६५	ज तदियसमए पदेसग्गं णिसित्त तं विसेसहीणं ।	३४०
२६६	जं चउत्थसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ।	३४०
२६७	एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तं ।	३४१
२६८	तेजा-कम्मइयसरीरिगा तेजा-कम्म-इयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं णिसित्त तं बहुअं ।	३४१
२६९	जं बिदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ।	३४१
२७०	जं तदियसमए पदेसग्गं णिसित्तं तं विसेसहीणं ।	३४१
२७१	एवं विसेसहीणं विसेसहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ।	३४१
२७२	परंपरोवणिधाए ओरालिय-वेउव्विय-सरीरिणा तेणेव पढमसमयआहार-एण पढमसमयतब्भवत्थेण ओरालिय-वेउव्वियसरीरत्ताए जं पढमसमय-पदेसग्गं तदो अंतोमुहुत्तं दुगुणहीणं	३४६
२७३	एवं दुगुणहीण दुगुणहीणं जाव उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि ।	३४७
२७४	एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।	३४७
२६५	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं थोवं ।	३४८
२७६	णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३४८
२७७	आहारसरीरिणा तेणेव पढमसमय-आहारएण पढमसमयतब्भवत्थेण आहारसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण दुगुणहीणं ।	३४८
२७८	एव दुगुणहीणं दुगुणहीण जावुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं	३४९
२७९	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमंतोमुहुत्तं णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जा समया ।	३४९
२८०	णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि ।	३४९
२८१	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरम-संखेज्जगुणं ।	३४९
२८२	तेजा-कम्मइयसरीरिणा तेजा-कम्म-इयसरीरत्ताए जं पढमसमए पदेसग्गं तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणं पलिदोवमस्स असं-खेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणं ।	३५०
२८३	एवं दुगुणहीणं दुगुणहीणं जाव उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि कम्मट्ठिदी ।	३५०
२८४	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि णाणापदेस-गुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्ग-मूलस्स असंखेज्जदिभागो ।	३५०
२८५	णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाओ ।	३५१
२८६	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं असंखेज्जगुणं ।	३५१
२८७	पदेसविरए त्ति तत्थ इमो पदेसविर-अस्स सोलसवदिओ दंडओ कायव्वो भवदि ।	३५२
२८८	सव्वत्थोवा एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	३५२
२८९	णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि।	३५३
२९०	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३५४
२९१	उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया।	३५७
२९२	सव्वत्थोवा सम्मुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	३५७

प्राचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
२९३	णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	३५७
२९४	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३५८
२९५	उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ।	३५८
२९६	सव्वत्थोवा गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	३५८
२९७	णिव्वत्तिट्ठाणाणि असंखेज्ज-गुणाणि ।	३५९
२९८	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३५९
२९९	उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ।	३५९
३००	सव्वत्थोवा उववादिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	३५९
३०१	णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च दो वि तुल्लाणि असंखेज्जगुणाणि ।	३६०
३०२	उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६०
३०३	एत्थ अप्पाबहुअं ।	३६१
३०४	सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं ।	३६१
३०५	एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती संखेज्जगुणा ।	३६३
३०६	समुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्त-णिव्वत्ती संखेज्जगुणा ।	३६३
३०७	गब्भोवक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्त-णिव्वत्ती संखेज्जगुणा ।	३६४
३०८	उववादिमस्स जहण्णिया पज्जत्त-णिव्वत्ती संखेज्जगुणा ।	३६४
३०९	एइंदियस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	३६४
३१०	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३६४
३११	उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६५
३१२	समुच्छिमस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ।	३६५
३१३	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३६५
३१४	उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६५
३१५	गब्भोवक्कंतियस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ।	३६५
३१६	जीवणियट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	३६६
३१७	उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६६
३१८	उववादिमस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि जीवणियट्ठाणाणि च दो वि तुल्लाणि संखेज्जगुणाणि ।	३६६
३१९	उक्कस्सिया णिव्वत्ती विसेसाहिया ।	३६६
३२०	तस्सेव पदेसविरइयस्स इमाणि छअणुयोगद्दाराणि- जहण्णिया ओगाहणट्ठिदी ओगाहणट्ठिदिविसेसो ओगाहणट्ठिदिट्ठाणाणि उक्कस्सिया ओगाहणट्ठिदी भागाभागाणुगमो अप्पाबहुए त्ति ।	३६६
३२१	सव्वत्थोवा ओरालियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणट्ठिदी ।	३६७
३२२	ओगाहणट्ठिदिविसेसो असंखेज्जगुणो ।	३६७
३२३	ओगाहणट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि विसेसाहियाणि ।	३६७
३२४	उक्कस्सिया ओगाहणट्ठिदी विसेसाहिया ।	३६८
३२५	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३६८
३२६	सव्वत्थोवा आहारसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणट्ठिदी ।	३६९
३२७	ओगाहणट्ठिदिविसेसो संखेज्जगुणो ।	३६९
३२८	ओगाहणट्ठिदिट्ठाणाणि रूवाहियाणि ।	३६९
३२९	उक्कस्सिया ओगाहणट्ठिदी विसेसाहिया ।	३६९
३३०	भागाभागाणुगमेण तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि- जहण्णपदे उक्कस्सपदे अजहण्ण-अणुक्कस्स-पदे ।	३६९
३३१	जहण्णपदेण ओरालियसरीरस्स जहण्णियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्व-पदेसग्गस्स केवडियो भागो ।	३७०
३३२	असंखेज्जदिभागो ।	३७०
३३३	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	३७०
३३४	उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सियाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्व-पदेसग्गस्स केवडिओ भागो ।	३७१
३३५	असंखेज्जदिभागो ।	३७१
३३६	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	३७२
३३७	अजहण्ण-अणुक्कस्सपदेण-ओरालिय-सरीरस्स अजहण्ण-अणुक्कस्सियाए	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गस्स केवडिओ भागो ।	३७२
३३८	असंखेज्जा भागा ।	३७३
३३९	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	३७३
३४०	अप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि-जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ।	३७३
३४१	जहण्णपदेण सव्वत्थोवा ओरालिय-सरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं।	३७३
३४२	पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गम-संखेज्जगुणं ।	३७४
३४३	अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं	३७६
३४४	अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३७७
३४५	अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३७७
३४६	सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं	,,
३४७	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३७७
३४८	जहण्णपदेण सव्वत्थोवं आहार-सरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं	३७८
३४९	पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं	,,
३५०	अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं	३७८
३५१	अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३७९
३५२	अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३७९
३५३	सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं	,,
३५४	उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरालिय-सरीरस्स चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं ।	३७९
३५५	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३७९
३५६	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८०
३५७	पढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८०
३५८	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८०
३५९	सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८०
३६०	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३८०
३६१	सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिम-गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं ।	३८१
३६२	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणं-तरेसु पदेसग्गं संखेज्जगुणं ।	३८१
३६३	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८१
३६४	पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८१
३६५	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८१
३६६	सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदे-सग्गं विसेसाहियं ।	३८१
३६७	जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं ओरा-लियसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ।	३८२
३६८	चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्ग-मसंखेज्जगुणं ।	३८२
३६९	पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्ग-मसंखेज्जगुणं ।	३८२
३७०	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणं-तरेसु पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३८२
३७१	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८३
३७२	पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८३
३७३	अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदे-सग्गं विसेसाहियं ।	३८३
३७४	अपढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८३

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
३७५	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८३
३७६	अचरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८४
३७७	सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८४
३७८	एवं तिण्णं सरीराणं ।	३८४
३७९	जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवं आहारसरीरस्स चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं।	३८५
३८०	पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं संखेज्जगुणं।	३८६
३८१	चरिमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गमसंखेज्जगुणं ।	३८६
३८२	अपढम-अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं संखेज्जगुणं ।	३८६
३८३	अपढमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८६
३८४	पढमे गुणहाणिट्ठाणंतरे पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८६
३८५	अचरिमेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८६
३८६	अपढम-अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८७
३८७	अपढमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८७
३८८	अचरिमासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८७
३८९	सव्वासु ट्ठिदीसु सव्वेसु गुणहाणिट्ठाणंतरेसु पदेसग्गं विसेसाहियं ।	३८७
३९०	णिसेयअप्पाबहुए त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि-जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ।	३८७
३९१	जहण्णपदेण सव्वत्थोवमोरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं ।	३८८
३९२	तेयासरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।	३८८
३९३	कम्मइयसरीरस्स एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।	३८८
३९४	उक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि ।	३८९
३९५	कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि	३८९
३९६	तेयासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३८६
३९७	ओरालियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३८९
३९८	वेउव्वियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि।	३९०
३९९	जहण्णुक्कस्सपदेण सव्वत्थोवाणि आहारसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि ।	३९०
४००	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।	३९०
४०१	कम्मइयसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३९०
४०२	तेयासरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३९१
४०३	तेयासरीरस्स एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।	३९१
४०४	कम्मइयसरीरस्स एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ।	३९१
४०५	ओरालियसरीरस्स णाणागुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ।	३९१
४०६	वेउव्वियसरीरस्स णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि संखेज्जगुणाणि ।	३९१
४०७	गुणगारे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि-जहण्णपदे उक्कस्सपदे जहण्णुक्कस्सपदे ।	३९२
४०८	जहण्णपदे सव्वत्थोवा ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो ।	३९२
४०९	तेया-कम्मइयसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंत-	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	गुणो सिद्धाणमणंतभागो ।	३९३
४१०	उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।	३९४
४११	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	३९४
४१२	जहण्णुक्कस्सपदेण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो सेडीए असंखेज्जदिभागो ।	३९५
४१३	उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।	३९५
४१४	तेजा-कम्मइयसरीरस्स जहण्णओ गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंत-गुणो सिद्धाणमणंतभागो ।	३९५
४१५	तस्सेव उक्कस्सओ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।	३९५
४१६	पदमीमांसाए तत्थ इमाणि दुवे अणुयोगद्दाराणि- जहण्णपदे उक्कस्सपदे ।	३९७
४१७	उक्कस्सपदेण ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ।	३९७
४१८	अण्णदरस्स उत्तरकुरु-देवकुरुमणुअस्स तिपलिदोवमट्ठिदियस्स ।	३९८
४१९	तेणेव पढमसमयआहारएण पढम समयतब्भवत्थेण उक्कस्सेण जोगेण आहारिदो ।	३९९
४२०	उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ।	४००
४२१	अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ।	४००
४२२	तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ।	४०१
४२३	अप्पाओ मणजोगद्धाओ ।	४०१
४२४	अप्पा छविच्छेदा ।	४०१
४२५	अंतरे ण कदाइ विउव्विदो ।	४०१
४२६	थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोग-जवमज्झस्स उवरिमंतोमुहुत्तद्ध-मिच्छिदो ।	४०२
४२७	चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभागमच्छिदो ।	४०३
४२८	चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ।	४०३
४२९	तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स ओरालियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं ।	४०४
४३०	तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ।	४१०
४३१	उक्कस्सपदेण वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ।	४११
४३२	अण्णदरस्स आरण-अच्चुदकप्प-वासियदेवस्स बावीससागरोवम-ट्ठिदियस्स ।	४११
४३३	तेणेव पढमसमयआहारएण पढम-समयतब्भवत्थेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो ।	४१२
४३४	उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ।	४१२
४३५	अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ।	४१२
४३६	तस्स अप्पाओ भासद्धाओ ।	४१२
४३७	अप्पाओ मणजोगद्धाओ ।	४१२
४३८	णत्थि छविच्छेदा ।	४१२
४३९	अप्पदरं विउव्विदो ।	४१३
४४०	थोवावसेसे जीविदव्वए त्ति जोग-जवमज्झस्सुवरिमंतोमुहुत्तद्ध-मच्छिदो ।	४१३
४४१	चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो ।	४१३
४४२	चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ।	४१३
४४३	तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स वेउव्वियसरीरस्स उक्कस्सपदेसग्गं ।	४१३
४४४	तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ।	४१३
४४५	उक्कस्सपदेण आहारसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ।	४१४
४४६	अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तर-सरीरं विउव्वियस्स ।	४१४
४४७	तेणेव पढमसमयआहारएण पढम-	

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सू० सं	सूत्राणि	पृ० सं
	समयतब्भवत्थेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो ।	४१४
४४८	उक्कस्सयाए वड्ढीए वड्ढिदो ।	४१४
४४९	अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ।	४१४
४५०	तस्स अप्पाओ भासद्धाओ	४१४
४५१	अप्पाओ मणजोगद्धाओ ।	४१४
४५२	णत्थि छविच्छेदा ।	४१४
४५३	थोवावसेसे णियत्तिदव्वए त्ति जोग-जवमज्झट्ठाणाए मितद्धमच्छिदो ।	४१५
४५४	चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो ।	४१५
४५५	चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सं जोगं गदो ।	४१५
४५६	तस्स चरिमसमयणियत्तमाणस्स तस्स आहारसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं ।	४१५
४५७	तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ।	४१६
४५८	उक्कस्सपदेण तेजासरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ।	४१६
४५९	अण्णदरस्स ।	४१६
४६०	जो जीवो पुव्वकोडाउओ अधो सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु आउअं बंधदि ।	४१६
४६१	कमेण कालगदसमाणो अधो सत्तमाए पुढवीए उववण्णो ।	४१७
४६२	तदो उवट्टिदसमाणो पुणरवि पुव्व-कोडाउएसुववण्णो ।	४१८
४६३	तेणेव कमेण आउअमणुपालइत्ता तदो कालगदसमाणो पुणरवि अधो सत्तमाए पुढवीएणेरइएसु उववण्णो.	४१८
४६४	तेणेव पढमसमयआहारएण पढम-समयतब्भवत्थेण उक्कस्सजोगेण आहारिदो ।	४१९
४६५	उक्कस्सियाए वड्ढीए वड्ढिदो ।	४१९
४६६	अंतोमुहुत्तेण सव्वलहुं सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो ।	४१९
४६७	तत्थ य भवट्ठिदिं तेत्तीससागरो-वमाणि आउअमणुपालइत्ता ।	४१९
४६८	बहुसो बहुसो उक्कस्सियाणि जोग-ट्ठाणाणि गच्छदि ।	४२०
४६९	बहुसो बहुसो बहुसंकिलेसपरिणामो भवदि ।	४२०
४७०	एवं संसरिदूण थोवावसेसे जीवि-दव्वए त्ति जोगजवमज्झस्स उवरि-मंतोमुहुत्तद्धमच्छिदो ।	४२०
४७१	चरिमे जीवगुणहाणिट्ठाणंतरे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मच्छिदो ।	४२०
४७२	दुचरिम-तिचरिमसमए उक्कस्स संकिलेसं गदो ।	४२१
४७३	चरिम-दुचरिमसमए उक्कस्सजोगं गदो ।	४२१
४७४	तस्स चरिमसमयतब्भवत्थस्स तस्स तेजइयसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं ।	,,
४७५	तव्वदिरित्तमणुक्कस्सं ।	४२२
४७६	उक्कस्सपदेण कम्मइयसरीरस्स उक्कस्सयं पदेसग्गं कस्स ।	४२२
४७७	जो जीवो बादरपुढविजीवेसु वेहि सागरोवमसहस्सेहि सादिरेगेहि ऊणियं कम्मट्ठिदिमच्छिदो ।	४२२
४७८	जहा वेदणाए वेदणीयं तहा णेयव्वं ।	
४७९	जहण्णपदेण ओरालियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२३
४८०	अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीव-अपज्जत्तयस्स ।	४२३
४८१	पढमसमयआहारयस्स पढमसमय-तब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स ओरालियसरीरस्स जहण्णं पदेसग्गं	४२३
४८२	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२४
४८३	जहण्णपदेण वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२४

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
४८४	अण्णदरस्स देव-णेरइयस्स असण्णि-पच्छायदस्स ।	४२४
४८५	पढमसमयआहारयस्स पढमसमय-तब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स वेउव्वियसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२५
४८६	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२५
४८७	जहण्णपदेण आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२५
४८८	अण्णदरस्स पमत्तसंजदस्स उत्तरं विउव्विदस्स ।	४२५
४८९	पढमसमयआहारयस्स पढमसमय-तब्भवत्थस्स जहण्णजोगिस्स तस्स आहारसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२५
४९०	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२६
४९१	जहण्णपदेण तेयासरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२६
४९२	अण्णदरस्स सुहुमणिगोदजीवअप-ज्जत्तयस्स एयंताणुवड्ढीए वड्ढमाण-यस्स जहण्णजोगिस्स तस्स तेया-सरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२६
४९३	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२८
४९४	जहण्णपदेण कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं कस्स ।	४२८
४९५	अण्णदरस्स जीवो सुहुमणिगोद-जीवेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-भागेण ऊणयं कम्मट्ठिदिमच्छिदो । एवं जहा वेयणाए वेयणीयं तहा णेयव्वं । णवरि थोवावसेसे जीवि-दव्वए त्ति चरिमसमयभवसिद्धिओ जादो तस्स चरिमसमयभवसिद्धि-यस्स तस्स कम्मइयसरीरस्स जहण्णयं पदेसग्गं ।	४२८
४९६	तव्वदिरित्तमजहण्णं ।	४२९
४९७	अप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवं ओरा-लियसरीरस्स पदेसग्गं ।	४२९
४९८	वेउव्वियसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्ज-गुणं ।	४२९
४९९	आहारसरीरस्स पदेसग्गमसंखेज्ज-गुणं ।	४३०
५००	तेयासरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ।	४३०
५०१	कम्मइयसरीरस्स पदेसग्गमणंतगुणं ।	४३०
५०२	सरीरविस्सासुवचयपरूवणदाए तत्थ इमाणि छ अणुयोगद्दाराणि- अविभागपडिच्छेदपरूवणा वग्गण-परूवणा फड्डयपरूवणा अंतर-परूवणा सरीरपरूवणा अप्पा-बहुए त्ति ।	४३०
५०३	अविभागपडिच्छेदपरूवणदाए एक्केक्कम्मि ओरालियपदेसे केवडिया अविभागपडिच्छेदा ।	४३१
५०४	अणंता अविभागपडिच्छेदा सव्व-जीवेहि अणंतगुणा ।	४३१
५०५	एवडिया अविभागपडिच्छेदा ।	४३१
५०६	वग्गणपरूवणदाए अणंता अविभाग-पडिच्छेदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा एया वग्गणा भवदि ।	४३२
५०७	एवमणंतओ वग्गणाओ अभव-सिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाण-मणंतभागो ।	४३२
५०८	फड्डयपरूवणदाए अणंताओ वग्ग-णाओ अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंतभागो तमेगं फड्डयं भवदि ।	४३३
५०९	एवमणंताणि फड्डयाणि अभवसिद्धि-एहि अणंतगुणो सिद्धाणमणंत-भागो ।	४३३
५१०	अंतरपरूवणदाए एक्केक्कस्स फड्डयस्स केवडियमंतरं ।	४३४
५११	सव्वजीवेहि अणंतगुणा । एवडिय-मंतरं ।	४३४
५१२	सरीरपरूवणदाए अणंता अविभाग-पडिच्छेदा सरीरबंधणगुणपच्चए-दणिप्पण्णा ।	४३४
५१३	छेदणा पुण दसविहा ।	४३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सू० सं	सूत्राणि	पृ० सं
५१४	णाम ट्ठवणा दवियं सरीरबंधणगुण-पदेसा य । वल्लरि अणुत्तडेसु य उप्पाइया पण्णभावे य ॥	४३५
५१५	ओरालियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा ।	४३७
५१६	वेउव्वियसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ।	४३७
५१७	आहारसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ।	४३७
५१८	तेयासरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ।	४३७
५१९	कम्मइयसरीरस्स अविभागपडिच्छेदा अणंतगुणा ।	४३८
५२०	विस्सासुवचयपरूवणदाए एक्के-क्कम्हि जीवपदेसे केवडिया विस्सा-सुवचया उवचिदा ।	४३८
५२१	अणंता विस्सासुवचया उवचिदा सव्वजीवेहि अणंतगुणा ।	४३९
५२२	ते च सव्वलोगागदेहि बद्धा ।	४३९
५२३	तेसिं चउव्विहा हाणी-दव्वहाणी खेत्तहाणी कालहाणी भावहाणी चेदि ।	४४०
५२४	दव्वहाणिपरूवणदाए ओरालिय-सरीरस्स जे एयपदेसियवग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सा-सुवचएहि उवचिदा ।	४४१
५२५	जे दुपदेसियवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुव-चएहि उवचिदा ।	४४२
५२६	एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंचपदे-सिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदे-सिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्ज-पदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंत-पदेसिय-अणंताणंतपदेसिय-वग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४२
५२७	तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं पंचविहा हाणी-अणंत-भागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी ।	४४३
५२८	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	४४४
५२९	खेत्तहाणिपरूवणदाए ओरालिय-सरीरस्स जे एयपदेसियखेत्तोगाढ-वग्गणाए दव्वा ते बहुगा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४४
५३०	जे दुपदेसियक्खेत्तोगाढवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४५
५३१	एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्जपदेसियखेत्तो-गाढवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४५
५३२	तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं चउव्विहा हाणी— असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभाग-हाणी सखेज्जगुणहाणी असंखेज्ज-गुणहाणी ।	४४६
५३३	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	४४७
५३४	कालहाणिपरूवणदाए ओरालिय-सरीरस्स जे एगसमयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सासुव-चएहि उवचिदा ।	४४७
५३५	जे दुसमयट्ठिदिवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुव-चएहि उवचिदा ।	४४८
५३६	एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्जसमयट्ठिदि-वग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणं-तेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४४८
५३७	तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं चउव्विहा हाणी-असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी	

मार्गदर्शक : [illegible] जी महाराज

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुण-हाणी ।	४४९
५३८	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	४४९
५३९	भावहाणिपरूवणदाए ओरालिय-सरीरस्स जे एयगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते बहुआ अणंतेहि विस्सा-सुवचएहि उवचिदा ।	४५०
५४०	जे दुगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुव-चएहि उवचिदा ।	४५०
५४१	एवं ति-चदु-पंच-छ-सत्त-अट्ठ-णव-दस-संखेज्ज-असंखेज्ज-अणंत-अणंताणंतगुणजुत्तवग्गणाए दव्वा ते विसेसहीणा अणंतेहि विस्सासुवचएहि उवचिदा ।	४५२
५४२	तदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण तेसिं छव्विहा हाणी-अणंत-भागहाणी असंखेज्जभागहाणी संखेज्जभागहाणी संखेज्जगुणहाणी असंखेज्जगुणहाणी अणंतगुणहाणी ।	४५२
५४३	एवं चदुण्णं सरीराणं ।	४५३
५४४	ओरालियसरीरस्स जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो ।	४५३
५४५	तस्सेव जहण्णयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ।	४५४
५४६	तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ।	४५४
५४७	तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सविस्सासुवचओ अणंतगुणो।	४५४
५४८	एवं वेउव्विय-आहार-तेजा-कम्मइय-सरीरस्स ।	४५५
५४९	जहण्णयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ।	४५५
५५०	तस्सेव जहण्णयस्सुक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ।	४५५
५५१	तस्सेव उक्कस्सयस्स जहण्णपदे जहण्णओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ।	४५६
५५२	तस्सेव उक्कस्सयस्स उक्कस्सपदे उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ।	४५९
५५३	बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए चरिमसमयछदुमत्थस्स सव्वजहण्णियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स जहण्णओ विस्सासुवचओ थोवो ।	४६०
५५४	सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए [illegible] एयबंधण-बद्धाणं सरिडिदाणं संताणं सव्वुक्क-स्सियाए सरीरोगाहणाए वट्टमाणस्स उक्कस्सओ विस्सासुवचओ अणंतगुणो ।	४६१
५५५	एदेसिं चेव परूवणट्ठदाए तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि जीवपमाणाणुगमो पदेसपमाणाणुगमो अप्पाबहुए त्ति ।	४६२
५५६	जीवपमाणाणुगमेण पुढविकाइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
५५७	आउकाइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
५५८	तेउक्काइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
५५९	वाउक्काइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
५६०	वणप्फदिकाइया जीवा अणंता ।	४६३
५६१	तसकाइया जीवा असंखेज्जा ।	४६३
५६२	पदेसपमाणाणुगमेण पुढविकाइयजीव-पदेसा असंखेज्जा ।	४६४
५६३	आउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा	४६४
५६४	तेउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा ।	४६४
५६५	वाउक्काइयजीवपदेसा असंखेज्जा ।	४६४
५६६	वणप्फदिकाइयजीवपदेसा अणंता ।	४६४
५६७	तसकाइयजीवपदेसा असंखेज्जा ।	४६४

पारमदर्शक आचार्य श्री सुविधिसागरजी अभिनंदन ग्रंथ

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
५६८	अप्पाबहुअं दुविहं–जीवअप्पाबहुअं चेव पदेसअप्पाबहुअं चेव ।	४६५
५६९	जीवअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा तसकाइयजीवा ।	४६५
५७०	तेउक्काइयजीवा असंखेज्जगुणा ।	४६५
५७१	पुढविकाइयजीवा विसेसाहिया ।	४६५
५७२	आउकाइयजीवा विसेसाहिया ।	४६६
५७३	वाउक्काइयजीवा विसेसाहिया ।	४६६
५७४	वणप्फदिकाइयजीवा अणंतगुणा ।	४६६
५७५	पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवा तसकाइयपदेसा ।	४६६
५७६	तेउक्काइयपदेसा असंखेज्जगुणा ।	४६६
५७७	पुढविकाइयपदेसा विसेसाहिया ।	४६६
५७८	आउक्काइयपदेसा विसेसाहिया ।	४६६
५७९	वाउक्काइयपदेसा विसेसाहिया ।	४६६
५८०	वणप्फदिकाइयपदेसा अणंतगुणा ।	४६६

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

चूलिया

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
५८१	एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम ।	४६९
५८२	जो णिगोदो पढमदाए वक्कममाणो अणंता वक्कमंति जीवा । एयसमएण अणंताणंतसाहारणजीवेण घेत्तूण एगसरीर भवदि असंखेज्जलोग–मेत्तसरीराणि घेत्तूण एगो णिगोदो होदि ।	४६९
५८३	विदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ।	४७०
५८४	तदियसमए असंखेज्जगुणहीणा वक्कमंति ।	४७१
५८५	एवं जाव असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए णिरंतर वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।	४७१
५८६	तदो एक्को वा दो वा तिण्णि वा समए अंतरं काऊण णिरंतर वक्कमंति जाव उक्कस्सेण आवलियाए असं–खेज्जदिभागो ।	४७१
५८७	अप्पाबहुअं दुविहं–अद्धाअप्पा-बहुअं चेव जीवअप्पाबहुअं चेव ।	४७४
५८८	अद्धाअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवो सांतरसमए वक्कमणकालो ।	४७४
५८९	णिरंतरसमए वक्कमणकालो असं-खेज्जगुणो ।	४७४
५९०	सांतरणिरंतरसमए वक्कमणकालो विसेसाहिओ ।	४७५
५९१	सव्वत्थोवा सांतरसमयवक्कमण-कालविसेसो ।	४७५
५९२	णिरंतरसमयवक्कमणकालविसेसो असंखेज्जगुणो ।	४७५
५९३	सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ।	४७५
५९४	जहण्णपदेण सव्वत्थोवो सांतर–वक्कमणसव्वजहण्णकालो ।	४७६
५९५	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ सांतरसमय-वक्कमणकालो विसेसाहिओ ।	४७६
५९६	जहण्णपदेण जहण्णगो णिरंतर–वक्कमणकालो असंखेज्जगुणो ।	४७६
५९७	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ णिरंतर-वक्कमणकालो विसेसाहिओ ।	४७७
५९८	जहण्णपदेण सांतरणिरंतरवक्कमण–सव्वजहण्णकालो विसेसाहिओ ।	४७७
५९९	उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्क–मणकालो विसेसाहिओ ।	४७७
६००	सव्वत्थोवो सांतरवक्कमणकाल–विसेसो ।	४७७
६०१	णिरंतरवक्कमणकालविसेसो असं–खेज्जगुणो ।	४७८
६०२	सांतरणिरंतरवक्कमणकालविसेसो विसेसाहिओ ।	४७८
६०३	जहण्णपदेण सांतरसमयवक्कमण-कालो असंखेज्जगुणो ।	४७८
६०४	उक्कस्सपदेण सांतरसमयवक्क–मणकालो विसेसाहिओ ।	४७८
६०५	जहण्णपदेण णिरंतरसमयवक्कमण–कालो असंखेज्जगुणो ।	४७८
६०६	उक्कस्सपदेण णिरंतरसमयवक्क–	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	मणकालो विसेसाहिओ ।	आदर्शक - अनुपलब्ध
६०७	जहण्णपदेण सांतरणिरंतरवक्क-मणकालो विसेसाहिओ ।	४७९
६०८	उक्कस्सपदेण सांतरणिरंतरवक्क-मणकालो विसेसाहिओ ।	४७९
६०९	उक्कस्सयं वक्कमणंतरमसंखेज्जगुणं।	४७९
६१०	अवक्कमणकालविसेसो असंखेज्ज-गुणो ।	४७९
६११	पबंधणकालविसेसो विसेसाहिओ ।	४७९
६१२	जहण्णपदेण जहण्णओ अवक्क-मणकालो असंखेज्जगुणो ।	४८०
६१३	जहण्णपदेण जहण्णओ पबंधण-कालो विसेसाहिओ ।	४८०
६१४	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ अवक्क-मणकालो विसेसाहिओ ।	४८०
६१५	उक्कस्सपदेण उक्कस्सओ पबंधण-कालो विसेसाहिओ ।	४८०
६१६	जीवअप्पाबहुए त्ति ।	४८१
६१७	सव्वत्थोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा ।	४८१
६१८	अपढम-अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।	४८१
६१९	अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८१
६२०	पढमसमए वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।	४८१
६२१	अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८१
६२२	सव्वेसु समएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८२
६२३	सव्वत्थोवा चरिमसमए वक्कमंति जीवा ।	४८२
६२४	अपढम अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।	४८२
६२५	अपढमसमए वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८२
६२६	पढमसमए वक्कमंति जीवा असंखेज्जगुणा ।	४८३
६२७	अचरिमसमएसु वक्कमंति जीवा विसेसाहिया ।	४८३
६२८	सव्वेसु समएसु वक्कमिदजीवा विसेसाहिया ।	४८३
६२९	सव्वो बादरणिगोदो पज्जत्तो वा वामिस्सो वा ।	४८३
६३०	सुहुमणिगोदवग्गणाए पुण णियमा वामिस्सो ।	४८४
६३१	जो णिगोदो जहण्णएण वक्कमण-कालेण वक्कमंतो जहण्णएण पबंध-णकालेण पबद्धो तेसिं बादरणिगो-दाणं तथा पबद्धाणं मरणकमेण णिग्गमो होदि ।	४८५
६३२	सव्वुक्कस्सियाए गुणसेडीए मरणेण मदाणं सव्वचिरेण कालेण णिल्ले-विज्जमाणाणं तेसिं चरिमसमए मदावसिट्ठाणं आवलियाए असंखे-ज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४८७
६३३	एत्थ अप्पाबहुअं - सव्वत्थोवं खुद्दाभवग्गहणं ।	४९१
६३४	एइंदियस्स जहण्णिया णिव्वत्ती संखेज्जगुणा ।	४९१
६३५	सा चेव उक्कस्सिया विसेसाहिया ।	४९१
६३६	बादरणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४९२
६३७	सुहुमणिगोदवग्गणाए जहण्णियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४९३
६३८	सुहुमणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४९३
६३९	बादरणिगोदवग्गणाए उक्कस्सियाए सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तो णिगोदाणं ।	४९३
६४०	एदेसिं चेव सव्वणिगोदाणं मूलमहा-खंधट्ठाणाणि ।	४९३

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं
६४१	अट्ठ पुढवीओ टंकाणि कूडाणि भवणाणि विमाणाणि विमाणिंदियाणि विमाणपत्थडाणि णिरया णिरइंदियाणि णिरयपत्थडाणि गच्छाणि गुम्माणि वल्लीणि जदाणि तणवणप्फदिआदीणि ।	४९४
६४२	जदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणं जहण्णपदे तदा बादरतसपज्जत्ताणं उक्कस्सपदे ।	४९६
६४३	जदा बादरतसपज्जत्ताणं जहण्णपदे तदा मूलमहाक्खंधट्ठाणाणमुक्कस्सपदे ।	४९६
६४३	एत्तो सव्वजीवेसु महादंडओ कायव्वो भवदि ।	५०१
६४४	सव्वत्थोवा खुद्दाभवग्गहणं । तं तिसमयूणं विहत्तं–हेट्ठिल्लए तिभाए सव्वजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती । मज्झिल्लए तिभाए णत्थि आवासयाणि । उवरिल्लए तिभागे आउअबंधो जवमज्झं समिलामज्झे त्ति वुच्चदि ।	५०१
६४५	तस्सुवरिमसंखेपद्धा ।	५०३
६४६	असंखेपद्धस्सुवरि खुद्दाभवग्गहणं	५०४
६४७	खुद्दाभवग्गहणस्सुवरि जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती ।	५०४
६४८	जहण्णियाए अपज्जत्तणिव्वत्तीए उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ।	५०४
६४९	तं चेव सुहुमणिगोदजीवाणं जहण्णिया अपज्जत्तणिव्वत्ती ।	५०५
६५०	उवरिमुक्कस्सिया अपज्जत्तणिव्वत्ती अंतोमुहुत्तिया ।	५०६
६५१	तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि होंति ।	५०६
६५२	तदो जवमज्झं गंतूण सुहुमणिगोदअपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।	५०६
६५३	तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।	५०९
६५४	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणमाउअबंधजवमज्झं ।	५१०
६५५	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणमाउअबंधजवमज्झं ।	५११
६५६	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमजीवअपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झं ।	५११
६५७	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झं ।	५१२
६५८	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे०भागमेत्ताणि ।	५१३
६५९	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोदजीवअपज्जत्तयाणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।	४१४
६६०	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सव्वजीवाणं णिव्वत्तीए अंतरं ।	५१५
६६१	तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि भवंति ।	५१६
६६२	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।	५१६
६६३	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमं विसेसाहियाणि ।	५१७
६६४	एत्थ अप्पाबहुअं-सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि ।	५१८

मार्गदर्शक

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
६६५	वेउव्वियसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५१९
६६६	आहारसरीरस्स णिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५१९
६६७	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणमिंदियणिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि ।	५१९
६६८	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमं विसेसाहियाणि ।	५२०
६६९	एत्थ अप्पाबहुअ–सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स इंदियणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि ।	५२१
६७०	वेउव्वियसरीरस्स इंदियणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५२१
६७१	आहारसरीरस्स इंदियणिव्वत्ति-ट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५२१
६७२	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं आणापाण-भासा-मण-णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलि० असंखे० भागमेत्ताणि ।	५२१
६७३	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणि जहाकमं विसेसाहियाणि ।	५२२
६७४	एत्थ अप्पाबहुअं–सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि ।	५२५
६७५	वेउव्वियसरीरस्स आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसे-साहियाणि ।	५२५
६७६	आहारसरीरस्स आणापाण-भासा-मणणिव्वत्तिट्ठाणाणि विसेसा-हियाणि ।	५२५
६७७	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण तिण्णं सरीराणं णिल्लेवणट्ठाणाणि आव-लियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।	५२६
६७८	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जहाकमेण विसेसाहियाणि ।	५२८
६७९	एत्थ अप्पाबहुगं–सव्वत्थोवाणि ओरालियसरीरस्स णिल्लेवण-ट्ठाणाणि ।	५२९
६८०	वेउव्वियसरीरस्स णिल्लेवण-ट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५२९
६८१	आहारसरीरस्स णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५२९
६८२	तत्थ इमाणि पढमदाए आवास-याणि होंति ।	५२९
६८३	तदो जवमज्झं गंतूण सुहुम-णिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्ति-ट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्ताणि ।	५३०
६८४	तदो जवमज्झं गंतूण बादरणिगोद-जीवपज्जत्तयाणं णिव्वत्तिट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि ।	५३१
६८५	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुम-णिगोदजीवपज्जत्तयाणमाउअबंध-जवमज्झं ।	५३२
६८६	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरणिगोद-जीवपज्जत्तयाणं आउअबंधजव-मज्झं ।	५३३
६८७	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोद-जीवपज्जत्तयाणं मरणजवमज्झं ।	५३३
६८८	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादर-णिगोदजीवपज्जत्तयाणं मरण-जवमज्झं ।	५३४
६८९	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमणिगोद-पज्जत्तयाणं णिल्लेवट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि ।	५३५
६९०	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादर-णिगोदपज्जत्तयाण णिल्लेवण-ट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदि-भागमेत्ताणि ।	५३५
६९१	तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	णिल्लेवणट्ठाणाणि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि ।	५३६
६९२	एत्थ अप्पाबहुगं-सव्वत्थोवाणि सुहुमणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि ।	५३६
६९३	बादरणिगोदजीवपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि ।	५३६
६९४	तम्हि चेव पत्तेयसरीरपज्जत्तयाणं णिल्लेवणट्ठाणाणि विसेसाहियाणि।	५३७
६९५	तत्थ इमाणि पढमदाए आवासयाणि हवंति ।	५३७
६९६	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुम-णिगोदजीवपज्जत्तयाणं समिला-जवमज्झं ।	५३७
६९८	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण एइंदियस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५३८
६९९	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सम्मुच्छिमस्स जहण्णिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५३८
७००	तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण गब्भो-वक्कंतियस्स जहण्णिया पज्जत्त-णिव्वत्ती ।	५३८
७०१	तदो दसवाससहस्साणि गंतूण ओववादियस्स जहण्णिया पज्जत्त-णिव्वत्ती ।	५३९
७०२	तदो बावीसवाससहस्साणि गंतूण एइंदियस्स उक्कस्सिया पज्जत्त-णिव्वत्ती ।	५३९
७०३	तदो पुव्वकोडि गंतूण समुच्छिमस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५३९
७०४	तदो तिण्णि पलिदोवमाणि गंतूण गब्भोवक्कंतियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५४०
७०५	तदो तेत्तीसं सागरोवमाणि गंतूण ओववादियस्स उक्कस्सिया पज्जत्तणिव्वत्ती ।	५४०
७०६	तस्सेव बंधणिज्जस्स तत्थ इमाणि चत्तारि अणुयोगद्दाराणि णाय-व्वाणि भवंति- वग्गणपरूवणा वग्गणाणिरूवणा पदेसट्ठदा अप्पाबहुए त्ति ।	५४१
७०७	वग्गणपरूवणदाए इमा एयदेसिया परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७०८	इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्व-वग्गणा णाम ।	५४२
७०९	एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंच-पदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदे-सिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्ज-पदेसिय-अणंतपदेसिय-अणंताणंत-पदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७१०	तासिमणंताणंतपदेसियपरमाणु-पोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरिमाहार-सरीरदव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७११	आहारसरीरदव्ववग्गणाणमुवरि-मगहणदव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७१२	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेया-दव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७१३	तेयादव्ववग्गणाणमुवरि अगहण-दव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७१४	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासा-दव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७१५	भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहण-दव्ववग्गणा णाम ।	५४२
७१६	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मणदव्व-वग्गणा णाम ।	५४३
७१७	मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहणदव्व-वग्गणा णाम ।	५४३
७१८	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्मइय-दव्ववग्गणा णाम ।	५४३
७१९	वग्गणपरूवणदाए इमा एयपदे-सियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम	

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
	किं गहणपाओग्गाओ किमगहण-पाओग्गाओ ।	५४३
७२०	अगहणपाओग्गाओ इमाओ एय-पदेसियसव्वपरमाणुपोग्गलदव्व-वग्गणाओ ।	५४४
७२१	इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्व-वग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ।	५४४
७२२	अगहणपाओग्गाओ ।	५४४
७२३	एवं तिपदेसिय-चदुपदेसिय-पंच-पदेसिय-छप्पदेसिय-सत्तपदेसिय-अट्ठपदेसिय-णवपदेसिय-दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्व-वग्गणा णाम किं गहणपाओग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ।	५४४
७२४	अगहणपाओग्गाओ ।	५४५
७२५	अणंताणंतपदेसियपरमाणुपोग्गल-दव्ववग्गणा णाम किं गहणपाओ-ग्गाओ किमगहणपाओग्गाओ ।	५४५
७२६	काओ चि गहणपाओग्गाओ काओ चि अगहणपाओग्गाओ ।	५४५
७२७	तासिमणंताणंतपदेसियपरमाणु-पोग्गलदव्ववग्गणाणमुवरिमाहार-दव्ववग्गणा णाम ।	५४५
७२८	आहारदव्ववग्गणा णाम का ।	५४६
७२९	आहारदव्ववग्गणं तिण्णं सरीराणं गहण पवत्तदि ।	५४६
७३०	ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं जाणि दव्वाणि घेत्तूण ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरत्ताए परिणामे-दूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि आहारदव्ववग्गणा णाम ।	५४६
७३१	आहारदव्ववग्गणाणमुवरिगहण-दव्ववग्गणा णाम ।	५४७
७३२	अगहणदव्ववग्गणा णाम का ।	५४७
७३३	अगहणदव्ववग्गणा आहारदव्व-मंधिच्छिदा तेयादव्ववग्गणं ण पावदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहण-दव्ववग्गणा णाम ।	५४८
७३४	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि तेया-दव्ववग्गणा णाम ।	५४८
७३५	तेयादव्ववग्गणा णाम का ।	५४८
७३६	तेयादव्ववग्गणा तेयासरीरस्स गहणं पवत्तदि ।	५४९
७३७	जाणि दव्वाणि घेत्तूण तेयासरीर-त्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि तेजादव्ववग्गणा णाम ।	५४९
७३८	तेजादव्ववग्गणाणमुवरिमगहण-दव्ववग्गणा णाम ।	५४९
७३९	अगहणदव्ववग्गणा णाम का ।	५४९
७४०	अगहणदव्ववग्गणा तेजादव्वमवि च्छिदा भासादव्वं ण पावेदि ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्ववग्गणा णाम ।	५४९
७४१	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि भासा दव्ववग्गणा णाम ।	५५०
७४२	भासादव्ववग्गणा णाम का ।	५५०
७४३	भासादव्ववग्गणा चउव्विहाए भासाए गहणं पवत्तदि ।	५५०
७४४	सच्चभासाए मोसभासाए सच्चमोस-भासाए असच्चमोसभासाए जाणि दव्वाणि घेत्तूण सच्चभासत्ताए मोसभासत्ताए सच्चमोसभासत्ताए असच्चमोसभासत्ताए परिणमेदूण णिस्सारंति जीवा ताणि भासा-दव्ववग्गणा णाम ।	५५०
७४५	भासादव्ववग्गणाणमुवरिमगहण-दव्ववग्गणा णाम ।	५५१
७४६	अगहणदव्ववग्गणा णाम का ।	५५१
७४७	अगहणदव्ववग्गणा भासादव्व-मंधिच्छिदा मणदव्वं ण पावेदि	

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं
	ताणं दव्वाणमंतरे अगहणदव्व वग्गणा णाम ।	५५१
७४८	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि मण-दव्ववग्गणा णाम ।	५५१
७४९	मणदव्ववग्गणा णाम का ।	५५१
७५०	मणदव्ववग्गणा चउव्विहस्स मणस्स गहणं पवत्तदि ।	५५१
७५१	सच्चमणस्स मोसमणस्स सच्चमोस-मणस्स असच्चमोसमणस्स जाणि दव्वाणि घेत्तूण सच्चमणत्ताए मोसमणत्ताए सच्चमोसमणत्ताए असच्चमोसमणत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि मणदव्ववग्गणा णाम ।	५५१
७५२	मणदव्ववग्गणाणमुवरिमगहण-दव्ववग्गणा णाम ।	५५२
७५३	अगहणदव्ववग्गणा णाम का ।	५५२
७५४	अगहणदव्ववग्गणा (मण) दव्व-मविच्छिदा कम्मइयदव्वं ण पावदि ताणं दव्वणमंतरे अगहणदव्व-वग्गणा णाम ।	५५२
७५५	अगहणदव्ववग्गणाणमुवरि कम्म-इयदव्ववग्गणा णाम ।	५५२
७५६	कम्मइयदव्ववग्गणा णाम का ।	५५३
७५७	कम्मइयदव्ववग्गणा अट्ठविहस्स कम्मस्स गहणं पवत्तदि ।	५५३
७५८	णाणावरणीयस्स दंसणावरणीयस्स वेयणीयस्स मोहणीयस्स आउअस्स णामस्स गोदस्स अंतराइयस्स जाणि दव्वाणि घेत्तूण णाणावर-णीयत्ताए दंसणावरणीयत्ताए वेय-णीयत्ताए मोहणीयत्ताए आउअत्ताए णामत्ताए गोदत्ताए अंतराइयत्ताए परिणामेदूण परिणमंति जीवा ताणि दव्वाणि कम्मइयदव्ववग्गणा णाम।	५५३
७५९	पदेसट्ठा-ओरालियसरीरदव्ववग्ग णाओ पदेसट्ठदा अणंताणंतपदे-सियाओ ।	५५४
७६०	पंचवण्णाओ ।	५५४
७६१	पंचरसाओ ।	५५५
७६२	दुगंधाओ ।	५५५
७६३	अट्ठफासाओ ।	५५६
७६४	वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेस-ट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ ।	५५६
७६५	पंचवण्णाओ ।	५५६
७६६	पंचरसाओ ।	५५६
७६७	दुगंधाओ ।	५५६
७६८	अट्ठफासाओ ।	५५६
७६९	आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदेस-ट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ ।	५५७
७७०	पंचवण्णाओ ।	५५७
७७१	पंचरसाओ ।	५५७
७७२	दुगंधाओ ।	५५७
७७३	अट्ठफासाओ ।	५५७
७७४	तेयासरीरदव्ववग्गणाओ पदेस-ट्ठदाए अणंताणंतपदेसियाओ ।	५५८
७७५	पंचवण्णाओ	५५८
७७६	पंचरसाओ ।	५५८
७७७	दोगंधाओ ।	५५८
७७८	चदुफासाओ ।	५५८
७७९	भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्व-वग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंताणंतपदे-सियाओ ।	५५९
७८०	पंचवण्णाओ ।	५५९
७८१	पंचरसाओ ।	५५९
७८२	दुगंधाओ ।	५५९
७८३	चदुफासाओ ।	५५९
७८४	अप्पाबहुगं दुविहं-पदेसअप्पा-बहुअं चेव ओगाहणअप्पाबहुअं चेव ।	५५९
७८५	पदेसअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए ।	५६०

आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

सू० सं०	सूत्राणि	पृ० सं०
७८६	वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ पदे- सट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ ।	५६१
७८७	आहारसरीरदव्ववग्गणाओ पदे- सट्ठदाए असंखेज्जगुणाओ।	५६१
७८८	तेजासरीरदव्ववग्गणाओ पदेस- ट्ठदाए अणंतगुणाओ ।	५६१
७८९	भासा-मण-कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ पदेसट्ठदाए अणंतगुणाओ ।	५६२
७९०	ओगाहणअप्पाबहुए त्ति सव्वत्थोवाओ कम्मइयसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए ।	५६२
७९१	मणदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ।	५६३
७९२	भासादव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ।	५६३
७९३	तेजासरीरदव्ववग्गणाओ ओगाह- हणाए असंखेज्जगुणाओ ।	५६३
७९४	आहारसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाह- णाए असंखेज्जगुणाओ ।	५६३
७९५	वेउव्वियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगा- हणाए असंखेज्जगुणाओ ।	५६४
७९६	ओरालियसरीरदव्ववग्गणाओ ओगाहणाए असंखेज्जगुणाओ ।	५६४
७९७	जं तं बंधविहाणं तं चउव्विहं- पयडिबंधो ट्ठिदिबंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि	५६४

० ० ०

२ अवतरण-गाथा-सूची

क्रम	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहां
१	अणु संखा संखगुणा	११७	धवला प्र० पु० पृ० ३१
२	अणुसंखासंखेज्जा	११७	जीवकाण्ड गा० ५९३ (पाठभेद)
३	अवगयणिवारणट्ठं	५१	धवला प्र० पु० पृ. ३१
४	आहारतेजभासा	११७	
५	इच्छं विरलिय दु	१९६	
६	उत्तरगुणिदं इच्छं	१९७	
७	एदेसिं गुणगारो	११८	
८	एयक्खेत्तोगाढं	४३९	गो० कर्मकाण्ड गा० १८५ (पाठभेद)
९	औपश्लेषिकवैषयिका-	५०२	
१०	जत्थेव चरइ बालो	९०	मूलाचा० ५, १३२
११	जियदु मरदु व जीवो	९०	प्रवचन० १७ (पाठभेद)
१२	तिण्णिसदा छत्तीसा	३६२	गो० जीवकाण्ड गा० १२२
१३	तिण्णिसहस्सा सत्त-	३६२	सर्वार्थसिद्धि टिप्पण पृ० ५५
१४	ध्रुवखंधसांतराणं	११८	
१५	पल्लासंखेज्जदिमो	११८	
१६	बीजे जोणीभूदे	२३२	गो० जीवकाण्ड गा० १८९
१७	वियोजयति चासुभिः	९०	स्वयंभूस्तोत्र

१८ सत्ता सव्वपयत्था	२३४	पञ्चास्तिकाय गा० ८
१९ सरवासे दु पदंते	९०	मूलचा० ५, १३१
२० साहारण आहारो	४८७	गो० जीवकाण्ड गा० १९१
२१ सांतरणिरंतरेदर-	११७	
२२ सेडिअसंखेज्जदिमो	११८	
२३ स्वयं ह्यहिंसा स्वयमेव	९०	

३ विशेष-वाक्य-संग्रह

१ एत्थ सव्वे ' वा ' सद्दा समुच्चयट्ठे दट्ठव्वा ।	२०
२ प्रत्येकमात्मदेशा कर्मविषयवैरनन्तकैर्बद्धाः इति वचनात् ।	१६६
३ यत एवकारकरणं ततोऽन्यत्रावधारणमिति वचनात् ।	२२५
४ ' दु ' सद्दस्स अवहारणट्ठस संबंधादो ।	२३१
५ ' इदि ' सद्दो हेदुविवक्खाणमुववत्तीदो उरालमेव ओरालियमिदि सिद्धं ।	३२२
६ ' स्त्रियो मूलमनर्थानाम् ' इत्यत्र ।	४९४

४ न्यायोक्तियाँ

१ यद्यस्य भावाभावानुविधानतो भवति तत्तस्येति वदन्ति तद्विद इति न्यायात् ।	१३
२ नावश्यं कारणानि कार्यवन्ति [illegible] न्यायात्[illegible] श्री सुविधिसागर जी महाराज	४३८
३ एकदेशविकृतमनन्यवदिति न्यायात् ।	५०३
३ समुदायेषु प्रवृत्ताः शब्दा अवयवेष्वपि वर्तन्ते इति न्यायात् ।	५०४

५ ग्रन्थोल्लेख

कम्माणुयोगद्दार

१ जो सो थप्पो कम्मबंधो णाम यथा कम्मेति तहा णेयव्वं ।	४६
२ कम्मबंधस्स चउसट्ठिभंगा जहा कम्माणुयोगद्दारे परूविदा तहा परूवेदव्वा ।	४६

खुद्दाबंध

१ एदेसिं मग्गणट्ठाणाणं जहा खुद्दाबंधे परूवणा कदा तहा कायव्वा ।	४७
२ एवं खुद्दाबंधएक्कारसअणुयोगद्दारं णेयव्वं ।	४७
३ एत्थ उद्देसे खुद्दाबंधस्स एक्कारसअणुयोगद्दाराणं परूवणा कायव्वा, अम्हेहि पुण गंथबहुत्तभएण ण कदा ।	४७

चूलियासुत्त

१ खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं त्ति उवरि भण्णमाणचूलियासुत्तादो ।	८५
२ ओरालियवग्गणोगाहणाए बहुत्तं कुदो णव्वदे ? चूलियअप्पाबहुआदो ।	३२२

जीवट्ठाणसुत्त

१ असंखेज्जा लोगा त्ति जीवट्ठाणसुत्ते परूविदत्तादो ।	२१४
२ ण च जीवट्ठाणसुत्तेण सह विरोहो, तत्थ ओरालियसरीरे पज्जत्ते संते चेव संजमो उप्पज्जदि ण तम्मि अपज्जत्ते इदि मणम्मि कादूण अप्पज्जत्तजीवसमासपडिसेहादो ।	४२६

तच्चत्थ (तत्वार्थसूत्र)

तच्चत्थे जं जीवभावस्स परिणामियत्तं परूविदं तं पाणधारणत्तं पडुच्च ण परूविदं ।	१३

परियम्म

१ परियम्मे परमाणू अपदेसो त्ति वुत्तो ।	५४

२ असंखेज्जलोगमेत्तं कुदो णव्वदे ? परियम्मादो । ३७४
३ संपहि पलिदोवमादो हेट्ठा असंखेज्जाणि वग्गणट्ठाणाणि ओसरिदूण सूचियंगुल-च्छेदणयाणमुवरि तस्सेव उवरिमवग्गादो हेट्ठा घणलोगच्छेदणया होंति त्ति पयिम्मे भणिद । ३७५

मार्गदर्शक - आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज

बाहिरवग्गणा

१ तं कथं परिच्छिज्जदि त्ति वुत्ते बाहिरवग्गणाए पंचण्णं सरीराणं वुत्तपदेसप्पाबहुआदो सुत्तादो । ७३
२ बाहिरवग्गणाए पंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्स भणिदप्पाबहुगसुत्तादो । ७३
३ एदमप्पाबहुगं बाहिरवग्गणाए पुधभूदं ति काऊण के वि आइरिया जीवसंबद्ध-पंचण्णं सरीराणं विस्सासुवचयस्सुवरि परूवेंति तण्ण घडदे, जहण्णपत्तेयसरीर-वग्गणादो उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए अणंतगुणत्तप्पसंगादो । ४५७
४ एदं सुत्तं बाहिरवग्गणाए ण होदि, जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए सामित्त-पदुप्पायणादो ? ४६१

भावविहाण

१ तेसिं परूवणाए कीरमाणाए जहा भावविहाणे परूविदं तहा परूवेदव्वं । ४३४

महाकम्मपयडिपाहुड

१ ण ताव अजाणंतेण ण कदा, चउवीसअणुयोगद्दारसरूवमहाकम्मपयडिपाहुड-पारयस्स भूदबलिभयवंतस्स तदपरिण्णाणविरोहादो । १३४

महाबंध

१ एदेसिं चदुण्णं बंधाणं विहाणं भूदबलिभडारएण महाबंधे सप्पवंचेण लिहिदं त्ति अम्हेहि एत्थ ण लिहिदं । तदो सयले महाबंधे एत्थ परूविदे बंधविहाणं समप्पदि । ५६४

वग्गणासुत्त

१ पुणो एवंविहकम्मइयसरीरणाणागुणहाणिसलागाहिंतो तेजइयसरीरस्स णाणागुण-हाणिसलागाओ असंखेज्जगुणाओ त्ति वग्गणसुत्ते भणिदं । ३८५

वेयणदव्वविहाण

१ सेसं वेयणदव्वविहाणेण भणिदविहाणं संभलिदेण वत्तव्वं । १८४
२ जहा वेयणदव्वविहाणेण सामित्तपरूवणा कदा तहा एत्थ वि णिरवसेसा कायव्वा, विसेसाभावादो । ४२२

वेयणा

१ अथवा जहा वेयणाए णाणागुणहाणिसलागाणं गुणहाणीए च परूवणा कदा तहा वि कायव्वा । ३५१

सुत्तपोत्थय

१ केसु वि सुत्तपोत्थएसु एसो पाठो । १२७

६ ऐतिहासिक-नामसूची

सुत्तकार १३४ भूदबलिभयवंत) १३४
भूदबलिभडारय) ५४१, ५६४

७ पारिभाषिक शब्द-सूची

अ

अक्ख ६
अगहणदव्ववग्गणा ५९, ६०, ६२, ६३, ५४८
अगहणपाओग्ग ५४३
अग्ग ३६७
अग्गट्ठिदिविसेस ३६७
अजीवभावबंध २२, २३
अणंतरोवणिधा ४९
अणादियसरीरबंध ४६
अण्णाण १२
अणिस्सरणप्पय ३२८
अणुग्गहण २२८
अणुच्छेद ४३६
अणुपेहण ९
अत्थ ८
अत्थसम ८
अपढम-अचरिमसमय-वक्कंत ४८२
अप्पडिहय ३२७
अप्पमाद ८९
अप्पाबहुअ ३२२
अप्पाबहुगपरूवणा ५०
अप्रदेश ५४
अब्भ ३५
अभव्व १३
अयण ३६
अरूवी ३२
अल्लीवणबंध ३७, ३९, ४०, ४१
अवक्कमणकाल ४७९
अवहार ५०
अवाण २२६
अविभागपडिच्छेद ४३१
अविरदत्त १२
अविवाग १०
अविवागपच्चइय
अजीवभावबंध २३, २५
अविवागपच्चइय जीव-भावबंध १०, १२
असब्भावदुवणबंध ५, ६
असरीर २३८, २३९
असंजद ११
असिद्धत्त १३
असुह ३२८
अंगमल ३६
अंडय ८६
असंखेज्जाबहुविधा - आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

आ

आगम ७
आगमदव्वबंध २८
आगमदव्ववग्गणा ५२
आगमभावबंध ७, ९
आगमभाववग्गणा ५२
आण २२६
आणा ३२६
आणाकणिट्ठदा ३२६
आणावाण २२६
आदेस २३७
आधार ५०२
आभिणिबोहियणाणी २०
आयारधर २२
आलावणबंध ३७, ३८, ३९, ४०
आवास ८६
आहार २२६, ३३९
आहार-आहारसरीरबंध ४३
आहार-कम्मइय-सरीरबंध ४३
आहार-तेया-कम्मइय-सरीरबंध ४४
आहार-तेयासरीरबंध ४३
आहारदव्ववग्गणा ५४६, ५४७, ५४९, ५५१, ५५२
आहारय ३२६, ३२७
आहारसरीर ७८, ३२६

इ

इत्थिवेदभाव ११
इद्धि ३२५
इंदाउह ३५
इंदियपज्जत्ति ५२७

उ

उक्कस्सपद ३९२
उक्कस्सपदमीमांसा ३९७
उक्कस्ससांतरवक्कमणकाल ४७६
उक्का ३५
उप्पाइयछेदणा ४३६
उराल ३२२, ३२३
उवसमियअविवागपच्चइयजीवभावबंध १४
उवसमियचारित्त ९५
उवसमिय सम्मत्त १५
उवसंतकसायवीयराय-छदुमत्थ १५
उवसंतकोह १४
उवसंतदोस १४
उवसंतमाण १४
उवसंतमाय १४
उवसंतराग १४
उवसंतलोह १४

ए

एइंदियलद्धि २०

एयपदेसियपोग्गल-
दव्ववग्गणा ५४
एयपदेसियवग्गणा
१२१, १२२
एयबंधण ४६१

ओ

ओघ २३७
ओरालिय ३२३
ओरालिय ओरालिय-
सरीरबंध ४२
ओरालिय-कम्मइय-
सरीरबंध ४२
ओरालिय-तेयासरीरबंध ४२
ओरालिय-तेया-कम्मइय-
सरीरबंध ४३
ओरालियसरीर ७८
ओरालियसरीरकायत्त २४२
ओरालियसरीरट्ठाण
४३२, ४३३

क

कडय ४०
कणय ३५
कदजुम्म १४७
कम ४३३
कम्मइय ३२८
कम्मइय-कम्मइय-
सरीरबंध ४४
कम्मइयदव्ववग्गणा
६३, ५५३
कम्मइयसरीर ७८
कम्मबंध ४६
कम्मवग्गणा ५२
कलिओज १४७
कार्मण ३२९
कार्मणशरीर ३२८, ३२९
काल ३६
कालवग्गणा ५२
किण्ण-णील-काउ-तेउ-
पम्म-सुक्कलेस्सा ११
कुडु ४०
कूड ४९५
केवलणाण १७
केवलदंसण १७
कोध-माण-माया-
लोहभाव ११

ख

खइयअविवागपच्चइय—
खइयचारित्त १६
खइयदाणलद्धि १६
खइयपरिभोगलद्धि १६
खइयभोगलद्धि १७
खइयलाहलद्धि १७
खइयविरियलद्धि १७
खइयसम्मत्त १६
खंध ८६
खीणकसायवीदराग-
छदुमत्थ १६
खीणकोह १६
खीणदोस १६
खीणमाय १६
खीणमोह १६
खीणराग १६
खीणलोह १६
खेत्त ३६
खेत्तवग्गणा ५२

ग

गट्ठी ३८
गणी २२
गहणपाओग्ग ५४३
गंथ ८
गंथसम ८
गिल्ली ३८
गिह ३९
गिहकम्म ६
गुणगार ३२१
गुणपच्चासत्तिकम्म २७
गोवरपीड ४०
गोउर ३९

घ

घादखुद्दाभवग्गहण ३६२
घोससम ९

च

चउग्गइणिगोद २३६
चउरिंदियलद्धि २०
चदुसरीर २३८
चित्तकम्म ५
चुंद ३८
चूलिया ४६९

छ

छट्ठाण ४३४
छवि ४०१
छेद ४०१
छेदणा ४३५, ४३६

ज

जडु ३१
जवमज्झ ५०, ४०२, ५०२
५०३
जहण्णपद ३९२
जहण्णपदमीमांसा ३९७
जहण्णुक्कस्सपद ३९२
जाण ३८
जिद ८
जीवत्त १३
जीवण १६
जीवभाव १३
जीवपदेससण्णा ४३९
जीवभावबंध ९
जुग ३८

ट

टंक ४९५
ट्ठवणबंध ४
ट्ठवणवग्गणा ५२
ट्ठवणा ४३५

मार्गदर्शक - श्री जैन सुबोध सागर जी महाराज

दिदसुदणाण ८

ठ

ठवणबंध ६
ठवणसद्द ६

ण

णवुंसयवेदभाव ११
णाणासेढि १३४
णामच्छेदणा ४३५
णामणिरुत्ती ३२१
णामबंध ४
णामवग्गणा ५२
णामसम ८
णिउण ३२७
णिगोद ८५, ४९२
णिगोदसरीर ८६
णिच्चणिगोद २३६
णिण्ह ३२७
णिरईदिय ४९५
णिरय ४९५
णिरयपत्थड ४९५
णिरंतरवक्कमणकाल-विसेस ४७८
णिरंतरसमयवक्कमण-काल ४७४, ४७५
णिल्लेवण ५०७
णिल्लेवणट्ठाण ५२७
णिव्वत्ति ३६३
णिव्वत्तिट्ठाण ३५८
णिसेयखुद्दाभवग्गहण ३६२
णिसेयपरूवणा ३२१
णेरइयभाव ११
णोआगमदव्वबंध २८
णोआगमदव्ववग्गणा ५२
णोआगमभावबंध ९
णोआगमभाववग्गणा ५२
णोआगमवग्गणा ५२

त

तदुच्छेद ४३६
तदुभयपच्चइय अजीव-भावबंध २३, २६, २७
तदुभयपच्चइय जीव-भावबंध १०, १८, १९
तब्भवत्थ ३३२
तव्वदिरित्तदव्ववग्गणा ५२
तिरिक्ख २३९
तिरिक्खभाव ११
तिसरीर २३८
तीइंदियलद्धि २०
तेजइय ३२७
तेजस् ३१७
तेजोज १४७
तेयाकम्मइयसरीरबंध ४४
तेया-तेयासरीरबंध ४४
तेयादव्ववग्गणा ६०, ५४९
तेयासरीर ७८
तेयासरीरोदाहण ३२८
तोरण ३९

थ

थव ९
थुदी ९

द

दविय ४३५
दव्ववग्गणा ५२
दव्वबंध २७
दंतकम्म ६
दिसादाह ३५
द्विमात्रा ३२
दुपदेसियपरमाणु-पोग्गलदव्ववग्गणा ५५
दुपदेसियवग्गणा १२२
देवभाव ११
देसपच्चासत्तिकय २७
दोस ११

ध

धम्मकहा ९
धुवबंधदव्ववग्गणा ६३
धुवसुण्णदव्ववग्गणा ८३, ११२, ११६
धुवसुण्णवग्गणा ६३
धूमकेतू ३५

न

निक्षेप ५१

प

पओअबंध ३७
पओगपरिणद (वण्णादि) २३, २४
पज्जत्तणिव्वत्ति ३५२
पडिच्छण ९
पढमतिभाग ५०१, ५०२
पढमसमयतब्भवत्थ ३३२
पण्णभावच्छेदणा ४३६
पत्तेयसरीर २२५
पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा ६५
पदमीमांसा ५०, ३२२
पदेसछेदणा ४३६
पदेसपमाणाणुगम ३२१
पबंधणकाल ४८०
परमाणु ५४
परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा १२१
परंपरोवणिधा ४९
परिजिद ८
परिणदुदभाव १८
परित्त-अपरित्तवग्गणा ५८
परियट्टण ९
पल्लमाणकाल १४३
पंचिंदियलद्धि २०
पागार ४०
पासाद ३९
पुच्छण ९
पुरिसवेदभाव ११
पुलवियं ८६
पोग्गल ३६

मार्गदर्शक - आचार्य श्री विद्यासागर महाराज

पोत्तकम्म ५
प्रदेशविरच ३५२
प्रबन्धन ४८५
प्रबन्धनकाल ४८५
प्रभा ३२७
प्ररोहण ३२८

फ

फड्डय ४३३
फड्डयंतर ४३४
फिरिक्की ३८

ब

बन्धन १
बन्धविधान २
बन्ध १, २, ३०
बन्धणगुण ४३५
बन्धणिज्ज १, २, ४८, ९६
बंधय २
बंधविहाण २
बादरजुम्म १४७
बादरणिगोददव्ववग्गणा ८४
बाहरियवग्गणा २२३, २२४
बीज ३२७
बुद्धभाव १८

भ

भव ४२५
भवग्गहण ३६२
भवण ४९५
भव्वजीव १३
भावकलङ्क २३४
भावकलङ्कुल २३४
भाववग्गणा ५२
भासादव्ववग्गणा ६१, ५५०
भित्तिकम्म ६
भेद ३०, १२१, १२९
भेदजणिद १३४
भेदसंघाद १२१
भेंडकम्म ६

म

मज्झिल्लतिभाग ५०२
मणदव्ववग्गणा ६२, ५५१, ५५२
मणुस्सभाव ११
मदिअण्णाणी २०
महाखंधट्ठाण ४९५
महाखंधदव्ववग्गणा ११७
मादा ३०, ३२
मिच्छत्त १२
मेह ३५
मोह ११

र

रह ३८
राग ११
रूवी ३२

ल

लेणकम्म ५
लेप्पकम्म ५

व

वक्कमणकालविसेस ४७६
वग्गणणयविभासणदा ५२
वग्गणणिक्खेव ५१
वग्गणदव्वसमुदाहार ४९, ५३, ५४
वग्गणपरूवणा ४९
वग्गणा ५१
वग्गणादेस १३६
वराडय ६
वल्लरिच्छेद ४३६
वाचक २२
वाचना ८
वायणा ८
वायणोवगद ८
विज्जू ३५
विमाण ४९५
विवागपच्चइय अजीव- भावबंध २३
विमाणपत्थड ४९५
विमाणिंदिय ४९५
विमादा ३०
विरइ १२
विरच ३५२
विवाग १०
विवागपच्चइय जीवभाव-बंध १०, ११
विसम ३३
विसरीर २३७
विस्ससापरिणदओगाहणा २५
विस्ससापरिणदखंध २६
विस्ससापरिणदखंधदेस २६
विस्ससापरिणदखंधपदेस २६
विस्ससापरिणदगदि २५
विस्ससापरिणदगंध २५
विस्ससापरिणदफास २५
विस्ससापरिणदरस २५
विस्ससापरिणदवण्ण २५
विस्ससापरिणदसद्द २५
विस्ससापरिणदसंठाण २६
विस्ससाबंध २६
विस्सासुवचय ४३०
विस्सासुवचयपरूवणदा २२४
विहंगणाणी २०
वेइंदियलद्धि २०
वेउव्विय ३२३
वेउव्विय-कम्मइय-सरीरबंध ४३
वेउव्विय-तेया-कम्मइय-सरीरबंध ४३
वेउव्विय-तेयासरीरबंध ४३
वेउव्विय-वेउव्विय-सरीरबंध ४३
वेउव्वियसरीर ७८

स

सद्भावस्थापना ५
सद्भावद्रव्यबंध ५, ६
सम ३३
समगं ववक्कंत २२९
समिला ५०३
समिलामज्झ ५०३
सम्मत्तलद्धि २१
सम्मामिच्छत्तलद्धि २१
सयड ३८
सरीर ४३४, ४३५
सरीरणिव्वत्तिट्ठाण ५१६
सरीरपज्जत्ति ५२७
सरीरबंध ३७
सरीरबंधणगुणछेदणा ४३६
सरीरविस्सासुवचय-
रूवणा २२४
सरीरिबंध ३७, ४१, ४४
सरीरिसरीरपरूवणा २२४
सरीरी ४५, २२४
सव्वदुक्खाणमंतयडभाव १८
संघाद १२१
संघादज १३४
संजम १२
संजोग २७
संज्ञा ३५
संदण ३९
संबंध २७
संभव ६७
संसिलेसबंध ३७, ४१
साडिय ४१
सादियविस्ससाबंध ३४
सादियसरीरबंध ४५
साहारणजीव २२७, ४८७
साहारणलक्खण २२६
साहारणसरीर २२५
सांतरणिरंतरदव्व-
वग्गणा ६४
सांतरवक्क[illegible] ४७
सांतरवक्कमणकाल-
विसेस ४७७
सांतरवक्कमणजहण्ण-
काल ४७६
सांतरसमयवक्कमणकाल ४७४
सांतरसमयवक्कमणकाल-
विसेस ४७५
सिद्ध १३
सिद्धभाव १७
सिविया ३९
सुण्ण १३६
सुत्त ८
सुत्तसम ८
सुदअण्णाणी २०
सुह ३२८
सुहुमणिगोदवग्गणा ११३
सेलकम्म ५
स्थित ७

ह

हिंसा ८, ९, ९०

मार्गदर्शक :- आचार्य श्री सुविधिसागर जी महाराज